ॐ

❀ नमः सिद्धेभ्यः ❀

चौंतीस-स्थान दर्शन

लेखक या संग्रह कर्त्ता

परम पूज्य १०८ श्री आदिसागर मुनि महाराज

(जन्मभूमि शेडबाल जि० बेलगाँव कर्नाटक)

सहायक संग्रहकर्त्ता और प्रकाशक

श्री पंडित ब्र० उलफतराय जी जैन

(जन्मभूमि रोहतक, हरयाणा)

श्री वीर निर्वाण सं० २४९४, विक्रम सं० २०२४, शा० शब्दे १८९०

प्रथम संस्करण
१००० प्रति

ख्रिस्ति शक सन् १९६८ ईस्वी

मूल्य
१० रुपये

प्राक्कथन

'चौबीस ठाणा दर्शन' यह अनूठा ग्रन्थराज आज प्रकाशित हो रहा है जिसकी मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। ग्रन्थका विषय जैनदर्शनान्तर्गत कर्मतत्त्वज्ञान से सम्बद्ध है और कर्मतत्त्वज्ञान यह करणानुयोग से सम्बद्ध है सूज्ञ पाठक इससे परिचित ही हैं कि संपूर्ण जिनवाणी चार विभागों में विभाजित है: १. प्रथमानुयोग २. द्रव्यानुयोग ३. चरणानुयोग और ४. करणानुयोग। चारों अनुयोगों की प्राचीन ग्रन्थराशि अत्यन्त समृद्ध है। करणानुयोग यह एक निरतिचार निर्दोष निर्विकल्प गणित प्रस्तुत करता है; चतुर्गति भ्रमण के कारणभूत जीवों के परिणामों की विचित्रता यह भी एक ऐसा महत्त्वपूर्ण विषय है जिसपर मनीषियों ने काफी विचार किया है जैनदर्शन आत्मवादी है अनात्मवादी नहीं है नास्तिक नहीं है पूर्ण आस्तिक है। यह वस्तुस्थिति होते हुये भी जीव अपने सुख दुःख के लिए ईश्वरवादियों की तरह जैनदर्शन और किसी सर्व शक्तिमान् स्वतन्त्र भिन्न व्यक्ति या शक्ति को स्वीकार नहीं करता। उसका तो यह घोषवाक्य रहा है—

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा फलं तदीयं लभते शुभाशुभम्। परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा। जीव चाहे किसी गति का हो उसे प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल यह सब उसी के भली बुरी करनी के—करतूत के फल हैं 'जो जस करे सो तस फल पाय' 'जैसी करनी वैसी भरनी' आदि उक्तियों के मूल में जो तथ्य है, सिद्धांत है, वही जैनदर्शन का हार्द है, **'ईश्वरः प्रेरितो गच्छेत् स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा।'** आदि मान्यताओं से वह सैकड़ों कोस दूर है दूसरा यदि सुख दुःखों का दाता है और यह जीव उसको भोक्ता होगा तो इसकेद्वारा होने वाली पाप पुण्य क्रियायें या धर्मानुष्ठान इन सब ही का कोई अर्थ या प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, इसलिये लोक परलोक सुख दुःख, रोग नीरोग, इष्टानिष्ट संयोग वियोग आदि संसार सम्बन्धी जितनी भी अवस्थायें हैं या हो सकती हैं उनका तर्कगम्य शुद्धशास्त्र सिद्ध गणित प्रस्तुत करने का उत्तरदायित्व स्वभावतः जैनदर्शन के ऊपर आता है।

वह केवल 'अदृष्ट' कहकर या 'अगम्य' कहकर अपने उत्तरदायित्व को समाप्त करना भी नहीं चाहता। संसार सम्बन्धी जितनी विचित्रतायें जीव सम्बद्ध हैं, चारों गतियाँ मनुष्य-देव नारक या तिर्यंच उसमें प्राप्त होने वाले नाना जाति के देह उनके वर्ण रस गंधादि या आकारप्रकारादि तथा कम या अधिक इन्द्रियों की सुडौल या बेडौल रचनायें, आत्म प्रदेशों का शरीराधार से होने वाला कंपन स्त्री पुरुष या नपुंसक के आकार आदि की व्यवस्था का जैसा उसके पास उत्तर है उसी प्रकार जीवों के परिणामों की जो अन्तरंग सम्बन्धी जितनी विचित्रतायें हैं कोई क्रोधी कोई क्षमाशील कोई गर्व-छल और लोभ से अभिभूत है तो दूसरा तरतम रूप से मदकषायी या विकारहीन पाया जाता है; कोई स्वभावतः सुबुद्ध तो दूसरा कोरा निर्बुद्ध, कोई संयमशील तो कोई असंयम के कीचड़ में फंसा हुआ, कोई श्रद्धावान् दृष्टि सम्पन्न तो दूसरा श्रद्धाविहीन दृष्टि शून्य, किसी को संकल्प विकल्पों का सुसंस्कृत सामर्थ्य होता है, तो किसी में उसकी किंचिन्मात्रा भी नहीं पायी जाती। इन सारी विचित्रताओं का या सम्भाव्य सारी विचित्रताओं का जैनदर्शन के पास तर्क-शुद्ध विचार है। संक्षेप में यह कह सकते हैं विश्व का बाहरी रूप और अन्तरंग स्वरूप का ठीक ठीक हिसाब बैठालने में ईश्वर या ईश्वरसम दूसरी स्वतन्त्र शक्ति के मान्यता के बिना भी जैनदर्शन समर्थ हुआ है वह अपने समृद्ध कर्मतत्त्वज्ञान के बल पर ही हो पाया है। उसके परिज्ञान के लिए जैनदर्शन समान वस्तु

व्यवस्था भी संक्षेप में देखनी होगी। वह लोक को षड्द्रव्य परिपूर्ण मानता है। जीव-पुद्गल धर्म अधर्म आकाश और काल ये मूल में छः स्वयंभू द्रव्य है। सबका स्वरूप भिन्न भिन्न है। जीव सचेतन है शेष अचेतन है। पुद्गल मूर्तिक है शेष अमूर्तिक है। धर्म-अधर्म आकाश संख्या में एक एक है। कालाणु असंख्यात: है। जीवों की संख्या अनगिनत अनन्त है पुद्गलों की जीवों से भी अत्यधिक अनंत है। सब ही द्रव्य अनादि अनंत हैं; अपने अपने गुण पर्यायों में स्वयं सहभावी या क्रमभावी रूप से व्याप्त है। हर समय में उत्पाद व्यय ध्रौव्य रूप है। इनमें से जीव और पुद्गलों को छोड़कर शेष चारों धर्म अधर्म आकाश और काल ये शुद्ध है परस्पर में वैसे तो छहों द्रव्य अत्यन्त निकट सम्पर्क से है एक क्षेत्रावगाही है। रही बात जीव और पुद्गलकों की — इनमें भी जिनका पुद्गलों से (सूक्ष्म या स्थूल) सम्बन्ध सदा के लिए छूटा है ऐसे अनन्त जीव हैं वे भी शुद्ध सिद्ध कहलाते हैं। वे भविष्य में पुनर्बंध का कारण ही विद्यमान न रहने के कारण बन्धनबद्ध नहीं होते हैं; इनका मुक्त-परमात्मा-विदेही-मुक्तात्मा आदि अनन्त शुभ नामों से स्मरण किया जाता है। पुद्गल द्रव्य मूर्तिक-रूपी है; स्पर्श रस गंध वर्ण ये उसके मूल-गुण हैं। इन गुणों से वह अभिन्न ही रहता है चाहे वह स्थूल स्कंधों के रूप में हो या सूक्ष्म परमाणुओं के रूप में हो। परमाणु अवस्था शुद्ध रूप होती है; परमाणुओं की संख्या अनंत है, स्कंध स्वभावत: अशुद्ध होते है उनकी संख्या, अनंत होते हुए भी मूल में स्कंधों की जातियां तेईस है। जिनमें से जीव के साथ सम्पर्क विशेष जिनका होता है ऐसी पांच प्रकार की स्कंध जातियां हैं जिनको १. आहार वर्गणा २. तैजस वर्गणा ३. भाषावर्गणा ४. मनोवर्गणा और ५. नोकर्मवर्गणा कहते हैं। ये उत्तरोत्तर सूक्ष्म है। अपना अपना कार्य करने में परस्पर सहयोग से समर्थ है। इनका जीव भावों के निमित्त से योग (प्रदेश कंपन) और उपयोग से (शुभाशुभ परिणति से) आवागमन अनादि से होता आ रहा है; और भविष्य में भी जीव समीचीन पुरुषार्थ से जब तक सदा के लिए शुद्ध नहीं होता है तब तक तो इन स्कंध पुद्गलों का आवागमन अपनी अपनी योग्यता से होता ही रहेगा। यही जीव का संसार कहा जाता है और इसी प्रक्रिया के कारण जीव संसारी कहा जाता है। समयपाय इनमें भव्य जीव यथार्थ पुरुषार्थ से विकसित रत्नत्रय से सम्पन्न होने पर संवर निर्जरा करता हुआ मुक्त हो सकता है। संक्षेप में जैनदर्शन में इस प्रकार वस्तु व्यवस्था है।

यह वस्तु व्यवस्था जैनदर्शन की मौलिकता है और सूर्यप्रकाश में प्रत्यक्षगत वस्तु की तरह इसकी स्पष्टता अवबोध होने पर एक जिज्ञासा सहज ही जागृत होती है कि, जीव और कर्मवर्गणा तथा नोकर्मवर्गणा का (आहार वर्गणा भाषावर्गणा तैजसवर्गणा और मनोवर्गणा का) ग्रहण कब से करता आ रहा है? क्यों करता है? किन किन कारणों से करता है? कब तक करता रहेगा? उनमें न्यूनाधिकता का क्या कारण है? उससे जीव की हानि ही है? या कुछ लाभ भी है? ग्रहण बन्द होने के उपाय कौन से है? आदि प्रश्नमालिका खड़ी होती है। इसका तात्त्विक भूमिका पर जो विचार मूलग्राही रूप में किया गया है वह सदा सप्ततत्त्व विचार कहा जाता है। उपरोक्त जीव चेतना लक्षण उपयोग स्व-रूपात्मक है। स्पर्शरसादि गुणविशिष्ट पुद्गल अजीव रूपसे विवक्षित है। जीवों का विभाव विकार रूप परिणमन के निमित्त होने पर तप्त लोहा जैसे जल का आकर्षण करता है उस प्रकार बद्ध जीवों के कर्मनोकर्मका ग्रहण होता है वे विभाव और ग्रहण दोनों में आस्रव करते हैं वे विभाव कषाय तथा जीव प्रदेशों के साथ कर्मस्कंधों का संश्लेष बन्ध कहा जाता है। जब कोई सम्यग्ज्ञानी महात्मा अन्तर्दृष्टि संपन्न अन्तरात्मा स्वानुभूति सनाथ होता है उस समय उसकी जीवनी का अन्तर्याम परिवर्तित होता है तब से वे विशुद्ध परिणाम और उसके निमित्त से अभिनव कर्मस्कंधों का आस्रव-निरोध 'संवर' कहा जाता है। पूर्व संचितों की क्रमशः क्षपणा के निमित्त रूप विशुद्ध परिणाम तथा कर्म क्षपणा को 'निर्जरा' कहते हैं इसी तरह वे सातिशय विशुद्ध परिणाम भी पूर्वसंचित कर्मों के सम्पूर्ण क्षपणा में निमित्त है उनकी 'भावमोक्ष' यह संज्ञा होती है तथा सदा के लिए संपूर्ण कर्मों का सर्व प्रकार से अलग होना 'द्रव्य मोक्ष' है और जीव मुक्त हैं।

जीवभाव तथा कर्मबंध इनका तथा पूर्वबद्ध कर्मों का यथा समय उदय और जीवभावों का परस्पर निमित्त नैमित्तिक सुव्यवस्थित सम्बन्ध निर्धारित हो जाने पर संसार सम्बन्धी सारी विचित्रताओं के विषय में जितनी भी समस्यायें होंगी उनका ठीक ठीक उत्तर मिल जावेगा। कर्ता हर्ता के रूप में किसी व्यक्ति विशेष के मानने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। निजके पुण्य पापों के सर्जन में और भुक्तान में यह प्राणी जैसे स्वयं जिम्मेवार होता है उसी प्रकार कर्मनाश करके अनन्त अविनाशी गुण सम्पन्न परम श्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त करने में भी यह स्वयं समर्थ होता है वह सिद्धान्त ग्रन्थ का पुनः पुनः मनन और अध्ययन करने से आप ही आप सुस्पष्ट होता जाता है और स्वावलंबन पूर्वक सम्पूर्ण स्वतन्त्रता की शक्यता दृष्टिपथ में आ जाती है।

इन सात तत्त्वों में से आस्रव बन्ध तथा संवर-निर्जरा का मनीषियों ने भी सूक्ष्म सूक्ष्मतम विचार करने की पद्धति निश्चित रूप से निर्धारित की है वह भी एक महत्वपूर्ण पद्धति है। चौंतीस स्थान ये मुख्य रूप से सम्मुख रखकर कर्मवर्गणाओं के विषय में कार्यकारणादि भावों का पूरा ख्याल रखकर जो विचार प्रपंच हो सकता है वही इस ग्रन्थ का महत्वपूर्ण विषय विशेष है। प्राचीन आर्ष ग्रन्थों का उसे आधार है। प्राकृत गाथा, संस्कृत श्लोक, भाष्य महाभाष्य आदि रूप से भी इस विषय का किसी मात्रा में वर्णन है फिर भी नक्शों के द्वारा आलेखों के द्वारा इस विषय का स्पष्ट बोध सहज में होने से दर्पण में प्रतिबिंब की तरह विषयावबोध स्पष्ट-सुस्पष्ट होने में सुनिश्चित सहायता पहुंचती है। ग्रंथ निर्माताओं ने स्वयं सातिशय प्रयत्न करके अध्ययन करने वालों को विषय सुलभ किया है। इस ग्रन्थ के निर्माण में प० पू० १०८ मुनि श्री आदिसागरजी महाराज (शेडवाल तथा सम्माननीय पंडित उल्फतरायजी रोहतक (हरयाना) इन दोनों स्वाध्याय मग्न प्रशस्त अध्यवसायियों का वर्षों का परिश्रम निहित है विज्ञ पाठकादि इस परिश्रमशीलता का यथार्थ मूल्यांकन कर सकते हैं। मैं भी इन अथकपरिश्रमों की हृदय से सराहना करता हूं पूर्व में मुनी साधु गण और प्रशस्त अध्यवसाय मग्न ज्ञानी लोग इस प्रकार का प्रशस्त अध्यवसाय महीनों करते थे। उससे एक बात तो निश्चित है कि राग द्वेष के लिये निमित्तभूत अन्यान्य सांसारिक संकल्प विकल्पों से वे लोग अपनी आत्मा को ठीक तरह से बचा लेते थे दोनों महानुभावों का मैं हृदय से आभारी हूं उन्होंने अकारण ही वीतराग प्रेम इस व्यक्ति पर अधिक मात्रा में किया है और ज्ञान विशेष न होते हुये भी प्रस्तावना के रूप में लिखने के लिये बाध्य किया। इसमें जो भी भूलें हों वह मेरी हैं और सच्चाई हो वह पुण्य जिनवाणी माता की महिमा है। उसे हमारी शतशः वंदना हो।

आशा एवं विश्वास करता हूं कि स्वाध्याय प्रेमी जनता इस परिश्रम से अवश्य ही उचित लाभ उठायेगी। साथ ही साथ प्रभु चरणों में यह हार्दिक प्रार्थना करता हूं कि जिनवाणी माता की सेवाओं के लिये ग्रंथ निर्माताओं को भविष्य में भी सुदीर्घ जीवनी और स्वाध्याय अध्यवसाय की इसी तरह शान्ति विशेष का लाभ हो।

कारंजा
१।१।६८

विनीत
डा० हेमचन्द्र वैद्य
तथा
न्यायतीर्थ माणिकचन्द्र चवरे

इस चौबीस-स्थान दर्शन ग्रन्थ का मूल स्तम्भ

कर्म-सिद्धान्त

लेखक- पं. ताराचन्द जैन, शास्त्री न्यायतीर्थ नागपुर.

असीम आकाश के ठीक मध्य-भाग में लोक (विश्व) की रहस्यमय विचित्र रचना है। षड्दर्शन के प्रणेताओं तथा अन्य दार्शनिकों ने अपनी अपनी प्रतिभा के अनुसार लोक के इस रहस्य को जानने एवं उसे प्रकट करने का प्रयत्न किया है। परन्तु अपने सीमित बुद्धिबल से विशाल लोक के रहस्य को न जानने के कारण उनमें से कुछ ने सर्वशक्ति सम्पन्न. एक ईश्वर को ही लोक का नियन्ता उद्घोषित किया है। तथा कुछ ने अपरिणामी नित्य प्रकृति को ही इसका निर्माता माना है। परन्तु जैन दर्शन में लोक रचना सम्बन्धी मान्यता इससे बिल्कुल भिन्न है। जैन दर्शन जिन अर्थात् राग-द्वेष-मोह और अज्ञान आदि समस्त आत्मिक दोषों और दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करनेवाले पूर्ण वीतराग, सर्वज्ञ एवं हितोपदेशी परमात्मा द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस अवसर्पिणी काल में इस दर्शन के प्रणेता भगवान वृषभदेवादि चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। उन लोकहितैषी महापुरुषोंने अपने केवलज्ञान से लोक। लोक का पूर्ण रहस्य यथावत् जानकर निम्नप्रकार से उसका स्वरूप प्रकट किया है।

लोक विभाग

आकाश द्रव्य अनन्त है। इस अनन्त (अमर्याद) आकाश के बिलकुल बीच में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और काल इन छह द्रव्यों के मेल से ही लोक निर्मित हुआ है। लोक के मुख्य तीन विभाग हैं ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधो लोक। ऊर्ध्वलोक के सर्वोपरि भाग में (तनुवातवलय में) मुख्यत: सिद्ध परमात्मा अनुपम अनन्त सुख का निराबाधरूप से अनुभव करते हुए विराज रहे हैं। उससे नीचे सर्वार्थसिद्धि आदि अनुपम शोभासम्पन्न ६९ विमानों की सौंदर्य पूर्ण रचना है। इन विमानों (स्वर्गभूमि) में पुण्याधिकारी जीवों का जन्म हुआ करता है। जो भी मनुष्य शुभभावों से जितना पुण्यसंचय करता है, वह मरने के बाद तदनुकूल भोगोपभोग सहित स्वर्ग में जन्म धारणकर चिरकाल तक ऐन्द्रिक सुख भोगता है। जो मनुष्य रत्नत्रयरूप धर्म का आराधन करता है वह स्वानुभूति के बलसे आयु-आदि कर्मों का अन्तकर लोकाग्र में सतत निवास करता है। तथा कतिपय रत्नत्रयधारी जीव पुण्यातिशय और शुभभावों से मरण कर देवायु का बन्ध करके सर्वार्थसिद्धि आदि पञ्च अनुत्तर और नवअनुदिशों में देवपर्याय धारण करते हैं। वहां पर भी वे भोगोपभोगोंमें अनासक्त रहते हुए तत्त्व चर्चा और तत्त्वानु चिन्तन में तेतीस सागर जैसे सुदीर्घकाल को भी अनायास व्यतीत कर देते हैं।

ऊर्ध्वलोक से नीचे मध्यम लोक की प्राकृतिक रचना है। इसमें भवनवासी देव, व्यंतर देव और सूर्य, चंद्र आदि ज्योतिष देव, मनुष्य और विविध प्रकार के तिर्यंच निवास करते हैं। इस मध्यम लोक में जम्बूद्वीपादि असंख्य द्वीप और समुद्रों की महत्वपूर्ण रचना है। इसके नीचे अधोलोक व्यवस्थित है। नीचे नीचे सात नरक भूमियां अनादिकाल से विद्यमान हैं। इसमें पाप संचय करनेवाले जीव ही अपने पापों का फल भोगनें के लिये वहां जन्म धारण करते हैं। सभी नारकी निरन्तर दुःखानुभव करते हुए सुदीर्घ काल व्यतीत कर अपनें भावानुसार मनुष्य अथवा तिर्यंच पर्याय धारण करते हैं।

सम्पूर्ण लोक चौदह राजू ऊंचा सात राजू चौड़ा और ३४३ घन राजू प्रमाण है। इसके निर्माण में किसी ईश्वरादि व्यक्ति विशेष का महत्व नहीं है। यह लोक अनादि निधन है। इसका निर्माण स्वयं (प्राकृतिक) हुआ है।

षड्द्रव्य और लोकरचना

आकाश व्यापक तथा अनंत प्रदेशी द्रव्य होने से अन्य द्रव्योंका आधार है। इसके असंख्यात मध्यप्रदेशों में असंख्यात प्रदेशी अनन्त जीव द्रव्य, अनंतानन्त पुद्गल द्रव्य, असंख्यात प्रदेशी एक अखण्ड धर्म, द्रव्य, अधर्म द्रव्य और एक प्रदेशी असंख्यात काल द्रव्य भरे हुए हैं। ये समस्त द्रव्य अनादि काल से स्वयं विविध पर्यायों में परिणमित होते हुए परिणमनशील आकाश द्रव्य में आश्रयरूप से विद्यमान हैं और भविष्य में भी इसी प्रकार की प्राकृतिक रचना सदा विद्यमान रहेगी। इन छह द्रव्यों का यह विचित्र शाश्वतिक मेल ही लोक कहा जाता है। इस लोक के निर्माता ये जीवादि छह द्रव्य ही हैं। इसकी रचना एवं व्यवस्था के लिये अनन्त शक्तिशाली ईश्वरादि की कल्पना तर्कसंगत नहीं है। परमेश्वर सम्पूर्ण राग-द्वेष और मोहरहित पूर्ण वीतरागी होते हैं, वे अनेक विरुद्ध कार्यों के कर्ता कैसे बन सकते हैं।

इन छहों द्रव्यों में परमाणु और नाना आकार को धारण किये हुए स्कन्धरूप पुद्गल द्रव्य ही मूर्तिक है। यह स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण गुणों का धारक है। संसार में जो भी स्पर्शनादि इन्द्रियों से ज्ञान होता है, वह सब पुद्गल द्रव्य है। पुद्गल द्रव्य से भिन्न जीवादि पांचों द्रव्य इन्द्रियों से ग्रहण नहीं होते हैं, वे अमूर्तिक हैं। धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्य काल द्रव्य और आकाश द्रव्य आगम प्रमाण और युक्ति से ही सिद्ध किये जाते हैं। जीव द्रव्य अनन्त हैं, ये मुक्त जीव और संसारि-जीव दो भागों में विभक्त हैं। मुक्त जीव तो शुद्ध ज्ञान-दर्शन सुखमय अमूर्त रूप से लोकाग्र में संस्थित हैं, इसलिये उनको अल्पज्ञानी जानने में असमर्थ हैं। हम लोगों को आगम से ही उनकी जानकारी हो सकती है।

जीवकी संसारावस्था

मनुष्य, पशु-पक्षी, क्षुद्र जंतु और पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं अगणित वनस्पतियां जोभी दृष्टि गोचर हो रहे हैं, वे सब संसारी जीव हैं। संसारि-जीव अनादिकाल से कर्मों के निमित्त से निजस्वरूप को भूल द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव और भावमय सुदीर्घ (पञ्च परावर्तनमय) संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं। प्रत्येक जीव का अनादि से स्वर्ण-पाषाण के समान कर्मों के साथ सम्बन्ध बना हुआ है। जब कर्मों का उदय होता है, तो जीव उसके निमित्त से स्वयं रागी, द्वेषी, मोही और अज्ञानी बन जाता है और जब जीव क्रोधादि रूप विभावमय परिणमन करता है तब जीव के विकृतभावों का निमित्त पाकर कार्माण-वर्गणारूप पुद्गल द्रव्य स्वयं जीव से सम्बद्ध हो जाते हैं। विकारी जीवों के विभावों का निमित्त मिलने पर कार्माण-वर्गणा में नियम से विकारी पर्याय उत्पन्न होती है। पुद्गल द्रव्य की इस विकारी पर्याय को ही कर्म कहते हैं। कर्म के निमित्त से स्वरूप से भ्रष्ट हुए जीव नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति में विविध अवस्थाओं को पुनः पुनः ग्रहण करते हैं और छोड़ते हैं। चौरासी लाख योनियों में जीव के परिभ्रमण का नाम ही संसार है। प्रत्येक जीव अनादि से सम्पूर्ण लोक में (द्रव्य-क्षेत्र-काल) भावरूप संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं। वस्तुतः जीव और कर्म के सम्पर्क को ही संसार कहते हैं। जीव के साथ यह अटल

नियम नहीं है, कि कर्मोदय के निमित्त से वह नियम से राग–द्वेष मोह और अज्ञानमय विभावरूप परिणमें। जब जीव स्वरूपावलम्बन के बल से दर्शनज्ञान चारित्रमय परिणमन करता है । उस ोई भी विभाव परिणति नहीं होती है । विभाव परिणतिरूप प्रमादावस्था के अभाव में जीव के कर्मों का आस्रव और बन्ध रुक जाता है । बन्ध के अभाव में जीव का जन्म मरणरूप संसार समाप्त हो जाता है ।

जीव और कर्म

नवीन बन्धाभाव होने पर पूर्वबद्ध कर्म आत्मविशुद्धि से निर्जीर्ण हो जाते हैं । सम्पूर्ण कर्मों का आत्मा से विच्छेद होते ही आत्मा मुक्त हो जाता है ।

जैनागम में कर्म–विषय का विस्तृत वर्णन है । भगवान ऋषभ देवादि चौबीस तीर्थंकरों के प्रामाणिक उपदेश का सार ग्रहणकर मेधावी महान तार्किक जैनाचार्यों ने षट्खण्डागम, गोम्मटसार–कर्मकाण्ड आदि ग्रन्थों में कर्म सिद्धान्त का विस्तृत वर्णन किया है । कर्म का सामान्यस्वरूप आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने निम्नप्रकार लिखा है,

पयडी सील सहावो, जीवंगाणं अणाइ सम्बन्धो ।
कणयोवले मलं वा ताण अत्थित्तं सयं सिद्धं ।।

जैसे जलका स्वभाव शीतल, पवन का स्वभाव तिरछा बहना और अग्निका स्वभाव ऊपर को ओर जाना है । उसी प्रकार निमित्त के बिना वस्तु का जो सहज स्वभाव होता है, उसे प्रकृति, शील अथवा स्वभाव कहते हैं । यहा पर वस्तु शब्दसे जीव और पुद्गल का ग्रहण किया गया है । इन दोनों में से जीव का स्वभाव रागादिरूप से परिणमने का है और कर्म का स्वभाव जीव को रागादिरूप से परिणमाने में निमित्त होने का है । पौद्गलिक कर्म और जीव का यह सम्बन्ध अनादि का है । जैसे खदान से निकलने वाले स्वर्णपाषाण में सोने और मल का मेल कब हुआ कहना अशक्य है, उसी तरह चेतन जीव द्रव्य और जड कर्म द्रव्य के सम्बन्ध के विषय में तर्क करना अनुपयोगी है । इसीलिये आचार्य देव ने इन दोनो द्रव्यों के संयोग को अनादिकालीन स्वीकार किया है । बलादि आर्ष ग्रन्थों में भी संसारि जीव का अनादिद्रव्य कर्म के साथ सम्पर्क माना है । अनादिकालीन द्रव्य कर्म के उदय होने पर उसके निमित्त से जीव रागादिभावरूप विभाव परिणति में परिणमित होता है । स्वभाव से ही उन द्रव्यों का ऐसा पारस्परिक कार्य कारण भाव चला आ रहा है । कभी जीव के रागादि विभावरूप निमित्त कारण से पुद्गल द्रव्य विकृत होकर कर्मरूप से परिवर्तित हो जाते हैं । और कभी कर्मोदय का निमित्त प्राप्त कर जीव विभावरूप से परिणमन करता है । इस तरह सहजरूप से दोनों द्रव्यों में कार्य कारण भावबना हुआ है । शरीर से भिन्न 'अहम्' मैं ऐसी प्रतीति जीव का अस्तित्व सिद्ध करती है और कर्मका अस्तित्व कोई धनी कोई निर्धन, कोई मूर्ख कोई विद्वान, इत्यादि विचित्रता प्रत्यक्ष देखने से सिद्ध होती है । वास्तव में कर्म आत्मा की विविध नरकादि अवस्थाओं के होने में निमित्त है । और वह जीव की उस अवस्था के योग्य शरीर, इन्द्रियादि प्राप्ति का प्रमुख हेतु है । इसलिये जीव द्रव्य और कर्म दोनों ही पदार्थ अनुभव सिद्ध हैं ।

जीव [औदारिकादि शरीरसहित शरीर नामा नामकर्म के उदय से मन, वचन और काय योग से ज्ञानावरणादि आठ कर्मरूप होनेवाली कर्मवर्गणाओं को एक औदारिक, वैक्रियिक आहारक और तैजस शरीर

रूप परिणमने वाली जो कर्मवर्गणाओं को चारों ओर से ग्रहण करता है। गोम्मटसार कर्मकाण्ड में कहा भी है।

देहोदयेण सहिओ जीवो आहरदि कम्मणोकम्मं।
पडिसमयं सव्वगं तत्तायसपिंड ओव्व जलं ॥

योग के निमित्त से संचित कर्मवर्गणा सबसे पहले कर्मरूप पर्याय को धारण करती है। यह कर्म ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय इन आठ भागों में विभक्त होता है। इन आठ कर्मों का एकसा स्वभाव व कार्य नहीं है। जैसे कि निम्नलिखित प्रमाणों से सिद्ध है।

आवरण-मोह-विग्धं घादीजीवगुण घादणत्तादो।
आउग-णामं गोदं वेयणियं तह अघादित्ति ॥
केवलणाणं दंसणमणंत विरियंच खयियं सम्मं च।
खयियगुणे मदियादि खओव समियए य घादि दु ॥

अर्थात जीव केवलज्ञान केवल दर्शन, अनन्तवीर्य, क्षायिक सम्यक्त्व क्षायिक चारित्र और क्षायिक-दानादि क्षायिकभावों का तथा मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान मनःपर्ययज्ञान और सम्यक्त्वादि क्षायोपशमिक भावों का ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय इन चार कर्मों से घात किया जाता है। अतः इन चारों कर्मों की घाति कर्म संज्ञा है। अर्थात ज्ञानावरण, दर्शनावरण मोहनीय और अन्तराय जीव के सम्पूर्ण अनुजीवि गुणों को प्रगट नहीं होने देते, इसीलिये ये कर्म घातिकर्म कहलाते हैं। परन्तु आयु, नाम गोत्र और वेदनीय इन चार कर्म के रहने पर भी जीव के किसी भी अनुजीविगुण असाधारण स्वरूप का अभाव नहीं होता अर्थात आयु आदि चारों द्रव्य कर्मों के उदय रहते हुए भी यह जीव केवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिकसम्यक्त्व, अनंतसुख और अनन्तवीर्य का लाभ करके अर्हन्त परमात्मा बन जाता है। इसीलिये इन चारों कर्मों को अघातिया कर्म कहते हैं।

यद्यपि अघातिकर्म जीव के स्वरूप का घात नहीं करते, परन्तु जीव के साथ जबतक उनका उदयादिरूप से सम्बन्ध रहता है जीव तब तक मुक्त नहीं होता है। इन कर्मों की स्थिति पूर्ण होते ही जीव नियम से कर्मों की कड़िया टूटने पर पूर्ण स्वतंत्र होकर मुक्त या सिद्ध बन जाते हैं। इन अघातिया कर्मों का निम्नप्रकार संक्षिप्त स्वरूप है।

कम्मकय-मोहवड्ढिय संसारम्हि य अणादि जुत्तम्हि।
जीवस्स अवट्ठाणं करेदि आऊ हलिव्व णरं।
गदिआदि जीव भेदं देहादी पोग्गलाण भेदं च।
गदियंतरपरिणमनं करेदिणामं अणेयविहं ॥
संताण कमेणागय जीवायरणस्स गोदमिदि सण्णा।
उच्चं णीचं चरणं उच्चं णीचं हवे गोदं।
अक्खाणं अणुभवण वेयणियं सुहसरूवयं सादं।
दुक्खसरूवमसादं तं वेदयदीदि वेदणियं ॥

कर्मकाण्ड = गाथा ११, १२, १३, १४

भावार्थ – कर्मों के उदय से ही जिव का अस्तित्व है और दर्शनमोह तथा चारित्र मोहनीय कर्मों के

उदय से जो वृद्धि को प्राप्त हो रहा है वह संसार अनादि है। उस संसाररूपी कारागृह में आयु कर्मसेही जीव नरक तिर्यंच मनुष्य और देवगति पर्यायों में रुका रहता है। इसी से अर्हन्त अवस्था प्राप्त होने पर भी जीव मनुष्य पर्याय में प्राप्त होनेवाले औदारिक शरीर में मनुष्यायु की समाप्ति तक रुका रहता है। और आयु के अन्तिम निषेकोदय होते (आयु कर्म की निर्जरा होने पर) ही वह मुक्त हो जाता है।

नामकर्म चित्रकार की तरह अनेक कार्यों को किया करता है। यह कर्म नारकी वगैरह जीव की पर्यायों के भेदों को औदारिकादि शरीर के भेदों को तथा जीव के एक गति से दूसरी गतिरूप परिणमन को कराता है। इस कर्मका जीव के साथ चौदहवें गुणस्थान तक संबन्ध बना रहता है। इस कर्म द्वारा निर्मित औदारिक शरीररूप कारागृह से मुक्त होने पर ही जीव सिद्धावस्था को प्राप्त करता है। कुल की परिपाटी के क्रम से चले आये जीव के आचरण को गोत्र कहते हैं। उस कुल परंपरा में ऊंचा आचरण होवे तो उसे उच्चगोत्र कहते हैं और यदि नीच आचरण होवे तो नीच गोत्र कहते हैं। इस कर्म से भी जीव के विकास में कोई बाधा नहीं होती है।

स्पर्शनादि इन्द्रियों का अपने अपने स्पर्शादि विषयों का अनुभव करना वेदनीय कर्म है। वेदनीय कर्म के सातावेदनीय और असातावेदनीय दो भेद हैं। उनमे दुखरूप अनुभव कराना असातावेदनीय है और सुखरूप अनुभव कराना सातावेदनीय है। अर्थात् जीव को सुख दुखरूप अनुभव वेदनीय कर्म द्वारा हुआ करता है। इस प्रकार संसारि जीव का कर्मों के साथ अनादिसे सम्बन्ध चला आरहा है। योग के निमित्त से जो विस्रसोपचय पुद्गल द्रव्य वे पुद्गल स्कंध जो योगों का निमित्त पाकर जीव के साथ सम्पर्क स्थापित कर लेते हैं आत्मप्रदेशों के साथ सम्बन्धित होते हैं, वे पुद्गल स्कन्ध आत्मासे सम्बद्ध होते ही कर्म कहलाने लगते हैं और तत्काल ही उसी योगबल से उस कर्म द्रव्य का ज्ञानावरणादिरूप से आठ भेदमें तथा १४८ प्रभेदों में विभाग हो जाता है। कर्मद्रव्य के इस भेद-प्रभेदरूप स्वभाव भेद का नाम ही प्रकृतिबन्ध है अर्थात उस कर्मवर्गणा में विकारी जीव के सम्पर्क से जीव के ज्ञानादि गुणों के घात करने और परतंत्र बनाये रखने का स्वयं स्वभाव निर्मित होता है। कर्मों में इस प्रकार की शक्ति का बना रहना ही प्रकृतिबन्ध है। आत्मा के प्रदेशों के साथ कर्मप्रदेशों का घुल मिल जाना ही प्रदेशबन्ध है। आत्मा के साथ इन कर्मों का इसी स्वभाव से बने रहने की कालमर्यादा का निर्माण जीवके क्रोधादि कषायों पर आधारित रहता है। प्रकृतिबन्ध के समय जीव के जिस तरह के तीव्रादि संक्लेश परिणाम रहते हैं कर्मों में वैसी ही ज्यादा और कम स्थिति पड़ती है इसी को स्थितिबन्ध कहते हैं। और उसी कषायानुसार इन कर्मों में फल देने की शक्ति का निर्माण होता है। कर्मोके उदय होनेपर ही जीवों को बद्ध कर्मों का फल मिलता है इस कर्मफलानुभव का नाम ही अनुभागबन्ध है। इस प्रकार एक समय में योगों द्वारा प्राप्त कर्म द्रव्य में चार प्रकार की शक्ति आविर्भूत हो हेती, जिसे प्रकृति बन्ध स्थिति बन्ध अनुभाग बन्ध, और प्रदेशबन्ध कहते हैं। चारों बन्धोंमें अनुभागबन्ध ही अर्थात कर्मों का विपाक ही जीव को सुखी दुखी करने में निमित्त होता है।

कर्मों की चार अवस्थायें

बन्धावस्था को प्राप्त प्रकृतियों के उदय का फल जीव को विभिन्न समय और अवस्थाओं में प्राप्त हुआ करता है। एक सौ अठतालीस प्रकृतियों में से औदारिक शरीर से लेकर स्पर्श नाम तक ५० तथा निर्माण आतप उद्योत, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ प्रत्येक साधारण, अगुरु लघु, उपघात परघात इन नामकर्म प्रकृतियों के उदय का फल जीव को पुद्गल के माध्यम से ही मिलता है। इसीलिये इन प्रकृतियों

को पुद्गलविपाकी कहते हैं। जैसा कि निम्न आगम वाक्य से स्पष्ट है।

देहादी फासंता पण्णासा णिमिणताव जगलंच।
थिर सुह-पत्तेय दुग अगुरुतियं पोग्गल विवाई ॥ कर्मकाण्ड गा. ४७

नरकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु और देवायु इन चारों आयु कर्म की प्रकृतियों का बन्ध होने पर इनके उदय का फल जीव को नरकादि अवस्था में ही प्राप्त होता है। इसीलिये इन प्रकृतियों को भवविपाकी संज्ञा है। प्रत्येक आयु का उपभोग जीव को जन्मान्तर उसी जाति की पर्याय में प्राप्त होता है। नरकायु का फल नरकपर्याय में ही प्राप्त हो सकता है। तिर्यंच आदि किसी भी अवस्था में नरकायु का उदय नहीं हो सकता है इसी तरह बाकी तीनों आयु कर्म की प्रकृतियों का नियम है। नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और देवगत्यानुपूर्वी नाम कर्म की इन चार प्रकृतियों का परिपाक (उदय) मरने के पश्चात् नवीन जन्म धारण करने के लिये परलोक को गमन करते हुए जीव के मार्ग में होता है इसीसे इन प्रकृतियों को क्षेत्र विपाकी कहा गया है। जैसा की निम्नलिखित आर्षवाक्य से सिद्ध है।

आऊणी भव विवाई खेत्त विवाई हुय आणु पुव्वीओ।
अट्ठत्तरि अवसेसा जीव विवाई मुणेयव्वा ॥ कर्मकाण्ड गा ६३८

भावार्थ—नरकादि चार आयु भवविपाकी हैं, क्योंकि नारकादि पर्यायों के होने पर ही इन प्रकृतियों का फल प्राप्त होता है और चार आनुपूर्वी क्षेत्र विपाकी हैं। अवशेष रची ७८ प्रकृतियां जीवविपाकी हैं। इन अठहत्तर प्रकृतिओं का फल जीवको नारकादि पर्यायों में प्राप्त होता है। वे प्रकृतियां नीचे लिखे अनुसार हैं।

वेदणिय-गोद-घादीणेकावण्णा तु णामपयडीणं।
सत्तावीसं चेदे अट्ठत्तरि जीवविवाई ॥

वेदनीय की २ गोत्रकर्म की २ घातिया कर्मों की ४७ और नाम कर्मकी तीर्थंकर आदि सत्ताइस प्रकृतियों का फल जीव ही मनुष्यादि पर्यायों में उपार्जित करता है। इस प्रकार कर्म प्रकृतियों का परिपाक उनकी निजकी शक्ति से हुआ करता है।

कर्मों का आबाधा काल

योग और कषायों से कर्मों का बन्ध होते ही वे कर्म तुरन्त फल नहीं देते उसके लिये विशेष नियम है। इस नियम को आबाधा काल कहते हैं अर्थात् अल्पवा अधिक स्थिति बन्ध के अनुसार अल्प व अधिक चिरहकाल के अनन्तर कर्म उदय में आने लगते हैं। आबाधा का निम्न प्रकार लक्षण है।

कम्मसरूवेणागय दव्वे णय एदि उदय रूवेण।
रूवेणुदीरणस्स य आबाहा जाव ताव हवे ॥

भावार्थ—कार्माण शरीर नामा नामकर्म के उदय से योग द्वारा आत्मा में कर्म रूपसे प्राप्त हुए पुद्गल द्रव्य जब तक उदय से अथवा उदीरणारूप से परिणत नहीं होते उतने काल को आबाधा कहते हैं। कर्म प्रकृतिओंकी आबाधा के विषय में आगमोक्त विधि इस प्रकार है।

उदयपडिसत्तण्हं आवाहा कोडकोडि उवहीणं।
वाससयं तप्पडि भागेणय सेसट्ठिदीणंच ॥

जिन कर्म प्रकृतियों की एक कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति बन्धती है उन कर्मों की सौ वर्ष प्रमाण आबाधा निमित होती है। इस विधि से त्रैराशिक नियमानुसार कर्म स्थिति के प्रमाण से न्यून व अधिक आबाधा निकाली जाती है। परन्तु जिन कर्मप्रकृतियों की उत्कृष्ट स्थिति अन्तःकोडाकोडी प्रमाण बन्धती है, उनकी आबाधा अन्तर्मुहूर्त मात्र होती है। समस्त जघन्य स्थितियों की आबाधा स्थिति से संख्यात गुणी कम होती है।आयुकर्म की आबाधा के विषय में निम्नप्रकार नियम है।

पुव्वाणं कोडितिभा गादासंखेपवद्धवोत्ति हवे।
आउस्स य आवाहाण ठिदिपडिभागमाऊस्स ॥

भावार्थ—आयु कर्म की आबाधा कोटपूर्व के तीसरे भाग से लेकर आसंक्षेपाद्धा प्रमाण अर्थात जिस काल से अल्पकाल नहीं है ऐसे आवली के असंख्यातवें भाग प्रमाण मात्र है। परन्तु आयु कर्म की आबाधा स्थिति के अनुसार भाग की हुई नहीं होती है। उदीरणा अर्थात कर्म स्थिति पूर्ण होने से पहले ही विशुद्धि के बलसे कर्मों को उदयावली में लाकर खिरादेना ऐसी हालत में आयु को छोडकर सातों कर्मों की आबाधा एक आवली मात्र है। बन्धी हुई तद्भव संबन्धी भुज्यमान आयु की उदीरणा हो सकती है। परन्तु आयु की यह उदीरणा केवल कर्मभूमिज मनुष्य और तिर्यंच के ही संभवित है। समस्त देव नारकी, भोगभूमिज मनुष्य और तिर्यंच के भुज्यमान आयु की उदीरणा नहीं होती है। कर्मभूमिज मनुष्य और तिर्यंचों का अकाल मरण भी होता है

अकाल मृत्यु

कुछ विद्वानों का आयु के विषय में ऐसा मत है कि आयु की स्थिति के पूर्ण होने पर ही जीवों का मरण होता है किसी भी जीव का कदलीघात मरण (अकाल मृत्यु) नहीं होती है। परन्तु जैनागम में अकाल मरण का प्रचुर उल्लेख मिलता है निम्नलिखित वाक्यों से अकाल मरण की पुष्टि होती है।

विसवेयणरत्तक्खय-भय- सत्थग्गहण संकिलेसेहिं।
उस्सासाहाराणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ ॥ गो. कर्म काण्ड गाथा ५७

आयुकर्म के निषेक प्रतिसमय समानरूप से उदित होते रहते हैं। आयु के अन्तिम निषेक की स्थिति के पूर्ण होने पर ही उसका उदय हुआ करता है और उसी समय जीव की यह पर्याय समाप्त हो जाती है। वर्तमान आयु के समाप्त होते ही परभव सम्बन्धी आयु का उदय प्रारम्भ हो जाता है उस आयु के उदय होते ही नवीन पर्याय प्राप्त हो जाती है। संसारी जीव के प्रत्येक समय कोई न कोई एक आयु का उदय अवश्य हुआ करता है।

वशीकरण

कर्म की सामान्यरूप से १० अवस्थायें मानी गई हैं। गोम्मटसार कर्मकाण्ड में इन अवस्थाओं को करण कहा गया है। उनका स्वरूप निम्नप्रकार है।

कम्माणं सम्बंधो बंधो उक्कट्टणं हवे वड्ढि ।
संकमणमणत्थगदी हाणी ओक्कट्टणंणाम ॥
अण्णत्थठियस्सुदये संछुहणमुदीरणाहु अत्थित्तं ।
सत्तंसकालपत्तं उदओहो दित्ति णिद्दिट्ठो ॥
उदये संकममुदये चउसुविदादुं कमेणणोसक्कं ।
उवसंतंचणिघत्तिं णिकाचिदं होदिजंकम्मं ॥

भावार्थ—कर्मद्रव्य का आत्मप्रदेशों के साथ ज्ञानावरणादिरूप से सम्बन्ध होना बन्धकरण है बद्ध कर्मों की स्थिति तथा अनुभाग के बढने को उत्कर्षण कहते हैं। बन्धक प्रकृति की स्थिति और अनुभाग का कम हो जाना अपकर्षण करण है। जिस के उदय का अभी समय नहीं आया ऐसी कर्मप्रकृति का अपकर्षण के बलसे उदयावली में प्राप्त करना उदीरणाकरण है। पुद्गल द्रव्य का कर्मरूप रहना सत्त्वकरण कहलाता है। कर्मप्रकृति का फल देने का समय प्राप्त हो जाना उदयकरण है। जिससे कर्म उदयावली (उदीरणा) अवस्था को प्राप्त न हो सके वह उपशान्त करण है। जिसमे कर्मप्रकृति उदयावली और संक्रमण अवस्था को न प्राप्त कर सके उसे निधत्तिकरण कहते हैं। जिससे कर्मप्रकृति की उदीरणा, संक्रमण, उत्कर्षण और अपकर्षण ये चारों अवस्थायें न हो सकें उसे निकाचितकरण कहते हैं। आयुकर्म मे संक्रमणकरण नहीं होता अर्थात् नरकादि की आयु बन्धने के अनन्तर वह आयु बदलकर तिर्यंगायु, मनुष्यायु और देवायुरूप से परिणामों के बदलने पर भी परिवर्तित नहीं हो सकती है। नरकादि की आयु की स्थिति में शुभाशुभ परिणामों से उत्कर्षणकरण और अपकर्षणकरण तथा अन्य सात भी करण आयुकर्म के होते हैं। बाकी समस्त कर्मों में दशकरण हो सकते हैं। गुणस्थानों की अपेक्षा प्रथम मिथ्यादृष्टि से लेकर अपूर्वकरण आठवें गुणस्थान तक १० करण होते हैं। अपूर्वकरण गुणस्थान से ऊपर सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान तक ७ करण ही होते हैं। इसके बाद सयोगकेवली तक संक्रमणकरण के बिना ६ करण ही होते हैं और अयोग केवली के सत्त्व और उदय दो ही करण पाये जाते हैं। इस तरह जीव के परिणामों के निमित्त से कर्मों की व्यवस्था होती है।

उपसंहार

समस्त द्रव्यों में परिणमनशील योग्यता है। इसी भावरूप योग्यता से ही समस्त द्रव्यों में निरन्तर उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य हुआ करता है। इसी स्वाभाविक परिणमन शीलता या भावरूप योग्यता से प्रत्येक द्रव्य पर्यायान्तर प्राप्त करता है। जीव द्रव्य और पुद्गल द्रव्य में भावरूप योग्यता के साथ ही क्रियारूप योग्यता भी पायी जाती है। जीव प्रदेशों का हलन-चलनरूप परिस्पंद होता है, उसे क्रिया कहते हैं और प्रत्येक वस्तु में होनेवाले प्रवाहरूप परिणमन को भाव कहते हैं। इसीसे तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रन्थों में जीव और पुद्गल दो द्रव्यों को सक्रिय मानकर अवशेष धर्म, अधर्म, काल और आकाश इन चार द्रव्यों को निष्क्रिय बतलाया गया है। क्रियावतीशक्ति के कारण ही जीव क्रियावान पुद्गल द्रव्यके निमित्त से ज्ञानावरणादि तत्त्वरूप से स्वयं परिवर्तित होता है अर्थात् समस्त तत्त्वों में जीव का अन्वय पाया जाता है, इसलिये जीवही उनका आधार है। जीव द्रव्य स्वतः सिद्ध है, अनादि अनंत है, अमूर्तिक है और ज्ञानादि अनन्त धर्मों का अविच्छिन्न आधार होनेसे अविनाशी है। परन्तु पर्यायार्थिक दृष्टि से जीव मुक्त और अमुक्त दो भागों में विभक्त है।

जीव अनादिसे ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से मूर्च्छित होकर आत्मस्वरूप को भूले हुए हैं और राग-

द्वेषादिरूप परिणत होकर बद्ध होते हैं, अत एव संसारी हैं। जैसे जीवात्मा अनादि है और जड पुद्गल भी अनादि है, वैसे ही जीव और कर्म इन दोनोंका बन्ध भी अनादि है, क्योंकि जीव और कर्मका ऐसा ही सम्बन्ध अनादिसे चला आरहा है। यदि जीव पहले से ही कर्मरहित माना जावे तो रागादि विभावरूप अशुद्धि के अभाव में उसके बन्ध का अभाव मानना पडेगा और यदि शुद्ध अवस्थामें भी उसके बन्ध माना जावेगा तो फिर जीवको मोक्ष कैसे प्राप्त हो सकेगा। इस तरह मुक्ति का अभाव मानना पडेगा। इसी प्रकार पुद्गल द्रव्यको भी यदि सर्वथा शुद्ध मान लिया जाता है, तो जैसे बिनाकारण के आत्मा के सहजरूप से ज्ञान प्राप्त होता है, वैसे ही इसमे अकारण क्रोधादि प्राप्त होने लगेंगे। और उस बन्धके कारणभूत क्रोधादिक के निर्निमित्त पाये जाने से वाली बन्ध शाश्वत होगा अथवा क्रोधादि के अभाव माननेपर द्रव्य और गुणका अभाव मानना पडेगा। इसलिये जीव और कर्म का अनादि सम्बन्ध है। यही बात पञ्चाध्यायी में पंडित राजमल्लजी ने निम्नरूप से प्रकट की है।

बद्धोयथा ससंसारी स्यादलब्धस्वरूपवान्। मूर्च्छितोऽनादितोऽष्टाभिर्ज्ञानाद्यावृतिकर्मभि:॥
यथानादि:स जीवात्मा यथानादिश्चपुद्गल:। द्वयोर्बन्धोऽप्यनादि: स्यात् संबंधो जीवकर्मणो:॥
तद्यथायदिनिष्कर्मा जीव:प्रागेव तादृश:। बन्धाभावोऽथ शुद्धेऽपि बन्धश्चेन्निर्वृति:कथम्॥
अथचेत्पुद्गल: शुद्ध:सर्वत:प्रागनादित:। हेतोर्विना यथाज्ञानं तथा क्रोधादिरात्मन:॥
एवं बन्धस्यनित्यत्वंहेतो: सद्भावतोऽथवा। द्रव्याभावो गुणाभावो क्रोधादीनामदर्शनात्॥

जिस प्रकार कोई किसी का उपकार करता है और दूसरा उसका प्रत्युपकार करता है। वैसेही अशुद्ध रागादि भावों का कारण कर्म है और रागादिभाव उस कर्म के कारण हैं आशय यह है कि पूर्वबद्ध कर्मके उदय से रागादिभाव होते हैं और रागादिभावों के निमित्तसे नवीन कर्मो का बन्ध होता है। इन आये हुए नवीन कर्मों के परिपाक होने से फिर रागादिभाव होते है और उन रागादिभावों के निमित्तसे पुन: अन्य नूतन कर्मोंका बन्ध होता है। इस प्रकार जीव और कर्म का सम्बन्ध सन्तान की अपेक्षा अनादि है और इसीका नाम संसार है। वह संसार जीव के सम्यग्दर्शनादि शुद्ध भावों के बिना दुर्मोच्य है। पंचाध्यायी में निम्नरूप से यह विषय प्रगट किया गया है।

जीवस्याशुद्धरागादिभावानां कर्मकारणम्।
कर्मणस्तस्य रागादिभावा: प्रत्युपकारिवत्॥
पूर्वकर्मोदयाद् भावोभावात् प्रत्ययसंचय:।
तस्य पाकात्पुनर्भावो भावाद् बन्ध: पुनस्तत:॥
एवं सन्त ततोऽनादि: सम्बन्धो जीवकर्मणो:।
संसार:सच दुर्मोच्यो बिना सम्यग्दृगादिना॥
न केवलं प्रदेशानांबन्ध: स्याद् सापेक्षस्तद्द्वयोरिति॥

यद्यपि जीव स्वभावत: अमूर्त और चैतन्य स्वरूप है तथापि उसमें अनादिकालीन ऐसी योग्यता है जिससे वह जड मूर्तिक कर्म से बन्धता है और कर्म भी स्वभावसे ऐसी योग्यतावाला है जिससे जीव से सम्बद्ध होकर जीव की विकृतिमें निमित्त होता है। जीव के अमूर्त ज्ञान गुण का मदिरादिमूर्त द्रव्य के सम्बन्ध से मूर्च्छित होना प्रत्यक्ष से देखा जाता है उसी प्रकार सदात्मक अमूर्त जीवको विकृति में निमित्त होता है। अमूर्त जीव का सदात्मक मूर्तकर्म से बन्ध होने में कोई बाधा प्रतीत नहीं होती है, यद्यपि जीव का इस बन्धरूप संसार से उन्मुक्त होना कठिन प्रतीत होता है, परन्तु जीव का कर्मबन्ध

से मुक्त होना असंभव नही है। जब जीव स्वानुभव के बलसे सम्यग्दर्शनादिरूप से परिणमता है तब संसार की कारणभूत जीव की विभाव परिणति का पूर्ण अभाव हो जाता है और जीव मुक्त होकर सिद्ध परमात्मा बन जाता है।

इस ग्रन्थ में कर्मों की कुल १४८ उत्तर प्रकृतियों में बन्ध और उदय के समय शरीर से अविनाभाव सम्बन्ध रखनेवाले पांच बन्धन और पांच संघात अलग नहीं दिखाये जाते शरीर बन्धन में ही उनका अन्तर्भाव कर लिया जाता है। इसी तरह पुद्गल के २० गुणों का अभेद विवक्षासे वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श में ही अन्तर्भाव होता है। इस तरह कुल २६ प्रकृतियों के घटाने पर १२२ प्रकृतियां ही उदय योग्य मानी गई है। और बन्धावस्था में सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व मिथ्यात्व से पृथक नहीं है, अतः बन्ध योग्य कुल १२० प्रकृतियां ही मानी गई हैं। प्रथम गुणस्थान में तीर्थंकर, आहारक शरीर आहारक अंगोपांग इन तीनों प्रकृतियोंका बन्ध नहीं होता इसलिये सिर्फ ११७ प्रकृतियां ही इस गुणस्थान मे बन्धने योग्य मानी गई हैं।

❖ चतुर्थ गुणस्थान और पंचमादि सभी गुणस्थानों मेंजो १४८ आदि प्रकृतियों को सत्ता दिखाई गई है वह उपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा से कथन किया गया है। क्षायिक सम्यक्त्व की विवक्षा में मिथ्यात्वादि सात प्रकृतियों का क्षय हो जाने से सात प्रकृतियां कम हो जाती हैं।

कर्मबन्धादियन्त्र

इस यन्त्र द्वारा कर्मप्रकृतियों के बन्ध–बन्धव्युच्छित्ति आदिका गुणस्थान क्रमसे उल्लेख किया गया है।

क्र. नं.	गुणस्थान का नाम	बन्ध संख्या	बन्ध व्युच्छित्ति संख्या	उदय संख्या	उदय व्युच्छित्ति संख्या	सत्तासंख्या	सत्ता व्युच्छित्ति संख्या
१	मिथ्यात्व	११७	१६	११७	५	१४८	०
२	सासादन	१०१	२५	१११	९	१४५	०
३	सम्यग्मिथ्यात्व	७४	०	१००	१	१४७	०
४	असंयतसम्यग्दृष्टि	७७	१०	१०४	१७	१४८	१
५	देशविरत	६७	४	८७	८	१४७	१
६	प्रमत्तसंयत	६३	६	८१	५	१४६	०
७	अप्रमत्तसंयत	५९	१	७६	४	१४६	४
८	अपूर्वकरण	५८	३६	७२	६	१४२	०
९	अनिवृत्तिकरण	२२	५	६६	६	१४२	०
१०	सूक्ष्मसांपराय	१७	१६	६०	१	१४२	०
११	उपशान्तमोह	१	०	५९	२	१४२	०
१२	क्षीणकषाय	१	०	५७	१६	१०१	१६
१३	सयोग केवली	१	१	४२	३०	८५	०
१४	अयोगकेवली	०	०	१२	१२	८५	८५

लेखक– डॉ. हेमचंदजी जैन कारंजा जी. अकोला महाराष्ट्र.

इस ३४ स्थान दर्शन ग्रंथ के प्रकाशक ब्रम्हचारी उलफतराय जैन रोहतक (हरीयाना) की जीवनी:–

१) तीन अगस्त सन १८९० को सोनीपत नगर जी. रोहतक (हरीयाना) मे लालाबुधुमलजी जैन अग्रवाल के घर जन्म हुवा । ६ वर्षकी आयुमे आपने अपने फुफाजी लाला उदमीरामजी जैन रोहतक के घर दत्तकपुत्र बने, बचपनसेही धर्मसंस्कार हृदयमे उत्पन्न होते रहे है ।

२) रोहतक गव्हर्मेन्ट हायस्कूलमे मैट्रीक तक अंग्रेजी हिन्दी, उर्दु, पारसी संस्कृत आदिका अध्ययन कीया । व्यापारी भाषा मूडी हीन्दी का भी ज्ञान प्राप्त कीया । बम्बईमे व्यापारी क्षेत्र तथा महाराष्ट्र, गुजरातमे धार्मीक संबंध के कारण गुजराती, महाराष्ट्रीयका भी ज्ञान प्राप्त कीया :

३) १६ वर्ष की आयुमे सोनीपत निवासी एक जैन अग्रवाल कन्यासे बिवाह हुवा जो ६ मास के बाद मरण को प्राप्त हो गयी ।

४) विवाहके कुछ समय बाद दत्तक पिताजीकाभी स्वर्गवास हो गया उनका व्यापार संभालने के लीए विद्या अध्ययन छोडना पडा ।

५) कुछ समय बाद दुसरा विवाह रेवाडी जी. गुडगांवा निवासी लाला प्रभुदयालजी दीगंबर अग्रवाल जैन की कन्या से हुवा । दैव योगसे वह भी ७ बरस तक बाद रोगसे पीडीत रही । उसके चार भाई है १) बाबु करमचंदजी जैन ॲडव्होकेट सुपरीमकोर्ट दील्ली । २) बाबु मेहेरचंदजी जैन ॲडव्होकेट गुडगांवा (हरीयाना) ३) बाबु एस. सी. जैन भारत केन्द्र सरकारके इन्शुअरंस खातेके हेड रहे है । ४) बाबु जे सी. जैन दीर्घकाल तक टाइम्स ऑफ इन्डीया के जनरल मेनेजर रहे है ।

६) तीसरा विवाह २४ वर्ष की आयुमे गुहाणा जी. रोहतक (हरीयाना) के दीगंबर जैन कन्यासे विवाह हुवा । जिनके भाई लाला चन्द्रसेन, और लाला हरनामसींग है । इस तीसरी देवी का नाम सुख देविजी हैं । इन्होने ४ पुत्र दो कन्याओंको जन्म दिया. एक कन्या सुपुत्री पदमादेवी स्वर्गवास होगई शेष पांच बहन भाई इस प्रकार हैं । १ पी. सी. जैन एरोड्राम ऑफीसर कलकत्ता २ श्रीपाल जैन व्यापारी बम्बई ३) डॉ. एस एस. जैन एफ आर. सी. एस. लन्डन एडिन बर्ग ४) पि. के. जैन टाइम्स ऑफ इंडिया बंबई को पुना ब्रांचके ऑफिसर है । ५) श्रीमती जयमाला देवी जिसने बी. ए. डिगरी प्राप्त किया है । बाबु इन्द्रकुमारजी एम. ए. मेरठ की धर्मपत्नि बनी है ।

७) प्रकाशक ब्रम्हचारी उलफतराय ३० वर्ष की आयुमे व्यापार के लिये बंबई आगये वहां गेहुं, अलसी, रुई, चांदी सोनेकी दलाली का काम कीया । बेंकों को हाजर चांदी सोना गीन्नी की भी सप्लाय की,

८) व्यापार के साथ साथ दिगंबर जैन भोलेश्वर मंदीर मे प्रातःकाल, गुलालवाडी मंदीरजी मे रात्रीको तीस बर्षतक निजपर कल्याण के रुपमे आनररी तौर पर शास्त्र प्रवचन कीया । जिस समय संघपती सेठ पुनमचंद घासीलालजी ने सिखर समेद तीर्थ यात्रा संघ निकाला साथ मे चारित्र चक्रवर्ती साम्राज्य नायक तपो मूर्ती सिद्धांत पारंगत १०८ श्री आचार्य शांतीसागरजी मुनीमहाराजभी संघ के साथ पधारे थे उस समय ब्रम्हचारी उलफतरायजीने ६ मास तक पैदल यात्रा करके संघ सेवासे पुण्य लाभ लिया था ।

९) ५९ वर्ष के आयुमे १०८ आचार्य श्री वीरसागरजी मुनी महाराजसे सवाई माधवपूरमे दुसरी प्रतिमा धारणकर घरका कामकाज छोडदिया घरमेही उदासीन रुपसे रहने लगे ।

१०) ६३ वर्ष के आयुमे महाराष्ट्र प्रांतके सातारा जिल्हे के लोनद मुकामपर चारित्र्यचक्रवर्ती साम्राज्यनायक १०८ आचार्य श्री शांतीसागरजी महाराजके चरण कमलोंमे ७ वी प्रतिमा धारण करके घर छोड दिया । देश विदेश भ्रमण करने लगे ।

११) ६४ वर्ष की आयुमे महाराष्ट्र प्रांतके नागपूर नगर से २८ मैल पर स्थित रामटेक अतिशय क्षेत्रस्थित १००८ श्री महावीर दिगंबर जैन गुरु कुलका अधिष्ठाता पनेका कार्य एक वर्ष तक संभाला ।

१२) ७० वर्ष के आयुमे महाराष्ट्र प्रांत अकोला जिल्हेके कारंजा नगरमे ज्ञानसुर्य आभिक्षण ज्ञानोपयोगी १०८ श्री आदिसागरजी महाराज इसग्रंथके संग्रहकर्ता जिनकी आज्ञा से इस ग्रंथ निर्माण मे सहायता संग्रह कर्ता के रुपमे सहयोग दिया ।

१३) ७८ वर्ष के आयुमे उपरोक्त गुरु महाराजजीकी आज्ञा पाकर यह–२४ स्थान दर्शन ग्रंथका प्रकाशन कर पुज्य त्यागी महाराज, जैन मंदिरो, जनताके कर कमलोमे उपरोक्त ग्रंथ भेट कर रहा हुं । धनउपार्जन का कोई लक्षनही हैं । निजपर कल्यानही एक हेतु हैं । कर्म सिद्धांत बहोत गंभीर विषय है । संग्रह कर्ता गुरुदेव दक्षिण में थे, प्रकाशक उत्तर प्रदेशके मेरठ नगर मे थे गुरुदेवकी देखरेख न होने के कारण बहोत भूल रह गई है जिसका शुद्धी पत्रक तयार करके इस ग्रंथ के अंतमे जोड दिया गया है । आशा है इस भूल और अज्ञान के लिये जनता-क्षमा प्रदान करेगी । जो भूल अभी रह गयी हो उसको सुधार करके हमको या प्रकाशक को सुचित करनेकी कृपा प्रदान करेगी ।

लेखक ब्रम्हचारी उलफतराय दिगंबर जैन इस २४ स्थान दर्शन ग्रंथके सहायक
संग्रह कर्ता व प्रकाशक जन्म भुमि सोनीपत दत्तक भुमि रोहतक (हरीयाना)

॥ लेख माला ॥

१) (क) मानवताकानाशक एक भाव और मानवताके रक्षक तीन भाव इस प्रकार है । (ख) दुर्योधनको पहिला रौद्ररस चढा – सेनाबल – कपिबल – जनबल को शक्ती शाली जानकर पांच पांडवको पुर्णतया नष्ट करके चक्रवर्ती राजा बननेका भाव बना जैसा वर्तमान समय मे कुछ व्यक्ति संसारको नष्ट करके नई समाज वादी दुनिया बसानी चाहते है । भरें दर्बारमे जहां धृतराष्ट्र भीष्म पिता मय द्रोनाचार्य आदि तथा सब प्रजा बैठी थी–द्रोपदी का चीर हरण करके पांच पांडवका मनोबल गिराकर उनको नष्ट करके पूर्ण राजपर अधिकार करना चाहता था । यह भावना पहिला रौद्र रसबल था । उसको इस रौद्र रसमे हि पुर्ण शक्ती दिखाई दे रही थी ।

ग) परंतु द्रोपदीको इस रससे अनंत गुनाबल भगवत भक्ति मे दिखाई दे रहा था जिस समय चीर हरण हो रहा था द्रोपदी की भक्ति भगवानके चरणोमे लगी हुयी थी उस भक्ति रसका यह प्रभाव हुआ कि दुशासन चीर खीचते खीचते गिर पडा चीर हरण नही हो सका आकाश से देव लोग पुष्पों की वर्षा करने लगे ।

घ) जब इस अन्याय को देखकर भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव जोश मे आकर आपेसे बाहर होकर दुर्योधन को नष्ट करनेके लिये उत्तेजित होते थे उस समय युधीष्टीर महाराजकी दृष्टि तिसरे शांति रस पर लगी हुयी थी जो ये समझ रहे थे शांती रस मे अपूर्व बल होता है । एक पापी अपनेहि पापसे नष्ट हो जाता हैं । और ऐसाही हुआ अंतमें दुर्योधन आदि सौ भाईयोका पुर्णतया नाश हो गया

ङ) जब कालांतर मे पांच पांडव नग्न दिगंबर मुनी बनके शत्रुंजय पर्वतपर ध्याना रुढ थे उस समय दुर्योधनके भानजोनें अपने सौ मामा ओंका बदला लेनेंके लिये बाईस लोहेके आभुषणोंको आग पर तपाकर पांचों पांडव के शरीरमे पहना दिये जब शरीर जलने लगा तब पांच पांडवने शरीर का मोह छोड कर चौथे आत्मरसमे तल्लीन हो गये उसी समय ३ पांडव कर्म काटकर मोक्ष चले गये २ पांडव सर्वार्थ सिद्धी चले गये । अगले भवमे वह भी मोक्ष चले जायेंगे ।

सुचना:– आज इस नीति पर भारत सरकार चल रही है । चारो ओरसे सर्व विषयपर अपना झेंडा फैराने के लिये भारत पर तरह तरहके उपद्रव चला रहें है । परंतु भारत सरकार युधिष्टर महाराजकी तरह बडे धैर्य और शांतीसें अपने देशकी रक्षा तो कर रहे है परंतु उत्तेजित होकर कीसी दुसरे देशपर आक्रमन करनेका भाव स्वप्नमें भी नही सोचते

॥ लेख नंबर २ ॥

संसार के नव रस:– संसारवर्धक ४ रस है । संसार विरोधक ४ रस है । और मोक्ष प्राप्तिका एक रस है । कुल इस तरह ९ रस हुये ।

१) श्रृंगार रस:- पुण्यभावसे मिले धन, पुत्र, परिवार, वस्त्र सवारी, मकान, बागबगीचे, राज्य वैभव लक्ष्मी प्राप्त कर के निज कल्याण मार्ग, भूलजाना इससे संसार भ्रमण चलताही रहता है।

२) रौद्र रस:- मानवताको भूलकर दानवतासे सर्व संसारपर छाजानेका भाव चोर डाकू अन्यायी राजा बालक बालकाओं स्त्री पुरुष आदिको हरण करीओ पर बलात्कार है। अंतमे ऐसे व्यक्ति योंको नरक तिर्यंच गति मे भारी दुख भोगना पडता है। इस संसार मे यही रस जोरसे छाया हुआ है।

३) भय रस:- बलवान अन्याय करता हुआ भयभीत रहता है। कमजोर कों बलवान सहायक न मिल जावे और बलहीन भय भीत होता है। जन, धन, जीवन, धर्म प्रतिष्ठा से कैसे बचे ?

४) बिभित्स रस:- जब डाकू छातीपर पिस्तौल रखकर चलता है। तालो मांगता है, धन पूछता है उस समय बिचार धारायें नष्ट हो जाती है। तो समझ नही रहती है क्या करु ?

सूचना:- उपर के चारो रस उत्तरोत्तर संसार दुख तथा भ्रमण बढाते है नरक निगोद पहुँचाते हैं।

५) करुणा रस:- दुखी रोगी तथा जिस पर बलवान अन्याय कररहा हो उसकी रक्षा करने का भाव हो जाना।

६) वीर रस:- बलवान की शक्ती से न घबराकर अपना तन मन धन सर्व कमजोर की रक्षा के लिये जोड देना और कम जोर को बचा लेना।

७) अदभुत रस:- कमजोर की जब अपनी घातक अवस्था से अचानक बलवान की सहायता से रक्षा हो जाती है। तो उस समय कमजोर को धर्म और भगवान पर पुर्ण श्रद्धा आ जाती है। तो भगवान की शक्ति अपरंपार है सच्चे रक्षक भगवान ही है।

८) शांति रस:- अचानक धन हानि इष्ट वियोग रोग जल प्रलय भूकंप स्वपर शत्रु आक्रमण चोर डाकू आक्रमण हो उस समय धैर्य नही छोडना शांति से रक्षा का प्रयत्न करना या आत्म ध्यान मे लीन हो जाना यह शांति रस कहलाता है।

सूचना:- ये चार रस धीरे धीरे पुर्व बंध कर्मो का रस क्षीण करते करते आत्म रस मे झुका लेते है।

९) आत्म रस:- इस मे आत्मा की दृष्टि निज आत्मरस में तल्लीन हो जाती है। सर्व कर्म नष्ट हो जाते है। आत्मा मोक्ष मे जाकर विराजमान हो जाती है।

॥ लेख नं ३ ॥

आत्मा की तीन अवस्थायें

(१) बहिरात्मा (२) अंतरात्मा (३) परमात्मा

१)- बहिरात्मा:- मिथ्यात्व अविरत प्रमाद कषाय और योग इनपांचो से जकडी हुई आत्मा अनंत संसार में भ्रमणकर रही है। यह आत्माएँ बहिरात्मा कहलाती है। वस्तु का स्वरुप उलटा दिखाई देता है। अपनी इच्छाओपर नियंत्रण नही होता है। सब प्रकार के जीवोकी विराधना होती रहती है। इच्छाऐंप्रबल होने से पाप बनता रहता है। कषाये मंद होने से पुण्य बंध होता रहता है। परन्तु आत्म स्वरुप ज्ञान नही हो पाता। इस अवस्था का नाम बहिरात्मा हैं।

२) अंतरात्मा:- मिथ्यात्व अन्याय अभक्ष्य घटनें से सम्यक्दृष्टि बनकर ११ प्रतिमा रुप देशव्रत २८ मूल गुण रुप सकलसंयम, द्वारा कर्म बंधसंसार भ्रमण ढीला होते होते १२ वे गुण स्थान के परिणाम हो जाते है। यहां संसार की वस्तुओंका राग पुर्ण नष्ट हो जाता है। ये अवस्थाएँ अंतरात्मा कहलाती है।

३) परमात्मा:- ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अंतराय का पुर्ण अभाव हो जाने से आत्मा का ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य गुण पुर्ण रुप से प्रगट हो जाता हैं। परन्तु जहा तक आयु अघातिया नाम गोत्र वेदनीय कर्म बाकी है। अरहंत अवस्था मे संसार मे ही रहते है। सकल परमात्मा कहलाते है। ऊपर कहे ४ अघातिया कर्म भी नष्ट हो जाते है तो वे मोक्ष मे चले जाते है। वहाँ उनका नाम निकल परमात्मा होता हैं।

॥ लेख नं. ४ ॥

जिनवाणी के ४ अनुयोग (भाग)

सभी अनुयोग प्राणियोंका कल्याण करता है ।

१) प्रथमानुयोग:– ये प्रकाश डालता है । कौन प्राणी निगोद से निकलकर अरहंत बनकर मोक्ष चला गया इस अनुयोग में आदि पुराण, उत्तरपुराण, पदमपुराण, हरिवंश पुराण आदि अनेक ग्रंथ हैं ।

२) चरणानुयोग:– ये प्रकाश डालता है । इस मार्गपर चलनेसे दानवता नष्ट होती चली जाती है । मानवता पथपर चलकर आत्मा परमात्मा बन जाती है । ५ मिथ्यात १२ अव्रत १५ योग २५ कषाय सब मिलकर, सत्तावन, आश्रव कहलाते है । वो ही संसार बढाते है और इनके निराकरण करनेके लिये तीन गुप्ति, पांच समिती, दस धर्म, १२ अनुप्रेक्षा २२ परिषहजय ५ चरित्र के सब मिलकर ५७ सम्वर कहलाते है । इनसे ही प्राणी मानवता पथपर चलकर कर्म को नष्ट करके भगवान बनजाता है । इसके आधीन सागार, अनागार, श्रावकाचार, मुलाचार आदि अनेक ग्रंथ है ।

३) करणानुयोग:– इस प्रकार से जाना जाता है इनके भाव भूल से आत्मा चार गति, पंचेंद्री, ६ काय में संसार में भ्रमण कर रहा है । उस कर्म सुधाको बतानेवाले षट खंडागम, धवल, महाधवल कर्म काण्ड, जीवबंध गोमटसार आदि कर्म बतानेवाले अनेक ग्रंथ उपलब्ध है ।

४) द्रव्यानुयोग:– विज्ञान है, जिसको आज की भाषामें सायन्स भी कहते है जो ये प्रकाश डालता है, वास्तविक आत्मा का क्या स्वरुप है । उसपर लक्ष्य हो जानेपर सब संसार, वस्तुओ से सहजही राग भाव हटजाने से निज आत्मरस प्रगट हो जाता है ।

सुचना:– कोई भी अनुयोग पढो अगर दृष्टि अपने आत्म ~~स्वरूप~~स्वरुप पर लगी रहेंगी तो सर्वही चारों अनुयोग कल्याण कारी हो जायेंगे । अगर दृष्टि आत्मरस से हटकर संसार रस पर लगी रहेंगी, तो किसी भी अनुयोग के पढनेसे आत्म कल्याण नही होगा, ।

५) निश्चय और व्यवहार धर्मका अनिवार्य सहयोग:–

१) निश्चय धर्म – अभेद, निर्विकल्प एकाग्र, निजस्वरुप आत्म.. की अवस्थायें है, इसका छद्मस्थ जीवो के अधिकसे अधिक अंतरमुहूर्त १ समय कम ४८ मिनिट भी है । इतने समय भी अगर उपयोग एकाग्र हो जाय तो केवल ज्ञान केवल दर्शन अनंत सुख अनंत वीर्य आत्मा के निज गुण प्रगट हो जाते है । अनंतानंत काल तक स्थिर रहते है ।

परन्तु

छद्मस्थ जीवोका उपयोग इतने समय एकाग्र नही रहकर चंचल अस्थिर डामाडोल होता रहता है, तब व्यवहार धर्म ही आत्माको अशुभ उपयोग मिथ्या देव गुरु शास्त्र श्रद्धा, हिन्सा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह, की निरगल तृष्णा रुप भावनाओ मे जाने से रोकता है । सत्य देव ,गुरु, शास्त्र, श्रद्धा-पंच पापों का श्रेणी बद्ध थोडा थोडा त्याग या महाव्रत रुप पुर्ण २८ मूल गुण रुप महाव्रत ५ इंद्री विजय ५ समिती ५ षटावश्यक ६ नग्नरहना १ भुमिशयन १ स्नान त्याग १ खडा रहकर भोजन लेना २४ घन्टे मे एक ही बार भोजन लेना, १ दंत मंजन नही करना १, केश लुंच (हाथ से केश उखाडना) कुल २८ मूल गुण व्यवहार चरित्र ही बताये गये हैं ।

प्रकाशक के बिना किसी संकेत के अपनी ज्ञान दान भावनाओं से इस ग्रंथ प्रकाशन मे द्रव्यदेने वालो की नामावली इस प्रकार है :–

५०० रु. सेठ मोतीलालजी गुलाब सावजी, नागपुर.

२०० रु. दख्खन व्हीन मोटर सर्वीस ट्रान्सपोर्ट कार्पोरेशन प्रोप्राटर मिर्जा ब्रदर्स चिकोडी जिल्हा बेलगाव (आंध्रप्रांत)

२०१ रु सेठ बनवारीलालजी गिरधारीलालजी जैन बेजानी, नागपुर

१०१ रु. श्रीमती कस्तुरीदेवी धर्म पत्नी श्री मानकचंदजी जैन कासलीवाल नागपुर

१०१ रु. „ सुमतीबाई किल्लेदार नागपूर

१०१ रु. „ मानकबाई धर्मपत्नी श्री नेमीचंदजी, पाटनी नागपूर

१०१ रु. „ चमेलीदेवी धर्म पत्नी श्री नानकचंदजी, जैन नागपूर

१०१ रु. श्रीमती तुलसीबाई धर्मपत्नी श्री कस्तुरचंदजी घनसोरवाले नागपुर
१०१ रु. श्रीयुत नेमगोडा देवगोंडा जैन, बेडकीहॉल ता. चिकोडी जि. बेलगांव (आंध्रप्रदेश)
१०१ रु. श्रीयुत सिंगई मूलचंदजी अध्यक्ष परवार मंदीर ट्रस्ट, नागपूर
१११ रु सेठ कल्लुमलजी पदमचंदजी मालिक फर्म सेठ नंदलालजी प्रेमचंदजी परवार नागपुर,
१७१९ रु.

।। प्रकाशक का आभार प्रदर्शन ।।

१) मैं ब्रम्हचारी उल्फतराय जैन रोहतक (हरियाणा) निवासी श्री १००८ महावीर भगवान के चरण कमलों को नमस्कार करके उनसे बार-बार प्रार्थना करता हूं। जिस तरह इस ग्रंथ के प्रकाशन और निर्माण में सहयोग देकर पुण्य उपार्जन करने का मुझे शुभ अवसर प्राप्त हुआ हैं, इसी तरह मेरी अंतिम समाधि भी आत्म रस पूर्वक सम्पन्न हो।

२) मैं ब्रम्हचारी नत्थूलालजी जैन बारा सिवनी (मध्यप्रदेश) निवासी का आभार प्रदर्शन करता हूं जिनके निमित्त और सहयोग से मुझें कारंजा जिल्हा अकोला (महाराष्ट्र प्रांत) में परम तपस्वी आभीक्षण ज्ञानोपयोगी ज्ञान सूर्य १०८ श्री आदिसागरजी महाराज जैन मुनि (जिन की जन्म भूमि शेडवाल जिला बेलगांव मैसूर प्रांत है) के दर्शन और चरण स्पर्श करनेका पुण्य अवसर प्राप्त हुआ।

३) मैं उपरोक्त मुनिमहाराज का भी परम कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस ग्रंथ का निर्माण करते हुए मुझे भी कुछ सहयोग देने का अवसर प्रदान किया और मुझे प्रकाशन करने की स्वीकारता प्रदान की।

४) समाज सेवी और भावुक वक्ता और लेखक आदरणीय डाक्टर हेमचन्दजी कारंजा जिल अकोला (महाराष्ट्र) निवासी का भी आभार प्रदर्शन करता हूं जिन्होंने मुझे समय समय पर इस ग्रंथ के प्रकाशन में सहयोग दिया और अंत में इस ग्रंथ को प्रस्तावना लिखने की भी कृपा की।

५) आदरणीय कारंजा जैन समाज कामी आभार प्रदर्शन करता हूं। जो समय समय पर मुझे प्रोत्साहन देते रहे। तथा आदरणिय श्री महावीर ब्रम्हचर्य आश्रम। कारंजा के प्राण दाल ब्रम्हचारी परमदानी श्रीयुत पं. माणिकचंदजी टाटियाजी का भी आभार प्रदर्शन करता हूं। जिन्होने इस ग्रंथ की प्रस्तावना लिखनेकी कृपा की है।

६) ग्रहस्थाश्रम के मेरे सुपुत्र प्रेमचंद (पी. सी.) जैन, एम. ए. विमान ऑफिसर कलकत्ता, श्रीपाल जैन व्यापारी बंबई, डाक्टर शांतिस्वरुप (एस. एस.) जैन बंबई, पिताम्बर कुमार (पी. के.) जैन (टाइम्स ऑफ इन्डीया की पुना ब्रांच के आफीसर,) सुपुत्री जयमाला देवी जो मेरठ नगर के आदरणीय श्री. इंद्रकुमारजी जैन एम. ए. की अर्धांगनि बनी, तथा श्री इंद्रकुमारजी जैन एम. ए. तया उनके पूज्य समाज सेवी पिता सेठ सुकुमालचंदजी का भी आभार प्रदर्शन करता हूं जिन्होने इस ग्रंथ के प्रकाशन मे मुझे असीम प्रोत्साहन दिया है और बहुत भारी परिश्रम किया हैं।

७) चिरंजीव हरनामसिंह जैन गोहाना ने (जिला रोहतक हरियाना प्रांत) निवासी जो (उपरोक्त मेरे सुपुत्र प्रेमचन्दजी के आदरणीय मामाजी हैं) अपना सब काम छोडकर ६ महीने मेरे साथ रहकर अपूर्व सेवा की और प्रकाशन में, सहयोग दिया।

८) परवार दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट के प्रधान श्रीयुत सिंघई मूलचन्दजी जैन नागपुर तथा आदरणीय पं. ताराचंदजी शास्त्री, न्यायतीर्थ मुख्याध्यापक दि जैन महावीर पाठशाला नागपुर और श्रीयुत मानिकचन्दजी मोतीलालजी जैन कासलीवाल नागपुर का भी आभार प्रदर्शन करता हूं जो मुझे हर समय इस काम में प्रोत्साहन देते रहे और आवश्यकता पडने पर भारी प्रकाशन कार्य में परिश्रम भी करते रहे।

९) मैं उन आदरणीय सज्जनों का भी परम कृतज्ञ हूं जिन्होंने मेरे किसी संकेत के बिना अपनी ज्ञान भक्ति के कारण इस ग्रंथ के प्रकाशन में कुछ द्रव्य भेंट किया। जिनके नाम की सूची इस ग्रंथ में अलग छापी गई है।

१०) मैं आदरणीय पं. ताराचंदजी शास्त्री न्यायतीर्थ का पुनः आभार प्रदर्शन करता हूं। जिन्होंने इस ग्रंथके ७९३ से ८४० पन्नों तक तथा प्रारंभिक पन्नोंका प्रूफ संशोधन बहुत परिश्रम करके ग्रंथ की छपाई की त्रुटियों को दूर करने की बडी कृपा की तथा मेरे बहुत आग्रह करनेपर कर्म सिद्धान्तपर एक अपूर्व लेख लिखने की भी कृपा दृष्टि की तथा जो पुस्तकें उनके मार्फत बिक्री होंगी वह मुल्य

पाठशालामें जमा कराने का भार उनपर रखा वह उन्होंने सहर्ष स्वीकार करने की कृपा की।

११) सि. मूलचंदजीने भी मध्यप्रान्त, राजस्थान तथा विदर्भ क्षेत्रके मंदिरों तथा १०८ पूज्य श्री मुनिराजों के करकमलोमेंभी अर्पण करनेका भार सहन करनेका आश्वासन देकर मुझे कृतार्थ किया। इस भारी प्रकाशन कार्यके संपादन करनेमे भी जब मेरा उत्साह गिरते देखा तब भी मेरे उत्साह को नहीं गिरने दिया। निरंतर मुझे प्रोत्साहित करते रहे। इन दोनों सज्जनोंकी प्रेरणासेही यह भारी काम सहज रुप सम्पन्न हो सका है। मैं इन दोनों महाशयोंकाभी पुनः आभारप्रदर्शन करता हूँ।

समाज सेवक
ब्रम्हचारी उल्फतराय जैन
प्रकाशक, रोहतक (हरियाणा)

- विषय-सूची -

विषय	पुस्तक का पन्ना नं.	विषय	पुस्तक का पन्ना नं.
मंगलाचरण	१)	औदयिक भाव २१	२३)
३४ स्थान नाम के उत्तर भेद कोष्टक संख्या	२)	पारणामिक भाव ३	२३)
३४ स्थान उत्तर भेद की नामावली	३)	अवगाहना	२३)
गुण स्थान नाम व स्वरुप	१०)	सामान्यजीव नामावली	२४)
१४ जीवसमास	१२)	मिथ्यात्व गुण स्थान	२५)
६ पर्याप्ति	१३)	सासादन ,, ,,	३३)
१० प्राण	१३)	मिश्र ,, ,,	३९)
४ संज्ञा	१३)	अव्रत ,, ,,	४३)
१४ मार्गणा	१४)	देश वृत ,, ,,	५१)
४ गति मार्गणा	१४)	प्रमत्त ,, ,,	५५)
५ इंद्री मार्गणा	१४)	अप्रमत्त ,, ,,	६०)
६ काय ,,	१४)	अपूर्व करण ,, .	६३)
१५ योग ,,	१४)	अनिवृति करण गुण स्थान	६६)
३ वेद ,,	१६)	सुक्ष्म सांपराय ,, ,,	७०)
२५ कषाय मार्गणा	१६)	उपशांत मोह ,, ,,	७३)
८ ज्ञान ,,	१६)	क्षीण मोह ,, ,,	७५)
७ संयम ,,	१७)	सयोग केवली ,, ,,	७८)
४ दर्शन ,,	१७)	अयोगकेवली ,, ,,	८१)
६ लेश्या मार्गणा	१७)	अतीत ,, ,, (सिद्ध भगवान)	८३)
२ भव्य ,,	१८)	नरक गति	८५)
६ सम्यक्त्व ,,	१८)	त्रियंच ,, ,,	९०)
२ संज्ञी ,,	१९)	मनुष्य ,, ,,	११३)
२ आहारक ,,	१९)	देव ,, ,,	१५५)
१२ उपयोग	१९)	गतिरहित (सिद्धगति)	१७२)
१६ ध्यान	२०)	एक इंद्रीय	१७४)
५७ आश्रव	२१)	दो ,,	१८०)
५३ भाव	२२)	तीन ,,	१८५)
२ औपशमिक भाव	२२)	चार ,,	१९०)
९ क्षायक भाव	२२)	असंज्ञी पचेंद्री	१९५)
१८ क्षयोपसमिक भाव	२२)	संज्ञी पचेंद्री	२००)

इंद्रिय रहित (सिद्ध भगवान) २०५)

पृथ्वी कायक २११)
जल ,, २२१)
अग्नि ,, २२४)
वायु ,, २२८)
वनस्पति ,, २३१)
त्रस ,, २३४)
अकायक (सिद्ध जीव) २४६)

सत्य उभय मनोयोग २४८)
असत्य ,, ,, २५६)
सत्य वचन योग २६२)
असत्य उभय वचन योग २६६)
अनुभय ,, ,, २७०)
औदारिक काययोग २७५)
औदारिक मिश्र ,, २८२)
वैक्रियक ,, २८९)
वैक्रियक मिश्र ,, २९४)
आहारक काययोग २९९)
आहारक मिश्र ,, २९९)
कार्मण ,, ३०३)
अयोग ३१२)

पुरुष वेद ३१४)
स्त्री ,, ३२७)
नपुंसक ,, ३३४)
अपगत ,, ३४५)

अनंतानुबंधी कषाय ३५२)
अप्रत्याख्यानी ,, ३६२)
प्रत्याख्यानी ,, ३७४)
संज्वलन क्रोध मान माया कषाय ३८५)
संज्वलन लोभ ,, ३९८)
हास्यादिक नो कषाय ४०७)
अकषाय ४१४)

कुमति कुश्रुति ज्ञान ४१८)
कुअवधिज्ञान (विभंग ज्ञान) ४२८)
मति श्रुति ज्ञान ४३४)
अवधि ,, ४४६)
मनः पर्यय ,, ४५२)
केवल ज्ञान ४५६)

असंयम ४५९)
संयमा संयम ४६९)

सामायिक छेदो पस्थापना संयम ४७४)
परिहार विशुद्धि ,, ४७९)
सूक्ष्म सांपराय ,, ४८३)
यथाख्यात ,, ४८९)
संयम। संयम संयम रहित (सिद्ध गति) ४९८)

चक्षु दर्शन ४९२)
अचक्षु ,, ५०८)
अवधि ,, ५१४)
केवल ,, ५२५)

कृष्ण-नील लेश्या ५२८)
कापोत ,, ५३९)
पीत ,, ५५०)
पद्म ,, ५६०)
शुक्ल ,, ५६३)
अलेश्या ५७३)
भव्य ५७५)
अभव्य ५८८)
भव्य अभव्य रहित (सिद्धगति) ५९७)

मिथ्यात्व ५९९)
सासादन ६०२)
मिश्र ६११)
प्रथमोपशम सम्यक्त्व ६१६)
द्वितियोपशम ,, ६२४)
क्षायोपशम ,, ६३०)
क्षायिक ,, ६४१)

संज्ञी ६५३)
असंज्ञी ६६३)
नासंज्ञी नासंज्ञी ६६८)

आहारक ६७२)
अनाहारक ६८४)
१०८ आचार्य शांतिसागरजी महाराज का समाधि समय ६९४)

३४ स्थान दोहे ६९७)
२४ दण्डक ७०२)
मूलोत्तरकर्म प्रकृतियां अवस्था संख्या ७०६)
मूलोत्तरकर्म प्रकृतियां विशेष विवरण ७०९)
मूलोत्तरकर्म प्रकृतियां स्थिति बंध ७१४)
उदय व्युच्छति से पहले बंध व्युच्छति ७१६)
उदय व्युच्छति के बाद बंध व्युच्छति ७१७)
उदय बंध विच्छति एक साथ ७१७)

अपने ही उदय में बंध प्रकृतियाँ ७१८)
दुसरी प्रकृतियो के उदय मे बंध प्रकृतियाँ ७१८)
अपने तथा पर के उदय मे बंध प्रकृतियां ७१८)
निरन्तर बंध प्रकृतियां ७१८)
शांतर बंध ,, ७१८)
शांत्तर निरन्तर बंध ,, ७१८)

उद्वेलन संक्रमण प्रकृतियां ७१९)
विध्यात संक्रमण प्रकृतियां ७१९)
अधःप्रवृत्त संक्रमण ७१९)
गुण संक्रमण ७५ ७२०)
सर्व संक्रमण ५२ ७२०)
त्रियंच एकादश ७२०)

कर्म कांड की शक्तियोंकी कुछ ज्ञातव्य बातें ७२१)
६ सहननपर जागति ७२१)
६ सहनन पर सात नरक जागति ७२२)

---

५ ज्ञानावरणी बंध स्वरुप ७२२)
९ दर्शनावरणी ,, ७२३)
२ वेदनीय ,, ७२३)
२८ मोहनीयकर्म ,, ७२३)
४ आयु कर्म ,, ७२५)
९३ नामकर्म ,, ७२५)
२ गोत्रकर्म ,, ७२९)
५ अंतरायकर्म ,, ७२९)

---

४ कषाय कार्य वासना ७२९)
कषाय वासना काल ७३०)
४ प्रकार मरण भेद ७३०)
तीर्थंकर प्रकृति बंध नियम ७३०)
आहारक शरीर बंध गुण स्थान ७३१)
व्युच्छति व्याख्या ७३१)
१४ गुण स्थान बंध व्युच्छति ७३२)
१४ गुण स्थान अबंध बंध व्युच्छति ७३४)
१४ गुण स्थान अबंध बंध प्रकृतियों के नाम ७३५)

सादी अनादि ध्रुव अध्रुव बंध संख्या ७३५)
अबाधा काल स्वरुप ७३७)

एक जीव के एक समय में प्रकृति बंध संख्या ७३८)
आयुकर्म बंध स्थान ७४०)
नाम कर्म बंध स्थान ७४०)
आहारक और तिर्थंकार एक स्थान में एक जीव के सत्ता नही ७४२)

गुण स्थान अनुदय उदय व्युच्छति प्रकृतियां ७४३)
उदीरणा व्याख्या ७४३)
गुण स्थान अनुदय उदय व्युच्छति ७४४)
उदय उदीरणा विशेषताएं ७४५)
गुण स्थान अनुउदीरणा व्युच्छति प्रकृतियां ७४६)
कर्मोदय कर्म स्वामीपना ७४७)

सत्व कर्म प्रकृतिया ७४७)
गुण स्थान असत्व सत्व व्युच्छति ७४९)

उपशम श्रेणी स्वरुप ७५१)

---

५ प्रकार संक्रमण ७५१)
५ प्रकार संक्रमण प्रकृति कोष्टक ७५३)
५ संक्रमण प्रकृतियां नाम ७५४)
स्थिति अनुभाग प्रदेश बंध संक्रमण गुण स्थान पर ७५६)
५ संक्रमण भागाहार ७५७)

---

१० करण ७५७)

स्वमुखों दई परमुखोदयी प्रकृतिया ७५८)

अपकर्षण गुण स्थान ७५८)

मूल प्रकृतियां बंध उदय उदीरणा सत्व गुण स्थान ७६०)
उदय स्थान ३ ७६१)
उदय स्थान ७ ७६१)
सत्व स्थान ३ ७६१)

गुण स्थान पर उपयोग स्थान ७६२)
गुण स्थान पर संयम स्थान ७६३)
गुण स्थान पर लेश्या स्थान ७६३)
नरकों में भाव लेश्या स्थान ७६३)

नारकी मरकर कहां कहां जन्म लेता है ७६४)
त्रियंच ,, ,, ,, ,, ७६४)
मनुष्य ,, ,, ,, ,, ७६५)
देव ,, ,, ,, ,, ७६५)
कौनसा मिथ्या दृष्टि कौनसा देव बनता है ? ७६५)
भाव लिंगी मरकर कहां जन्म ले सकता है ७६५)

गुण स्थान पर सम्यक्त्व प्राप्ति ७६६)
गुण स्थान पर चढने और उतरने का क्रम ७६६)
गुण स्थान का मरकर कहां कहां जन्म ले सकता है। ७६७)
किन अवस्थाओं मे मरण नही होता है ७६८)
नाम कर्म उदय के ५ नियत स्थान तथा स्वामीपना ७६८)

समुद्घात केवली व्याख्या ७६९)
उद्वेलना प्रकृतियां १३ ७७०)
संयम विराधना कितनी बार ७७०)
तीर्थंकर आहारक सत्ता एक जीव के एक साथ नहीं ७७१)
आयु बंध उदय सत्ता ७७१)
आयु बंध ८ अपकर्षण ७७१)
आयु कर्म भंग ७७२)

आश्रव मूल वेद ४ ७७२)
गुण स्थानों पर ५७ आश्रव भंग ७७३)
गुण स्थानों पर ५७ आश्रव नाम ७७४)
८ कर्मों पर आश्रव भावों की व्याख्या ७७६)

मूल भाव ५ उत्तर भाव ५३ ७७८)
मूल भाव ५ उत्तर भाव ५३ नाम ७७९)
भाव भंग ७७९)
गुण स्थानों पर ५ मूलभाव ७८०)
गुन स्थानों पर ५३ भाव कोष्टक ७८१)

---

३६३ प्रकार मिथ्या दृष्टियों के भंग ७८३)

---

३ कर्म स्वरूप ७८५)

कर्म स्थिति रचना ७८५)

शब्द कोष (अकारादि रुप) ७८६)

श्रीयुत पंडित ताराचंदजी शास्त्री न्यायतीर्थ तथा सिगई मूलचन्दजी अध्यक्ष परवार मंदीर ट्रस्ट का नागपूर इस ग्रन्थ पर शुभ संदेश ७९४)

श्रीयुत सुरजमलजी प्रेम आगरा का शुभ संदेश ७९४)

पुस्तक प्राप्त करने के १३ केन्द्रों की नामावली सूची ७९५)
शुद्धि पत्रक ७९६)

प्रकाशक की नम्र प्रार्थना.— माननीय विद्वानों से विनय पूर्वक प्रार्थना करता हूं कि में इस ग्रन्थ का प्रकाशक ब्रह्मचारी उल्फतराय मंदज्ञानी हूं कर्म सिद्धांत बहुत गूढ विषय है। लेखक पुज्य श्री १०८ आदिसागरजी मुनि महाराज प्रकाशन स्थान मेरठ से हजारों मील दूर आंध्रप्रदेश में विद्यमान थे इस कारण से भूलतो बहुत आई है परन्तु पं. ताराचंदजी शास्त्री न्यायतीर्थ नागपूर तथा श्रीयुत सि. मूलचंदजी अध्यक्ष परवार मंदिर ट्रस्ट नागपूर ने बहुत भारी परिश्रम करके विषय का संशोधन तो बहुत कुछ करदिया है अबभी पाठक सज्जनों को दृष्टि में जो भूल और दिखाई दे तो कृपा करके भूल को शुद्ध करलेना। मुझको क्षमा करना भूल सुधार की सूचना लेखक और प्रकाशक को देने के कष्ट सहन करने की कृपा दृष्टि करना।

आपका सेवक
ब्र. उल्फतराय रोहतक (हरियाना)

लेखक ब्रह्मचारी उल्फतराय रोहतक [हरियाना]

भगवान-महावीर शांति का संदेश

हे भव्य जीवो नर से नारायण बनने के पांच मार्ग इस प्रकार है:-

१) **सत्वेषु मैत्री**—जीवो जीने दो। जब जन प्राणियों को धन भूमि देश राज स्त्री वैभव बढाने की इच्छायें प्रबल होती जाती है। मानवता नष्ट होती चली जाती है। दानवता भयंकर रुप बना देती है। आज सारे विश्व में नर संहार चल रहा हैं भयंकर राज युद्ध, राज विद्रोह, चोरी डकेती, रेलों, वाहनों, के उपद्रव हडताल आग लगाना गृह युद्ध भाषा सांप्रदायकता पद लोलुपता स्वार्थ भावना के नाम पर मानवता को भूल बैठा है। यह सुख शांति देश उन्नति आत्म कल्याण के विरुद्ध जा रहा है। प्राणी मात्र पर मित्रता ही एक मात्र शांति मार्ग है। पशु पक्षी जल थल नभ के प्राणियों में भी तुम्हारी जैसी आत्मा है। सब ही सुख शांति से जीना चाहते है।

२) **गुणषु प्रमोदं:-** जो प्राणी सेवाभावी दानी ज्ञानी माता पिता भाई बहिन वर मुखिया समाज नेता राज अधिकारियों का सन्मान करता है। वो ही अपनी आत्मा को उन्नत बना सकता है। मुक्ति पा सकता है।

३) **क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं:-** जो प्राणी दुखी दरिद्रों अंधों, लुले लंगडे अनाथ गरीब भाईयों को अपनी भुजा अपना हृदय समझकर उनकी अपने तन, मन, धन से रक्षा करता हैं। वो ही संसार स्वर्ग मोक्ष सुख पा सकता हैं।

४) **मध्यस्थभावं विपरीत वृत्तौ सदा ममात्मा बुध धातु देवं:-** जो दुष्ट प्राणी हमारी सेवाओं का बदला दानवता में देते है। हमारा धन प्राण स्त्री संपदा छीनना चाहते है, नष्ट करना चाहते हैं तो तुम अपनी रक्षा तो करो। परन्तु तुम भी सामने जैसा दुष्ट बनकर प्राण हरण, धर्म स्थान नष्ट करना, आग लगाना जैसे पाप कार्य मत करो। आम के वृक्ष से ज्ञान तो प्राप्त करो। पत्थर मारने वाले को भी फल देता है।

५) **आत्मरस पान आत्म ध्यानः-** स्त्री पुत्र धन संपदा राज वैभव मित्र राज को संसार मे फसाने वाला समझकर सब का त्याग करके वाण प्रस्थाश्रम ग्रहण कर त्यागी बन निरजन बन पर्वत चोटी पर्वत गुफा, वृक्षों की कोटर में आत्म ध्यान आत्म समाधि लगाकर आत्म स्वरूप में एकाग्र हो जाता है। वोही आत्मा नर से नारायण बनकर सिद्ध लोक में जाकर आत्मा का अनंत दर्शन, ज्ञान, सुख, वीर्य का सुख भोगता है। यही अंतिम महावीर संदेश है। शुभं ता. १-६-१९६८

-: प्रकाशक के उद्‌गार :-

भगवान से नम्र प्रार्थना [भजन नं. ॥ १ ॥]

कैसे पहुंचु तेरे द्वार ॥ टेक ॥

भवसागर में भटक रहा हुं-छाय रहा अंधियार।
नैया डूब रही है-स्वामी दिखता नहीं किनार।
तुम ही लगा दो पार ॥ १ ॥

पर को अपना जान रहा हुं-करता उन्हीं से प्यार।
निज रस की कछु खबर नही है-डूब रहा मझ धार।
बेडा करो तुम पार ॥ २ ॥

नरभव कठिन मिला-अब सेवक कर आतम उद्धार।
मोह महल में चूका मूरख-रुलना पडे संसार।
कर आतम उद्धार ॥ ३ ॥

आत्म दुर्बलता पर पश्चात्ताप [भजन नं. ॥ २ ॥

भव दुख कैसे कटे हो जिनेश्वर मो को बडा अंदेशा है ॥ टेक ॥
नही ज्ञान काया बल इंद्री-दान देन नही पैसा है।
भव सुधरन को तप बहुत तपये-यह तन तो अब ऐसा है। ॥ १ ॥

निश दिन आरत ध्यान रहत है-धर्म ना जानु कैसा है।
विषय कषाय चाह उर मेरे लोभ चक्षम जम जैसा है। ॥ २ ॥

मो में लक्षण कौन तिरण को मलिन तेल पट जैसा है।
आप ही तारो तो पार उतारों-मो मन में तो अभिलाषा है। ॥ ३ ॥

भक्ति रस की महिमा (भजन नं. ।। ३ ।।)

भजन से रख ध्यान प्राणी भजन से रख ध्यान ।। टेक ।।

भजन से षट खंड नव निधि-होत भरत समान ।
तिरे भव सागर से भाई-पाप को अवसान ।। १ ।।
नबल शुकर सिंघ मरकट-कर भजन श्रद्धान ।
भये वृषभ सेन आदि जगत गुरू पहुंच गये निर्वाण ।। २ ।।
कहत नयनानंद जगमें-भजन सम न निधान ।
भये अरहंत सिद्ध आचार्य-पहुंच गये निर्वाण ।। ३ ।।

मानवता का पथ प्रदर्शन (भजन नं. ।। ४ ।।)

सब करनी दया बिन थोथीरे ।। टेक ।।

चंद्र बिना जैसे रजनी निरफल ।
आब बिना जैसे मोतीरे ।। १ ।।
नीर बिना जैसे सरोवर निरफल ।
ज्ञान बिना जिया ज्योति रे ।। २ ।।
छाया हीन तरोपव की छबि
नयाननंद नहीं होती रे ।। ३ ।।

कर्म सिद्धांत का प्रकाश (भजन नं. ।। ५ ।।)

सुख दुख दाता कोई नहीं जीव को पाप पुण्य निज कारण वीरा ।। टेक ।।

सीताजी को अग्नि कुंड में किया सुरोंने निरमलनीरा ।
जब हर लीनी थी रावण ने तब क्यों ना आये कोई सुरधीरा ।। १ ।।
बारीषेन पे खडग चलायो फूल माल कीनी सुरधीरा ।
तब क्यों ना आये तीन दिवस लग गिदडी भखें सुकु माल शरीरा ।। २ ।।
पांडव मुनि जारे दुश्मन ने पाप निकांक्षित फल गंभीरा ।
मानतुंग अडतालीस ता ले तोडके छेदी बंध जंजीरा ।। ३ ।।
ऐसे ही सुख-दुख होत जीव को पाप पुण्य जब चलत समीरा ।
मंगल हर्ष विषादन करना थिर रखना चहिये निज हीयरा ।। ४ ।।

ध्यानी का आतम रस पान (भजन नं. ।। ६ ।।)

देखो कैसे योगी ध्यान लगावे ध्यान लगावे आपेको पावे ।। टेक ।।

ज्ञान सुधा रस जल भरलावे चुल्हा शील बनावे ।
करम काट को चुग चुग बाले ध्यान अग्नि प्रजलावे ।। १ ।।
अनुभव भाजन निजगुण तंदुल-समता क्षीर मिलावे ।
सोहं मिष्ट निशांकित व्यंजन-समकित छोंक लगावे ।। २ ।।
स्यादवाद सप्तभंग मसाले गिनती पारना पावे ।
निश्चय नय का चमचा फेरे घृत भावना भावे ।। ३ ।।
आप ही पकावे आप ही खावे-खावत नाही अंघावे ।
तदपि मुक्ति पद पंकज सेवे नयनानंद सिरनावे ।। ४ ।।

|| ॐ ||

★ नमः सिद्धेभ्यः ★

※ चौंतीस स्थान दर्शन ※

—मंगलाचरण—

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो, आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥
चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥ २ ॥
मङ्गलं भगवान्वीरो, मङ्गलं गौतमो गणी ।
मङ्गलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥ ३ ॥
सर्व मङ्गलमाङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारकम् ।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥ ४ ॥

चौंतीस स्थानोंके नाम--गाथा

गुण–जीवा–पज्जत्ती पाणा सण्णा तहेव विण्णेया ।
गइइंदियेत्र काये जोएवेए कसायणाणे य ॥ १ ॥
संजम–दंसण–लेस्सा–भविया–सम्मत्त–सण्णि–आहारे ।
उवओगो झाणाणिय आसव भावा तहा मुणेयव्वा ॥ २ ॥
ओगाहणा य बंधोदयपयडीओ य सत्तपयडी य ।
संखा खेत्तं फासण संजुत्ता ते हवंति तीसंतु ॥ ३ ॥
कालो य अंतरं पुण जाइय कुलकोडिसंजुया सव्वे ।
चउतीसं ठाणाणिहु हवंति जइया कमेणते गहिया ॥ ४ ॥

—०—

चौंतीस स्थानों के नाम, और उत्तर भेदों की तथा कोष्टकों की संख्या (क्रमांक)

क्रमांक	स्थान	उत्तर भेद	कोष्टक क्रमांक
१.	गुणस्थान	१४	१ से १५
२.	जीवसमास	१४	,,
३.	पर्याप्ति	६	,,
४.	प्राण	१०	,,
५.	संज्ञा	४	,,
६.	गति	४+१	१६ से २०
७.	इन्द्रिय जाति	५+१	२१ से २७
८.	काय	६+१	२८ से ३४
९.	योग	१५+१	३५ से ४६
१०.	वेद	३+१	४७ से ५०
११.	कषाय	२५+१	५१ से ५७
१२.	ज्ञान	८ (५+३)	५८ से ६३
१३.	संयम	७+१	६४ से ७०
१४.	दर्शन	४	७१ से ७४
१५.	लेश्या	६+१	७५ से ८०
१६.	भव्यत्व	२+१	८१-८२-८३
१७.	सम्यक्त्व	६ (३+१+१+१)	८४ से ९०
१८.	संज्ञी	२+१	९१-९२-९३
१९.	आहारक	२	९४ से ९५
२०.	उपयोग	१२	,,
२१.	ध्यान	१६	,,
२२.	आस्रव	५७	,,
२३.	भाव	५३	,,
२४.	अवगाहना	,,	,,
२५.	बंधप्रकृतियां	१२०	,,
२६.	उदय प्रकृतियां	१२२	,,
२७.	सत्वप्रकृतियां	१४८	,,
२८.	संख्या	,,	.
२९.	क्षेत्र	,,	,,
३०.	स्पर्शन	,,	,,
३१.	काल	,,	,,
३२.	अन्तर	,,	,,
३३.	जाति (योनि)	८४ लाख	,,
३४.	कुल	१९९॥.	,,

लाख कोटि कुल जानना.

चौंतीस स्थानों के उत्तर भेदों की नामावली

(१) गुणस्थान १४

१ मिथ्यात्व गुणस्थान
२ सासादन ,,
३ मिश्र ,,
४ असंयत (अविरत)
५ देशसंयत (संयतासंयत)
६ प्रमत्त
७ अप्रमत्त
८ अपूर्वकरण
९ अनिवृत्तिकरण
१० सूक्ष्मसांपराय
११ उपशांतमोह
१२ क्षीण मोह (कषाय)
१३ सयोग केवली
१४ अयोग केवली

(२) जीवसमास १४

१ एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त
२ ,, ,, अपर्याप्त
३ ,, सूक्ष्म पर्याप्त
४ ,, सूक्ष्म अपर्याप्त
५ द्विन्द्रिय पर्याप्त
६ द्विन्द्रिय अपर्याप्त
७ त्रिन्द्रिय पर्याप्त
८ ,, अपर्याप्त
९ चतुरिन्द्रिय पर्याप्त
१० ,, अपर्याप्त
११ असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
१२ ,, ,, अपर्याप्त
१३ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
१४ ,, ,, अपर्याप्त

(३) पर्याप्ति ६

१ आहार पर्याप्ति
२ शरीर ,,
३ इन्द्रिय ,,
४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति
५ भाषा पर्याप्ति
६ मन पर्याप्ति

(४) प्राण १०

१ आयु प्राण
२ कायबल प्राण

इन्द्रिय प्राण–५

३ (१) स्पर्शनेन्द्रिय प्राण
४ (२) रसनेन्द्रिय ,,
५ (३) घ्राणेन्द्रिय ,,
६ (४) चक्षुरिन्द्रिय ,,
७ (५) कर्णेन्द्रिय ,,
८ श्वासोच्छ्वास ,,
९ वचन बल ,,
१० मनोबल ,,

(५) संज्ञा ४

१ आहार संज्ञा
२ भय संज्ञा
३ मैथुन संज्ञा
४ परिग्रह संज्ञा

(६) गति ४

१ नरक गति
२ तिर्यंच गति
३ मनुष्य गति
४ देव गति

(७) इन्द्रिय जाति ५

१ एकेन्द्रिय जाति
२ द्विन्द्रिय जाति
३ त्रिन्द्रिय जाति
४ चतुरिन्द्रिय जाति
५ पंचेन्द्रिय जाति

(८) काय ६

१ पृथ्वी काय
२ अप् (जल) काय
३ तेज (अग्नि) काय
४ वायु काय
५ वनस्पति काय
६ त्रस काय

(९) योग १५

मनोयोग–४

१ सत्य मनोयोग
२ असत्य मनोयोग
३ उभय मनोयोग
४ अनुभय मनोयोग

वचन योग–४

५ सत्य वचन योग
६ असत्य वचन योग
७ उभय वचन योग
८ अनुभय वचन योग

काय योग–७

९ औदारिक काय योग
१० औ. मिश्रकाय योग
११ वैक्रियक काययोग
१२ वै. मिश्र काय योग

१३ आहारक काय योग
१४ आ. मिश्र काय योग
१५ कार्माण काय योग

(१०) वेद (लिंग) ३

१ नपुंसक वेद
२ स्त्री वेद
३ पुरुष वेद

(११) कषाय २५

अनंतानुबंधी-४

१ क्रोध कषाय
२ मान ,,
३ माया ,,
४ लोभ ,,

अप्रत्याख्यान-४

५ क्रोध कषाय
६ मान ,,
७ माया ,,
८ लोभ ,,

प्रत्याख्यान-४

९ क्रोध कषाय
१० मान ,,
११ माया ,,
१२ लोभ ,,

संज्वलन-४

१३ क्रोध कषाय
१४ मान ,,
१५ माया ,,
१६ लोभ ,,

नोकषाय-९

१७ हास्य नोकषाय
१८ रति ,,
१९ अरति नोकषाय
२० शोक ,,
२१ भय ,,
२२ जुगुप्सा ,,
२३ नपुंसक वेद ,,
२४ स्त्री वेद ,,
२५ पुरुष वेद ,,

(१२) ज्ञान ८

कुज्ञान-३

१ कुमतिज्ञान
२ कुश्रुतज्ञान
३ कुअवधि (विभंग) ज्ञान

ज्ञान-५

४ मतिज्ञान
५ श्रुतज्ञान
६ अवधिज्ञान
७ मनः पर्ययज्ञान
८ केवल ज्ञान

(१३) संयम ७

१ असंयम
२ संयमासंयम
३ सामायिक संयम
४ छेदोपस्थापना ,,
५ परिहारविशुद्धि ,,
६ सूक्ष्मसांपराय ,,
७ यथाख्यात ,,

(१४) दर्शन ४

१ अचक्षु दर्शन
२ चक्षु दर्शन
३ अवधि दर्शन
४ केवल दर्शन

(१५) अशुभ लेश्या-३

१ कृष्ण लेश्या
२ नील ,,
३ कापोत ,,

शुभ लेश्या-३

४ पीत लेश्या
५ पद्म ,,
६ शुक्ल ,,

(१६) भव्यत्व २

१ भव्य
२ अभव्य

(१७) सम्यक्त्व

१ मिथ्यात्व (अवस्था)
२ सासादन (,,)
३ मिश्र (,,)
४ उपशमसम्यक्त्व
५ क्षयोपशम (वेदक) स०

(१८) संज्ञी २

१ संज्ञी
२ असंज्ञी

(१९) आहारक २

१ आहारक
२ अनाहारक

(२०) उपयोग

ज्ञानोपयोग-८

१ कुमति ज्ञानोपयोग
२ कुश्रुत ,,
३ कुअवधि ,,

४ मतिज्ञानोपयोग
५ श्रुत ,,
६ अवधि ,,
७ मनःपर्यय ज्ञानोपयोग
८ केवल ज्ञानोपयोग

दर्शनोपयोग–४

९ अचक्षु दर्शनोपयोग
१० चक्षु दर्शनोपयोग
११ अवधि दर्शनोपयोग
१२ केवल दर्शनोपयोग

(२१) ध्यान १६

आर्तध्यान–४

१ इष्टवियोग आर्तध्यान
२ अनिष्ट संयोग आर्तध्यान
३ पीडा चिंतन आर्तध्यान
४ निदान बंध आर्तध्यान

रौद्र ध्यान–४

५ हिंसानंद रौद्रध्यान
६ मृषानंद ,,
७ चौर्यानंद ,,
८ परिग्रहानंद ,,

धर्म ध्यान–४

९ आज्ञाविचय धर्मध्यान
१० अपायविचय ,,
११ विपाक विचय ,,
१२ संस्थानविचय ,,

शुक्ल ध्यान–४

१३ पृथक्त्व वितर्कवीचार
१४ एकत्ववितर्क अवीचार
१५ सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति
१६ व्युपरतक्रियानिवर्तीनि

(२२) आस्रव ५७

मिथ्यात्व–५

१ एकांत मिथ्यात्व
२ विनय मिथ्यात्व
३ विपरीत मिथ्यात्व
४ संशय मिथ्यात्व
५ अज्ञान मिथ्यात्व

अविरत–१२

हिंसक के अवस्था–६

६ एकेन्द्रिय अवस्था
७ द्विन्द्रिय अवस्था
८ त्रिन्द्रिय अवस्था
९ चतुरिन्द्रिय अवस्था
१० असंज्ञी पंचेन्द्रिय अवस्था
११ संज्ञी पंचेन्द्रिय अवस्था

हिंस्यके अवस्था–६

१२ पृथ्वी कायिक जीव
१३ जल कायिक जीव
१४ अग्नि कायिक जीव
१५ वायु कायिक जीव
१६ वनस्पति कायिक जीव
१७ त्रस कायिक जीव

कषाय-२५ पूर्वोक्त

योग–१५ पूर्वोक्त

ये सब ५७ आस्रव जानना

(२३) भाव ५३

(१) औपशमिक भाव–२

१ उपशम सम्यक्त्व
२ उपशम चारित्र

(२) क्षायिक भाव–९

३ क्षायिक ज्ञान
४ क्षायिक दर्शन
५ क्षायिक सम्यक्त्व
६ क्षायिक चारित्र
७ क्षायिक दान
८ क्षायिक लाभ
९ क्षायिक भोग
१० क्षायिक उपभोग
११ क्षायिक वीर्य

(३) क्षायोपशमिक (मिश्र)

भाव–१८

कुज्ञान–३

१२ कुमति ज्ञान
१३ कुश्रुत ज्ञान
१४ कुअवधि (विभंग) ज्ञान

ज्ञान–४

१५ मति ज्ञान
१६ श्रुति ज्ञान
१७ अवधि ज्ञान
१८ मनःपर्यय ज्ञान

दर्शन–३

१९ अचक्षु दर्शन
२० चक्षु दर्शन
२१ अवधि दर्शन

क्षयोपशमलब्धि–५

२२ क्षयोपशम दान
२३ क्षयोपशम लाभ
२४ क्षयोपशम भोग
२५ क्षयोपशम उपभोग
२६ क्षयोपशम वीर्य

२७ क्षायोपशमिक (वेदक) सं०
२८ सराग चारित्र (संयम)
२९ देशसंयम (संयमासंयम)

(४) औदयिक भाव २१

गति—४

३० नरक गति
३१ तिर्यंच गति
३२ मनुष्य गति
३३ देवगति

लिंग (वेद)—३

३४ नपुंसक लिंग
३५ स्त्री लिंग
३६ पुरुष लिंग

कषाय—४

३७ क्रोध कषाय
३८ मान कषाय
३९ माया कषाय
४० लोभ कषाय

लेश्या—६

अशुभ लेश्या—३

४१ कृष्ण लेश्या
४२ नील लेश्या
४३ कापोत लेश्या

शुभ लेश्या—३

४४ पीत लेश्या
४५ पद्म लेश्या
४६ शुक्ल लेश्या

४७—मिथ्यादर्शन (मिथ्यात्व)
४८ असंयम
४९ अज्ञान
५० असिद्धत्व

(५) पारिणामिक भाव—३

५१ जीवत्व भाव
५२ भव्यत्व भाव
५३ अभव्यत्व भाव

(२४) अवगाहना

जीवों के देहप्रमाण अवगाहना का वर्णन करना इस स्थान का प्रयोजन है। सो हरएक कोष्टक में देखो।

(२५) बंध प्रकृतियां—१२०

८ कर्मों की उत्तर प्रकृतियां १४८ है, इनमें से—

(१) ज्ञानावरणकी प्रकृतियां—५

१. मतिज्ञानावरण, २. श्रुतज्ञानावरण, ३. अवधि ज्ञानावरण, ४. मनःपर्यय ज्ञानावरण, ५. केवल ज्ञानावरण।

(२) दर्शनावरणकी प्रकृतियां—९

६. अचक्षूदर्शनावरण, ७. चक्षुदर्शनावरण, ८. अवधिदर्शनावरण, ९. केवल दर्शनावरण, १०. निद्रानिद्रा, ११. प्रचलाप्रचला, १२. स्त्यानगृद्धि, १३. निद्रा, १४. प्रचला।

(३) वेदनीयकी प्रकृतियां—२

१५. सातावेदनीय, १६. असातावेदनीय।

(४) मोहनीय की प्रकृतियां—२६

इनमें से **दर्शन मोहनीय की प्रकृति**—१

१७. मिथ्या दर्शन (मिथ्यात्व का) का बंध जानना।

चारित्र मोहनीय की प्रकृतियां—२५

अनन्तानुबन्धीकषाय—४

१८. क्रोध, १९. मान, २०. माया, २१. लोभ।

अप्रत्याख्यानावरणकषाय—४

२२. क्रोध, २३. मान, २४. माया, २५. लोभ।

प्रत्याख्यानावरणकषाय—४

२६. क्रोध, २७. मान, २८. माया, २९. लोभ।

संज्वलनकषाय—४

३०. क्रोध, ३१. मान, ३२. माया, ३३. लोभ..

नोकषाय—९ (ईषत् कषाय भी कहते है।)

३४. हास्य, ३५. रति, ३६. अरति, ३७. शोक, ३८. भय, ३९. जुगुप्सा, ४०. नपुंसकवेद ४१. स्त्री वेद, ४२. पुरुष वेद.

(५) आयु कर्म की प्रकृतियां-४

४३ नरकायु, ४४ तिर्यंचायु, ४५ मनुष्यायु, ४६ देवायु

(६) नाम कर्म की प्रकृतियां-६७

गतिनाम कर्म की प्रकृतियां–४

४७ नरकगति, ४८ तिर्यंचगति, ४९ मनुष्यगति, ५० देवगति

जातिनाम कर्म की प्रकृतियां–५

५१ एकेन्द्रिय जाति, ५२ द्वीन्द्रिय जाति, ५३ त्रीन्द्रिय जाति, ५४ चतुरिन्द्रिय जाति, ५५ पंचेन्द्रिय जाति

शरीरनाम कर्म की प्रकृतियां–५

५६ औदारिक, ५७ वैक्रियक, ५८ आहारक, ५९ तैजस, ६० कार्माण शरीर

अंगोपांगनाम कर्म की प्रतिकृयां–३

६१ औदारिकाङ्गोपांग, ६२ वैक्रियकाङ्गोपांग, ६३ आहारकाङ्गोपांग, ६४ निर्माण नामकर्म,

संस्थान नामकार्य की प्रकृतियां–६

६५ समचतुरस्र संस्थान, ६६ न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान, ६७ स्वाति संस्थान, ६८ कुब्जकसंस्थान, ६९ वामन संस्थान, ७० हुंडक संस्थान

संहननाम कर्म की प्रकृतियां–६

७१ वज्रवृषभनाराच संहनन, ७२ वज्रनाराच संहनन, ७३ नाराच संहनन, ७४ अर्धनाराच संहनन, ७५ कीलक संहनन, ७६ असंप्राप्तासृपाटिका संहनन

स्पर्शादिनाम कर्म की प्रकृतियां–४

७७ स्पर्शनाम कर्म, ७८ रसनाम कर्म, ७९ गंधनाम कर्म, ८० वर्णनाम कर्म

आनुपूर्वीनाम कर्म की प्रकृतियां–४

८१ नरक गत्यानुपूर्वी, ८२ तिर्यंगत्यानुपूर्वी, ८३ मनुष्यगत्यानुपूर्वी, ८४ देवगत्यानुपूर्वी

८५ अगुरुलघु, ८६ उपघात, ८७ परघात, ८८ आतप, ८९ उद्योत, ९० उच्छ्वास, ९१ प्रशस्त विहायोगति, ९२ अप्रशस्त विहायोगति, ९३ प्रत्येक, ९४ साधारण, ९५ त्रस, ९६ स्थावर, ९७ सुभग, ९८ दुर्भग, ९९ सुस्वर, १०० दुस्वर, १०१ शुभ, १०२ अशुभ, १०३ सूक्ष्म, १०४, बादर, १०५ पर्याप्ति, १०६ अपर्याप्ति, १०७ स्थिर, १०८ अस्थिर, १०९ आदेय, ११० अनादेय, १११ यशःकीर्ति, ११२ अयशःकीर्ति, ११३ तीर्थंकर प्रकृति।

सूचना–नामकर्म की ९३ प्रकृतियां में बंध प्रकृतियां–६७ है। कारण शरीर नामकर्म में बंधन ५, और संघात ५, ये गर्भित हो जाते है, इस लिये ये १० कम हो गये, और स्पर्श, रस, गंध, वर्ण इन्हें ४ गिने, इस लिये शेष १६ यह कम हो गये, इस प्रकार १०+१६ = २६ प्रकृतियां घट जाने से नामकर्म की बंध योग्य प्रकृतियां ६७ जानना।

(७) गोत्रकर्म की प्रकृतियां–२

११४–उच्च गोत्र और ११५. नीच गोत्र यह २ जानना।

(८) अन्तराय की प्रकृतियां–५

११६. दानान्तराय, ११७. लाभान्तराय, ११८. भोगान्तराय, ११९. उपभोगान्तराय, १२०. वीर्यांतराय।

इस प्रकार ज्ञानावरण की ५, दर्शनावरणकी ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २६,

आयु की ४, नाम कर्म की ६७, गोत्र की २, और अन्तराय की ५, ये सब मिलकर १२० प्रकृतियां बंध योग्य है।

(२६) उदय-प्रकृतियां १२२

ज्ञानावरणकी ५, दर्शनावरणकी ९, वेदनीयकी २, मोहनीयकी २८, आयुकर्म की ४, नामकर्मकी ६७ (जो बंध प्रकृतियों में है) गोत्रकर्मकी २, अन्तरायकी ५. इस प्रकार उदय योग्य प्रकृतियां १२२ है।

सूचना:—जब प्रथमोपशम सम्यक्त्व हो तब मिथ्यात्व के (१)मिथ्यात्व, (२)सम्यग्मिथ्यात्व, (३)सम्यक्प्रकृति इस तरह तीन भाग हो जाते है। इनमें से सिर्फ मिथ्यात्वका बंध होता है शेष २ की सत्ता हो जाती है। और यह दो प्रकृतियां उदय में भी आ सकती है। इस प्रकार दर्शन मोहनीय की दो प्रकृतियां बढ़ जाने से उदय योग्य प्रकृतियां १२२ जानना।

(२७) सत्त्व-प्रकृतियां १४८

ज्ञानावरणकी ५. दर्शनावरणकी ९. वेदनीयकी २. मोहिनीयकी २८. आयुकर्मकी ४. नामकर्मकी ९३. गोत्रकर्मकी २. अन्तरायकी ५. यह सब मिलकर अर्थात् आठों कर्मों की सब मिलाकर सत्त्व प्रकृतियां १४८ है।

(२८) संख्या

किस स्थान में जीव कितने है, यह बतलाना इसका प्रयोजन है। सो हरएक कोष्टक में देखो।

(२९) क्षेत्र

जीव कितने क्षेत्र में रहते है, यह बात क्षेत्र में बतलाना है। सो हरेक कोष्टक में देखो।

(३०) स्पर्शन

समुद्घात, उपपाद आदि प्रकारों से भूत, भविष्यत्, वर्तमान में जीव कहां तक जा सकता है, यह बात स्पर्शन में बतलाना है। सो हरेक कोष्टक में देखो।

(३१) काल

विवक्षित स्थानवाले जीव कितने काल तक लगातार उस स्थान में रहते है, यह बात काल में बतलाना है। सो हरेएक कोष्टक में देखो।

(३२) अन्तर

(विरहकाल) विवक्षित स्थान को छोड़कर फिर उसी स्थान में जीव आ जावे, इतने बीच में कोई विवक्षित जीव उस स्थान में न रहे उस बीच के काल को अन्तर कहते है। सो हरेएक कोष्टक में देखो।

(३३) जाति (योनि)

८४ लाख है। उत्पत्तिस्थान को योनि या जाति कहते है। किन जीवों की कितनी जाति है, यह निम्न प्रकार जानना।

(१) नित्यनिगोदकी	७ लाख
(२) इतरनिगोदकी	७ लाख
(३) पृथ्वी कायिककी	७ लाख
(४) जल ,,	७ लाख
(५) अग्नि ,,	७ लाख
(६) वायु ,,	७ लाख
(७) वनस्पति ,,	१० लाख
(८) द्वीन्द्रियकी	२ लाख
(९) त्रीन्द्रियकी	२ लाख
(१०) चतुरिन्द्रियकी	२ लाख
(११) तिर्यंचपंचेन्द्रियकी	४ लाख
(१२) नारककी	४ लाख

(१३) देवकी ४ लाख
(१४) मनुष्यकी १४ लाख

यह सब मिलाकर ८४ लाख योनि जानना ।

सूचना–कुछ और स्पष्टीकरण यह है कि, एकेन्द्रिय (स्थावरकायिक) की ५२ लाख, त्रसकायिक की ३२ लाख, विकलत्रय की ६ लाख, पंचेन्द्रिय की २६ लाख, तिर्यंचकी ६२ लाख जाति (योनि) जानना ।

यह जो ८४ लाख योनि है यह सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित्त, शीत, उष्ण, शीतोष्ण, संवृत, विवृत, संवृताविवृत, इन नव भेदों के भेद प्रभेदोसे ८४ लाख हो जाते है ।

(३४) कुल

१९९।। लाख कोटि कुल है । शरीर के भेद के कारणभूत नोकर्मवर्गणाओं के भेद को कुल कहते है ।

यह सब निम्न प्रकार जानना–

(१) पृथ्वी कायिककी २२ लाख कोटि
(२) जल ,, ७ लाख कोटि
(३) अग्नि ,, ३ लाख कोटि
(४) वायु ,, ७ लाख कोटि
(५) वनस्पति ,, २८ लाख कोटि
(६) द्वीन्द्रियकी ७ लाख कोटि
(७) त्रीन्द्रियकी ८ लाख कोटि
(८) चतुरिन्द्रियकी ९ लाख कोटि
(९) जलचर की १२।। लाख कोटि
(१०) स्थलचर (पशु) की १० लाख कोटि
(११) नभचर (पक्षी) की १२ लाख कोटि
(१२) छातीसे चलनेवालोंकी ९ लाख कोटि
(१३) देवकी २६ लाख कोटि
(१४) नारककी २५ लाख कोटि
(१५) मनुष्यकी १४ लाख कोटि

जोड़ १९९।। लाख कोटि

सूचना–कुछ और स्पष्टीकरण यह है कि, तिर्यंचकी १३४।। लाख कोटि, एकेन्द्रियकी ६७ लाख कोटि, पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी ४३।। लाख कोटि, पंचेन्द्रियकी १०६।। लाख कोटि, विकलत्रयकी २४ लाख कोटि, जोड़ करने पर होते है ।

१. गुणस्थान–और गुणस्थानों का स्वरूप

गुणस्थान–मोह और योग के निमित्त से होनेवाली आत्मा के सम्यक्त्व और चारित्र गुणों की अवस्थाओं को गुणस्थान कहते है, यह गुणस्थान १४ होते है।

(१) मिथ्यात्व–मोक्ष मार्ग के प्रयोजन भूत जीवादि सात तत्वों में यथार्थ श्रद्धा न होने को मिथ्यात्व कहते है। मिथ्यात्व में जीव देह को आत्मा मानता है। तथा अन्य भी परपदार्थो को अपना मानता है। कषाय परिणामों से भिन्न ज्ञानमात्र आत्मा का अनुभवन नहीं कर सकता है।

(२) सासादन या सासावन सम्यक्त्व–उपशमसम्यक्त्व नष्ट हो जाने पर मिथ्यात्वका उदय न आ पाने तक अनन्तानुबन्धी कषाय के उदयसे जो अयथार्थ भाव रहता है उसे सासादन सम्यक्त्व गुणस्थान कहते है।

(३) मिश्र या सम्यग्मिथ्यात्व–जहां ऐसा परिणाम हो जो न केवल सम्यक्त्व रूप हो और न केवल मिथ्यात्वरूप हो, किन्तु मिला हुआ हो उसे मिश्र या सम्यग्मिथ्यात्व कहते है।

(४) असंयत या अविरत सम्यक्त्व–जहां सम्यग्दर्शन तो प्रगट हो गया हो, किन्तु किसी भी प्रकार का व्रत (संयमासंयम या संयम) न हुआ हो, उसे असंयत या अविरत सम्यक्त्व कहते है। इस गुणस्थान में उपशम–वेदक–क्षायिकसम्यक्त्व ये तीनों प्रकार के सम्यक्त्व हो सकते है।

(५) देशसंयत या संयतासंयत या देशविरत–जहां सम्यग्दर्शन भी प्रगट हो गया हो और संयमासंयम भी हो गया हो उसे देश-संयत या संयता संयत या देशविरत कहते है।

(६) प्रमत्त या प्रमत्तविरत–जहां महाव्रत का भी धारण हो चुका हो किन्तु संज्वलन कषायका उदय मंद न होने से प्रमाद हो वह प्रमत्त या प्रमत्तविरत है।

(७) अप्रमत्त या अप्रमत्तविरत–जहां संज्वलन कषाय का उदय मन्द होने से प्रमाद नहीं रहा उसे अप्रमत्त या अप्रमत्तविरत कहते है। इसके दो भेद है। १. स्वस्थान अप्रमत्त विरत और २ रा सातिशय अप्रमत्तविरत, स्वस्थान अप्रमत्तविरत मुनि छठवें गुणस्थान में पहुंचते है और इस प्रकार छटे से सातवें में, और सातवें से छठे में परिणाम आते जाते रहते है।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनि के अधःकरण–परिणाम होते है। वे यदि चारित्र मोहनीयका उपशम प्रारंभ करते है तो उपशम श्रेणि चढते है और यदि क्षय प्रारंभ करते है तो क्षपक श्रेणि चढते है। सो वे दोनों (उपशम या क्षपक श्रेणि चढनेवाले मुनि) आठवें गुणस्थान में पहुंचते है।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनि के परिणाम का नाम अधःकरण इसलिये है—कि इसके काल में विवक्षित समयवर्ती मुनि के परिणाम के सदृश कुछ पूर्व उत्तर समयवर्ती मुनियों के परिणाम हो सकते है।

(८) अपूर्व करण–इस गुणस्थान में अगले अगले समय में अपूर्व अपूर्व परिणाम होते है, ये उपशमक और क्षपक दोनों तरह के होते है। इस परिणाम का अपूर्व करण नाम इस लिये भी है कि इसके काल में समान समयवर्ती मुनियों के परिणाम सदृशभी हो

जांय, किन्तु विवक्षित समय में भिन्न (पूर्व या उत्तर) समयवर्ती मुनियों के परिणाम विसदृश ही होंगे ।

इस गुणस्थान में प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धि होती है, कर्मों की स्थितिका घात होने लगता है, स्थितिबंध कम हो जाते है; बहुतसा अनुभाग नष्ट हो जाता है, असंख्यात गुणी प्रदेश निर्जरा होती है, अनेक अशुभ प्रकृतियां शुभ में बदल जाती है ।

(९) **अनिवृत्तिकरण**–इस गुणस्थान में चढ़ते हुये अधिक विशुद्ध परिणाम होते है, यह उपशमक और क्षपक दोनों प्रकार के होते है। इस परिणाम का अनिवृत्तिकरण नाम इस लिये है कि इसके काल में विवक्षित समय में जितने मुनि होंगे सबका समान ही परिणाम होगा, यहां भी भिन्न समयवालों के परिणाम विसदृश ही होंगे । इस गुणस्थान में चारित्र मोहनीय की २० प्रकृतियों का (अप्रत्याख्यानावरण ४, प्रत्याख्यानावरण ४, संज्वलन ३, हास्यादि ९) उपशम या क्षय हो जाता है ।

(१०) **सूक्ष्म सांपराय**–नवमें गुणस्थान में होनेवाले उपशम या क्षय के बाद जब केवल संज्वलन सूक्ष्म लोभ रह जाता है, ऐसा जीव सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानवर्ती कहा जाता है, इस गुणस्थान में सूक्ष्म सांपराय चारित्र होता है जिसके द्वारा अन्त में इस गुणस्थानवाला जीव सूक्ष्म लोभ का भी उपशम या क्षय कर देता है ।

(११) **उपशांतमोह (कषाय)**–समस्त मोहनीय कर्मका उपशम हो चुकते ही जीव उपशांत मोह गुणस्थानवर्ती हो जाता है, इस गुणस्थान में यथाख्यात चारित्र हो जाता है। किन्तु उपशम का काल समाप्त होते ही दशवें गुणस्थान में गिरना पड़ता है। या मरण हो तो चौथे गुणस्थान में एकदम आना पड़ता है ।

(१२) **क्षीणमोह (कषाय)**–क्षपक श्रेणि से चढ़नेवाला मुनि ही समस्त मोहनीय के क्षय होते ही क्षीण मोह गुणस्थानवर्ती हो जाता है । इस गुणस्थान में यथाख्यात चारित्र हो जाता है ।

तथा इसके अन्त समय में ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय–कर्मका भी क्षय हो जाता है ।

(क्षपक श्रेणि से चढ़नेवाला मुनि ग्यारहवे गुणस्थान में नहीं जाता है; वह दसवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान में आ जाता है ।)

(१३) **सयोग केवली**–चारों घातिया कर्म के नष्ट होते ही यह आत्मा सकल परमात्मा हो जाता है। इस केवली भगवान के जब तक योग रहता है तब तक उन्हें सयोग केवली कहते है। इनके विहार भी होता है, दिव्यध्वनि भी खिरती है। तिर्थङ्कर सयोग केवली के समवशरण की रचना होती है, सामान्य सयोग केवली के गन्धकुटी की रचना होती है। इन सबका नाम अर्हन्त–परमेष्ठी भी है। अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में इन के बादर योग नष्ट होकर सूक्ष्म योग रह जाता है। और अन्तिम समय में वह सूक्ष्म योग भी नष्ट हो जाता है।

(१४) **अयोग केवली**–योग के नष्ट होते ही ये परमात्मा–अयोग केवली हो जाते है। शरीर के क्षेत्र में रहते हुये भी इनके प्रदेशों का शरीर से सम्बन्ध नहीं रहता। इनका काल '**अ इ उ ऋ लृ**' इन पांच ह्रस्व अक्षरों के उच्चारने के बराबर रहता है। इस गुणस्थान में उपांत्य और अंत्य समय में शेष

बची हुई ७२ और १३ प्रकृतियों का क्षय हो जाता है। इसके बाद ही ये प्रभु गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान हो जाते है।

२ जीवसमास

जीवसमास—जिन सदृश धर्मोंद्वारा अनेक जीवों का संग्रह किया जा सके उन सदृश धर्मोंका नाम जीवसमास है। ये १४ होते है।

(१) **एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त**—जिन जीवों के स्पर्शन इन्द्रिय है तथा बादर शरीर (जो दूसरे बादर को रोक सके और जो दूसरे बादर से रुक सके) है और जिन की शरीर पर्याप्ति भी पूर्ण हो गई है वे एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त है। ये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति रूप पांच प्रकार के होते है।

(२) **एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त**—एकेन्द्रिय बादरों में उत्पन्न होने वाले जीव, उस आयू के प्रारंभ से लेकर जब तक उनकी शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती, तब तक बादर अपर्याप्त कहलाते है। इनमें से जो जीव ऐसे है कि जो पर्याप्ति पूर्ण न कर सकेंगे और मरण हो जायगा उन्हें लब्ध्य पर्याप्त कहते है। और जो जीव ऐसे है कि जिनकी पर्याप्ति पूर्ण अभी तो नहीं हुई, परन्तु पर्याप्त पूर्ण नियम से करेंगे उन्हें निवृत्य-पर्याप्ति कहते है। इन जीवसमासों में अपर्याप्त शब्द से दोनों अपर्याप्तों का ग्रहण करना चाहिये।

(३) **एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त**—जो जीव एकेन्द्रिय है, सूक्ष्म, (जिन का शरीर न दूसरे को रोक सकता है और न दूसरे से रुक सकता है और सूक्ष्म नामकर्म का जिनके उदय है) है एवं पर्याप्त है। उन्हें एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त कहते है।

(४) **एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त**—एकेन्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त नामकर्म का जिनके उदय है उन जीवों को एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त कहते है।

(५) **द्वीन्द्रिय पर्याप्त**—जिनके स्पर्शन, रसना ये दो इन्द्रिय है तथा जो पर्याप्त हो चुके है उन्हें द्वीन्द्रिय पर्याप्त कहते है।

(६) **द्वीन्द्रिय अपर्याप्त**—उन द्वीन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्य पर्याप्त हैं या अभी निर्वृत्य-पर्याप्त है उन्हें द्वीन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।

(७) **त्रीन्द्रिय पर्याप्त**—जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रिय है और जो पर्याप्त हो चुके है, उन्हें त्रीन्द्रिय पर्याप्त कहते है।

(८) **त्रीन्द्रिय अपर्याप्त**—उन त्रीन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्य पर्याप्त या अभी निर्वृत्य पर्याप्त है उन्हें त्रीन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।

(९) **चतुरिन्द्रिय पर्याप्त**—जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियां है जो पर्याप्त हो चुके है उन्हें चतुरिन्द्रिय पर्याप्त कहते है।

(१०) **चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त**—उन चतुरिन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्यपर्याप्त या अभी निर्वृत्यपर्याप्त है, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।

(११) **असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त**—जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत ये पांचों इन्द्रियां हों किन्तु मन नहीं हो वे असंज्ञी पंचेन्द्रिय कहलाते है। वे पर्याप्ति पूर्ण हो चुकने पर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव केवल तिर्यंचगति में होते है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव भी केवल तिर्यंच होते है।

(१२) **असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त**—उन असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्य पर्याप्त है या अभी निर्वृत्यपर्याप्त है असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।

(१३) संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त–संज्ञी अर्थात् मनसहित पंचेन्द्रिय जीव पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते है।

(१४) संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त–उन संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों को जो लब्ध्यपर्याप्त है या अभी निर्वृत्यपर्याप्त है, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते है।

सूचना–सिद्ध भगवान अतीत जीवसमास होते है।

३ पर्याप्ति

पर्याप्ति–आहार वर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा के परमाणुओं को शरीर, इन्द्रिय आदि रूप परिणमावने की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते है। यह ६ होते है।

(१) **आहार पर्याप्ति**–आहार वर्गणा के परमाणुओं को खल और रस भागरूप परिणमावने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को आहार पर्याप्ति कहते है।

(२) **शरीर पर्याप्ति**–जिन परमाणुओं को खलरूप परिणमायाथा उनको हाड वगैरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणमाया था उनको रुधिरादिक द्रवरूप परिणमावने को कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को शरीर पर्याप्ति कहते है।

(३) **इन्द्रिय पर्याप्ति**–आहार वर्गणा के परमाणुओं को इन्द्रिय के आकार परिणमावने को तथा इन्द्रिय द्वारा विषय ग्रहण करने को कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को इन्द्रिय पर्याप्ति कहते है।

(४) **श्वासोच्छवास पर्याप्ति**–आहार-वर्गणा के परमाणुओं को श्वासोच्छवासरूप परिणमावने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को श्वासोच्छवास पर्याप्ति कहते है।

(५) **भाषा पर्याप्ति**–भाषा वर्गणा के परमाणुओं को वचनरूप परिणमावने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को भाषा पर्याप्ति कहते है।

(६) **मनः पर्याप्ति**–मनोवर्गणा के परमाणुओं को हृदयस्थान में आठ पांखुड़ाके कमलाकार मनरूप परिणमावने को तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को मनः पर्याप्ति कहते है।

सूचना–सिद्ध भगवान को अतीत पर्याप्त कहते है।

४. प्राण

प्राण–जिनके संयोग से यह जीव जीवन अवस्था को प्राप्त हो और वियोग से मरण अवस्थाको प्राप्त हो उनको प्राण कहते है। ये १० होते है।

सूचना–सिद्ध भगवान अतीत प्राण कहे जाते है।

५. संज्ञा

संज्ञा–वांछाके संस्कार को संज्ञा कहते है। ये ४ होते है।

(१) **आहार संज्ञा**–आहार संबंधी वांछा के संस्कार को आहार संज्ञा कहते है।

(२) **भय संज्ञा**–भय संबंधी परिणाम के संस्कार को भय संज्ञा कहते है।

(३) **मैथुन संज्ञा**–मैथुन संबंधी वांछा के संस्कार को मैथुन संज्ञा कहते है।

(४) **परिग्रह संज्ञा**–परिग्रह संबंधी वांछा के संस्कार को परिग्रह संज्ञा कहते है।

सूचना–दशम गुणस्थान से ऊपर जीव अतीत संज्ञा वाले होते है।

मार्गणा

मार्गणा–जिन धर्म विशेषों से जीवों की खोज हो सके, उन धर्म विशेषों से जीवों को खोजना मार्गणा है। ये १४ होते है।

६. गति मार्गणा

गति मार्गणा–गति मार्गणा नामकर्म के उदय से उस उस गति विषयक भावके कारण-भूत जीव का अवस्था विशेष को गति कहते है। इस गति की मार्गणा ४+१ है।

(१) नरक गति–मध्य लोक के नीचे सात नरक है, उनमें नारकी जीव रहते है; उन्हें बहुत काल पर्यंत घोर दुःख सहना पड़ता है, उनकी गति को नरक गति कहते है।

(२) तिर्यंच गति–नारकी, मनुष्य व देव के अतिरिक्त जितने संसारी जीव है, वे सब तिर्यंच कहलाते है। एकेन्द्रिय (जिसमें निगोद भी शामील है), द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये तो नियम से तिर्यंच होते है और सिंह, घोड़ा, हाथी, कबूतर, मत्स्य आदि संज्ञी जीव भी तिर्यंच होते है। उनकी गति को तिर्यंच गति कहते है।

(३) मनुष्य गति–स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकाएं मनुष्य कहे जाते है, इनकी गति को मनुष्य गति कहते है।

(४) देव गति–भवनवासी, व्यन्तर (जिन के निवास स्थान पहले नरक पृथ्वीके खर भाग और पङ्क भाग में है।) ज्योतिष्य (सूर्य, चन्द्र, तारादि) और वैमानिक (१६ स्वर्ग, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पंचानुत्तर में रहनेवाले देव) इन चार प्रकार के देवों की गति को देव गति कहते है।

अगति–गति से रहित जीवों की गति को अगति या सिद्धगति कहते हैं; इनके गति नहीं है, ये गति रहित है।

७. इन्द्रियजाति मार्गणा

इन्द्रिय जाति–इन्द्रियावरण के क्षयोपशम से होने वाले संसारी आत्माके बाह्य चिह्न विशेष को इन्द्रिय कहते है। इस की मार्गणा ५+१ हैं।

(१) एकेन्द्रियसे–पंचेन्द्रिय तक का वर्णन हो चुका है।

अतिन्द्रिय जाति–जो इन्द्रियों से (द्रव्ये-न्द्रिय व भावेन्द्रिय दोनों से) रहित है वह अतीन्द्रिय कहलाते है।

८. काय मार्गणा

काय–आत्मप्रवृत्ति अर्थात् योगसे संचित पुद्गलपिण्ड को काय कहते है। इसकी मार्गणा ६+१ है।

अकाय–जिनके कोई प्रकार का काय नहीं रहा वे अकायिक (अकाय) कहलाते है।

९. योग मार्गणा

योग–मन, वचन, काय के निमित्त से आत्मप्रदेश के परिस्पंद (हलन, चलन) का कारणभूत जो प्रयत्न होता है उसे योग कहते है इस की मार्गणा १५+१ है।

(१) सत्यमनो योग–सत्य वचन के कारणभूत मनको सत्यमन कहते है, उसके निमित्त से होनेवाले योग को सत्यमनो योग कहते है।

(२) असत्यमनो योग–असत्य वचन के कारणभूत मन को असत्यमन कहते है और

उसके निमित्त से होनेवाले योग को असत्यमनो **योग** कहते है।

(३) उभयमनो योग–उभय (सत्य, असत्य दोनों) मन के निमित्त से होनेवाले योग को उभयमनो योग कहते है।

(४) अनुभयमनो योग–अनुभय (न सत्य न असत्य) मन के निमित्त से होनेवाले योग को अनुभयमनो योग कहते है।

(५) सत्यवचन योग–सत्यवचन के निमित्त से होनेवाले योग को सत्यवचन योग कहते है।

(६) असत्यवचन योग–असत्यवचन के निमित्त से होनेवाले योग को असत्यवचन योग कहते है।

(७) उभयवचन योग–उभय (सत्य, असत्य दोनों) वचन के निमित्त से होनेवाले योग को उभयवचन योग कहते है।

(८) अनुभयवचन योग–अनुभय (न सत्य व असत्य) वचन के निमित्त से होनेवाले योग को अनुभयवचन योग कहते है।

(९) औदारिक काययोग–मनुष्य, तिर्यंचों के शरीर को औदारिक शरीर कहते है, उसके निमित्त से जो योग होता है उसे औदारिक काय योग कहते है।

(१०) औदारिक मिश्रकाय योग–कोई प्राणी मरकर मनुष्य या त्रियँच गति में स्थानपर पहुंचा, वहां पहुंचते ही वह औदारिक वर्गणाओं को ग्रहण करने लगता है उस समय से अन्तर्मुहूर्त तक (जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माण मिश्रित औदारिक वर्गणाओं के द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति से जीव के प्रदेश में परिस्पंद के लिये जो उस जीव का प्रयत्न होता है उसे औदारिक मिश्रकाय योग कहते है।

(११) वैक्रियक काय योग–देव व नारकीयों के शरीर को वैक्रियक काययोग कहते है। उसके निमित्त से जो योग होता है उसे वैक्रियक काययोग कहते है।

(१२) वैक्रियक मिश्रकाय योग–कोई मनुष्य या तिर्यंच मरकर देव या नरक गति में स्थानपर पहुंचा, वहां पहुंचते ही वह वैक्रियक वर्गणाओं को ग्रहण करने लगता है, उस समय से अन्तर्मुहूर्त तक (जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माण मिश्रित वैक्रियक वर्गणाओं के द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति से जीव के प्रदेशों में परिस्पंद के लिये जो उस जीव का प्रयत्न होता है उसे वैक्रियक मिश्रकाय योग कहते है।

(१३) आहारक काययोग–सूक्ष्म तत्वमें संदेह होने पर या तीर्थ वन्दनादि के निमित्त आहारक ऋद्धिवाले छठे गुणस्थानवर्ती मुनियों के मस्तिष्क से एक हाथ का धवल, शुभ, व्याघात रहित आहारक शरीर निकलता है उसे आहारक काययोग कहते है; उसके निमित्तसे होनेवाले योग को आहारक काय योग कहते है।

(१४) आहारक मिश्रकाय योग–आहारक शरीर की पर्याप्ति जब तक पूर्ण नहीं होती तब तक औदारिक व आहारक वर्गणाओं के द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति से जीव के प्रदेशों में परिस्पंद के लिये जो प्रयत्न होता है उसे आहारक मिश्रकाय योग कहते है।

(१५) कार्माणकाय योग–मोड़ेवाली विग्रह गति को प्राप्त चारों गतियों के जीवों के तथा प्रतर और लोकपूर्ण समुद्घात को प्राप्त केवली जिन के कार्माण काय होता है। उसके निमित्त से होनेवाले योग को कार्माणकाय योग कहते है।

अयोग–अयोग केवली व सिद्ध भगवान के योग नहीं होता है। योग रहित अवस्था को अयोग कहते है।

१०. वेद मार्गणा

वेद–पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुंसक वेद के उदय से उत्पन्न हुई मैथुनकी अभिलाषा को वेद कहते है। इसकी मार्गणा ३+१ है।

(१) **नपुंसकवेद**–जिससे स्त्री और पुरुष इन दोनों के साथ रमण करने का भाव हो उसे नपुंसकवेद कहते हैं।

(२) **स्त्रीवेद**–जिससे पुरुष के साथ रमण करने की इच्छा हो उसे स्त्रीवेद कहते हैं।

(३) **पुरुषवेद**–जिससे स्त्री के साथ रमण करने की इच्छा हो उसे पुंवेद या पुरुष-वेद कहते है।

अपगतवेद–जहां वेद का अभाव हो उसे अपगतवेद जानना।

११. कषाय-मार्गणा

कषाय–जो आत्मा के सम्यक्त्व, देश-चारित्र, सकलचारित्र, और यथाख्यातचारित्र-रूप गुण को घाते, उसे कषाय कहते हैं। इसकी मार्गणा २५+१ है।

(१) से (४) अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ–उन्हें कहते हैं जो आत्मा के सम्यक्त्व गुण को घाते।

(५) से (८) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, मान, माया, लोभ–उन्हें कहते हैं जो देश-चारित्र को घातें. (देशचारित्र श्रावक, पंचम-गुण-स्थानवर्ती जीव के होता है)

(९) से (१२) प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ–उन्हें कहते हैं जो सकल चारित्र को घातें। (सकल चारित्र मुनियों के होता है)

(१३) से १६) संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ–उन्हें कहते हैं जो यथाख्यात चारित्र को घातें। (यथाख्यात चारित्र ११, १२, १३, १४ वे गुणस्थान में होता है)

१७) हास्य–हंसने के परिणाम को हास्य कहते हैं।

(१८) रति–इष्ट पदार्थ में प्रीति करने को रति कहते हैं।

(१९) अरति–अनिष्ट पदार्थों में अप्रीति करने को अरति कहते हैं।

(२०) शोक–रंज के परिणाम को शोक कहते हैं।

(२१) भय–डर को भय कहते हैं।

(२२) जुगुप्सा–ग्लानि को जुगुप्सा कहते हैं।

(२३–२४–२५) नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, पुरुषवेद–इन हरेक का वर्णन हो चुका है।

अकषाय–कषाय के अभाव को अकषाय कहते हैं।

१२. ज्ञान-मार्गणा

ज्ञान–वस्तु के जानने को ज्ञान कहते हैं। इसकी मार्गणा ८ है।

(१) कुमतिज्ञान–सम्यक्त्व के न होने पर होनेवाले मतिज्ञानको कुमतिज्ञान कहते हैं।

(२) कुश्रुतज्ञान–सम्यक्त्व के न होने पर होनेवाले श्रुतज्ञान को कुश्रुतज्ञान कहते हैं।

(३) कुअवधि ज्ञान–सम्यक्त्व के न होने पर होनेवाले अवधिज्ञान को कुअवधिज्ञान कहते हैं। इसका दूसरा नाम विभङ्ग-अवधिज्ञान है।

(४) मतिज्ञान–इन्द्रिय और मन के निमित्त से उत्पन्न होनेवाले ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं।

(५) श्रुतज्ञान मतिज्ञान से जाने हुये पदार्थ के संबंध में अन्य विशेष जानने को श्रुतज्ञान कहते हैं।

(६) अवधि ज्ञान—इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना, आत्मीय शक्ति से रूपी पदार्थों को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लेकर जानने को अवधिज्ञान कहते हैं।

(७) मनःपर्यय ज्ञान—दूसरे के मन में तिष्ठते हुए (स्थित) रूपी पदार्थों को इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना आत्मीय शक्ति से जानने को मनःपर्यय ज्ञान कहते हैं।

(८) केवलज्ञान—तीन लोक, तीन कालवर्ती समस्त द्रव्य पर्यायों को एक साथ स्पष्ट जानना केवल ज्ञान है।

१३. संयम-मार्गणा

संयम—अहिंसादि पंच व्रत धारण करना, ईर्यापथ आदि पंच समितियों का पालन करना, क्रोधादि कषाओं का निग्रह करना, मनोयोग, वचनयोग, काययोग इन तीनों योगों को रोकना, पांचों इन्द्रियों का विजय करना सो संयम है। इसकी मार्गणा ७+१ है।

(१) असंयम—जहां किसी प्रकार के संयम या संयमासंयम का लेश भी न हो उसे असंयम कहते हैं।

(२) संयमासंयम—जिनके त्रसकी अविरति का त्याग हो चुका हो, जिनके अणुव्रत का धारण है उनके चारित्र को संयमासंयम कहते हैं।

(३) सामायिक संयम—सब प्रकार की अविरति से विरक्त होना, और समताभाव धारण करना, सामायिक संयम है।

(४) छेदोपस्थापना संयम—भेदरूप से व्रत के धारण करने को या व्रतों में छेद (भंग) होनेपर फिर से व्रतों के पालन करने को छेदोपस्थापना संयम कहते हैं।

(५) परिहारविशुद्धिसंयम—जिसमें हिंसा का परिहार प्रधान हो ऐसे शुद्धिप्राप्त संयम को परिहारविशुद्धि संयम कहते हैं।

(६) सूक्ष्मसांपराय संयम—सूक्ष्म कषाय (सूक्ष्मलोभ) वाले जीवों के जो संयम होता है उसे सूक्ष्मसांपराय संयम कहते हैं।

(७) यथाख्यात संयम—कषाय के अभाव में जो आत्मा का अनुष्ठान होता है उसमें निवास करने को यथाख्यात संयम कहते हैं।

असंयम-संयम-संयमासंयम रहित—सिद्ध भगवान् सदा अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित है। उनके ये तीनों नहीं पाये जाते।

१४. दर्शन-मार्गणा

दर्शन—आत्माभिमुख अवलोकन को दर्शन कहते हैं। इसकी मार्गणा ४ है।

(१) अचक्षुःदर्शन—चक्षुरिन्द्रिय के अलावा अन्य इन्द्रिय व मन से उत्पन्न होनेवाले दर्शन को अचक्षुदर्शन कहते हैं।

(२) चक्षुदर्शन—चक्षुरिन्द्रियजन्य ज्ञान से पहले होनेवाले दर्शन को चक्षुदर्शन कहते हैं।

(३) अवधिदर्शन—अवधिज्ञान से पहले होनेवाले दर्शन को अवधिदर्शन कहते हैं।

(४) केवलदर्शन—केवलज्ञान के साथ-साथ होनेवाले दर्शन को केवलदर्शन कहते हैं।

१५. लेश्या-मार्गणा

लेश्या—कषाय से अनुरंजित योगप्रवृत्ति को लेश्या कहते हैं। इसकी मार्गणा ६+१ है।

(१) कृष्णलेश्या—तीव्र क्रोध करनेवाला हो, बैर को न छोड़े, लड़ने का जिसका स्वभाव

हो, धर्म और दया से रहित हो, दुष्ट हो, जो किसी के वश न हो, ये लक्षण कृष्णलेश्या के है।

(२) नीललेश्या–काम करने में मन्द हो, स्वच्छन्द हो, कार्य करने में विवेकरहित हो, विषयों में लम्पट हो, कामी, मायाचारी, आलसी हो, दूसरे लोग जिसके अभिप्राय को सहसा नहीं जान सके, अति निद्रालु हो, दूसरों के ठगने में चतुर हो, परिग्रह में तीव्र लालसा हो, ये लक्षण नील लेश्या के है।

(३) कापोतलेश्या–रूसे, निन्दा करे, द्वेष करे, शोकाकुल हो, भयभीत हो, ईर्षा करे, दूसरों का तिरस्कार करे; अपनी विविध प्रशंसा करे, दूसरे का विश्वास न करे, स्तुति करनेवाले पर संतुष्ट होवे; रण में मरण चाहे, स्तुति करनेवाले को खूब धन देवे अपना कार्य अकार्य न देखे। ये लक्षण कापोतलेश्या के है।

(४) पीतलेश्या–कार्य, अकार्य, सेव्य, असेव्य को समझनेवाला हो, सर्व-समदर्शी हो; दया-परायण हो, दानरत,कोमल परिणामी हो। ये लक्षण पीतलेश्या के है।

(५) पद्मलेश्या–त्यागी, भद्र, उत्तम कार्य करनेवाला, सहनशील, साधु, गुरु, पूजारत हो। ये लक्षण पद्मलेश्या के है।

(६) शुक्ललेश्या–पक्षपात न करे, निदान न बांधे, सब में समानता की दृष्टि रक्खे, इष्टराग अनिष्ट द्वेष न करे। ये लक्षण शुक्ललेश्या के है।

१६. भव्यत्व-मार्गणा

भव्यत्व–जिन जीवों के अनन्त चतुष्टय-रूप सिद्धि व्यक्त होने की योग्यता हो वे भव्य है। उनके भाव को भव्यत्व कहते हैं। इसकी मार्गणा २+१ है।

(१) भव्य–इसका वर्णन ऊपर हो चुका है।

(२) अभव्य–उक्त योग्यता के अभाव को अभव्यत्व कहते है।

अनुभय-(न भव्यत्व न अभव्यत्व) सिद्ध जीव न भव्य है और न अभव्य है।

१७. सम्यक्त्व-मार्गणा

सम्यक्त्व–मोक्षमार्ग के प्रयोजनभूत तत्त्वों के यथार्थ श्रद्धान को सम्यक्त्व कहते हैं। इसकी मार्गणा ६ है।

(१) मिथ्यात्व–मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से तत्त्वों के अश्रद्धानरूप विपरीत अभि-प्राय को मिथ्यात्व कहते हैं।

(२) सासादन सम्यक्त्व–सम्यक्त्व की विराधना होने पर अनन्तानुबन्धी कषाय के उदय से यदि मिथ्यात्व का उदय न आये तो मिथ्यात्व का उदय आने तक होनेवाला विपरीत आशय सासादन सम्यक्त्व कहलाता है।

(३) सम्यग्मिथ्यात्व– सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से जो मिश्र परिणाम होता है, जिसे न तो सम्यक्त्वरूप ही कह सकते है और न मिथ्यात्वरूप ही कह सकते है; किन्तु जो कुछ समीचीन व कुछ असमीचीन है उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते है।

(४) उपशम सम्यक्त्व–अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्य-ग्मिथ्यात्व और सम्यक् प्रकृति इन ७ प्रकृतियों के उपशम से जो सम्यक्त्व होता है उसे उप-शम सम्यक्त्व कहते है।

इसके एक प्रथमोपशम सम्यक्त्व और दूसरा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व ऐसे दो भेद है।

(अ) **प्रथमोपशम सम्यक्त्व**—मिथ्यात्व के अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व कहते है। अनादि मिथ्या-दृष्टि मिश्रप्रकृति व सम्यक्प्रकृति की उद्वेलना कर चुकने वाले जीवों के अनन्तानुबंधी ४ मिथ्यात्व १ इन पांच के उपशम से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है, और ७ की सत्तावालों के ७ प्रकृतियों के उपशम से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है।

(ब) **द्वितीयोपशम सम्यक्त्व**—क्षायोपश-मिक सम्यक्त्व के अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते है। और यह भी ७ प्रकृतियों के उपशम से होता है। सप्तम गुणस्थानवर्ती जीव यदि उपशम श्रेणी चढ़े तब उसके क्षायिक सम्यक्त्व या उपशम सम्यक्त्व होना आवश्यक है। वहां यदि उपशम सम्यक्त्व करे तब द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहलाता है। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में मरण हो सकता है, यदि मरण हो तो देव गति में ही जावेगा। प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण नहीं होता।

(५) **क्षायिक सम्यक्त्व**—अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्य-ग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन सात प्रकृतियों के क्षय से जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायिक सम्यक्त्व कहते है।

(६) **क्षायोपशमिक (वेदक) सम्यक्त्व**—अनन्तानुबंधी ४, मिथ्यात्व १, सम्यग्मिथ्यात्व १, इन ६ प्रकृतियों का उदयाभावी क्षय व उपशम से तथा सम्यक्प्रकृति के उदय से जो सम्यक्त्व होता है। उसे क्षायोपशमिक या वेदक सम्यक्त्व कहते है। इस सम्यक्त्व में सम्यक्-प्रकृति के उदय के कारण सम्यग्दर्शन में चल, मलिन, अगाढ़, (जो कि सूक्ष्म दोष है) दोष लगते है।

१८ संज्ञी मार्गणा

संज्ञी—जो संज्ञी अर्थात् मन सहित है उन्हें संज्ञी कहते है। इसकी मार्गणा २+१ है।

(१) **संज्ञी**—संज्ञी पंचेन्द्रियही होते है। ये चारों गतियों में पाये जाते है।

(२) **असंज्ञी**—एकेन्द्रियसे लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक होते है। ये सब तिर्यंच है।

अनुभय—सयोगकेवली व अयोग केवली व सिद्धभगवान् है, ये न संज्ञी है क्यों कि मन नही, और न असंज्ञी है क्यों कि अविवेकी नही। सयोगीके यद्यपि द्रव्यमन है परंतु भावमन नही है।

१९ आहारक मार्गणा

आहारक—शरीर, मन, वचन के योग्य वर्गणाओं को ग्रहण करना, आहारक कहलाता है।

जब कोई जीव मरकर दूसरी गतिमें जाता है। तब जन्मस्थान पर पहुँचते ही आहारक हो जाता है, इससे पहले अनाहारक—रहता है, किन्तु ऋजु गतिसे जानेवाला अनाहारक नही होता, क्योंकि वह एक समयमें ही जन्मस्थान पर पहुंच जाता है। तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव जब केवल–समुद्घात करते है तब प्रतरके २ समय, और लोकपूर्ण का १ समय इन तीन समयों में अनाहारक होते है, शेष समय आहारक होतें है। अयोग-केवली और सिद्धभगवान् अनाहारकही होते है।

२० उपयोग

उपयोग—बाह्य तथा अभ्यन्तर कारणों के

द्वारा होनेवाली आत्माके चेतना गुणकी परिणति को उपयोग कहते हैं।' ये २ है।'

(१) साकारोपयोग–ज्ञानोपयोग को कहते है।

(२) निराकारोपयोग–दर्शनोपयोग को कहते है।

(१) ज्ञानोपयोग–को. नं. ५८ से ६३ देखो।

(२) दर्शनोपयोग–को नं. ७१ से ७४ देखो।

२१. ध्यान

ध्यान–एक विषय में चिन्तवन के रुकने को ध्यान कहते हैं। ये १६ है।

(१ इष्टवियोगजआर्तध्यान–इष्ट पदार्थ के वियोग होनेपर उसके संयोग के लिए चिंतवन करना इष्ट वियोगज आर्तध्यान है।

(२) अनिष्ट संयोगज–अनिष्ट पदार्थ के संयोग होने पर उसके वियोग के लिए चिंतवन करना, अनिष्ट संयोगज आर्तध्यान है।

(३) पीडांचिंतन या वेदनाप्रभव आर्तध्यान–शारीरिक पीड़ा होने पर उसके संबंध में चिंतवन करना पीड़ाचिंतन आर्तध्यान है।

(४) निदानबंध–भोगविषयों की चाह संबंधी चिंतवन को निदान या निदानबंध आर्तध्यान कहते हैं।

आर्तध्यान में दुःखरूप परिणाम रहता है। आर्ति = दुःख उसमें होनेवाले को आर्त कहते हैं।

(५) हिंसानन्द रौद्रध्यान–कृत कारित आदि हिंसा में आनंद मानना व हिंसा के लिए चिंतवन करना, हिंसानन्द रौद्रध्यान है।

(६) मृषानन्द–झूठ में आनन्द मानना व झूठ के लिए चिन्तवन करना सो मृषानन्द रौद्रध्यान है।

(७) चौर्यानन्द–चोरी में आनन्द मानना व चोरी के लिए चिन्तवन करना, चौर्यानन्द रौद्रध्यान है।

(८) परिग्रहानन्द–परिग्रह में आनन्द मानना व परिग्रह याने विषय की रक्षा के लिए चिन्तवन करना, परिग्रहानन्द रौद्रध्यान है।

रुद्र = क्रूर, उसके भाव को रौद्र कहते है।

(९) आज्ञाविचय धर्मध्यान–आगम की आज्ञा की श्रद्धा से तत्व चिन्तवन करना आज्ञाविचय धर्मध्यान है।

(१०) अपाय विचय–अपने या परके रागादिभाव जो दुःख के मूल है, उनके विनाश होने के विषय में चिन्तवन करना अपायविचय धर्मध्यान है।

(११) विपाक विचय–कर्मों के फल के संबंध में संवेगवर्द्धक चिन्तवन करना विपाकविचय धर्मध्यान है।

(१२) संस्थानविचय–लोक के आकार काल आदि के आश्रय जीव के परिभ्रमणादि विषयक असारता का चिन्तवन करना और अरहन्त, सिद्ध, मंत्रपद आदि के आश्रय से तत्त्वचिन्तवन करना संस्थानविचय धर्मध्यान है।

(१३) पृथक्त्व वितर्कवीचार शुक्लध्यान–अर्थ, योग व शब्दों को परिवर्तनसहित श्रुत के चिन्तवन को पृथक्त्व वितर्कवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

(१४) **एकत्ववितर्क अवीचार**—एक ही अर्थ में एक ही योग से उन्हीं शब्दों में श्रुत के चिन्तवन को एकत्ववितर्क अवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

(१५) **सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति**—सयोग केवली के अंतिम अन्तर्मुहूर्त में अर्थात् बादर योग भी नष्ट हो जाता है तब सूक्ष्म काययोग से भी दूर होने के लिए जो योग, उपयोग की स्थिरता है उसे सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति शुक्लध्यान कहते हैं।

(१६) **व्युपरतक्रिया निवृत्ति**—समस्त योग नष्ट हो चुकने पर अयोग केवली के यह व्युपरतक्रिया निवृत्ति नामक शुक्लध्यान होता है।

२२. आस्रव

आस्रव-कर्मों के आने के कारणभूत भाव को आस्रव कहते हैं। इसके ५७ भेद है।

(१) **एकान्त मिथ्यात्व**—अनन्त धर्मात्मक वस्तु होनेपर भी उसमें एक धर्मका ही श्रद्धा न करना एकान्त मिथ्यात्व है।

(२) **विपरीत मिथ्यात्व**—वस्तू के स्वरूप से विपरीत स्वरूप की श्रद्धा करना विपरीत मिथ्यात्व है।

(३) **संशय मिथ्यात्व**—वस्तू के स्वरूप में संशय करना संशय मिथ्यात्व है।

(४) **वैनयिक (विनय) मिथ्यात्व**—देव, कुदेव में तत्व, अतत्व में शास्त्र, कुशास्त्र में, गुरू, कुगुरू में, सभी को भला मानकर विनय करना विनयमिथ्यात्व है।

(५) **अज्ञान मिथ्यात्व**—हित, अहित का विवेक न रखना अज्ञान मिथ्यात्व है।

(६) **पृथ्वीकायिक अविरति**—पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को पृथ्वीकायिक अविरति कहते हैं।

(७) **जलकायिक अविरति**—जलकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को जलकायिक अविरति कहते हैं।

(८) **अग्निकायिक अविरति**—अग्निकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को अग्निकायिक अविरति कहते हैं।

(९) **वायुकायिक अविरति**—वायुकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को वायुकायिक अविरति कहते हैं।

(१०) **वनस्पतिकायिक अविरति**—वनस्पतिकायिक जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को वनस्पतिकायिक अविरति कहते हैं।

(११) **त्रसकायिक अविरति**—त्रसकायिक (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय) जीवों की हिंसा से विरक्त न होने को त्रसकायिक अविरति कहते हैं।

(१२) **स्पर्शनेन्द्रिय विषय-अविरति**—स्पर्शन इन्द्रिय के विषयों से विरक्त न होने को स्पर्शनेन्द्रिय विषय—अविरति कहते हैं।

(१३) **रसनेन्द्रिय विषय-अविरति**—रसना इन्द्रिय के विषय (स्वाद) से विरक्त न होने को रसनेन्द्रिय विषय—अविरति कहते हैं।

(१४) **घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति**—घ्राण इन्द्रिय के विषय से विरक्त न होने को घ्राणेन्द्रिय विषय—अविरति कहते हैं।

(१५) **चक्षुरिन्द्रिय विषय-अविरति**—चक्षु इन्द्रिय के विषय से विरक्त न होने को चक्षुरिन्द्रिय विषय—अविरति कहते हैं।

(१६) **श्रोत्रेन्द्रिय विषय-अविरति**—श्रोत्र इन्द्रिय के विषय से विरक्त न होने को श्रोत्रेन्द्रिय विषय—अविरति कहते हैं।

(१७) मनोविषय–अविरति–मन के विषय से (सन्मान, आराम की चाह आदि से) विरक्त न होने को मनविषय–अविरति कहते हैं ।

(१८) से (४२) **कषाय २५.** इनका वर्णन कषाय मार्गणा में हो चुका है ।

(४३) से (५७) **योग १५.** इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है ।

२३. भाव

भाव–अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशम आदि होने पर जो गुण (स्वभाव याउदय की अपेक्षा विभाव रूप) प्रगट हो उन्हें **भाव** कहते हैं––इनका उपादान कारण जीव है। अर्थात् ये जीव में ही होते हैं । अन्य द्रव्य में नहींहोते; इसलिये ये जीव के निज तत्व या असाधारण भाव कहलाते हैं । ये भाव ५३ होते

१. औपशमिक भाव २ है

औपशमिक–अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशम होने पर जो गुण (भाव) प्रगट हों उन्हें औपशमिक भाव कहते हैं ।

(१) **औपशमिक सम्यक्त्व**–इस का वर्णन हो चुका हैं ।

(२) **औपशमिक चारित्र**–चारित्र मोहनीय की २१ प्रकृतियों के उपशम से जो चारित्र हो उसे औपशमिक चारित्र कहते हैं ।

२. क्षायिक भाव ९ है

क्षायिक भाव–अपने प्रतिपक्षी कर्मों के क्षय से जो गुण (भाव) प्रगट हों उन्हें क्षायिक भाव कहते हैं ।

(३) **क्षायिक ज्ञान**–ज्ञानावरण कर्म के क्षय से जो ज्ञान प्रगट हो उसे क्षायिक ज्ञान (केवल ज्ञान) कहते हैं ।

(४) **क्षायिक दर्शन**–दर्शना वरण कर्म के क्षय से जो दर्शन प्रगट हो उसे क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन) कहते हैं ।

(५) **क्षायिक सम्यक्त्व**-इस का वर्णन हो चुका हैं ।

(६) **क्षायिक चारित्र**–चारित्र मोहनीय की २१ प्रकृतियों के क्षयसे जो चारित्र हो उसे क्षायिक चारित्र कहते हैं ।

(७) **क्षायिक दान**–जो दानान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक दान कहते हैं ।

(८) **क्षायिक लाभ**–जो लाभान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक लाभ कहते हैं ।

(९) **क्षायिक भोग**–जो भोगान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक भोग कहते हैं ।

(१०) **क्षायिक उपभोग**–जो उपभोगान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक उपभोग कहते हैं ।

(११) **क्षायिक वीर्य**–जो वीर्यान्तराय के क्षय से प्रगट हो उसे क्षायिक वीर्य कहते हैं ।

३. क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव १८ है

क्षायोपशमिक भाव–अपने प्रतिपक्षी कर्मों में से किन्हीं––कर्मों के स्पर्द्धकों के उदयाभावी क्षय से किन्हीं स्पर्द्धकों के उपशम से व किन्हीं स्पर्द्धकों के उदय से जो भाव प्रगट हो उन्हें क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव कहते हैं ।

(१२),(१३),(१४) **कुज्ञान ३**–इनका वर्णन हो चुका हैं ।

(१५) से (१८) **ज्ञान ४**–इनका वर्णन हो चुका हैं ।

(१९, २०, २१) **दर्शन ३**–इनका भी वर्णन हो चुका हैं ।

(२२ से २६) क्षायोपशमिकलब्धि ५—दानान्तराय आदि के क्षयोपशम से क्षायोपशमिक दान आदि ५ लब्धि होते हैं। इनका वर्णन हो चुका है।

(२७) क्षायोपशमिक वेदक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका हैं।

(२८) क्षायोपशमिक चारित्र या सराग संयम—अप्रत्याख्यानावरण ४, व प्रत्याख्यावरण ४ इन आठ प्रकृतियों के क्षयोपशमसे महाव्रतादिरूप चारित्र होता है उसे क्षायोपशमिक (सराग) चारित्र कहते हैं।

(२९) देश संयम (संयमासंयम)—इस का वर्णन हो चुका हैं।

४. औदयिक भाव २१ होते है

औदयिक भाव—अपनी उत्पत्ति के निमित्त-भूत कर्मों के उदय से जो भाव प्रगट हों उन्हें औदयिक भाव कहते हैं।

(३० से ३३) **गति ४**—इनका वर्णन गति मार्गणा में हो चुका हैं।

(३४, ३५, ३६) **लिंग ३**—इनका वर्णन हो चुका हैं।

(३७ से ४०) **कषाय ४**—इनका वर्णन हो चुका हैं।

(४१ से ४६) **लेश्या ६**—इनका वर्णन लेश्या मार्गणा में हो चुका हैं।

(४७) **मिथ्यादर्शन**—इसका स्वरूप सम्यक्त्व मार्गणा में बताया गया है।

(४८) **असंयम**—इसका वर्णन संयम मार्गणा में हो चुका हैं।

(४९) **अज्ञान**—ज्ञानावरण कर्म के उदय से जो ज्ञान का अभावरूप भाव है उसे अज्ञान भाव कहते है यह अज्ञान औदयिक हैं।

(५०) **असिद्धत्व**—जब तक आठों कर्मों का अभाव नहीं होता, तब तक असिद्धत्व भाव हैं।

५. पारिणामिक भाव ३ है

पारिणामिक भाव—जो कर्मों के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम की अपेक्षा के बिना होवे वह पारिणामिक भाव है, ये ३ होते हैं।

(५१) **जीवत्व भाव**-जिस से जीवे वह जीवत्व है। वह दो प्रकार का है। १ ला ज्ञान दर्शनरूप और २ रा दशप्राणरूप, इनमें ज्ञानदर्शनरूप जीवत्व शुद्ध पारिणामिक भाव है। और प्राणरूप जीवत्व अशुद्ध पारिणामिक भाव हैं।

(५२) **भव्यत्व**—इसका वर्णन भव्यत्व मार्गणा में हो चुका हैं।

(५३) **अभव्यत्व**—इसका वर्णन भव्यत्व मार्गणा में हो चुका हैं।

२४. अवगाहना

जिन जीवों के देह है उनके देह प्रमाण तथा देह रहित (सिद्ध) जीवों के जितने शरीर से मोक्ष गये है, उतने प्रमाण अवगाहना का वर्णन करना इस स्थान का प्रयोजन हैं।

२५ **बंध-प्रकृतियां**—१२० होते है।
२६ **उदय** ,, —१२२ ,,
२७ **सत्व** ,, —१४८ ,,

२८ **संख्या**—
२९ **क्षेत्र**—
३० **स्पर्शन**—
३१ **काल**—
} इनका वर्णन कोष्टकों में देखो।

३२ **अन्तर (विरहकाल)**—
३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख है।
३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटि कुल है।

इन सब का वर्णन उत्तर भेदों की नामावली में किया है। वहां देखो।

सामान्य जीवों के सामान्य आलाप

नं. स्थान	पर्याप्ति-कालमें	अपर्याप्ति-कालमें	सिद्ध जीव
१ गुणस्थान १४	१४ गुण स्थान	१४ गुण स्थान	अगुणस्थान
२ जीवसमास १४	१४ जीवसमास	१४ जीवसमास	अजीवसमास
३ पर्याप्ति ६ आहार शरीर इन्द्रिय आनापान भाषा मन ये छह पर्याप्तियां है।	६ पर्याप्तियां संज्ञीपर्याप्त के होती है। ५ मनःपर्याप्तिके बिना उक्त पांचों ही पर्याप्तियां असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्तों सेलेकर द्वीन्द्रिय-पर्याप्तक जीवों तक होती है। ४ भाषा और मनःपर्याप्ति के बिना चार पर्याप्तियां एकेन्द्रिय पर्याप्तों के होती है।	६ अपर्याप्तियां इन्हीं संज्ञी-जीवों के होती हैं। ५ उन्हीं जीवों के अपूर्णता को प्राप्त वे ही पांच अपर्याप्तियां होती है। ४ इन्हीं एकेन्द्रिय जीवों के अपर्याप्तकाल में अपूर्णता को प्राप्त ये ही चार अपर्याप्तियां होती है।	अतीत पर्याप्ति
४ प्राण १० स्पर्शनेन्द्रिय रसनेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रिय मनोबल वचनबल कायबल श्वासोच्छ्वास आयुप्राण ये दश प्राण है।	१० प्राण संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्तकों के होते हैं। ९ प्राण मनोबलके बिना शेष नौप्राण असंज्ञी-पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों के होते हैं। ८ प्राण श्रोत्रेन्द्रिय प्राण-बिना शेष ८ प्राण चतुरिन्द्रिय जीवों के होते हैं। ७ प्राण चक्षुरिन्द्रिय प्राण-बिना शेष ७ प्राण त्रीन्द्रिय के होते हैं। ६ प्राण घ्राणेन्द्रिय प्राण-बिना शेष ६ प्राण द्वीन्द्रिय के होते हैं। ४ प्राण रसनेन्द्रिय, वचनबल ये दो के बिना शेष चार प्राण एकेन्द्रिय के होते है। ४ प्राण केवली भगवान के पांच इन्द्रिय व मनोबल को छोड़कर शेष चार प्राण होते हैं।	७ आनापान,वचनबल, मनोबल बिना शेष सात प्राण संज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्तकों के होते है। ७ आनापान, वचनबल बिना सातप्राण असंज्ञी पं. अपर्याप्तकों के होते हैं। ६ प्राण आनापान, वचनबल बिना शेष छह प्राण चतुरिन्द्रिय जीवों के होते हैं। ५ आनापान, वचनबल बिना शेष पांच प्राण त्रीन्द्रिय जीवों के होते हैं। ४ आनापान, वचनबल बिना शेष चार प्राण द्वीन्द्रिय के होते हैं। ३ आनापान के बिना शेष तीन प्राण एकेन्द्रिय के होते हैं। ३ योग निरोध के समय	अतीत प्राण **सूचना** अपर्याप्त अवस्था में जिन जिन प्राणों को घटाया है वह उपयोग रूप अवस्था की अपेक्षा है परंतु लब्धिरूप सब प्राण अपर्याप्त अवस्था में भी पर्याप्तवत गिने जाते हैं। देखो षट्खंडागमकाल प्ररूपना गाथा ११९

१ २	३	४	५
		वचनबल का अभाव हो जाने पर कायबल, आनापान, और आयु के तीन प्राण होते हैं । २ प्राण तेरहवे गुण स्थान के अंत में कायबल और आयु ये दो प्राण होते हैं । १ चौदहवें गुण स्थानमें केवल एक आयु प्राण होता है ।	
५ संज्ञा ४ आहार, भय, मैथुन और परिग्रह संज्ञा ये चार है ।	४	४	क्षीण संज्ञा
६ गति ४	४ नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्य गति, देवगति ये चारगति है ।	४ पर्याप्तवत् जानना	सिद्ध गति
७ जाति ५	५ एकेन्द्रियादि पांच जातियां होती है ।	५ पर्याप्तवत् जानना ।	अतीत जाति
८ काय ६	६ पृथिवीकाय आदि छह काय होते है ।	६ पर्याप्तवत् जानना ।	अतीत काय
९ योग ११	११ सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनो योग, अनुभय-मनोयोग, सत्य-वचनयोग, असत्य वचन-योग, उभयवचनयोग, अनुभय वचनयोग,-औदारिक काययोग, वैक्रियककाय योग आहारककाय योग यह ११ योग ।	१ औदारिकमिश्रकाय योग, २ वैक्रियक मिश्रकाय योग, ३ आहारक मिश्रकाय योग, तथा कार्माणकाय योग यह ४ होते है ।	अयोग
१० वेद ३ नपुंसक वेद	३	३	अपगत वेद

१ २	३	४	५
स्त्री वेद पुरुष वेद ये तीन वेद है।			
११ कषाय ४	४ अनंतानुबंधी,अप्रत्या ख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन, क्रोध मान--माया--लोभ ये चार, कषाय होती हैं।	पर्याप्तवत्	अकषाय
१२ ज्ञान ८	८ कुमति, कुश्रुत, कुअवधि-ज्ञान, मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवल ज्ञान ये ८ ज्ञान होते हैं।	कुअवधिज्ञान घटाकर शेष ७ ज्ञान पर्याप्तवत्	केवल ज्ञान
१३ संयम ७	७ असंयम,संयमासंयम,संयम, सामायिक,परिहारविशुद्धि सूक्ष्म सांपराय और यथा-ख्यात ये ७ होते हैं।	संयमासंयम, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्म सांपराय घटाकर शेष ४ संयम पर्याप्तवत्	संयम,संयमा-संयम,असंयम रहित
१४ दर्शन ४	४ चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवल दर्शन ये ४ होते हैं।	पर्याप्तवत्	केवल दर्शन
१५ लेश्या ६	६ द्रव्य और भाव के भेद से छह लेश्याएं होती हैं।	पर्याप्तवत्	अलेश्या
१६ भव्य २	२ भव्य और अभव्य जीव होते हैं।	पर्याप्तवत्	अनुभय
१७ सम्यक्त्व ६	६ सम्यक्त्व मिथ्यात्व, सासादन मिश्र, उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक ये छह होते हैं।	मिश्र घटाकर शेष ५ पर्याप्त-वत्	क्षायिक-सम्यक्त्व
१८ संज्ञी २	२ संज्ञी और असंज्ञी ये दो होते हैं।	पर्याप्तवत्	अनुभय
१९ आहारक २	१ आहारक	आहारक और अनाहारक	
२० उपयोग २	२ साकार उपयोग और-अनाकार उपयोग भी होते हैं।	पर्याप्तवत्	युगपत उपयोग

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान मिथ्यात्व	१	१ चारों गतियों में हरेक १ मिथ्यात्व जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ मिथ्यात्व गुण०	१ मि० गुण०	१ [illegible] जानना	१ मि० गुण०	१ १ मि० गुण०
२ जीव समास (१) एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त (२) " " अपर्याप्त (३) " बादर पर्याप्त (४) " " अपर्याप्त (५) द्वीन्द्रिय पर्याप्त (६) " अपर्याप्त (७) त्रीन्द्रिय पर्याप्त (८) " अपर्याप्त (९) चतुरिन्द्रिय पर्याप्त (१०) " अपर्याप्त (११) असंज्ञी पं० पर्याप्त (१२) " पं० अपर्याप्त (१३) संज्ञी पं० पर्याप्त (१४) " " अपर्याप्त ये १४ जीव समास जानना	१४	७ (१) एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त (२) " बादर " (३) द्वीन्द्रिय पर्याप्त (४) त्रीन्द्रिय " (५) चतुरिन्द्रिय " (६) असंज्ञी पं० " (७) संज्ञी पंचेन्द्रिय " ये ७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगतियों में हरेक में संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७ पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १७ देखो	१ समास १ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास १ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	७ (१) एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त (२) " बादर " (३) द्वीन्द्रिय अपर्याप्त (४) त्रीन्द्रिय " (५) चतुरिन्द्रिय " (६) असंज्ञी पं० " (७) संज्ञी पं० " ये ७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७ अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १७ देखो	१ समास १ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास १ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति (१) आहार पर्याप्ति (२) शरीर " (३) इन्द्रिय " (४) श्वासोच्छ्वास प० (५) भाषा पर्याप्ति (६) मन पर्याप्ति ये ६ पर्याप्ति जानना	६	६ ६-५-४-६ के भंग (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	३ उपयोग रूप ३ लब्धि रूप ३ पर्याप्तवत सूचना— पृष्ठ २४ पर देखो ३-३ के भंग मन-भाषा-श्वासोच्छ्वास ये ३ घटाकर शेष (३) (१) चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग आहार, शरीर, इन्द्रिय पर्याप्ति ये ३ का भंग जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो
४ प्राण (१) आयु प्राण, (२) कायबल प्राण, (३) इन्द्रिय प्राण ५, (स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय प्राण ये ५) (४) श्वासोच्छ्वास, (५) वचनबल प्राण, (६) मनोबल प्राण, ये १० प्राण जानना	१०	१० १०-९-८-७-६-४-१० के भंग (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	७ मनोबल, वचनबल, श्वासोच्छ्वास ये ३ घटाकर शेष (७) ७-७-६-५-४-३-७ के भंग (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा आहार, भय,	४	४ (१) चारों गतियों में हरेक में	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	४ (१) चारों गतियों में हरेक में	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
मैथुन, परिग्रह ये ४ जानना		४ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो			४ का भंग को०नं० १६ से १९ देखो		
६ गति नरक, तिर्यंच- मनुष्य देवगति ये ४ जानना	४	४ चारों गति जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति जानना	१ गति ४ में से कोई १ गति	४ चारों गति जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति जानना
७ इन्द्रिय जाति (१) एकेन्द्रिय जाति (२) द्वीन्द्रिय जाति (३) त्रीन्द्रिय जाति (४) चतुरिन्द्रिय जाति (५) पंचेन्द्रिय जाति ये ५ जाति जानना	५	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	५ (१) नरक, मनुष्य, देव-गति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय पृथ्वी, अप० (जल), तेज (अग्नि), वायु, वनस्पति, त्रसकाय, ये ६ काय जानना	६	६ (१) नरक, मनुष्य, देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	६ (१) नरक, मनुष्य, देव-गति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो
९ योग आहारक मिश्रकाययोग आ० काययोग, ये २ घटाकर (१३)	१३	१० औ० मिश्र काययोग, वै० मिश्र काययोग, कार्माण काययोग, ये ३ घटाकर (१०) ९-२-१-९ के भंग (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ योग को०नं० १६-१८-१९ देखो	२ औ० मिश्र काययोग, या वै० मिश्रकाययोग और कार्माण काययोग ये २ योग जानना १-२ के भंग (१) चारों गतियों में हरेक में	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		६ का भंग को० नं० १६–१८– १६ देखो			–२ के भंग को० नं० १८ से १६ देखो		
		(२) तिर्यंच गति में ६–२–१–६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो			
१० वेद नपुंसक वेद, स्त्री वेद पुरुष वेद ये ३ जानना	३	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३–१–३–२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३–१–२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३–२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३–२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो
		(४) देव गति में २–१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	(४) देव गति में २–१ भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो
११ कषाय अनन्तानुबन्धी कषाय ४, अप्रत्याख्यान क० ४, प्रत्याख्यान कषाय ४, संज्वलन कषाय ४, नोकषाय ९ ये २५ कषाय जानना	२५	२५ (१) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग ७–८–९ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग	२५ (१) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग ७–८–९ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग
		(२) तिर्यंच गति में २५–२३–२५–२४ के भंग को० नं० १७ देखो	″	″	(२) तिर्यंच गति में २५–२३–२५–२४ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग ६–७–८–९ के भंग	″
		(३) मनुष्य गति में २५–२४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग ६–७–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६–७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग	(३) मनुष्य गति में २५–२४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग ७–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६–७–८ के भंगों में से कोई १ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में २४-२३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग ७-८-९ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग	(४) देव गति में २४-२४-२३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग ७-८-९ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग
१२ ज्ञान कुमति, कुश्रुति, कुअवधि ज्ञान ये (३)	३	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में ३ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो १ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान को०नं० १८ देखो १ ज्ञान को०नं० १९ देखो	२ कुअवधि ज्ञान घटाकर (२) (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-२ का भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-२ के भंग को० नं० १९ देखो सूचना—यहां कुअवधि ज्ञान में मरण नहीं होता। (देखो गो०क०गा० ३२२)	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो १ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान को०नं० १८ देखो १ ज्ञान को०नं० १९ देखो
१३ संयम	१ असंयम	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये (२)	२	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देव गति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या कृष्ण–नील–कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ये ६ लेश्या जानना	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३-२-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में २ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में २ का भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व	१ मिथ्यात्व	१ चारों गतियों में हरेक में १ मिथ्यात्व जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ मिथ्यात्व	१ मिथ्यात्व	१ चारों गतियों में हरेक में १ मिथ्यात्व जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१ मिथ्यात्व	१ मिथ्यात्व

१	२	३	४	५	६	७	८
१८ संज्ञी असंज्ञी, संज्ञी	२	२ (१) नरक, मनुष्य, देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ १८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	२ (१) नरक, मनुष्य, देव-गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ आहारक	१ आहारक	२ चारों गतियों में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३, दर्शनोपयोग २, ये ५ उपयोग जानना	५	५ (१) नरक गति में हरेक में ५ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-५-५ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-५ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में ५ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो	४ कुअवधि ज्ञान घटाकर (४) (१) नरक गति में ४ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो
२१ ध्यान (१) आर्तध्यान ४, (इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग, पीड़ा चिंतन,	८	८ (१) चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ से १९ देखो	८ (१) चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
निदान बंध ये ४) (४) रौद्र ध्यान ४, (हिंसानन्द, मृषानन्द, चौर्यानन्द, परिग्रहानन्द							
२२ आस्रव आ० मिश्रकाययोग १, आहारक काययोग १, ये घटाकर (५५)	५५	५२ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ३ घटाकर (५२) (१) नरक गति में ४९ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४२- ५१-५० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५१-५० के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ५०-४९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	४५ मनोयोग ४, वचनयोग ४ औ० काययोग १, वै० काययोग १ ये १० घटाकर (४५) (१) नरक गति में ४२ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३- ४४-४३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-४३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४३-४२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो
२३ भाव कुज्ञान ३, दर्शन २, क्षयोपशम लब्धि ५, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १,	३४	३४ (१) नरक गति में २६ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-३३ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	३३ कुअवधि ज्ञान घटाकर (३३) (१) नरक गति में २५ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ३४ भाव जानना		(३) मनुष्य गति में २१-२७ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २५-२३-२४ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२२-२४के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३०-२४ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में २६-२६-२३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो कोई १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो

२४ **अवगाहना**—जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग जानना, (यह अवगाहना लब्ध्य पर्याप्तक जीव की है।) उत्कृष्ट अवगाहना १००० (एक हजार) योजन की जानना, (यह अवगाहना स्वयं भूरमण द्वीपवर का कमल (वनस्पति काय और स्वयं भूरमण समुद्र में पंचेन्द्रिय महामत्स्य की होती है) विशेष खुलासा को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—११७ बंधयोग्य १२० प्रकृतियां ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, वेदनीय २, मोहनीय २६, (सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति ये २ घटाकर २६) आयु ४, नामकर्म के ६७ (स्पर्शादिक ४, गति ४, जाति ५, शरीर ५, संस्थान ६, अंगोपांग ३, संहनन ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, त्रस १, स्थावर १, बादर १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, अपर्याप्त १, प्रत्येक शरीर १, साधारण शरीर १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुभग १, दुर्भग १, सुस्वर १, दुस्वर १, आदेय १, अनादेय १, यश: कीर्ति १, अयश: प्रकृति १, निर्माण १, तीर्थंकर १, ये ६७) गोत्र २, अन्तराय ५, ये १२० प्रकृति जानना, इनमें से आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्रकृति १ ये ३ प्रकृति घटाकर ११७ प्रकृति जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—११७ उदययोग्य १२२ प्रकृतियां—बंध योग्य १२० प्रकृतियों में मिथ्यात्व प्रकृति का उदय के समय तीन खंड रूप उदय में आती है, (मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति ३) इसलिये उदय रूप १२२ प्रकृतियां जानना, इनमें से आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्रकृति १, सम्यग् मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, इन पांच प्रकृतियों का उदय इस गुण स्थान में नहीं होता, इसलिये १२२ में से ५ प्रकृतियां घटाकर ११७ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ नामकर्म की जिन २६ प्रकृतियों का अर्थात् स्पर्श ८, रस ५, गंध २, वर्ण ५, इन २० प्रकृतियों में से स्पर्श १, रस १, वर्ण १, इन ४ प्रकृतियों का ही बंध होता है। इसलिये ये ४ प्रकृतियां घटाने से शेष १६ प्रकृतियां और इसी तरह बंधन ५, संघात ५ इन १० प्रकृतियों का पांच शरीर के साथ अविनाभावी सम्बन्ध है, इन १० प्रकृतियों का अलग बन्ध

नहीं होता इसलिये स्पर्शादि १६ और ये १० इन २६ प्रकृतियों का बन्ध में अभाव दिखाया गया था वह सत्ता में आकर जुड़ जाती है। उदययोग्य १२२ में से छोड़ी हुई २६ प्रकृतियों को जोड़कर सत्ता रूप १४८ प्रकृति जानना)।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जीव जानना।

२९ **क्षेत्र**—जीव रहने का स्थान सर्वलोक है। यहां क्षेत्र स्थावर जीव की अपेक्षा जानना (त्रसकाय जीवों का क्षेत्र त्रसनाली जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक (विग्रह गति में और मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा जानना)

३१ **काल** - जीव निरन्तर रहने की अपेक्षा समय वह काल कहलाता है। नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल अर्थात् सर्वलोक में निरन्तर मिथ्या दृष्टि पाये जाते हैं। जैसे सूक्ष्म निगोदिया जीव लोककाश के सर्व प्रदेश में मौजूद है, एक जीव अनादि मिथ्या दृष्टि अनादि काल से चला आ रहा है। सादिमिथ्या दृष्टि निरन्तर अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक रह सकता है। इसके बाद सम्यक्त्व ग्रहण करके निश्चय रूप से मोक्ष में चला जायगा।

३२ **अन्तर**—मिथ्यात्व छूटने के बाद दुबारा जितने समय के बाद मिथ्या दृष्टि बने वह समय अन्तर कहलाता है। नाना जीवों की अपेक्षा कभी भी अन्तर नहीं पड़ता। एक जीव का मिथ्यात्व छूटने के बाद अन्तर्मुहूर्त तक उपशम सम्यग्दृष्टि रहकर फिर दुबारा मिथ्या दृष्टि बन सकता है। मिथ्या दृष्टि जीव जब क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि बन जाता है तब वह जीव अगर क्षायिक सम्यग्दृष्टि न बने तो १३२ सागर काल के बाद फिर मिथ्या दृष्टि बन सकता है।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना। उनका विवरण पृथ्वीकाय ७ लाख, जलकाय ७ लाख, अग्निकाय ७ लाख, वायुकाय ७ लाख, नित्यनिगोद ७ लाख, इतर निगोद ७ लाख, प्रत्येक वनस्पति १० लाख, द्वीन्द्रिय २ लाख, त्रीन्द्रिय २ लाख, चतुरिन्द्रिय २ लाख पंचेन्द्रिय पशु ४ लाख, नारकी ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख इस प्रकार ८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना, उनका विवरण पृथ्वीकाय २२ लाख कोटि, जलकाय ७ लाख कोटि अग्निकाय ३ लाख कोटि, वायुकाय ७ लाख कोटि, वनस्पतिकाय २८ लाख कोटि, द्वीन्द्रिय ७ लाख कोटि, त्रीन्द्रिय ८ लाख कोटि, चतुरिन्द्रिय ९ लाख कोटि, जलचर पंचेन्द्रिय १२॥ लाख कोटि, स्थलचर पंचेन्द्रिय १० लाख कोटि, नभचर पंचेन्द्रिय १२ लाख कोटि, छाती चलने वाले सर्पादिक ९ लाख कोटि, नारकी २५ लाख कोटि, देव २६ लाख कोटि, मनुष्य १४ लाख कोटि, इस प्रकार १९९॥ लाख कोटि, कुल जानना।

सूचना—कोई आचार्य मनुष्य गति में १२ लाख कोटि कुल गिनकर चारों गतियों में १९७॥ लाख कोटि कुल मानते है। गोमटसार जीव कांड गाथा ११३ से ११६ के अनुसार।

क्रम स्थान नाम	सामान्य आलाप	पर्याप्त सामान आलाप	पर्याप्त: एक समय में नाना जीवों की अपेक्षा आलाप	पर्याप्त: १ समय में एक जीव की अपेक्षा आलाप	अपर्याप्त सामान आलाप	अपर्याप्त: १ समय में नाना जीव की अपेक्षा आलाप	अपर्याप्त: एक समय में १ जीव की अपेक्षा आलाप
१	२	३	४	५	६	७	८
१ सासादन गुण स्थान	१ सासादन	१	१	१	१	७	१
२ जीव समास	८	संज्ञी पंचेन्द्रीय पर्याप्त १	१	१	अपर्याप्त ७	एकेन्द्रीय सूक्ष्म अपर्याप्त १ " बादर " द्वे इन्द्रीय " ते इन्द्रीय " चौ इन्द्रीय " असंज्ञी पंचेन्द्रीय " संज्ञीप चेन्द्रीय " सूचना आहार पर्याप्ती तक ही सासादनी रहता है उसकी अपेक्षा ये सात स्थान बांटे हैं परन्तु शरीर पर्याप्ती प्राप्त होते ही मिथ्या दृष्टि बन जाता है।	१
३ पर्याप्ती ६ कोष्ठक १ प्रमाण	६	६ संज्ञी पंचेन्द्रीय पर्याप्त ही होता है	६	६	६-५-४ लब्धि रूप पर्याप्त वत अपनी अपनी पर्याप्ती सामान उपयोग रूप ३ ही कोष्टक १ प्रमाण	सर्व अवस्थायें	कोई १ अवस्था
४ प्राण १० कोष्ठक १ प्रमाण	१०	१० संज्ञी पंचेन्द्रीय पर्याप्त ही होता है	०१	१०	७-७-६-५-४-५ अपनी अपनी सामास प्रमाण	ग० अवस्थायें अपने अपने सामास प्रमाण	कोई १ अवस्था
५ संज्ञा ४ कोष्ठक १ प्रमाण	४	४	४	४	४	४	

कोष्टक नम्बर २ सासादन गुण स्थान

१	२	३	४	५	६	७	८
६ गति कोष्ठक १ प्रमाण	४	४	४	कोई १ गति	३ सासादनी मरकर नरक में नहीं जाता	३	कोई १ गति
७ इन्द्री पांच कोष्ठक १ प्रमाण		१ संज्ञी पंचेन्द्रीय	१	१	५ आहार पर्याप्ति तक ही सासादन गुण स्थान रह सकता है	५	कोई १ इन्द्री
८ काय कोष्ठक १ प्रमाण	६ १	६ संज्ञी पंचेन्द्रीय त्रस १	१	१	४ कोष्टक १ प्रमाण आहार पर्याप्ति तक ही	४ सासादनी मरकर अग्नि काय वायु काय में जन्म नहीं लेता है	कोई १ काय
९ योग कोष्टक १ प्रमाण	१३	१० औदारिक मिश्रकाय योग वैक्रयक मिश्र काय योग कारमाण काय योग घटाकर	१० तिर्यंच और मनुष्य में वैक्रयक काय योग घटाकर ९ नारकी और देव के औदारिक काय योग घटाकर	कोई १ योग	३ औदारिक मिश्र वैक्रयक मिश्र कार्माण ये तीन काय योग	३	कोई १ योग
१० वेद तीन कोष्टक १ प्रमाण	३	३	३	कोई १ वेद	३ मराठी गोमट सार कर्मकांड कोष्टक ६१ प्रमाण	३	कोई १ वेद
११ कषाय कोष्टक १ प्रमाण	२५	२५	७-८-९ के भंग कोष्टक १८ प्रमाण	कोई १ भंग	२५	७-८-९ के भंग	कोई १ भंग
१२ ज्ञान तीन कुमति कुश्रुति कुअवधि		३	३-२ के भंग तीन का भंग कुमति कुश्रुति कुअवधि दो का भंग कुमति कुश्रुति	कोई १ कुज्ञान	२ कुमति कुश्रुति	पर्याप्तवत् २ का भंग	कोई १ कुज्ञान
१३ संयम असंयम	१	१	१	१	१	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन	२ चक्षु अचक्षु	२	२	कोई १ दर्शन	२	२	कोई १ दर्शन
१५ लेश्या कोष्टक १ प्रमाण पर्याप्त अवस्था में	६	६ ८ ४७ औदारिक मिश्र वैक्रियक मिश्र कारमाण ये तीन काय योग घटाकर	३–६–१–३–१ के भंग तीन का भंग नरक गति में कृष्ण नील कापोत ६ का भंग तिर्यंच मनुष्य गति में १ का भंग भवनत्रक देवों में पीत लेश्या १ ३ का भंग कल्प वासी देवों में पीत पद्म शुक्ल १ का भंग कल्पातीत अहमीन्द्रो में शुक्ल लेश्या १	कोई १ लेश्या अपने अपने स्थान प्रमाण विशेष विगत मराठी गोमट सार कर्म कांड पन २४२ से २६६ तक देखो	अपर्याप्त अवस्था में	०–३–६–३–३–१ के भंग ३–१ ० सासादनी मरकर नरक में नहीं जाता ३ का भंग तिर्यंच गति में कृष्ण नील कापोत ६ का भंग मनुष गति में सर्व लेश्या ३ का भंग भवनत्रक देवों में कृष्ण नील कापोत ३ का भंग कल्पवासी देवों में पीत पदम और शुक्ल १ का भंग कल्पातीत अहमिन्द्रो में शुक्ल लेश्या १ ३ का भंग एकेन्द्री से चौइन्द्री तिर्यंचों में कृष्ण नील कापोत १ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्री तिर्यंचों में पीत लेश्या १	कोई १ लेश्या कोठा नं० ७ में से
१६ भव्य	१ भव्य ही	१	१	१	१	१	१
१७ सम्यक्त्व	१ सासादन	१	१	१	२	१	१
१८ संज्ञी	२ संज्ञी असंज्ञी	१ संज्ञी ही	१	१	१	एकेन्द्री से असंज्ञी पंचेन्द्री तक असंज्ञी संज्ञी पंचेन्द्री संज्ञी	कोई अवस्था

१	२	३	४	५	६	७	८
१९ आहारक अनाहारक आहारक	२	अनाहारक ही		१	२	१ का भंग विग्रह गति में अनाहारक १ का भंग निवृति पर्याप्त अवस्था मे आहारक	कोई १ अवस्था
२० उपयोग कुमती कुश्रुति कुअवधि ३ कुज्ञान चक्षु अचक्षु दो दर्शन	५	५	४–५ के भंग ४ का भंग कुअवधि ज्ञान घटाकर १ले २रे गुण ५ का भंग कुअवधि ज्ञान जोड़कर १ से ४ गुण	कोई १ उपयोग	४ कुअवधि ज्ञान घटाकर	४	कोई १ उपयोग
२१ ध्यान कोष्टक १ प्रमाण	८	८	८	कोई १ ध्यान	८	८	कोई १ ध्यान
२२ आस्रव कोष्टक नं० १ में ५ मिथ्यात घटाकर	५०	४३ औदारिक मिश्र वैक्रियक मिश्र कारमाण ये तीन काय योग घटाकर	४४–४६–४५ के भंग ४४ का भंग नरक गति में अव्रत १२ कषाय २३ योग ९ ४६ का भंग संज्ञी पंचेन्द्री तिर्यंच और मनुष्य के अव्रत १२ कषाय २५ योग ९ कोष्टक १७ १८ प्रमाण ४५ का भंग देव गती में अव्रत १२ कषाय २४ योग ९ कोष्टक १९ प्रमाण	१ समय के भंगों का वर्णनकोष्टक १६ से १९ तक देखो	४०– अव्रत १२ कषाय २५ योग ३	०–३३–३४–३५–३६–३७ ४०–३६–३८ के भंग ० का भंग सासादनी मरकर नरक में नहीं जाता ३३ का भंग एकेन्द्रीय तिर्यंच अव्रत ७ कषाय २३ योग ३ ३४ का भंग दो इन्द्रीय के अव्रत ८ गिनकर ३५ का भंग तेइन्द्रीय के अव्रत को गिनकर ३६ का भंग चौइन्द्रीय के अव्रत १० गिनकर ३७ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्रीय के अव्रत ११ गिनकर ४० का भंग संज्ञी पंचेन्द्री तिर्यंच मनुष्य कर्म भूमियों के	१० से १७ तक का कोई १ भंग

चौंतीस स्थान दर्शन — कोष्टक नम्बर २ — सासादन गुण स्थान

१	२	३	४	५	६	७	८
						अवृत १२ कषाय २५ भंग ३ ३६ का भंग भोग भूमियां मनुष्य पंचेन्द्रिय के नपुंसक वेद घटा-कर ३६ का भंग तथा यही ३६ का भंग १६ स्वर्गों तक के देवों के भी होता है ३८ का भंग कल्पातीत अहमिन्द्रों के स्त्री वेद भी घट जाता है	
२६ भाव कुज्ञान ३ लब्धि ५ लिंग ३ असंयम १ असिद्धत्व १ जीवत्व १ २४ अवगाहना कोष्टक नं० १ के प्रमाण	३२ दर्शन २ गति ४ लेश्या ६ अज्ञान १ भव्यत्व १ कषाय ४	३२	२६ कोई ३ गति घटाकर	१७ का कोई १ का भंग कोष्टक नं० १८ प्रमाण	३१ कुअवधि ज्ञान घटाकर	२८ कोई तीन गति घटाकर	१७ का कोई १ भंग पर्याप्त जानना

२५ बंध प्रकृति १०१ कोष्टक नं० १ की बंध योग ११७ प्रकृतियों में से मिथ्यात १ नपुंसक वेद १ नरक गति नरक गत्यानुपूर्वी नरक आयु २५ एकेन्द्री आदि जाति ४ हुन्डक संस्थान १ सृपाटिक संहनन १ आतप १ साधारण सूक्ष्म अस्थावर अपर्याप्त ४ ये १६ घटाकर शेष १०१ का बंध होता है।

२६ उदय प्रकृति १०६ कोष्टक नं० १ की उदय योग ११७ प्रकृतियों में से मिथ्यात १ एकेन्द्री आदि जाति ४ नरक गत्यानुपूर्वी १ आतप १ साधारण सूक्ष्म अस्थावर अपर्याप्त ४ ये ११ घटाकर शेष १०६ का उदय होता है ये मान्यता आचारीय यतीवृषभ आचार्य मत के अनुसार है परन्तु भूतबली आचार्य महाराज अपर्याप्त अवस्था में स्थावर १ एकेन्द्री आदि जाति ४ का उदय भी अपर्याप्त अवस्था के आहार पर्याप्त तक मानते हैं।

२७ सत्ता १४५ कोष्टक नं० १ की १४८ की सत्ता प्रकृतियों में से आहारक द्विक २ और तीर्थंकर १ की सत्ता वाले जीव सासादन गुण स्थान में नहीं आते हैं चौथे गुण स्थान से उतर कर सीधे ही मिथ्यात गुण स्थान में पहुंच जाते है।

२८ संख्या असंख्यात।

२९ क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग।

३० स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग।

३१ काल नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल १ जीव की अपेक्षा १ आंवली से अन्तर्मुहूर्त काल।

३२ अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं १ जीव की अपेक्षा अर्ध पुद्गल परावर्तन काल।

३३ योनि कोष्टक नं० १ की चौरासी लाख योनि में से अग्नि काय ७ लाख और वायु काय ७ लाख कुल १४ लाख घटाकर शेष ७० लाख कारण सासादन गुण स्थान वाला मरकर अग्नि काय वायु काय में जन्म नहीं लेता है।

३४ कुल १८६½ लाख कोटि कोष्टक नं० १ के १९९½ लाख कों में से अग्नि काय ३ लाख कोटि वायु काय ७ लाख कोटि घट जाते हैं कारण इनमें सासादन गुण स्थान वाला मरकर जन्म नहीं लेता है।

क्र० स्थान नाम सामान्य आलापें		पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव अपेक्षा नाना समय में	एक जीव अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	मिश्र १	१ मिश्र गुण स्थान चारों गतियों में हरेक में जानना	१	१	सूचना—इस मिश्र गुण स्थान में मरण नहीं होता। (देखो गो० क० गा० ५४६) तथा यहां विग्रह गति औदारिक मिश्र काययोग, या वैक्रियक मिश्र काय योग की या कार्माण काय योग इनकी अवस्थायें नहीं होतीं इसलिये यहां अपर्याप्त अवस्था नहीं है। (देखो गो० क० गा० ३१८ से ३१६)
२ जीव समास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ चारों गतियों में हरेक में जानना	१	१	
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग–को० नं० १६ से १६ के समान	६	६	
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में, हरेक में ११ का भंग–को० नं० १६ से १६ देखो	१०	१०	
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग–को० नं० १६ से १६ के समान	४	४	
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति चारों गति में से कोई १ गति	१ गति ४ में से कोई १ गति	
७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति चारों गतियों में हरेक में जानना	१	१	
८ काय त्रसकाय	१	१ त्रसकाय चारों गतियों में हरेक में जानना	१	१	
९ योग मनोयोग ४ वचनयोग ४ और काययोग १ वैं०काय योग १ ये १० योग जानना	१०	६ औ० काययोग या वैं० काययोग घटाकर (६) चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग–को० नं० १६ से १६ समान जानना	१ भंग ६ का भंग जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ योग ६ के भंग में से कोई १ योग जानना को० नं० १६ से १६ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
१० वेद	३ कों० नं० १ देखो	२ (१) नरक गति में—१ नपुंसक वेद जानना कों० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच—मनुष्य गति हरेक में ३–२ के भंग कों० नं० १७–१८ देखो (३) देव गति में—२–१ के भंग कों० नं० १६ देखो	१ भंग कों० नं० १६ देखो कों० नं० १७–१८ देखो कों० नं० १६ देखो	१ वेद कों० नं० १६ देखो कों० नं० १७–१८ देखो कों० नं० १६ देखो	
११ कषाय	२१ अनंतानुबंधी कषाय ४ घटाकर शेष २१ जानना	२१ (१) नरक गति में – १९ का भंग कों० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच—मनुष्य गति में हरेक में २१–२० के भंग कों० नं० १७–१८ देखो (३) देव गति में – २०–१९ के भंग कों० नं० १९ देखो	सारे भंग कों० नं० १६ देखो कों० नं० १७–१८ देखो कों० नं० १९ देखो	१ भंग कों० नं० १६ देखो कों० नं० १७–१८ देखो कों० नं० १९ देखो	
१२ ज्ञान	३ कों० नं० १ देखो	३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग कों० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग कों० नं० १६ से १९ देखो	१ ज्ञान कों० नं० १६ से १९ देखो	
१३ संयम	१ असंयम	१ चारों गतियों में, हरेक १ में असंयम जानना कों० नं० १६ से १९ देखो	१ कों० नं० १६ से १९ देखो	१ कों० नं० १६ से १९ देखो	
१४ दर्शन	३ कों० नं० १६ देखो	३ चारों गतियों में, हरेक में ३ का भंग कों० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग कों० नं० १६ से १९ देखो	१ दर्शन कों० नं० १६ से १९ देखो	
१५ लेश्या	६ कों० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में—३ का भंग कों० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच—मनुष्य गति में हरेक में ६–३ के भंग कों० नं० १७–१८ देखो (३) देव गति में—१–३–१ के भंग कों० नं० १९ देखो	१ भंग कों० नं० १६ देखो कों० नं० १७–१८ देखो कों० नं० १९ देखो	१ लेश्या कों० नं० १६ देखो कों० नं० १७–१८ देखो कों० नं० १९ देखो	
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ चारों गतियों में, हरेक में भव्य जानना कों० नं० १६ से १९ देखो	१ कों० नं० १६ से १९ देखो	१ कों० नं० १६ से १९ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
१७ सम्यक्त्व	३ मिश्र	३ चारों गतियों में हरेक में १ मिश्र जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में, हरेक में १ संज्ञी जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	
१९ आहारक	१ आहारक	१ आहारक चारों गतियों में, हरेक में १ आहारक जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३ दर्शनोपयोग ३	६	४-६ के भंग चारों गतियों में, हरेक में ६ का भंग को नं० १६ से १६ के मुजिब जानना	कोई १ भंग को नं० १६ से १६ देखो	कोई १ उपयोग को नं० १६ से १६ देखो	
२१ ध्यान आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञा विचय धर्मध्यान १ ये ९ ध्यान जानना	९	९ चारों गतियों में हरेक में ९ का भंग को नं० १६ से १६ के मुजिब जानना	९ का १ भंग को नं० १६-१६ देखो	कोई १ ध्यान को नं० १६ से १६	
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अनंतानुबंधी कषाय ४, आ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाययोग १, औ० मिश्रकाययोग १, कार्माणकाययोग १ ये १४ घटाकर ४३ आस्रव जानना	४३	४३ (१) नरक गति में— ४० का भंग को नं० १६ के मुजिब जानना (२) तिर्यंच—मनुष्य गति हरेक में ४२-४१ के भंग को नं० १७-१८ के मुजिब जानना (३) देव गति में- ४१-४० के भंग को नं० १९ के मुजिब जानना	सारे भंग को नं० १६ देखो को नं० १७-१८ देखो को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो को नं० १७-१८ देखो को नं० १९ देखो	
२३ भाव कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्धि ५, गति ४, लिंग ३, कषाय ४, लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १ ये ३३ भाव जानना	३३	३३ (१) नरक गति में—२५ का भंग को नं० १६ के मुजिब जानना (२) तिर्यंच—मनुष्य गति में हरेक में ०-२६ के भंग को नं० १७-१८ के मुजिब जानना (३) देव गति में—२४-२६-२३ के भंग को नं० १९ के मुजिब जानना	सारे भंग को नं० १६ देखो को नं० १७-१८ देखो को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो को नं० १७-१८ देखो को नं० १९ देखो	

सूचना—इस मिश्र स्थान में कोई आचार्य अवधिदर्शन नहीं मानते हैं। परन्तु यहां गो० क० गा० ८२०-८२१-८२२ के अनुसार लिखा है। (मराठी गो० क० कोष्टक नं० २३४ देखो)।

२४ **अवगाहना**—कोष्टक नम्बर १ के मुजिब जानना परन्तु यहां उत्कृष्ट अवगाहना महामत्स्य की जानना, विशेष खुलासा को नं० १६ में १६ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—७४, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि ये ३ महानिद्रा घटाकर ६) मोहनीयकषाय ११ (अनंतानुबंधी कषाय ४, नपुंसक वेद १, स्त्री वेद १, ये ६ घटाकर १६) वेदनीय २, नाम कर्म के ३६ (मनुष्य गति १, मनुष्य-गत्यानुपूर्वी १, देवगति १, देवगत्यानुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १, औदारिक शरीर १, वैक्रियिक शरीर १, तैजस शरीर १, कार्माण शरीर १, औदारिक अंगोपांग १, वै० अंगोपांग, समचतुरस्रसंस्थान १, वज्रवृषभ नाराच संहनन १, निर्माण १, स्पर्शादि ४, प्रशस्त विहायोगति १, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, श्वासोच्छ्वास १, प्रत्येक १, बादर १, त्रस १, पर्याप्त १, सुभग १, स्थिर १, अस्थिर १ शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १, ये ३६) उच्चगोत्र १, अंतराय ५ ये ७४ प्रकृतियां जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१०० को नं० २ के १११ प्रकृतियों में से अनंतानुबंधीय कषाय ४, एकेन्द्रियादि जाति ४, तिर्यंच मनुष्य देवगत्यानुपूर्वी ३, स्थावर १, ये १२ प्रकृति घटाकर और सम्यक्मिथ्यात्व १ जोड़कर १११-१२ = ९९+१ = १०० उदय प्रकृतियां जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४७, तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर १४७ जानना।

सूचना—जिस जीव के ४थे गुण में तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो चुका है वह जीव उतरते समय में ३रे गुण स्थान में नहीं आता।

२८ **संख्या**—पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण क्षेत्र जानना।

३० **स्पर्शन**—१६वें स्वर्ग का मिश्र गुण स्थान पर्याप्त देव तीसरे नरक तक जाता है इसलिए ८ राजु जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से लेकर पल्य के असंख्यातवें भाग तक इस गुण स्थान में रह सकते हैं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त तक रह सकता है।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा—एक समय से पल्य के असंख्यातवें भाग तक संसार में कोई भी जीव इस मिश्र गुण स्थान में नहीं पाया जाता एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से लेकर देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल बीतने पर सादिमिथ्या दृष्टि के दुबारा मिश्र गुण स्थान जरूर हो सकता है।

३३ **जाति (योनि)**—२६ लाख जानना, नरक की ४ लाख, पंचेन्द्रिय पशु ४ लाख, देवगति ४ लाख, मनुष्यगति के १४ लाख ये २६ लाख जानना।

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटि कुल जानना—नरक गति २५ लाख कोटि कुल, देवगति २६ लाख कोटि कुल, मनुष्य गति १४ लाख कोटि कुल, पंचेन्द्रिय तिर्यंच ४३॥ लाख कोटि कुल, ये १०८॥ लाख कोटि कुल जानना।

		पर्याप्त		अपर्याप्त			
स्थान	सामान्य आलाप	नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय के	१ जीव के १ समय के
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१ असंयत	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयत गुण जानना को नं १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	४ चारों गतियों में–हरेक में १ असंयत गुण जानना परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना कर्मभूमि में ४था गुण नहीं होता	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो
२ जीव समास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त में	२ १	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो
३ पर्याप्ति को नं० १ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	६ लब्धि रूप ६ उपयोग रूप चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग को नं० १६ से १६ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	भंग १ को नं० १६ से १६ देखो
४ प्राण को नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	७ चारों गतियों में हरेक में ७ का भंग को नं० १६ से १६ देखो परन्तु तिर्यंच	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को नं० १६ से १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना		
५ संज्ञा को नं० १ देखो	४	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ भंग ४ गतियों में से कोई १ गति जानना	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोगभूमि की अपेक्षा जानना	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो
६ गति को नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ गति ४ गतियों में से कोई १ गति	४ (१) नरक-गति में—पहले नरक की अपेक्षा जानना (२) तिर्यंच गति में—भोग भूमि की अपेक्षा जानना (३) मनुष्य गति में—कर्म भूमि और भोग भूमि अपेक्षा जानना (४) देव गति में—१ले स्वर्ग से सर्वार्थसिद्धि तक के देवों की अपेक्षा जानना भवनत्रिक देवों में ४था गुण नहीं होता	१ गति को नं० १६ देखो को नं० १७ देखो को नं० १८ देखो को नं० १९ देखो	१ गति को नं० १६ देखो को नं० १७ देखो को नं० १८ देखो को नं० १९ देखो
७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रिय जाति	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जानना को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो
९ योग	१३ आहारक मिश्रकाय योग १, आ० काय योग १ घटाकर	१० औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माण काय योग १ ये ३ घटाकर (१०) चारों गतियों में हरेक में ९ का भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ भंग १ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ योग १ योग को नं० १६ से १९ देखो	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १ कार्माण काय योग १, ये तीन योग जानना (१) चारों गतियों में हरेक में १-२ के भंग को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना	१ भंग १ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ योग १ योग को नं० १६ से १९ देखो
१० वेद	३ को नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच मनुष्य गति में हरेक में ३-२ के भंग को नं० १७-१८ देखो (३) देव गति में-२-१-१ के भंग को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो को नं० १७-१८ देखो को नं० १९ देखो	१ वेद को नं० १६ देखो को नं० १७-१८ देखो को नं० १९ देखो	२ (१) नरक गति में— १ नपुंसक वेद जानना को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में—भोग भूमि अपेक्षा १ पुरुष वेद जानना को नं० १७ देखो (३) मनुष्य देव गति में हरेक में १-१ के भंग को नं० १८-१९ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो को नं० १७ देखो को नं० १८-१९ देखो	१ वेद को नं० १६ देखो को नं० १७ देखो को नं० १८-१९ देखो
११ कषाय	२१ अनंतानुबंधी कषाय ४ घटाकर २१	२१ (१) नरक गति में १९ का भंग को नं० १६ देखो	सब भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	२० स्त्री वेद घटाकर (१) नरक गति में १९ का भंग को नं० १६ देखो	सब भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में २१-२० के भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा १६ का भंग को नं १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २१-२० के भंग को नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १६-१६ के भंग को नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो
		(४) देव गति में २०-१६-१६ के भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	(४) देव गति में १६-१६-१६ के भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो
१२ ज्ञान मति-श्रुत-अवधि ज्ञान ये (३)	३	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ ज्ञान को नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ ज्ञान को नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	१ ज्ञान को नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा ३ का भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	१ ज्ञान को नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो	१ ज्ञान को नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को नं० १८ देखो	सारे भंग को नं० १८ देखो	१ ज्ञान को नं० १८ देखो
		(४) देव गतियों में ३ का भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ ज्ञान को नं० १६ देखो	(४) देव गति में ३-३ के भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ ज्ञान को नं० १६
१३ संयम	१ असंयम	चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को नं० १६ से १६ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना	१ को नं० १६ से १६ देखो	१ को नं० १६ से १६ देखो
१४ दर्शन को नं० १६ देखो	३	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ दर्शन को नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो	१ दर्शन को नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में ३ का भंग को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो सारे भंग को नं० १८ देखो सारे भंग को नं० १९ देखो	१ दर्शन को नं० १७ देखो १ दर्शन को नं० १८ देखो १ दर्शन को नं० १९ देखो	(२) तिर्यंच गति में केवल भोगभूमि की अपेक्षा ३ का भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में ३-३ के भंग को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो सारे भंग को नं० १८ देखो सारे भंग को नं० १९ देखो	१ दर्शन को नं० १७ देखो १ दर्शन को नं० १८ देखो को नं० १९ देखो
१५ लेश्या को नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-३ के भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में १-३-१-१ के भंग को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो सारे भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १९ देखो	१ लेश्या को नं० १६ देखो १ लेश्या को नं० १७ देखो १ लेश्या को नं० १८ देखो १ लेश्या को नं० १९ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा १ का भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति ३-१-१ के भंग को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो सारे भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १९ देखो	१ लेश्या को नं० १६ देखो १ लेश्या को नं० १७ देखो १ लेश्या को नं० १८ देखो १ लेश्या को नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा जानना	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व ३ उपशम-क्षायिक क्षयोपशमसम्यक्त्व ये ३ जानना		३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को नं० १६ देखो	सारे भंग को नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को नं० १६ देखो	३ (१) नरकगति में २ का भंग को नं० १६ देखो	सारे भंग को नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में २—३ के भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६—२ के भंग को नं० १८ देखो (४) देवगति में २—३—२ के भंग को नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो सारे भंग को नं० १८ देखो सारे भंग को नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को नं० १९ देखो	(२) तिर्यंच गति में—भोग भूमि की अपेक्षा जानना (३) मनुष्य गति में २—२ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में—३ का भंग को नं० १९	१ भंग को नं० १७ देखो सारे भंग को नं० १८ देखो सारे भंग को नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा जानना	१ को नं० १६ से १९ देखो ती नं० १७ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में १-१ के भंग को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना	दोनों अवस्था को नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को नं० १६ से १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३ दर्शनोपयोग ३ ये ६ जानना	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ उपयोग को नं० १६ से १९ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग जानना को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा जानना	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ उपयोग को नं० १६ से १९ देखो

सूचना.—अवधि दर्शन में मरण हो सकता है। परन्तु मनुष्य और कल्प- वासी देवों में ही जन्म लेगा। (देखो गो० कर्म० ३२४-३२५)

१	२	३	४	५	६	७	८
११	ध्यान १० आर्त ध्यान ४ रौद्र ध्यान ४ आज्ञा विचय १ अपाय विचय १ ये १० ध्यान जानना	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को नं० १६ से १९ देखो	९ अपाय विचय धर्म ध्यान घटाकर (९) चारों गतियों में—हरेक में ९ का भंग को नं० १६ से १९ देखो परन्तु तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि अपेक्षा जानना.	१ भंग को नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को नं० १६ से १९ देखो
१२	आस्रव ४६ मिथ्यात्व ५ अनन्तानुबंधी कषाय ४ आ० मिश्रकाय योग १ आहारक काय योग १ ये ११ घटाकर (४६)	४३ औ० मिश्र काय योग १ वै० मिश्र काय योग १ कार्माण काय योग १ ये घटाकर (४३) (१) नरक गति में ४० का भंग को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ४२-४१ के भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४२-४१ के भंग को नं० १८ देखो (४) देवगति में ४१-४०-४० के भंग को नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो १ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो १ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १९ देखो	३६ मनोयोग ४, वचन योग ४ औ० का योग १ ये १० घटाकर (३६) (१) नरक गति में ३३ को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि अपेक्षा ३३ का भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३३-३३ के भंग को नं० १८ देखो (४) देवगति में ३३-३२-३२ के भंग को नं० १९ देखो	१ को नं० १६ से १९ देखो १ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो १ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १९ देखो	१ भंग भंग १ को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १७ देखो १ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १९ देखो
१३	भाव ३६ उपशम सम्यक्त्व १ क्षायिक सम्यक्त्व १ ज्ञान ३, दर्शन ३ क्षयोपशम लब्धि ५ क्षयोपशम सम्यक्त्व १	३६ (१) नरक गति में २८-२७ के भंग को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति ३०-२९ के भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो	३६ (१) नरक गति में २७ का भंग को नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा २५ का	१ भंग को नं० १६ देखो १ भंग को नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १६ देखो १ भंग नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
	गति ४, कषाय ४ लिंग ३, लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १ ये ३६ भाव जानना	(३) मनुष्य गति में ३३-२६ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में २६-२६-२६-२५ के भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १६ देखो	भंग को नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३०-२५ के भंग को नं० १८ देखो (४) देव गति में ०-२८-२६-२६ के भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १६ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो १ भंग को नं० १६ देखो

२४ **अवगाहन**—को नं० १६ से १६ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—७७ कोष्टक नम्बर ३ के ७४ प्रकृतियों में तीर्थंकर प्रकृति १, मनुष्यायु १, देवायु १ ये ३ जोड़कर ७७ जानना।

२६ **उदयप्रकृतियां**—१०४, को नं० ३ के १०० प्रकृतियों में सम्यग्मिथ्यात्व घटाकर, सम्यक्प्रकृति १ और आनुपूर्वी ४ जोड़कर १००-१=९९+५=१०४ उदयप्रकृति जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८, उपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा १४८ जानना क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा १४१ जानना अर्थात् अनंतानुबंधी कषाय ४, मिथ्यात्व ३ (मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति) ये ७ प्र० घटाकर १४१ जानना।

२८ **संख्या**—पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—नाना जीवों की अपेक्षा—सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा—८ राजू प्रमाण जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा—सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा—अन्तर्मुहूर्त काल से ८ वर्ष अधिक ३३ सागर काल प्रमाण जानना।

३२—**अंतर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं पड़ता एक जीव की अपेक्षा—सम्यक्त्व छूटने के बाद अन्तर्मुहूर्त से लेकर देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक अन्तर पड़ सकता है।

३३ **जाति (योनि)** २६ लाख जानना, विशेष खुलासा को नं० ३ में देखो।

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटि कुल जानना। विशेष खुलासा को नं० ३ में देखो।

क्र० स्थान नाम	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१ देश संयत	१ देश संयत (संयमा संयम या देश व्रत) तिर्यंच और मनुष्य गतियें जानना को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	सूचना : इस देश संयत गुण स्थान में विग्रह गति और औदारिक मिश्र काय योग या वैक्रियक मिश्र काय योग की अवस्थाये नहीं होती इसलिये यहां अपर्याप्त अवस्था नहीं है- (देखो गो० क० गा० ३१८ से ३१९)
२ जीव समास	१ संज्ञी पं० पर्याप्त	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था दोनों गतियों में को नं० १७-१८ के मुजिब	१ को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	
३ पर्याप्ति	६ को नं० १ देखो	६ तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में ६ का भंग को नं० १७-१८ के मुजिब	१ भंग ६ का भंग को नं० १७-१८ देखो	१ भंग ६ का भंग को नं० १७-१८ देखो	
४ प्राण	१० को नं० १ देखो	१० तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में १० का भंग को नं० १७-१८ के मुजिब	१ भंग १० का भंग को नं० १७-१८ देखो	१ भंग १० का भंग को नं० १७-१८ देखो	
५ संज्ञा	४ को नं० १ देखो	४ तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में ४ का भंग को नं० १७-१८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग को नं० १७-१८ देखो	१ भंग ४ का भंग को नं० १७-१८ देखो	
६ गति	२ तिर्यंच, मनुष्य गति	२ तिर्यंच और मनुष्य में दोनों गति जानना	१ गति दोनों में से कोई १ गति को नं० १७-१८ देखो	१ गति दोनों में से कोई १ गति को नं० १७-१८ देखो	
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति दोनों गतियों में हरेक में को नं० १७-१८ के मुजिब १ पंचेन्द्रिय जाति	१ को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	
८ काय	१ त्रसकाय	१ त्रसकाय तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	

कोष्टक नं० ५ देशसंयत गुणस्थान

१	२	३	४	५	६-७-८
९ योग	९ मनोयोग ४, वचन योग ४, औ० काय योग १, ये जानना	९ तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में ९ का भंग को नं० १७-१८ के मुजिब	१ भंग ९ का भंग को नं० १७ से १८ देखो	१ भंग ९ के भंग में से कोई १ योग जानना को नं० १६ से १९ देखो	
१० वेद	३ को नं० १ देखो	३ तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में ३ का भंग को नं० १७ से १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग को नं० १७-१८ देखो	१ वेद ३ के भंग में से कोई १ वेद जानना को नं १७ से १८ देखो	
११ कषाय	१७ अनन्तानुबंधी कषाय ४, अप्रत्याख्यान कषाय ४, ये ८ घटाकर (१७)	१७ (१) तिर्यंच गति में १७ का भंग को नं० १७ के मुजिब (२) मनुष्य गति में १७ का भंग	सारे भंग को नं० १७ देखो सारे भंग को नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को नं० १७-१८ देखो	
१२ ज्ञान	३ को नं० ४ देखो	३ तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में ३ का भंग को नं० १५ १८ के मुजिब	१ भंग को नं० १७-१८ देखो	१ ज्ञान को नं० १७-१८ देखो	
१३ संयम	१ देश संयम	१ देशसंयम (संयमासंयम) तीर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में १ देश संयम जानना को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७ १८ देखो	
१४ दर्शन	३ को नं० ४ देखो	३ तीर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में ३ का भंग को नं० १७-१८ के मुजिब	१ भंग को नं० १७-१८ देखो	१ दर्शन को नं० १७-१७ देखो	
१५ लेश्या	३ तीन शुभ लेश्या जानना	३ तिर्यंच और मनुष्य गति में हरेक में ३ का भंग को नं० १७-१८ के मुजिब	१ भंग को नं० १७-१८ देखो	१ लेश्या को नं० १७-१८ देखो	
१६ भव्यत्व	१ भव्यत्व	१ भव्यत्व तिर्यंच और मनुष्य गतियों में जानना को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	१ को नं० १७-१८ देखो	
१७ सम्यक्त्व	३ को नं० ४ देखो	३ (१) तिर्यंच गति में ३ का भंग को नं० १७ के मुजिब	१ भंग को नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को नं० १७ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		(२) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ संज्ञी तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में जानना को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	
१९ आहारक	१ आहारक	१ आहारक तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में जानना को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	
२० उपयोग को० नं० ४ देखो	१०	६ तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १७-१८ के समान	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ उपयोग को० नं० १७-१८ देखो	
२१ ध्यान को० नं० ४ में विपाक-विचय धर्म ध्यान जोड़कर ११ ध्यान जानना	११	११ तिर्यंच और मनुष्य गति में हरेक में ११ का भंग को० नं० १७-१८ के समान	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ ध्यान को० नं० १७-१८ देखो	
२२ आस्रव अविरत ११ (हिंसक के विषय ६ + हिंस्य का ५ का भंग ये ११) प्रत्याख्यान कषाय ४, संज्वलन कषाय ४, नो कषाय ९, मनोयोग ४, वचनयोग ४, औदारिक काययोग १ ये (३७) जानना	३७	३७ तिर्यंच और मनुष्य गति में हरेक में ३७ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	
२३ भाव उपशम क्षायिक स० २, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, क्षयोपशम सम्यक्त्व १, संयमासंयम १ मनुष्य गति १, तिर्यंच गति १, कषाय ४	३१	३० तिर्यंच या मनुष्य गति घटाकर (३०) (१) तिर्यंच गति में २९ का भंग सामान्य के ३१ के भंग में से क्षायिक सम्यक्त्व मनुष्य गति १, ये दो घटाकर २९ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
	लिंग ३, शुभ लेश्या ३, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये ३१ भाव जानना	(२) मनुष्य गति में ३० का भंग सामान्य के ३१ के भाग में से तिर्यंच गति १ घटाकर ३० का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग को० नं० १८ देखो	

२४ **अवगाहना**—को० नं० १७-१८ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—६७ को नं० ४ के ७७ प्रकृतियों में से अप्रत्याख्यान कषाय ४, मनुष्यद्विक २, मनुष्य-आयु १, औदारिकद्विक २, वज्रवृषभनाराच संहनन १, ये १० घटाकर ६७ जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—८७ को नं० ४ के १०४ प्रकृतियों में से अप्रत्याख्यान कषाय ४, नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियिकद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १, मनुष्यगत्यानुपूर्वी १, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, ये १७ प्रकृतियां घटाकर ८७ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४७ उपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा नरकायु १, घटाकर १४८—१=१४७ जानना।

सूचना:—यदि नरकायु सत्ता में हो तो उसे पंचम गुण स्थान ग्रहण नहीं कर सकता है। १४०—क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा को० नं० ४ के १४१ प्रकृतियों में से नरकायु १ घटाकर १४०।

२८ **संख्या**—पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—नाना जीवों की अपेक्षा लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना। एक जीव की अपेक्षा ६ राजु मध्य लोक में मरणांतिक समुद्घात वाला १६वें स्वर्ग की उपपाद शय्या का स्पर्श कर सकता है।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से लेकर देशोन एक कोटिपूर्व तक देशव्रत में रह सकता है।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल गये पीछे निश्चय रूप से देशव्रत प्राप्त हो सकता है।

३३ **जाति (योनि)**—१८ लाख जानना (तिर्यंच पंचेन्द्रिय पशु ४ लाख, मनुष्य १४ लाख ये १८ लाख जानना)

३४ **कुल**—५७॥ लाख कोटिकुल जानना। (पंचेन्द्रिय तिर्यंच में ४३॥ लाख कोटिकुल, और मनुष्य के १४ लाख कोटिकुल से ५७॥ लाख कोटिकुल जानना)

कोष्टक नं० ६

प्रमत्त गुण स्थान

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्ति नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१ प्रमत्त	१ प्रमत्त गुण स्थान मनुष्य गति में जानना को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को नं० १८ देखो	१ प्रमत्त गुण स्थान को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो
२ जीव समास	२ संज्ञी पं० पर्याप्त अपर्याप्त	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ ६ का भंग को० नं० १८ के अनुसार जानना	१ भंग ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग को० नं० १८ देखो	३ ३ का भंग को० नं० १८ समान जानना लब्धि रूप ६ पर्याप्ति जानो सूचना १:—पेज नं० ५६ देखो	१ भंग ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ३ का भंग को नं० १८ देखो
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० १० का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग १० का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १० का भंग को०नं० १८ देखो	७ ७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग ७ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७ का भंग को नं० १८ देखो
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ ४ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ४ का भंग को०नं० १८ देखो	४ ४ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ४ का भंग को०नं० १८ देखो
६ गति	१ मनुष्य गति	१ मनुष्य गति	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१	१	१	१	१
८ काय	१ त्रसकाय	१ त्रसकाय	१	१	१	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
६ योग	११ मनोयोग ४, वचन योग ४, औ० काय योग १, आ० मिश्रकाय योग १, आहारक काय योग ये (११)	१० आ० मिश्रकाय योग १ घटाकर (१०) जानना ६–६ के भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो	१ आहारक मिश्र काययोग १ का भंग को० नं० १८ के समान सूचना २–पेज ५६ पर	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ ३–१ के भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	१ एक पुरुष वेद जानना १ का भंग को० नं० १८ के समान	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो
११ कषाय	१३ संज्वलन कषाय ४, नवनो कषाय ६, ये १३ जानना	१३ १२–११ के भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	११ स्त्री-नपुंसक वेद २ घटाकर (११) जानना ११ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
१२ ज्ञान	४ मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यय ज्ञान ये ४ ज्ञान जानना।	४ ४–३ के भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	३ मन: पर्यय ज्ञान घटाकर ३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान सूचना ३–पेज ५६ पर	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
१३ संयम	३ सामायिक छेदोपस्था-पना परिहार वि०ये ३ संयम जानना	३ ३–२ के भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो	२ परिहार विशु०संयमघटाकर (२) जानना २ का भंग को० नं० १८ के समान जानना सूचना ४–पेज ५६ पर	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन को० नं० ४ देखो	३	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग ३ का भंग जानना	१ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग जानना	१ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना
१५ लेश्या ३ शुभ लेश्या	३	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग जानना	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग ३ का भंग जानना	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना
१६ भव्यत्व भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	१	१	१
१७ सम्यक्त्व उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम ये (३)	३	३ ३-२ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ३-२ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व ३-२ के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व	२ २ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग २ का भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व २ भंग में से कोई १ सम्यक्त्व
१८ संज्ञी संज्ञी	१	१ संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१
१९ आहारक आहारक	१	१ आहारक	१	१	१ आहारक	१	१
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३, ये ७ जानना	७	७ ७-६ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ७-६ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ उपयोग ७-६ के भंगों में से कोई १ उपयोग	६ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (६) जानना ६ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ६ का भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ उपयोग ६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना
२१ ध्यान आर्तध्यान ३ (अनिष्ट संयोग, पीडा चिंतन निदान बंध) धर्म ध्यान ४, ये ७ ध्यान जानना	७	७ ७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग ७ का भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ ध्यान ७ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	७ ७ का भंग पर्याप्तवत् जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग ७ का भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ ध्यान ७ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
२२ आस्रव संज्वलन कषाय ४, नवनो कषाय ६, मनोयोग ४ वचनयोग ४, औ० काय योग १, आ० मिश्रकाय योग १, आहारक काय योग १, ये (२४)	२४	२२ या २ (१) औदारिक काय योग की अपेक्षा २२ का भंग संज्वलन कषाय ४, हास्यादिनो कषाय ६, वेद ३, मनोयोग ४, वचन योग ४, औ० काययोग १ ये २२ का भंग जानना को० नं० १८ देखो (२) आहारक काययोग की अपेक्षा २० का भंग संज्वलन कषाय ४, हास्यादिनो कषाय ६, पुरुष वेद १ मनोयोग ४, वचन योग ४, आहारक काययोग १, ये २० का भंग जानना को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ५-६-७ के भंग जानना को० नं० १८ देखो "	१ भंग ५-६-७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना "	१२ संज्वलन कषाय ४, हास्यादिनो कषाय ६ पुरुष वेद १, आहारक मिश्रकाय योग १ ये १२ आस्रव जानना १२ का भंग को० नं० १८ के समान जानना सूचना—यहां यह विवरण आहारक मिश्र काय योग की अपेक्षा ही जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ५-६-७ के भंग जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग ५-६-७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
२३ भाव उपशम-क्षायिक स० २, ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५, क्षयोपशम-सम्यक्त्व १, मनुष्य गति १, कषाय ४ लिंग ३, शुभ लेश्या ३, सराग संयम १, अज्ञान १ असिद्धत्व १, जीवत्व १ भव्यत्व १, ये (३१)	३१	३१ ३१ का भंग को० नं० १८ के समान औ० काययोग की अपेक्षा जानना २७ के भंग को० नं० १८ के समान आहारक काययोग की अपेक्षा जानना	सारे भंग १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना "	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना "	२७ आहारक काययोग की अपेक्षा २७ का भंग को० नं० १८ समान	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग १७ का भंगों में में कोई १ भंग जानना

सूचना १—यहां आहारक की अपेक्षा निवृत्ति पर्याप्ति ही होती है, लब्धि पर्याप्तक नहीं होती है।

सूचना २—इस प्रमत्त गुण स्थान में औदारिक काययोग की अपेक्षा अपर्याप्त अवस्था नहीं होती परन्तु आहारक मिश्रकाय योग की अपेक्षा अपर्याप्त अवस्था होती है। (देखो गो० क० गा० ३१८-३१७)

सूचना ३—आहारककाय योग तथा स्त्री वेद नपुंसक वेद के उदय में मनः पर्यय ज्ञान नहीं होता (देखो गो० क० गा० ३२४)

सूचना ४—यहां आहारक मिश्र काययोग में परिहार वि० संयम नहीं होता। (देखो गो० क० गा० ३२४)

२४ **अवगाहना**—औदारिक शरीर की अपेक्षा ३॥ हाथ से लेकर ५२५ धनुष तक जानना। आहारक तैजस शरीर की अपेक्षा एक हाथ जानना। विशेष खुलासा को० नं० १८ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—६३ को० नं० ५ के ६७ प्रकृतियों में से प्रत्याख्यान कषाय ४ घटाकर ६३ प्रकृतियां जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—८१ को० नं० ५ के ८७ प्रकृतियों में से प्रत्याख्यान कषाय ४, तिर्यंच गति १, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, नीच गोत्र १, उद्योत १ ये ८ प्रकृतियां घटाकर और आहारद्विक २ जोड़कर अर्थात् ८७-८=७९+२=८१ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४६ चौथे गुण स्थान की उपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा १४८ प्रकृतियों में से नरकायु १ और तिर्यंचायु १ ये २ घटाकर १४६ जानना।

१३९ चौथे गुण स्थान की क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा १४१ प्रकृतियों में से नरकायु १ और तिर्यंचायु १ ये २ घटाकर १३९ जानना

२८ **संख्या**—(५९३९८२०६) पांच करोड़ तानवें लाख अठ्यानवें हजार दो सौ छः के समान जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय जानना।

सूचना—यह भाव की अपेक्षा वर्णन है। शरीर की मुद्रा की अपेक्षा नहीं है। प्रमत्त अप्रमत्त भाव समय समय में बदलते रहते हैं।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक प्रमत्त भाव नहीं बन सके।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१	१ अप्रमत्त गुण स्थान को० नं० १८ देखो	१	१	सूचना— इस प्रमत्त गुण स्थान में विग्रह गति और औदारिक मिश्र काययोग या वैक्रियक मिश्र योग योग की अवस्थायें नहीं होती इसलिये यहां अपर्याप्त अवस्था नहीं है। (देखो गो० क० गा० ३१२ से ३१९)
२ जीवसमास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था को० नं० १८ देखो	१	१	
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० १० का भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५ संज्ञा भय, मैथुन, परिग्रह	३	३ ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग	
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १८ देखो	१	१	
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना को० नं० १८ देखो	१	१	
९ योग को० नं० ५ देखो	९	९ ९ का भंग को० नं० १८ देखो	१ गति ९ का भंग जानना	१ योग ९ के भंग में से कोई १ योग जानना	
१० वेद नपुंसक, स्त्री, पुरुष वेद	३	३ ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ३ का भंग	३ के भंगों में से कोई १ वेद जानना	
११ कषाय संज्वलन कषाय ४ नवनोकषाय ९	१३	१३ १३ का भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग ४-५-६ के भंग जानना	१ भंग ४-५-६ के भंगों में से कोई भंग जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
ये १३ कषाय जानना					
१२ ज्ञान	४ को नं० ६ देखो	४ ४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४-५-६ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम	३ सामायिक, छेदोप स्थापना, परिहारवि शुद्धि	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ संयम ३ के भंग में से कोई १ संयम जानना	
१४ दर्शन	३ को नं० ६ देखो	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	
१५ लेश्या	३ तीन शुभ लेश्या	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व	१	१	
१७ सम्यक्त्व	३ को नं० ४ देखो	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ सम्यक्त्व ३ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी	१	१ संज्ञी	१	१	
१९ आहारक	१	१ आहारक	१	१	
२० उपयोग	७ को नं० ६ देखो	७ ७ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ७ का भंग	१ उपयोग ७ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान	४ चार धर्म ध्यान	४ ४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग	१ ध्यान ४ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	
२२ आस्रव	२२ संज्वलन कषाय ४ नवनोकाय ९ मनोयोग ४, वचन योग ४ औ० काय योग १ ये (२२)	२२ २२ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ५-६-७ के भंग को नं० १८ देखो	१ भंग ५-६-७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को नं० १८ देखो	

१	२	३	४	६—७—८
२३ भाव	३१ को० नं० ६ देखो	१ ३१ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग २९ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग २९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १८ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—५९ को० नं० ६ के ६३ प्रकृतियों में से अस्थिर १, अशुभ १, अयश कीर्ति १, अरति १, शोक १, असाता १ ये ६ घटाकर और आहारकद्विक २ जोड़कर अर्थात् ६३—६=५७+२=५९ प्रकृतियां जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७६ को० नं० ६ के ८१ प्रकृतियों में से महानिद्रा ३ (निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला, स्त्यानगृद्धि), आहारकद्विक २ ये ५ घटाकर ७६ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४६ या १३८ को० नं० ६ के मुजिब जानना।

२८ **संख्या**—२९६९९१०३ दो करोड़ छानवें लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय जानना।

सूचना—छट्ठे-अप्रमत्त गुण स्थान में समय समय में भाव बदलते रहते हैं।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक अप्रमत्त भाव की प्राप्ति न हो सके।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना।

स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१	१ अपूर्व करण गुण स्थान	१	१	सूचना: इस अपूर्वकरण गुण स्थान में अपर्याप्त अवस्था नहीं होता है।
२ जीव समास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था को० नं० १८ देखो	१	१	
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को० नं० १८ के अनुसार जानना	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० १० का भंग को० नं० १८ के मुजिब जानना	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५ संज्ञा भय, मैथुन, परिग्रह ये ३ संज्ञा जानना	३	३ ३ का भंग को० नं० १८ मुजिब जानना	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग	
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग को० नं० ५ देखो	९	९ ९ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग ९ का भंग	१ योग ९ के योग में से कोई १ योग जानना	
१० वेद नपुंसक स्त्री पुरुष वेद	३	३ ३ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ वेद ३ के भंग में से कोई १ वेद जानना।	
११ कषाय संज्वलन कषाय ४, नवनो कषाय ९, ये १३ कषाय जानना	१३	१३ १३ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४-५-६ के भंग जानना	१ भंग ४-५-६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	
१२ ज्ञान मति श्रुत अवधि मनः पर्यय ज्ञान ये (४)	४	४ ४ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग	१ ज्ञान ४ के भंग में से कोई १	

१	२	३	४	५	६—७—८
			को नं० १८ देखो	ज्ञान जानना को नं० १८ देखो	
१३ संयम सामायिक छेदोपस्थापना	२	२ २ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग	१ संयम २ के भंग में से कोई १ संयम जानना	
१४ दर्शन अचक्षुदर्शन, चक्षुदर्शन, अवधिदर्शन ये (३)	३	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग को नं० १८ देखो	१ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना को नं० १८ देखो	
१५ लेश्या शुक्ल लेश्या	१	१ शुक्ल लेश्या को नं० १८ देखो	१	१	
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व को नं० १८ देखो	१	१	
१७ सम्यक्त्व उपशमक्षायिक स०	२	२ २ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग	१ सम्यक्त्व २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी	१	१ संज्ञी जानना को नं० १८ देखो	१	१	
१९ आहारक	१	१ आहारक जानना को नं० १८ देखो	१	१	
२० उपयोग को नं० ६ देखो	७	७ ७ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ७ का भंग	१ उपयोग ७ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान	१	१ पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान को नं० १८ देखो	१	१	
२२ आस्रव को नं० ३ देखो	२२	२२ २२ का भंग को नं० १८ के मुजिब	सारे भंग ५—६—७ के भंग को नं० १८ देखो	१ भंग ५—६—७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को नं० १८ देखो	
२३ भाव को नं० १८ देखो	२६	२६ २६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १७ का भंग को नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को नं० १८ देखो	

२४ **अवगाहना**—को नं० १८ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—५८, को नं० ७ के ५९ प्रकृतियों में से देवायु १ घटाकर ५८ जानना। ये जो ५८ प्रकृतियां बंधती हैं वे सब पहला भाग में बंधती है ऐसा जानना।

दूसरे भाग में ५६ जानना ऊपर के ५८ प्रकृतियों में से निद्रा और प्रचला ये २ घटाकर बंधती हैं (देखो गो० क० गा० ४५६)

तीसरे भाग में --०

४थे भाग में --०

५वें भाग में —०

६वें भाग में -२६ प्रकृतियां बंधती हैं, वे निम्न प्रकार जानना गो० कर्मकांड (मराठी) में जो बंधव्युच्छित्ति कोष्टक नं० १ है उसमें जो ६वा भाग में बतायें हुये ३० प्रकृतियां ऊपर के ५६ प्रकृतियों में से २६ प्रकृतियां घटाकर जानना (देखो गो० क० गा० २१७)

७वें भाग में -२२ प्रकृतियां जो बंधती हैं वे ऊपर के २६ प्रकृतियों में से हास्य-रति २, भय-जुगुप्सा २, ये ४ घटाकर २२ जानना।

सूचना—उपरोक्त बंधव्युच्छित्ति के ७ भाग क्षपक श्रेणी की अपेक्षा नहीं पड़ते हैं।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७२ को नं० ७ के ७६ प्रकृतियों में से असंप्राप्तासृपाटिका संहनन १, कीलक संहनन १, अर्धनाराचसंहनन सम्यक् प्रकृति १, ये ४ घटाकर ७२ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४२, चौथे गुण स्थान के १४८ प्रकृतियों में से नरकायु १, तिर्यंचायु १, अनन्तानुबंधी कषाय ४, ये ६ घटाकर शेष १४२ की सत्ता उपशम सम्यक्त्व की उपशम श्रेणी में जानना।

१३९, चौथे गुण स्थान के क्षायिक सम्यग्दृष्टी की १४१ प्रकृतियों में से नरकायु १, तिर्यंचायु १, ये दो घटाकर शेष १३९ की सत्ता क्षायिक सम्यक्त्व की उपशम श्रेणी में जानना।

१३८, चौथे गुण स्थान क्षायिक सम्यग्दृष्टी की १४१ प्रकृतियों में से नरकायु १, तिर्यंचायु १, देवायु १ ये ३ घटाकर शेष १३८ प्रकृतियों की सत्ता क्षायिक सम्यग्दृष्टी की क्षपक श्रेणी में जानना।

२८ **संख्या**—२९९ उपशम श्रेणी में, और ५९८ क्षपक श्रेणी में जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—उपशम श्रेणी में एक समय से अन्तर्मुहूर्त और क्षपक श्रेणी में अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा उपशम श्रेणी में एक समय से लेकर वर्ष पृथक्त्व तक और क्षपक श्रेणी में एक समय से लेकर छः मास तक जानना एक जीव की अपेक्षा उपशम श्रेणी में एक समय से देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक अन्तर जानना।

३३ **जाति (योनि)** १४ लाख योनि मनुष्य की जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

क्र०	स्थान नाम सामान आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१	१ अनिवृत्तिकरण गुण स्थान	१	१	
२ जीव समास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था को नं १८ देखो	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को नं० १ देखो	६ ६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण	१० को नं० १ देखो	१० १० का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५ संज्ञा	२ मैथुन, परिग्रह	२ २-१ के भंग को नं० १८ के मुजिब	दोनों भंग २-१ के भंग	१ भंग २-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग	९ को नं० ५ देखो	९ ९ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ९ का भंग	१ योग ९ के भंग में से कोई १ योग जानना	
१० वेद	३ नपुंसक, स्त्री, पुरुष	३ ३-२-१-० के भंग को नं० १८ देखो	१ भंग ३-२-१-० के भंग को नं० १८ देखो	१ वेद ३-२-१-० के भंग में से कोई १ भंग जानना को नं० १८ देखो	
११ कषाय	७ संज्वलन कषाय ४ वेद ३ ये ७ जानना	७ ७-६-५-४-३-२-१ के भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	७-६-५-४-३-२-१ के भंग जानना को नं० १८ देखो	७-६-५-४-३-२-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को नं० १८ देखो	

कोष्टक नं० ९

१	२	३	४	५	६-७-८
१२ ज्ञान	४ को नं० ६ देखो	४ ४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग	१ ज्ञान ४ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम	२ सामायिक, छेदोपस्थापना	२ २ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग	१ संयम २ के भंग में से कोई १ संयम जानना	
१४ दर्शन	३ को नं० ४ देखो	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	
१५ लेश्या	१	१ शुक्ल लेश्या जानना	१	१	
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	
१७ सम्यक्त्व	२ उपशम क्षायिक स०	२ २ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग	१ सम्यक्त्व २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी	१	१ संज्ञी	१	१	
१९ आहारक	१	१ आहारक	१	१	
२० उपयोग	७ को नं० ६ देखो	७ ७ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ७ का भंग	१ उपयोग ७ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान	१	१ पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान को नं० १८ देखो	१	१	
२२ आस्रव	१६ संज्वलन कषाय ४ वेद ३, मनोयोग ४ वचन योग ४, औदारिक का योग १ ये (१६)	१६ १६-१५-१४-१३-१२-११-१० के भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	सारे भंग ३-३ के भंग जानना को नं० १८ देखो	१ भंग २-३ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को नं० १८ के देखो	
२३ भाव	२९ को नं० ८ देखो	२९ २९-२८-२७-२६-२५-२४-२३ के भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना	१ भंग (१) सवेद भाग में २९ के भंग में से कोई १ भंग जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
			(१) सवेद भाग में १७ का भंग जानना (२) अवेद भाग में १६ का भंग जानना को नं० १८ देखो	(२) अवेद भाग में १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को नं० १८ देखो	

२४ अवगाहना—को नं० १८ देखो।

बंध प्रकृतियां— २२ पहले भाग में— ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, मोहनीय ५ (कषाय ४, पुरुष वेद १), अन्तराय ५, सातावेदनीय १, उच्चगोत्र १, यशःकीर्ति १, ये २२ जानना।

२१. दूसरे भाग में—पुरुषवेद घटाकर २१ जानना।

२०. तीसरे भाग में—क्रोधकषाय घटाकर २० जानना।

१९. चौथे भाग में— मान कषाय घटाकर १९ जानना।

१८. पांचवे भाग में—माया कषाय घटाकर १८ जानना।

१७. छटवे भाग में—लोभ कषाय घटाकर १७ जानना।

इस प्रकार छः भागों में कर्म प्रकृतियों का बंध घटता जाता है।

२६ उदय प्रकृतियां—६६. पहले भाग में—को नं० ८ के ७२ प्रकृतियों में से यहां हास्यादि ६ प्रकृतियों का उदय घटाकर ६६ जानना।

६५. दूसरे भाग में—नपुंसक वेद घटाकर ६५ जानना।

६४. तीसरे भाग में—स्त्रीवेद घटाकर ६४ जानना।

६३. चौथे भाग में— पुरुष वेद घटाकर ६३ जानना।

६२. पांचवे भाग में—क्रोध कषाय घटाकर ६२ जानना।

६१. छटवे भाग में—मानकषाय घटाकर ६१ जानना।

६०. सातवे भाग में—माया कषाय घटाकर ६० जानना।

२७ **सत्त्व प्रकृतियाँ**—१४२, १३६, १३८ की नं० ८ के मुजिब जानना। १३८ प्रकृतियों का विशेष खुलासा निम्न प्रकार जानना। यह भेद क्षपक श्रेणी की अपेक्षा होते हैं।

१ले भाग के प्रारम्भ में—१३८ की सत्ता है। उनमें नरकद्विक २, तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, महानिद्रा ३, (निद्रानिद्रा, प्रचला प्रचला, स्त्यानगृद्धि), साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, ये १६ प्रकृतियां पहले भाग के अन्त में घटाने से दूसरे भाग के प्रारम्भ में १२२ की सत्ता जानना।

२रे भाग के प्रारम्भ की १२२ प्रकृतियों में से दूसरे भाग के अन्त में अप्रत्याख्यान कषाय ४, प्रत्याख्यान कषाय ४ ये ८ प्रकृतियां घटाने से तीसरे भाग के प्रारम्भ में ११४ की सत्ता जानना।

३रे भाग के प्रारम्भ की ११४ प्रकृतियों में से तीसरे भाग के अन्त में नपुंसक वेद १ घटाने से चौथे भाग के प्रारम्भ में ११३ की सत्ता जानना।

४थे भाग के प्रारम्भ की ११३ प्रकृतियों में से चौथे भाग के अन्त में स्त्री वेद १ घटाने से पांचवें भाग के प्रारम्भ में ११२ की सत्ता जानना।

५वें भाग के प्रारम्भ की ११२ प्रकृतियों में से पांचवें भाग के अन्त में हास्यादिक ६ नोकषाय घटाने से छठवें भाग के प्रारम्भ में १०६ की सत्ता जानना।

६वें भाग के प्रारम्भ की १०६ प्रकृतियों में छठवें भाग के अन्त में पुरुष वेद १ घटाने से सातवें भाग के प्रारम्भ में १०५ की सत्ता जानना।

७वें भाग प्रारम्भ की १०५ प्रकृतियों में से सातवें भाग के अन्त में क्रोधकषाय घटाने से आठवें भाग के प्रारम्भ में १०४ की सत्ता जानना।

८वें भाग के प्रारम्भ के १०४ प्रकृतियों में से आठवें भाग के अन्त में मानकषाय घटाने से नौवें भाग के प्रारम्भ में १०३ की सत्ता जानना।

९वें भाग के प्रारम्भ के १०३ प्रकृतियों में से नवें भाग के अन्त में मायाकषाय घटाने से दसवें गुण स्थान के प्रारम्भ में १०२ की सत्ता जानना। (देखो गो० क० गा० ३३८ से ३४२)

२८ **संख्या**—२९९ उपशम श्रेणी में और ५९८ क्षपक श्रेणी में जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—उपशम श्रेणी की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक और क्षपक श्रेणी की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त तक इस गुण स्थान में रहने का काल जानना।

३२ **अंतर**—नाना जीवों की अपेक्षा उपशम श्रेणी में एक समय से लेकर वर्ष पृथक्त्व तक जानना और क्षपक श्रेणी में एक समय से लेकर ६ मास तक संसार में कोई जीव न चढ़े और एक जीव की अपेक्षा उपशम श्रेणी में इस समय से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक व्युच्छेद पड़ता है अर्थात् अन्तर जानना।

३३ **जाति (योनि)**—मनुष्यगति के १४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—मनुष्य के १४ लाख कोटि ४ कुल जानना।

स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एकसमय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६—७—८
१ गुण स्थान	१	१ सूक्ष्म सांपराय गुण स्थान	१	१	सूचना— इस सूक्ष्मसांपराय गुण स्थान में अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है
२ जीव समास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था	१	१	
३ पर्याप्ति को नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण को नं० १ देखो	१०	१० १० का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५ संज्ञा	१	१ परिग्रह संज्ञा जानना	१ भंग १ का भंग	१	
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
			१	१	
			१	१	
९ योग को नं० ५ देखो	९	९ ९ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ९ का भंग	१ योग ९ का भंग	
१० वेद	०	० अपगत वेद जानना	०	०	
११ कषाय	१	१ सूक्ष्म लोभ जानना	१	१ १ योग जानना	
१२ ज्ञान को नं० ६ देखो	४	४ ४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग	१ ज्ञान ४ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम	१	१ सूक्ष्म सांपराय संयम जानना	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
१४ दर्शन	३ को नं० १ देखो	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	
१५ लेश्या	१	१ शुक्ल लेश्या जानना	१	१	
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	
१७ सम्यक्त्व	२ उपशम क्षायिक स०	२ २ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग	१ सम्यक्त्व २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी	१	१ संज्ञी जानना	१	१	
१९ आहारक	१	१ आहारक जानना	१	१	
२० उपयोग	७ को नं० १ देखो	७ ७ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ७ का भंग	१ उपयोग ७ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान	१	१ पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान को नं० १८ देखो	१	१	
२२ आस्रव	१० सूक्ष्म लोभ १, मनोयोग ४, वचन योग ४, औ० काय योग १ ये १०	१० १० का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग	
२३ भाव	२३ को नं० ८ के २६ के भावों में से क्रोध मान माया कषाय ३, लिंग ३, ये ६ घटाकर २३ जानना	२३ २३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १६ के भंग में से कोई १ भंग जानना	

२४ **अवगाहना**—को नं० १८ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१७ कोष्टक नं० ६ के २२ प्रकृतियों में से संज्वलन कषाय ४ और पुरुष वेद १ ये ५ घटाकर १७ प्रकृतियां जानना।

२६ ६० को नं० ६ के ६६ प्रकृतियों में से क्रोध-मान माया ये ३ कषाय, और वेद ३ ये ६ घटाकर ६० प्रकृतियां जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४२, १३६, १३८, १०२ को नं० ६ के मुजिब जानना।

२८ **संख्या**—२९९ उपशम श्रेणी में और ५९८ क्षपक श्रेणी मे जानना। अर्थात अढाई द्वीप में इतने जीव यदि हों तो एक समय में हो सकते हैं।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवे भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—उपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना और क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त तक जानना।

३२ **अन्तर**—को नं० ६ के मुजिब जानना।

३३ **जाति (योनी)**—मनुष्य की १४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—मनुष्य की १४ लाख कोटि कुल जानना।

स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त ६-७-८
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१	१ उपशांत कषाय (मोह) गुण स्थान	१	१	सूचना—इस उपशांत कषाय (मोह) गुण में अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीव समास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था	१	१	
३ पर्याप्ति को नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण को नं० १ देखो	१०	१० १० का भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५ संज्ञा	०	० उपशांत संज्ञा जानना	०	०	
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग को नं० ५ देखो	६	६ ६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ६ का भंग	१ योग ६ के योग में से कोई १ योग जानना	
१० वेद	०	० अपगत वेद जानना	०	०	
११ कषाय	०	० अकषाय जानना	०	०	
१२ ज्ञान को नं० ६ देखो	४	४ ४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग	१ ज्ञान ४ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम	१	१ यथाख्यात संयम जानना	१	१	
१४ दर्शन को नं० ६ देखो	३	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ दर्शन ३ के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	
१५ लेश्या	१	१ शुद्ध लेश्या जानना	१	१	
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	

१	२	३	४	५	६—७—८
१७ सम्यक्त्व उपशमक्षायिक स०	२	२ २ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग २ का भंग	१ सम्यक्त्व २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी	१	१ संज्ञी जानना	१	१	
१९ आहारक	१	१ आहारक जानना	१	१	
२० उपयोग को नं० ६ देखो	७	७ ७ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ का भंग ७ का भंग	१ उपयोग ७ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान	१	१ पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान	१	१	
२२ आस्रव को नं० ५ देखो	९	९ ९ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ९ के भंग में से कोई १ योग	१ भंग ९ के भंग में से कोई १ योग जानना	
२३ भाव को नं० ५ देखो भावों में से सूक्ष्म लोभ १, क्षायिक चारित्र १ ये २ घटाकर २१ भाव जानना	२१	२१ २१ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १५ का भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	१ भंग १५ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	

२४ **अवगाहना**—को नं० १८ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१ सातावेदनीय जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—५६ को नं० १० के ६० प्रकृतियों में से सूक्ष्म लोभ १ घटाकर ५९ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४२, १३९ को नं० ८ मुजिब जानना।

सूचना:—यह गुण स्थान क्षपक श्रेणी वालों के नहीं होता है।

२८ **संख्या**—२९९ उत्तम जीव जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवा भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवा भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त तक जानना।

३२ **अन्तर**—एक समय से देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल प्रमाण के बाद दुबारा उपशम श्रेणी मिलेगी।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख मनुष्य योनि जानना

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना।

क्र०	स्थान नाम	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त
			नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
	१	२	३	४	५	६-७-८
१	गुण स्थान	१	१ क्षीण कषाय (मोह) गुण स्थान	१	१	सूचना—इस क्षीणकषाय (मोह) गुण में अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२	जीव समास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था	१	१	
३	पर्याप्ति को नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४	प्राण को नं० १ देखो	१०	१० १० का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५	संज्ञा	०	(०) अपगत संज्ञा जानना	०	०	
६	गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७	इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८	काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
९	योग को नं० ५ देखो	९	९ ९ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ९ का भंग	१ योग ९ के भंग में से कोई १ योग जानना	
१०	वेद	०	(०) अपगत वेद जानना	०	०	
११	कषाय	०	(०) अकषाय जानना	०	०	
१२	ज्ञान को नं० ६ देखो	४	४ ४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ४ का भंग	१ ज्ञान ४ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३	संयम	१	१ यथाख्यात संयम जानना	१	१	
१४	दर्शन को नं० ६ देखो	३	३ ३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ३ का भंग	१ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	
१५	लेश्या	१	१ शुक्ल लेश्या जानना	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	
१८ संज्ञी	१	१ संज्ञी जानना	१	१	
१९ आहारक	१	१ आहारक जानना	१	१	
२० उपयोग	७ को० नं० १ देखो	७ ७ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग ७ का भंग	१ उपयोग ७ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान	१	१ एकत्व वितर्क अविचार शुक्ल ध्यान	१	१	
२२ आस्रव	९ को० नं० ५ देखो	९ ९ का भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग ९ के भंग में से कोई १ भंग जानना	१ भंग ९ के भंग में से कोई १ भंग जानना	
२३ भाव को० नं० ११ के २१ भावों में से उपशम सम्यक्त्व १ उपशम चारित्र १ ये २ घटाकर शेष १९ से क्षायिक चारित्र जोड़कर २० भाव जानना	२०	२० २० के भंग को० नं० १८ के मुजिब	१ भंग १५ का भंग को० नं० १८ के मुजिब जानना	१ भंग १५ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	

२४ अवगाहना—को नं० १८ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१ साता वेदनीय जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—५७, को नं० ११ के ५९ प्रकृतियों में से वज्रनाराच संहनन १, नाराच संहनन १ ये २ घटाकर ५७ जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—१०१, को नं० १० के क्षपक श्रेणी के १०२ प्रकृतियों में से सूक्ष्मलोभ १ घटाकर १०१ का सत्ता जानना।

२८ संख्या—५९८ जीव जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३१ काल—अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से ६ मास तक कोई भी जीव क्षीणमोही न होगा और एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

क्रमांक स्थान सामान्य आलाप		पर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	पर्याप्त: एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त: एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त: १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त: एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१	१ सयोग केवली गुण०	१	१	१ सयोग केवली गुण०	१	१
२ जीव समास संज्ञी पं० प० अपर्याप्त	२	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था	१	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	१	१
३ पर्याप्ति को नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	३ ३ का भंग को नं० १८ देखो लब्धि रूप ६ का भंग	१ भंग ३ का भंग लब्धि रूप ६ का भंग	१ भंग ३ का भंग लब्धि रूप ६ का भंग
४ प्राण आयु १, काय बल १ श्वासोच्छ्वास १ वचन बल १ ये (४)	४	४ ४ का भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	२ आयु बल १, काय बल १ ये २ प्राण जानना २ का भंग को नं० १८ देखो	१ भंग २ का भंग	१ भंग २ का भंग
५ संज्ञा	०	(०) अपगत संज्ञा	०	०	०	०	०
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति	१	१	१	१	१
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	१	१	१
९ योग सत्य मनोयोग १ अनुभय योग १ सत्य वचन योग १ अनुभय योग १ औ० काय योग १ औ० मिश्र काय योग १ कार्माण काय योग १	७	५ कार्माण का योग १ औ० मिश्र काय योग १ ये २ घटाकर (५) ५-३ के भंग को नं० १८ के मुजिब	दोनों भंग ५-३ के भंग	१ योग ५-३ के भंगों में से कोई १ योग जानना	२ कार्माण का योग १ औ० मिश्र काय योग १ ये २ योग जानना २-१ के भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	दोनों भंग २-१ के भंग	१ योग २-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
ये ७ योग जानना							
१० वेद	०	(०) अपगत वेद	०	०	०	०	०
११ कषाय	०	(०) अकषाय	०	०	०	०	०
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान जानना	१	१	१	१	१
१३ संयम	१	१ यथाख्यात जानना	१	१	१	१	१
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१	१	१	१	१
१५ लेश्या	१	१ शुक्ल लेश्या जानना	१	१	१	१	१
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व	१	१	१	१	१
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व	१	१	१	१	१
१८ संज्ञी	०	(१) अनुभय संज्ञी	०	०	०	०	०
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ आहारक जानना को नं० १८ देखो	१	१	२ (१) औ० मिश्रकाय योग में आहारक अवस्था जानना (२) कार्माण काय योग में अनाहारक अवस्था जानना को नं० १८ देखो	दोनों अवस्था आहारक और अनाहारक को नं० १८ देखो	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था जानना को नं० १८ देखो
२० उपयोग केवल ज्ञानोपयोग १ केवल दर्शनोपयोग १ ये २ जानना	२	२ २ का भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	दोनों युगपत जानना	दोनों युगपत जानना	२ १ का भंग युगपत जानना को नं० १८ देखो	२ युगपत जानना	२ युगपत जानना
२१ ध्यान		१ सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुक्ल ध्यान जानना	१	१	१	१	सारे भंग
२२ आस्रव ऊपर के क्रमांक ६ देखो योग स्थान के ७ योग आस्रव जानना	७	५ कार्माण का योग १ औ० मिश्रकाय योग १ ये २ घट कर (५) ५ का भंग को नं० १८ के मुजिब जानना ५-३ के भंग को नं० १८ के मुजिब	सारे भंग ५-३ के भंगों में से कोई १ योग	सारे भंग ५-३ के भंगों में से कोई १ योग	२ कार्माण का योग १ औ० मिश्रकाय योग १ ये २ योग जानना २-१ के भंग को नं० १८ के जानना	सारे भंग २-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना	१-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
२३ भाव	१४ क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र१, केवल ज्ञान१ केवल दर्शन १, क्षायिक लब्धि ५, मनुष्य गति १, शुक्ल लेश्या १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये १४ भाव जानना	१४ १४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १४ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १४ का भंग ही जानना	१४ पर्याप्त वत को नं० १८ देखो	१ भंग १४ का भंग को नं० १८ देखो	१ भंग १४ का भंग को नं० १८ देखो

२४ **अवगाहना**—को नं० १८ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१ सातावेदनीय (यह भी उपचार से बंध) जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—४२ को नं० १२ के ५७ प्रकृतियों में से ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, (महानिद्रा ३ घटाकर ६), अन्तराय ५ ये १६ घटाकर और तीर्थंकर प्रकृति १ जोड़कर अर्थात् ५७—१६ = ४१ + १ = ४२ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—८५ को नं० १२ के १०१ प्रकृतियों में से ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, अन्तराय ५, ये १६ घटाकर ८५ जानना।

२८ **संख्या**—(८९८५०२) आठ लाख अठ्यानवें हजार पांच सौ दो जीव जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण कपाट समुद्घात की अपेक्षा जानना और प्रतर समुद्घातायें असंख्यात लोक प्रमाण जानना और लोक पूर्ण समुद्घात में सर्व लोक जानना।

३० **स्पर्शन**—ऊपर के क्षेत्र स्थान के मुजिब जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन कोटि पूर्व वर्ष तक जानना।

३२ **अंतर**—अन्तर नहीं है।

३३ **जाति (योनि)**—के १४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटि कुल मनुष्य की जानना।

		पर्याप्त			अपर्याप्त
क्रम स्थान	सामान्य आलाप	नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१	१ अयोग केवली गुण स्थान	१	१	सूचना:— इस अयोग केवली गुण स्थान में अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीव समास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था	१	१	
३ पर्याप्ति को नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण	१	१ आयु प्राण जानना	१	१	
५ संज्ञा	०	(०) अपगत संज्ञा जानना	०	०	
६ गति	१	१ मनुष्यगति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग	०	(०) अयोग जानना	०	०	
१० वेद	०	(०) अपगतवेद जानना	०	०	
११ कषाय	०	(०) अकषाय जानना	०	०	
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान जानना	१	१	
१३ संयम	१	१ यथाख्यात संयम जानना	१	१	
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१	१	
१५ लेश्या	०	(०) अलेश्या जानना	०	०	
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	
१८ संज्ञी	१	(०) अनुभय संज्ञी (नसंज्ञी न असंज्ञी)	०	०	
१९ आहारक	१	१ अनाहारक जानना	१	१	
२० उपयोग	२	१ केवल ज्ञानोपयोग, केवल दर्शनोपयोग ये (२)	युगपत जानना	२ युगपत् जानना	
२१ ध्यान	१	१ व्युपरतक्रिया निवर्तिनी शुक्ल ध्यान	१	१	
२२ आस्रव	०	(०) आस्रवरहित अवस्था जानना	०	०	

१	२	३	४	५	६-७-८
१३ भाव को नं० १३ के १४ भावों में से शुक्ल लेश्या १ घटाकर शेष १३ भाव जानना	१३	१३ १३ का भंग को नं० १८ के मुजिब जानना	१ भंग १३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	१ भंग १३ का भंग को नं० १८ के मुजिब	

२४ अवगाहना—को नं० १८ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—०

२६ उदय प्रकृतियां—मनुष्यायु १, उच्चगोत्र १, साताबेदनीय १, मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, त्रसकाय १, बादरकाय १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यशकीर्ति १, तीर्थंकर १ ये १२ प्रकृतियां जानना।

सूचना:—सामान्य केवली के तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर ११ प्रकृति जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—८५ द्विचरम समय में को नं० १३ के मुजिब ८५ और चरम समय में उदय की १२ प्रकृतियों में असाता वेदनीय १ जोड़कर १३ जानना।

सूचना—सामान्य केवली की उदय की ११ प्रकृतियों में असाता वेदनीय १ मिलाकर १२ की सत्ता जानना।

२८ संख्या—५९८ जीव जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३१ काल—अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त जानना।

सूचना—१४वें गुण स्थान की स्थिति जो दो समय की बताई गई है यह ८५ सत्ता प्रकृतियों की नाश करने की अपेक्षा जानना और अ, इ, उ, ऋ, लृ बोलने में जितने समय लगें पूर्ण काल को जानना।

३२ अन्तर—एक समय से लेकर ६ मास तक इस गुण स्थान में कोई भी जीव नहीं चढ़े।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

क्र०	स्थान नाम सामान्य आलाप		पर्याप्त	अपर्याप्त		
			नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
१		२	३	४	५	६-७-८
१	गुण स्थान	०	अतीत गुण स्थान जानना			सूचना—यहां ही अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२	जीव समास	०	,, जीव समास ,,			
३	पर्याप्ति	०	,, पर्याप्ति ,,			
४	प्राण	०	,, प्राण ,,			
५	संज्ञा	०	अपगत संज्ञा ,,			
६	गति	०	गति रहित अवस्था ,,			
७	इन्द्रिय जाति	०	इन्द्रिय रहित ,,			
८	काय	०	काय ,, ,,			
९	योग	०	योग ,, ,,			
१०	वेद	०	अपगत वेद,, ,,			
११	कषाय	०	अकषाय ,, ,,			
१२	ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान ,,	१ केवल ज्ञान	१ केवल ज्ञान	
१३	संयम	०	संयम, असंयम, संयमासंयम रहित अवस्था			
१४	दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१ केवल दर्शन	१ केवल दर्शन	
१५	लेश्या	०	अलेश्या ,,			
१६	भव्यत्व	०	अनुभय ,,			
१७	सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१ क्षायिक सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	
१८	संज्ञी	०	अनुभय ,,			
१९	आहारक	०	अनुभय ,,			
२०	उपयोग	२	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन दोनों युगपत जानना	२ युगपत् जानना	२ युगपत् जानना	
२१	ध्यान	०	ध्यान रहित अवस्था जानना			
२२	आस्रव	०	आस्रव ,, ,, ,,			
२३	भाव	५	५ क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक वीर्य क्षायिक सम्यक्त्व, जीवत्व ये (५)	५ भाव जानना	५ भाव जानना	

सूचना :—कोई आचार्य क्षायिक भाव ९ और जीवत्व १ ये १० भाव मानते हैं।

२४ अवगाहना—को नं० १८ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—बंध रहित।

२६ उदय प्रकृतियां—उदय रहित।

२७ सत्व प्रकृतियां—सत्व रहित

२८ संख्या—अनन्त जानना।

२९ क्षेत्र—४५ लाख योजन सिद्ध लोक (सिद्ध शिला)

३० स्पर्शन—सिद्ध भगवान स्थिर रहते हैं।

३१ काल—सर्वकाल।

३२ अन्तर—अन्तर रहित।

३३ जाति (योनि)—जाति रहित।

३४ कुल—कुल रहित।

कोष्टक नं० १६

चौंतीस स्थान दर्शन — **नरक गति में**

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	पर्याप्त एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	४ मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरत गुण० ये ४ गुण० जानना	४ १ से ४ गुण० जानना	सारे गुण० १ से ४ सारे गुण० जानना	१ गुण० १ से में कोई १ गुण० जानना	२ १ले ४थे ये २ गुण० जानना सूचना— मनुष्य और तिर्यंच गति वाला जीव सासादन गुण स्थान में मरकर नरक गति में जन्म नहीं लेता, इसलिये यहां नरक गति में सासादन गुण स्थान नहीं होता। (देखो गो० क० गा० [illegible])	सारे गुण स्थान १ले ४थे दोनों गुण० जानना	१ गुण० १ले ४थे गुण० में से कोई १ गुण०
२ जीव समास	२ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त " " अपर्याप्त ये २ जानना	१ पर्याप्त अवस्था १ से ४ गुण० में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१ जीव समास १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१ समास १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१ अपर्याप्त अवस्था १ले ४थे गुण० में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ समास १ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था जानना	१ समास १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ १ से ४ गुण० में ६ का भंग सामान्यवत् जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	३ मन-भाषा-श्वासोच्छ्वास ये ३ घटाकर शेष (३) १ले ४थे गुण० में ३ का भंग आहार शरीर इन्द्रिय पर्याप्ति ये ३ का भंग जानना	१ भंग ३ का भंग जानना	१ भंग ३ का भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० १ से ४ गुण० में १० के भंग सामान्यवत् जानना	१ भंग १० का भंग	१ भंग १ का भंग	७ मनोबल, वचनबल, श्वासोच्छ्वास, ये ३ घटाकर (७) १ले ४थे गुण० में ७ का भंग आयु प्राण १, कायबल प्राण १, इन्द्रिय प्राण ५, ये ७ प्राण जानना	१ भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ १ से ४ गुण० में ४ का भंग सामान्यवत् जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले ४थे गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१ नरकगति	१ १ से ४ गुण० १ नरक गति जानना	१ १ नरक गति	१ १ नरक गति	१ १ले ४थे गुण० में १ नरक गति जानना सूचना—१ले गुण स्थान में मरने वाला जीव सात ही (१ से ७ नरक) नरकों में जन्म ले सकता है। परन्तु ४थे गुण स्थान में मरने वाला जीव १ले नरक में ही जन्म ले सकता है।	१ नरक गति	१ नरक गति
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ १ से ४ गुण० में १ पंचेन्द्रिय (संज्ञी) जाति	१ संज्ञी पं० जाति	१ संज्ञी पं० जाति	१ १ले ४थे गुण० में १ संज्ञी पं० जाति जानना	१ संज्ञी पं० जाति	१ संज्ञी पं० जाति
८ काय त्रसकाय	१ त्रसकाय	१ १ से ४ गुण० में १ त्रसकाय जानना	१ त्रसकाय	१ त्रसकाय	१ १ले ४थे गुण० में १ त्रसकाय जानना	१ त्रसकाय	१ त्रसकाय

१	२	३	४	५	६	७	८
९ योग	११ आ० मिश्रकाय योग १, आहारक काय योग १, औ० मिश्र काय योग १, औ० काय योग १, ये ४ घटाकर (११)	९ वै० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १, ये २ घटाकर (९) १ से ४ गुण० में ९ का भंग मनोयोग ४, वचन योग ४ वै० काय योग १ ये ९ का भंग जानना	१ भंग ९ का भंग जानना	१ योग ९ के भंग में से कोई १ योग जानना	२ वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये २ योग जानना १-२ के भंग १ले ४थे गुण० में १ का भंग—कार्माणकाय योग विग्रह गति में जानना २ का भंग—कार्माणकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, ये २ का भंग निर्वृत्य पर्याप्त (आहार पर्याप्ति के समय) अवस्था में जानना	१ भंग १-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ योग १-२ के भंग में से कोई १ योग जानना
१० वेद	१ नपुंसक वेद	१ १ से ४ गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१ नपुंसक वेद	१ नपुंसक वेद	१ १ले ४थे गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१ नपुंसक वेद	१ १ नपुंसक वेद
११ कषाय	२३ स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर (२३)	२३ २३-१९ के भंग (१) १ले २रे गुण० में २३ का भंग—सामान्यवत् जानना (२) ३रे ४थे गुण० में १९ का भंग ऊपर के २३ के भंग में से अनंतानुबंधी कषाय ४, घटाकर शेष १९ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग ७-८-९ के भंग को० नं० १ के समान ३रे ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग—को० नं० १८ के समान	१ भंग ७-८-९ के भंग में से कोई १ भंग जानना ३रे ४थे गुण० में ६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२३ २३-१९ के भंग (१) १ले गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत् (२) ४थे गुण० में १९ का भंग पर्याप्तवत् सूचना—यह भंग १ले नरक की अपेक्षा जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ले गुण० में ७-८-९ के भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग ७-८-९ के भंग पर्याप्तवत् जानना ६-७-८ के भंग पर्याप्तवत् जानना

कोष्टक नं० १६

चौंतीस स्थान दर्शन

२	३	४	५	६	७	८
१२ ज्ञान ६ कुज्ञान ३, ज्ञान ३ ये ६ ज्ञान जानना	६ ३–३ के भंग (१) १ले २रे ३रे गुण० में ३ का के भंग तीन कुज्ञान जानना (कुमति-कुश्रुत-कुअवधि) (२) ४थे गुण० में ३ का भंग तीन ज्ञान (मति-श्रुत-अवधि ज्ञान) जानना	सारे भंग १-२-३ गुण० में ३ का भंग ४थे गुण० में ३ का भंग	१ ज्ञान ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	५ (कुअवधि ज्ञान घटाकर ५) २-३ के भंग (१) १ले गुण० में २ का भंग कुमति कुश्रुत ये २ जानना। (२) ४थे गुण० में ३ का भंग मति-श्रुत- अवधि ज्ञान ये ३ का भंग सूचना-यहां ३ का भंग पहले नरक की अपेक्षा जानना	सारे भंग १ले गुण० २ का भंग जानना ४थे गुण० में ३ का भंग जानना	१ ज्ञान १ले गुण० में २ के भंग में से कोई १ ज्ञान ४थे गुण० में ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना
१३ संयम १ असंयम	१ १ से ४ गुण० में १ असंयम जानना	१ असंयम	१ असंयम	१ १ले ४थे गुण० में १ असंयम जानना	१ असंयम	१ १ असंयम
१४ दर्शन ३ अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १, अवधि दर्शन १ ये ३ दर्शन जानना	३ २-३ के भंग (१) १ले २रे गुण० में २ का भंग अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १ ये २ का भंग जानना (२) ३रे ४थे गुण० में ३ का भंग सामान्यवत् तीनों दर्शन जानना	१ भंग १ले २रे गुण० में २ का भंग ३रे ४थे गुण० में ३ का भंग	१ दर्शन २ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	३ २-३ के भंग (१) १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् (२) ४थे गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत् सूचना-यहां ३ का भंग पहले नरक की अपेक्षा जानना।	१ भंग १ले गुण० में २ का भंग ४थे गुण० में ३ का भंग	१ दर्शन २ के भंग में से कोई १ दर्शन ३ के भंग में से कोई १ दर्शन
१५ लेश्या ३ अशुभ लेश्या	३ १ से ४ गुण० में ३ का भंग कृष्ण-नील-कापोत ये ३ अशुभ लेश्या जानना	१ भंग ३ का भंग जानना	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	३ १ले ४थे गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना
१६ भव्यत्व २ भव्य, अभव्य	२ २–१ के भंग (१) १ले गुण० में	१ भंग १ले गुण० में	१ अवस्था २ के भंग में	२ २–१ के भंग (१) १ले गुण० में	१ भंग १ले गुण० में	१ अवस्था २ के भंग में

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम ये ६ जानना	६	२ का भंग–भव्य, अभव्य ये २ जानना (२) २रे ३रे ४थे गुण० में १ भव्य ही जानना ६ १-१-१-३-२ के भंग (१) १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना (२) २रे गुण० में १ सासादन जानना (३) ३रे गुण० में १ मिश्र जानना (४) ४थे गुण० में १ले नरक में ३ का भंग–उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम ये ३ का भंग जानना २रे से ७वे तक नरक में २ का भंग–ऊपर के ३ के भंग में से क्षायिक स० १ घटाकर उपशम, क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व जानना	२ का भंग २रे ३रे ४थे गुण० में १ भव्य ही जानना सारे भंग १ले गुण० में १ मिथ्यात्व २रे गुण० में १ सासादन ३रे गुण० में १ मिश्र ४थे गुण० में ३-२ का भंग	में कोई १ अवस्था १ भव्य जानना १ सम्यक्त्व मिथ्यात्व सासादन मिश्र ३-२ के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	२ का भंग–पर्याप्तवत् (२) ४थे गुण० में १ भव्य ही जानना ३ सासादन, मिश्र, उपशम, ये ३ घटाकर (३) १-२ के भंग (१) १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना। अर्थात् मिथ्यात्व में मर कर १ले नरक से सातों ही नरकों में जन्म लेता है (२) ४थे गुण० में २ का भंग–१ले नरक में क्षायिक, क्षयोपशम ये २ का भंग जानना अर्थात् ४थे गुण० में मरने वाला जीव १ले नरक में जाता (१) सूचना––द्वितीयोप- शम सम्यक्त्वी मर कर नरक में नहीं आता है (२) सूचना— यहां २ का भंग १ले नरक की अपेक्षा जानना	२ का भंग ४थे गुण० में १ भव्य ही जानना सारे भंग १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना ४थे गुण० में २ का भंग	में कोई १ अवस्था १ भव्य जानना १ सम्यक्त्व मिथ्यात्व २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व
१८ संज्ञी	संज्ञी १	१ १ से ४ गुण० में १ संज्ञी जानना	१ १ संज्ञी	१ १ संज्ञी	१ १ले ४थे गुण० में १ संज्ञी जानना	१ १ संज्ञी	१ १ संज्ञी

१	२	३	४	५	६	७	८
		आज्ञाविचय धर्म ध्यान १ जोड़कर ६ का भंग जानना (२) ४थे गुण० में १० का भंग–ऊपर के ६ के भंग में अपाय विचय धर्म ध्यान १ जोड़कर १० का भंग जानना	 ४थे गुण० में १० का भंग	 १० के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	रौद्र ध्यान ४, आज्ञा-विचय धर्म ध्यान १, ये ६ का भंग		
२२ आस्रव ५१ आ० मिश्रकाय योग १, आ० काय योग १, औ० मिश्रकाय योग १, औ० काय योग १ स्त्री-पुरुष वेद २ ये ६ घटाकर (५१)		४६ वै० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १, ये २ घटाकर (४६) ४६-४४-४० के भंग (१) १ले गुण० में ४६ का भंग मिथ्यात्व ५, अविरत (हिंसक इन्द्रिय विषय ६ हिंस्य ६) १२, कषाय २३ (स्त्री-पुरुष वेद घटाकर) वचनयोग ४, मनोयोग ४, वै० काय योग १, ये ४६ का भंग (२) सासादन गुण० में ४४ का भंग–ऊपर के ४६ के भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ४४ का भंग जानना (३) ३रे ४थे गुण० में ४० का भंग–ऊपर के ४४	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग–को० नं० १८ देखो २रे गुण० में १० से १७ तक के भंग–को० नं० १८ देखो ३रे ४थे गुण० में ६ से १६ तक के	१ भंग सारे भंग में से कोई १ भंग जानना ११ से १८ तक के भंगों में से कोई एक भंग जानना १० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना ६ से १६ तक के भंगों में से	४० वचनयोग ४, मनोयोग ४, वै० काय योग १, ये ६ घटाकर (४२) ४२-३३ के भंग (१) १ले गुण० में ४२ का भंग–पर्याप्त के ४६ के भंग में से योग ६ घटाकर, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये २ जोड़कर ४२ का भंग जानना (२) ४थे गुण० में ३३ का भंग–ऊपर के ४२ के भंग में से मिथ्यात्व ५, अनन्ता-नुबंधी कषाय ४, ये ६ घटाकर ३३ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग– को० नं० १८ देखो ४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग–को० नं० १८ देखो	१ भंग सारे भंग में से कोई १ भंग जानना ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना ६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर ४० का भंग जानना	भंग—को० नं० १८ देखो	कोई १ भंग जानना			
२८.	भाव ३३ उपशम-क्षायिक सम्यक्त्व २, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, क्षयोपशम सम्यक्त्व १, नरक गति १, कषाय ४, नपुंसक लिंग १, अशुभ लेश्या ३, मिथ्यादर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३ ये ३३ भाव जानना	३३ २६-२४-२५-२६-२७ के भंग (१) १ले गुण० में २६ का भंग— कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्धि ५, नरक गति १, कषाय ४, नपुंसक लिंग १, अशुभ लेश्या ३, मिथ्या-दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये २६ का भंग जानना	सारे भंग १ले गुण० में २६ का भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	३१ उपशम सम्यक्त्व १, कुअवधि ज्ञान १ ये २ घटाकर (३१) २५-२७ के भंग (१) १ले गुण० में २५ का भंग—पर्याप्त के २६ के भंग में से कुअवधि ज्ञान घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग १ले गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १८ देखो
		(२) २रे गुण० में २४ का भंग—ऊपर के २६ के भंग में से मिथ्यादर्शन १, अभव्यत्व १, ये २ घटाकर २४ का भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग—को० नं० १८ देखो	६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	(२) ४थे गुण० में २७ का भंग— पर्याप्त के २८ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व घटाकर २७ का भंग जानना सूचना: यह २७ का भंग ४थे गुण स्थान में मर कर १ले नरक में आने वाले जीवों के लिये जानना	४थे गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो	१७ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १८ देखो
		(३) ३रे गुण० में २५ का भंग—ऊपर के २४ के भंग में अवधि दर्शन १, जोड़कर २५ का भंग जानना	३रे गुण० १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो			
		(४) ४थे गुण० में १ले नरक में	४थे गुण० में १७ का भंग	१७ के भंग में कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
		२८ का भंग उपशम-क्षायिक सम्यक्त्व २, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, क्षयोपशम-सम्यक्त्व १, नरक गति १, कषाय ४, नपुंसक लिंग १, अशुभ लेश्या ३, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १ ये २८ का भंग जानना २रे नरक से ७वें तक के नरक में— २७ का भंग ऊपर के २८ के भंग में से क्षायिक सम्यक्त्व १, घटाकर २७ का भंग जानना	को० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखो			

२४ **अवगाहना**— १ले नरक की जघन्य अवगाहना ७ धनुष ३ हाथ ६ अंगुल प्रमाण जानना और ७वें नरक की उत्कृष्ट अवगाहना ५०० धनुष जानना, बीच के अनेक भेदों की अवगाहना जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०१ (१) १ले २रे ३रे नरक में पर्याप्त अवस्था में १०१ प्रकृतियों बन्ध होता है। बन्धयोग्य १२० प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियकद्विक २, आहारकद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, आतप १ इन १९ प्रकृतियों का बन्ध नहीं होता। कारण नारकी मरकर इन अवस्थाओं में जन्म नहीं ले सकता है। इसलिये ये १९ प्रकृतियां घटाकर १०१ जानना।

९९ (२) १ले २रे ३रे नरक में निर्वृत्य पर्याप्त अवस्था में तिर्यचायु १, मनुष्यायु १ इन दोनों का बन्ध नहीं होता इसलिये ये २ ऊपर के १०१ प्रकृतियों में से घटाकर ९९ प्रकृतियों का बन्ध जानना।

१०० (३) ४थे ५वें ६वें ७वें नरक में पर्याप्त अवस्था में १०० प्रकृतियों का बन्ध होता है। ऊपर के १०१ प्रकृतियों में से तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर १०० जानना (देखो गो० क० गा० ९३)

९८ (४) ४थे ५वें ६वें नरक में निर्वृत्य पर्याप्त अवस्था में तिर्यचायु १, मनुष्यायु १ ये २ का बन्ध नहीं होता इसलिये ये २ ऊपर के १०० प्रकृतियों में से घटाकर ९८ प्रकृतियों का बन्ध जानना।

९५ (५) ७वें नरक के निर्वृत्य पर्याप्त अवस्था में मनुष्य गति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी १, उच्चगोत्र १, इन ३ प्रकृतियों का बन्ध नहीं होता इसलिये ये ३ ऊपर के ९८ प्रकृतियों में से घटाकर ९५ का बन्ध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७६ ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (तीन महानिद्रा घटाकर), वेदनीय २, मिथ्यात्व–सम्यग्मिथ्यात्व–सम्यक् प्रकृति ३, कषाय २३, (स्त्री-पुरुष वेद घटाकर), नरकायु १, नीचगोत्र १, अन्तराय ५, नामकर्म ३०, (नरक गति १, पंचेन्द्रिय जाति १, निर्माण १, वैक्रियकद्विक २, तैजस १, कार्माण १, हुंडक संस्थान १, स्पर्शादि ४, नरकगत्यानुपूर्वी १, अगुरु-लघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, अप्रशस्त विहायोगति १, प्रत्येक १, बादर १, त्रस १, पर्याप्ति १, दुर्भग १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, दुःस्वर १, अनादेय १,अयशकीर्ति १ ये ३०) इन ७६ प्रकृतियों का उदय जानना। (देखो गो० क० गा० २९०)

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—१४७ (१) १ले २रे ३रे नरक में देवायु १ घटाकर १४७ प्रकृतियों का सत्ता जानना।

१४६ (२) ४थे ५वें ६वें नरक में देवायु १, तीर्थंकर प्रकृति १ ये २ घटाकर १४६ का सत्ता जानना।

१४५ (३ ७वें नरक में मनुष्यायु का बन्ध नहीं कर सकता इसलिये देवायु १, तीर्थंकर प्रकृति १, मनुष्यायु १ ये ३ घटाकर १४५ प्रकृतियों का सत्ता जानना।

२८ संख्या—असंख्यात नारकी जानना।

२६ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा १ले नरक में जघन्य आयु १० हजार वर्ष जानना और सातवें नरक में उत्कृष्ट आयु ३३ सागर प्रमाण जानना, बीच के अनेक भेद जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक नारकी नहीं बन सकता है।

३३ जाति (योनि)—४ लाख योनि जानना।

३४ कुल—२५ लाख कोटिकुल नरक में जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की ‌ क्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरत देश संयत ये (५)	५	५ (१) कर्म भूमि में १ से ५ तक के गुण स्थान (२) भोग भूमि में १ से ४ तक के गुण स्थान	सारे गुण० १ से ४ गुण०जानना १ से ४ गुण०जानना	१ गुण० १ से ५ में से कोई १ गु० १ से ४ में से कोई १ गुण०	३ (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० जानना (२) भूमि भूमि में १-२-४ गुण० जानना	सारे गुण स्थान १ले २रे गुण० जानना १-२-४ गुण० जानना	१ गुण० १-२ में से कोई १ गुण० १-२-४ में से कोई १ गुण०
२ जीव समास को० नं० १ देखो	१४	७ पर्याप्त अवस्था ७-१-१ के भंग (१) कर्म भूमि में पहले गुण० में ७ जीव समास पर्याप्त अवस्था जानना २रे से ५ तक के गुण० में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना (१) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१ समास पहले गुण० में ७ में से कोई १ समास जानना २रे से ६ गुण० में १ संज्ञी पं० पर्याप्त० १ से ४ गुण० में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१ समास ७ में से कोई १ समास जानना १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	७ अपर्याप्त अवस्था ७-६-१ में भंग (१) कर्म भूमि में पहले गुण० में ७ जीव समास अपर्याप्त अवस्था जानना २रे गुण० में ६ जीव समास अपर्याप्त अवस्था एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त घटाकर शेष छह समास जानना (२) भोग भूमि में १-२-४ गुण० में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ समास १ले गुण० में ७ में से कोई १ समास जानना २रे गुण० में ६ में से कोई १ समास जानना १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ समास ७ में से कोई १ समास जानना ६ में से कोई १ समास जानना १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ ६-५-४-६ के भंग	१ भंग	१ भंग	३ मन-भाषा-श्वासो०	१ भंग	१ भंग

कोष्टक नं० १७

१	२	३	४	५	६	७	८
		(१) कर्म भूमि में १ से ५ गुण में ६ का भंग संज्ञी पं० जीव में सामान्यवत जानना १ले गुण में ५ का भंग द्विन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवों में एक मनपर्याप्ति घटाकर ५ का भंग जानना ४ का भंग—एकेन्द्रिय जीवों में मन और भाषा पर्याप्ति ये २ घटाकर ४ का भंग जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण में ६ का भंग सामान्यवत् जानना	१ से ५ के गुण में ६ का भंग १ले गुण में ५-४ के भंग में से कोई १ भंग जानना १ से ४ गुण में ६ का भंग	६ का भंग ५-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना ६ का भंग जानना	ये ३ घटाकर शेष ३ ३-३ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण में ३ का भंग—आहार, शरीर इन्द्रिय पर्याप्ति ये ३ का भंग जानना (२) भोग भूमि में १-२-४ गुण में ३ का भंग ऊपर लिखे अनुसार जानना सूचना—लब्धि रूप पर्याप्त अपने सर्व स्थानों में पर्याप्त अवस्था के समान सर्व पर्याप्तियां होती हैं।	१-२ गुण में ३ का भंग १-२-४ गुण में ३ का भंग	३ का भंग जानना ३ का भंग जानना
४ प्राण	१० को नं० १ देखो	१० १०-९-८-७-६-४-१० के भंग (१) कर्म भूमि में १ से ५ गुण स्थानों में १० का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में सामान्यवत् जानना १ले गुण में	१ भंग १ से ५ गुण में हरेक में १० का भंग जानना १ले गुण में	१ भंग हरेक में १० का भंग जानना ९-८-७-६-४ के	७ मनोबल, वचन बल, श्वासो च्छ्वास प्राण, ये ३ घटाकर ७ ७-७-६-५-४-३-७ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण में ७ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में	१ भंग १ले २रे गुण में ७-७-६-५-४-३ के भंगों में से कोई	१ भंग ७-७-६-५-४-३ के भंग में से कोई १ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		९ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में एक मनोबल प्राण घटाकर ९ का भंग जानना ८ का भंग चतुरिन्द्रिय जीवों में मनोबल और कर्णेन्द्रिय प्राण ये २ घटाकर ८ का भंग जानना ७ का भंग त्रीन्द्रिय जीवों में मनोबल, कर्णेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय ये ३ प्राण घटाकर ७ का भंग ६ का भंग द्वीन्द्रिय जीवों में मनोबल, कर्णेन्द्रिय, चक्षु, घ्राणेन्द्रिय प्राण ये ४ घटाकर ६ का भंग जानना ४ का भंग एकेन्द्रिय जीवों में आयु प्राण, कायबल, श्वासोच्छ्वास, स्पर्शेन्द्रिय प्राण ये ४ प्राण (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १० का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में सामान्यवत् जानना	१०-९-८-७-६-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १ से ४ गुण० में हरेक में १० का भंग जानना	भंगों में से कोई १ भंग जानना हरेक में १० का भंग जानना	मनोबल, वचनबल, श्वासोच्छ्वास, ये ३ प्राण घटाकर ७ का भंग जानना ७ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में ऊपर के संज्ञी पंचेन्द्रिय के ७ के भंग के मुजिब जानना ६ का भंग चतुरिन्द्रिय जीवों में ऊपर के ७ के भंग में से कर्णेन्द्रिय प्राण १ घटाकर ६ का भंग जानना ५ का भंग त्रीन्द्रिय जीवों में ऊपर के ६ के भंग में से चक्षुरिन्द्रिय प्राण १ घटाकर ५ का भंग ४ का भंग द्वीन्द्रिय जीवों में ऊपर के ५ के भंग में से घ्राणेन्द्रिय प्राण १ घटाकर ४ का भंग ३ का भंग एकेन्द्रिय जीवों में ऊपर के ४ के भंग में से रसनेन्द्रिय प्राण १ घटाकर शेष ३ अर्थात् आयु प्राण, कायबल प्राण, स्पर्शनेन्द्रिय ये ३ प्राण जानना सूचना—लब्ध्य पर्याप्तक तिर्यंच असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त के सब अवस्थाएं हो हैं, परन्तु तीसरा स्थान में संज्ञी असंज्ञी दोनों अवस्थाएं जानना		

१	२	३	४	५	६	७	८
					(२) भोग भूमि में १-२-४ गुण में ७ का भंग ऊपर के सभी पंचेन्द्रिय जीवों के मुजिब जानना	१-२-४ गुण में ७ का भंग हरेक में जानना	हरेक गुण में ७ का भंग जानना
५ संज्ञा को नं० १ देखो	४	४ (१) कर्म भूमि में १ से ५ गुण में ४ का भंग सामान्यवत् (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण में ४ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग १ से ५ गुण में ४ का भंग १ से ४ गुण में ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग जानना ४ का भंग जानना	४ ४-४ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण में ४ का भंग पर्याप्तवत् (२) भोग भूमि में १-२-४ थे गुण में ४ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग १ले २रे गुण में ४ का भंग १-२-४ थे गुण में ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग जानना ४ का भंग जानना
६ गति	१	१ तिर्यंच गति जानना	१	१	१ तिर्यंच गति जानना	१	१
७ इन्द्रिय जाति को नं० १ देखो	५	५ ५-१-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण में ५ जाति एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के पांचों ही जाति जानना २रे से ५ गुण में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ जाति १ले गुण में ५ जातियों में से कोई १ जाति २रे से ५ गुण में १ पंचेन्द्रिय जाति १ से ४ गुण में १ पं० जाति	१ जाति ५ में से कोई १ जाति जानना १ पं० जाति जानना १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	५ ५-१ के भंग (१) कर्म भूमि में ५-१ के भंग १ले २रे गुण में ५ पांचों ही जाति जानना (२) भोग भूमि में १-२-४ थे गुण में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ जाति १-२ गुण में पांचों ही जाति में से कोई १ जाति १-२-४ गुण में १ पं० जाति जानना	१ जाति ५ में से कोई १ जाति १ पं० जाति जानना
८ काय को नं० १ देखो	६	६ ६-१-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण में	१ काय १ले गुण में	१ काय ६ काय में	६ ६-४-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण में	१ काय १ले गुण में	१ काय ६ काय में से

१	२	३	४	५	६	७	८
		६ का भंग सामान्यवत् जानना २रे से ५ गुण में १ त्रसकाय जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण में १ त्रसकाय जानना	६ के भंग में से कोई १ काय २रे से ५ गुण में १ त्रसकाय १ से ४ गुण में १ त्रसकाय जानना १ भंग	६ काय में से कोई १ काय जानना १ त्रसकाय काय जानना १ त्रसकाय जानना १ योग	६ काय जानना २रे गुण में ४ काय पृथ्वी, जल, वनस्पति त्रसकाय ये ४ जानना (२) भोग भूमि में १-२-४ गुण में मे १ त्रसकाय जानना	६ काय में से कोई १काय जानना २रे गुण में ४ काय में से कोई १ काय जानना १-२-४ गुण में १ त्रसकाय जानना १ भंग	६ काय में से कोई १ काय ४ काय में से कोई १ काय जानना १ त्रसकाय जानना १ योग
६ योग औ० मिश्रकाय योग १ आ० काय योग १ वै० मिश्रकाय योग १ वै० काय योग १ ये ४ घटाकर (११)	११	९ औ० मिश्रकाय योग १ कार्माण काय योग १ से घटाकर (९) ९-२-१-९ के भंग (१) कर्म भूमि में १ से ५ गुण में ९ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय के मनोयोग ४, वचन योग ४, औ० काय योग १ ये ९ का भंगों जानना	 १ से ५ गुण में ९ का भंग	 ९ के भंगों में से कोई १ योग जानना	२ औ० मिश्रकाय योग १ कार्माण काय योग १ ये २ योग जानना १-२-१-२ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण में १ का भंग विग्रह गति में कार्माण काय योग जानना २ का भंग आहार पर्याप्ति के समय कार्माण काय योग १ औ० मिश्रकाय योग १ ये २ भंग जानना	 १-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	 १-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		१ले गुण में २ का भंग द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीव के औ० काय योग १, अनुभय वचन योग १ ये २ का भंग जानना १ का भंग एकेन्द्रिय जीव में एक औदारिक काय योग जानना (२) भोग भूमि में	१ले गुण में २-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना	२-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना	(२) भोग भूमि में १-२-४ थे गुण में १-२ के भंग ऊपर के कर्म भूमि के मुजिब जानना	१-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ से ४ गुण में ६ को भंग ऊपर के संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मुजिब जानना					
१० वेद को नं० १ देखो	३	३ ३-१-३-२ के भंग (१) कर्म भूमि में १ से ५ गुण में ३ का भंग संज्ञी पं० तिर्यंच ३ के वेद जानना १ले गुण में १ का भंग एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक के तिर्यंच के नपुंसक वेद १ जानना ३ का भंग असंज्ञी पं० जीवों में ३ वेद जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण में २ का भंग संज्ञी पं० तिर्यंच के स्त्री, पुरुष ये २ वेद जानना	१ भंग १ से ५ गुण में ३ का भंग १ले गुण में १–३ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १ से ४ गुण में २ का भंग	१ वेद ३ के भंगों में से कोई १ वेद जानना १ले गुण में १–३ के भंगों में से कोई १ वेद जानना २ के भंग में से कोई १ वेद जानना	३ ३–१–३–१–३–२–१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण में ३–१ के भंग पर्याप्तवत् जानना २रे गुण में ३ का भंग संज्ञी पं० तिर्यंच के ३नों वेद जानना १ का भंग एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक के जीवों में जन्म की लेने अपेक्षा ३ का भंग असंज्ञी पं० जीवों में जन्म लेने की अपेक्षा तीनों वेद जानना ४था गुण यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले २रे गुण स्थान में २ का भंग स्त्री, पुरुष ये २ वेद जानना ४थे गुण में १ का एक पुरुष वेद जानना	१ भंग १ले गुण में ३–१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना २रे गुण में ३–१–३ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १–२ गुण में २ का भंग	१ वेद ३–१ भंगों में से कोई १ वेद जानना ३–१–३ के भंगों में से कोई १ वेद जानना २ के भंग में से कोई १ वेद जानना
११ कषाय को नं० १ देखो	२५	२५ २५–२३–२५–२५–२१–१७–२४–२० के भंग (१) कर्म भूमि में	सारे भंग	१ भंग	२५ २५–२३–२५–२५–२३–२५–२४–१९ के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग	१ पुरुष वेद

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ले गुण में २५ का संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में सामान्यवत जानना	१ले गुण में ७–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो	७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग	१ले गुण में २५–२३–२५ के भंग पर्याप्तवत् जानना	१ले गुण में ७–८–९ के भंग को नं० १८ देखो	७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग
		२३ का भंग एकेन्द्रिय से चक्षुरिन्द्रिय तक के तिर्यंचों में ऊपर के २५ के भंग में से स्त्री-पुरुष ये २ वेद घटाकर २३ का भंग जानना	,,	,,	२रे गुण में २५ का भंग पर्याप्तवत् जानना	२रे गुण में ७–८–९ के भंग को नं० १८ देखो	,,
		२५ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव में ऊपर के २३ के भंग में स्त्री-पुरुष ये २ वेद जोड़कर २५ का भंग जानना	,,	,,	२३ का भंग १ले गुण के एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक जन्म लेने की अपेक्षा जानना	,,	,,
		२रे गुण में २५ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में सामान्यवत् जानना	,,	,,	२५ का भंग १ले गुण के असंज्ञी पंचेन्द्रिय में जन्म लेने की अपेक्षा जानना	,,	,,
		३रे ४थे गुण में २१ का भंग ऊपर के भंगों में से अनन्तानुबन्धी कषाय ४ घटाकर २१ का भंग जानना	३रे ४थे गुण में ६–७–८ के भंग को नं० १८ देखो	६–७–८ भंगों में से कोई १ भंग	४था गुण यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले २रे गुण के में २४ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ले २रे गुण में ७–८–९ के भंग को नं० १८ देखो	,,
		५वें गुण में १७ का भंग ऊपर के २१ के भंग में से प्रत्याख्यान कषाय ४ घटाकर १७ का भंग जानना	५वें गुण में ५–६–७ के भंग को नं० १८ देखो	५–६–७ के भंगों में से कोई १ भंग	४थे गुण में १९ का भंग पर्याप्त के २० के भंग में से स्त्री वेद घटाकर १९ का भंग	४थे गुण में ६–७–८ के भंग को नं० १८ देखो	६–७–८ के भंगों में से कोई १ भंग
		(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण में २४ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के २५ के भंग में से एक नपुंसक वेद घटाकर २४ का भंग जानना	१ले २रे गुण में ७–८–९ के भंग को नं० १८ देखो	७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग			
		३रे गुण में	३रे ४थे गुण में	६–७–८ के भंगों			

१	२	३	४	५	६	७	८
		२० का भंग में से एक नपुंसक वेद घटाकर २० का भंग जानना	को० नं० १८ देखो	में से कोई १ भंग	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर(१) २–२–३ के भंग	१ भंग	१ ज्ञान
१२ ज्ञान कुज्ञान ३, ज्ञान ३, ये ६ ज्ञान जानना	६	६ २–३–३–३–३ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में २ का भंग एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवों में कुमति, कुश्रुति ये २ कुज्ञान जानना १ले २रे ३रे गुण० में ३ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय में कुमति, कुश्रुति कुअवधि ये ३ कुज्ञान जानना ४थे ५वें गुण० में ३ का भंग मति, श्रुति अवधि ज्ञान इन तीनों का भंग जानना (२) भोग भूमि में १–२–३ गुण० में ३ का भंग तीन कुज्ञान जानना ४थे गुण० में ३ का भंग मति श्रुत-अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान जानना	१ भंग १ले गुण० में २ का भंग १–२–३ गुण० में ३ का भंग ४थे ५वें गुण० में ३ का भंग १–२–३ गुण० में ३ का भंग ४थे गुण० में ३ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई एक ज्ञान जानना	(१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० में २ का भंग कुमति कुश्रुति, ये २ कुज्ञान जानना ४था गुण यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में २ का भंग कुमति, कुश्रुत ये २ कुज्ञान जानना ४थे गुण० में ३ का भंग मतिश्रुति अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान जानना	१ले २रे गुण० में २ का भंग ४थे गुण० में ३ का भंग	२ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना
१३ संयम असंयम, संयमासंयम ये २ संयम जानना	२	२ १–१–१– के भंग (१) कर्म भूमि में १ से ४ गुण० में	१ भंग १ से ४ गुण० में	१ संयम १ असंयम	१ (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण में	१ भंग १ले २रे गुण० में	१ संयम १ असंयम

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ असंयम जानना ५वे गुण० में १ संयमासंयम जानना (२) भोग भूमि में (१ से ४ गुण० में) १ असंयम जानना	१ असंयम ५वे गुण० में १ संयमासंयम १ से ४ गुण० में १ असंयम	१ संयमासंयम १ असंयम	१ असंयम जानना (२) भोग भूमि में १-२-३-४ थे गुण० में १ असंयम जानना	१ असंयम १-२-३-४ गुण० में १ असंयम	१ असंयम
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १, अवधि दर्शन १, ये ३ दर्शन जानना	३	३ १-२-२-३-३-२-३ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १ का भंग एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जीवों में १ अचक्षु दर्शन ही जानना २ का भंग चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ दर्शन जानना २रे गुण० में २ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय के अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ का भंग जानना ३रे गुण० में ३ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय के अचक्षु द०, चक्षु द०, अवधि दर्शन ये ३ दर्शन जानना ४थे ५वे गुण० में ३ का भंग संज्ञी पं० के ३नों दर्शन जानना (२) भोग भूमि में	१ भंग १ले गुण० में १-२ के भंगों में से कोई एक भंग जानना २रे गुण० में २ का भंग ३रे गुण० में ३ का भंग ४थे ५वे गुण० में ३ का भंग	१ दर्शन १-२ के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना २ का भंग में से कोई १ दर्शन जानना ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	३ १-२-२-२-३ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० में १-२-२ के भंग पर्याप्तवत् जानना ४था गुण० वहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में २ का भंग अचक्षु दर्शन चक्षु दर्शन, ये २ का भंग जानना ४थे गुण० में ३ का भंग अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन, अवधि दर्शन ये ३ का भंग जानना	१ भंग १ले २रे गुण० में १-२-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १-२ गुण० में २ का भंग ४थे गुण० में ३ का भंग	कोई १ दर्शन १-२-२ के भंगों में से कोई दर्शन जानना २ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ले २रे गुण० में २ का भंग अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ दर्शन जानना	१-२ गुण० २ का भंग	१-२ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना			
		३रे या ४थे गुण० में ३ का भंग तीनों दर्शन जानना	३रे ४थे गुण० में ३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना			
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ ३-६-३-३ के भंग (१) कर्म भूमि में—	१ भंग	१ लेश्या	४ ३-१ के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग	१ लेश्या
		१ले गुण० में ३ का भंग—एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक तीन अशुभ लेश्या जानना	१ले गुण० में ३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	१ले २रे गुण० में ३ का भंग—एकेन्द्रिय से संज्ञी पंचेन्द्रिय तक जीवों में ३ अशुभ लेश्या जानना	१ले २रे गुण० में ३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना
		१ से ४ गुण० में ६ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में छहों ही लेश्या जानना	१ से ४ गुण० में ६ का भंग	६ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	४था गुण० यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में		
		५वें गुण० में ३ का भंग ३ शुभ लेश्या जानना	५वें गुण० में ३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	१-२-४ गुण० में १ का भंग १ कापोत लेश्या जानना	१-२-४ गुण० में १ का भंग	१ लेश्या
		(२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में ३ का भंग ३ शुभ लेश्या जानना	१ से ४ गुण० में ३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	सूचना—लब्ध्य पर्याप्तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच के मिथ्यात्व गुण स्थान और ३ अशुभ लेश्या जानना (देखो गो० क० गा० २६६-२६७ और ५४६)		
		सूचना—पर्याप्त अवस्था में सम्यग्दृष्टि जीवों को तीन शुभ ही होती है (देखो गो०	मिथ्यादृष्टि या लेश्या के मध्यम क० गा० ५४)६				

१	२	३	४	५	६	७	८

सूचना २—(अ) भवनत्रिक और सौधर्म ईशान स्वर्ग के देव ४थे गुण० में मरकर आने वाले जीव भोग भूमि में अपर्याप्त (निर्वृत्य पर्याप्तक) अवस्था में असंयत तिर्यंचों में जघन्य कापोत लेश्या ही रहती है। (ब) ३रे सनत्कुमार स्वर्ग से १२ स्वर्ग तक के मिथ्या दृष्टि देव १ले गुण० में मरकर तिर्यंच गति में जन्म लेने वाले जीवों के अपर्याप्त अवस्था में मध्यम पीत लेश्या ही होती है।

सूचना ३—नरक और देवगति में वेदक सम्यक्त्व उत्पन्न होने से पहले अगर तिर्यंच आयु बंध चुकी हो तो ४थे गुण० में मरकर आने वाले जीव भोग भूमि में जन्म ले सकते हैं (देखो गो० क० गा० ५६६)

सूचना ४—मानुषोत्तर पर्वत के आगे और स्वयं प्रभाचल के पहले जो असंख्यात द्वीप हैं वे भी सब तिर्यंच जघन्य भोग भूमियां कहलाते हैं।

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ २-१-२-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में २ का भंग भव्य अभव्य ये २ जानना २-३-४-५ गुण० में एक भव्य ही जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में २ का भंग भव्य, अभव्य ये २ जानना २-३-४ गुण० में एक भव्य ही जानना	१ भंग १ले गुण० में २ का भंग २-३-४-५ गुण० में १ भव्य जानना १ले गुण० में २ का भंग २-३-४ गुण० में १ भव्य जानना	१ अवस्था २ में से कोई १ अवस्था १ भव्य जानना २ में से कोई १ अवस्था १ भव्य जानना	२ २-१-२-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत २रे गुण० में १ भव्य जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत २रे ४थे गुण० में १ भव्य जानना	१ भंग १ले गुण० में २ का भंग २रे गुण० में १ भव्य जानना १ले गुण० में २ का भंग २रे ४थे गुण० में १ भव्य जानना	१ अवस्था २ में से कोई १ अवस्था १ भव्य जानना २ में से कोई १ अवस्था १ भव्य जानना
१७ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	६	६ १-१-१-२-१-१-१-२ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व	१ भंग १ मिथ्यात्व	१ सम्यक्त्व १ मिथ्यात्व	४ मिश्र १, उपशम स० १ ये २ घटाकर (४) १-१-१-१-२ के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग	१ सम्यक्त्व

कोष्टक नं० १७

१	२	३	४	५	६	७	८
		२रे गुण० में १ सासादन ३रे गुण० में १ मिश्र ४थे ५वें गुण० में २ का भंग उपशम और क्षयोपशम सम्यक्त्व ये २ जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व २रे गुण० में १ सासादन ३रे गुण० में १ मिश्र ४थे गुण० में ३ का भंग उपशम, क्षायिक क्षयोपशम सम्यक्त्व ये ३ का भंग जानना	१ सासादन १ मिश्र ४थे ५वें० गुण० में २ का भंग १ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिश्र ४थे गुण० में ३ का भंग	१ सासादन १ मिश्र २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व १ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिश्र ३ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	१ले गुण० में १ मिथ्यात्व २रे गुण० में १ सासादन ४था गुण० यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व २रे गुण० में १ सासादन ४थे गुण० में २ का भंग क्षायिक और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व ये २ का भंग जानना	१ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिथ्यात्व १ सासादन ४थे गुण० में २ का भंग	१ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिथ्यात्व १ सासादन २ में से कोई १ सम्यक्त्व जानना
सूचना—तिर्यंच गति में बंध हो चुकी हो बताया गया है		नया क्षायिक सम्यक्त्व नहीं तो क्षायिक सम्यक्त्व सहित (देखो गो० क० गा० ५५०)	हो सकता है। परन्तु मर करके भोगभूमि	मनुष्य गति में में तिर्यंच बन	जिस जीव के क्षायिक सम्यक्त्व सकता है। इस अपेक्षा से तिर्यंच	उत्पन्न होने के गति में भी क्षायिक	पहले तिर्यंचायु सम्यक्त्व
१८ संज्ञी संज्ञी असंज्ञी	२	२ (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १ का भंग एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के सब जीव असंज्ञी जानना १ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय के सब जीव संज्ञी ही रहते हैं २रे से पूर्व गुण० में	१ भंग १ले गुण० में १-१ के भंग २रे से पूर्व गुण० में	१ अवस्था १-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१-१-१-१-१-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १-१ के भंग पर्याप्तवत् २रे गुण० में १ का भंग पर्याप्तवत् १-१ के भंग पहले गुण० के एकेन्द्रिय से संज्ञी पंचेन्द्रिय तक के	१ भंग १ले गुण० में १-१ के भंगों में से कोई १ भंग २रे गुण० में १-१-१ भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ अवस्था १-१ के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना १-१-१ के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ का भंग संज्ञी यहां सब तिर्यंच संज्ञी ही जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १ का भंग यहां सब तिर्यंच संज्ञी ही जानना	१ का भंग १ से ४ गुण० में १ का भंग	१ संज्ञी १ संज्ञी	जीवों में जन्म लेने की अपेक्षा जानना ४था गुण० यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में १ का भंग यहां सब तिर्यंच संज्ञी ही जानना	१-२-४ गुण० में १ संज्ञी जानना	१ संज्ञी जानना
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	१	१ १-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ से ५ गुण० में १ आहारक जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १ आहारक जानना	१ १ से ५ गुण० में १ आहारक १ से ४ गुण० में १ आहारक	१ १ आहारक "	२ १-१-१-१ के भंग (१) कर्म भूमि १ले २रे गुण० में १ अनाहारक विग्रह गति में जानना १ आहारक मिश्रकाय योग में आहार पर्याप्ति के समय जानना (२) भोग भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में १ विग्रह गति में अनाहारक जानना १ मिश्रकाय योग में आहार पर्याप्ति के समय आहारक जानना	१ भंग १ले २रे गुण० में दोनों में से कोई १ अवस्था जानना १-२-४ थे गुण० में दोनों में से कोई १ अवस्था जानना	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था जानना दोनों में से कोई १ अवस्था जानना
२० उपयोग ज्ञानोपयोग दर्शनोपयोग ये ६ जानना	९ ६ ३	९ ३-४-५-६-६-५-६-६ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ३ का भंग एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय,	१ भंग १ले गुण० में ३-४ के भंगों में से कोई १ भंग	१ उपयोग ३-४ के भंगों में कोई १ उपयोग जानना	८ कुअवधि ज्ञान घटाकर ३-४-४-३-४-४-४-६ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में	१ भंग १ले गुण० में	१ उपयोग ३-४-४ के भंगों

१	२	३	४	५	६	७	८
		३ इन्द्रिय जीवों के कुज्ञान, श्रुतज्ञानोपयोग २, अचक्षु दर्शन १ ये ३ का भंग जानना ४ का भंग चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव के ऊपर ३ के भंग में चक्षु दर्शन १ जोड़कर ४ का भंग	जानना		३–४ के भंग पर्याप्तवत जानना ४ का भंग पर्याप्त के ५ के भंगों में से कुअवधि ज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना	३–४–४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	में से कोई १ उपयोग जानना
		१ले २रे गुण० में ५ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय के कुज्ञान ३, अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ ५ का भंग जानना	१ले २रे गुण० में ५ का भंग	५ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	२रे गुण० में ३–४ के भंग एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक जीवों में जन्म लेने की अपेक्षा पर्याप्त के ३–४ भंग जानना	२रे गुण० में ३–४–४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	३–४–४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना
		३रे गुण० में ६ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय के कुज्ञान ३, दर्शन २ ये ६ का भंग जानना	३रे गुण० में ६ का भंग	६ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	४था गुण० यहां नहीं होता		
		४थे ५वें गुण० में ६ का भंग मतिश्रुत अवधि ज्ञान ३, दर्शन ३ ये ६ का भंग जानना	४थे ५वें गुण० में ६ का भंग	६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में ४ का भंग कुज्ञान २, दर्शन २ ये ४ का भंग जानना	१ले २रे गुण० में ४ का भंग	४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना
		(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण में ५ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय के कुज्ञान ३, अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १ ये ५ का भंग जानना	१ले २रे गुण में ५ का भंग	५ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	४थे गुण में ६ का भंग मति-श्रुत अवधि ज्ञान ३ और दर्शन ३, ये ६ का भंग जानना	४थे गुण० में ६ का भंग	६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना
		३रे गुण० में ६ का भंग कुज्ञान ३, दर्शन ३ ये ६ का भंग जानना	३रे गुण० में ६ का भंग	६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
		४थे गुण० में ९ का भंग ज्ञान ३ दर्शन ३ ये ९ का भंग जानना	४थे गुण० में ९ का भंग	९ का भंग			
२१ ध्यान आर्तध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, (आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय,) ये ११ जानना	११	११ ८-९-१०-११ ८-९-१० के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग	१ ध्यान	९ अपाय विचय, विपाक विचय ये २ धर्म ध्यान घटाकर ९ जानना ८-८-९ के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग	१ ध्यान
		१ले २रे गुण० में ८ का भंग आर्तध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, ये ८ का भंग जानना	१ले २रे गुण० में ८ का भंग	८ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	१ले २रे गुण० में ८ का भंग-पर्याप्तवत् जानना ४था गुण० यहां नहीं होता	१ले २रे गुण० में ८ का भंग	८ के भंग में से कोई १ ध्यान
		३रे गुण० में ९ का भंग-ऊपर के आज्ञा विचय धर्मध्यान जोड़कर ९ का भंग जानना	३रे गुण० में ९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में ८ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ले २रे गुण० में ८ का भंग	८ के भंग में से कोई १ ध्यान
		४थे गुण० स्थान में १० का भंग ऊपर के ९ के भंग में अपाय विचय धर्म ध्यान जोड़कर १० का भंग जानना	४थे गुण० में १० का भंग	१० के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	४थे गुण० में ९ का भंग आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञा विचय धर्म ध्यान १ ये ९ का भंग जानना	४थे गुण० में ९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ ध्यान
		५वें गुण० में ११ का भंग ऊपर के १० के भंग में विपाक विचय धर्म ध्यान जोड़कर ११ का भंग जानना (२) भोग भूमि में	५वें गुण० में ११ का भंग	११ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ से ४ गुण० में ८–९–१० के भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	१ले गुण० में ८ का भंग ३रे गुण० में ९ का भंग ४थे गुण० में १० का भंग	८ के भंग में से कोई १ ध्यान ९ के भंग में से कोई १ ध्यान १० के भंग में से कोई १ ध्यान			
२२ आस्रव	५३ आ० मिश्रकाय योग १ आहारककाय योग १ वै० मिश्रकाय योग १ वै० काय योग १ ये ४ घटाकर (५३)	५१ औ० मिश्रकाय योग १, कार्माण काय योग १, ये २ घटाकर (५१) ३६–३८–३९–४०–४३–५१–४६–४२–३७–३८–४५–५१ के भंग	न २ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	४९ मनोयोग ४ वचन योग ४, औ० काय योग १ ये ९ घटाकर शेष (४९) जानना ३७–३८–३९–४०–४३–४४–३२–३३–३४–३५–३८–३९–४३–३८–३९ के भंग	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ३६ का भंग एकेन्द्रिय जीव में मिथ्यात्व ५, अविरत ७ (हिंसक एकेन्द्रिय जाति का स्पर्शनेन्द्रिय विषय १+हिंस्य ६ ये ७ अविरत), कषाय २३ (स्त्री- पुरुष वेद ये २ घटाकर २३) औ० काय योग ये ३६ का भंग जानना ३८ का भंग द्वीन्द्रिय जीव में ऊपर के ३६ के भंग में अविरत ७ की जगह ८ गिनकर (हिंसक का रसनेन्द्रिय विषय	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना "	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	(१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ३७ का भंग एकेन्द्रिय जीव में मिथ्यात्व ५, अविरत ७, कषाय २३, औ० मिश्रकाय योग १ कार्माण काय योग १ ये ३७ का भंग जानना ३८ का भंग द्वीन्द्रिय जीव में ऊपर के ३७ के भंग में अविरत ८ की जगह, गिनकर ३९ का भंग जानना ३९ का भंग त्रीन्द्रिय जीव में ऊपर के ३८ के	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना " "	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना " "

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ जोड़कर) और अनुभय वचन योग १ ये ८ जोड़कर ३८ का भंग जानना			भंग में अविरत ८ की जगह ९ गिनकर ३९ का भंग जानना		
		३९ का भंग त्रीन्द्रिय जीव में ऊपर के ३८ के भंग में अविरत ८ की जगह ९ गिनकर (हिंसक का घ्राणेन्द्रिय विषय १ जोड़कर) ३९ का भंग जानना	"	"	४० का भंग चतुरिन्द्रिय जीव में ऊपर के ३९ के भंग में अविरत ९ की जगह १० गिनकर ४० का भंग जानना	"	
		४० का भंग चतुरिन्द्रिय जीव में ऊपर के ३९ के भंग में अविरत ९ की जगह १० गिनकर (हिंसक का चक्षुरिन्द्रिय विषय १ जोड़कर) ४० का भंग जानना	"	"	४३ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव में ऊपर के ४० के भंग में अविरत १० की जगह ११ गिनकर और स्त्री पुरुष वेद २ ये ३ जोड़कर ४३ का भंग	"	"
		४३ का भंग असंज्ञी पंचे० जीव में ऊपर के ४० के भंग में अविरत १० के जगह ११ गिन कर (हिंसक का कर्णेन्द्रिय विषय १ जोड़कर) और स्त्री पुरुष वेद २ ये ३ जोड़कर ४३ का भंग जानना	"		४४ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव में ऊपर के ४३ के भंग में अविरत ११ की जगह १२ गिनकर ४४ का भंग जानना	"	"
		५१ का भंग संज्ञी पंचे० जीव मिथ्यात्व ५ अविरत १२ (हिंसक के विषय ६, हिंस्य ६) कषाय २५, वचनयोग ४, मनोयोग ४, और काययोग १ ये ५१ का भंग जानना	"	"			

१	२	३	४	५	६	७	८
		२रे गुण० में ४६ का भंग ऊपर के ५१ के भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ४६ का भंग जानना	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	४ १० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग	२रे गुण० में ३२-३३-३४-३५-३८ के भंग ऊपर के १ले मिथ्यात्व गुण० ३७-३८-३९-४०-४३ के हरेक भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३२-३३-३४-३५-३८ के भंग जानना	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		३रे ४थे गुण० में ४२ का भंग ऊपर के ४६ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर ४२ का भंग जानना	३रे ४थे गुण० में ९ से १६ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	९ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	३६ का भंग– पर्याप्त के ४३ के भंग में से वचन योग ४ मनोयोग ४, औ० काययोग १ ये ९ घटाकर शेष ३४ में औ० मिश्रकाय योग १ कार्माण काय योग १ ये २ जोड़कर ३६ का भंग जानना		
		५वे गुण० में ३७ का भंग ऊपर के ४२ के भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय ४ त्रसहिंसा १, ये ५ घटाकर ३७ का भंग	५वे गुण० में ८ से १४ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	८ से १४ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	४था गुण० यहां नहीं होता	„	„
		(२) भोग भूमि में १ले गुण० में ५० का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ५१ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ५० का भंग जानना	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	(२) भोग भूमि में १ले गुण० में ४३ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ४४ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ४३ का भंग	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	११ से १८ तक के भंग में से कोई १ भंग जानना
		२रे गुण० में ४५ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ४६ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ४५ का भंग जानना	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२रे गुण० में ३८ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ३९ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ३८ का भंग जानना	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		३रे ४थे गुण० में ४१ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ४२ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ४१ का भंग जानना	३रे ४थे गुण० में ९ से १६ तक के भंग को० नं० १८ देखो	९ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
					४थे गुण० में ३३ का भंग कर्म भूमि के पर्याप्त के ४२ के भंगों में से वचनयोग ४, मनोयोग ४, औ० काययोग १, स्त्री नपुंसक वेद २, ये ११ घटाकर शेष ३१ में कार्मारग काययोग १, औ० मिश्र काययोग १ ये २ जोड़कर ३३ का भंग जानना	४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग को० नं० १८ समान जानना	६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
२३ भाव	३६ उपशम—क्षायिक सम्यक्त्व २, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, क्षयोपशम स० १, लब्धि ५, संयमा-संयम १, तिर्यंच गति १, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्यादर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ३६ जानना	३६ २४–२५–२७–३१–२९–३० ३२–२९–२७–२५–२६–२६ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में २४ का भंग एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जीवों में कुमति-कुश्रुति ज्ञान २, अचक्षु दर्शन १, क्षयोपशम लब्धि ५, तिर्यंच गति १, कषाय ४, नपुंसक लिंग १, अशुभ लेश्या ३, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३ ये २४ का भंग जानना २५ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में ऊपर के २४ के भंग में चक्षु	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ले गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना "	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना २७ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १८ देखो "	३३ उपशम क्षायिकस० २, कुअवधि ज्ञान १, शुभ लेश्या ३, ये ६ घटाकर (३३) २४–२५–२७–२६–२२–२३–२५–२५–२४–२२–२५ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में २४ का भंग पर्याप्तवत् जानना २५ का भंग पर्याप्तवत् जानना २७ का भंग पर्याप्तवत् जानना २७ का भंग पर्याप्त के ३१ के भंग में से कुअवधि	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ले गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो " " "	१ भंग सारे भंगों में से कोई भंग जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग " " "

१	२	३	४	५	६	७	८
		दर्शन १ जोड़कर २५ का भंग जानना २७ का भंग असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में ऊपर के २५ के भंग में स्त्री पुरुष ये २ वेद जोड़कर २७ का भंग जानना	"	"	ज्ञान १, शुभ लेश्या ३, ये ४ घटाकर २७ का भंग २रे गुण० में २२-२३-२५-२५ के भंग एकेन्द्रिय से संज्ञी पंचे० तक के जीवों में जन्म लेने की अपेक्षा ऊपर के १ले गुण० के २४-२५-२७-२७ के हरेक भंग में से मिथ्यादर्शन १ अभव्य १, ये २ घटाकर २२-२३-२५-२५ के भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१६ के भंगों में से कोई १ जानना
		३१ का भंग संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में ऊपर के २५ के भंग में कुअवधिज्ञान १, स्त्री पुरुष वेद २, शुभ लेश्या ३, ये ६ जोड़कर ३१ का भंग जानना	"	"			
		२रे गुण० में २९ का भंग ऊपर के ३१ के भंग में से मिथ्या दर्शन १, अभव्य १, ये २ घटाकर २९ का भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१६ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १८ देखो	४था गुण० यहां नहीं होता (२) भोग भूमि में १ले गुण० में २४ का भंग पर्याप्त के २७ के भंग में से कुअवधिज्ञान १, शुभलेश्या ३ ये ४ घटाकर शेष २३ में कापोत लेश्या १ जोड़कर २४ का भंग जानना	१ले गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		३रे गुण० में ३० का भंग ऊपर के २९ के भंग में अवधि दर्शन १ जोड़कर ३० का भंग जानना	३रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१६ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १८ देखो			
		४थे गुण० में ३२ का भंग उपशम क्षयोपशम सम्यक्त्व २, ज्ञान ३ दर्शन ३, लब्धि ५, तिर्यंचगति १, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६ असंयम १ अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये ३२ का भंग जानना	४थे गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२रे गुण० में २२ का भंग पर्याप्त के २५ के भंग में से कुअवधि ज्ञान शुभलेश्या ३, ये ४ घटाकर २१ में कापोत लेश्या १ जोड़कर २२ का भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		५वे गुण० में २९ का भंग ऊपर के ३२ के भंग में से अशुभ लेश्या ३, असंयम १ ये ४ घटाकर और संयमासंयम १ जोड़कर २९ का भंग जानना	५वे गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	४थे गुण में २५ का भंग पर्याप्त के २९ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व १, स्त्री वेद १, शुभ लेश्या ३ ये ५ घटाकर शेष २४ में कापोत लेश्या १ जोड़कर २५ का भंग जानना	४थे गुण में १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(१) भोग भूमि में— १ले गुण० में २७ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ३१ के भंग में से नपुंसक वेद १, अशुभ लेश्या ३, ये ४ घटाकर २७ का भंग जानना	१ले गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	सूचना—जिन जीवों के सम्यक्त्व उत्पन्न होने से पहले तिर्यंचायु बंध चुकी हो तो वह सम्यग्दृष्टि जीव मरकर भोग भूमियां तिर्यंच बनता है। उसकी अपेक्षा यह भंग जानना		
		२रे गुण० में २५ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के २९ के भंग में से नपुंसक वेद १, अशुभ लेश्या ३ ये ४ घटाकर २५ का भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			
		३रे गुण० में २६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ३० के भंग में से नपुंसक वेद १, अशुभ लेश्या ३ ये ४ घटाकर २६ का भंग जानना	३रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			
		४थे गुण स्थान में २९ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ३२ के भंग में से नपुंसक वेद १, अशुभ लेश्या ३ ये ४ घटाकर शेष २८ में क्षायिक सम्यक्त्व जोड़कर २९ का भंग जानना	४थे गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

२४ अवगाहना—जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग, और उत्कृष्ट अवगाहना १००० (एक हजार) योजन तक जानना (विशेष व्याख्या गो० नं० २१ से ३४ को देखो)

२५ बंध प्रकृतियां—११७ बंध योग्य १२० प्रकृतियों में से आहारक द्विक २, तीर्थंकर प्र० १ ये ३ घटाकर ११७

१११ निर्वृत्य पर्याप्तक तिर्यंच में आयुबंध नहीं होता इसलिए ऊपर के ११७ में से आयु ४, नरक द्विक २ ये ६ घटाकर १११ जानना।

१०९ लब्ध्य पर्याप्तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच में नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियक द्विक २, ये ८ ऊपर के ११७ प्रकृतियों में से घटाकर १०९ जानना

२६ उदय प्रकृतियां—१०७ उदय योग्य १२२ प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, मनुष्यद्विक २, मनुष्यायु १, उच्च गोत्र १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १ ये १५ घटाकर १०७ प्रकृतियां जानना।

९९ पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में ऊपर के १०७ प्रकृतियों में से एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, ये ८ घटाकर ९९ जानना।

९७ पंचेन्द्रिय पर्याप्त पुरुष वेदियों में ऊपर के ९९ प्रकृतियों में से स्त्रीवेद १, अपर्याप्त ये २ घटाकर ९७ जानना

९६ स्त्रीवेदी तिर्यंचों में ऊपर के ९७ प्रकृतियों में से पुरुष वेद १ नपुंसक वेद १, ये २ घटाकर शेष ९५ में स्त्रीवेद १ जोड़कर ९६ जानना।

७१ लब्ध्य पर्याप्तक तिर्यंचों में—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, (महानिद्रा ३ घटाकर) वेदनीय २, मोहनीय २३, (स्त्री-पुरुष ये २ वेद घटाकर) तिर्यंचायु १, नीच गोत्र १, अंतराय ५, नामकर्म २८ (तिर्यंच गति, एकेन्द्रिय जाति १, निर्माण १, औदारिक द्विक २, तैजस—कार्माण शरीर २, हुंडक संस्थान १, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन १, स्पर्शादि ४, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, अगुरुलघु १, उपघात १, आतप १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, दुर्भग १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १, ये २८) ये सब ७१ जानना।

७९ भोगभूमि तिर्यंचों में—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (महानिद्रा ३ घटाकर) वेदनीय २, मोहनीय २७ (नपुंसक वेद को घटाकर) तिर्यंचायु १, उच्च गोत्र १, अंतराय ५, नामकर्म ३२ (तिर्यंच गति १, पंचेन्द्रिय जाति १, निर्माण १, औदारिकद्विक २, तैजस कार्माण शरीर २, वज्र वृषभ नाराच संहनन १, समचतुरस्रसंस्थान १, स्पर्शादि ४, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त विहायो गति १, प्रत्येक १, बादर १, त्रस १, पर्याप्ति १, सुभग १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १, उद्योत १, ये ३२) ये सब ७९ जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४७ तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर १४७ जानना।

१४५ लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचों में—लब्ध्यपर्याप्तक जीव मरकर देव और नारकी नहीं बनता इसलिए देवायु और नरकायु ये २ ऊपर के १४७ प्रकृतियों में से घटाकर १४५ जानना।

२८ संख्या—अनन्तानन्त तिर्यंच जानना।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना।

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल आदि तिर्यंच (इतरनिगोद) एक जीव की अपेक्षा क्षुद्र भव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक तिर्यंच ही बनता रहे।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा तिर्यंच गति को छोड़कर क्षुद्र भव से नवसौ (९००) सागर काल तक तिर्यंच नहीं बने। यदि मोक्ष नहीं जाय तो फिर तिर्यंचों में (९०० सागर के बाद) आना ही पड़े।

३३ जाति (योनि)—६२ लाख (पृथ्वी काय ७ लाख, जल काय ७ लाख, अग्नि काय ७ लाख, वायुकाय ७ लाख नित्यनिगोद ७ लाख, इतरनिगोद ७ लाख, वनस्पति १० लाख, द्विन्द्रिय २ लाख, त्रीन्द्रिय २ लाख, चतुरिन्द्रिय २ लाख, पंचेन्द्रिय ४ लाख, ये ६२ लाख) जानना।

३४ कुल—१३४॥ लाख कोटिकुल जानना।

पृथ्वीकाय—२२ लाख कोटि कुल, जलकाय ७ लाख कोटि कुल, अग्निकाय ३ लाख कोटि कुल, वायुकाय ७ लाख कोटि कुल, वनस्पतिकाय २८ लाख कोटिकुल, द्विन्द्रिय ७ लाख कोटि कुल, त्रीन्द्रिय ८ लाख कोटि कुल, चतुरिन्द्रिय ९ लाख कोटि कुल, पंचेन्द्रिय ४३॥ लाख कोटि कुल ये सब १३४॥ लाख कोटि कुल जानना।

चौंतीस स्थान दर्शन **कोष्टक नं० १८** **मनुष्य गति**

क्रमांक नं० नाम स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीव की अपेक्षा	पर्याप्त: एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त: एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त: १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त: एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान (१) मिथ्यात्व (२) सासादन (३) मिश्र (४) असंयम (अविरत) (५) देश संयम (संयमासंयम) (६) प्रमत्त (७) अप्रमत्त (८) अपूर्वकरण (९) अनिवृत्तिकरण (१०) सूक्ष्म सांपराय (११) उपशांत कषाय (मोह) (१२) क्षीण कषाय (मोह) (१३) सयोग केवली (१४) अयोग केवली	१४	१४ (१) कर्म भूमि में १ से १४ सारे गुण० (२) भोग भूमि में १ से ४ तक के गुण०	सारे गुण स्थान १ से १४ सारे गुण० जानना १ से ४ तक के स्थान जानना	१ गुण० १ से १४ गुण० कोई १ गुण० १ से ४ कोई १ गुण	६ (१) कर्म भूमि में १–२–४–६–१३ ये ५ गुण स्थान जानना (अ) मरण की अपेक्षा १ले २रे ४थे गुण स्थान जानना (ब) आहारक शरीर की अपेक्षा ६वां गुण० जानना (क) केवल समुद्घात की अपेक्षा १३वें गुण० जानना (२) भोग भूमि में १ले २रे ४थे ये ३ गुण० जानना	सारे गुण स्थान १–२–४–६–१३ ये ५ गुण स्थान जानना १–२–४ ये तीनों गुण० जानना ६वां गुण० १३वां गुण० १–२–४ ये तीनों गुण जानना	१ गुण० पांच गुण० में से कोई १ गुण० जानना तीनों में से कोई १ गुण० जानना ६वां गुण० जानना १३वां गुण० जानना तीनों गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीवसमास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त ये (२)	२	१ (१) कर्म भूमि १ से १४ गुण० में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना	१ समास १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास	१ समास १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१ (१) कर्म भूमि में १–२–४–६–१३वे गुण० में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था जानना	१ समास १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ समास १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना			(२) भोग भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था जानना	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ ६–३ के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग	१ भंग	३ मन–भाषा–श्वासोच्छ्वास ये ३ घटाकर शेष (३) उपयोग की अपेक्षा जानना लब्धि रूप ६ जानना ३-३ के भंग (१) कर्म भूमि में	३-३ के भंग	३-६ के भंग
		१ से १३ गुण० में हरेक में ६ का भंग सामान्यवत् जानना (२) भोग भूमि में	६ का भंग	६ का भंग	१–२–४–६–१३वें गुण० में ३ का भंग आहार, शरीर, इन्द्रिय पर्याप्ति ये ३ का भंग जानना (२) भोग भूमि में	३ का भंग	३ का भंग
		१ से ४ गुण० में हरेक में ६ का भंग सामान्यवत् जानना	६ का भंग	६ का भंग	१ले २रे ४थे गुण० में ३ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	३ का भंग	३ का भंग
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० १०–४–१–१० के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग	७ मनोबल, वचन बल, श्वासोच्छ्वास ये ३ घटाकर शेष (७) ७–२–७ के भंग (१) कर्म भूमि में	१ भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग
		१ से १२ गुण० में हरेक में १० का भंग सामान्यवत् जानना	१० का भंग	१० का भंग			
		१३वे गुण० में ४ का भंग केवली समुद्- घात की दण्ड अवस्थायें आयु,	४ का भंग	४ का भंग	१–२–४–६वें गुण० में ७ का भंग आयु बल १, कायबल १, इन्द्रिय प्राण ५	७ का भंग	७ का भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		कायबल, श्वासोच्छ्वास, वचन-बल ये ४ प्राण जानना (देखो गो० क० गा० ५८६-५८७)			ये ७ का भंग जानना		
		१४वें गुण० में १ आयुबल प्राण जानना	१ आयुबल प्रमाण	१ आयुबल प्रमाण	१३वें गुण० में २ का भंग केवली समुद्घात की कपाट, प्रतर, लोकपूर्ण इन अवस्थायें आयु और कायबल ये २ जानना	२ का भंग	२ का भंग
		(२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १० का भंग सामान्यवत् जानना	१० का भंग	१० का भंग	(२) भोग भूमि में १-२-४ गुण० में ७ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	७ का भंग	७ का भंग
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ ४-३-२-१-१-०-४ के भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग	४ ४-०-४ के भंग	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग
		(१) कर्म भूमि में १ से ६ गुण० में ४ का भंग आहार, भय, मैथुन, परिग्रह ये ४ का भंग जानना	४ का भंग	४ का भंग	(१) कर्म भूमि में १-२-४-६वें गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत्	४ का भंग	४ का भंग
		७वें ८वें गुण० में ३ का भंग आहार संज्ञा घटाकर शेष ३ का भंग जानना	३ का भंग	३ का भंग	१३वें गुण० में (०) का भंग केवल-समुद्घात की अवस्था में कोई संज्ञा नहीं होती इसलिये शून्य का भंग जानना	०	०
		९वें गुण० के सवेद भाग में २ का भंग मैथुन, परिग्रह ये २ भंग जानना	२ का भंग	२ का भंग	(२) भोग भूमि में १-२-४ गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत् जानना	४ का भंग	४ का भंग
		९वें गुण के अवेद भाग में १ परिग्रह संज्ञा जानना	१ का भंग	१ का भंग			
		१०वें गुण० में १ परिग्रह संज्ञा जानना	१ का भंग	१ का भंग			

१	२	३	४	५	६	७	८
		११-१२-१३-१४ वे गुण० में (०) का भंग—यहां कोई संज्ञा नहीं होती है (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में ४ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	० ४ का भंग	० ४ का भंग			
६ गति मनुष्य गति	१	१ १ से १४ गुण० में १ मनुष्य गति जानना	१	१	१ १-२-४-६-१३वे गुण० मे १ मनुष्य गति जानना	१	१
७ इन्द्रिय जाति संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति	१	१ १ से १४ गुण० में संज्ञी पं० जाति जानना	१	१	१ १-२-४-६-१३वे गुण० में १ संज्ञी पं० जाति जानना	१	१
८ काय त्रसकाय	१	१ १ से १४ गुण० में १ त्रसकाय जानना	१	१	१ १-२-४-६-१३वे गुण० में १ त्रसकाय जानना	१	१
९ योग वै० मिश्रकाय योग वै० काय योग, २ घटाकर (१३)	१३	१० औ० मिश्रकाय योग १, आहारक मिश्रकाय योग १ कार्माण काय योग १, ये ३ घटाकर (१०) ९-९-९-५-३-०-९ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ से ६ गुण० में ९ का भंग औदारिक काय योग १, वचन योग ४, मनो योग ४, ये ९ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ९ का भंग	१ योग सारे भंगों में से कोई १ योग जानना ९ के भंग में से कोई १ योग जानना	३ औ० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय योग १, कार्माण काय योग १, ये ३ योग जानना १-२-१-२-१-१-२ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १-२-४ गुण० में १ का भंग विग्रह गति मे १ कार्माण योग जानना २ का भंग आहार	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १-२ के भंग जानना	१ योग सारे भंगों में से कोई १ योग जानना १-२ के भंगों में से कोई १ योग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		६वे गुण० में आहारक काययोग की अपेक्षा ९ का भंग ऊपर के ९ के भंग में से औ० काययोग घटाकर आहारक काययोग जोड़कर ९ का भंग जानना	९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ योग जानना	पर्याप्ति के समय कार्माण काययोग १, औ० मिश्र काययोग १ ये २ का भंग जानना ६वे गुण० में १ का भंग आहारक शरीर की अपेक्षा आहारक मिश्रकाय योग १ जानना	१ आहारिक मिश्र काययोग जानना	१ आ० मिश्र काययोग जानना
		७ से १२ तक के गुण० में ९ का भंग ऊपर के ६ गुण० के सामान जानना	९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ योग जानना			
		१३वे गुण० में ५ का भंग द्रव्यमन की अपेक्षा औ० काययोग १, सत्य वचन योग १, अनुभय वचन योग १, सत्य मनोयोग १, अनुभय मनोयोग १, ये ५ का भंग जानना ३ का भंग भावमन की अपेक्षा ऊपर के ५ के भंग में से सत्य मनोयोग १, अनुभय मनोयोग १, ये २ घटाकर शेष ३ का भंग जानना	५-३ के भंग जानना	५-३ के भंग में से कोई १ योग जानना	१३वे गुण० में २ का भंग केवल समुद्घात की कपाट अवस्था में कार्माण काययोग १, औ० मिश्र काययोग १ ये २ का भंग जानना १ का भंग केवली समुद्घात की प्रतर और लोक पूर्ण अवस्था में एक कार्माण काययोग जानना	२-१ के भंग जानना	२-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना
		१४वे गुण० में (०) का भंग यहां कोई योग नहीं होता इसलिए शून्य जानना	०	०	(२) भोग भूमि में १-२-४ गुण० में १-२ के भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	१-२ के भंग जानना	१-२ के भंगों में से कोई १ योग जानना
		(२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में ९ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ योग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	१ ३—३—३—१—३—३—२—१—०—२ के भंग	१ भंग अपने अपने स्थान के	सारे वेद	३ ३—१—१—०—२—१ के भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ वेद
		(१) कर्म भूमि में १ से ४ गुण० में ३ का भंग नपुंसक, स्त्री, पुरुष वेद ये ३ का भंग जानना	३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ वेद जानना	(१) कर्म भूमि में १-२ गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत् तीनों वेद जानना	३ का भंग	३ के भंगों में से कोई १ वेद जानना
		५वें गुण० में ३ का भंग ऊपर के तीनों वेद जानना	३ का भंग	"	४थे गुण० में १ पुरुष वेद जानना	१ पुरुष वेद जानना	१ पुरुष वेद जानना
		६ठे गुण० में ३ का भंग औ० काय योग की अपेक्षा ऊपर के तीनों वेद जानना १ का भंग आहारक काययोग की अपेक्षा एक पुरुष वेद जानना	३-१ के भंग जानना	३-१ के भंगों में से कोई १ वेद जानना	६ठे गुण० में आहारक मिश्र काययोग की अपेक्षा १ पुरुष वेद जानना	"	१ पुरुष वेद जानना
					१३वें गुण० में (०) का भंग केवल समुद्घात की अवस्था में अगत वेद जानना	०	
		७वें ८वें गुण० में ३ का भंग ऊपर के तीनों वेद जानना	३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ वेद जानना	सूचना—लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य नपुंसक वेद वाले ही होता है और गुण० मिथ्यात्व ही रहता है (देखो गो० क० गा० २९३ और ३०१)।		
		९वें गुण० में सवेद भाग में ३ का भंग १ले भाग में तीनों वेद (नपुंसक-स्त्री-पुरुष) जानना २ का भंग २रे भाग में स्त्री, पुरुष ये २ वेद जानना १ का भंग ३रे भाग में १ पुरुष वेद जानना	३—२—१—० के भंग जानना	३-२-१-० के भंगों में से कोई १ वेद जानना	(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण में २ का भंग स्त्री पुरुष ये २ वेद जानना ४थे गुण० में १ पुरुष वेद जानना	२ का भंग १ पुरुष वेद जानना।	२ के भंगों में से कोई १ वेद जानना १ पुरुष वेद जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(०) का भंग जानना अवेद भाग में कोई वेद नहीं होते इसलिये शून्य का भंग जानना १०वें से १४वें गुण० में (०) का भंग यहां कोई वेद नहीं होते इसलिये यहां भी शून्य जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में २ का भंग स्त्री-पुरुष ये दो वेद जानना	० २ का भंग	० २ के भंग में से कोई १ वेद जानना	जानना आहारक काय योगी पुरुष वेदी ही होता है और गुण० स्थान मिथ्यात्व ही रहता है (देखो गो० क० गा० २९६ और ३०१)		
११ कषाय (को० नं० १ देखो)	२५	२५ २५-२१-१७-१३-११-१३ ७-६-५-४-३-२-१-१-०-२४-२० के भंग जानना (२) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० में २५ का भंग सामान्यवत् जानना ३रे ४थे गुण० में २१ का भंग ऊपर के २५ के भंग में से अनंतानुबंधी कषाय ४, घटाकर २१ भंग जानना ५वे गुण० में १७ का भंग ऊपर के २१ के भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय ४, घटाकर १७ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ६-७-८-९ के भंग जानना ६ का भंग उपशम श्रेणी चढ़ते समय ७वे गुण स्थान के अंत में जिस जीव ने अनंतानुबंधी कषाय का विसंयोजन किया हो और ११ वे गुणस्थान से उतर कर १ले	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ६-७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२५ २५-१९-११-७-२४-१९ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० में २५ का भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में १९ का भंग पर्याप्त के २१ के भंग में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर १९ का भंग जानना ६वे गुण० में ११ का भंग पर्याप्तवत् जानना १३वे गुण० में	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० में ७-८-९ के भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग पर्याप्तक जानना ६वे गुण० में ४-५-६ के भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना (१) कर्म भूमिमें ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना ६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना ४-५-६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		६वें गुण० में १३ का भंग ऊपर के १७ के भंग में से प्रत्याख्यान कषाय ४, घटाकर १७ का भंग जानना ११ का भंग आहारक काय योग की अपेक्षा ऊपर के १३ के भंग में से स्त्री वेद १, नपुंसक वेद १ ये २ वेद घटाकर ११ का भंग जानना सूचना—यहां ६वें गुण० में परिहार विशुद्धि संयमी के, मन:पर्ययज्ञानी के और आहारक काययोगी के एक पुरुष वेद ही होता है। ७वें ८वें गुण० में १३ का भंग संज्वलन कषाय ४ नवनोकषाय ९ ये १३ का भंग जानना ९वें गुण० में १ले भाग में ७ का भंग ऊपर के १३ का भंग में से हास्यादि ६ नोकषाय घटाकर ७ का भंग जानना २रे भाग में—६ का भंग संज्वलन कषाय ४ स्त्री पुरुष वेद २ ये ६ का भंग जानना ३रे भाग में—५ का भंग संज्वलन कषाय ४, पुरुष वेद १ ये ५ का भंग जानना	गुण० में आता हो तो वहां मिथ्यात्व की पर्याप्त अवस्था में अनन्तानुबंधी कषाय का नया बंध करता है। उस नये बंध के आबाधा काल तक अनन्तानुबन्धी के उदय का अभाव होने से अनन्तानुबन्धी कषाय का उदय नहीं हो सकता है। उस जीव की अपेक्षा से जो कषाय ६ होते हैं उसका खुलासा निम्न प्रकार जानना। क्रोध, मान, माया, लोभ इनमें से किसी एक कषाय की अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन रूप अवस्थायें ३, हास्य-रति या अरति-शोक इन दोनों जोड़े में से कोई एक जोड़ा २, तीन वेदों में से कोई एक वेद इस प्रकार ६ का भंग जानना। ७ का भंग ऊपर के ६ के भंग में आबाधा काल के बाद अनन्तानुबंधी कषाय की एक अवस्था जोड़कर ७ का भंग जानना। ८ का भंग—ऊपर के ७ के भंग में भय या जुगुप्सा इन दोनों में से कोई एक जोड़कर ८ का भंग जानना। ९ का भंग ऊपर के ७ के भंग में भय और जुगुप्सा ये दोनों जोड़कर ९ का भंग जानना।		(०) का भंग केवली समुद्घात की अवस्था में कोई कषाय नहीं होती इसलिये शून्य का भंग जानना (२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में २४ का भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में १९ का भंग पर्याप्त के २० के भंग में से स्त्री वेद १, घटाकर १९ का भंग जानना	१३वें गुण० में (०) का भंग कोई कषाय नहीं होती (२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में ७-८-९ के भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग पर्याप्तवत् जानना	७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना ६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		४थे भाग—४ का भंग में संज्वलन क्रोध मान-माया-लोभ ये ४ का भंग ५वें भाग में—३ का भंग मान-माया-लोभ ये ३ का भंग जानना ६ठे भाग में—२ का भंग माया-लोभ ये २ का भंग जानना ७वें भाग में—१ का भंग बादर लोभ-कषाय जानना					
		१०वें गुण० में १ सूक्ष्म लोभ कषाय जानना ११ से १४ तक के गुण० में (०) का भंग इन चारों गुण स्थान में कषाय नहीं है इसलिये यहां शून्य का भंग दिखाया गया है	२रे गुण० में ७-८-९- के भंग ऊपर के १ले गुण० में लिंग अनुसार जानना	७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			
		(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में २४ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के २५ के भंग में से एक नपुंसक वेद घटाकर २४ का भंग जानना ३रे ४थे गुण० में २० का भंग ऊपर के कर्म भूमि के २१ के भंग में से नपुंसक वेद १, घटाकर २० का भंग जानना	३रे ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग ऊपर के ७-८-९ के हरेक भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय की एक एक अवस्था घटाकर ६-७-८ के भंग जानना अर्थात् ७-८-९ के हरेक भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय की एक एक अवस्था १-१-१ घटाकर शेष ६-७-८ के भंग जानना	६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
			६-७-८				
		ऊपर के ६-७-८ के हरेक भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय की एक एक अवस्था घटाकर ५-६-७ के भंग जानना।	५वें गुण० में ५-६-७ के भंग	५-६-७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			
		ऊपर के ५-६-७ हरेक भंग में से प्रत्याख्यान कषाय की एक एक अवस्था घटाकर ४-५-६ का भंग जानना	६वें ७वें ८वें गुणस्थानों में ४-५-६ के भंग	४-५-६ के भंगों में से कोई १ जानना।			
				२ का भंग जानना			
		की अवस्था में से कोई १ संज्वलन कषाय और कोई १ वेद ये २ का भंग जानना	९वें गुण० में १ले २रे ३रे सवेद भाग में २ का भंग संज्वलन कषाय				
		१ का भंग कोई १ संज्वलन कषाय जानना	४-५-६-७वें अवेद भाग में	१ का भंग जानना			
			१०वें गुण० में १ का भंग संज्वलन सूक्ष्म लोभ कषाय जानना				
			११ से १४ गुण० में (०) का भंग	०			
		ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन वेदों में से कोई १ वेद जानना	(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में ७-८-९ के भंग	७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			
		ऊपर के कर्मभूमि के समान जानना परन्तु यहां स्त्रीपुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना	३रे ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग	६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
१२ ज्ञान कुज्ञान ३, ज्ञान ५ ये (८)	८	८ ३–३–४–३–४–१–३–३ के भंग (१) कर्म भूमि में १ से २रे ३रे गुण० में ३ का भंग कुमति, कुश्रुत, कुअवधि ज्ञान ये ३ कुज्ञान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ३ का भंग जानना	१ ज्ञान सारे भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	६ कुअवधि ज्ञान १, मन: पर्यय ज्ञान १, ये २ घटाकर (६) २-३-३-१-२-३ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना से कोई १ ज्ञान जानना
		४थे ५वें ६वें ७वें गुण० में ३ का भंग मति श्रुति अवधिज्ञान ये तीन ज्ञान जानना	३ का भंग जानना	३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	१ले २रे गुण० में २ का भंग कुमति, कुश्रुति ये २ कुज्ञान जानना	२ का भंग	२ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना
		६ठे गुण० में ४ का भंग औ० काययोग की अपेक्षा मति, श्रुति, अवधि मन: पर्यय ज्ञान ये ४ का भंग जानना ३ का भंग आहारक काय योग की अपेक्षा मति, श्रुति अवधिज्ञान ये ३ का भंग जानना सूचना—आहारक काय योग में तथा स्त्री और नपुंसक वेद के उदय में मन: पर्यय ज्ञान नहीं होता (देखो गो० क० गा० ३२४)	४-३ के भंग जानना	४-३ के भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना	४थे गुण० में ३ का भंग मति, श्रुति, अवधि ज्ञान ये ३ का भंग जानना ६वें गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत् जानना	३ का भंग ३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना
		७ से १२ तक के गुण० में ४ का भंग मति, श्रुति, अवधि, मन: पर्यय ज्ञान ये ४ का भंग जानना	४ का भंग जानना	४ के भंग में से कोई १ जानना	१३वें गुण० में १ केवल ज्ञान केवल समुद्घात की अवस्था में जानना	१ केवल ज्ञान जानना	१ केवल ज्ञान जानना
		१३वें १४वें गुण० में १ केवल ज्ञान जानना	१ केवल ज्ञान जानना	१ केवल ज्ञान जानना	(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण में २ का भंग कुमति, कुश्रुति ये २ कुज्ञान जानना	२ का भंग	२ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना
		(२) भोग भूमि में			४थे गुण० में ३ का भंग मति, श्रुति, अवधि ज्ञान ये ३ का भंग जानना	३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ले २रे ३रे गुण० में ३ का भंग तीन कुज्ञान जानना ४थे गुण० में ३ का भंग मति, श्रुत अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान जानना	३ का भंग ३ भंग	३के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना			
१३ संयम असंयम १, संयमा- संयम १, सामायिक संयम १, छेदोपस्था- पना १, परिहार- विशुद्धि १, सूक्ष्म सांपराय १, यथाख्यात १, ये ७ जानना	७	७ १—१—[illegible]—३—२—१—१—१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ से ४ गुण० में १ का भंग १ असंयम जानना ५वें गुण० में १ का भंग १ संयमासंयम जानना ६वें गुण० के ३ का भंग औ० काययोग की अपेक्षा सामायिक, छेदोपस्था- पना, परिहारविशुद्धि ये ३ का भंग जानना २ का भंग आहारक काययोग की अपेक्षा सामायिक औरछेदोप- स्थापना, ये २ का भंग जानना ७वें गुण० में ३ का भंग सामायिक, छेदोप- स्थापन, परिहार विशुद्धि ये ३ का भंग जानना ८वें ९वें गुण० में २ का भंग सामायिक, छेदोप- स्थापना ये २ का भंग जानना १०वे गुण० में १ सूक्ष्म सांपराय संयम जानना	सारे भंग १ असंयम जानना १ संयमासंयम जानना २—३ के भंग जानना ३ का भंग २ का भंग १ सूक्ष्म सांपराय संयम जानना	१ संयम १ असंयम जानना १ संयमासंयम जानना ३-२ के भंगों में से कोई १ संयम जानना ३के भंग मेंसे कोई १ संयम जानना २के भंग मेंसे कोई १ संयम जानना १ सूक्ष्म सांपराय संयम	४ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथा- ख्यात ये (४) १—२—१—१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले, २रे ४थे गुण० १ का भंग एक असंयम जानना ६वें गुण० में २ का भंग आ० मिश्र- काययोग की अपेक्षा सामायिक, छेदोपस्थापना ये २ का भंग जानना सूचना—आहारक मिश्रकाय योग में परिहार विशुद्धि संयम नहीं होता है १३वें गुण० में १ का भंग एक यथाख्यात संयम जानना (२) भोग भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में १ असंयम जानना	सारे भंग १ असंयम जानना २ का भंग १ यथाख्यात् संयम जानना १ असंयम	१ संयम १ असंयम जानना २ के भंग में से कोई १ संयम जानना १ यथाख्यात संयम १ असंयम

१	२	३	४	५	६	७	८
		११ से १४वें गुण० में १ यथाख्यात संयम जानना	१ यथाख्यात संयम जानना	१ यथाख्यात संयम			
		(२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १ असंयम जानना	१ असंयम जानना	१ असंयम			
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १, अवधि दर्शन १, केवल दर्शन ४, ये ४ दर्शन जानना	४	४ २–३–३–१–२–३ के भंग जानना	सारे भंग	१ दर्शन	४ २–३–३–१–२–३ के भंग जानना	सारे भंग	१ दर्शन
		(१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० में २ का भंग अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १, ये २ का भंग जानना	२ का भंग	२ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	(१) कर्म भूमि में १-२ गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् जानना	२ का भंग	२ के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना
		३रे ४थे ५वें गुण० में ३ का भंग अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १, अवधि दर्शन १, ये ३ का भंग जानना	३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	४थे गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत् जानना	३ का भंग	३ के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना
		६वें गुण० में ३ का भंग औ० काययोग और आहार काययोग की अपेक्षा ऊपर के तीन ही दर्शन जानना	३ का भंग	"	६वें गुण० में ३ का भंग आहारक मिश्रकाय योग की अपेक्षा तीनों दर्शन जानना	"	"
		७ से १२वें गुण० में ३ का भंग ऊपर के तीनों ही दर्शन जानना	३ का भंग	"	१३वें गुण० में १ का भंग केवल समुद्घात की अवस्था में एक केवल दर्शन जानना	१ केवली दर्शन जानना	१ केवल दर्शन जानना
		१३वें १४वें गुण० में १ केवल दर्शन जानना	१ केवल दर्शन जानना	१ केवल दर्शन जानना	(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् जानना	२ का भंग	२ के भंग में से कोई १ दर्शन
		(२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में २ का भंग अचक्षु दर्शन १,	२ का भंग	२ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	४थे गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत्	३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		चक्षु दर्शन १, ये २ का भंग जानना ३रे ४थे गुण० में ३ का भंग अचक्षु दर्शन१, चक्षु दर्शन १, अवधि दर्शन १ ये ३ का भंग जानना	३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	जानना		
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ ६-३-१-० ३ के भंग (१) कर्म भूमि में १ से ४ गुण० में ६ का भंग सामान्यवत् जानना ५वे ६वे ७वे गुण० में ३ का भंग तीन शुभ लेश्या जानना ८ से १३ गुण० में १ शुक्ल लेश्या जानना १४वे गुण० में (०) का भंग यहां लेश्या नहीं है (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में ३ का भंग तीन शुभ लेश्या जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के ६ का भंग ३ का भंग १ शुक्ल लेश्या ० ३ का भंग	१ लेश्या ६ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना १ शुक्ल लेश्या ० ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	६ ६-३-१-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में ६ का भंग पर्याप्तवत् जानना ६वे गुण० में ३ का भंग आहारक मिश्रकाययोग की अपेक्षा ३ शुभलेश्या जानना १३वे गुण० में १ का भंग केवल समुद्घात की अवस्था में एक शुक्ल लेश्या जानना (२) भोग भूमि में १-२-४थे गुण० में १ का भंग एक कापोत लेश्या जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान में ६ का भंग ३ का भंग १ शुक्ल लेश्या जानना १ का भंग	१ लेश्या ६ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना तीन में से में कोई १ लेश्या जानना १ शुक्ल लेश्या जानना १ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना
					सूचना :—४थे गुण० गति में जन्म लेने वाले शुभलेश्या कर्म भूमि की अपेक्षा जानना।	वर्ती कल्पवासी देव के अपर्याप्त अवस्था	मरके मनुष्य में भी तीन

१	२	३	४	५	६	७	८
					सूचना २ लब्ध्य पर्याप्तक मम.स संज्ञी पंचेन्द्रिय जानना (देखो गो०	मनुष्य के गुण स्थान अपर्याप्त और तीन क० गाथा ३०१-३२५-३२६-५४६)	मिथ्यात्व, जीव अशुभ लेश्या ही
१६	भव्यत्व २ भव्य, अभव्य	२ २-१-२-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में २ का भंग भव्य, अभव्य ये २ जानना २रे से १४ गुण० के १ भव्य ही जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में २ का भंग भव्य, अभव्य ये २ जानना २रे ३रे ४थे गुण० में १ भव्य ही जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के २ का भंग १ भव्य जानना २ का भंग १ भव्य जानना	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था जानना १ भव्य दो में से कोई १ अवस्था १ भव्य	२ २-१-२-१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में २ का भंग भव्य, अभव्य ये २ जानना २रे ४थे ६ठे १३वें गुण में १ भव्य ही जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में २ का भंग भव्य, अभव्य ये २ जानना २रे ४थे गुण० में १ भव्य ही जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के २ का भंग १ भव्य ही जानना २ का भंग १ भव्य हीजानना	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था जानना १ भव्य ही जानना दो में से कोई १ अवस्था १ भव्य ही जानना
१७	सम्यक्त्व ६ मिथ्यात्व, सासादन मिश्र, उपशम, क्षायिक, क्षायोपशमिक ये (६)	६ १-१-१-३-३-२-३-२ १-१-१-१-३ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना ३रे गुण० में १ मिश्र जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ मिथ्यात्व २ सासादन १ मिश्र	सारे भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व १ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिश्र	४ मिथ्यात्व, सासादन क्षायिक क्षायोपशम ये ४ सम्यक्त्व जानना १-१-२-२-१-१-१-२ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ मिथ्यात्व १ सासादन	१ सम्यक्त्व सारे भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना १ मिथ्यात्व १ सासादन

१	२	३	४	५	६	७	८
		४थे ५वे गुण० में ३ का भंग उपशम, क्षायिक, क्षायोपशमिक ये ३ जानना	३ का भंग	तीन में से कोई १ सम्यक्त्व	४थे गुण० में २ का भंग क्षायिक, क्षयोपशम ये २ का भंग जानना	२ का भंग	दो में से कोई १ सम्यक्त्व जानना
		६वे गुण० में ३ का भंग औदारिककाय योग की अपेक्षा उपशम, क्षायिक क्षयोपशम सम्यक्त्व ये ३ का भंग जानना २ का भंग आहारक काय योग की अपेक्षा क्षायिक, क्षयोपशम (वेदक) सम्यक्त्व ये २ का भंग जानना	३-२ के भंग	३-२ के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व	६वे गुण० में २ का भंग आहारक मिश्रकाय योग की अपेक्षा क्षायिक, क्षयोपशम ये २ का भंग जानना	२ का भंग	,,
					१३वे गुण० में १ का भंग केवल समुद्घात की अवस्था में एक क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१ क्षायिक सम्य०	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना
		७वे गुण० में ३ का भंग उपशम, क्षायिक क्षयोपशम ये ३ का भंग जानना	३ का भंग	तीनों में से कोई १ सम्यक्त्व			
		८ से ११वे गुण० में २ का भंग उपशम और क्षायिक सम्यक्त्व ये २ जानना	२ का भंग	दो में से कोई १ सम्यक्त्व	(२) भोग भूमि में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१ मिथ्यात्व	१ मिथ्यात्व
		१२वे १३वे १४वे गुण० में १ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१ क्षायिक स० जानना	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	२रे गुण० में १ सासादन जानना	१ सासादन	१ सासादन
		(२) भोग भूमि में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१ मिथ्यात्व	१ मिथ्यात्व	४थे गुण० में २ का भंग क्षायिक, क्षयोपशम ये २ जानना सूचना—यहां प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण नहीं होता है। द्वितीयोपशम स० में ही मरण होता है ऐसा जानना (देखो गो० क० गा० ५५०-५६०-५६१)	२ का भंग	दो में से कोई १ सम्यक्त्व
		२रे गुण० में १ सासादन जानना	१ सासादन	१ सासादन			
		३रे गुण० में १ मिश्र जानना	१ मिश्र	१ मिश्र			
		४थे गुण० में ३ का भंग उपशम, क्षायिक,	३ का भंग	३ का भंग			

१	२	३	४	५	६	७	८
		क्षयोपशम से ३ का भंग जानना					
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ (१) कर्म भूमि में १ से १२वे गुण० में १ संज्ञी जानना १३वे १४वे गुण० में (०) का भंग अनुभय अर्थात् न संज्ञी न असंज्ञी अवस्था जानना (२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १ संज्ञी जानना	१ १ संज्ञी जानना ० १ संज्ञी जानना	१ १ संज्ञी जानना ० १ संज्ञी जानना	१ (१) कर्म भूमि में १ले २रे ४थे ६वे गुण० में १ संज्ञी जानना सूचना — लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य के मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, मनुष्यायु का ही उदय होता है, असंज्ञी जीव के मनुष्य गति का उदय नहीं होता है, (देखो गो० क० गा० ३०१, ३३०, ३३१) इसलिये लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य को संज्ञी पंचेन्द्रिय ही समझना चाहिए परन्तु इन जीवों का अपर्याप्त अवस्था में ही मरण होता है इसलिये मनोबल प्राण प्रगट होने नहीं पाता १३वे गुण० में (०) का भंग पर्याप्तवत् जानना (२) भोग भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में १ संज्ञी जानना	१ १ संज्ञी जानना १ संज्ञी जानना	१ १ संज्ञी १ संज्ञी जानना
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	२ १-१-१-१ के भंग	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ अवस्था	२ १-१-१-१-१-१-१ के	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ अवस्था

१	२	३	४	५	६	७	८
से २ जानना		(१) कर्म भूमि में १ से १२ गुण० में १ आहारक जानना	१ आहारक	१ आहारक	भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में १ अनाहारक अवस्था विग्रह गति में जानना १ आहारक अवस्था आहार पर्याप्ति के समय जानना	१-१ के भंग जानना	दोनों में से कोई १ अवस्था जानना
		१३वें गुण० में १ का भंग दंड समुद्घात अवस्था में एक आहारक अवस्था जानना	१ आहारक	१ आहारक			
		१४वें गुण० में १ अनाहारक अवस्था जानना	१ अनाहारक अवस्था जानना	१ अनाहारक अवस्था जानना	६वें गुण० में १ आहारक अवस्था आहारक मिश्रकाय योग में आहार पर्याप्ति के समय	१ आहारक अवस्था	१ आहारक अवस्था
		(२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में १ आहारक अवस्था जानना	१ आहारक अवस्था	१ आहारक अवस्था			
					१३वें गुण० में १ आहारक अवस्था केवली समुद्घात की कपाट अवस्था में जानना	१ आहारक अवस्था	१ आहारक अवस्था
					१ अनाहारक अवस्था केवली समुद्घात की प्रतर लोकपूर्ण अवस्था में जानना	१ अनाहारक अवस्था	१ अनाहारक अवस्था
					(२) भोग भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में १ अनाहारक अवस्था विग्रह गति में जानना १ आहारक अवस्था आहार पर्याप्ति के समय जानना	१-१ के भंग जानना	दोनों में से कोई १ अवस्था जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग	१२ ज्ञानोपयोग ८ दर्शनोपयोग ४ ये १२ जानना	१२ [illegible] के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुणस्थान में ५ का भंग कुज्ञान ३, दर्शन २ ये ५ का भंग जानना ३रे गुणस्थान में ६ का भंग कुज्ञान ३ दर्शन ३ ये ६ का भंग जानना ४थे ५वे ६ठे ७वे गुणस्थान में ६ का भंग मति-श्रुति अवधि ज्ञान ३ दर्शन ३ ये ६ का भंग जानना ६ठे गुणस्थान में ७ का भंग आहारिक काय योग [illegible] मनःपर्यय ज्ञान १ दर्शन ३ [illegible] ज्ञान ? ये ७ का भंग जानना ६ का भंग आहारकमिश्रकाय योग की अपेक्षा ज्ञान ३ दर्शन ३ ये ६ का भंग जानना ८ से १२वे गुणस्थान में ७ का भंग ज्ञान, दर्शन ३ मनःपर्यय ज्ञान १, ये ७ का भंग जानना १३वे १४वे गुणस्थान में २ का भंग केवल ज्ञानोपयोग १, केवल दर्शनोपयोग १	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ५ का भंग ६ का भंग ६ का भंग ५-६ के भंग जानना ७ का भंग २ का भंग युगपत् जानना	१ उपयोग सारे भंगों में से कोई १ उपयोग ५ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में से कोई १ उपयोग ६ के भंग में से कोई १ उपयोग ५-६ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना ७ के भंग में से कोई १ उपयोग २ का भंग युगपत् जानना	१० कुअवधि ज्ञान १, मनःपर्यय ज्ञान १ ये २ घटाकर (१०) [illegible] के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले २रे गुणस्थान में ४ का भंग कुमति १, कुश्रुति १, दर्शन २ ये ४ का भंग जानना ४थे गुणस्थान में ६ का भंग [illegible] जानना ६ठे गुणस्थान में ६ का भंग आहारक मिश्रकाय योग की अपेक्षा जानना १३वे गुणस्थान में २ का भंग केवल समुद्घात की अवस्था में केवल ज्ञान, केवल दर्शन ये २ का भंग युगपत् जानना (२) भोग भूमि में १ले २रे गुणस्थान में ४ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना ४थे गुणस्थान में	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ४ का भंग ६ का भंग ६ का भंग २ का भंग युगपत् जानना ४ का भंग ६ का भंग	१ उपयोग सारे भंगों में से कोई १ उपयोग जानना ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना २ का भंग युगपत् जानना ४ के भंग में से कोई १ उपयोग ६ के भंग में से कोई १

१	२	३	४	५	६	७	८
		ये ६ का भंग पृथक् पृथक् जानना (२) भोग भूमि में			६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना		उपयोग जानना
		१ले २रे गुण० में ५ का भंग	५ का भंग	५ के भंग में से कोई १ उपयोग			
		३रे गुण० में ६ का भंग	६ का भंग	६ के भंग में से कोई १ उपयोग			
		४थे गुण० में ६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	६ का भंग	६ के भंग में से कोई १ उपयोग			
२१ ध्यान (१) आर्तध्यान ४, (इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोग, वेदना जनित, निदानज) (२) रौद्र ध्यान ४, (हिंसानंद, मृषानंद चौर्यानंद, परिग्रहानंद) (३) धर्म ध्यान ४, (आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय, संस्थानविचय) (४) शुक्ल ध्यान ४, (पृथक्त्व वितर्क विचार एकत्व वितर्क अविचार, सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति, व्युपरतक्रिया निवर्तिनि) ये १६ जानना	१६	१६ ८-९-१०-११-७-४-१-१-१ १-८-९-१० के भंग (१) कर्म भूमि में	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान सारे भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	१२ आर्तध्यान ४, रौद्र- ध्यान ४, धर्मध्यान ३ (आज्ञावि० अपायवि० विपाक विचय ये ३) शुक्ल ध्यान १ [सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति] ये १२ ध्यान जानना ८-९-७-१-८-९ के भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ ध्यान जानना
		१ले २रे गुण० में ८ का भंग आर्तध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, ये ८ का भंग जानना	८ का भंग	८ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	(१) कर्म भूमि में १ले २रे गुण० में ८ का भंग पर्याप्तवत् जानना	८ का भंग	८ के भंगों में से कोई १ ध्यान जानना
		३रे गुण० में ९ का भंग ऊपर के ८ के भंग में आज्ञा वि० धर्म ध्यान जोड़कर ९ का भंग जानना	९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना			
		४थे गुण० में १० का भंग ऊपर के ९ के भंग में अपायविचय धर्म ध्यान १ जोड़कर १० का भंग जानना	१० का भंग	१० के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	४थे गुण० में ९ का भंग ऊपर के ८ के भंग में आज्ञा वि० धर्म ध्यान जोड़कर ९ का भंग जानना	९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		५वे गुण० मे ११ का भंग ऊपर के १० के भंग मे विपाक विचय धर्म ध्यान जोड़कर ११ का भंग जानना	११ का भंग	११ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	६वे गुण० में ७ का भंग आहारक मिश्र काय योग की अपेक्षा पर्याप्तवत् जानना	७ का भंग	७ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना
		६वे गुण० में ७ का भंग औदारिक और आहारक काययोग की अपेक्षा ऊपर के ११ के भंग में से इष्ट वियोग आर्तध्यान १ रौद्रध्यान ४ ये ५ घटाकर शेष ६ में संस्थानविचय धर्मध्यान १ जोड़कर ७ का भंग	७ का भंग	७ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	१३वे गुण० में १ सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति शुक्ल ध्यान गुण स्थान के अन्त में जानना	१ सूक्ष्म क्रिया प्र० शुक्ल ध्यान	१ सूक्ष्म क्रिया प्र० शुक्ल ध्यान
					(२) भोग भूमि मे १ले २रे गुण० में ८ का भंग आर्त-ध्यान ४, रौद्रध्यान ४, ये ८ का भंग जानना	८ का भंग	८ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना
		७वे गुण० में ४ का भंग ऊपर के ७ के भंग में से अनिष्ट संयोग १, वेदनाजनित १, निदानज १ ये ३ आर्तध्यान घटाकर ४ का भंग जानना	४ का भंग	४ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	४थे गुण० में ९ का भंग ऊपर के ८ के भंग में आज्ञा विचय धर्म ध्यान १ जोड़कर ९ का भंग जानना	९ का भंग	९ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना
		८ से ११वे गुण० में १ पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान जानना	१ पृथक्त्व वितर्क वि० शुक्ल ध्यान	१ पृथक्त्व वि० विचार शुक्ल ध्यान			
		१२वे गुण० में १ एकत्व वितर्क अविचार शुक्ल ध्यान जानना	१ एकत्व वितर्क अवि० शुक्ल ध्यान	१ एकत्व वि० अविचार शुक्ल ध्यान			
		१३वे गुण० में १ सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुक्ल ध्यान जानना	१ सूक्ष्म क्रिया प्र० शुक्ल ध्यान	१ सूक्ष्म क्रिया प्र० शु० ध्यान			
		१४वे गुण० में					

१	२	३	४	५	६	७	८
		व्युपरत क्रिया निवर्तिनी शुक्ल ध्यान जानना (२) भोग भूमि में १ले २रे गुण० में ८ का भंग ३रे गुण० में ९ का भंग ४थे गुण० में १० का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना	१ व्युपरत क्रिया निवर्तिनी शुक्ल ध्यान ८ का भंग ९ का भंग १० का भंग	व्यु० क्रिया नि० शुक्ल ध्यान ८ में से कोई १ ध्यान ९ में से कोई १ ध्यान १० में से कोई १ ध्यान जानना			
२२ आस्रव वै० मिश्रकाययोग १, वै० काययोग १, ये २ घटाकर (५३)	५५	५० औ० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ३ घटाकर (५०) ५१-४६-४२-३७-२२-२०-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१०-९-५-३-०-५० ४५-४१ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ५१ का भंग मिथ्यात्व ५, अविरत १२, कषाय २५, मनोयोग ४, वचन योग ४, औ० काय योग १, ये ५१ का भंग जानना २रे गुण० में ४६ का भंग ऊपर के ५१ के भंग में से मिथ्यात्व ५	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ११ से १८ के भंगों में से (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १० से १८ तक के भंग जानना भंगों का विवरण निम्न प्रकार जानना १० का भंग संशय मिथ्यात्व	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना ११ से १८ के भंगों में से १० से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना विनय मिथ्यात्व	४६ मनोयोग ४, वचन योग ४, औ० काय योग १ ये ९ घटाकर (४६) ४४-३९-३३-१२-२१-४३-३८-३३ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ४४ का भंग सामान्य के ५५ के भंग में से मनोयोग ४ वचन योग ४, औ० काययोग १, आ० मिश्रकाय योग १, आ० काययोग १, ये ११ घटाकर ४४ का भंग जानना २रे गुण० में ३९ का भंग ऊपर के १ले गुण० के ४४ के	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ११ से १८ के भंगों में से (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग यथासंभव जानना सूचना १--यहां १० का भंग इसलिए नहीं होता कि मिथ्यात्व को करने वाले जीव को ११वें गुण स्थान से उतर कर १ले गुण स्थान में आकर नई अनन्तानुबंधी कषाय का नया बंध होकर उस नया बंध के आवाधा काल तक	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना ११ से १८ तक के भंगों में से ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		घटाकर ४६ का भंग जानना ३रे ४थे गुण० में ४२ का भंग ऊपर के ४६ के भंगों में से अनन्तानुबंधी कषाय ४, घटाकर ४२ का भंग जानना ५वें गुण० में ३७ का भंग ऊपर के ४२ के भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय ४, त्रसहिंसा १ ये ५ घटाकर ३७ का भंग जानना ६वें गुण० में २२ का भंग औदारिक काययोग की अपेक्षा ऊपर के ३७ के भंग में से प्रत्याख्यान कषाय ४, अविरत ११ (स्थावर जीव हिंसा ५ और हिंसा का इन्द्रिय विषय ६ ये ११) ये १५ घटाकर २२ का भंग जानना	विपरीत मिथ्यात्व, एकांत मि०, अज्ञान मिथ्यात्व, इनमें से कोई १ मिथ्यात्व, अविरत २, (हिंसक ६, एकेन्द्रियादि जीवों में से कोई १ जीव का हिंसक का कोई १ इन्द्रिय विषय १ और हिंस्य ६, पृथ्वी आदि जीवों में से कोई १ जीव हिंस्य १, ये २ अविरत) ऊपर के कषाय मार्गणा स्थान १० के भंग की कषाय ६ और ऊपर के योगमार्गणा के १३ योगों में से कोई १ योग इस प्रकार १ + २ + ६ + १ = १० का भंग जानना		भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३९ का भंग ४थे गुण० में ३३ का भंग ऊपर के ३९ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४ स्त्री नपुंसक वेद २ ये ६ घटाकर ३३ का भंग जानना ६वें गुण० में १२ का भंग आहारक मिश्रकाय योग की अपेक्षा संज्वलन कषाय ४, हास्यादि नो कषाय ६, पुरुष वेद १, आहारक मिश्रकाय योग १ ये १२ का भंग जानना	अनन्तानुबंधी का उदय नहीं होता, तब तक मरण नहीं होता। मिथ्या दृष्टि का कषाय के ७ के भंग में ही मरण होता है। इसलिये यहां १० का भंग छोड़ दिया है। सूचना २— यहां ११ के भंग में जो एक योग गिना है वह ऊपर के योग स्थान की अपर्याप्त अवस्था के ३ योग में से कोई १ योग जानना	
		२० का भंग आहारककाय योग की अपेक्षा ऊपर के २२ के भंग में से स्त्री नपुंसक वेद ये २ घटाकर २० का भंग ७वें ८वें गुण० में २२ का भंग ऊपर के ६वें गुण० के २२ के भंग के समान जानना ९वें गुण० में १ले भाग में १६ का भंग	११ का भंग ऊपर के १० के भंग में से कषायका ६ का भंग घटाकर और कषाय का ७ का भंग जोड़कर ११ का भंग जानना १२ का भंग ऊपर के ११ के भंग में से ७ का भंग घटाकर कषाय का ८ का भंग जोड़कर १२ का भंग जानना			२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग पर्याप्तवत् जानना	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		ऊपर के २२ के भंग में से हास्यादि ६ नोकषाय घटाकर १६ का भंग जानना २रे भाग में—१५ का भंग ऊपर के १६ के भंग में से नपुंसक वेद १, घटाकर १५ का भंग जानना ३रे भाग में—१४ का भंग ऊपर के १५ के भंग में से स्त्री वेद १, घटाकर १४ का भंग जानना ४थे भाग में—१३ का भंग ऊपर के १४ के भंग में से पुरुष वेद १ घटाकर १३ का भंग जानना ५वें भाग में—१२ का भंग ऊपर के १३ के भंग में से क्रोध कषाय १ घटाकर १२ का भंग जानना ६वे भाग में—११ का भंग ऊपर के १२ के भंग में से मान कषाय १ घटाकर ११ का भंग जानना ७वे भाग में—१० का भंग ऊपर के ११ भंग में से माया कषाय १ घटाकर १० का भंग जानना १०वे गुण० में १० का भंग ऊपर के १६	१३ का भंग ऊपर के १२ के भंग में से ८ का भंग घटाकर कषाय का ९ का भंग जोड़कर १३ का भंग जानना १४ का भंग ऊपर के १३ के भंग में से अविरत का २ का १ला भंग (नीचे सूचना नम्बर २ देखो) घटाकर और अविरत का ३ का २रा भंग जोड़कर १४ का भंग जानना १५ का भंग ऊपर के १४ के भंग में से अविरत का ३ का भंग घटाकर अविरत का ४ का भंग घटाकर अविरत का ४ का भंग जोड़कर १५ का भंग जानना १६ का भंग ऊपर के १५ के भंग में से अविरत का ४ का भंग घटाकर अविरत का ५ का भंग जोड़कर १६ का भंग १७ का भंग ऊपर के १६ के भंग में से अविरत का ५ का भंग घटाकर अविरत ६ का भंग जोड़कर १७ का भंग १८ का भंग ऊपर के १७ के भंग में से अविरत का ६ का भंग घटाकर अविरत का ७ का भंग जोड़कर १८ का भंग जानना		१३वे गुण० में २ का भंग केवली समुद्घात की कपाट अवस्था में औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये २ का भंग जानना १ का भंग केवली समुद्घात की प्रतर, लोक पूर्ण अवस्था में १ कार्माण काययोग जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में ४३ का भंग ऊपर के कर्मभूमि के ४४ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ४३ का भंग जानना २रे गुण० में ३८ का भंग ऊपर के कर्मभूमि के ३९ के भंग में से एक नपुंसक वेद घटाकर ३८ का भंग जानना ४थे गुण० में ३३ का भंग ऊपर के कर्मभूमि के ३३ का ही भंग यहां जानना	४थे गुण० में ९ से १६ तक के भंग पर्याप्तवत् जानना ६वे गुण० में ५-६-७ के भंग पर्याप्तवत् जानना १३वे गुण० में २ का भंग औ० मिश्रकाययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ का भंग १ का भंग पर्याप्तवत् जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग पर्याप्तवत् जानना परन्तु यहां हरेक भंग में	९ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना ५-६-७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना २-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		के भंग में से वेद ३, क्रोध-मान-माया कषाय ३ ये ६ घटाकर १० का भंग जानना				नपुंसक वेद छोड़कर स्त्री-पुरुष ये २ वेदों में से कोई १ वेद जानना	
		११वें १२वें गुण० में ९ का भंग ऊपर के १० के भंग में से लोभ कषाय घटाकर ९ का भंग जानना				२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग पर्याप्तवत् जानना परन्तु कोई १ यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष ये २ वेदों में से कोई १ जानना	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		१३वें गुण० में ५ का भंग उभयमन की अपेक्षा सत्यमनोयोग १, अनुभय मनोयोग १, सत्यवचनयोग १, अनुभय वचनयोग १, औदारिक काययोग १ ये ५ का भंग जानना	१ले गुण० में १० से १७ तक के भंग ऊपर के १ले मिथ्यात्व गुण स्थान के ११ से १८ तक के हरेक भंग में से मिथ्या दर्शन १, घटाकर १० से १७ तक के भंग जानना	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना		४थे गुण० में ९ से १६ तक के भंग पर्याप्तवत् जानना परन्तु यहां हरेक भंग में एक पुरुष वेद जानना	९ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां हरेक भंग में एक पुरुष वेद जानना
		३ का भंग भावमन की अपेक्षा ऊपर के ५ के भंग में से सत्यमनोयोग १, अनुभयमनोयोग १ ये २ घटाकर ३ का भंग जानना	२रे ४थे गुण० में ९ से १६ तक के भंग ऊपर के १ले गुण० के १० से १७ तक हरेक भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय की अवस्था १ घटाकर ९ से १६ तक के भंग जानना	९ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना			
		१४वें गुण० में (०) का भंग यहां कोई योग नहीं है					
		(२) भोग भूमि में १ से ४ गुण० में ५०–४५–४१ के भंग ऊपर के कर्मभूमि के ५१–४६–	५वें गुण० के ८ से १४ तक भंग ऊपर के ९ से १५ तक के हरेक भंग ।	८ से १४ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
		४८ के हरेक भंग में से एक नपुंसक वेद घटाकर ५०–४५–४१ के भंग जानना	में से अप्रत्याख्यान कषाय की अवस्था १ घटाकर ८ से १४ तक के भंग जानना सूचना—यहां स्त्रीहिंसा न होने से ऊपर के ६ से १६ तक के भंगों में से १६ का भंग नहीं होता इसलिये १६ का भंग छोड़ दिया है। ६वें ७वें ८वें गुण० में ५–६–७ के भंग भंगों का विवरण ५ का भंग किसी एक संज्वलन कषाय की अवस्था १, हास्य-रति या अरति शोक इन दोनों जोड़ों में से किसी एक जोड़ की २ नोकषाय, तीनों वेदों में से कोई १ वेद, ऊपर के हरेक योग स्थान में से कोई १ योग, ये ५ का भंग जानना ६ का भंग ऊपर के ५ के भंग में भय या जुगुप्सा इन दोनों में से कोई १ जोड़कर ६ का भंग जानना ७ का भंग ऊपर के ५ के भंग में भय और जुगुप्सा ये दोनों जोड़कर ७ का भंग जानना। सूचना—६वें गुण स्थान के जहां आहार योग गिनेंगे वहां स्त्री०	५–६–७ के भंगों में से कोई कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
			योग गिनती में नहीं आयेगा ६वें गुण० में सवेद भाग में ३ का भंग कोई १ योग, कोई १ वेद और संज्वलन कषाय में से कोई १ कषाय, ये ३ का भंग जानना	३ का भंग जानना			
			अवेद भाग में २ का भंग बादर लोभ कषाय १, कोई १ योग ये २ का भंग जानना	२ का भंग जानना			
			१०वें गुण० में २ का भंग सूक्ष्म लोभकषाय १ और कोई १ योग, ये २ का भंग जानना	२ का भंग जानना			
			११-१२-१३वें गुण० में १ का भंग कोई १ योग जानना	१ का भंग जानना			
			१४वें गुण० में (०) का भंग यहां कोई योग नहीं होता	०			
			(२) भोग भूमि में १ले गुण० में १२ से १८ तक के भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां हरेक भंग में नपुंसक वेद छोड़कर स्त्री-पुरुष इन दोनों में से कोई १ वेद जानना	१२ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष इन दोनों वेदों में से कोई १ वेद जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
			२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना	१० से १३ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना			
			३रे ४थे गुण० में ९ से १६ तक के भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना	९ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां हरेक भंग में स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना			

सूचना—यहां हिंसक के विषय को हरेक भंग में एक ही गिना है अर्थात् हिंसक के एक समय के भिन्न भिन्न विषयों में से किसी एक विषय पर कषाय रूप उपयोग को ही हिंसक गिना है । परन्तु—

१—एकेन्द्रिय जाति का स्पर्शनेन्द्रिय विषय १,
२—द्वीन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसनेन्द्रिय विषय ये २,
३—त्रीन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घ्राणेन्द्रिय विषय ये ३,
४—चतुरिन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुरिन्द्रिय विषय ये ४,
५—असंज्ञी पंचेन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षु-कर्णेन्द्रिय विषय ये ५
६—संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति के स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षु-कर्ण-मनइन्द्रिय विषय ये ६,

इन छः अवस्थाओं के विषयों में से एक समय कोई १ ही विषय हिंसक गिना जाता है अर्थात् किसी एक समय में किसी एक विषय पर ही कषाय का उपयोग होता है, वह उपयोग ही हिंसक गिना जाता है जिस हिंसक की अपेक्षा से विचार करना हो तो उस अवस्था को हिंसक की जगह

(२) सूचना — हिंस्य के ६ भंग निम्न प्रकार जानना।

१ला भंग— पृथ्वी ये १ का भंग जानना।

२रा भंग—पृथ्वी-जल ये २ का भंग जानना।

३रा भंग—पृथ्वी-जल-अग्नि ये ३ का भंग जानना।

४था भंग—पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु ये ४ का भंग जानना।

५वा भंग—पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-वनस्पति ये ५ का भंग जानना।

६वा भंग—पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-वनस्पति-त्रस ये ६ का भंग जानना।

इसके सिवाय और भी पृथ्वी-अग्नि ये २ का भंग, पृथ्वी-वायु ये २ का भंग, पृथ्वी-वनस्पति ये २ का भंग और पृथ्वी-त्रस ये २ का भंग, इस प्रकार अनेक भंग बन सकते हैं।

(३) सूचना—अविरत के ६ भंगों की विवरण निम्न प्रकार जानना—

१ला दो का भंग—हिंसक का कोई १ विषय और हिंस्य के कोई १ जीव ये २ का भंग जानना।

२रा तीन का भंग—हिंसक का कोई १ विषय और हिंस्य के कोई २ जीव ये ३ का भंग जानना।

३रा चार का भंग—हिंसक का कोई १ विषय और हिंस्य के कोई ३ जीव ये ४ का भंग जानना।

४था पांच का भंग—हिंसक का कोई १ विषय और हिंस्य के कोई ४ जीव ५ का भंग जानना।

५वा छः का भंग—हिंसक का कोई १ विषय और हिंस्य के कोई ५ जीव ये ६ का भंग जानना।

६वा सात का भंग—हिंसक का कोई १ विषय और हिंस्य के कोई ६ जीव ये ७ का भंग जानना।

१	२	३	४	५	६	७	८
२३ भाव	५० नरकगति १, तिर्यंचगति १, देवगति १ ये ३ घटाकर (५०)	५० ३१-२६-३०-३३-३०-३१-२७-३१-२६-२६-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२०-१४-१३-२७-२५-२६-२९ के भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ३१ का भंग कुज्ञान ३ दर्शन २, लब्धि ५, मनुष्यगति १, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ३१ का भंग जानना २रे गुण० में २९ का भंग ऊपर के ३१ के भंग में से मिथ्या दर्शन १, अभव्य १, ये २ घटाकर २९ का भंग जानना ३रे गुण० में ३० का भंग ऊपर के २९ के भंग में अवधि दर्शन १ जोड़कर ३० का भंग जानना ४थे गुण० में ३३ का भंग उपशम क्षायिक सम्यक्त्व २, ज्ञान ३, दर्शन ३, क्षयोपशम सम्यक्त्व १, क्षयोपशम लब्धि	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १७ का कोई १ भंग (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में १७ का भंग कुमति, कुश्रुति, कुअवधिज्ञानों में से कोई १ ज्ञान, अचक्षुदर्शन चक्षु दर्शन इन दोनों में से कोई १ दर्शन दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य ये क्षयोपशम लब्धि ५ चारों गतियों में से कोई १ गति, क्रोध-मान-माया-लोभ इन चारों कषायों में से कोई १ कषाय, तीन वेदों में से कोई १ वेद, छः लेश्याओं में से कोई १ लेश्या, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १ असिद्धत्व १, भव्यत्व या अभव्यत्व में से	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ का भंग कोई १ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	४६ उपशम सम्यक्त्व १, उपशमचारित्र १, कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्ययज्ञान १, ये ४ घटाकर (४६) ३०-२८-३०-२७-२४-२२-२५ के भंग जानना (१) कर्म भूमि में १ले गुण० में ३० का भंग पर्याप्त के ३१ के भंग में से कुअवधि ज्ञान १, घटाकर ३० का भंग जानना २रे गुण० में २८ का भंग पर्याप्त के २९ के भंग में से कुअवधि ज्ञान १, घटाकर २८ का भंग जानना ४थे गुण० में ३० का भंग पर्याप्त के ३३ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व १, स्त्री वेद १, नपुंसक वेद १, ये ३ घटाकर ३० का भंग जानना सूचना—यह ३० का भंग कल्पवासी देव और १ले नरक से आने वाले जीवों की अपेक्षा जानना (देखो गो०क०गा० ३२७)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १७ का कोई १ भंग १ले गुण० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना २रे गुण० में १६ का भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ का कोई १ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		५, मनुष्यगति १, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये ३३ का भंग जानना ५वे गुण० में ३० का भंग ऊपर के ३३ के भंग में से अशुभ लेश्या ३, असंयम १, ये घटाकर शेष २६ में संयमासंयम १ जोड़कर ३० का भंग जानना ६वे गुण० में ३१ का भंग औ० काययोग की अपेक्षा ऊपर के ३० के भंग में से संयमासयम घटाकर शेष २६ में सरागसंयम १, मनः पर्यय ज्ञान १ ये २ जोड़कर ३१ का भंग जानना २७ का भंग आहारक काययोग की अपेक्षा ऊपर के ३१ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व १, स्त्री-नपुंसक वेद २, मनः पर्यय ज्ञान १ ये ४ घटाकर २७ का भंग ७वे गुण० में ३१ का भंग ऊपर के भंग में से संयमासंयम १ घटाकर शेष २६ में सरागसंयम १, मनः पर्यय ज्ञान १ ये २ जोड़कर ३१ का भंग जानना।	कोई १, जीवत्व १ ये १७ का भंग जानना सूचना— इस १७ के भंग के भी अनेक प्रकार के भंग होते हैं इसका खुलासा नीचे सूचना नं०(१) में देखो २रे गुण० में १६ का भंग ऊपर के १७ के भंग में से मिथ्या दर्शन १ घटाकर १६ का भंग जानना सूचना—इस १६ के भंग में भी ऊपर के १७ के समान अनेक प्रकार के भंग जानना ३रे गुण० में १६ का भंग ऊपर के २रे गुण० के १६ के भंग के समान जानना सूचना—१६ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	६वे गुण० में २७ का भंग पर्याप्तवत् जानना १३वे गुण० में १४ का भंग पर्याप्तवत् जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में २४ का भंग पर्याप्त के २७ के भंग में से कुअवधि ज्ञान १, शुभ लेश्या ३ ये ४ घटाकर शेष २३ में कापोत लेश्या १ जोड़कर २४ का भंग जानना २रे गुण० में २२ का भंग पर्याप्त के २५ के भंग में से कुअवधि ज्ञान १, शुभ लेश्या ३ ये ४ घटाकर शेष २१ में कापोत लेश्या १ जोड़कर २२ का भंग जानना ४थे गुण० में २५ का भंग पर्याप्त के २६ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व १, स्त्री वेद १, शुभ लेश्या ३ ये ५ घटाकर शेष २४	६वे गुण० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना १३वे गुण० में १४ का भंग पर्याप्तवत् जानना (२) भोग भूमि में १ले गुण० में १७ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दोनों वेदों में से कोई १ वेद जानना २रे गुण० में १६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां स्त्री, पुरुष इन दोनों में से कोई १ वेद जानना ४थे गुण० में १७ का भंग ऊपर के भंग कर्म भूमि के समान जानना परन्तु यहां एक पुरुष वेद जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां एक पुरुष वेद ही जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		८वें गुण० में २६ का भंग उपशम क्षायिक सम्यक्त्व २, उपशम क्षायिक चारित्र २, ज्ञान ४, दर्शन ३, क्षयोपशम लब्धि ५, मनुष्य गति १, कषाय ४, लिंग ३, शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये २६ का भंग जानना ९वें गुण० में १ले भाग में—२६ का भंग ऊपर के ८वें गुण० में २६ के समान यहां भी जानना २रे भाग में—२८ का भंग ऊपर के २६ के भंग में से नपुंसक वेद १, घटाकर २८ का भंग जानना ३रे भाग में—२७ का भंग ऊपर के २८ के भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर २७ का भंग जानना ४थे भाग में—२६ का भंग ऊपर के २७ के भंग में से पुरुष वेद १ घटाकर २६ का भंग का भंग जानना ५वें भाग में—२५ का भंग ऊपर के २६ के भंग में से क्रोध वेद १ घट कर २५ का भंग जानना	४थे गुण० में १७ का भंग उपशम क्षायिक क्षयोपशम स० इन तीनों में से कोई १ सम्यक्त्व, मति श्रुति अवधि ज्ञान इन तीनों में से कोई १ ज्ञान, अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन अवधि दर्शन तीनों में से कोई १ दर्शन, क्षयोपशम लब्धि ५, चारों गतियों में से कोई १ गति, चारों कषायों में से कोई १ कषाय, तीनों लिंगों में से कोई १ लिंग, छः लेश्याओं में से कोई १ लेश्या, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये १७ का भंग जानना सूचना—इस १७ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना।	से कापोत लेश्या १ जोड़कर २५ का भंग जानना सूचना—भोग भूमि में जन्म लेने वाले के अपर्याप्त अवस्था में १ले २रे ४थे गुण० में एक कापोत लेश्या ही होती है (देखो गो० का० गा० ५४६)		
			५वें गुण० में १७ का भंग उपशम क्षायिक क्षयोपशम	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
		६वे भाग में—२४ का भंग ऊपर २५ के भंग में से मान कषाय १, घटाकर २४ का भंग जानना ७वे भाग में—२३ का भंग ऊपर के २४ के भंग में से माया कषाय १, घटाकर २३ का भंग जानना १०वे गुण० में २३ का भंग ऊपर के २९ के भंग में से क्रोध-मान-माया कषाय ३, लिंग ३ ये ६ घटाकर २३ का भंग जानना ११वे गुण० में २१ का भंग ऊपर के २३ के भंग में से सूक्ष्म लोभ १, क्षायिक चारित्र १, ये २ घटाकर २१ का भंग जानना १२वे गुण० में २० का भंग ऊपर के २१ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १ ये २ घटाकर शेष १९ क्षायिक चारित्र १ जोड़कर का भंग जानना १३वे गुण० में १४ का भंग क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, केवल-ज्ञान १, केवल दर्शन १, दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य ये क्षायिक लब्धि ५, मनुष्यगति १,	इन तीनों में से कोई १ सम्यक्त्व तीनों ज्ञानों में से कोई १ ज्ञान, तीनों दर्शनों में से कोई १ दर्शन क्षयोपशम लब्धि ५, तिर्यंच या मनुष्य गतियों में से कोई १ गति, क्रोधादि चारों कषायों में से कोई १ कषाय, तीनों लिंगों में से कोई १ लिंग, तीन शुभ लेश्याओं में से कोई १ शुभ लेश्या, संयमासंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये १७ का भंग जानना सूचना—इस १७ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना ६वे गुण० में १७ का भंग, उपशमादि तीनों सम्यक्त्वों में से कोई १ सम्यक्त्व, मति आदि चारों ज्ञानों में से कोई १ ज्ञान, तीनों दर्शनों में से कोई १ दर्शन क्षयोपशम लब्धि ५, मनुष्यगति १, संज्वलन	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
		शुक्ल लेश्या १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये १४ भाव जानना १४वे गुण० में १३ का भंग ऊपर के १४ के भंग में से शुक्ल लेश्या १, घटाकर १३ का भंग जानना। (२) भोग भूमि में १ले गुण० में २७ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के ३१ के भंग में से नपुंसक वेद १, अशुभ लेश्या ३, ये ४ घटाकर २७ का भंग २रे गुण० में २५ का भंग ऊपर के २७ के भंग में से मिथ्या दर्शन, अभव्य, ये २ घटाकर २५ का भंग जानना ३रे गुण० में २६ का भंग ऊपर के २५ के भंग में अवधि दर्शन १, जोड़कर २६ का भंग जानना ४थे गुण० में २९ का भंग कर्म भूमि के ३३ के भंग में से नपुंसक वेद १, अशुभ लेश्या ३ ये ४ घटाकर २९ का भंग जानना	कषायों में से कोई १ कषाय, तीन लिंगों में से कोई १ लिंग तीनों शुभ लेश्याओं में से कोई १ शुभ लेश्या, सराग संयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये १७ का भंग जानना सूचना—इस १७ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना। ७वे गुण० में १७ का भंग ऊपर के ६वे गुण स्थान के १७ के भंग के समान जानना ८वे गुण० में १७ का भंग उपशम या क्षायिक सम्यक्त्व में से कोई १ सम्यक्त्व उपशम या क्षायिक चारित्रों में से कोई १ चारित्र, मति आदि चार ज्ञानों में से कोई १ ज्ञान, तीन दर्शनों में से कोई १ दर्शन, क्षयोपशम लब्धि ५, मनुष्यगति १, संज्वलन कषायों में से कोई १ कषाय, तीन वेदों में से कोई १ वेद, शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये १७ का भंग जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
		सूचना—भोग भूमि में चारों गुण स्थानों में तीन शुभ लेश्या ही होती हैं (देखो गो० क० गा० ५४६)	सूचना—इस १७ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना ८. ९वें गुण० में सवेद भाग में १७ का भंग ऊपर के ८वें गुण स्थान के समान जानना अवेद भाग में १६ का भंग ऊपर के सवेद भाग के १७ के भंग में से कोई १ लिंग घटाकर १६ का भंग जानना सूचना—इस १६ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना १०वें गुण० में १६ का भंग उपशम या क्षायिक सम्यक्त्व में से कोई १ सम्यक्त्व, उपशम या क्षायिक चारित्र में से कोई १ चारित्र मति आदि चार ज्ञानों में से कोई १ ज्ञान तीन दर्शनों में से कोई १ दर्शन, क्षयोपशम लब्धि ५, मनुष्यगति १, सूक्ष्म लोभ १, शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये १६ का भंग जानना सूचना—इस १६ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना	सवेद भाग में १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना अवेद भाग में १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
			११वे गुण० में १५ का भंग उपशम या क्षायिक सम्यक्त्व में से कोई १ सम्यक्त्व, उपशम चारित्र १, मति आदि चार ज्ञानों में से कोई १ ज्ञान, तीन दर्शनों में से कोई १ दर्शन, क्षयोपशम लब्धि ५, मनुष्य गति १, शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १ जीवत्व १, ये १५ का भंग जानना सूचना—इस १५ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना	१५ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			
			१२वे गुण० में १५ का भंग क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, मति आदि चारों ज्ञानों में से कोई १ ज्ञान, तीन दर्शनों में से कोई १ दर्शन, क्षयोपशम लब्धि ५, मनुष्यगति १, शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये १५ का भंग जानना। सूचना—इस १५ के भंग में भी ऊपर के समान अनेक प्रकार के भंग जानना	१५ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
			१३वे गुण० में १४ का भंग क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १, क्षायिक लब्धि ५, मनुष्यगति १, शुक्ल लेश्या १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये १४ का भंग जानना सूचना—यहां इस १४ के भंग में अनेक भंग नहीं होते।	१४ का भंग जानना			
			१४वे गुण० में १३ का भंग ऊपर के १४ के भंग में से शुक्ल लेश्या १ घटाकर शेष १३ का भंग जानना सूचना—यहां इस १३ के भंग अनेक भंग नहीं होते	१३ का भंग जानना			
			(२) भोग भूमि में १ले गुण० में १७ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के १७ के भंग के समान जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दोनों वेदों में से कोई १ वेद जानना	१७ के भंग में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना			
			२रे गुण० में १६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के १६ के भंग के समान जानना परन्तु	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना			

१	२	३	४	५	६	७	८
			यहां स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में में से कोई १ वेद जानना ३रे गुण० में १६ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के १६ के भंग समान परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना ४थे गुण० में १७ का भंग ऊपर के कर्म भूमि के १७ के भंग के समान जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु यहां स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना परन्तु स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना			

(१) सूचना—१ले गुण० के १७ के भंग में अनेक प्रकार के भंग होते हैं इसका खुलासा निम्न प्रकार जानना—

१ले	१७ के	भंग में	१ कृष्ण लेश्या	गिनकर	१७ का भंग	जानना
२रे	"	"	१ नील लेश्या	"	"	"
३रे	"	"	१ कापोत लेश्या	"	"	"
४थे	"	"	१ पीत लेश्या	"	"	"
५वे	"	"	१ पद्म लेश्या	"	"	"
६वे	"	"	१ शुक्ल लेश्या	"	"	"
७वे	"	"	१ कुमति ज्ञान	"	"	"
८वे	"	"	१ कुश्रुति ज्ञान	"	"	"
९वे	"	"	१ कुअवधि ज्ञान	"	"	"
१०वे	"	"	१ नरकगति	"	"	"

११वें	"	"	१ तिर्यंच गति	"	"	"
१२वें	"	"	१ मनुष्यगति	"	"	"
१३वें	"	"	१ देवगति	"	"	"
१४वें	"	"	१ क्रोधकषाय	"	"	"
१५वें	"	"	१ मानकषाय	"	"	"
१६वें	"		१ माया कषाय	"	"	"
१७वें	"	"	१ लोभकषाय	"	"	"
१८वें	"	"	१ नपुंसक वेद	"	"	"
१९वें	"	"	१ स्त्री वेद	"	"	"
२०वें	"	"	१ पुरुष वेद	"	"	"
२१वें	"	"	१ अभव्य	"	"	"
२२वें	"	"	१ भव्य	"	"	"

ये भंग चारों गति, पांचों इन्द्रिय, पर्याप्त, अपर्याप्त, निर्वृत्य पर्याप्त, लब्ध्य पर्याप्त, इन सब अवस्थाओं में ही होने वाले सब भेदों की व्याख्या है सो जानना।

(२) सूचना—लेश्या के ६ भगों का खुलासा निम्न प्रकार जानना—जिस जीव के जितनी लेश्याओं के भंग होते हैं उतनी ही लेश्याओं में समय-समय में एक एक लेश्या का परिणमन होता रहता है।

१ का भंग—कृष्ण लेश्या
२ का भंग—कृष्ण, नील लेश्या
३ का भंग—कृष्ण, नील, कापोत लेश्या
४ का भंग—कृष्ण, नील, कापोत, पीत लेश्या
५ का भंग—कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म लेश्या
६ का भंग—कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या

दूसरे ढंग से ६ भंग निम्न प्रकार जानना।
१ का भंग—शुक्ल लेश्या
२ का भंग—शुक्ल, पद्म लेश्या
३ का भंग—शुक्ल, पद्म, पीत लेश्या
४ का भंग—शुक्ल, पद्म, पीत, कापोत लेश्या
५ का भंग—शुक्ल, पद्म, पीत, कापोत, नील लेश्या
६ का भंग—शुक्ल, पद्म, पीत, कापोत, नील, कृष्ण लेश्या

यह वर्णन गोमटसार जीवकांड के लेश्या अधिकार से लिया गया है।

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना और उत्तम भोगभूमियां मनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना (६०००) छः हजार धनुष (३ कोस) जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१२० सामान्य मनुष्य की अपेक्षा १२० प्रकृति जानना।

सूचना—१४वें गुण स्थान की अपेक्षा विशेष खुलासा गो० क० गा० ६४ से १०४ देखो।

११२ निर्वृत्य पर्याप्तक मनुष्य में आयु ४, नरकद्विक २, आहारद्विक २ ये ८ प्रकृतियों का बंध नहीं होता इसलिये ये ८ घटाकर ११२ प्रकृति जानना।

१०९ लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य में देवद्विक २, तीर्थंकर प्रकृति १, ये ३ और ऊपर के ८ प्रकृति ऐसे ११ प्रकृतियां ऊपर के १२० में से घटाकर १०९ जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां** १०२ सामान्य से मनुष्यों की अपेक्षा उदय योग्य १२२ प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, तिर्यंचद्विक २, तिर्यंचायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियकद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, ये २० प्रकृतियां घटाकर १०२ जानना।

१०० पर्याप्तक पुरुष वेदि मनुष्य में ऊपर के १०२ में से स्त्री वेद १ अपर्याप्त १ ये २ घटाकर जानना।

९६ पर्याप्त स्त्री में (योनिमति मनुष्य) ऊपर के १०० प्रकृतियों में से तीर्थंकर प्र० १, आहारक द्विक २, पुरुष वेद १, नपुंसक वेद १ ये ५ घटाकर और स्त्रीवेद १ जोड़कर ९६ जानना

७१ लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य में ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (महानिद्रा ३ घटाकर) वेदनीय २, मोहनीय २४ (स्त्री-पुरुष ये स० मिथ्यात्व १, स० मिश्र० १, २ वेद घटकर), मनुष्यगति १, नीच गोत्र १, अन्तराय ५, नाम कर्म २८, (मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, निर्माण १, औदारिकद्विक २, तैजस कार्माण शरीर २, हुन्डक संस्थान १, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन १, स्पर्शादि ४, मनुष्यगत्यानुपूर्वी १, अगुरुलघु १, उपघात १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, दुर्भग १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १, ये २७) ये सब ७१ जानना (देखो गो० क० गा० ३०१)

७८ भोग भूमियां मनुष्य में ऊपर के १०२ प्रकृतियों में से दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १ नीच गोत्र १, नपुंसक वेद १ स्त्यानगृध्यादि महानिद्रा ३, अप्रशस्त विहायोगति १, तीर्थंकर प्र० १, अपर्याप्त १, वज्रवृषभ नाराच संहनन छोड़कर शेष ५ संहनन, समचतुरस्र संस्थान छोड़कर शेष ५ संस्थान, आहारकद्विक २ ये २४ घटाकर ७८ जानना (देखो गो० क० गा० ३०२-३०३)

२७ **उदय प्रकृतियां**—१४८ १ले मिथ्यात्व गुण० में सामान्य मनुष्य की अपेक्षा से १४८ प्र० जानना।

१४५ २रे गुण० में तीर्थंकर प्र० १, आहारकद्विक २ ये ३ घटाकर १४५ जानना।

१४७ ३रे गुण० में आहारकद्विक २ ऊपर के १४५ में जोड़कर १४७ जानना।

१४८ ४थे गुण० में ऊपर के १४७ में तीर्थंकर प्र० १ जोड़कर १४८ जानना उपशम सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा १४८ और क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा ७ प्र० घटाकर १४१ जानना।

१४७ ५वें गुण० में नरकायु १ घटाकर उपशम स० अपेक्षा १४७ और क्षायिक स० अपेक्षा १४० प्रकृतियां जानना।

१४६ ६वें गुण० में तीर्यंचायु १ ऊपर के १४७ में घटाकर १४६ जानना क्षायिक स० अपेक्षा १३९ जानना।

१४६ ७वें गुण० में १४६ जानना। सूचना—६वें गुण० के अन्त में अनन्तानुबंधी का विसंयोजन होकर सातिशय अप्रमत्त में जाकर उपशम श्रेणी चढ़ने के सम्मुख होते हैं।

१४२ ८वें गुण० में ३ भंग होते हैं।

१ला भंग में उपशम सम्यग्दृष्टि के उपशम श्रेणी में १४२ प्र० की सत्ता जानना।

सूचना—इन १४२ प्र० में मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति ये ३ सत्ता मौजूद हैं।

२रे भंग में क्षायिक सम्यग्दृष्टि के उपशम श्रेणी में १३९ प्र० की सत्ता जानना।

सूचना—इन १३९ प्र० में ऊपर के ३ मिथ्यात्व प्र० की सत्ता नहीं रहता है।

३रे भंग में क्षायिक सम्यग्दृष्टि के क्षपक श्रेणी में १३८ प्र० की सत्ता जानना।

सूचना—इन १३८ प्र० में देवायु की सत्ता नहीं रहती है।

१४२ ९वें गुण० में भी ३ भंग जानना।

१ला भंग में—उपशम सम्यक्त्व की उपशम श्रेणी में १४२ प्र० जानना।

२रे भंग में—क्षायिक सम्यक्त्व की उपशम श्रेणी में १३९ प्र० जानना।

३रे भंग में—क्षायिक सम्यक्त्वी की क्षपक श्रेणी में १३८ प्र० की सत्ता जानना।

१४२ १०वें गुण० में भी ३ भंग जानना।

१ले भंग में उपशम सम्यक्त्वी की उपशम श्रेणी में १४२ प्र० की सत्ता जानना।

२रे भंग में क्षायिक सम्यक्त्वी की उपशम श्रेणी में १३९ प्र० की सत्ता जानना।

३रे भंग में क्षायिक सम्यक्त्वी की क्षपक श्रेणी में १०२ प्र० की सत्ता जानना।

सूचना—९वें गुण० में के १३८ प्रकृतियों में से नरकद्विक २, तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, महानिद्रा ३, संज्वलन क्रोध मान-माया ये ३, हास्यादिनोकषाय ६, वेद ३, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अप्रत्यानकषाय ४, प्रत्याख्यान कषाय ४ ये ३६ घटाकर १०२ प्र० की सत्ता जानना

१४२ ११वें गुण० में २ भंग जानना।

१ले भंग में–उपशम सम्यक्त्वी उपशम श्रेणी में १४२ प्र० की सत्ता जानना।
-२े भंगों में-क्षायिक सम्यक्त्वी उपशम श्रेणी में १३६ प्र० की सत्ता जानना।

१०१ १२वें गुण० में १०१ प्र० की सत्ता जानना।

८५ १३वें गुण० में ऊपर के १०१ प्रकृतियों में से (१२वें गुण० के अन्त में) ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (महानिद्रा ३ घटाकर), अन्तराय ५, ये १६ घटाकर ८५ प्र० की सत्ता जानना।

८५ १४वें गुण० के द्विचरम समय में ८५ प्र० की सत्ता जानना और चरम समय में १३ प्र० की सत्ता जानना। मनुष्यायु १, वेदनीय २, उच्च गोत्र १, मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, तीर्थंकर प्र० १, त्रसकाय १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यशः कीर्ति १, इन १३ प्रकृतियों का भी मोक्ष जाते समय नाश हो जाता है।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना इस राशि में लब्ध्य पर्याप्तक मनुष्य भी सम्मिलित हैं।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण अढ़ाई द्वीप की अपेक्षा जानना प्रतर समुद्घात की अपेक्षा लोक का असंख्यात भाग प्रमाण जानना लोकपूर्ण समुद्घात की अपेक्षा सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—ऊपर के क्षेत्र के समान जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से या अन्तर्मुहूर्त से ४७ कोटि पूर्व तीन पल्य तक निरन्तर मनुष्य पर्याय ही धारण करता रहे इस अवस्था में यदि मोक्ष नहीं हो तो दूसरी पर्याय धारण करे।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव तक मनुष्य न बने या असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक मनुष्य न बने।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटि कुल मनुष्य की जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	४ १ से ४ गुण० में	४ १ से ४ गुण० जानना	सारे गुण० स्थान १ से ४ तक के गुण०	१ गुण० चारों में से कोई १ गुण०	३ १ले २रे ४थे गुण० जानना।	सारे गुण स्थान १-२-४थे ये ३ गुण० जानना	१ गुण० तीनों में से कोई १ गुण०
२ जीवसमास	२ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त ये (२)	१ १ से ४ गुण० में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१ १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना	१ १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ १ले २रे ४थे गुण० में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ १ संज्ञी पं० अपर्याप्त
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ १ से ४ गुण० ६ का भंग सामान्यवत्	१ भंग ६ का भंग जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	३ १ले २रे ४थे ये ३ गुण० ३ का भंग आहार, शरीर, इन्द्रिय पर्याप्ति ये ३ का भंग जानना। लब्धि रूप ६ पर्याप्ति जानना	१ भंग ३ का भंग जानना	१ भंग ३ का भंग जानना
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० १ से ४ गुण० के १० का भंग सामान्यवत् जानना	१ भंग १० का भंग जानना	१ भंग १० का भंग जानना	७ १ले २रे ४थे गुण० में ७ का भंग आयु १, कायबल १, इन्द्रिय प्राण ५ ये ७ का भंग जानना	१ भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ १ से ४ गुण० में ४ का भंग सामान्यवत्	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले २रे ४थे गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
६ गति	१ देवगति	१ १ से ४ गुण० में १ देवगति जानना	१ देवगति	१ देवगति	१ १ले २रे ४थे गुण० में १ले २रे गुण० में मरने वाला जीव भवनत्रिक में जन्म ले सकता है १ले २रे ४थे गुण० में मरने वाला जीव १ से १६वें स्वर्ग और ९ ग्रैवेयक में जन्म ले सकता है ४थे गुण० स्थान में मरने वाला जीव नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान में जन्म ले सकता है।	१ देवगति	१ देवगति
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ १ से ४ गुण० में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ १ले २रे ४थे गुण० में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति
८ काय	१ त्रसकाय	१ १ से ४ गुण० में १ त्रसकाय जानना	१ त्रसकाय	१ त्रसकाय	१ १ले २रे ४थे गुण० में १ त्रसकाय जानना	१ त्रसकाय	१ त्रसकाय
९ योग	११ औ० मिश्रकाययोग १ औदारिक काययोग १ आ० मिश्रकाययोग १ आहारक काययोग १ ये ४ घटाकर (११)	९ वै० मिश्रकाय योग १, कार्माण काययोग १ ये २ घटाकर (९) १ से ४ गुण० में ९ का भंग वचन योग ४, मनोयोग ४, वै० काययोग १ ये ९ का भंग जानना	१ भंग ९ का भंग जानना	१ योग ९ के भंग में से कोई १ योग जानना	२ कार्माण काययोग १, वै० मिश्रकाय योग १ ये योग २ जानना १-२ के भंग १ले २रे ४थे गुण० में १ का भंग कार्माण काययोग विग्रह गति में जानना २ का भंग कार्माण	१ भंग १-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ योग १-२ के भंगों में से कोई १ योग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
					कायबोग १, वै० मिश्र काययोग १ ये २ का भंग जानना		
१० वेद स्त्री-पुरुष ये २ वेद जानना	२	१ २–१–१ के भंग (१) भवनत्रिक देव से १६वें स्वर्ग तक के देवों में १ से ४ गुण० में २ का भंग स्त्री-पुरुष वेद ये २ जानना (२) नवग्रैवेयक में १ से ४ गुण० में १ पुरुष वेद जानना (३) नवअनुदिश और पंचानुत्तर विमान में ४थे गुण० में १ पुरुष वेद जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के २ का भंग जानना १ पुरुष वेद जानना १ पुरुष वेद जानना	१ वेद २ के भंग में से कोई १ वेद जानना १ पुरुष वेद जानना १ पुरुष वेद जानना	२ २–१–१ के भंग (१) भवनत्रिक से १६वें स्वर्ग तक के देवों में १ले २रे गुण० में २ का भंग स्त्री-पुरुष २ वेद जानना इन दोनों गुण० में मरकर यहां स्त्री-पुरुष लिंग हो सकता है (२) नवग्रैवेयक में १ले २रे ४थे गुण० में १ पुरुष वेद ही जानना (३) १ले स्वर्ग से सर्वार्थ सिद्धि तक के देवों में ४थे गुण० में १ पुरुष लिंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के २ का भंग जानना १ पुरुष वेद जानना १ पुरुष वेद जानना	१ वेद १-२ के भंगों में से कोई १ वेद जानना १ पुरुष वेद जानना १ पुरुष लिंग जानना
११ कषाय नपुंसक वेद घटाकर	२४ १ (२४)	२४ २४–२०–२३–१९–१९ के भंग जानना (१) भवनत्रिक देव से १६वें स्वर्ग तक देवों में १ले २रे गुण० में २४ का भंग सामान्यवत् जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के १ले गुण० में ७–८–९ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२४ २४–२४–१९–२३–१९–१९ के भंग (१) भवनत्रिक देवों में १ले २रे गुण० में २४ का भंग पर्याप्तवत् जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के ७–८–९ के भंग को नं० १८ के समान जानना सूचना—पर्याप्तवत् जानना	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
			सूचना—परन्तु हरेक भंग में नपुंसक वेद छोड़कर शेष २ वेदों में से कोई १ वेद जानना				
		३रे गुण० में २० का भंग ऊपर के २४ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४, घटाकर २० का भंग जानना	३रे ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	(२) १ से १६ स्वर्ग में १ले २रे गुण० में २५ का भंग एक नपुंसक वेद घटाकर २४ का भंग जानना	१ले २रे गुण० में ७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(२) नवग्रैवेयक के देवों में १ले २रे गुण० में २३ का भंग ऊपर के २४ के भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर २३ का भंग जानना	१ले २रे गुण० में ७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	४थे गुण० में १९ का भंग पर्याप्त के २० के भंग में से स्त्री वेद घटाकर १९ का भंग जानना सूचना—सम्यग्दृष्टि मर कर स्त्री पर्याय में नहीं जाता	४थे गुण० में ६-७-८ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		३रे ४थे गुण० में १९ का भंग ऊपर के २३ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर १९ का भंग जानना	३रे ४थे गुण० में ६-७-८ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	(३) नवग्रैवेयक में १ले २रे गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ले २रे गु० में ७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान में ४थे गुण० में १९ का भंग ऊपर के २३ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४, घटाकर १९ का भंग जानना	४थे गुण० में ६-७-८ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना		४थे गुण० में १९ का भंग पर्याप्तवत् जानना	४थे गुण० में ६-७-८ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
					(४) नव अनुदिश और पंचानुत्तर देवों में ४थे गुण० में १९ का भंग पर्याप्तवत् जानना	४थे गुण० में ६-७-८ के भंग को० नं० १८ देखो	६-७-८ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
						परन्तु सूचना ऊपर के समान जानना	
१२ ज्ञान कुज्ञान ३, ज्ञान ३, ये ६ ज्ञान जानना	६	६ ३–३ के भंग भवनत्रिक से नवग्रैवेयक तक १ले २रे गुण० में ३ का भंग कुमति, कुश्रुति, कुअवधि ज्ञान ये ३ का भंग जानना भवनत्रिक से सर्वार्थ सिद्धि तक ४थे गुण० में ३ का भंग मति, श्रुति, अवधि ज्ञान ये ३ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के ३ का भंग जानना कुज्ञान जानना ३ ज्ञान	१ कुज्ञान ३ के भंग में से कोई १ कुज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (१) २–२–३–३ के भंग (१) भवनत्रिक देवों में १ले २रे गुण० में २ का भंग कुमति कुश्रुति ये २ कुज्ञान का भंग जानना (२) १ले स्वर्ग से नव-ग्रैवेयक तक के देवों में १ले २रे गुण० में २ का भंग कुमति कुश्रुति ये २ कुज्ञान जानना ४थे गुण० में ३ का भंग मति श्रुति अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान जानना (३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर के देवों में ४थे गुण० में ३ का भंग मति श्रुति अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के २ का भंग जानना २ का भंग ३ का भंग ३ का भंग	१ कुज्ञान २ के भंग में से कोई १ कुज्ञान जानना २ के भंग में से कोई १ कुज्ञान जानना ३ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना "
१३ संयम	१ असंयम	१ १ से ४ गुण० में १ असंयम जानना	१ असंयम	१ असंयम	१ १ले २रे ४थे गुण० में १ असंयम जानना	१ असंयम	१ असंयम

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन, अवधि, दर्शन ये (३)	३	३ २–३ के भंग १ले २रे गुण० में २ का भंग अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ दर्शन जानना ३रे ४थे गुण० में ३ का भंग अचक्षु द०, चक्षु द० अवधि दर्शन ये ३ दर्शन जानना	१ भंग २ का भंग ३ का भंग	१ दर्शन २ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	३ २–२–३–३ के भंग (१) भवनत्रिक में १ले २रे गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् जानना (२) १ले स्वर्ग से नव-ग्रैवेयक तक के देवों में १ले २रे गुण० में २ का भंग अचक्षु द०, चक्षु द०, ये २ का भंग ४थे गुण० में ३ का भंग सामान्यवत् तीनों दर्शन जानना (३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर तक के देवों में ४थे गुण० में ३ का भंग सामान्यवत् तीनों दर्शन जानना	१ भंग २ का भंग २ का भंग ३ का भंग ३ का भंग	१ दर्शन २ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना ,, ३ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना ,,
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ १–१–१ के भंग (१) भवनत्रिक देवों में १ से ४ गुण० में १ का भंग एक पीत लेश्या का भंग जानना (२) कल्प वासी देवों में १ से ४ गुण० में ३ का भंग पीत-पद्म-शुक्ल ये ३ शुभ लेश्या जानना	१ भंग १ का भंग ३ का भंग	१ लेश्या १ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	६ ३–३–१–१ के भंग (१) भवनत्रिक देवों में १ले २रे गुण० में ३ का भंग कृष्ण-नील-कापोत ये ३ अशुभ लेश्या जानना (२) कल्पवासी देवों में १ले २रे ४थे गुण० में ३ का भंग तीन शुभ	१ भंग ३ का भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना ,,

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) नवग्रैवेयक में १ से ४ गुण० में १ शुक्ल लेश्या जानना	१ शुक्ल लेश्या	१ शुक्ल लेश्या जानना	लेश्या जानना (२) नवग्रैवेयक देवों में १ले २रे ४थे गुण० में १ शुक्ल लेश्या जानना	१ शुक्ल लेश्या	१ शुक्ल लेश्या
		(३) नवअनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० में १ शुक्ल लेश्या जानना	१ शुक्ल लेश्या	१ शुक्ल लेश्या जानना	(२) नवअनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० में १ शुक्ल लेश्या जानना	१ शुक्ल लेश्या	१ शुक्ल लेश्या जानना
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ २–१ के भंग १ले गुण० में २ का भंग भव्य, अभव्य ये २ जानना २रे ३रे ४थे गुण० में	१ भंग २ का भंग १ भव्य जानना	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था १ भव्य जानना	२ २–१ के भंग १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् जानना २रे ४थे गुण० में १ भव्य जानना	१ भंग २ का भंग १ भव्य जानना	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था १ भव्य जानना
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० १ देखो	६ १–१–१–२–३–२ के भंग (१) भवनत्रिक देवों में नवग्रैवेयक तक के देवों में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना ३रे गुण० में १ मिश्र जानना (२) भवनत्रिक देवों में ४थे गुण० में २ का भंग उपशम, क्षयोपशम	सारे भंग १ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिश्र २ का भंग	१ सम्यक्त्व १ मिथ्यात्व १ सासादन १ मिश्र २ में से कोई १ भंग जानना	५ मिश्र घटाकर (५) १–१–३ के भंग (१) भवनत्रिक देवों नवग्रैवेयक तक के देवों में १ले गुण० में १ मिथ्यात्व २रे गुण० में १ सासादन (२) १ले स्वर्ग से सर्वार्थ सिद्धि तक के देवों में ४थे गुण० में ३ का भंग उपशम (द्वितीयोपशम)	सारे भंग १ मिथ्यात्व १ सासादन ३ का भंग	१ सम्यक्त्व १ मिथ्यात्व १ सासादन ३ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(वेदक) सम्यक्त्व ये ३ का भंग जानना (३) १ले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के देवों में ४थे गुण० में ३ का भंग उपशम क्षायिक क्षयोपशम सम्यक्त्व ये ३ जानना (४) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० में २ का भंग क्षायिक-क्षयोपशम सम्यक्त्व ये २ भंग जानना सूचना—भवनत्रिक देवों में पर्याप्त अवस्था में भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं हो सकता है।	३ का भंग २ का भंग	३ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व जानना २ के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	क्षायिक क्षयोपशम सम्यक्त्व ये ३ का भंग सूचना—यह ३ का भंग भवनत्रिक देवों में नहीं होना (देखो गो० क० गा० ३०५)		
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ १ से ४ गुण० में १ संज्ञी जानना	१ संज्ञी	१ संज्ञी	१ १ले २रे ४थे गुण० में १ संज्ञी जानना	१ संज्ञी	१ संज्ञी
१९ आहारक आहारक	२ अनाहारक	१ १ से ४ गुण० में १ आहारक जानना	१ आहारक	१ आहारक	२ १ले २रे ४थे गुण० में १ अनाहारक विग्रह गति में जानना १ आहारक-आहारक पर्याप्ति के मिश्र अवस्था में जानना	दोनों अवस्था १ अनाहारक १ आहारक	१ अवस्था १ अनाहारक १ आहारक

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ६ दर्शनोपयोग ३ ये ९ जानना	९	९ ५–६–९ के भंग (१) भवनत्रिक देवों से नवग्रैवेयक तक के देवों में १ले २रे गुण० के ५ का भंग कुमति, कुश्रुति, कुअवधि ज्ञान और अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये ५ का भंग जानना ३रे गुण० में ६ का भंग ऊपर के ५ के भंग में अवधि दर्शन जोड़कर ६ का भंग जानना (२) भवनत्रिक देव से सर्वार्थ सिद्धि तक के देवों में ४थे गुण० में ६ का भंग मति, श्रुति, अवधि ज्ञान और अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, ये ६ का भंग जानना	१ भंग ५ का भंग ६ का भंग ६ का भंग	१ उपयोग ५ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	८ कुअवधि ज्ञान घटाकर (८) ४–४–६–६ के भंग (१) भवनत्रिक देवों में १ले २रे गुण० में ४ का भंग पर्याप्त के ५ के भंग में से कुअवधि ज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना (२) १ले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के देवों में १ले २रे गुण० में ४ का भंग कुमति, कुश्रुति, अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये ४ का भंग जानना ४थे गुण० में ६ का भंग पर्याप्तवत् जानना (३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० में ६ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग ४ का भंग ४ का भंग ६ का भंग ६ का भंग	१ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना ६ के भंग में से कोई १ उपयोग ६ के भंग में से कोई १ उपयोग
२१ ध्यान आर्तध्यान ४ रौद्रध्यान ४, धर्मध्यान २, (आज्ञा वि० अपायवि०) ये १० जानना	१०	१० ८–९–१० के भंग १ले २रे गुण० में ८ का भंग आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४ ये ८ का भंग जानना	सारे भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	९ अपाय विचय धर्मध्यान घटाकर (९) ८–९– के भंग	भंग	१ ध्यान

१	२	३	४	५	६	७	८
		३रे गुण० में ९ का भंग ऊपर के ८के भंग में आज्ञा विचय धर्म ध्यान १, जोड़कर ९ का भंग जानना ४थे गुण० में १० का भंग ऊपर के ९ के भंग में अपाय विचय धर्म ध्यान १, जोड़कर १० का भंग जानना	९ का भंग १० का भंग	९ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना १० के भंग में से कोई १ ध्यान जानना	१ले २रे गुण० में ८ का भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में ९ का भंग आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञा विचय धर्म ध्यान १ ये ९ का भंग जानना	८ का भंग ९ का भंग	८ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना ९ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना
२२ आश्रव ५२ औ० मिश्रकाययोग १, औदारिक काययोग १, आ० मिश्र का० १, आ० काययोग १, नपुंसक वेद १, ये ५ घटाकर (५२)		५० कार्माण काययोग १, वै० मिश्र काययोग १, ये २ घटाकर (५०) ५०—४५—४१—४६—४४—४०—४० के भंग (१) भवनत्रिक देवों से १६वे स्वर्ग तक के देवों में	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना ११ से १८ के भंगों में से	४३ मनोयोग ४, वचनयोग ४, वै० काययोग १ ये ९ घटाकर (४३) ४३—३८—३३—४२—३७—३३—३३ के भंग (१) भवनत्रिक देवों से १६वे स्वर्ग तक के देवों में	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग ११ से १८ के भंगों में से
		१ले गुण० में ५० का भंग सामान्य के ५२ के भंग में से कार्माण काययोग १, वै० मिश्र काययोग १ ये २ घटाकर ५० का भंग जानना	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ देखो	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ले गुण० में ४३ का भंग सामान्य के ५२ के भंग में से मनोयोग ४, वचनयोग ४, वै० काययोग १ ये ९ घटाकर ४३ का भंग जानना	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ देखो	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		२रे गुण० में ४५ का भंग ऊपर के ५० के भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ४५ तक के भंग जानना	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२रे गुण० में ३८ का भंग ऊपर के ४३ के भंग में से ५	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ देखो	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		३रे ४थे गुण० में ४१ का भंग ऊपर के ४५ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर ४१ का भंग जानना	३रे ४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग को० नं० १८ देखो	६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	मिथ्यात्व घटाकर ३८ का भंग जानना ४थे गुण० में ३३ का भंग ऊपर के ३८ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय ४, स्त्री वेद १, ये ५ घटाकर ३३ का भंग जानना सूचना—यह ३३ का भंग भवनत्रिक देवों में नहीं होता	४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग को० नं० १८ देखो	६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(२) नवग्रैवेयक के देवों में १ले गुण० में ४९ का भंग ऊपर के ५० के भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४९ का भंग जानना	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ देखो	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग	(२) नवग्रैवेयक के देवों में १ले गुण० में ४२ का भंग ऊपर के ४३ के भंगों में से स्त्री वेद १ घटाकर ४२ का भंग जानना	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ देखो	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		२रे गुण० में ४४ का भंग ऊपर के ४५ के भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४४ का भंग जानना	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ देखो	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग	२रे गुण० में ३७ का भंग ऊपर के ३८ के भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ३७ का भंग जानना	२रे गुण० में १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ देखो	१० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		३रे ४थे गुण० में ४० का भंग ऊपर के ४१ के भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४० का भंग जानना	३रे ४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग को० नं० १८ देखो	६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	४थे गुण० में ३३ का भंग ऊपर के ३३ का भंग ही (१६वें स्वर्ग तक के ४थे गुण स्थान के ३३ का भंग) यहां जानना	४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग को० नं० १८ देखो	६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० में ४० का भंग ऊपर के नव ग्रैवेयक के ४० का भंग ही यहां जानना	४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग को० नं० १८ देखो	"			

१	२	३	४	५	६	७	८
					(३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० में ३३ का भंग ऊपर के नवग्रैवेयक के ३३ का भंग ही यहां जानना	४थे गुण० में ६ से १६ तक के भंग को० नं० १८ देखो	६ से १६ तक के भंगों में से कोई १ भंग
२३ भाव उपशम क्षायिक क्षयोपशम स० ३, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, देवगति १, कषाय ४, स्त्री-पुरुष वेद २, मिथ्या दर्शन १, लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, परिणामिक भाव ३, ये ३७ भाव जानना	३७	३७ २५-२३-२४-२६-२७-२५-२६-२६-२४-२२-२६-२७-२५ के भंग जानना (१) भवनत्रिक देवों में १ले गुण० में २५ का भंग कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्धि ५, देवगति १, कषाय ४, स्त्री-पुरुष वेद २, पीत लेश्या १, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, परिणामिक भाव ३ ये २५ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ले गुण० में १७ का भंग को०नं० १८ देखो परन्तु यहां नपुंसक लिंग छोड़कर स्त्री पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ के भंगों में कोई १ भंग जानना	३६ कुअवधि ज्ञान घटाकर (३६) २६-२४-०-२६-२४-२८-२३-२१-२५-२६ के भंग (१) भवनत्रिक देवों में १ले गुण० में २६ का भंग पर्याप्त के २५ के भंग में से कुअवधि ज्ञान पीत लेश्या २ घटाकर और अशुभ लेश्या ३ जोड़कर २६ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ले गुण० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		२रे गुण० में २३ का भंग ऊपर के २५ के भंग में से मिथ्या दर्शन १, अभव्य १, ये २ घटाकर २३ का भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ देखो परन्तु यहां भी स्त्री-पुरुष इन दोनों में से कोई १ वेद जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२रे गुण० में २४ का भंग पर्याप्त के २३ के भंग में से कुअवधि ज्ञान १, पीत लेश्या १ ये २ घटाकर और अशुभ लेश्या ३ जोड़कर २४ का भंग ४थे गुणस्थान में यहाँ	२रे गुण० में १६ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		३रे गुण० मे २५ का भंग ऊपर के २६ के भंग में भवधि दर्शन जोड़कर २५ का भंग जानना	३रे गुण० मे १६ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु यहां भी स्त्री पुरुष इन दो वेदों में से कोई १ वेद जानना	१६ का भंग मे से कोई १ भंग जानना	४था गुण० नहीं होना कारण ४थे गुण० मे मर कर आने वाला जीव भवनत्रिक देव नहीं बनता.		
		४थे गुण० मे २६ का भंग उपशम-क्षयोपशम सम्यक्त्व २ ज्ञान ३, दर्शन ३ लब्धि ५, देवगति १, कषाय ४, स्त्री-पुरुष लिंग २, लेश्या पीत १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये २६ के भंग जानना	४थे गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो परन्तु यहां ही स्त्री पुरुष इन दोनों वेदों में से कोई वेद जानना	१७ के भंगों मे से कोई १ भंग जानना	(२) कल्पवासी देवों में १ले गुण० में २६ का भंग पर्याप्त के २७ के भंग में से कुअवधि ज्ञान घटाकर २६ का भंग जानना	१ले गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो परन्तु यहां भी स्त्री पुरुष वेदों में से कोई १ वेद जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(२) कल्पवासी देवों में १ले गुण० में २७ का भंग कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्धि ५, देवगति १ कषाय ४, स्त्री-पुरुष लिंग २, शुभ लेश्या ३, मिथ्यादर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये २७ का भंग जानना	१ले गुण० में १७ का भंग ऊपर के भवनत्रिक देवों के १ले गुण० के १७ के भंग के समान जानना	१७ के भंगों मे से कोई १ भंग जानना	२रे गुण० में २४ का भंग पर्याप्त के २५ के भंग में से कुअवधिज्ञान घटाकर २४ का भंग जानना ४थे गुण० में २८ का भंग पर्याप्त के २६ के भंग में से स्त्री-वेद १ घटाकर २८ का भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग पर्याप्तवत् जानना ४थे गुण० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१६ के भंगों में कोई १ भंग जानना १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
		२रे गुण० में २५ का भंग ऊपर के २७ के भंग में से मिथ्यादर्शन १, अभव्य १ ये २ घटाकर २५ का भंग जानना	२रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ देखो परन्तु यहां भी स्त्री पुरुष वेदों में से कोई १ वेद जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	(३) नवग्रैवेयक देवों में १ले गुण० में २३ का भंग पर्याप्त के २४ के भंग में से कुअवधि ज्ञान घटाकर २३ का भंग जानना	१ले गुण० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना	"
		३रे गुण० में २६ का भंग ऊपर के	३रे गुण० में	"	२रे गुण० में २१ का भंग पर्याप्त के २२ के भंग में	२रे गुण० में १६ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		२५ के भंग में अवधि दर्शन १ जोड़कर २६ का भंग जानना ४थे गुण० में २६ का भंग उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम सम्यक्त्व ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, क्षयोपशम लब्धि ५, देवगति १, कषाय ४, स्त्री पुरुष वेद २ शुभ लेश्या ३, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये २६ का भंग जानना	१६ का भंग ऊपर के २रे गुण० के समान जानना ४थे गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो परन्तु यहां भी स्त्री-पुरुष इन दो वेदों में के कोई १ वेद जानना	१७ के भंग में से कोई १ भंग जानना	मे कुअवधि ज्ञान १ घटाकर २१ का भंग जानना ४थे गुण० में २६ का भंग पर्याप्तवत् जानना (४) नवअनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० में २६ का भंग पर्याप्त के २५ के भंग में उपशम (द्वितीयोपशम) सम्यक्त्व जोड़कर २६ का भंग जानना	४थे गुण० में १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना "	१७ के भंग में से कोई १ भंग जानना "
		(३) नवग्रैवेयक देव में १ले २रे ३रे ४थे गुण० में अनुक्रम से २४–२४–२३–२६ के भंग ऊपर के कल्पवासी देवों के २७-२५-२६-२६ के हरेक भंग में से स्त्री वेद १, पीत-पद्म ये २ लेश्या घटाकर २४–२०–२३–२६ के भंग जानना	अनुक्रम से १७–१६–१६–१७ के भंग को० नं० १८ देखो परन्तु हरेक भंग में यहां पुरुष वेद ही जानना	अनुक्रम से १७–१६–१६–१७ के हरेक भंगों में से कोई १ भंग जानना	सूचना—१२वे स्वर्ग से सर्वार्थ सिद्धि तक के देव मनुष्यगति में ही आकर जन्म लेते हैं और यहां मरकर मनुष्य गति में ही जाते हैं (देखो गो० क० गा० ५४२-५४३)		
		(४) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में ४थे गुण० के २५ का भंग ऊपर के नव ग्रैवेयक के २६ के भंग में से उपशम (द्वितीयोपशम) सम्यक्त्व घटाकर २५ का भंग जानना सूचना आगे देखो	४थे गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो परन्तु यहां भी पुरुष वेद ही जानना	१७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना			

सूचना—यहां ४था गुण स्थान ही होता है, १ले २रे ३रे गुण स्थान नहीं होते।

२४ **अवगाहना**—प्रारम्भी भवनत्रिक आदि देवों के उत्कृष्ट अवगाहना २५ धनुष की जानना, इसके आगे सर्वार्थ सिद्धि तक के देवों में घटति-घटति सर्वार्थ सिद्धि के देवों में एक हाथ की अवगाहना जानना, मध्य के अनेक भेद होते हैं।

२५ **बन्ध प्रकृतियां** – १०४ (१) सामान्यतया देवगति में पर्याप्त अवस्था में १०४ प्रकृतियों का बंध जानना, बंध योग्य १२० प्रकृतियों में से नरकद्विक २ नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियकद्विक २, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति ३, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १ आहारकद्विक २, ये १६ प्रकृतियां घटाकर १०४ जानना।

१०३, (२) अपर्याप्त अवस्था में ऊपर के १०४ में से मनुष्यगति १, तिर्यंचायु १ ये २ घटाकर और तीर्थंकर प्र० १ बढ़ाकर १०३ प्रकृतियों का बंध जानना।

सूचना—जिन जीवों ने मनुष्यगति में सम्यग्दर्शन पूर्वक केवली या श्रुत केवली के चरण मूल में तीर्थंकर प्रकृति बंधने के योग्य परिणामों के विशुद्धता का प्रारम्भ कर दिया हो परन्तु विशुद्धता की अन्तिम अवस्था में वर्तमान आयु पूरी हो जाय तो देवगति में निर्वृत्यपर्याप्तक अथवा पर्याप्त अवस्था में तीर्थंकर प्रकृति का बंध पड़ जाता है।

१०२, (३) सामान्यतया अपर्याप्त अवस्था में ऊपर के १०४ में से तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ ये २ घटाकर १०२ प्र० जानना।

१०३, (४) भवनत्रिक देव और सब प्रकार की देवियां के पर्याप्त अवस्था में ऊपर के १०४ में से तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १०३ प्र० का बंध जानना।

१०१, (५) भवनत्रिक देव और सब प्रकार की देवियां के अपर्याप्त अवस्था में—ऊपर के १०३ में से तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ ये २ घटाकर १०१ प्र० का बंध जानना।

१०४ (६) सौधर्म ईशान्य स्वर्ग के देवों के पर्याप्त अवस्था में—१०४ प्रकृतियों का बंध होता है।

१०२ (७) सौधर्म ईशान्य स्वर्ग के देवों के अपर्याप्त अवस्था में सामान्य आलाप के तरह १०२ प्र० जानना।

१०१, (८) ३रे १२वे स्वर्ग तक के देवों में पर्याप्त अवस्था में—ऊपर के १०४ में से एकेन्द्रिय जाति १, आतप १ साधारण १ ये ३ घटाकर १०१ प्र० का बंध जानना।

९९, (९) ३रे से १२वे स्वर्ग तक के देवों के अपर्याप्त अवस्था में—ऊपर के १०१ प्र० में से तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ ये २ घटाकर ९९ प्र० का बंध जानना।

९७, (१०) १३वे स्वर्ग से १६वे स्वर्ग तक के देवों में और नवग्रैवेयक तक के देवों के पर्याप्त अवस्था में—ऊपर के १०१ में से तिर्यंच द्विक २, तिर्यंचायु १, उद्योत १ ये ४ घटाकर ९७ प्र० का बन्ध जानना।

९६, (११) १३वे स्वर्ग से १६वे स्वर्ग तक के देवों में और नवग्रैवेयक तक के देवों के अपर्याप्त अवस्था में—ऊपर के ९७ में से मनुष्यायु १ घटाकर ९६ प्र० का बंध जानना।

७२, (१२) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों के पर्याप्त अवस्था में—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (३ महानिद्रा घटाकर) वेदनीय १, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन कषाय १२, हास्यादिक नोकषाय ६, पुरुष वेद १, मनुष्य द्विक २, मनुष्यायु १, उच्चगोत्र १, अन्तराय ५, नामकर्म प्र० ३१ (पंचेन्द्रिय जाति १, निर्माण १, औ० द्विक २, तैजस कार्माण शरीर २, समचतुरस्रसंस्थान १, वज्रवृषभनाराचसंहनन १, स्पर्शादि ४, अगुरु लघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्तविहायोगति १, प्रत्येक १, बादर १, त्रस १, पर्याप्त १, सुभग १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १, अयशः कीर्ति १, तीर्थंकर प्रकृति १ ये ३१) ये ७२ प्र० का बंध जानना।

७१, (१३) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में—ऊपर के ७२ प्रकृतियों में से मनुष्यायु घटाकर अपर्याप्त अवस्था में ७१ प्र० का बंध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७७, (१) सामान्य आलाप पर्याप्त अवस्था के देवों में—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (३ महानिद्रा घटाकर) वेदनीय २, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व-सम्यक् प्रकृति ३, कषाय १६, हास्यादि नोकषाय ६, स्त्री-पुरुष वेद २, देवद्विक २, देवायु १, उच्चगोत्र १, अंतराय ५, नामकर्म प्र० २८ (पंचेन्द्रिय जाति १, निर्माण १, वैक्रियकद्विक २, तैजस-कार्माण शरीर २, समचतुरस्रसंस्थान १, स्पर्शादि ४, अगुरु लघु १, उपघात १, परघात १, स्वासोच्छ्वास १, प्रशस्तविहायो गति १, प्रत्येक १, बादर १, त्रस १, पर्याप्त १, सुभग १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १, ये २८, ये ७७ प्र० का उदय जानना।

७६ (२) सामान्य आलाप अपर्याप्त अवस्था के देवों में—ऊपर के ७७ में से उच्छ्वास १, वैक्रियक काययोग १ ये घटाकर और वै० मिश्र काययोग १, जोड़कर ७६ प्र० का उदय जानना।

७६ (३) भवनत्रिक देव और १६वें स्वर्ग तक के देव के स्त्री वेदी के पर्याप्त अवस्था में—ऊपर के सामान्य के ७७ में से स्त्री वेद १ घटाकर ७६ प्र० का उदय जानना।

७६ (४) भवनत्रिक देव और १६वें स्वर्ग तक के देव के पुरुष वेदी में पर्याप्त अवस्था में—ऊपर के सामान्य के ७७ में से पुरुष वेद घटाकर ७६ प्र० का उदय जानना।

७५ (५) भवनत्रिक देव और १६वें स्वर्ग तक के पुरुष वेदी देव के अपर्याप्त अवस्था में सामान्य ७६ में से उच्छ्वास १, वै० काययोग १ ये २ घटाकर और वै० मिश्रकाय योग १ जोड़कर ७५ प्र० का उदय जानना।

७५ (६) भवनत्रिक देव और १६वें स्वर्ग तक के स्त्री वेदी देव के अपर्याप्त अवस्था में—पुरुष वेदी के ७५ में से पुरुष वेद घटाकर शेष ७४ में स्त्री वेद जोड़कर ७५ प्र० का उदय जानना।

७६ (७) नवग्रैवेयक के देवों में पर्याप्त अवस्था में पुरुष वेदी में सामान्य के ७७ में से स्त्री वेद १ घटाकर ७६ का प्र० का उदय जानना।

७५ (८) नवग्रैवेयक के देवों में अपर्याप्त अवस्था में पुरुष वेदी ही होते हैं इसलिये ऊपर के पर्याप्त के ७६ में से वै० काययोग १, स्वासोच्छ्वास १ ये २ घटाकर शेष ७४ में वै० मिश्र काययोग जोड़कर ७५ प्र० का उदय जानना।

७० (९) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों पर्याप्त अवस्था में—नवग्रैवेयक के ७६ प्र० में से मिथ्यात्व १, सम्यग्मिथ्यात्व १, अनन्तानुबंधी कषाय ४, ये ६ घटाकर ७० प्र० उदय जानना।

६९ (१०) नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान के देवों में अपर्याप्त अवस्था में—पर्याप्त के ७० प्र० में से उच्छ्वास १, वै० काययोग १ ये २ घटाकर और वै० मिश्रकाययोग १ जोड़कर ६९ प्र० का उदय जानना।

सूचना—नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान में ये सब जीव सम्यग्दृष्टि ही होते हैं।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४७ (१) भवनत्रिक देव से १२वें स्वर्ग तक के देवों में तिर्यंचायु १ घटाकर १४७ प्र० का सत्व जानना।

१४६ (२) १३वें स्वर्ग से सर्वार्थ सिद्धि तक के देवों में—नरकायु १, तिर्यंचायु १ ये २ घटाकर १४६ प्र० का सत्ता जानना।

१४६ (३) भवनत्रिक देवों और कल्पवासी देवियों में—तीर्थंकर प्र० १, नरकायु १ ये २ घटाकर १४६ प्र० का सत्ता जानना।

२८ संख्या—असंख्यात देव जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० स्पर्शन—(१) सातराजु—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

(२) अठारराजु—१६वें स्वर्ग का देव ३रे नरक तक उपदेश देने के लिये आते हैं इस अपेक्षा।

(३) सातराजु—सर्वार्थ सिद्धि के अहमीन्द्र देव मारणांतिक समुद्घात में मध्य लोक तक अपने आत्म प्रदेश को फैला सकते हैं, इस अपेक्षा जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा दस हजार वर्ष से लेकर ३३ सागर का काल प्रमाण जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त तक तिर्यंच या मनुष्य पर्याय में रहकर दुबारा देव बन सकता है अथवा असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक भ्रमण करके यदि मोक्ष न गया हो तो इतना भ्रमण करने के बाद फिर जरूर देव बनना है।

३३ जाति (योनि)—४ लाख योनि जानना।

३४ कुल—२६ लाख कोटिकुल जानना।

कोष्टक नं० २०

क्र०	स्थान नाम सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	०	अतीत गुण स्थान जानना	०	०	सूचना—यहां भी अपर्याप्त अवस्था नहीं है।
२ जीव समास	०	" जीव समास "	०	०	
३ पर्याप्ति	०	" पर्याप्ति "	०	०	
४ प्राण	०	" प्राण "	०	०	
५ संज्ञा	०	" संज्ञा "	०	०	
६ गति	०	गति रहित "	०	०	
७ इन्द्रिय जाति	०	इन्द्रिय रहित "	०	०	
८ काय	०	काय रहित "	०	०	
९ योग	०	योगरहित अयोग "	०	०	
१० वेद	०	अपगत वेद "	०	०	
११ कषाय	०	अकषाय "	०	०	
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान "	१ केवल ज्ञान	१ केवल ज्ञान	
१३ संयम	०	असंयम, संयमासंयम, संयम ये ३ के रहित जानना	०	०	
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१ केवल दर्शन	१ केवल दर्शन	
१५ लेश्या	०	अलेश्या जानना	०	०	
१६ भव्यत्व	०	अनुभय जानना	०	०	
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१ क्षायिक सम्यक्त्व	१ क्षायिक सम्यक्त्व	
१८ संज्ञी	०	अनुभय "	०	०	
१९ आहारक	०	अनुभय "	०	०	
२० उपयोग	२	२ केवल ज्ञानोपयोग, केवल दर्शनोपयोग दोनों युगपत् जानना	२ युगपत जानना	२ युगपत् जानना	
२१ ध्यान	०	ध्यानातीत जानना	०	०	

१	२	३	४	५	६-७-८
२२ आस्रव	०	आस्रव रहित जानना	०	०	
२३ भाव	५	५ क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक वीर्य, क्षायिक सम्यक्त्व, जीवत्व ये ५ भाव जानना सूचना—कोई आचार्य क्षायिक भाव ९ और जीवत्व १ ये १० भाव मानते हैं।	५ भाव जानना	५ भाव जानना	

२४ **अवगाहना**—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—अबंध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—अनुदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—असत्ता जानना।

२८ **संख्या**—अनन्तसिद्ध जानना।

२९ **क्षेत्र**—४५ लाख योजन सिद्ध शिला (सिद्धों का आवास) जानना।

३० **स्पर्शन**—सिद्ध भगवान् स्थित है।

३१ **काल**—सर्वकाल (अनन्तानन्त काल) जानना।

३२ **अन्तर**—अन्तर नहीं।

३३ **जाति (योनि)**—यहां जाति नहीं।

३४ **कुल**—यहां कुल नहीं।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान मिथ्यात्व, सासादन	२	१ मिथ्यात्व गुण० जानना	१	१	२ मिथ्यात्व, सासादन	२ दोनों जानना	१ कोई १ गुण०
२ जीवसमास एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त " बादर " " सूक्ष्म अपर्याप्त " बादर " ये ४ जानना	४	२ १ले गुण० में २ का भंग एकेन्द्रिय सूक्ष्म प० और बादर पर्याप्त ये २ जानना	१ समास २ में से कोई १ समास जानना	१ समास २ में से कोई १ समास जानना	२ २-१ के भंग १ले गुण० में २ का भंग एकेन्द्रिय सूक्ष्म और बादर अपर्याप्त में २नों जानना २रे गुण स्थान में १ का भंग एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त ही जानना	१ समास २-१ के भंगों में से कोई १ समास	१ समास २-१ के भंगों में से कोई १ समास
३ पर्याप्ति आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास ये ४ जानना	४	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग जानना	१ भंग ४ का भंग जानना	३ श्वासोच्छ्वास घटाकर (३) १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ समान जानना लब्धि रूप ४ पर्याप्ति	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण आयु, कायबल, स्पर्श- नेन्द्रिय, श्वासो० ये ४ प्राण जानना	४	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग जानना	१ भंग ४ का भंग जानना	३ श्वासोच्छ्वास घटाकर (३) १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले २रे गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१	१ले २रे गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१	१ले २रे गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१
८ काय पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति ये ५ स्थावर काय जानना	५	५ १ले गुण० में ५ का भंग को० नं० १७ के ६ के भंग में से त्रसकाय १ घटाकर ५ का भंग जानना	१ काय पांचों में से कोई १ काय जानना	१ काय पांचों में से कोई १ काय	५ १ले २रे गुण० में ५ का भंग को० नं० १७ के ६ के भंग में से त्रसकाय १ घटाकर ५ का भंग जानना २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के ४ के भंग में से त्रसकाय १ घटाकर ३ का भंग जानना सूचना—मिथ्यात्व और सासादन गुण स्थान में मरने वाला जीव जिस गति, जिस इन्द्रिय, जिस काय, जिस आयु में जाकर जन्म लेने वाला है उसी गति, इन्द्रिय काय, आयु का उदय अपर्याप्त अवस्था में प्रारम्भ हो जाता है ऐसा जानना।	१ काय ५–३ के हरेक भंग में से कोई १ काय जानना	१ काय ५–३ में से कोई १ काय

१	२	३	४	५	६	७	८
९ योग ३	औ०मिश्रकाययोग १, औ० काययोग १, कार्माणकाययोग १, ये ३ योग जानना	१ले गुण० में १ औदारिक काययोग जानना को० नं० १७ देखो	१ औ० काययोग जानना	१ औ० काययोग जानना	२ कार्माण काययोग १, औ० मिश्र काययोग १, ये २ योग जानना १-२ के भंग १ले २रे गुण० में १ का भंग विग्रह गति में कार्माण काययोग जानना २ का भंग आहार पर्याप्ति की अवस्था में कार्माण काययोग और औ० मिश्रकाययोग ये २ का भंग जानना	१ भंग १-२ के भंग में से कोई १ भंग जानना	१ योग १-२ के भंगों में से कोई १ योग जानना
१० वेद १		१ नपुंसक वेद जानना १ले गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१ नपुंसक वेद	१ नपुंसक वेद	१ १ले २रे गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१ नपुंसक वेद	नपुंसक वेद
११ कषाय २३	स्त्री-पुरुष वेद घटाकर (२३)	२३ १ले गुण० के २३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग ७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग	२३ १ले २रे गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत् जानना	सारे भंग ७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७-८-९ के भंग में से कोई १ भंग
१२ ज्ञान २	कुमति, कुश्रुत ये (२)	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान	२ १ले २रे गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान
१३ संयम १	म	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन १		१ले गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१	१ले २रे गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
१५ लेश्या	३ अशुभ लेश्या	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंगों में से कोई १ लेश्या
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ अवस्था भव्य-अभव्य में से कोई १ जानना	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था	२ २-१ के भंग १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् २रे गुण० में १ का भंग एक भव्य जानना	१ भंग २-१ के भंग में से कोई १ भंग	१ अवस्था २-१ के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना
१७ सम्यक्त्व	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ १-१ के भंग १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना	१ भंग १-१ के भंगों में से कोई १ भंग	१ सम्यक्त्व १-१ के भंगों में कोई १ सम्यक्त्व जानना
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ले गुण० में १ असंज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१ असंज्ञी जानना	१
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ १ले गुण० में १ आहारक जानना	१	१	२ १ले २रे गुण० में (१) विग्रह गति में अनाहारक जानना (२) आहार पर्याप्तिक समय आहारक अवस्था जानना	दोनों अवस्था आहारक, अनाहारक	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग	३ कुमति, कुश्रुति और अचक्षु दर्शन ये (३)	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान	८	८ १ले गुण० में ८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंग में से कोई १ ध्यान	८ १ले २रे गुण० में ८ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंग में से कोई १ ध्यान
आर्त ध्यान ४, रौद्रध्यान ४ ये (८)							
२२ आस्रव	३८	३६ कार्माण काययोग १, औ० मिश्रकाययोग १, ये २ घटाकर (३६) १ले गुण० में ३६ का भंग को० नं० १७ के समान	सारे भंग ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना	३७ औ० काययोग १ घटाकर (३७) ३७–३२ के भंग १ले गुण० में ३७ का भंग को० नं० १७ के समान २रे गुण० में ३२ का भंग ऊपर के ३७ के भंग में से मिथ्यात्व ५, घटाकर ३२ का भंग	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ११ से १८ तक के भंग जानना १० से १७ तक के भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग सारे भंग में से कोई १ भंग जानना ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना १० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
मिथ्यात्व ५, अविरत ७, (त्रिमक एकेन्द्रिय जाति का स्पर्शनेन्द्रिय विषय १ - हिंस्य ६ ये ७) स्त्री-पुरुष वेद घटाकर कषाय २३, योग ३ ये ३८ जानना							
२३ भाव	२४	२४ १ले गुण० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२४ २४–२२ के भंग १ले गुण० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में २२ का भंग ऊपर के २४ के भंग में से मिथ्यादर्शन १, अभव्य १ ये २ घटाकर २२ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के १ भंग १७ का भंग पर्याप्तवत् जानना १६ का भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
कुज्ञान २, अचक्षु दर्शन १, लब्धि ५, तिर्यंच गति १, कषाय ४, नपुंसक लिंग १, अशुभ लेश्या ३, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३ ये २४ जानना							

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक स्थावर काय के जीवों की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवे भाग विग्रह गति में जानना और उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार (१०००) योजन की स्वयं भूरमण द्वीप के वनस्पतिकाय कमल की जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०६ (१) पर्याप्त अवस्था में १२० प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, आहारद्विक २, वै० द्विक २, तीर्थंकर प्र० १, ये ११ घटाकर १०६ प्र० बंध योग्य जानना। लब्ध्य पर्याप्तक जीव के भी १०६ प्र० बंध योग्य जानना कारण इनके तिर्यंचायु और मनुष्यायु का बंध अपर्याप्त अवस्था में ही होता है।

१०७ (२) अपर्याप्त अवस्था में—निर्वृत्य पर्याप्तक अवस्था में तिर्यंचायु और मनुष्यायु का बंध नहीं होता है इसलिये ऊपर के १०६ में से ये २ आयु घटाकर १०७ प्र० का बंध जानना (देखो गो० क० गा० ११३-११४)

२६ **उदयप्रकृतियां**—८० उदययोग्य १२२ प्रकृतियों में से सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, स्त्री वेद १, पुरुष वेद १, नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, मनुष्यद्विक २, मनुष्यायु १, द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय-पंचेन्द्रिय जाति ४, आहारकद्विक २, वैक्रियकद्विक २, औदारिक अंगोपांग १, हुंडक छोड़कर शेष ५ संस्थान, संहनन ६, विहायोगति २, स्वरद्विक २, त्रस १, सुभग १, आदेय १, उच्चगोत्र १, तीर्थंकर प्र० १ ये ४२ घटाकर ८० प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४५ मिथ्यात्व गुण स्थान में नरकायु १, देवायु १, तीर्थंकर प्र० १, ये ३ घटाकर १४५ जानना।

१४३ सासादन गुण० में ऊपर के १४५ में से आहारकद्विक २ घटाकर १४३ की सत्ता जानना।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र** सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा एकेन्द्रिय के क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गलपरावर्तन काल प्रमाण जानना।

३२ **अन्तर** नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से दो हजार सागर और एक कोटिपूर्व प्रमाण जानना।

३३ **जाति (योनि)**—५२ लाख योनि जानना। पृथ्वी जल, अग्नि, वायु, नित्यनिगोद, इतरनिगोद ये हरएक की ७ लाख और [प्रत्येक वनस्पति की १० लाख मिलकर ५२ लाख योनि जानना]।

३४ **कुल**—६७ लाख कोटिकुल (पृथ्वीकाय २८, जलकाय ७, अग्निकाय ३, वायुकाय ७, वनस्पतिकाय २२ लाख कोटिकुल) जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ मिथ्यात्व गुण०	१	१	२ मिथ्यात्व, सासादन	दोनों गुण० मिथ्यात्व, सासादन	१ गुण० दो में से कोई एक गुण०
२ जीवसमास	२ द्वीन्द्रिय पर्याप्त, अप०	१ १ले गुण० में द्वीन्द्रिय पर्याप्त	१	१	१ १ले २रे गुण० में द्वीन्द्रिय अपर्याप्त	१	१
३ पर्याप्ति	५ मनपर्याप्ति घटाकर (५)	५ १ले गुण० में ५ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग ५ का भंग	१ भंग ५ का भंग	३ मन-भाषा-श्वासो० ये ३ घटाकर (३) १ले २रे गुण० में ३ का भंग आहार, शरीर, इन्द्रिय पर्याप्ति ये तीन भंग जानना लब्धि रूप ५ पर्याप्ति	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण	६ आयु, कायबल, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय श्वासोच्छ्वास, वचन, बलप्राण, ये ६ जानना	६ १ले गुण० में ६ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६का भंग	४ वचनबल, श्वासोच्छ्वास ये २ घटाकर (४) १ले २रे गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
५ संज्ञा	४	४	१ भंग	१ भंग	४	१ भंग	१ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
	को० नं० १ देखो	१ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान	४ का भंग	४ का भंग	१ले २रे गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान	४ का भंग	४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१	१ तिर्यंच गति	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ द्वीन्द्रिय जाति	१	१	१ द्वीन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ त्रसकाय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
९ योग औ० मिश्रकाय योग १ औदारिककाय योग १ कार्माणकाय योग १ अनुभय वचन योग १ ये ४ योग जानना		२ औ० काय योग १ अनुभय वचन योग १ ये २ जानना १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग २ का भंग	१ योग २ के भंग में से कोई १ योग जानना	२ औ० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १ ये २ जानना १–२ के भंग १ले २रे गुण० में १ का भंग–विग्रहगति में कार्माणकाय योग जानना २ का भंग–आहार पर्याप्ति के समय कार्माणकाय योग औ० मिश्र योग जानना	१ भंग १–२ के भंगों में से कोई १ भंग	१ योग १–२ के भंगों में से कोई १ योग जानना
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१	१ले २रे गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१	१
११ कषाय स्त्री–पुरुषवेद घटा कर (२)	२३	२३ १ले गुण० में २३ का भंग को० नं० १७ के समान	सारे भंग ७–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२३ १ले २रे गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत् जानना	सारे भंग ७–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
१२ ज्ञान कुमति, कुश्रुत	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना	२ १ले २रे गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान जानना
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन	१	१ले गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१	१ले २रे गुण० में १ अचक्षुदर्शन	१	१
१५ लेश्या अशुभलेश्या	३	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या जानना	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान	३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई एक लेश्या
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ १ले गुण० में दोनों जानना	१ अवस्था दोनों में से कोई १	१ अवस्था दोनों में से कोई १	२ १ले गुण० में २ जानना २रे गुण० में १ एक भव्य ही जानना	दोनों जानना अपनी अपनी अवस्थान की समान जानना	१ अन्य या दोनों में से कोई १ अवस्था जानना
१७ सम्यक्त्व मिथ्यात्व, सासा	२	१ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना	१ भंग २ का भंग जानना अपनी अपनी स्थान के समान जानना	१ सम्यक्त्व २ के भंग में कोई १ सम्यक्त्व जानना
१८ संज्ञी असंज्ञी	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ १ले गुण० में आहारक जानना	१	१	२ १-१ के भंग १ले २रे गुण० में १ विग्रहगति में अनाहारक जानना	२ दोनों जानना	१ अवस्था दोनों में से कोई १

१	२	३	४	५	६	७	८
					१ आहार पर्याप्ति के समय आहारक जानना		
२०	उपयोग ३ कुमति, कुश्रुति अचक्षु दर्शन ये (३)	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग
२१	ध्यान ८ आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४ ये (८)	८ १ले गुण० में ८ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग	१ ध्यान	८ १ले २रे गुण० में ८ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंग में से कोई १ ध्यान जानना
२२	आस्रव ४० मिथ्यात्व ५, अविरत ८ (हिंसक का द्वीन्द्रिय जाति के स्पर्शन रसनेन्द्रिय विषय २ + हिंस्य ६ ये ८) कषाय २३ योग ये ४ (४०)	३८ कार्माण काययोग १ औ० मिश्र काययोग १ ये २ घटाकर (३८) १ले गुण० में ३८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ११ से १८ तक के भंग में से कोई १ भंग जानना	३८ औदारिक काययोग १ अनुभय वचनयोग १ ये २ घटाकर (३८) १ले गुण० में ३८ का भंग को० नं० १७ के समान २रे गुण० में ३३ का भंग ऊपर के ३८ के भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३३ का भंग जानना	सारे भंग ११ से १८ तक के भंग पर्याप्तवत् १० से १७ तक के भंग जानना	१ भंग ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग १० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग
२३	भाव २४ को० नं० २१ देखो	२४ १ले गुण० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग १७ का भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना	२४ १ले गुण० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में २२ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ले गुण० में १७ का भंग को० नं० १८ देखो २रे गुण० में १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक जीवों की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवां भाग और उत्कृष्ट अवगाहना १२ योजन तक शंख की जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०६ पर्याप्त अवस्था में जानना, को० नं० २१ देखो, १०७ अपर्याप्त अवस्था में जानना को० नं० २१ देखो।

२६ **उदय प्रकृतियां**—८१ को० नं० २१ के ८० प्रकृतियों में से साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, एकेन्द्रिय १, आतप १, ये ५ घटाकर शेष ७५ में औदारिक अंगोपांग १, असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन १, अप्रशस्त विहायोगति १, त्रस १, दुःस्वर १, द्वीन्द्रिय जाति १ ये ६ जोड़कर ८१ प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—१४५–१४३, को० नं० २१ के समान जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वलोक एक जीव की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से संख्यात हजार वर्ष पर्यंत निरन्तर द्वीन्द्रिय ही बना रह सकता है।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक भी मोक्ष नहीं हो तो इसके बाद द्वीन्द्रिय बनना ही पड़े।

३३ **जाति (योनि)**—२ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—७ लाख कोटिकुल जानना।

कोष्टक नं० २३

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के नाना समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	७
१ गुण स्थान	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ मिथ्यात्व गुण स्थान	१	१	२ मिथ्यात्व, सासादन	२ दोनों जानना	१ गुण० दो में से कोई १ गुण०
२ जीव समास	२ त्रीन्द्रिय पर्याप्त अप०	१ १ले गुण० में त्रीन्द्रिय पर्याप्त जानना	१	१	१ १ले २रे गुण० में त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जानना		१
३ पर्याप्ति	५ मन पर्याप्ति घटाकर (५)	५ १ले गुण० में ५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ५ का भंग	१ भंग ५ का भंग	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० २१ समान जानना लब्धि रूप ५ पर्याप्ति	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण	७ मन-कर्ण-चक्षु इन्द्रिय प्राण घटाकर शेष (७)	७ १ले गुण० में ७ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग	५ वचनबल, श्वासोच्छ्वास ये २ घटाकर (५) १ले २रे गुण० में ५ का भंग को० नं० १७ समान जानना	१ भंग ५ का भंग	१ भंग ५ का भंग
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले २रे गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यं० गति	१		१ले २रे गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ त्रीन्द्रिय जाति	१	१	१ले २रे गुण० में १ त्रीन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ त्रसकाय	१	१	१ले २रे गुण० में १ त्रसकाय	१	१
९ योग को० नं० २२ देखो	४	२ १ले गुण० में औ० काययोग १ अनुभय वचन योग १ ये २ जानना को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	२ के भंगों में से कोई १ योग जानना	२ औ० मिश्र काययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ जानना १-२ के भंग १ले २रे गुण० में को० नं० २१ देखो	१ भंग १-२ के भंगों में से से कोई १ भंग	१ योग १-२ के भंगों में में कोई १ योग जानना
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१	१ले २रे गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१
११ कषाय को० नं० २१ देखो	२३	२३ १ले गुण० में २३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग ७-८-९ के भंग को० नं० १८देखो	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग	२३ १ले २रे गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत्	सारे भंग ७-८-९ के भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
१२ ज्ञान कुमति, कुश्रुत	२	२ २२ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना	२ १ले २रे गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन	१	१ले गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१	१ले २रे गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१
१५ लेश्या अशुभ लेश्या	३	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंगों में से कोई १ लेश्या

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग दो में से कोई १ अवस्था जानना	२ के भंगों में से कोई १	२ २–१ के भंग १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् २रे गुण० में १ भव्य ही जानना	१ भंग २–१ के भंगों में से कोई १ भंग	१ अवस्था २-१ के भंगों में से कोई १ अवस्था
१७ सम्यक्त्व	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ १ले गुण० में मिथ्यात्व जानना	१	१	२ १–१ के भंग १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना	१ भंग १–१ के भंगों में से कोई १ भंग	१ सम्यक्त्व १-१ के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व
१८ संज्ञी	१ असंज्ञी	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी	१	
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ १ले गुण० में आहारक जानना	१	१	२ १–१ के भंग १ले २रे गुण० में १ विग्रह गति में अनाहारक जानना १ आहार पर्याप्ति के समय आहारक जानना	२ दोनों जानना	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग	३ को० नं० २२ देखो	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग	३ ३ का भंग १ले २रे गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ३ के भंग	१ उपयोग ३ के भंगों में से कोई १ उपयोग
२१ ध्यान	८ को० नं० २२ देखो	८ १ले गुण० में ८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	८ १ले २रे गुण० में ८ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंगों में से कोई १ ध्यान

१	२	३	४	५	६	७	८
२२ आस्रव	४१ को० नं० २८ के ४० के भंग मे अविरत ८ का जगह ६ जोड़कर (हिंसक का घ्राणेन्द्रिय विषय १ जोड़कर) ४१ जानना	३९ कार्माण काययोग १ औ० मिश्र काययोग १ ये २ घटाकर (३९) १ले गुण० में ३९ का भंग को० नं० १७ के समान	सारे भंग १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग ११ से १८ तक सारे भंगों में से कोई १ भंग	३९ औ० काययोग १ अनुभय वचनयोग १ ये २ घटाकर (३९) १ले गुण० में ३९ का भंग पर्याप्तवत् जानना २रे गुण० में ३४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग जानना २रे गुण० में १० से १७ तक के भंग जानना	१ भंग ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग १० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
२३ भाव	२४ को० नं० २१ देखो	२४ १ले गुण० में २४ का भंग को० नं० १७ समान जानना	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२४ १ले गुण० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में २२ का भंग को० नं० १७ के मुजिब जानना	१ भंग १७ का भंग पर्याप्तवत् १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंग में कोई १ भंग जानना १६ के भंग में से कोई १ भंग जानना

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवे भाग और उत्कृष्ट अवगाहना पिपीलिका (चींटी) ३ कोस तक जानना

२५ **बन्ध प्रकृतियां** १०६–१०७, को० नं० २१ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—८१ को० नं० २२ के समान जानना, परन्तु ८१ प्रकृतियों में से द्वीन्द्रिय जाति घटाकर त्रीन्द्रिय जाति १ जोड़कर ८१ की उदय जानना।

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—१४५–१४३ को० नं० २२ के समान जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—नाना जीवों की अपेक्षा मारणांतिक समुद्घात और विग्रह गति में सर्व लोक जानना, एक जीव की अपेक्षा लोक का असंख्यातवा भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से संख्यात हजार वर्ष तक मरकर निरन्तर त्रीन्द्रिय बन सकता है।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो इसके बाद त्रीन्द्रियों में ही जन्म लेना पड़ता है।

३३ **जाति (योनि)**—२ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—८ लाख कोटि कुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान मिथ्यात्व, सासादन	२	१ मिथ्यात्व गुण०	१	१	२ मिथ्यात्व, सासादन	२ दोनों जानना	१ गुण० दो में से कोई एक गुण०
२ जीवसमास चतुरिन्द्रिय प० अप०	२	१ १ले गुण० में १ चतुरिन्द्रिय पर्याप्त	१	१	१ १ले २रे गुण० में १ चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त	१	१
३ पर्याप्ति मनपर्याप्ति घटाकर (५)	५	५ १ले गुण० में ५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ५ का भंग	१ भंग ५ का भंग	३ को० नं० १७ देखो	१ भंग ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण कर्ण मन घटाकर (८)	८	८ १ले गुण० में ८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ८ का भंग	१ भंग ८ का भंग	६ वचनबल, श्वासोच्छ्वास ये २ घटाकर (६) १ले २रे गुण० में ६ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले २रे गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में	१	१	१ले २रे गुण० में	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ तिर्यंच गति			१ तिर्यंच गति		
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ चतुरिन्द्रिय जाति	१	१	१ले २रे गुण० में १ चतुरिन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ त्रसकाय	१	१	१ले २रे गुण० में १ त्रसकाय	१	१
९ योग को० नं० २२ देखो	४	२ को० नं० २२ देखो	१ भंग २ का भंग	१ योग २ के भंग में से कोई १ योग	२ को० नं० २२ देखो	१ भंग २ का भंग	१ योग २ के भंग में से कोई १ योग
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१	१ले २रे गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१
११ कषाय को० नं० २२ देखो	२३	२३ १ले गुण० में २३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग ७–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग	२३ १ले २रे गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत्	सारे भंग ७–८–९ के भंग	१ भंग ७–८–० के भंगों में से कोई १ भंग
१२ ज्ञान कुमति, कुश्रुत	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान	२ १ले २रे गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन अचक्षुदर्शन, चक्षुदर्शन	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	१ दर्शन २ के भंग में से कोई १ दर्शन	२ १ले २रे गुण० में २का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग २ का भंग	१ दर्शन २ के भंग में कोई १ दर्शन
१५ लेश्या अशुभलेश्या	३	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई एक लेश्या

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ अवस्था २ में से कोई १ अवस्था	२ २–१ के भंग में १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत् २रे गुण० के १ भव्य जानना	१ भंग २–१ के भंगों में से कोई १ भंग	१ भव या २–१ के भंगों में से कोई १ अवस्था
१७ सम्यक्त्व मिथ्यात्व, सासादन	२	१ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ १–१ के भंग १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना	१ भंग १–१ के भंगों में से कोई १ भंग	१ सम्यक्त्व १–१ के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व
१८ संज्ञी	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंज्ञी	१	१
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ १ले गुण० में आहारक जानना	१	१	२ १–१ के भंग १ले २रे गुण० में १ विग्रह गति में अनाहारक जानना २ आहार पर्याप्ति के समय आहारक जानना	२ दोनों जानना	१ अवस्था दोनों में से कोई १
२० उपयोग कुमति, कुश्रुत ज्ञानोपयोग २ अचक्षु-चक्षुदर्शनो २ ये ४ उपयोग जानना		४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग	१ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग	४ ४–३–४ के भंग १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में ३–४ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४–३–४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	उपयोग ४–३–४ के भंगों में से कोई १ उपयोग

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान	८ को० नं० २१ देखो	८ १ले गुण० में ८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंग में से कोई १ ध्यान	८ १ले २रे गुण० में ८ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंग में से कोई १ ध्यान
२२ आस्रव	४२ को० नं० २३ के ४१ के भंग में अविरत ६ की जगह १० जोड़कर (हिंसा का चक्षुरिन्द्रिय विषय १ जोड़कर) ४२ जानना	४० कार्माणकाय योग १ औ० मिश्र काय योग १ ये २ घटाकर (४०) १ले गुण० में ४० का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग जानना	१ भंग ११ से १८ तक के भंग में से कोई १ भंग जानना	४० औदारिककाय योग १ अनुभय वचन योग १ ये २ घटाकर (४०) १ले गुण० में ४० का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में ३५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग १ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग जानना १० से १७ तक के भंग जानना	१ भंग ११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना १० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
२३ भाव	२५ को० नं० २३ के २४ के भंगों में चक्षु-दर्शन जोड़कर २५ भाव जानना	२५ १ले गुण० में २५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना	२५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (२५) १ले गुण० में २५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में २३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ देखो १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना १६ के भंगों में से कोई १ भंग जानना

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक जीवों की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवां भाग और उत्कृष्ट अवगाहना भ्रमर की एक योजन तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०६ और १०७ को० नं० २१ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—८१ को० नं० २२ के ८१ में से त्रीन्द्रिय जाति १ घटाकर चतुरिन्द्रिय जाति १ जोड़कर ८१ की उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४५–१४२, को० नं० २१ के समान जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—को० नं० २३ के समान जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वलोक जानना एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से संख्यात हजार वर्ष तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो इसके बाद चतुरिन्द्रिय में ही जन्म लेना पड़ता है।

३३ **जाति (योनि)**—२ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—७ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के नाना समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान मिथ्यात्व, सासादन	२	१ मिथ्यात्व गुण स्थान	१	१	२ मिथ्यात्व, सासादन	२ दोनों जानना	१ गुण० दो में से कोई १ गुण०
२ जीव समास असंज्ञी पर्याप्त अप०	२	१ १ले गुण० में असंज्ञी पर्याप्त जानना	१	१	१ १ले २रे गुण० में असंज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१	१
३ पर्याप्ति मन पर्याप्ति घटाकर (५)	५	५ १ले गुण० में ५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ५ का भंग	१ भंग ५ का भंग	३ को० नं० २२ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण मन-प्राण घटाकर शेष (९)	९	९ १ले गुण० में ९ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ९ का भंग	१ भंग ९ का भंग	७ मनोबल, वचनबल, श्वासोच्छ्वास ये ३ घटाकर ७) १ले २रे गुण० में ७ का भंग को० नं० १७ समान जानना	१ भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले २रे गुण० में ४ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१	१ले २रे गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ पंचेन्द्रिय जाति	१	१	१ले २रे गुण० में १ पंचेन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ त्रसकाय	१	१	१ले २रे गुण० में १ त्रसकाय	१	१
९ योग को० नं० २२ देखो	४	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	१ योग २ के भंगों में से कोई १ योग	२ को० नं० २२ देखो	१ भंग १–२ के भंगों में से से कोई १ भंग	१ योग १–२ के भंगों में से कोई १ योग
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग तीनों वेद जानना	१ तीनों वेदों में से कोई १ वेद जानना	३ १ले २रे गुण० में तीनों वेद जानना को० नं० १७ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ वेद तीनों वेदों में से कोई १ वेद जानना
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ १ले गुण० में २५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग ७–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग	२५ १ले २रे गुण० में २५ का भंग पर्याप्तवत्	सारे भंग १ले २रे गुण० में ७–८–९ के भंग	१ भंग ७–८–९ के भंगों में से कोई १ भंग
१२ ज्ञान कुमति, कुश्रुत	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंगों में से कोई १ ज्ञान	२ १ले २रे गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना
१३ संयम असंयम	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन अचक्षु-चक्षु दर्शन	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	१ दर्शन २ के भंग में से कोई १ दर्शन जानना	२ १ले २रे गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग २ का भंग	१ दर्शन २ के भंगों में से कोई १ भंग जानना
१५ लेश्या अशुभ लेश्या	३	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या	३ १ले २रे गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंगों में से कोई १ लेश्या

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ अवस्था २ में से कोई १ अवस्था	२ २-१ के भंग १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में १ भव्य ही जानना	१ भंग २-१ के भंग में से कोई १ भंग जानना	१ अवस्था २-१ के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना
१७ सम्यक्त्व	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना २रे गुण० में १ सासादन जानना	१ भंग १-१ के भंगों में से कोई १ भंग	१ सम्यक्त्व दोनों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना
१८ संज्ञी	१ असंज्ञी	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१	१ले २रे गुण० १ में १ असंज्ञी जानना	१	१
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ १ले गुण० में १ आहारक ही जानना	१	१	२ १-१ के भंग १ले २रे गुण० में को० नं० २२ देखो	१ दोनों जानना	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग	४ को० नं० २४ देखो	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग	१ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग	४ को० नं० २४ देखो	१ भंग ४-३-४ के भंगों में से कोई १ भंग	१ उपयोग ४-३-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना
२१ ध्यान	८ को० नं० २१ देखो	८ को० नं० २४ देखो	१ भंग को० नं० २४ देखो	१ ध्यान को० नं० २४ देखो	८ को० नं० २४ देखो	१ भंग को० नं० २४ देखो	१ ध्यान को० नं० २४ देखो
२२ आस्रव	४५ मिथ्यात्व ५, मन-इन्द्रिय विषय १ घटा-	४३ औ० मिश्रकाय योग १ कार्माण काययोग १ ये २	सारे भंग	१ भंग	४३ औ० काययोग १, अनुभय वचनयोग १	सारे भंग	१ भंग

१	२	४	५	६	७	८
कर अविरत ११, कषाय २५, औ० मिश्र काययोग १, औ० काय योग १, कार्माण काय योग १, अनुभय वचन योग १ ये ४५ आस्रव जानना सूचना—यहाँ तीनों वेद लब्ध्य पर्याप्तक जीवों की अपेक्षा से माने हैं (देखो गो० क० गा० ३३०—३३१)	घटाकर (४३) १ले गुण० में ४३ का भंग को० नं० १७ के समान	११ से १८ तक के भंग जानना को० नं० १८ देखो	११ से १८ तक सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	ये २ घटाकर (४३) १ले गुण० में ४३ का भंग पर्याप्तवत् जानना २रे गुण० में ३८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ले गुण० में ११ से १८ तक के भंग जानना २रे गुण० में १० से १७ तक के भंग जानना को० नं० १८ देखो	११ से १८ तक के भंगों में से कोई १ भंग १० से १७ तक के भंगों में से कोई १ भंग जानना
२३ भाव २७ कुमति, कुश्रुत ज्ञान २, दर्शन २, लब्धि ५, तिर्यंच गति १, कषाय ४, स्त्री नपुंसक लिंग २, अशुभ लेश्या ३ मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव २ ये २८ भाव जानना सू०—लब्धि पर्याप्त जीव मनुष्य गति में भी होता है इस लिये मनुष्य गति भी जोड़नी चाहिये मराठी गोमट सार कर्मकांड पन्ना ३०१ देखो।	२७ १ले गुण० में २७ का भंग को० नं० १७ समान जानना	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२७ १ले गुण० में २७ का भंग को० नं० १७ के समान जानना २रे गुण० में २५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना सूचना—लब्धि अपर्याप्त मनुष्य जोड़कर यहां २८—२६ के भंग बन जाते हैं।	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ देखो १६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंग में कोई १ भंग जानना १६ के भंग में से कोई १ भंग जानना

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक जीवों की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार योजन तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—११७ बन्धयोग्य १२० में से तीर्थंकर प्र० १, आहारकद्विक २ ये ३ घटाकर ११७ जानना।

२६ **उदयप्रकृतियां**—६० उदययोग्य १२२ में से सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्रकृति १, उच्चगोत्र १, नामकर्म २६ [(वैक्रियक अष्टक ८, अर्थात् नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियकद्विक २ ये ८ जानना)
असंप्राप्तासृपाटिक संहनन छोड़कर शेष प्रथम के संहनन ५, हुंडक संस्थान, छोड़कर प्रथम के संस्थान ५, प्रशस्त विहायोगति १, सुभग १ आदेय १, यशः कीर्ति १, एकेन्द्रिय जाति ४ ये २६ जानना) ये सब ३२ प्र० घटाकर ७ जानना, मराठी गोमट सार कर्म कांड गाथा २९६–२९७–३०१ में तिर्यंच गति मनुष्यगति दोनों लब्धि पर्याप्तक जीव के बताई गई।

७१ लब्ध्य पर्याप्तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच में–उदयोग्य १२२ प्र० में से देवद्विक २, देवायु १, नरकद्विक २, नरकायु १, वैक्रियकाद्विक २, मनुष्यद्विक २, मनुष्यायु १, उच्चगोत्र १, नामकर्म प्र० ३२ (आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १, सूक्ष्म १, साधारण १, स्थावर १, आतप १, एकेन्द्रिय जाति २, परघात १, उच्छ्वास १, पर्याप्ति १, उद्योत १, स्वरद्विक २, विहायोगति २, यशःकीर्ति १, आदेय १, पहले के संहनन ५, पहले के संस्थान ५, सुभग १, ये ३२) पुरुष वेद, स्त्री वेद १, स्त्यानगृध्यादि महानिद्रा ३, सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, ये ५१ घटाकर ७१ प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—१४७ असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच और लब्ध्य पर्याप्तक तिर्यंच में तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १४७ प्र० का सत्व जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—कोष्टक नम्बर १७ के समान जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव ग्रहण काल से नौ सौ (९००) सागर काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो इसके बाद दुबारा असंज्ञी पंचेन्द्रिय बन सकता है।

३३ **जाति (योनि)**—पंचेन्द्रिय तिर्यंच गति में ४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—पंचेन्द्रिय तिर्यंच में ४३॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१४ को० नं० १८ देखो	१४ १ से १४ तक के गुण० (१) नरकगति में १ से ४ गुण० जानना (२) तिर्यंच गति में १ से ५ गुण० कर्मभूमि में १ से ४ गुण० भोगभूमि में (३) मनुष्य गति में १ से १४ गुण० कर्मभूमि में १ से ४ गुण० भोगभूमि में (४) देव गति में १ से ४ गुण० जानना को० नं० १६ देखो	सारे गुण स्थान सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ से ४ गुण० १ से ५ ,, १ से ४ ,, १ से १४ ,, १ से ४ ,, १ से ४ ,,	१ गुण० अपने अपने स्थान के गुण० में से कोई एक गुण-स्थान जानना	१-२-४-६-१३ गुण० (१) नरक गति में १-२-४ गुण० जानना (२) तिर्यंच गति में १-२ गुण० कर्मभूमि में १-२-४ गुण० भोगभूमि में (३) मनुष्य गति में १-२-४-६-१३ गुण० कर्मभूमि में जानना १-२-४ गुण० भोगभूमि में (४) देव गति में १-२-४ गुण० जानना को० नं० १६ से १९ देखो	सारे गुण सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १-२-४-६-१३ के गुण जानना	१ गुण अपने अपने स्थान के गुण० में से कोई १ गुण० स्थान जानना
२ जीवसमास	२ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त ,, ,, अपर्याप्त ये २ जानना	१ चारों गतियों में हरेक गति में और तिर्यंच और मनुष्य गति के भोगभूमि में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास हरेक गति में एक एक संज्ञी पं० पर्याप्त समास जानना	१ समास हरेक गति में १ संज्ञी पं० पर्याप्त समास जानना	१ चारों गतियों में हरेक गति में और तिर्यंच मनुष्य गति में भोग भूमि में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था जानना	१ समास हरेक गति में १ संज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त समास जानना	१ समास हरेक गति में १ संज्ञी पं० समास जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति को नं० १ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६ से १९ के समान जानना (२) भोग भूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	१ भंग ६ का भंग ,,	१ भंग ६ का भंग ,,	३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६ से १९ के समान जानना (२) भोग भूमि में तिर्यंच और मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना लब्धि रूप ६ पर्याप्ति होता है।	१ भंग ३ का भंग ,,	१ भंग ३ का भंग ,,
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक, तिर्यंच, देव गति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६- १७-१९ के समान जानना (२) मनुष्य गति में १०-४-१ के भंग को० नं० १८ के समान (३) भोग भूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में १० का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ,, ,,	१ भंग अपने अपने स्थान के एक भंग जानना ,, ,,	७ (१) नरक, तिर्यंच देव गति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१७-१९ के समान जानना (२) मनुष्य गति में ७-२ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (३) भोग भूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में ७ का भंग को० नं० १७- १८ के समान जानना	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना ,, ,,	१ भंग अपने अपने स्थान के १ भंग जानना ,, ,,
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक, तिर्यंच, देव गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७- १९ के समान जानना	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के १ भंग जानना	४ (१) नरक, तिर्यंच देव गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ के समान	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के १ भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के १ भंग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ के समान	"	अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	(२) मनुष्य गति में ४-० भंग को० नं० १८ के समान	"	पर्याप्तवत्
		(३) भोग भूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	"	"	(३) भोग भूमि में तिर्यंच-मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १७–१८ के समान जानना	"	"
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियां जानना	१ कोई १ गति	१ कोई १ गति	४ चारों गतियां जानना	१ कोई १ गति	१ कोई १ गति
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ चारों गतियों में हरेक में पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
९ योग	१५ कार्माण काययोग १, औ० मिश्रकाययोग १, औ० काययोग १, वै० मिश्र काययोग १, वै० काययोग १, आ० मिश्र काययोग १, आ० काययोग १, वचनयोग ४, मनोयोग ४, ये १५ योग	११ कार्माण काययोग १, औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्र काययोग १, आ० मिश्र काययोग १, ये ४ घटाकर (११) (१) नरक गति–तिर्यंच गति–देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१७-१९ के समान जानना (२) मनुष्य गति में ९-९-९-५-३-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग सूचना—अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ योग सू०—अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग जानना	४ कार्माण काययोग १, औ०मिश्र काययोग १, वै० मिश्र काययोग १ आहारक मिश्रकाययोग १ ये ४ योग जानना (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में-हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१७-१९ के समान जानना (२) मनुष्य गति में १-२-१-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग सूचना–पर्याप्तवत्	१ योग पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(५) भोग भूमि में–तिर्यंच–मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			(५) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में १-२ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१-० के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में २-१-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	१ भंग सूचना—अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ वेद अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ वेद जानना	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-१-१-० के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में २-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो (५) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	१ भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना	१ वेद पर्याप्तवत् जानना
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में २५-२५-२१-१७ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में २५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में	सारे भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		२५-२१-१७-१२-११-१२-७-६ ५-४-३-२;१-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २४-२०-२३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच—मनुष्य गति में २४-२० के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			२५-१६-११-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में २४-२४-१६-२३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच गति मनुष्यगतिमें २४-१६ के भग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
१२ ज्ञान कुज्ञान ३, ज्ञान ५, ये ८ ज्ञान जानना	८	८ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४-१ के भग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच—मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ज्ञान सू०—अपने अपने स्थान के भंगों में कोई १ ज्ञान जानना	६ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १ ये २ घटाकर (६) (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्यगति में २-३-३-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २-२-३-३ के भग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंचगति मनुष्यगति में	सारे भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना	१ ज्ञान पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
					२-३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
१३ संयम असंयम, संयमासंयम सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसांपराय, यथाख्यात ये ७ संयम जानना	७	७ (१) नरक देव गति में १ का भंग को० नं० १६-१९ के समान (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) भोगभूमी में तिर्यंच मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १७-१८ समान जानना	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना	४ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, और यथाख्यात ये ४ जनना (१) नरक देव गति में १ का भंग को० नं० १६-१९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोगभूमी में तिर्यंच मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग सूचना – पर्याप्तवत् जानना	१ संयम पर्याप्तवत् जानना
१४ दर्शन अचक्षुदर्शन, चक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन ये ४ दर्शन जानना	४	४ (१) नरक गति में २—३ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में २-३-३-३-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग सूचना —अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	४ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में २-२ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में २-२-३ १ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना	१ दर्शन पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देव गति में २–३ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में २-३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग में को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच-मनुष्य गति में २–३ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
१५ लेश्या कृष्ण-नील-कापोत-पीत-पद्म-शुक्ल ये ६ जानना	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ६-३-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच–मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १९ के समान जानना	१ भंग सूचना—अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या जानना	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच–मनुष्य गति में हरेक में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ लेश्या पर्याप्तवत् जानना
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० १६ से १९	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ के समान	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ अवस्था पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व	६ मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, उपशमसम्यक्त्व, क्षायिक, क्षयोपशम ये ६ सम्यक्त्व जानना	६ (१) नरक गति में १—१—१ २—२ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में १—१—१—२ के भंग को० नं० १७ के समान (३) मनुष्य गति में १—१—१—३—३—२—३—२—१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में १—१—१—२—३—२ के भंग को० नं० १९ के समान (५) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में १—१—१—२ के भंग को० नं० १७–१८ के समान	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १—२— के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १—१—० के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १—१—२—२—१ के भंग को० नं० १८ के समान (४) देव गति में १—१—३ के भंग को० नं० १९ के समान (५) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में १—१—२ के भंग को० नं० १७–१८ के समान	सारे भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना	१ सम्यक्त्व पर्याप्तवत् जानना
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ (१) नरक-देव गति में १ का भंग को० नं० १६-१९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १—१ के भंग को० नं० १७ के समान (३) मनुष्य गति में १—० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग सूचना—अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	१ (१) नरकदेव गति में १ का भंग को० नं० १६-१९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १—१—१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १—० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना	१ अवस्था पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) भोग भूमि में तिर्यंच–मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			(४) भोग भूमि में तिर्यंच–मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १७- १८ के समान जानना		
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ (१) नरक–देव गति में १ का भंग को० नं० १६- १९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में तिर्यंच–मनुष्य गति में हरेक में १ का भंग को० नं० १७– १८ के समान जानना	१ भंग आहारक अवस्था	१ अवस्था आहारक अवस्था	२ (१) नरक–देव गति में १-१ के भंग को० नं० १६-१९ के समान (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में तिर्यंच–मनुष्य गति में हरेक में १-१ के भंग को नं० १७- १८ समान जानना	१ भंग दोनों में से कोई १ अवस्था	१ अवस्था कोई १ अवस्था
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ८, दर्शनोपयोग ४, ये १२ जानना	१२	१२ (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १७ के समान (३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग	१ उपयोग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	१० कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्ययज्ञान १, ये २ घटाकर (१०) (१) नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ४-६ के भंग को०नं० १७ के समान जानना	सारे भंग सूचना — पर्याप्तवत् जानना	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान कोष्टक नं० १८ देखो	१६	(४) देव गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोगभूमी में तिर्यंच मनुष्य गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १७-१८ के समान १६ (१) नरक गति में ८-९-१० के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में ८-९-१०-११ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-७-४-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में ८-९-१० के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में ८-९-१० के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	(४) देव गति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ के समान (५) भोगभूमि में तिर्यंच मनुष्य गति में ४-६ के भंग को० नं० १७-१८ के समान ११ विपाकविचय १, संस्थानविचय १, पृथक्त्ववितर्क विचार १, एकत्ववितर्क अविचार १, व्युपरत क्रियानिवर्ति १ ये ५ घटाकर (११) (१) नरक गति में ८-९ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ७-९-७-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में ८-९ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोगभूमी में तिर्यंच मनुष्य गति में	सारे भंग सूचना— पर्याप्तवत्	१ ध्यान पर्याप्तवत जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
					८–६ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
२२ आस्रव (१) मिथ्यात्व ५, ५ (संशय, विनय, विपरीत, एकांत, अज्ञान ये ५) (२) अविरत १२, इंद्रिय ६, हिंस्य ६ को० नं० १८ में देखो (३) कषाय २५ (को नं० १ में देखो) (४) योग १५ (ऊपर के योग स्थान नं० ६ देखो) ये ५७ आस्रव जानना	५७	५३ औ० मिश्रकाययोग १ वै० मिश्र काययोग १, आ० मिश्र काययोग १, कार्माण काययोग १, ये ४ घटाकर (५३) (१) नरक गति में ४६-४४ ४० के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में ५१-४६-४२-३७ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-३७-२२-२०-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-६-५-३-० के भंग को० नं० १८ समान (४) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४०- के भंग को० नं० १६ समान जानना	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो ११ से १८ तक के १० से १७ तक के ६ से १६ तक के भंग जानना ११ से १८ तक के १० से १७ " ६ से १६ " ८ से १४ " भंग जानना १० से १८ तक के १० से १७ " ६ से १६ " ८ से १४ " ५–६–७ के भंग ३–२ के भंग २ का भंग (०) का भंग ११ से १८ तक के १० से १७ तक के ६ से १६ तक के भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना " " " " " " " " " " " " " १ भंग ० कोई १ भंग " "	४६ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आहारक काययोग १, ये ११ घटाकर (४६) (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ४४-३६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-१२-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में ४३-३८-३३-४२-३७-३२-३३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोगभूमी में तिर्यंच और मनुष्य गति में ४३-३८-३३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान	सारे भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना ११ से १८ तक के ६ से १६ " भंग जानना ११ से १८ तक के १० से १७ " भंग जानना ११ से १८ तक के भंग ६ से १६ तक के भंग ५–६–७ के भंग १ का भंग ११ से १८ तक के भंग १० से १७ " ६ से १६ ११ से १८ तक के भंग १० से १७ " ६ से १६ "	१ भंग पर्याप्तवत् जानना कोई १ भंग " " " " " " " " " " " " "

१	२	३	४	५	६	७	८
		(५) भोग भूमि में—तिर्यंच गति में और मनुष्य गति में ५०-४५-४१ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना।	११ से १८ तक के १० से १७ " ९ से १६ " भंग जानना	" " "			
२३ भाव (१) औपशमिक भाव २ उपशम सम्यक्त्व और उपशम चारित्र ये २ जानना (२) क्षायिक भाव ९. क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, क्षायिक दान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक वीर्य ये ९ जानना (३) क्षयोपशम (मिश्र) भाव १८, कुमति-कुश्रुति-कुअवधि (विभंग) ये ३ कुज्ञान, मति-श्रुत-अवधि-मनः पर्यय ज्ञान ये ४ ज्ञान चक्षु दर्शन-अचक्षु दर्शन अवधि दर्शन ये ३ दर्शन, दान-लाभ-भोग-उपभोग वीर्य ये ५ क्षयोपशम लब्धि, क्षयोपशम(वेदक)	५३	५३ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ के समान	सारे भंग सूचना—अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १७-१६-१६-१७ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के १७-१६-१७ के हरेक भंगों में से कोई १ भंग जानना	४९ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, उपशम चारित्र १, संयमासंयम चारित्र ये ४ घटाकर (४९) (१) नरक गति में २५-२७ के भंग को० नं० १६ के समान	सारे भंग सूचना—पर्याप्तवत् जानना सारे भंग १७-१७ के भंग जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना १ भंग १७-१७ के हरेक भंग में से कोई १ भंग
		(२) तिर्यंच गति में ३१-२९-३०-३२-२९ के भंग को० नं० १७ के समान	सारे भंग १७-१६-१६-१७-१७ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग १७-१६-१६-१७-१७ के हरेक भंग में से कोई १ भंग	(२) तिर्यंच गति में २७-२५ के भंग को० नं० १७ समान जानना	सारे भंग १७-१६ के भंग जानना	१ भंग १ भंग १७-१६ के हरेक भंग में से कोई १-१ भंग
		(३) मनुष्य गति में ३१-२९-३०-३३-३० ३१-२७-३१-२६-२८-२८-२६-२६-२५-२८-२३-२२-२१-२०-१४-१३ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग १७-१६-१६-१७-१७-१७-१७-१७-१७-१६-१६-१५-१५-१४-१३ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग १७-१६-१६-१७-१६-१६-१७-१७-१६-१६-१५-१४-१३ के हरेक भंगमें सेकोई १-१ भंग जानना	(३) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-२७-२४ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग १७-१६-१७-१७-१४ के भंग जानना	१ भंग १७-१६-१७-१७-१४ के हरेक भंग में से कोई १-१ भंग जानना
		(४) देव गति में २५-२३-२४-२६-२७-२५-२६-२९-२४-२५-२७-२६-२५ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	सारे भंग १७-१६-१६-१६ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग १७-१६-१६-१७ के हरेक भंग में से कोई १ भंग जानना	(४) देव गति में २६-२४-२६-२४-२८-२३-२१-२६-२६ के भंग को० नं० १९ समान जानना	सारे भंग १७-१६-१७ के भंग जानना	१ भंग १७-१६-१७ के हरेक भंग में से कोई १ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
	सम्यक्त्व, सराग चारित्र (सराग संयम), देश संयम (संयमासंयम) ये १८ जानना (४) औदारिक भाव २१ नरक-तिर्यंच-मनुष्य-देव गति ये ४ गति, नपुंसक-स्त्री-पुरुष लिंग (वेद) ये ३ वेद, क्रोध-मान-माया-लोभ ये ४ कषाय, मिथ्या दर्शन (मिथ्यात्व) १, कृष्ण-नील-कापोत-पीत-पद्म-शुक्ल ये ६ लेश्या, असंयम, अज्ञान, असिद्धत्व, ये २१ औदयिक भाव जानना (५) जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व ये ३ पारिणामिक भाव जानना इस प्रकार ५३ भाव जानना	(५) भोग भूमि में २७-२५-२६-२६ के भंग को० १७-१८ के समान हरेक में जानना	सारे भंग १७-१६-१६-१७ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग १७-१६-१६-१७ के हरेक भंग में से कोई १-१ भंग जानना	(५) भोग भूमि में २४-२२-२५- के भंग को० नं० १७-१८ के समान हरेक में जानना	सारे भंग १७-१६-१७ के भंग जानना	१ भंग १७-१६-१७ के हरेक भंग में से कोई १-१ भंग जानना

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग जानना और उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार (१०००) योजन की स्वयंभूरमण समुद्र के महामत्स्य की जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१२० बंधयोग्य प्रकृतियां—१२० जानना इनमें से –

१०१ प्र० नरकगति में को० नं० १६ देखो। ११७ प्र० तिर्यंच गति में को० नं० १७ देखो।

१२० प्र० मनुष्य गति में को० नं० १८ देखो। १०४ प्र० देवगति में को० नं० १९ देखो।

बंधयोग्य १२० प्रकृतियों का विवरण निम्न प्रकार जानना—

ज्ञानावरणीय ५, मति-श्रुत-अवधि-मनः पर्यय-केवल ज्ञानावरणीय ये ५ जानना।

(२) दर्शनावरणीय ६, अचक्षुदर्शन १, चक्षुदर्शन १, अवधिदर्शन १, केवलदर्शन १, निद्रा १, प्रचला १, निद्रानिद्रा १, प्रचला-प्रचला १, स्त्यानगृद्धि १ ये ९ जानना।

(३) वेदनीय २, सातावेदनीय १, असातावेदनीय १ ये २ जानना।

(४) मोहनीय २६, दर्शन मोहनीय के १, मिथ्यादर्शन जानना।

चारित्रमोहनीय के २५ इनमें कषाय १६ – (१) अनंतानुबंधी—क्रोध-मान-माया-लोभ, (२) अप्रत्याख्यान—क्रोध-मान-माया-लोभ, (३) प्रत्याख्यान—क्रोध-मान-माया-लोभ, (४) संज्वलन—क्रोध-मान-माया-लोभ, ये १६ कषाय जानना और नवनोकषाय-हास्य-रति-अरति-शोक-भय-जुगुप्सा ये ६ जानना। और नपुंसक वेद १, स्त्री वेद १, पुरुषवेद १ ये ३ वेद जानना। इस प्रकार चारित्र मोहनीय के १६+९=२५ जानना।

(५) आयुकर्म ४, नरकायु १, तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १, देवायु १ ये ४ जानना।

(६) नामकर्म ६७।

(अ) गति नामकर्म ४ – नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति ये ४ जानना।

(आ) जाति नामकर्म ५—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय ये ५ जानना।

(इ) शरीर नामकर्म ५—औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण, ये ५ जानना।

(ई) अंगोपांग ३—औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, ये ३ जानना।

(उ) निर्माण नामकर्म १, (ऊ) संस्थान ६—समचतुरस्रसंस्थान, न्यग्रोधपरिमंडल सं०, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान वामन-संस्थान, हुंडकसंस्थान, ये ६ संस्थान जानना।

(ए) संहनन ६—वज्रवृषभनाराच संहनन, वज्रनाराच संहनन, नाराच संहनन, अर्धनाराच संहनन, कीलक संहनन, असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन ये ६ संहनन जानना।

(ऐ) स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, ये ४ जानना।

(ओ) आनुपूर्वी ४—नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी ये ४ जानना।

(भ्रौ) अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास ये चार जानना।
(क) आतप १, उद्योत १, अप्रशस्तविहायोगति १, प्रशस्तविहायोगति १, प्रत्येक १, साधारण १, बादर १, सूक्ष्म १, त्रस १, स्थावर १, सुभग १, दुर्भग १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, दुःस्वर १, आदेय १, अनादेय १, यशःकीर्ति १, अयशःकीर्ति १, पर्याप्ति १, अपर्याप्ति १, तीर्थंकर प्र० १ ये २५ जानना। इस प्रकार ये सब मिलकर ४+५+५+३+१+६+६+४+४+४+२५=६७ जानना।
(७) गोत्रकर्म २—उच्चगोत्र १ नीचगोत्र १, ये २ गोत्र जानना।
(८) अंतरायकर्म ५—दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, ये ५ जानना।
इस प्रकार ५+९+२+२६+४+६७+२+५=१२० बंध प्रकृतियां जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—७६ प्र० नरकगति में जानना को० नं० १६ देखो। १०७ प्र० तिर्यंच गति में जानना को० नं० १७ देखो। १०२ प्र० मनुष्य गति में जानना को० नं० १८ देखो। ७७ प्र० देवगति में जानना को० नं० १९ देखो।

२७ सत्त्व प्रकृतियां—१४८ में से १४७ नरकगति में जानना को० नं० १६ देखो। १४५ तिर्यंच गति में जानना को० नं० १७ देखो। १४८ मनुष्य गति में जानना को० नं० १८ देखो। १४७ देवगति में जानना को० नं० १९ देखो।

२८ संख्या—असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ क्षेत्र—विग्रह गति में और मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा और केवली लोकपूर्ण समुद्घात में सर्वलोक जानना। त्रसनाडी की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग जानना। १३ वें गुण स्थान में प्रदर केवलसमुद्घात अवस्था में असंख्यात लोक प्रमाण क्षेत्र जानना।

३० स्पर्शन—केवल समुद्घात की अपेक्षा सर्वलोक और मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा सर्वलोक जानना। लोक का असंख्यातवां भाग अर्थात् ८ राजु। जब १६वें स्वर्ग का देव किसी मित्र जीव को संबोधन के लिये तीसरे नरक तक जाता है उस समय १६ वें स्वर्ग से मध्यलोक ६ राजु और मध्यलोक से ३ राजु तक दो राजु इस प्रकार ८ राजु जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अनुभव से नवसौ (९००) सागर तक काल प्रमाण जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अनुभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो तो इसके बाद संज्ञी पंचेन्द्रिय में दुबारा बन सकता है।

३३ जाति (योनि) २६ लाख जानना (नरक गति ४ लाख, देवगति ४ लाख, पंचेन्द्रिय तिर्यंच ४ लाख, मनुष्य १४ लाख, ये २६ लाख जानना)

३४ कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना. (नारकी २५, देव २६, तिर्यंच ४३॥ मनुष्य १४ लाख कोटिकुल ये सब १०८॥ लाख कोटिकुल जानना)
सूचना—तिर्यंच के ४३॥ लाख कोटिकुल के विशेष अन्तर भेद निम्न प्रकार जानना।

१२॥ लाख कोटिकुल जलचर जीव के जानना।
९ " " स्थलचर सर्पादि जीव के जानना।
१० " " " पेट से चलने वाले जीव के जानना।
१२ " " नभचर जीव के जानना
४३॥ लाख कोटिकुल जानना।

चौंतीस स्थान दर्शन | कोष्टक नम्बर २७ | इन्द्रिय रहित (सिद्ध भगवान) में

क्र० स्थान नाम	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान		अतीत गुण स्थान जानना	०	०	
२ जीव समास		,, जीव समास ,,	०	०	सूचना—यहां भी अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है
३ पर्याप्ति		,, पर्याप्ति ,,	०	०	
४ प्राण		,, प्राण ,,	०	०	
५ संज्ञा		अपगत संज्ञा ,,	०	०	
६ गति		गति रहित अवस्था ,,	०	०	
७ इन्द्रिय जाति		इन्द्रिय ,, ,, ,,	०	०	
८ काय		काय ,, ,, ,,	०	०	
९ योग		योग ,, ,, ,,	०	०	
१० वेद		अपगतवेद ,,	०	०	
११ कषाय		अकषाय ,,	०	०	
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान ,,	१ केवल ज्ञान	१ केवल ज्ञान	
१३ संयम		असंयम-संयमासंयम-संयम ये ३ से रहित	०	०	
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१ केवल दर्शन	१ केवल दर्शन	
१५ लेश्या		अलेश्या जानना	०	०	
१६ भव्यत्व		अनुभय ,,	०	०	
१७ सम्यक्त्व	१	क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१ क्षायिक सम्यक्त्व	१ क्षायिक सम्यक्त्व	
१८ संज्ञी		अनुभय जानना	०	०	
१९ आहारक		अनुभय जानना	०	०	
२० उपयोग	२	२ केवल ज्ञान-केवल दर्शनोपयोग दोनों युगपत	२ दोनों युगपत् जानना	२ युगपत् जानना	
२१ ध्यान		ध्यान रहित अवस्था जानना	०	०	
२२ आस्रव		आस्रव ,, ,, ,,	०	०	
२६ भाव	५	क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक सम्यक्त्व क्षायिक वीर्य, जीवत्व ये ५ जानना सूचना—कोई आचार्य क्षायिकभाव ९, जीवत्व, ये १० भाव मानते हैं	५ भाव जानना	५ भाव जानना	

२४ **अवगाहना** ३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना

२५ **बंध प्रकृतियां**—अबंध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—अनुदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—असत्ता जानना।

२८ **संख्या**—अनन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—४५ लाख योजन सिद्ध शिला जानना।

३० **स्पर्शन**—सिद्ध भगवान् स्थित रहते हैं।

३१ **काल**—सर्वकाल जानना।

३२ **अन्तर**—अन्तर नहीं (सिद्ध अवस्था छूटती नहीं इसलिये अन्तर नहीं है)

३३ **जाति (योनि)**—जाति नहीं।

३४ **कुल** कुल नहीं।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के नाना समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ मिथ्यात्व, सासादन	दोनों जानना	१ कोई १ गुण०
२ जीव समास	४ एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त " बादर " " सूक्ष्म अपर्याप्त " बादर " ये ४ जानना	२ १ले गुण० में एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त " बादर " ये २ जानना	१ समास दो में से कोई १ समास जानना	१ समास दो में से कोई १ समास	२ २—१ के भंग को० नं० २१ के समान जानना	१ समास २-१ के भंगों में से कोई एक समास	१ समास २-१ भंगों में से कोई १ समास जानना
३ पर्याप्ति	५ को० नं० २१ देखो	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ ३ का भंग को० नं० २ देखो लब्धि रूप ४ पर्याप्ति	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण	४ को० नं० २१ देखो	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ ३ का भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले २रे गुण० में ४का भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ पृथ्वीकाय जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ पृथ्वीकाय जानना	१	१
९ योग को० नं० २१ देखो	३	१ १ले गुण० में औ० काययोग जानना को० नं० १७ देखो	१	१	२ १-२ के भंग को० नं० २१ के समान	१ भंग १-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ योग १-२ के भंगों में से कोई १ योग
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१	१
११ कषाय स्त्री-पुरुष वेद घटाकर (२३)	२३	२३ १ले गुण० में २३ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग ७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२३ १ले २रे गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत् जानना	सारे भंग ७-८-९ के भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग ७-८-९के भंगों में से कोई १ भंग जानना
१२ ज्ञान कुमति-कुश्रुति	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ देखो	२ दोनों कुज्ञान	१ ज्ञान दोनों में से कोई १ कुज्ञान	२ को० नं० २१ के समान	२ दोनों कुज्ञान	१ ज्ञान दोनों में से कोई १ कुज्ञान
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंयम जानना	१	१
१४ दर्शन	१	१ले गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१	१ले २रे गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१
१५ लेश्या को० नं० २१ देखो	३	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ में से कोई १ लेश्या जानना	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ में से कोई १ लेश्या जानना
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ १ले गुण० में २ का भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था	२ १-२ के भंग को० नं० २१ के समान	१ भंग २-१ के भंगों में से कोई १ भंग	१ अवस्था २-१ के भंगों में से कोई १ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ को० नं० २१ के समान जानना	दोनों सम्यक्त्व दोनों में से कोई १	१ सम्यक्त्व दोनों में कोई १ सम्यक्त्व
१८ संज्ञी	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ १ले गुण० में आहारक जानना	१	१	२ को० नं० २१ के समान	दोनों अवस्था	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग	३ को० नं० २१ देखो	३ को० नं० २१ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना
२१ ध्यान	८ को० नं० २१ देखो	८ को० नं० २१ देखो	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ के भंग में से कोई १ ध्यान	८ को० नं० २१ के समान	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ ध्यान पर्याप्तवत् जानना
२२ आस्रव	३८ को० नं० २१ देखो	३६ को० नं० २१ के समान	सारे भंग ११ से १८ तक के सारे भंग	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग	३७ ३७-३२ के भंग को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो
२३ भाव	२४ को० नं० २१ देखो	२४ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो	२४ २४-२२ के भंग को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो

२४ अवगाहना—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना और उत्कृष्ट अवगाहना (उपलब्ध नहीं हो सकी)।

२५ बंध प्रकृतियां—१०६–१०७ को० नं० २१ के समान जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—७९ को० नं० २१ के ८० में से साधारण १ घटाकर ७९ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४५–१४३ को० नं० २१ के समान जानना।

२८ संख्या—असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्य पुद्गल (परावर्तनकाल में यदि मोक्ष नहीं गया हो तो दुबारा पृथ्वी काय जीव बनना पड़ता है)।

३३ जाति (योनि)—७ लाख पृथ्वीकाय योनि जानना।

३४ कुल—२२ लाख कोटिकुल जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
	१	२	३	४	५	६	७	८
१	गुण स्थान मिथ्यात्व, सासादन	२	१ १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ मिथ्यात्व, सासादन	२ दोनों गुण	१ दो में से कोई १ गुण
२	जीवसमास को० नं० २१ देखो	४	२ को० नं० २१ के समान	१ समास को० नं० २१ देखो	१क समास को० नं० २१ देखो	२ २-१ के भंग को० नं० २१ के समान	१ समास को० नं० २१ देखो	१ समास को० नं० २१ देखो
३	पर्याप्ति को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४	प्राण को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
५	संज्ञा को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग	१ भंग	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६	गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१	१ले २रे गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१
७	इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१	१ले २रे गुण में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१
८	काय	१	१ले गुण० में १ जलकाय	१	१	१ले २रे गुण १ १ जलकाय जानना	१	१
६	योग को० नं० २१ देखो	३	१ १ले गुण० में १ औ० का० योग को० नं० १७ को देखो	१	१	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ योग को० नं० २१ देखो

 कोष्टक नं० २३ जलकायिक जीव में

१	२	३	४	५	६	७	८
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१
११ कषाय को० नं० २१ देखो	२३	२३ को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो	२३ को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो
१२ ज्ञान को० नं० २१ देखो	२	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ ज्ञान को० नं० २१ देखो	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ ज्ञान को० नं० २१ देखो
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन	१	१ले गुण० में १ अचक्षुदर्शन	१	१	१ले २रे गुण० में १ अचक्षुदर्शन	१	१
१५ लेश्या अशुभलेश्या	३	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ लेश्या को० नं० २१ देखो	३ को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ लेश्या को० नं० २१ देखो
१६ भव्यत्व को० नं० २१ देखो	२	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ अवस्था को० नं० २१ देखो	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ अवस्था को० नं० २१ देखो
१७ सम्यक्त्व मिथ्यात्व, सासादन	२	१ १ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० २१ देखो
१८ संज्ञी	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ १ले गुण० में १ आहारक जानना	१	१	२ को० नं० २१ के समान	२ दोनों अवस्था	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग को० नं० २१ देखो	३	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ उपयोग को० नं० २१ देखो	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ उपयोग को० नं० २१ देखो

चौंतीस स्थान दर्शन | कोष्टक नं० २६ | जलकायिक जीव में

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान को० नं० २१ देखो	८	८ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ ध्यान को० नं० २१ देखो	८ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ ध्यान को० नं० २१ देखो
२२ आस्रव को० नं० २१ देखो	३८	३८ को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो	३७ को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो,
२३ भाव को० नं० २१ देखो	२४	२४ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो	२४–२२ २४–२२ के भंग को० नं० २१ के समान	सारे भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को० नं० २१ देखो

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल केअसंख्यातवें भाग प्रमाण जानना और उत्कृष्ट अवगाहना (उपलब्ध न हो सकी)।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०६–१०७ को० नं० २१ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७८ को० नं० २८ के ७६ प्र० में से आतप १ घटाकर ७८ प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४५–१४३ को० नं० २१ के समान जानना।

२८ **संख्या** – असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ **क्षेत्र**— सर्वलोक जानना

३० **स्पर्शन** - सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से संख्यात लोक प्रमाण (काल तक जलकाय जीव ही बनता रहे)।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न हो तो दुबारा जलकाय जीव बनना ही पड़े।

३३ **जाति (योनि)**—७ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—७ लाख कोटिकुल जानना।

क० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के नाना समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१	१ मिथ्यात्व गुण०	१	१	१ मिथ्यात्व गुण स्थान	१	१
२ जीव समास को० नं० २१ समान	४	२ को० नं० २१ के समान	१ समास दो में से कोई १	१ समास दो में से कोई १ समास	२ १ले गुण० में २ का भंग एकेन्द्रिय सूक्ष्म और बादर अपर्याप्त	१ समास २ में से कोई १ समास जानना	२ में से कोई १ कोई १ समास
३ पर्याप्ति को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ श्वासोच्छ्वास घटाकर (३) १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ श्वासोच्छ्वास घटाकर (३) १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
५ संज्ञा को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ १ले गुण० में ४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ अग्निकाय जानना	१		१ले गुण० में १ अग्निकाय	१	१
९ योग कौ० नं० २१ देखो	३	१ १ले गुण० में १ औ० काययोग जानना कौ० नं० १७ में देखो	१	१	२ औ० काययोग १ और कार्माण काययोग ये (२) १-२ के भंग कौ० नं० २१ देखो	१ भंग १-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ योग १-२ के भंगों में से कोई १ योग जानना
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१
११ कषाय कौ० नं० २१ देखो	२३	२३ १ले गुण० में २३ का भंग कौ० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग ७-८-९ के भंग कौ० नं० १८ देखो	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग	२३ १ले गुण० में २३ का भंग पर्याप्तवत्	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
१२ ज्ञान कुमति, कुश्रुति	२	२ १ले गुण० में २ का भंग कौ० नं० १७ के समान जानना	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ के भंग में से कोई १ ज्ञान	२ १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान पर्याप्तवत् जानना
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन	१	१ले गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१	१ले गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१
१५ लेश्या अशुभ लेश्या	३	३ ३ का भंग कौ० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या	३ १ले गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या कोई एक लेश्या जानना
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ १ले गुण० में २ का भंग कौ० नं० १७ के समान जानना	१ अवस्था भव्य, अभव्य में से कोई १	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था	२ १ले गुण० में २ का भंग पर्याप्तवत्	१ अवस्था दो में से कोई १	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व	१	१ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	१ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१
१८ संज्ञी	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी	१	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ १ले गुण० में १ आहारक	१	१	२ १ले गुण० में को० नं० २३ के समान	दोनों अवस्था	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग को० नं० २१ देखो	३	३ १ले गुण० में ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंग में से कोई १ उपयोग	१ले गुण० में ३ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ के भंगों में से कोई १ उपयोग
२१ ध्यान को० नं० २१ देखो	८	८ को० नं० २१ के समान	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ में से कोई १ ध्यान	८ १ले गुण० में ८ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ में से कोई १ ध्यान
२२ आस्रव को० नं० २१ देखो	३८	३६ को० नं० २१ के समान	सारे भंग ११ से १८ तक के सारे भंग	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग	३७ १ले गुण० में ३७ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग ११ से १८ तक के सारे भंग	१ भंग सारे भंगों में से १ भंग
२३ भाव को० नं० २१ देखो	२४	२४ १ले गुण० में २४ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग जानना	२४ १ले गुण० में २४ का भंग पर्याप्तवत जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना और उत्कृष्ट अवगाहना (उपलब्ध न हो सकी)।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०५ बंधयोग्य १२० प्र० में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, मनुष्यद्विक २, मनुष्यायु १, वैक्रियिकद्विक २, आहारद्विक २, तीर्थंकर प्र० १, उच्चगोत्र १ ये १५ घटाकर १०५ प्र० का बंध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७७ को० नं० २६ के ७८ में से उद्यो० १ घटाकर ७७ प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४४ को० नं० २८ के १४५ में से नरकायु १ घटाकर १४४ का सत्व जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्व लोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात लोक प्रमाण काल तक अग्निकाय जीव ही बनता रहे।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न जा सके तो दुबारा अग्निकाय जीव बनना ही पड़ता है।

३३ **जाति (योनि)**—७ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—३ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१	१ मिथ्यात्व जानना	१	१	१ मिथ्यात्व, गुण स्थान	१	१
२ जीवसमास को० नं० २१ देखो	४	२ को० नं० २१ के समान	१ समास २ में से कोई १ समास जानना	१ समास २ में से कोई १ समास जानना	२ १ले गुण० में को० नं० ३० के समान	१ समास पर्याप्तवत्	१ समास पर्याप्तवत्
३ पर्याप्ति को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ को० नं० ३० के समान	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ को० नं० ३० के समान	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
५ संज्ञा को० नं० २१ देखो	४	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ को० नं० ३० के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ वायुकाय	१	१	१ले गुण० में १ वायुकाय जानना	१	१
९ योग को० नं० ११ देखो	३	१ १ले गुण० में १ औ० का० योग	१	१	२ को० नं० ३० के समान	१ भंग को० नं० ३० देखो	१ योग को० नं० ३० देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद	१	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१	१
११ कषाय को० नं० २१ देखो	२३	२३ को० नं० ३० देखो	सारे भंग ७-८-९ के भंग	१ भंग ७-८-९ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	२३ को० नं० ३० के समान	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
१२ ज्ञान को० नं० २१ देखो	२	२ को० नं० ३० देखो	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान दो में से कोई १ ज्ञान	२ को० नं० ३० देखो	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान पर्याप्तवत् जानना
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१	१ले गुण० में १ असंयम	१	१
१४ दर्शन	१	१ले गुण० में १ अचक्षुदर्शन	१	१	१ले गुण० में १ अचक्षुदर्शन	१	१
१५ लेश्या अशुभलेश्या	३	३ को० नं० ३० देखो	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ में से कोई १ लेश्या जानना	३ को० नं० ३० देखो	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंग में से कोई १ लेश्या
१६ भव्यत्व को० नं० ३० देखो	२	२ को० नं० ३० देखो	१ अवस्था दोनों में से कोई १	१ अवस्था दो में से कोई १	२ को० नं० ३० देखो	१ अवस्था दो में से कोई १	१ अवस्था पर्याप्तवत्
१७ सम्यक्त्व	१	१ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	१ले गुण० में १ मिथ्यात्व जानना	१	१
१८ संज्ञी	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी	१	१
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ १ले गुण० में १ आहारक जानना	१	१	२ को० नं० ३० के समान	दोनों अवस्था	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग को० नं० २१ देखो	३	३ को० नं० ३० देखो	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ में से कोई १ उपयोग	३ को० नं० ३० देखो	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग पर्याप्तवत्

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान ८	को० नं० २१ देखो	८ को० नं० ३० के समान	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ में से कोई १ ध्यान	८ को० नं० २१ देखो	१ भंग ८ का भंग सारे भंग	१ ध्यान ८ में से कोई १ ध्यान १ भंग
२२ आस्रव ३८	को० नं० २१ देखो	३६ को० नं० २१ के समान	सारे भंग ११ से १८ तक के सारे भंग	१ भंग सारे भंगों में से कोई भंग	३७ को० नं० ३० के समान	११ से १८ तक के भंग जानना	सारे भंगों में से कोई १ भंग
२३ भाव २४	को० नं० २१ देखो	४ को० नं० २० देखो	१ भंग १७ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १७ के भंगों में से १ भंग	२४ को० नं० ३० देखो	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग १७ के भंगों में से कोई १ भंग

२४ अवगाहना—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना और उत्कृष्ट अवगाहना (उप... हो सकी)।

२५ बंध प्रकृतियां—१०५ को० नं० ३० के समान जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—७७ " " "

२७ सत्व प्रकृतियां—१४५ " " "

२८ संख्या—असंख्यात लोक प्रमाण जानना।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना।

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात लोक प्रमाण काल तक वायुकाय जीव ही बनता रहे।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न हो सके तो दुबारा वायुकाय जीव बनना ही पड़ता है।

३३ जाति (योनि)—७ लाख योनि जानना।

३४ कुल—७ लाख कोटिकुल जानना।

कोष्टक नम्बर ३२ — वनस्पतिकायिक जीव में

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	पर्याप्त: एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त: एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त: १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त: १ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	२ मिथ्यात्व, सासादन	१ मिथ्यात्व गुण०	१	१	२ मिथ्यात्व सासादन	२ दोनों जानना	१ २ में से कोई १
२ जीव समास	४ को० नं० २१ देखो	२ को० नं० २१ के समान	१ समास दो में से कोई १ स०	१ समास दो में से कोई १	२ को० नं० २१ के समान	१ समास को० नं० २१ देखो	१ समास को०नं० २१ देखो
३ पर्याप्ति	४ को० नं० २१ देखो	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण	४ को० नं० २१ देखो	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
५ संज्ञा	४ को० नं० २१ देखो	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ को० नं० २१ के समान	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१	१ले गुण० में १ तिर्यंच गति जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ तिर्यंच गति जानना	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१	१ले गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१	१ले २रे गुण० में १ एकेन्द्रिय जाति	१	१
८ काय	१	१ले गुण० में १ वनस्पति काय	१	१	१ले २रे गुण० में १ वनस्पति काय	१	१
९ योग	३ को० नं० २१ देखो	१ १ले गुण० में औ० काययोग जानना	१	१	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ भंग को०नं० २१ देखो
१० वेद	१	१ले गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ नपुंसक वेद जानना	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
११ कषाय को० नं० २१ देखो	२३	२३ को० नं० २१ के समान	सारे भंग ७-८-९ के भंग	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग	२३ को० नं० २१ के समान	सारे भंग पर्याप्तवत् जा	१ भंग पर्याप्तवत्
१२ ज्ञान को० नं० २१ देखो	२	२ को० नं० २१ देखो	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ में से कोई १	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग २ का भंग	१ ज्ञान २ में से कोई १
१३ संयम	१	१ले गुण० में १ असंयम जानना	१	१	१ले २रे गुण० मे १ असंयम जानना	१	१
१४ दर्शन	१	१ले गुण० मे १ अचक्षु दर्शन	१	१	१ले २रे गुण० में १ अचक्षु दर्शन	१	१
१५ लेश्या अशुभ लेश्या	३	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ में से कोई १	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ में से कोई १
१६ भव्यत्व को० नं० २१ देखो	२	२ को० नं० २१ के समान	१ अवस्था भव्य अभव्य में से कोई एक जानना	१ अवस्था दो में से कोई १	२ को० नं० २१ के समान	१ अवस्था पर्याप्तवत्	१ अवस्था पर्याप्तवत्
१७ सम्यक्त्व को० नं० २१ देखो	२	१ १ले गुण० मे १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ को० नं० २१ के समान	१ भंग को० नं० २१ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० २१ देखो
१८ संज्ञी	१	१ले गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१	१ले २रे गुण० में १ असंज्ञी जानना	१	१
१९ आहारक को० नं० २१ देखो	२	१ १ले गुण० में १ आहारक जानना	१	१	२ को० नं० २१ के समान	दोनों अवस्था को० नं० २१ देखो	१ अवस्था को० नं० २१ देखो
२० उपयोग को० नं० २१ देखो	३	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ में से कोई १	३ को० नं० २१ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ उपयोग ३ में से कोई १
२१ ध्यान को० नं० २१ देखो	८	८ को० नं० २१ के समान	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ में से कोई १	८ को० नं० २१ के समान	१ भंग ८ का भंग	१ ध्यान ८ में से कोई १

१	२	३	४	५	६	७	८
२२ आस्रव कौ० नं० २१ देखो	३८	३६ कौ० नं० २१ के समान	सारे भंग कौ० नं० २१ देखो	१ भंग कौ० नं० २१ देखो	३७ कौ० नं० २१ के समान	सारे भंग कौ० नं० २१ देखो	१ भंग कौ० नं० २१ देखो
२३ भाव कौ० नं० २१ देखो	२४	२४ कौ० नं० २१ के समान	१ भंग कौ० नं० २१ देखो	१ भंग कौ० नं० २१ देखो	२४ कौ० नं० २१ के समान	१ भंग कौ० नं० २१ देखो	१ भंग कौ० नं० २१ देखो

२४ **अवगाहना**—लब्ध्य पर्याप्तक जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार (१०००) योजन तक (कमल की) जानना

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०६-१०७ कौ० नं० २१ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७९ कौ० नं० २८ के समान जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४५-१४३ कौ० नं० २१ के समान जानना।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव सादिमिथ्या दृष्टि की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न जाय तो निरन्तर वनस्पतिकाय ही बनता रहे)।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात लोक प्रमाण काल तक यदि मोक्ष न जाय तो दुबारा वनस्पति होना ही पड़े।

३३ **जाति (योनि)**—१० लाख जानना।

३४ **कुल**—२८ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१४ को० नं० १८ देखो	१४ चारों गति में १ से १४ तक के गुण० को० नं० २६ के समान जानना	अपने अपने स्थान की सारे गुण स्थान को० नं० २६ देखो	१ गुण को० नं० २६ के समान	५ चारों गति में को० नं० २६ के समान जानना	अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान को० नं० २६ देखो	१ गुण को० नं० २६ देखो
२ जीव समास	१० एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त " सूक्ष्म अपर्याप्त " बादर पर्याप्त " " अपर्याप्त ये ४ घटाकर शेष (१०) को० नं० १ देखो	५ पर्याप्त अवस्था १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ देखो ४ शेष जीव समास तिर्यंच गति में जानना को० नं० १७ देखो	१ समास १—४ में से कोई १ जीव समास जानना	१ समास १—४ में से कोई १ जीव- समास जानना	५ अपर्याप्त अवस्था चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० २६ देखो तिर्यंच गति में ४ शेष जीव-समास जानना को० नं० १७ देखो	१ समास १—४ में से कोई १ जीव समास जानना	१ समास १—४ में से कोई १ जीव- समास जानना
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० २६ समान जानना ५ का भंग तिर्यंच गति में द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक मन पर्याप्ति घटाकर ५ का भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग ६—५ के भंगों में से कोई १ भंग	१ भंग ६—५ के भंगों में से कोई १ भंग	३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग को० नं० २६ के समान जानना लब्धि रूप ६ और ५	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० २६ के के समान जानना मनुष्य गति में ४–१ के भंग को० नं० १८ देखो तिर्यंच गति में ९–८–७–६ के भंग को० नं० १७ के समान	सारे भंग चारों गतियों में– हरेक में १० का भंग को०नं० २६ देखो ४ में अपने स्थान के सारे भंग "	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना " "	७ चारों गतियों में हरेक में ७ का भंग को० नं० २६ के समान जानना मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो तिर्यंच गति में ७–६–५–४ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना पर्याप्तवत् "	१ भंग पर्याप्तवत् जानना " "
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० २६ से १९ के समान जानना मनुष्य गति में ३–२–१–१–० के भंग को० नं० १८ के समान तिर्यंच गति में ४ का भंग द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवों में ४ का भंग जानना को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग चारों गतियोंमें-हरेकमें ४ का भंग को० नं० २६ देखो अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना "	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग " "	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० २६ के समान जानना मनुष्य गति में (०) का भंग को० नं० १८ देखो तिर्यंच गति में ४ का भंग पर्याप्तवत् जानना	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना " "	१ भंग पर्याप्तवत् जानना " "
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति ४ में से कोई १ गति	१ गति कोई १ गति	४ चारों गतियां जानना	१ गति ४ में से कोई १ गति	१ गति कोई १ गति
७ इन्द्रिय जाति एकेन्द्रिय जाति १ घटाकर शेष (४)	४	४ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० २६ के समान तिर्यंच गति में	१ जाति ४ में से कोई १ जाति जानना	१ जाति ४ में से कोई १ जाति जानना	४ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति पर्याप्तवत् जानना तिर्यंच गति में ४ जाति पर्याप्तवत् जानना	१ जाति पर्याप्तवत् जानना	१ जाति पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		४ द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये ४ जातियां जानना					
८ काय	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
९ योग को० नं० २६ देखो	१५	११ चारों गतियों में-हरेक में ६ का भंग को० नं० २६ के समान जानना मनुष्य गति में ६-६-५-३-० के भंग को० नं० १८ के समान तिर्यंग गति में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग ६-६-६-५-३-०-२ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ योग ६-६-६-५-३-०-२ के भंगों में से कोई १ योग जानना	४ चारों गतियों में हरेक में १-२ के भंग को० नं० २६ के समान मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान तिर्यंच गति में १-२ के भंग	१ भंग १-२-१-२-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ योग १-२-१-२-१ के भंगों में से कोई १ योग जानना
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ३-१-३ के भंग को० नं० १७ के समान (३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१-० के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देवगति	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ वेद अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ वेद जानना	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में ३-१-२-१-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ३-१-१-० के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ वेद पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		२-१-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोगभूमि में २ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			(५) भोगभूमि में २-१ के भंग को० नं० १७-१८ के समान		
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१६ का भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२१-१७ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (४) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१३-११-१३-७-६-५-४-३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (२) देव गति में २४-२०-२३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोगभूमि में २४-२० के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १८ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२३-२५ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में २५-१६-११-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २४-२४-१६-२३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोगभूमि में २४-१६ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
१२ ज्ञान	८ को० नं० २६ देखो	८ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में २-३-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना	६ कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (६) (१) नरकगति में २—३ के भंग को० नं० १६ के समान	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ ज्ञान पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४ १ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि में ३-३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			(२) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में २-३-३-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि में २-३ के भंग को०नं० १७-१८ के समान जानना		
१३ संयम	७ को० नं० २६ देखो	७ (१) नरक गति में—देव गति में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) भोग भूमि में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ संयम अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १	४ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, यथाख्यात ये ४ संयम जानना (१) नरक व देव गति में १ का भंग को० नं० १६-१९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ संयम पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन को० नं० २६ देखो	४	४ (१) नरक गति में २-३ के भंग को०नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १-२- -३-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ६-३-३-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में २-३ के भंग को० नं० १६ समान जानना (५) भोग भूमि में २-३ के भंग को० नं० १७- १८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	४ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में १-२-२ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति २-३-३-१ के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में २-३ के भंग को०नं० १७- १८ के समान जानना	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ दर्शन पर्याप्तवत् जानना
१५ लेश्या को० नं० २६ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ३-६-३-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ६-३-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या जानना	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को०नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ लेश्या पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(५) भोगभूमि में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			(५) भोगभूमि में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ के समान जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ के समान जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ अवस्था पर्याप्तवत् जानना
१७ सम्यक्त्व को० नं० २६ देखो	६	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ के समान (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-३-२-३-२-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में १-१-१-२-३-२ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोगभूमि में १-१-१-३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-१-२-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में १-१-२ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोगभूमि में १-१-२ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ सम्यक्त्व पर्याप्तवत् जानना
१८ संज्ञी संज्ञी, असंज्ञी	२	२ (१) नरक व देव गति में	१ भंग अपने अपने स्थान	१ अवस्था अपने अपने	२ (१) नरक व देवगति में	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ अवस्था पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ का भंग को० नं० १६-१९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति १-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	के भंगों में से कोई १ भंग जानना	स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	१ का भंग को०नं० १६-१९ के समान (२) तिर्यंच गति १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति मे १-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	२ (१) नरक व देवगति में १ का भंग को०नं० १६-१९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में १ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	१ भंग दोनों का भंग	१ अवस्था दो में से कोई १ अवस्था जानना	२ (१) नरक व देवगति में १-१ के भंग को०नं० १६-१९ के समान (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति मे १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में—तिर्यंच और मनुष्य गति में हरेक में १-१ के भंग को०नं० १७-१८ के समान जानना	१ भंग दोनों का भंग जानना	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग को० नं० २६ देखो	१२	१२ (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को०नं० १६ के समान	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ उपयोग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	१० कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (१०) (१) नरक गति में	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ३-४-५-६-६ के भंग को०नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७-२ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में ५-६-६ के भंग को०नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में ५-६-६ के भंग को०नं० १७-१८ में समान जानना			४ ६ का भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४-६-६-२ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में ४-६ के भंग को०नं० १७-१८ के समान जानना		
२१ ध्यान को० नं० १८ देखो	१६	१६ (१) नरक गति में ८-६-१० के भंग को० नं० १६ समान जानना (२) तिर्यंच गति में ८-६-१०-११ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ८-६-१०-११-७-४-१-१-१-१ के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देवगति में ८-६-१० के भंग को० नं०	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	११ १० नं० २६ देखो (१) नरक गति ८-६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ८ का भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ८-६-७-१ के भंग को०नं० १८ के समान जानना (४) देव गति ८-६ के भंग को० नं०	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ ध्यान पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		१६ के समान जानना (५) भोगभूमि में ८-९-१० के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना			१६ के समान जानना (५) भोग भूमि में ८-९ के भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना		
२२ आस्रव को० नं० २६ देखो	५७	५३ को० नं० २६ देखो (१) नरक गति में ४६-४४-४० के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में ३८-३९-४०-४३-५१-४६-४२-३७ के भंग को० नं० १७ के के समान जाननना (३) मनुष्य गति में ५१-४६-४०-३७-२२-२०-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१० ९-५-३-० के भंग को० नं० १८ के समान (४) देव गति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि मे ५०-४५-४१ के भंग को० नं० १७-१८ के समान	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	४९ को० नं० २६ देखो (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में ३८-३९-४०-४३-४४-३३-३४-३५-३८-३९ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४४-३६-३३-१२-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के भंग को० नं० १९ के समान जानना (५) भोग भूमि में ४३-३८-३३ के भंग को० नं० १७-१८ के समान	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
२३ भाव को० नं० २६ देखो	५३	५३ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	४६ को० नं० २६ देखो (१) नरक गति में २५-२७ के भंग को० नं० १६ के समान	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-२६-३०-३२-२६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ३१-२६-३०-३३-३०-३१-२७-३१-२६-२६-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२ -२१-२०-१४-१३ के मग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति में २५-२३-२४-२६-२७-२५-२६-२६-२४-[illegible]-[illegible]-२६-२५ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि २७-२५-२६-२६ के भंग को० नं० १७—१८ के समान हरेक में जानना			(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२७-२२-२३-२५-२५- का भंग को०नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-२७-१४ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) देव गति २६-२४-२६-२४-२८-२३-२१-२६-२६ के भंग को० १६ के समान जानना (५) भोग भूमि में २४ २२-२५ के भंग को० नं० १७—१८ के समान हरेक में जानना		

२४ **अवगाहना**—जघन्य पर्याप्तक जीव की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार (१०००) योजन तक महामत्स्य जानना ।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१२० भंगों का विवरण को० नं० २२ से २६ में देखो ।

२६ **उदय प्रकृतियां**—११७ उदययोग १२२ प्र० में से एकेन्द्रिय जाति १, आतप १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, ये ५ घटाकर ११७ प्र० का उदय जानना ।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ को० नं० २६ समान जानना ।

२८ **संख्या**—असंख्यात लोक प्रमाण जानना ।

२९ **क्षेत्र**—त्रसनाडी की अपेक्षा लोक के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना । केवलसमुद्घात प्रतर अवस्था की अपेक्षा असंख्यात लोक प्रमाण जानना । केवलसमुद्घात लोकपूर्ण अवस्था की अपेक्षा सर्वलोक जानना ।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक को० नं० २६ के समान जानना ।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से लेकर दो हजार सागर और पृथक्त्व पूर्व कोटि काल तक जानना ।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से लेकर असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष नहीं हो तो दुबारा स्थावरकाय से त्रसकाय में जन्म लेना पड़े ।

३३ **जाति (योनि)**—३२ लाख जानना । (द्वीन्द्रिय २ लाख, त्रीन्द्रिय २ लाख, चारइन्द्रिय २ लाख, पंचेन्द्रिय तिर्यंच ४ लाख, नारकी ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख, ये ३२ लाख जानना) ।

३४ **कुल**—१३२॥ लाख कोटिकुल जानना, (द्वीन्द्रिय ७, त्रीन्द्रिय ८, चौइन्द्रिय ९, पंचेन्द्रिय तिर्यंच ४३॥, नारकी २५, देव २६, मनुष्य १४, लाख कोटिकुल ये सब १३२॥ लाख कोटिकुल जानना)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	०	अतीत गुण स्थान	०	०	
२ जीवसमास	०	,, जीव समास	०	०	
३ पर्याप्ति	०	,, पर्याप्ति	०	०	
४ प्राण	०	,, प्राण	०	०	
५ संज्ञा	०	,, संज्ञा	०	०	
६ गति	०	अगति	०	०	
७ इन्द्रिय जाति	०	अतीत इन्द्रिय	०	०	
८ काय	०	अकाय	०	०	
९ योग	०	अयोग	०	०	
१० वेद	०	अपगत वेद	०	०	
११ कषाय	०	अकषाय	१	१	
१२ ज्ञान	१	केवल ज्ञान जानना	०	०	
१३ संयम	०	असंयम, संयमासंयम, संयम ये तीनों से रहित	०	०	
१४ दर्शन	१	केवल दर्शन जानना	१	१	
१५ लेश्या	०	अलेश्या	०	०	
१६ भव्यत्व	०	अनुभय	०	०	
१७ सम्यक्त्व	१	क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	
१८ संज्ञी	०	अनुभय	०	०	
१९ आहारक	०	अनुभय	०	०	
२० उपयोग	२	दर्शनोपयोग, ज्ञानोपयोग दोनों युगपत् जानना	२ युगपत्	२ युगपत्	
२१ ध्यान	०	अतीत ध्यान	०	०	
२२ आस्रव	०	अनास्रव	०	०	
२३ भाव	५	क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक वीर्य, जीवत्व ये ५ जानना	५ भाव जानना	५ भाव	

सूचना – कोई आचार्य क्षायिक भाव ६, जीवत्व १, ये १० मानते हैं।

२४ **अवगाहना**—सिद्धों की अपेक्षा ३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां** - अबंध जानना

२६ **उदय प्रकृतियां**—अनुदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—असत्व जानना।

२८ **संख्या**—अनन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—४५ लाख योजन (अढ़ाई द्वीप प्रमाण) सिद्ध शिला जानना।

३० **स्पर्शन**—सिद्ध भगवान् स्थित रहते हैं।

३१ **काल**—सर्वकाल जानना।

३२ **अन्तर** – अन्तर नहीं।

३३ **जाति (योनि)**—जाति नहीं।

३४ **कुल**—कुल नहीं।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्ति — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१३ १ से १३ तक के गुण०	१३ चारों गतियों में एक से १३ तक के गुण स्थान अपने अपने स्थान के समान जानना को० नं० २६ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण०	१ गुण० अपने अपने स्थान के गुण में से कोई १ गुण०	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीव समास	१	१ संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त चारों गतियों में हरेक में जानना को० नं० २६ देखो	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० २६ के समान जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में, हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के एक एक भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के एक एक भंग जानना	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (३) भोगभूमि में ४ का भंग को० नं० १७-१८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना "	१ भंग अपने अपने स्थान के एक एक भंग जानना अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियां जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति	१ गति चारों में से कोई १ गति	

१	२	३	४	५	६-६-८
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	
६ योग	१ सत्यमनोयोग या अनुभय मनोयोग जानना	१ चारों गतियों में हरेक में दोनों भागों में से कोई १ योग जिसका विचार करना हो वह एक योग जानना	१ दो में से कोई १ योग	१ दो में से कोई १ योग	
१० वेद	३ नपुंसक-स्त्री-पुरुष वेद	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ वेद अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ वेद जानना	
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	
१२ ज्ञान	८ को० नं० २६ देखो	८ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ज्ञान	
१३ संयम	७ को० नं० २६ देखो	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम	
१४ दर्शन	४ को० नं० २६ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन	

१	२	३	४	५	६-७-८
१५ लेश्या को० नं० २६ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई एक भंग	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या जानना	
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	
१७ सम्यक्त्व को० नं० २६ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी संज्ञी	१	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई भंग	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	
१९ आहारक आहारक	१	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के १ अवस्था जानना	१ अवस्था अपने अपने स्थान के १ अवस्था जानना	
२० उपयोग को० नं० २६ देखो	१२	१२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ उपयोग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान को० नं० १८ के १६ में से व्युपरत क्रियानिवर्ति- नी १ घटाकर (१५)	१५	१५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५ अविरत १२	४३	४३ (१) नरक गति में	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग अपने अपने स्थान के	

१	२	३	४	५	६-७-८
	(हिंसक ६ + हिंस ६) कषाय २५, सत्यमनोयोग का अनुभयमनोयोग में से कोई एक योग जिसका विचार करना हो वो एक योग जानना ये सब ४३ जानना	४१-३६-३२ के भंग १ मिथ्यात्व गुण० में ४१ का भंग—सामान्य के ४३ के भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर ४१ का भंग जानना २रे सासादन गुण० में ३६ का भंग—ऊपर के ४१ के भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३६ का भंग जानना ३रे ४ थे गुण स्थान में ३२ का भंग—ऊपर के ३६ के भंग में से अनंतानुबंधी कषाय ४ घटाकर ३२ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में—४३-३८-३४-२६-४२ ३७-३३ के भंग १ले गुण स्थान में ४३ का भंग—सामान्य के ४३ के भंग ही जानना २रे गुण० में ३८ का भंग—ऊपर के ४३ के भंगों में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३८ का भंग जानना ३रे ४थे गुण स्थान में ३४ का भंग—ऊपर के ३८ भंगों में से अनंतानुबंधी कषाय ४ घटाकर ३४ का भंग जानना ५वें गुण स्थान के २६ का भंग ऊपर के ३४ के भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय ४, त्रसहिंसा १ ये ५ घटाकर २६ भंग का जानना (३) भोगभूमि में १ले गुण स्थान में ४२ का भंग—ऊपर के ४३ भंगों में से नपुंसक वेद १ घटाकर ४२ का भंग जानना २रे गुण स्थान में	सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १८ देखो	

<table>
<tr><th>१</th><th>२</th><th>३</th><th>४</th><th>५</th><th>६-७-८</th></tr>
<tr><td></td><td></td><td>३७ का भंग–ऊपर के ३८ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ३७ का भंग जानना
२रे ४थे गुण स्थान में
३३ का भंग–ऊपर के ३४ भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर ३३ का भंग जाननना
(३) मनुष्य गति में—[illegible] ३[illegible]-२४-२६ १४-
१२-१४-८-७-६-५-४-३-२-२-१-४२-३७-
३३ के भंग
१ले गुण स्थान में
४३ का भंग-सामान्य १ ४३ के भंग ही जानना
२रे गुण० में
३८ का भंग–ऊपर के ४३ के भंग में मिथ्यात्व ५ घटाकर ३८ का भंग जानना
३रे ४थे गुण स्थान में
३४ का भंग–ऊपर के ३८ के भंग में अनंतानुबंधी कषाय ४ घटाकर ३४ का भंग जानना
५वे गुण० में
२६ का भंग–ऊपर के ३४ के भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय ४ और त्रसहिंसा अविरत १ ये ५ घटाकर २६ का भंग जानना
६वे गुण स्थान में–औदारिककाय की अपेक्षा
१४ का भंग–ऊपर के २६ के भंग में से प्रत्याख्यान कषाय ४, अविरत ११, (हिंसक का इन्द्रिय. विषय ६ + स्थावर्हिंस्य ५ ये ११) ये १५ घटाकर १४ का भंग जानना
६वे गुण० में–आहारककाय योग की अपेक्षा
१२ का भंग–ऊपर के १४ के भंगों में से नपुंसक वेद १ स्त्रीवेद १ ये २ घटाकर १२ का भंग जानना</td><td></td><td></td><td></td></tr>
</table>

१	२	३	४	५	६-७-८
		७वें ८वें गुण स्थान में १४ का भंग–ऊपर के ६वें गुण० के १४ के भंग ही जानना। ९वें गुण स्थान में ८ का भंग–ऊपर के १४ के भंग में से हास्यादि ६ नोकषाय घटाकर ८ का भंग जानना ९वें गुण० के २रे भाग में ६ का भंग ऊपर के ७ के भंग में से नपुंसक वेद घटाकर ७ का भंग जानना ९वें गुण० के ३रे भाग में ७ का भंग–ऊपर के ८ के भंगों में से स्त्रीवेद घटाकर ७ का भंग जानना ९वें गुण० के ४थे भाग में ५ का भंग–ऊपर के ६ के भंग में से पुरुषवेद घटाकर ५ का भंग जानना ९वें गुण० के ५वें भाग में ४ का भंग–ऊपर के ५ के भंग में से क्रोधकषाय घटाकर ४ का भंग जानना ९वें गुण० के ६वें भाग में ३ का भंग–ऊपर के ४ के भंग में से मानकषाय घटाकर ३ का भंग जानना ९वें गुण० के ७वें भाग में २ का भंग–ऊपर के ३ के भंग में से मायाकषाय घटाकर २ का भंग जानना १०वें गुण० में २ का भंग– ऊपर के ८ के भंग में से वेद ३, क्रोध-मान-मायाकषाय ३ ये ६ घटाकर २ का भंग जानना ११-११-१२वें गुण स्थान में १ का भंग ऊपर के दो के भंग में से लोभकषाय १ घटाकर १ का भंग अर्थात् सत्य मनोयोग या अनुभय मनोयोग इन दोनों में से कोई १ योग			

१	२	३	४	५	६-७-८
		जिसका विचार करना हो तो एक भंग जानना २ भोगभूमि में—१ से ४ गुण स्थानों में ४२-३७-३३ के भंग—ऊपर के कर्मभूमि में ४३-३८-३४ के हरेक भंग में से एक नपुंसक वेद घटाकर ४२-३७-३३ के भंग जानना। (४) देवगति में—४२-३७-३३-४१-३६-३२ के भंग भवनत्रिक देवों से १६वें स्वर्ग तक देवों में १ले गुण स्थान में ४२ का भंग—सामान्य के ४३ के भंग में से नपुंसक वेद १ घटाकर शेष ४२ का भंग जानना। २रे सासादन गुण० में ३७ का भंग—ऊपर के ४२ के भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३७ का भंग जानना ३रे ४थे गुण स्थान में ३३ का भंग—ऊपर के ३७ के भंग में से अनंतानुबंधी कषाय ४ घटाकर ३३ का भंग जानना २. नवग्रैवेयक के देवों में—१ से ४ गुण स्थान में ४१-३६-३२ के भंग—ऊपर के ४२-३७-३३ के हरेक भंग में से एक एक स्त्री वेद घटाकर शेष ४१-३६-३२ के भंग जानना ३. नव अनुदिस और पंचानुत्तर के देवों में— (यहां एक ४ था गुण ही होता है) ४था गुण स्थान में ३२ का भंग—ऊपर के ३३ के भंग में से एक स्त्री-वेद घटाकर ३२ का भंग जानना			
२१ भाव	५३ को० नं० १८ देखो	५३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में कोई एक भंग जानना	

२४ **अवगाहना**—संख्यात घनांगुल अथवा स्वयं भूरमण के महामच्छ की अपेक्षा घनांगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर एक हजार (१०००) योजन तक जानना ।

२५ **बंध प्रकृतियां**—को० नं० २६ के समान जानना ।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१०६ उदययोग्य १२२ में से एकेन्द्रियादि जाति ४, तिर्यंचानुपूर्वी ४, आतप १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, ये १३ घटाकर १०६ प्र० का उदय जानना ।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—को० नं० २६ के समान जानना ।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना ।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना ।

३० **स्पर्शन**—लोक का संख्यातवां भाग, ८ राजु जानना, इत्यादि को० नं० २६ के समान जानना ।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा एक समय में अंतर्मुहूर्त तक क्षपक श्रेणी की अपेक्षा जानना ।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा अंतर्मुहूर्त असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक असंज्ञी पर्यायों में ही जन्म लेते रहें बाद में जरूर संज्ञी हो ।

३३ **जाति (योनि)**—२६ लाख जानना (नरक के ४ लाख, देवों के ४ लाख, पंचेन्द्रिय तिर्यंच के ४ लाख, मनुष्य के १४ लाख ये २६ लाख जानना ।

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना (नरक के २५, देवों के २६, पंचेन्द्रिय तिर्यंच के ४३॥ मनुष्य के १४ लाख कोटिकुल ये १०८॥ लाख कोटिकुल जानना ।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१२ १ से १२ तक के गुण स्थान	१२ चारों गति में १ से १२ तक के गुण० अपने अपने स्थान के समान गुण० जानना को० नं० २६ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण स्थान १ से १२ में से अपने अपने स्थानों में से कोई १ गुण० जानना	सूचना—यहां पर अपर्याप्त नहीं होता है।
२ जीव समास	१ एकेन्द्रि सूक्ष्म पर्याप्त	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० २६ देखो	१ भंग ६ का भंग जानना	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० २६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के एक एक भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के एक एक भंग जानना	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियां जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति	१ गति चारों में से कोई १ गति	
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग	१ असत्य मनोयोग या उभय मनोयोग जानना	१ चारों गतियों में हरेक में दोनों योगों में से कोई १ योग जिसका विचार करना हो वो १ योग जानना	१ दोनों में से कोई १ योग	१ दोनों में से कोई १ योग जानना	
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ वेद अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ वेद जानना	
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
१२ ज्ञान	७ केवल ज्ञान घटाकर शेष ७ ज्ञान जानना	७ (१) नरक, तिर्यंच, देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १६-१७-१९ के समान जानना (२) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (३) भोगभूमि में ३-३ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम	७ को० नं० २६ देखो	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
१४ दर्शन	३ केवल दर्शन घटाकर शेष ३ दर्शन जानना	३ (१) नरक, देवगति में २-३ के भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) भोग भूमि में २-३ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	
१५ लेश्या	६ को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या जानना	
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ अवस्था अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग को० नं० २६ देखो	१ अवस्था को० नं० २६ देखो	
१९ आहारक	१ आहारक	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक अवस्था जानना को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग आहारक अवस्था	१ अवस्था आहारक अवस्था	

१	२	३	४	५	६-७-८
२० उपयोग	१० केवल दर्शन, केवल दर्शन ये २ उपयोग घटाकर (१०)	१० (१) नरकगति, तिर्यंच गति, देवगति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६-१७-१६ देखो (२) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७ के भंग को० नं० १८ देखो (३) भोग भूमि में ५-६-६ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना " " "	१ उपयोग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ उपयोग जानना " "	
२१	१४ सूक्ष्म क्रिया प्रति पाति, व्युपरत क्रिया निवर्तिनि ये २ घटाकर शेष (१४)	१४ (१) नरकगति, देव गति में ८-६-१० के भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ८-६-१०-११ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-६-१०-११-७-४-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि ८-६-१० के भंग को० नं० १७-१८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना " " "	१ ध्यान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ध्यान जानना " " "	
२२ आस्रव	४३ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, (हिंसक ६+हिंस्य ६) कषाय २५, असत्य मनोयोग, या उभय मनोयोग इन दो में से कोई १ योग जिसका विचार करना हो तो १ योग जानना ये सब ४३ आस्रव जानना	४३ चारों गतियों में भंगों का विवरण को० नं० ३५ के भंगों के समान यहां भी सब भंग जानना परन्तु यहां सत्य मनोयोग या अनुभय मनोयोग के जगह असत्य मनोयोग या उभय मनयोग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
२३ भाव	४६ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	४६ (१) नरक गति में	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग अपने अपने स्थान के	

१	२	३	४	५	६-७-८
		२६–२४–२५–२८–२७ के भंग को० नं० १६ के समान जानना।	सारे भंग जानना को० नं० २६ देखो	हरेक भंग में से कोई १ भंग जानना को० नं० २६ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में ३१–२९–३०–३२–२९ के भंग को० नं० देखो	"		
		(३) मनुष्य गति में ३१–२९–३०–३३–३०–३१–२७–३१–२९–२९–२८–२७–२६–२५–२४–२३–२३–२१–२० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	"	"	
		(४) देव गति में २५–२३–२४–२६–२७–२५–२६–२९–२४–२२–२३–२६–२५– के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"		
		(५) भोगभूमि में २७–२५–२६–२९ के भंग को० नं० १७–१८ के समान हरेक में जानना		"	

२४ **अवगाहना**—संख्यात घनांगुल या घनांगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर एक हजार (१०००) योजन तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—को० नं० २६ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१०६ को० नं० ३५ के समान जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ को० नं० २६ के समान जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवा भाग, ८ राजु जानना, सर्वलोक को० नं० २६ के समान जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा १ अन्तर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक जानना।

३३ **जाति (योनि)**—२६ लाख योनि जानना। (को० नं० २६ देखो)

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना। (को नं० २६ देखो)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१३ १ से १३ तक के गुण०	१३ चारों गतियों में १ से १३ तक के गुण० अपने अपने स्थान के समान जानना को० नं० २६ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण स्थान अपने अपने स्थान के गुण स्थानों में से कोई १ गुण स्थान	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीवसमास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० २६ देखो	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० २६ के समान जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक मे १० का भंग को० नं० १६ से १९ देखो (२) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १८ देखो (३) भोग भूमि में १० का भंग को० १७—१८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के एक एक भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के एक एक भंग जानना	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियों में को० नं० २६ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियां जानना	१ ४ में से कोई १ गति जानना	१ कोई १ गति जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१	१	
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१	१	
९ योग	१ सत्य वचन योग	५ चारों गतियों में हरेक में १ सत्य वचन योग जानना	१	१	
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ वेद अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ वेद जानना	
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	
१२ ज्ञान	८ को० नं० २६ देखो	८ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम	७ को० नं० २६ देखो	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना	
१४ दर्शन	४ को० नं० २६ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
१५ लेश्या	६ को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या जानना	
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	
१९ आहारक	१ आहारक	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग आहारक अवस्था	१ अवस्था आहारक अवस्था जानना	
२० उपयोग	१२ को० नं० २६ देखो	१२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ उपयोग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान	१५ को० नं० ३५ देखो	१५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	
२२ आस्रव	४३ मिथ्यात्व ५, अविरत १२,	४३ चारों गतियों में हरेक में	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग अपने अपने स्थान के	

१	२	३	४	५	६-७-८
	(हिंसक ६ + हिंस्य ६) कषाय २५, सत्य वचन-योग १ ये ४३ जानना	को० नं० २५ के समान भंग जानना परन्तु यहां सत्य मनोयोग या अनुभय मनोयोग के जगह सत्यवचन योग जानना	सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
२३ भाव	५३ को० नं० २६ देखो	५३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से हरेक भंग में से कोई १ भंग जानना	

२४ **अवगाहना**—को० नं० ३६ के समान जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—को० नं० २६ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१०६ को० नं० २५ के समान जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ को० नं० २६ के समान जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—नाना जीवों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग अर्थात् मनुष्य लोक (अढाई द्वीप) जानना।

३० **स्पर्शन**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वलोक जानना। एक जीव की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग अर्थात् ८ राजु जानना। (को० नं० २६ देखो)

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल के बाद सत्य वचनयोग जरूर धारण करना पड़े।

३३ **जाति (योनि)**—२६ लाख योनि जानना। (को० नं० २६ देखो)

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना। (")

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१२ १ से १२ तक के गुण०	१२ चारों गतियों में—१ से १२ तक के गुण० अपने अपने स्थान के समान गुण० जानना को० नं० २६ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण स्थान १ से १२ में से अपने अपने स्थान में से कोई १ गुण० जानना	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीव समास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० २६ के समान जानना	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० २६ देखो	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियां जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति	१ गति चारों में से कोई १ गति	
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
९ योग असत्यमनोयोग या उभय वचनयोग जानना	१	१ चारों गतियों में हरेक में दोनों योगों में से कोई १ योग जिसका विचार करना हो वो एक योग जानना	१ दोनों में से कोई १ योग	१ दो में से कोई १ योग	
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ वेद अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ वेद जानना	
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
१२ ज्ञान केवल ज्ञान १ घटाकर शेष ७ ज्ञान जानना	७	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम को० नं० २६ देखो	७	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना	
१४ दर्शन केवल दर्शन १ घटाकर (३)	३	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान सारे भंग जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	
१५ लेश्या को० नं० २६ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में	१ भंग अपने अपने स्थान के	१ अवस्था अपने अपने स्थान के	

१	२	३	४	५	६-७-८
		को० नं० २६ के समान भंग जानना	भंगों में से कोई एक भंग	भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	
१७ सम्यक्त्व को० नं० २६ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी संज्ञी	१	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग को० नं० २६ देखो	१ अवस्था को० नं० २६ देखो	
१९ आहारक आहारक	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० २६ के समान भंग जानना	१ भंग आहारक अवस्था	१ अवस्था आहारक अवस्था	
२० उपयोग को० नं० २६ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ उपयोग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान को० नं० २६ देखो	१४	१४ चारों गतियों में हरेक में को० नं० २६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५ अविरत १२, (हिंसक ६+हिंस्य ६) कषाय २५, असत्य वचनयोग या उभय वचनयोग इन दोनों में से कोई १ योग जिसका विचार करना हो वो योग जानना ये सब ४३ आस्रव जानना	४३	४३ चारों गतियों में हरेक में भंगों का विवरण को० नं० ३५ के समान भंग यहां भी जानना, परन्तु यहां सत्यमनोयोग या अनुभय मनोयोग की जगह असत्य वचनयोग या उभय वचनयोग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के हरेक भंग में से कोई १ भंग जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
२३ भाव	४६ को० नं० २६ देखो	४६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३६ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० २६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के हरेक भंग में से कोई १ भंग जानना को० नं० २६ देखो	

२४ अवगाहना—को० नं० ३५ समान जानना ।

२५ बंध प्रकृतियां—को० नं० २६ के समान जानना ।

२६ उदय प्रकृतियां—१०६ को० नं० ३५ के समान जानना ।

२७ सत्त्व प्रकृतियां—१४८ को० नं० २६ समान जानना ।

२८ संख्या—असंख्यात जानना ।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३० स्पर्शन—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वलोक जानना । एक जीव की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग अथवा ८ राजु जानना (को० नं० २६ देखो)

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अंतर्मुहूर्त तक जानना ।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा अंतर्मुहूर्त असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक यदि मोक्ष न हो सके तो असत्य वचन योग या उभय वचन योग इनमें से कोई भी एक योग अवश्य धारण करना पड़े ।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना । (को० नं० ३५ देखो)

३४ कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना । (को० नं० ३५ देखो)

क्र० स्थान सामान्य आलाप		पर्याप्त			अपर्याप्त
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१३ १ से १३ तक के गुण०	१३ चारों गतियों में—अपने अपने स्थान के समान १ से १३ तक के गुण० में जानना को० नं० २६ देखो।	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण स्थान अपने अपने स्थान के गुण० में से कोई १ गुण० जानना	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीव समास	५ द्वीन्द्रिय, त्रान्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञीपंचेन्द्रिय, संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये ५ जानना	५ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास जानना को० नं० १६ से १६ देखो, शेष ४ समास तिर्यंच गति में जानना, को० नं० १७ देखो	१ समास ५ में से कोई १ समास जानना	१ समास ५ में से कोई १ समास जानना	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६–५ ६–५ के भंग चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग–को० नं० १६ से १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ५ का भंग को० नं० १७ के समान	१ भंग ६–५ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ भंग ६–५ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० १०–६–८–७–६–४–१० के भंग चारों गति में हरेक में १० का भंग–को० नं० १६ से १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६–८–७–६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४ का भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगो में से कोई १ भंग जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
		(४) भोग भूमि में १० का भंग को० नं० १७-१८ देखो			
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ ४-४-३-२-१-१-०-४ के भंग चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ४ का भंग द्वीन्द्रिय से असंज्ञी तक के जीवों को० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना (४) भोग भूमि में ४ का भंग को० नं० १७-१८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गतियां जानना	१ गति चारों में से कोई १ गति	१ गति चारों में से कोई १ गति	
७ इन्द्रिय जाति एकेन्द्रिय जाति १ घटाकर ४ जानना	४	४ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १६ देखो (२) तिर्यंच गति में द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी- पंचेन्द्रिय जाति ये ४ जाति जानना को० नं० १७ देखो	१ जाति चारों के से कोई १ जाति	१ जाति चारों में से कोई १ जाति	
८ काय	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग	१	१ अनुभय वचनयोग जानना चारों गतियों में हरेक में १ अनुभय वचन योग जानना	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ वेद अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ वेद जानना	
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	भंग १ अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	
१२ ज्ञान	८ को० नं० २६ देखो	८ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ज्ञान अपने अपने सारे भंगों में से कोई १ ज्ञान जानना	
१३ संयम	७ को० नं० २६ देखो	७ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ संयम अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ संयम जानना	
१४ दर्शन	४ को० नं० २६ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना	
१५ लेश्या	६ को० नं० २६ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या जानना	
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
१७ सम्यक्त्व को० नं० २६ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व जानना	
१८ संज्ञी संज्ञी, असंज्ञी	२	२ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना—को० नं० १६ से १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १ असंज्ञी-द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीव असंज्ञी जानना को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में (०) अनुभय अर्थात् न संज्ञी न असंज्ञी अवस्था जानना, देखो को० नं० १८ (४) भोगभूमि में—१ संज्ञी जानना, को० नं० १७-१८ देखो	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग अवस्था जानना	१ अवस्था अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ अवस्था जानना	
१६ आहारक आहारक	१	१ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान १ आहारक अवस्था जानना	१ आहारक अवस्था जानना	१ आहारक अवस्था जानना	
२० उपयोग को० नं० २६ देखो	१२	१२ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ उपयोग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	
२१ ध्यान व्युपरत क्रिया निवर्तिनी १ घटाकर १५ जानना	१५	१५ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ ध्यान अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अविरत १२ (हिंसक ६ + हिंस्य ६)	४३	४३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई	

१	२	३	४	५	६-७-८
	कषाय २५, अनुभय वचन योग १ ये [illegible] जानना २३ भाव ५३ को० नं० २६ देखो	परन्तु यहां एक अनुभय वचनयोग ही जानना ५३ चारों गतियों में हरेक में को० नं० ३३ के समान भंग जानना	को० नं० १८ देखो सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग जानना १ भंग अपने अपने स्थान के हरेक भंग में से कोई १ भंग जानना	

२४ अवगाहना—को० नं० ३५ के समान जानना।

२५ बंध प्रकृतियां—को० नं० २६ के समान जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—११२ उदययोग्य १२२ प्र० में से एकेन्द्रिय जाति १, आनुपूर्वी ४, आतप १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, ये १० घटाकर ११२ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—को० नं० २६ के समान जानना।

२८ संख्या—असंख्यात जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० स्पर्शन—लोक का संख्यातवां भाग, अर्थात् ८ राजु जानना, सर्व लोक को० नं० २६ के समान जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा एक समय से अंतर्मुहूर्त तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा एक अंतर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक अनुभय वचन प्राप्त नहीं होता।

३३ जाति (योनि)—३२ लाख योनि जानना, (द्वीन्द्रिय २ लाख, त्रीन्द्रिय २ लाख, चतुरिन्द्रिय २ लाख, पंचेन्द्रिय पशु तिर्यंच ४ लाख, नारकी ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख ये ३२ लाख योनि जानना।

३४ कुल—१३२॥ लाख कोटिकुल जानना, (द्वीन्द्रिय ७, त्रीन्द्रिय ८, चतुरिन्द्रिय ९, पंचेन्द्रिय पशु तिर्यंच ४३॥, नारकी २५, स्वर्ग के देव २६, मनुष्य १४ लाख कोटिकुल से १३२॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान १ से १३ तक के गुण०	१३	१३ (१) तिर्यंच गति में १ से ५ गुण स्थान (२) भोग भूमि में १ से ४ " (३) मनुष्य गति में १ से १३ गुण० जानना (४) भोग भूमि में १ से ४ गुण० "	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण स्थान अपने अपने स्थान के गुण० में से कोई १ गुण० जानना	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीवसमास एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त " बादर " द्वीन्द्रिय " त्रीन्द्रिय " चतुरिन्द्रिय " असंज्ञी पंचेन्द्रिय " संज्ञी " " ये ७ जीव समास जानना	७	७ (१) तिर्यंच गति में ७–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ समास अपने अपने स्थान के समासों में से कोई १ समास "	१ समास अपने अपने स्थान के समासों में से कोई १ जीव समास जानना "	
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ (१) तिर्यंच गति में ६–५–४–६ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ६–६ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग "	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना "	
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) तिर्यंच को० में १०–९–८–७–६–४–१० के भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	

१	२	३	४		६-७-८
		(२) मनुष्य गति में १०-४-१० के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग को० नं० १७ देखो ( ) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	
६ गति तिर्यंच गति, मनुष्य गति	२	२ १ तिर्यंच गति को० नं० १७ देखो १ मनुष्य गति को० नं० १८ देखो	१ गति १ १	१ गति १ १	
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) तिर्यंच गति में ५-१-१ जाति को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १ जाति को० नं० १८ देखो	१ जाति १ जाति को० नं० १७ देखो १ जाति को० नं० १८ देखो	१ जाति १ जाति को० नं० १७ देखो १ जाति को० नं० १८ देखो	
८ काय को० नं० १८ देखो	६	६ (१) तिर्यंच गति में ६-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य जाति में १ त्रसकाय को० नं० १८ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो १ काय को० नं० १८ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो १ काय को० नं० १८ देखो	
९ योग औदारिक काय योग	१	१ ( ) तिर्यंच गति में १ औ० काययोग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १ औ० काययोग को० नं० १८ देखो	१ १ १	१ १ १	
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		(२) मनुष्य गति में ३-३-२-२-३-२-१-०-२ के भंग को० नं० १८ के समान भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२१-२१-१७-२४-२० के भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	
		(२) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१३-१३-७-६-५-४- ३-२-१-१-०-२४-२० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
१२ ज्ञान को० नं० १८ देखो	८	८ (१) तिर्यंच गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो	
		(२) मनुष्य गति में ३-३-४-४-१-२-३ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञा को० नं० १८ देखो	
१३ संयम को० नं० १८ देखो	७	७ (१) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को० नं० १७ देखो	
		(२) मनुष्य गति में १-१-३-३-२-१-१-१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो	
१४ दर्शन को० नं० १८ देखो	४	४ (१) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३-२-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो	
		(२) मनुष्य गति में २-३-३-३-१-२-३ के भंग को० नं०० १८ समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) तिर्यंच गति में ३-६-६-३ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ६-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो	
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ (१) तिर्यंच गति में २-१-२-१ के भंग को नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो	
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० १८ देखो	६ (१) तिर्यंच गति में १-१-१-२-१-१-१-३ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (२) मनुष्य गति में १-१-१-३-३-३-२-१-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	
१८ संज्ञी	२ संज्ञी असंज्ञी	२ (१) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो	
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	२ (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो	
२० उपयोग	१२ को० नं० १८ देखो	१२ (१) तिर्यंच गति में	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		३-४-५-६-६-५६-६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना			
		(२) मनुष्य गति में ५-६-६-७-७-२-५-६-६ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	
२१ ध्यान	१५ व्युपरत क्रिया निवर्तिनी शुक्ल ध्यान १ घटाकर (१५)	१५ (१) तिर्यंच गति में ८-९-१०-११-८-९-१० के भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो	
		(२) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-७-४-१-१-१-८-९-१० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	
२२ आस्रव	४३ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, (हिंसक ६ + हिंस्य ६) कषाय २५, औदारिककाय योग १ ये ४३ जाननना	४३ (१) तिर्यंच गति में १ले गुण स्थान में ३६ का भंग—एकेन्द्रिय जीव में को० नं० १७ के समान जानना ३७-३८-३९-४२ के भंग—द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव में—को० नं० १७ के ३८-३९-४०-४२ के हरेक भंग में से अनुभय वचनयोग १ घटाकर ३७-३८-३९-४२ के भंग जानना ४३ का भंग—संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव में को० नं० १७ के ५१ के भंग में से मनोयोग ४, वचन-योग ४ये ८ योग घटाकर ४३ का भंग जानना २रे ३रे ४थे ५वे गुण स्थानों में ३८-३४-२९ के भंग—को० नं० १७ के ४६-४२-३७ के हरेक भंग में से ऊपर के योग ८ घटाकर ३८-३४-२९ के भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
		(४) भोगभूमि में १ से गुण स्थान में ४२-३७-३३ के भंग को० नं० १७ के ५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के योग ८ घटाकर ४२-३७-३३ के भंग जानना (२) मनुष्य गति में १ से ६ गुण० में ४३-३८-३४-२९-१४ के भंग को० नं० १८ के ५१-४६-४२-३७-२२ के हरेक भंग में से मनोयोग ४, वचन योग ४ ये ८ योग घटाकर ४३-३८-३४-२९-१४ के भंग जानना ७ से १२ गुण० में १४-८-७-६-५-४-३-२-२-१ के भंग को०नं० १८ के २२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१०-९ के हरेक भंग में से ऊपर के ८ योग घटाकर १४-८-७-६-५-४-३-२-२-१ के भंग जानना १३वें गुण में १ औदारिक काययोग जानना को०नं० १८ देखो भोग भूमि में १ से ४ गुण० में ४२-३७-३३ के भंग को० नं० १८ के ५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के ८ योग घटाकर ४२-३७-३३ के भंग जानना			
२३ भाव ५१ नरकगति, देवगति ये २ घटाकर ५१ भाव जानना		५१ (१) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-२९-३०-३२-२६-२७-२५-२६-२६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (२) मनुष्य गति में ३१-२९-३०-३३-३०-३१-३१-२६-२९-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२३-२१-२०-१४-२७-२५-२३-२६ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के हरेक भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग अपने अपने स्थान के हरेक भंगों में से कोई १ भंग जानना	

२४ **अवगाहना**—घनांगुल के असंख्यातवें भाग से एक हजार (१०००) योजन तक जानना ।

२५ **बंध प्रकृतियां**—को० नं० २६ के समान जानना ।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१०६ उदययोग्य १२२ प्र० में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियिक द्विक २, औ० मिश्रकाययोग १, आहारकद्विक २, कार्माण काययोग १, अपर्याप्त १, ये १३ घटाकर १०६ प्र० का उदय जानना ।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—को० नं० २६ के समान जानना ।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना ।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना ।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना ।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त काल कम २२ हजार वर्ष तक जानना ।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा एक समय से ३३ सागर नव अन्तर्मुहूर्त २ समय तक औदारिक काययोग नहीं धारण करता ।

३३ **जाति (योनि)**—७६ लाख योनि जानना (नरक ४ लाख, देव ४ लाख, ये ८ लाख घटाकर ७६ लाख जानना) को० नं० २६ देखो ।

३४ **कुल**—१४८॥ लाख कोटिकुल जानना । (नारकी २५, देव २६, लाख कोटिकुल ये ५१ लाख कोटिकुल घटाकर १४८॥ लाख कोटिकुल जानना को नं० २६ देखो) ।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३-४-५	६	७	८
१ गुण स्थान १-२-४-१३ ये गुण स्थान जानना	४	सूचना— यहां पर पर्याप्त अवस्था नहीं होती है।	४ १-२-४-१३ ये ४ गुण स्थान जानना (१) तिर्यंच गति में १-२ गुण स्थान जानना को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-२-४-१३ गुण स्थान को० नं० १८ देखो (३) भोग भूमि में-तिर्यंच-मनुष्य गति में १-२-४ गुण स्थान में को० नं० १७-१८ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ गुण स्थान अपने अपने स्थान के गुण० में से कोई १ गुण०
२ जीव समास एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त " बादर " द्वीन्द्रिय " त्रीन्द्रिय " चतुरिन्द्रिय " असंज्ञीपंचेन्द्रिय " संज्ञीपंचेन्द्रिय " ये ७ जीव समास जानना	७		७ (१) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो १ समास को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो १ समास को० नं० १८ देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	३		३ (१) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ३-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	७		७ (१) तिर्यंच गति में	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
			७-७-६-५-४-३-७ के भंग—को० नं० १७ के समान जानना		
			(२) मनुष्य गति में ७-२-७ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो		४ (१) तिर्यञ्च गति में ४-४ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
			(२) मनुष्य गति में ४-०-४ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
६ गति तिर्यंच गति, मनुष्य गति	२		२ (१) तिर्यंच गति (२) मनुष्य गति	१ दोनों मे से कोई १ गति	१ दो में से कोई १ गति
७ इन्द्रिय जाति	५ को० नं० १ देखो		५ (१) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो
			(२) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति—को० नं० १८ देखो	सारी जाति को० नं० १८ देखो	१ जाति को० नं० १८ देखो
८ काय	६ को० नं० १ देखो		६ (१) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो
			(२) मनुष्य गति में १ त्रसकाय—को० नं० १८ देखो।	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ काय को० नं० १८ देखो
९ योग औ० मिश्रकाय योग	१		१ (१) तिर्यंच गति में—औ० मिश्रकाय योग जानना को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में—औ० मिश्रकाय योग जानना को० नं० १८ देखो	१	१
१० वेद	३ को० नं० १ देखो		३ (१) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग—को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
			(२) मनुष्य गति में ३-१-०-२-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो		२५ (१) तिर्यंच गति में २४-०-२५-०-५-२३-२५-२४-१९ के भंग—को० नं० १७ के समान जानना (२) मनुष्य गति में २५-१९-०-२४-१९ के भंग—को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
१२ ज्ञान कुअवधि ज्ञान, मनः पर्ययज्ञान ये २ घटाकर (६)	६		६ (१) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-३-२-२-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो
१३ संयम	४ को० नं० १८ देखो		४ (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १७ देखो १ संयम को० नं० १८ देखो
१४ दर्शन	४ को० नं० १८ देखो		४ (१) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-३-१-२-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो १ दर्शन को० नं० १८ देखो
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो		६ (१) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ६-१-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
१६ भव्यत्व २ भव्य, अभव्य			२ (१) तिर्यंच गति में २–१–२–१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २–१–२–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो
१७ सम्यक्त्व ४ मिथ्यात्व, सासादन, क्षायिक, क्षयोपशम ये ४ सम्यक्त्व जानना			४ (१) तिर्यंच गति में १–१–१–१–२ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १–१–२–१–१–१–२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो
१८ संज्ञी २ संज्ञी, असंज्ञी			२ (१) तिर्यंच गति में १–१–१–१–१–१ के को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १–०–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो
१९ आहारक २ आहारक, अनाहारक			२ (१) तिर्यंच गति में १–१–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १–१–१–१–१–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो
२० उपयोग १० कुअवधि, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (१०)			१० (१) तिर्यंच गति में ३–४–४–२–४–४–४–६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (२) मनुष्य गति में ४–६–२–४–६ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
२१ ध्यान	११ आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञा वि० १, अपायवि० १, सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती १, ये ११ ध्यान जानना		११ (१) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग-को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ८-६-१-८-९ के भंग—को० नं० १८ देखो	९ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १८ देखो
२२ आस्रव	४३ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, (हिंसक ६ हिंस्य ६) कषाय २५, औदारिक मिश्रकाय योग १ ये (४३)		४३ (१) तिर्यंच गति में १ले गुण स्थान में ३६ का भंग—एकेन्द्रिय जीव में- को० नं० १७ के ३७ के भंग में से कार्माणकाय योग घटाकर ३६ का भंग जानना ३७ का भंग—द्वीन्द्रिय जीव में—ऊपर के ३६ के भंगों में से अविरत ७ (हिंसक का विषय १+६ हिंस्य ये ७) घटाकर, अविरत ८ (हिंसक के विषय २+ हिंस्य ६ ये ८) जोड़कर ३७ का भंग जानना ३८ का भंग— त्रीन्द्रिय जीव में—ऊपर के ३७ के भंग में से अविरत ८ घटाकर अविरत ९ (हिंसक के विषय ३ + ६ हिंस्य ये ९) जोड़कर ३८ का भंग जानना ३९ का भंग – चतुरिन्द्रिय जीव में- ऊपर के ३८ भंग में से अविरत ९ घटाकर, अविरत १० (हिंसक के विषय ४ + ६ हिंस्य ये १०) जोड़कर ३९ का भंग जानना ४२ का भंग—असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव में—ऊपर के ३९ के भंग में से अविरत १० घटाकर, अविरत ११ (हिंसक के विषय ५+६ हिंस्य ये ११) जोड़कर और स्त्री-पुरुष वेद ये २ जोड़कर ४२ का भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई भंग जानना

१	२	३ ४-५	६	७	८
			४० का भंग—संज्ञी पचेन्द्रिय जीव में—को० नं० १७ के ४४ के भंग में से कार्माणकाय योग १ घटाकर ४३ का भंग जानना २रे गुण स्थान में ३१-३२-३३-३४-३७ का भंग—ऊपर के १ले गुण० के ३६-३७-३८-३९-४२ के हरेक भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३१-३२-३३-३४-३७ के भंग जानना ३८ का भंग - ऊपर के संज्ञी पचेन्द्रिय जीव के ४३ भंग में से मिथ्यात्व ५ घटाकर ३८ का भंग जानना ४था गुण स्थान यहां नहीं होता २. भोगभूमि में— १ले २रे ४थे गुण० में ४२-३७-३२ के भंग—को० नं० १७ के ४३-३८-३३ के हरेक भंग में से कार्माणकाय योग १ घटाकर ४२-३७-३२ के भंग जानना (२) मनुष्य गति में ४३-३८-३२-१ के भंग—को० नं० १८ के ४४-३९-३३-२ के हरेक भंग में से कार्माणकाय योग १ घटाकर ४३-३८-३२-१ के भंग जानना २. भोगभूमि में—१ले २रे ४थे गुण० में ४२-३७-३२ के भंग—को० नं० १८ के ४३-३८-३३ के हरेक भंग में से कार्माणकाय योग १ घटाकर ४२-३७-३२ के भंग जानना		
२३ भाव ४५ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्ययज्ञान १, उपशमसम्यक्त्व १ उपसमचारित्र १ नरक गति १, देवगति १, संयमासंयम १, सरागसंयम १, ये ८ भाव घटाकर ४५ जानना			४५ (१ तिर्यंच गति में २४- ५-२७-२५-२२-२३-२५-२५-२४-२२-२५ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (२) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-१४-२७-२२-२५ के भंग—को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो

२४ अवगाहना—घनांगुल के असंख्यातवें भाग से कुछ कम एक हजार योजन तक जानना ।

२५ बंध प्रकृतियां—११४ बंधयोग्य १२० प्र० में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवायु १, आहारद्विक २, ये ६ घटाकर ११४ प्र० का बंध जानना ।

२६ उदय प्रकृतियां—९८ उदययोग १२२ प्र० में से महानिद्रा ३, मिश्र सम्यक्त्व १, नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २, देवायु १, वैक्रियिकद्विक २, आहारकद्विक २, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, मनुष्य गत्यानुपूर्वी १, परघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, विहायोगति २, स्वरद्विक २, ये २४ घटाकर ९८ प्र० का उदय जानना ।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४६—नरकायु, देवायु १ ये २ घटाकर १४६ प्र० का सत्व जानना ।

२८ संख्या—अनन्तानन्त जानना ।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना ।

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना ।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अंतर्मुहूर्त तक जानना ।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा एक समय से ३३ सागर तक और एक समय से अंतर्मुहूर्त तक एक कोटिपूर्व तक औदारिक मिश्रकाय योग की प्राप्ति न हो ।

३३ जाति (योनि)—७६ लाख योनि जानना (नरकगति ४ लाख, देवगति ४ लाख ये ८ लाख घटाकर शेष ७६ लाख योनि जानना)

३४ कुल—१४८॥ लाख कोटिकुल जानना । (को० नं० ४० देखो)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	४ १-२-३-४ ये ४ गुण० को० नं० १६ देखो	४ (१) नरक गति में और देवगति में हरेक में १ से ४ तक के गुण० जानना	सारे गुण स्थान को० नं० १६-१९ देखो	१ गुण स्थान को० नं० १६-१९ देखो	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीवसमास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ (१) नरक और देव गति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६-१९ देखो	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक और देव गति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० (१) नरक और देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ (१) नरक और देव गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	
६ गति	२ नरक गति, देव गति	२ (१) नरक और देव गति में जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ गति दो में से कोई १ गति	१ गति दो में से कोई १ गति	
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ (१) नरक और देव गति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१९ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
८ काय	१ त्रसकाय	१ (१) नरक और देव गति में हरेक में १ त्रसकाय को० नं० १६–१९ देखो	१ त्रसकाय को० नं० १६–१९ देखो	१ त्रसकाय को० नं० १६–१९ देखो	
९ योग	१ वैक्रियिक काययोग	१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ वैक्रियिक काय योग जानना को० नं० १६–१९ देखो	१ को० नं० १६–१९ देखो	१ को० नं० १६–१९ देखो	
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) देवगति में २–१–१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग १ नपुंसक वेद को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १९ देखो	
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) नरक गति में २–३–१–९ के भंग को० नं० १६ देखो (२) देव गति में २४–२४–१९–२३–१९–१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६–१९ देखो	१ भंग को० नं० १६–१९ देखो	
१२ ज्ञान	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३–३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) देव गति में ३–३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो	
१३ संयम	१ असंयम	१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६–१९ देखो	१ को० नं० १६–१९ देखो	१ को० नं० १६–१९ देखो	
१४ दर्शन	३ को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २–३ के भंग को० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		(२) देव गति में २-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो	
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) देव गति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो	
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ (१) नरक गति में २-१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) देव गति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ देखो १ अवस्था को० नं० १९ देखो	
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) देव गति में १-१-१-२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	
१९ आहारक	१ आहारक	१ (१) नरक और देव गति में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	
२० उपयोग	९ को० नं० १६ देखो	९ (१) नरक और देव गति में हरेक में ५-६-६ के भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ उपयोग को० नं० १६-१९ देखो	
२१ ध्यान	१० को० नं० १६ देखो	१० (१) नरक और देव गति में हरेक में ८-९-१० के भंग को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६-१९ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
२२ आस्रव	४३ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, (हिंसक के विषय ६+६ हिंस्य ये १२) कषाय २५, ये ४३ आस्रव जानना	४१ (१) नरक गति में १ले गुण० में ४१ का भंग को० नं० १६ के ४६ के भंग में से मनोयोग ४, वचनयोग ४ ये ८ योग घटाकर ४१ का भंग जानना २रे गुण० में ३६ का भंग को० नं० १६ के ४४ के भंगों में से ऊपर के ८ योग घटाकर ३६ का भंग जानना ३रे ४थे गुण० में ३२ का भंग को० नं० १६ के ४० के भंगों में से ऊपर के ८ योग घटाकर ३२ का भंग जानना (२) देवगति गति में १ से ४ गुण० में ४२-३७-३३-४१-३६-३२-३२ के भंग को० नं० १६ के ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के हरेक भंग में से ऊपर के ८ योग घटाकर ४२-३७-३३-४१-३६-३२-३२ के भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १६ देखो सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६ देखो १ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६ देखो	
२३ भाव	३६ उपशम-क्षायिक स० २, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, क्षयोपशम सम्यक्त्व १, नरक गति १, देवगति १, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्या दर्शन १, असंयम १ अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३ ये ३६ जानना	३६ (१) नरक गति में १ से ४ गुण० में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ के समान जानना (२) देव गति में १ से ४ गुण० में २५-२३-२४-२६-२७-२५-२६-२६-२४-२२-२३-२६-२५ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १६ देखो सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६ देखो १ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६ देखो	

२४ अवगाहना—एक हाथ से ५०० धनुष तक जानना । सर्वार्थसिद्धि में एक हाथ और ७वें नरक में ५०० धनुष अवगाहना जानना ।

२५ बंध प्रकृतियां—१०४ बंध योग्य १२० प्र० में से नरकद्विक २, नरकायु १, देवद्विक २ देवायु १, वैक्रियिक द्विक २, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, विकलत्रय ३, आहारकद्विक २ ये १६ घटाकर १०४ बंध प्रकृतियां जानना ।

२६ उदय प्रकृतियां—८६ ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६ (३ महानिद्रा घटाकर), वेदनीय २, मोहनीय २८, नरकायु १, देवायु १, नरक गति १, देवगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, वैक्रियिकद्विक २, तैजस १, कार्माण १, हुंडक संस्थान १, समचतुरस्रसंस्थान १, स्पर्शादि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, श्वासोच्छ्वास १, विहायोगति २, शुभ प्रकृति १०, (प्रत्येक बादर त्रस, पर्याप्त, सुभग, स्थिर, शुभ, सुस्वर, आदेय, यश: कीर्ति ये १० जानना) अशुभ प्रकृति ६ (दुर्भग, अस्थिर, अशुभ, दुःस्वर, अनादेय, अयश: कीर्ति ये ६ जानना) निर्माण १, गोत्र २, अन्तराय ५, ये ८६ प्र० का उदय जानना ।

सूचना—१० शुभ प्रकृतियों का उदय देवगति में ही होता है और ६ अशुभ प्रकृतियों का उदय नरक गति में ही होता है । शेष ३ अशुभ प्रकृतियों (साधारण, सूक्ष्म, स्थावर, का उदय एकेन्द्रिय तिर्यंच गति में ही होता है और ४था अपर्याप्त अशुभ प्रकृति का उदय लब्ध्य पर्याप्तक (तिर्यंच) जीवों में ही होता है और ये जीव मनुष्य और तिर्यंचों में पाये जाते हैं ।

२७ सत्व प्रकृतियां—को० नं० २६ के समान जानना ।

२८ संख्या—असंख्यात जानना ।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना ।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग अर्थात् १६वें स्वर्ग का देव किसी मित्र को संबोधन के लिये ३रे नरक तक जाता है इस अपेक्षा से १६वें स्वर्ग से मध्य लोक ६ राजु नीचा है और मध्य लोक से तीसरा नरक २ राजु नीचा है ये ८ राजु लोक का असंख्यातवां भाग जानना और सर्वार्थ सिद्धि के अहमीन्द्र देवों में ७वें नरक तक जाने की शक्ति है, परन्तु वे जाते नहीं इसलिये यहां शक्ति की अपेक्षा से १३ राजु स्पर्शन बतलाया गया है । (जैसे सर्वार्थसिद्धि से मध्य लोक ७ राजु नीचा है और मध्यलोक से ७वां नरक ६ राजु नीचा है, ये १३ राजु जानना)

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त काल तक जानना ।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर कोई नहीं, एक जीव की अपेक्षा एक समय से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक वैक्रियिक काययोग न धारण कर सके ।

३३ जाति (योनि)—८ लाख योनि जानना । (नरक गति ४ लाख, देव गति ४ लाख ये ८ लाख जानना) ।

३४ कुल—५१ लाख कोटिकुल जानना । (नरक गति २५, देवगति २६ ये ५१ लाख कोटिकुल जानना) ।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३-४-५	६	७	८
१ गुण स्थान १-२-४ ये ३ गुण०	३	सूचना— यहां पर पर्याप्त अवस्था नहीं होती है।	३ (१) नरक गति में-१ले ४थे गुण० जानना (२) देवगति में १-२-४ ये ३ गुण स्थान जानना को० नं० १६-१६ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ गुण स्थान को० नं० १६-१६ देखो
२ जीव समास संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्ति	१		१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव समास जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ समास को० नं० १६-१६ देखो	१ समास को० नं० १६-१६ देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	३		३ (१) नरक और देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१६ देखो लब्धि रूप ६ पर्याप्ति	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	७		७ (१) नरक और देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४		४ (१) नरक और देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो
६ गति नरकगति, देवगति	२		२ (१) नरक और देवगति जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ गति को० नं० १६-१६ देखो	१ गति को० नं० १६-१६ देखो
७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रिय जाति जानना	१		१ (१) नरक और देवगति में हरेक में	१ जाति को० नं० १६-१६ देखो	१ जाति को० नं० १६-१६ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
			१ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१६ देखो		
८ काय	१ त्रसकाय		१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना, को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो
६ योग	१ वैक्रियिक मिश्रकाय योग		१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ वै० मिश्रकाय योग जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो		३ (१) नरक गति में—१ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) देवगति में २-१-१ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १६ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो		२५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) देवगति में २४-२४-१६-२३-१६-१६ के भंग— को० नं० १६ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो
१२ ज्ञान	५ कुमति १, कुश्रुत १, ज्ञान ३ ये ५ जानना		५ (१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) देवगति में २-२-३-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १६ देखो
१३ संयम	१ असंयम		१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ संयम को० नं० १६-१६ देखो
१४ दर्शन	३ को० नं० १६ देखो		३ (१) नरक गति में	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो

कोष्टक नं० ४३

१	२	३-४-५	६	७	८
			२-३ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) देवगति में २-२-३-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६		६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) देवगति में ३-३-१-१ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य		२ (१) नरक और देवगति में हरेक में २-१ के भंग—को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१९ देखो
१७ सम्यक्त्व	५ मिश्र घटाकर (५)		५ (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) देवगति में १-१-२ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	१ संज्ञी		१ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१९ देखो
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक		२ (१) नरक और देवगति में हरेक में १-१ के भंग—को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१९ देखो
२० उपयोग को० नं० १६ देखो	८		८ (१) नरक गति में ४-६ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) देवगति में ४-४-६-६ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो
२१ ध्यान को० नं० १६ देखो	९		९ (१) नरक और देवगति में हरेक में ८-९ के भंग—को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६-१९ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
२२ आस्रव	४३ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, (हिंसकविषय के ६ + ६ हिंस्य) कषाय २५, वै० मिश्रकाय योग १ ये ४३ जानना		४३ (१) नरक गति में ४१-३२ के भंग—को० १६ के ४२-३३ के हरेक भंग में से कार्माणकाय योग १ घटाकर ४१-३२ के भंग जानना (२) देवगति में ४२-३७-३२-४१-३६-३८-३२ के भंग—को० नं० १९ के ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के हरेक भंग में से कार्माणकाय योग १ घटाकर ४२-३७-३२-४१-३६-३२-३२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो
२३ भाव	३८ को० नं० ४२ के ३९ के भावों में से कुअवधि ज्ञान घटाकर ३८ भाव जानना		३८ (१) नरक गति में २५-२७ के भंग – को० नं० १६ देखो (२) देवगति में २६-२४-०-२६-२४-२८-२३-२१-२६-२६ के भंग—को० नं० १९ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० ४२ के वै० काय योगियों की अवगाहना से कुछ कम अवगाहना जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१०२ को० नं० ४२ के १०४ प्र० में से तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १ ये २ घटाकर १०२ जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—७९ को० नं० ४२ के ८६ प्र० में से मिश्र सम्यक्त्व १, नरकगति १, देवगति १, परघात १, उच्छ्वास १, विहायोगति २, स्वरद्विक २, ये ९ घटाकर शेष ७७ प्र० में नरकगत्यानुपूर्वी १, देवगत्यानुपूर्वी १ ये जोड़कर ७९ प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४६ भुज्यमान देव या नरकायु में से कोई १ और भज्यमान तिर्यंच या मनुष्य आयु में से कोई १ ये २ घटाकर १४६ प्र० का सत्व जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का संख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा अंतर्मुहूर्त से पल्य के असंख्यातवें भाग तक यह योग निरन्तर चलता रहता है। एक जीव की अपेक्षा अंतर्मुहूर्त से अंतर्मुहूर्त तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से १२ मुहूर्त तक संसार में किसी भी जीव के वैक्रियिक मिश्रकाय योग न होता हो यह संभव है। एक जीव की अपेक्षा साधिक दस हजार वर्ष से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक वै० मिश्रकाय योग प्राप्त न हो सके अन्य गतियों में ही जन्म लेता रहे।

३३ **जाति (योनि)**—८ लाख योनि जानना, (नरकगति ४ लाख, देवगति ४ लाख, ये ८ लाख जानना)

३४ **कुल**—५१ लाख कोटिकुल जानना, (नरकगति के २५, देवगति के २६ ये ५१ लाख कोटिकुल जानना)

कोष्टक नं० ४४ आहारक काययोग या आहारक मिश्रकाययोग में

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१ ६वां प्रमत्त गुण० जानना	१ ६वां प्रमत्त गुण० जानना	१	१	१ ६वां प्रमत्त गुण स्थान	१	१
२ जीव समास	२ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त ये (२)	१ संज्ञी पं० पर्याप्त	१ समास संज्ञी पं० पर्याप्त	१ समास संज्ञी पं० पर्याप्त	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त	१ समास संज्ञी पं० अपर्याप्त	१ समास संज्ञी पं० अपर्याप्त
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	३ ३ का भंग को०नं०१८ देखो लब्धि रूप ६ पर्याप्ति	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० १० का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	७ ७ का भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ ४ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ ४ का भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग
६ गति	१ मनुष्य गति	१ मनुष्य गति	१	१	१ मनुष्य गति	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१
७ काय	१ त्रसकाय	१ त्रसकाय जानना	१	१	१ त्रसकाय जानना	१	१
९ योग	१ आहारक काययोग या आहारक मिश्रकाययोग जिसका विचार करना हो वो योग जानना	१ आहारक काययोग जानना	१ आहारक काययोग जानना	१ आहारक काययोग जानना	१ आहारक मिश्रकाययोग जानना	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
१० वेद ३ पुरुषवेद	१ पुरुष वेद जानना	१	१	१ पुरुष वेद जानना	१	१
११ कषाय ११ संज्वलन कषाय ४, हास्यादि नोकषाय ६ पुरुषवेद १ ये (११)	११ ११ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ४-५-६ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	११ ११ का भंग पर्याप्तवत्	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
१२ ज्ञान ३ मति-श्रुत-अवधि ज्ञान ये ३ जानना	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग ३ का भंग जानना	१ ज्ञान ३ का भंग	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
१३ संयम २ सामायिक, छेदोपस्थापना ये २ जानना	२ २ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग २ का भंग	१ संयम २ का भंग	२ २ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग २ का भंग	१ संयम २ का भंग
१४ दर्शन ३ अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन अवधि दर्शन	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ३ का भंग	१ दर्शन ३ के भंगों में से कोई १ दर्शन	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग पर्याप्तवत्	१ दर्शन पर्याप्तवत्
१५ लेश्या ३ शुभ लेश्या	३ ३ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंगों में से कोई १ लेश्या	३ ३ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग पर्याप्तवत्	१ लेश्या पर्याप्तवत्
१६ भव्यत्व १ भव्य	१ १ भव्य जानना को० नं० १८ देखो	१	१	१ १ भव्य-जानना	१	१
१७ सम्यक्त्व २ क्षायिक, क्षयोपशम स०	२ २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग २ का भंग	१ सम्यक्त्व २ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व	२ २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग २ का भंग	सम्यक्त्व २ में से कोई [illegible] सम्यक्त्व
१८ संज्ञी १ संज्ञी	१ १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ संज्ञी	१ संज्ञी	१ १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ संज्ञी	१ संज्ञी
१९ आहारक १ आहारक	१ १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ आहारक	१ आहारक	१ १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ आहारक	१ आहारक

कोष्टक नं० ४४ आहारक काययोग या आहारक मिश्रकाय योग में

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३, दर्शनोपयोग ३ ये ६ जानना	६	६ ६ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ६ का भंग	१ उपयोग ६ के भंगों में से कोई उपयोग	६ ६ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग पर्याप्तवत्	१ उपयोग पर्याप्तवत्
२१ ध्यान इष्ट वियोग घटाकर आर्त ध्यान ३, धर्म-ध्यान ४ ये ७ जानना	७	७ ७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ७ का भंग	१ ध्यान ७ में से कोई १ ध्यान	७ ७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग ७ का भंग	१ ध्यान ७ में से कोई १ ध्यान जानना
२२ आस्रव उपरोक्त कषाय ११, आहारक काययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, मनोयोग ४, वचनयोग ४	२१	२० आहारक मिश्रकाय योग घटाकर (२०) २० का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग २० का भंग जानना	१ भंग २० का भंग जानना	१२ आहारक काययोग १ मनोयोग ४ वचनयोग ४ ये ९ घटाकर (१२) १२ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग १२ का भंग जानना	१ भंग १२ का भंग जानना
२३ भाव क्षायिक-क्षयोपशम स० २, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, मनुष्यगति १, कषाय ४, शुभ लेश्या ३, पुरुषलिंग १, सराग-संयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये (२७)	२७	२७ २७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	२७ २७ का भंग को० नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

२४ **अवगाहना**—एक हाथ ऊंचा शरीर जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—६३ को० नं० ६ के समान जानना।

६२ आहारक मिश्रकाय योग की अवस्थायें में देवायु १ घटाकर ६२ जानना

२६ **उदय प्रकृतियां**—६१ को० नं० ६ के ८१ उदय प्रकृतियों में से स्त्यानगृध्यादि महानिद्रा ३, स्त्री वेद १, नपुंसक वेद१, अप्रशस्त विहायोगति १, दुःस्वर १, संहनन ६, औदारिकद्विक २, पहले समचतुरस्रसंस्थान छोड़कर शेष ५ संस्थान ये २० घटाकर आहारककाययोग की अपेक्षा ६१ प्र० का उदय जानना।

५७ आहारकमिश्र काययोग की अपेक्षा ऊपर के ६१, प्र० में से परघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्तविहायोगति १, सुस्वर १ ये ४ घटाकर ५७ जानना

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—१४६ नरकायु १, तिर्यंचायु १ ये २ घटाकर ४६ प्र० का सत्ता जानना।

२८ **संख्या**—आहारक काययोग में ५४ जीव एक समय में हो सकते हैं और आहारक मिश्रकाययोग में २७ जीव एक समय में हो सकते हैं।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना।

३१ **काल**—आहारक काययोग में एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना और आहारकमिश्रकाय योग में अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से वर्ष पृथक्त्व तक कोई भी आहारक काययोगी नहीं हो सकते। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ८ या ७ अन्तर्मुहूर्त कम अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक आहारक काययोग धारण न कर सके।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख योनि मनुष्य जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२		३-४-५	६	७	८
१	गुण स्थान १-२-४-१३ ये गुण स्थान जानना	४	सूचना— यहा पर पर्याप्त अवस्था नहीं होती है।	४ (१) नरक गति में—१ले ४थे गुण स्थान (२) तिर्यंच गति में—कर्मभूमि में १-२ गुण० भोगभूमि में —१-२-४ गुण० जानना (३) मनुष्य गति में—१-२-४-१३ गुण० (४) देवगति में—१-२-४ गुण० जानना को० नं० १६ से १६ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना को० नं १६ से १६ देखो	१ गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० को० नं० १६ से १६ देखो
२	जीव समास अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १ में देखो	७		७ (१) नरक गति में १ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ समास अपने अपने स्थान के कोई १ समास जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ समास अपने अपने स्थान के समासों में से कोई एक समास जानना को० नं० १६ से १६ देखो
३	पर्याप्ति को० नं० १ देखो	३		३ (१) नरकादि चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग—को० नं० १६ से १६ देखो (२) भोगभूमि में ३ का भंग—को० नं० १७-१८ देखो लब्धि रूप ६ पर्याप्ति होती है	१ भंग अपने अपने स्थान के ३ का भंग जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के ३ का भंग जानना को० नं० १६ से १६ देखो
४	प्राण को० नं० १ देखो	७		७	१ भंग	१ भंग

कोष्टक नं० ४५

कार्माणकाय योग में

१	२	३-४-५	६	७	८
			(१) नरक और देवगति में हरेक में ७ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग—को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ७-२-७ के भंग—को० नं० १८ देखो	७ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो १ भंग कोई १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	७ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो १ भंग कोई १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४		४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-०-४ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग ४ का भंग जानना को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ४ का भंग—जानना को० नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४		४ चारों गति जानना, को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति ४ में से कोई १ गति	१ गति ४ में से कोई १ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५		५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना—को० नं० १६-१८-१९ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय को० नं० १ देखो	६		६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१८ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो
९ योग कार्माणकाय योग	१		१ कार्माणकाय योग जानना	१	१
१० वेद को० नं० १ देखो	३		३ (१) नरक गति में—नपुंसक वेद—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
			(२) तिर्यंच गति में ३–१–३–१–३–२–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो
			(३) मनुष्य गति में ३–१–०–२–१ के भंग नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
			(४) देव गति में २–१–१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५		२५ (१) नरक गति में २३–१६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई भंग
			(२) तिर्यंच गति में २५–२३–२५–२५–२३–२५–२४–१६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
			(३) मनुष्य गति में २५–१६–०–२४–१६ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
			(४) देव गति में २४–२४–१६–२३–१६–१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
१२ ज्ञान कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १ ये २ घटाकर शेष ६ जानना	६		६ (१) नरक गति में १–३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो
			(२) तिर्यंच गति में २–२–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो
			(३) मनुष्य गति में २–३–२–२–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो
			(४) देव गति में २–२–३–३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो
१३ संयम असंयम, यथाख्यात	२		२ (१) नरक, तिर्यंच, देवगति में हरेक में	१ असंयम को० नं० १६-१७-१६ देखो	१ असंयम को० नं० १६-१७-१६ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
			१ असंयम जानना को०नं० १७-१८-१९ देखो (२) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो
१४ दर्शन ४ को० नं० १ देखो			४ (१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-३-१-२-३ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-२-३-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो १ दर्शन को० नं० १७ देखो १ दर्शन को० नं० १८ देखो १ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या ६ को० नं० १ देखो			६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग- को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-१-१ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व २ भव्य, अभव्य			२ (१) नरक और देवगति में हरेक में २-१ के भंग—को० नं० १६—१९ देखो (२) तिर्यंच गति में २-१-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व ५ मिश्र घटाकर शेष (५)			५ (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-२-१-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो
१८ संज्ञी २ संज्ञी, असंज्ञी			२ (१) नरक और देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६–१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६–१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १६–१९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो
१९ आहारक १ अनाहारक			१ (१ चारों गतियों में हरेक में १ अनाहारक अवस्था जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ अनाहारक अवस्था	१ अनाहारक अवस्था
२० उपयोग १० को० नं० १ देखो			१० (१ नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-४-६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४-६-१-४-६ के भंग को० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो

१	२	३-४-५	६	७	८
			(४) देवगति में ४-६-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ ध्यान को० नं० १६ देखो
१ ध्यान १० आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञाविचय १, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति १ ये १० जानना			१० (१) नरक गति में ८-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ८-८-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-६-१-८-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ८-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १८ देखो १ ध्यान को० नं० १६ देखो
२ आस्रव ४३ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, कषाय २५, कार्माण काय-योग १ ये ४३ जानना			४३ (१) नरक गति में १ले ४थे गुण० में ४१-३२ के भंग को० नं० १६ के ४२-३३ के हरेक भंग में से वै० मिश्रकाययोग १ घटाकर ४१-३२ के भंग (२) तिर्यंच गति में १ले गुण स्थान में ३६-३७-३८-३६-४२-४३ के भंग को० नं० १७ के ३७-३८-३६-४०-४३-४४ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३६-३७-३८-३६-४२-४३ के भंग जानना २रे गुण० में ३१-३२-३३-३४-३७-३८ के भंग को० नं० १७ के ३२-३३-३४-३५-३८-३६ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाययोग १ घटाकर ३१-३२-३३-३४-३७-३८ के भंग जानना ४था गुण स्थान यहां नहीं होता भोगभूमि में १ले २रे से ४थे गुण० में	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना

१	२	३-४-५	६	७	८
			४२-३७-३२ का भंग को० नं० १७ के ४३-३८-३३ के हरेक भंग में से औ० मिश्रकाय योग घटाकर ४२-३७-३२ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में १—२—४—१३वें गुण० में ४३-३८-३२-१ के भंग को० नं० १८ के ४४-३९-३३-२ के हरेक भंग में से औ० मिश्र काययोग १ घटाकर ४३-३८-३२-१ के भंग जानना १ का भंग को० नं० १८ के समान जानना भोग भूमि में १ले ४थे गुण० में ४३-३८-३२ के भंग को० नं० १८ के ४४-४९-३३ के हरेक भंगों में से औ० मिश्र-काययोग १ घटाकर ४३-३८-३२ के भंग जानना (४) देव गति में १—२—४थे गुण० में ४२-३७-३२-४१-३६-३२-३२ के भंग को० नं० १९ के ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के हरेक भंग में से वै० मिश्र काययोग १ घटाकर ४२-३७-३२-४१-३६-३२-३२ के भंग जानना		
२ भाव उपशम-चारित्र १, मनः पर्यय ज्ञान १, कुअवधि ज्ञान १, संयमा-संयम १, सराग-संयम १ ये ५ घटाकर ४८ भाव जानना	४८		४८ (१) नरक गति में १ले ४थे गुण० २५-२७ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १ले २रे गुण० में २४-२५-२७-२७-२२-२३-२५-२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को०नं० १६ देखो सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे हरेक भंग में से कोई १ भंग जानना १ भंग को०नं० १७ देखो

कोष्टक नम्बर ४५

१	२	३-४-५	६	७	८
			भोग भूमि में १ले २रे ४थे गुण० में २४-२२-२५ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १ले २रे ४थे १३वे गुण० में ३०-२८-३०-१४ के भंग को० नं० १८ के समान जानना भोग भूमि में १-२-४थे गुण० में २४-२२-२५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
			४) देव गति में १-२-४थे गुण० में २६-२४-०-२६-२४-२८-२३-२१-२६-२६ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

२४ **अवगाहना**—निगोदिया जीव के त्यक्त शरीर की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग जानना और उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार योजन तक जानना।

सूचना:—(१) विग्रह गति में छोड़े हुए शरीर का अवगाहना रूप आत्म प्रदेश की अवगाहना बना रहता है। (२) केवल समुद्घात में प्रतर और लोकपूर्ण अवस्था में वर्तमान शरीर के आकार हो ।ा है।

२५ **बंध प्रकृतियां**—११२ बंधयोग्य १२० प्र० में से आयु ४, नरकगति १, नरकगत्यानुपूर्वी १, आहारकद्विक २ ये ८ घटाकर शेष ११२ बंध प्र० जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—८९ उदययोग १२२ प्र० में से महानिद्रा ३, मिश्र (सम्यक्त्व) १, औदारिकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, आहारकद्विक २, संस्थान ६, संहनन ६, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, विहायोगति २, प्रत्येक १, साधारण १ स्वरद्विक २, ये ३३ घटाकर ८९ प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—१४८ को० नं० २६ के समान जानना।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से तीन समय तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्षुद्रभव में ३ समय कम क्षुद्रभव में रहकर मरण करके दुबारा विग्रह गति में कार्माणकाय योग धारण कर सकता है। उत्कृष्ट अन्तर ३ समय कम ३३ सागर के बाद विग्रह गति में आकर कार्माणयोग धारण करना ही पड़े।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२		३	४	५	६-७-८
१	गुण स्थान	१ चौदहवां गुण०	१ १ चौदहवं गुण स्थान जानना	१ गुण स्थान	१ गुण स्थान	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२	जीव समास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त उपचार से जानना	१ समास	१ समास	
३	पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	
४	प्राण	१ आयु प्राण	१ १ आयु प्राण– को० नं० १८ देखो	१	१	
५	संज्ञा	०	० अतीत संज्ञा	०	०	
६	गति	१ मनुष्यगति	१ १ मनुष्य गति–को० नं० १८ देखो	१ गति मनुष्य	१ गति मनुष्य	
७	इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ १ पंचेन्द्रिय जाति–को० नं० १८ देखो	१ जाति	१ जाति	
८	काय	१ त्रसकाय	१ १ त्रसकाय को० नं० १८ देखो	१	१	
९	योग	०	(०) अयोग जानना	०	०	
१०	वेद	०	(०) अपगत वेद जानना	०	०	
११	कषाय	०	(०) अकषाय जानना	०	०	
१२	ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान जानना	१	१	
१३	संयम	१	१ यथाख्यात संयम जानना	१	१	
१४	दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१	१	
१५	लेश्या	०	(०) अलेश्या जानना	०	०	
१६	भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	
१८ संज्ञी	०	(०) अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी)	०	०	
१९ आहारक	१	१ अनाहारक जानना	०	०	
२० उपयोग ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग	२	२ ज्ञानोपयोग १, दर्शनोपयोग १ ये (२)	२ युगपत् जानना	२ युगपत् जानना	
२१ ध्यान	१	१ व्युपरत क्रिया निवर्तिनी शुक्ल ध्यान	१	१	
२२ आस्रव	०	(०) अनास्रव जानना	०	०	
२३ भाव	११	११ ११ का भंग-को० नं० १८ देखो	१ भंग ११ का भंग जानना	१ भंग ११ का भंग जानना	

२४ अवगाहना – जघन्य अवगाहना ३॥ हाथ और उत्कृष्ट अवगाहना ५२५ धनुष तक जानना।

२५ बंध प्रकृतियां—(०) यहां बंध नहीं है।

२६ उदय प्रकृतियां—१२ तीर्थंकर केवलियों की अपेक्षा– साता वेदनीय १, मनुष्यायु १, उच्च गोत्र १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जाति १, तीर्थंकर प्र० १, बादर १, त्रस १, पर्याप्ति १, सुभग १, आदेय १, यशः कीर्ति १, ये १२ जानना। सामान्य केवली की अपेक्षा—तीर्थंकर प्र० १ घटाकर ११ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—(१) द्विचरम समय में ८५, वेदनीय २, मनुष्यायु १, गोत्र २, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, शरीर ५, बंधन ५, संघात ५, अंगोपांग ३, संस्थान ६, संहनन ६, स्पर्शादि २०, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, पर्याप्त १, अपर्याप्त १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, यशः कीर्ति १, अयशः कीर्ति १, प्रत्येक १, बादर १, त्रस १, सुभग १, दुर्भग १ सुस्वर १, दुःस्वर १, आदेय १, अनादेय १, निर्माण १, विहायोगति २, तीर्थंकर १ ये ८५ जानना।
(२) चरम समय में– १३ ऊपर के उदय प्रकृति १२ और असाता वेदनीय १ जोड़कर १३ जानना।
सामान्य केवली की अपेक्षा तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १२ जानना।

२८ संख्या—५९८

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—७ राजु।

३१ काल—अ-इ-उ ऋ-लृ ये पांच ह्रस्व स्वरों का उच्चारण करने तक का काल जानना।

३२ अन्तर—कोई अन्तर नहीं, कारण मोक्ष जाने के बाद फिर संसार में नहीं आता।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	६ १ से ६ गुण० जानना	६ (१) तिर्यंच गति में कर्मभूमि में १ से ५ गुण० जानना भोगभूमि में १ से ४ गुण० (२) मनुष्य गति में कर्मभूमि में १ से ६ गुण० जानना भोगभूमि में १ से ४ गुण० (३) देवगति में १ से ४ गुण० जानना	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के ५ सारे गुण स्थान को० नं० १७ देखो सारे गुण० को० नं० १८ देखो सारे गुण० को० नं० १९ देखो	१ गुण० कोई १ गुण० १ गुण० को० नं० १७ देखो १ गुण० को० नं० १८ देखो १ गुण० को० नं० १९ देखो	४ (१) तिर्यंच गति में कर्मभूमि में १-२ गुण० भोगभूमि में १-२-४ गुण० (२) मनुष्य गति में कर्मभूमि में १-२-४-६ गुण० भोगभूमि में १- ४ गुण० (३) देवगति में १-२-४ गुण० जानना	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० को० नं० १७ देखो सारे गुण० को० नं० १८ देखो सारे गुण० को० नं० १९ देखो	१ गुण० कोई १ गुण० को० नं० १७ देखो १ गुण० को० नं० १८ देखो १ गुण० को० नं० १९ देखो
२ जीव समास	४ असंज्ञी पं० पर्याप्त अपर्याप्त संज्ञीपंचेन्द्रिय ,, ,, ये ४ जानना सूचना—असंज्ञी पं० प० अपर्याप्त अवस्था यहां गो० क० गा० ३३०-३३१ के समान लिया है	२ (१) तिर्यंच गति में १ असंज्ञी पं० पर्याप्त को० नं० १७ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ समास १ असंज्ञी पं० प० को० नं० १७ देखो १ संज्ञी पं० पर्याप्त	१ समास १ असंज्ञी पं० प० १ संज्ञी पं० प०	२ (१) तिर्यंच गति में १ असंज्ञी प० पर्याप्त (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना	१ समास पर्याप्तवत् पर्याप्तवत्	१ समास पर्याप्तवत् पर्याप्तवत्
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) तिर्यंच गति में ५ का भंग-असंज्ञी पं० के को० नं० १७ देखो	१ भंग ५ का भंग	१ भंग ५ का भंग	३ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग जानना	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच–मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग–कौ० नं० १७-१८-१९ देखो	६ का भंग	६ का भंग	को० नं० १७-१८-१९ देखो, लब्धि रूप ६-५ का भंग भी होता है		
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) तिर्यंच गति में ९ का भंग–असंज्ञी पं० के को० नं० १७ के समान (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग– को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग ९ का भंग १० का भंग	१ भंग ९ का भंग १० का भंग	७ (१) तिर्यंच गति में ७ का भंग–असंज्ञी के (२) तिर्यंच गति में मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग ७ का भंग ७ का भंग	१ भंग ७ का भंग ७ का भंग
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) तिर्यंच-देवगति में हरेक मे ४ का भंग–को० नं० १७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२ के भंग को० नं० १८ के समान	१ भंग ४ का भंग सारे भंग ४–३–२ के भंग	१ भंग ४ का भंग १ भंग ४–३–२ के भंगों में से कोई १ भंग	४ (१) तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ४ का भंग सारे भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग १ भंग ४ का भंग
६ गति तिर्यंच–मनुष्य–देवगति	३	३ तिर्यंच–मनुष्य–देवगति में	१ गति ३ में से कोई १ गति	१ गति ३ में से कोई १ गति	३ तिर्यंच-मनुष्य-देवगति	१ गति ३ में से कोई १ गति	१ गति ३ में से कोई १
७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रिय जाति	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ जाति	१ जाति	१ तीनों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ जाति	१ जाति

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय	१ त्रसकाय	१ तीनों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १७–१८–१९ देखो	१ १ त्रसकाय	१ १ त्रसकाय	१ तीनों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १७–१८–१९ देखो	१ १ त्रसकाय	१ १ त्रसकाय
९ योग	१५ को० नं० २६ देखो	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ४ घटाकर (११) (१) तिर्यंच गति में ९–२–९ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ९–९–९–९ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ९ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ योग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो १ योग को०नं० १९ देखो	४ औ० मिश्र काययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ४ योग जानना (१) तिर्यंच गति में १-२- -२ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देव गति में १–२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् जानना १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ योग पर्याप्तवत् जानना १ योग को० नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो १ योग को०नं० १९ देखो
१० वेद	१ पुरुष वेद	१ तीनों गतियों में हरेक में १ पुरुष वेद जानना	१	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ पुरुष वेद जानना	१	१
११ कषाय स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर (२३)	२३	२३ (१) तिर्यंच गति में २३–२३–२३–१९–१५ के भंग को०नं० १७ के २५– २५–२५–२१–१७ के हरेक	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १७ देखो	अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १७ देखो	२३ (१) तिर्यंच गति में २३-२३-२३-२३ के हरेक भंग में से स्त्री वेद नपुंसक वेद ये २ घटाकर	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		भंग में से स्त्रीवेद १ नपुंसक वेद १ ये २ घटाकर २३–२३–२३–१९–१५ के भंग जानना भोग भूमि में २३–१९ के भंग को० नं० १७ के २४–२० के हरेक भंग में से स्त्री वेद घटाकर २३–१९ के भंग जानना	- "	"	२३–२३–२३–२३ के भंग जानना भोग भूमि में २३ का भंग को० नं० १७ के २४ के भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर २३ का भंग जानना १९ का भंग को०नं० १७ के समान जानना	"	"
		(२) मनुष्य गति में २३–१९–१५–११ के भंग को० नं० १८ के २५–२१–१७–१३ के हरेक भंग में से स्त्री नपुंसक वेद ये २ घटाकर २३–१९–१५–११ के भंग जानना ११ का भंग को०नं० १८ के समान जानना ११ का भंग को० नं० १८ के १३ के भंग में से स्त्री और नपुंसक वेद ये २ घटाकर ११ का भंग जानना ५ का भंग को० नं० १८ के ७ के भंग में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर ५ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में २३ का भंग को० नं० १८ के २५ के भंग में से स्त्री–नपुंसक वेद ये २ घटाकर २३ का भंग जानना १९–११ के भंग को०नं० १८ के समान	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
					भोग भूमि में २३ का भंग को० नं० १८ के २४ से भंग में से एक स्त्री वेद घटाकर २३ का भंग १९ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	"	"
		भोग भूमि में २३–१९ के भंग को० नं० १८ के २४–२० के हरेक	"	"	(३) देव गति में २३–२३ के भंग को० नं० १९ के २४–२४ के हरेक भंग में से	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		भंग में से एक स्त्री वेद घटाकर २३-१६ के भंग जानना			स्त्री वेद १ घटाकर २३-२३ के भंग जानना १६ का भंग–को० नं० १६ के समान जानना		
		(३) देवगति में २३-१६ के भंग को० नं० १६ के २४-२० के हरेक भंग में से एक स्त्री वेद घटाकर २३-१६ के भंग जानना २३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	२३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के समान जानना		
१२ ज्ञान ७ केवल ज्ञान घटाकर शेष ७ ज्ञान जानना		७ (१) तिर्यंच गति में २-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	५ कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (५) (१) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
		(२) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
		(३) देव गति में ३-३ के भंग–को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	(३) देवगति में २- -३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम ५ सूक्ष्म सांपराय और यथाख्यात ये २ घटा कर (५)		५ (१) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो अपने अपने स्थान के भंग जानना	१ संयम को०नं० १७ देखो अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम	३ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना ये (३) (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना को०नं० १७ देखो
		(२) मनुष्य गति में १-१-३-२ १-२-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो			

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १ असंयम जानना को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ संयम को०नं० १६ देखो	(२) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १ असंयम जानना को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो १ संयम को०नं० १६ देखो
१४ दर्शन को० नं० १७ देखो	३	३ (१) तिर्यंच गति में २-२-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन	३ (१) तिर्यंच गति में २-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(२) मनुष्य गति में २-३-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(३) देव गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	(३) देव गति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) तिर्यंच गति में ३-६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या जानना	६ (१) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ लेश्या अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(२) मनुष्य गति में ६-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		(३) देव गति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	(३) देव गति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ (१) तिर्यंच गति में २-१-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ अवस्था २ में से कोई १ अवस्था को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो १ अवस्था को०नं० १९ देखो	२ (१) तिर्यंच गति में २-१-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ अवस्था पर्याप्तवत् को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो १ अवस्था को०नं० १९ देखो
१७ सम्यक्त्व को नं० १६ देखो	६	६ (१) तिर्यंच गति में १-१-१-२-१-१-१-३ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-१-२-३-२-३-२-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १-१-१-२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० १८ प्रमाण सारे भंग	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व कोष्टक १८ प्रमाण १ सम्यक्त्व	५ मिश्र घटाकर (५) (१) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-२-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो
१८ संज्ञी संज्ञी, असंज्ञी	२	२ (१) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था २ में से कोई १ अवस्था को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो	२ (१) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था पर्याप्तवत् को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) देव गति में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ देखो	(३) देव गति में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ देखो
१६ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो आहारक ही	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो	२ (१) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो
		(२) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो आहारक ही	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो
		(३) देव गति में १ आहारक जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ देखो	(३) देव गति में १-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ देखो
२० उपयोग केवल ज्ञान, केवल दर्शनोपयोग ये २ घटाकर (१०)	१०	१० (१) तिर्यंच गति में ४-५-६-६-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ उपयोग अपने अपने स्थान के भंग में से कोई १ उपयोग को० नं० १७ देखो	८ कुअवधि ज्ञान, मन: पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (८) (१) तिर्यंच गति में ४-६-४-४-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना को०नं० १७ देखो
		(२) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७-५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में ४-६-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
		(३) देव गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग सारे भंग	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	(३) देव गति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो

१ २	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान १३ आर्त ध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, धर्म ध्यान ४, पृथक्त्व वितर्क विचार १ ये १३ ध्यान जानना	१३ (१) तिर्यंच गति में ८–९–१०–११–८–९–१० के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ८–९–१०–११–७–४–१–८–९–१० के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ८–९–१० के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो १ ध्यान को०नं० १९ देखो	९ पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान १ घटाकर (१२) (१) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ८-९-७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देव गति में ८-९ के भंग को० नं० १९ देखो	भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो १ ध्यान को०नं० १९ देखो
२२ आस्रव ५५ स्त्री वेद, नपुंसक वेद ये २ घटाकर शेष (५५)	५१ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ४ घटाकर शेष (५१) (१) तिर्यंच गति में ४१ का भंग को० नं० १७ के ४३ के भंग में से स्त्री वेद, नपुंसक वेद ये २ घटाकर ४१ का भंग जानना ४९–४४–४०–३५ के भंग को० नं० १७ के ५१–४६–४२–३७ के हरेक भंग में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर ४९–४४–४०–३५ के भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना सारे भंग को० नं० १७ देखो "	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग को०नं० १७ देखो "	४४ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, कषाय २३, (स्त्री वेद नपुंसक वेद ये २ घटाकर) औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आहारक मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ४४ आस्रव जानना (१) तिर्यंच गति में ४१-४२-३६-३७ के भंग को० नं० १७ के ४३-४४-३८-३९ के हरेक भंग में से स्त्री वेद नपुंसक वेद ये २ घटाकर ४१-४२-३६-३७ के भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		भोगभूमि में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १७ के ५०-४५-४१ के हरेक भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४९-४४-४० के भंग जानना	"		भोगभूमि में ४२-३७-३२ के भंग को० नं० १७ के ४३-३८-३३ के हरेक भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४२-३७-३२ के भंग जानना	"	"
		(२) मनुष्य गति में ४९-४४-४०-३५-२० के भंग को० नं० १८ के ५१-४६-४२-३७-२२ के हरेक भंग में से स्त्री वेद नपुंसक वेद ये २ घटाकर ४९-४४-४०-३५-२० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में ४२-३७- के भंग को० नं० १८ के ४४-३९ के हरेक भंग में से स्त्री नपुंसक वेद ये २ घटा कोद ४२-३७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		२० का भंग—को० नं० १८ के समान जानना	"	"	३३-१२ के भंग—को० नं० १८ के समान जानना	"	"
		२०-१४ के भंग—को० नं० १८ के २२-१६ के हरेक भंग में से स्त्री नपुंसक वे ये २ घटाकर २०-१४ के भंग जानना	"	"	भोगभूमि में ४२-३७ के भंग—को० नं० १८ के ४३-३८ के हरेक भंग में से स्त्री वेद घटाकर ४२-३७ के भंग जानना	"	"
		२. भोगभूमि में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १८ के ५०-४५-४१ के हरेक भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४९-४४-४० के भंग जानना	"	"	३३ का भंग—को० नं० १८ जानना	"	"
		(३) देव गति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १९ के ५०-४५-४१	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(३) देवगति में ४२-३७ के भंग—को० नं० १९ के ४३-३८ के हरेक भंग में से स्त्री वेद घटाकर ४२-३७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		के हरेक भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर ४६-४४-४० के भंग जानना ४६-४४-४०-४० के भंग को०नं० १७ के समान जानना	"	"	३३-४२-३७-३३-३३ के भंग को० नं० १८ के समान जानना सूचना—भवनत्रिकदेवों में से ३३ का भंग नहीं होता।	"	"
२३ भाव ४३ उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, क्षयोपशम भाव १८, तिर्यंच-देव-मनुष्य गति ३, कषाय ४, पुरुष लिंग १, लेश्या ६, मिथ्या-दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ४३ भाव जानना		४३ (१) तिर्यंच गति में २५-२६-२७-२८-३०-२७ के भंग को० नं० १७ के २७-३१-२६-३०-३२-२६ के हरेक भंग में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर २५-२६-२७-२८-३०-२७ के भंग जानना भोग भूमि में २५-२४-२५-२८ के भंग को० नं० १७ के २७-२५-२६-२६ के हरेक भंग में से स्त्री वेद घटाकर २६-२४-२५-२८ के भंग जानना (२) मनुष्य गति में २६-२७-२८-३१-२८-२६ के भंग को० नं० १८ के ३१-२६-३०-३३-३०-३१ के हरेक भंग में से स्त्री वेद, नपुंसक वेद ये २ घटाकर २६-२७-२८-३१-२८-२६ के भंग जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १७ देखो " सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग को०नं० १७ देखो " १ भंग को०नं० १८ देखो	३८ उपशम चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, संयमासंयम १, मनः पर्यय ज्ञान १, कुअवधि ज्ञान १, ये ५ घटाकर (३८) (१) तिर्यंच गति में २५-२५-२३-२३ के भंग को० नं० १७ के २७-२७-२५-२५ के हरेक भंग में से स्त्री नपुंसक वेद ये २ घटाकर २५-२५-२३-२३ के भंग जानना भोग भूमि में २३-२१ के भंग को० नं० १७ के २४-२२ के हरेक के भंग में से स्त्री वेद घटाकर २३-२१ के भंग जानना २५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना सारे भंग को० नं० १७ देखो "	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग १ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		२७ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	"	"	(२) मनुष्य गति में २८-२६ के भंग को० नं० १८ के ३०-२८ के हरेक भंग में से स्त्री वेद, नपुंसक वेद ये २ घटाकर २८-२६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		२९-२७ के भंग को० नं० १८ के ३१-२९ के भंग में से स्त्री वेद, नपुंसक वेद ये २ घटाकर २९-२७ के भंग जानना	"	"	३० का भंग—को० नं० १८ के समान जानना	"	"
		२७ का भंग ऊपर के ८वें गुण स्थान के २७ के भंग ही यहां जानना	"	"	२७ का भंग—को० नं० १८ के समान जानना	"	"
		भोगभूमि में २६-२४-२५-२८ के भंग को० नं० १८ के २७-२५-२६-२९ के हरेक भंग में से स्त्री वेद घटाकर २६-२४-२५-२८ के भंग जानना	"	"	भोगभूमि में २३-२१ के भंग को० नं० १८ के २४-२२ के हरेक भंग में से स्त्री वेद घटाकर २३-२१ के भंग जानना	"	"
					२५ का भंग—को० नं० १८ के समान जानना	"	"
		(३) देवगति में २४-२२-२३-२५-२६-२४ २५-२८ के भंग को० नं० १९ के २५-२३-२४ २६-२७-२५-२६-२९ के हरेक भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर २४-२२-२३-२५-२६-२४-२५-२८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(३) देवगति में २५-२३-२४-२३ के भंग को० नं० १९ के २६-२४-२६-२४ के हरेक भंग में से स्त्री वेद १ घटाकर २५-२३-२५-२३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
		२४-२२-२३-२६-२५ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"	२८-२३-२२-२६-२६ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"

२४ म ।—को० नं० १७-१८-१९ देखो ।

२५ बंध प्रकृतियां—१२० सामान्य आलाप से जानना ।

११२ मिथ्यात्व पर्याप्त अवस्था में आयु ४, नरकद्विक २, आहारकद्विक २, ये ८ प्रकृति घटाकर ११२ जानना ।

२६ उदय प्रकृतियां—१०७ उदययोग्य १२२ में से स्त्री वेद १, नपुंसक वेद १, नरकद्विक २, नरकायु १, एकेन्द्रियादि जाति ४, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १, आतप १, तीर्थंकर प्र० १, ये १५ घटाकर १०७ प्र० का उदय जानना ।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४८ जानना ।

२८ संख्या—असंख्यात जानना ।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३० स्पर्शन—त्रसनाडी की अपेक्षा लोक का संख्यातवां भाग जानना । १६वे स्वर्ग से ३रे नरक तक आने की अपेक्षा ८ राजु जानना, नवग्रैवेयक से ३रे नरक तक आने के शक्ति की अपेक्षा ९ राजु जानना । मध्यलोक से ७वे नरक में जाने की अपेक्षा मारणान्तिक समुद्घात में पुरुष वेद का उदय होने की अपेक्षा ६ राजु जानना ।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा अंतर्मुहूर्त से नवसौ (९००) सागर तक निरन्तर पुरुष वेदी ही बनता रहे ।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा एक समय से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक पुरुष वेद को धारण न कर सके ।

३३ जाति (योनि)—२२ लाख योनि जानना, (तिर्यंच ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख ये २२ लाख जानना)

३४ कुल—८३॥ लाख कोटिकुल जानना, (तिर्यंच ४३॥, देव २६, मनुष्य गति १४ लाख कोटिकुल ये ८३॥ लाख कोटिकुल जानना)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ६ १ से ६ गुण० जानना		६ १ से ६ तक के गुण० विशेष विवरण को० नं० ४७ में देखो	सारे गुण स्थान को० नं० ४७ के समान जानना	१ गुण० को० नं० ४७ के समान जानना	२ मिथ्यात्व, सासादन गुण० तिर्यंच, मनुष्य, देव इन तीनों गति में हरेक में जानना	दोनों गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना को०नं० १७-१८-१९ देखो	कोई १ गुण० को०नं० १७-१८-१९ देखो
२ जीव समास ४ को० नं० ४७ देखो		२ को० नं० ४७ के समान	१ समास	१ समास	२ को० नं० ४७ के समान	१ समास	१ समास
३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो		६ को० नं० ४७ के समान	१ भंग	१ भंग	३ को० नं० ४७ के समान	१ भंग	१ भंग
४ प्राण १० को० नं० १ देखो		१० को० नं० ४७ के समान	१ भंग	१ भंग	७ को० नं० ४७ के समान	१ भंग	१ भंग
५ संज्ञा ४ को० नं० १ देखो		४ को० नं० ४७ के समान	१ भंग	१ भंग	४ को० नं० ४७ के समान	१ भंग	१ भंग
६ गति ३ तिर्यंच, मनुष्य, देव ये ३ गति जानना		३ तीनों गति जानना	१ गति	१ गति	३ पर्याप्तवत् जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति १ पंचेन्द्रिय जाति		१ तीनों गतियों में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ जाति	१ जाति	१ तीनों गतियों में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ जाति	१ जाति

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय	त्रसकाय	१ तीनों गतियों में १ त्रसकाय जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	१ तीनों गतियों में १ त्रसकाय जानना को०नं० १७-१८-१९ देखो	१	१
९ योग	१३ आ० मिश्रकाययोग १ आहारक काययोग १ ये २ घटाकर (१३)	१० औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग कार्माण काययोग १, ये ३ घटाकर (१०) को० नं० ४७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को०नं० १७-१८-१९ देखो	१ योग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग	३ औ० मिश्रकाययोग १ वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ योग जानना (१) तिर्यंच, मनुष्य, देव गति में १—२ के भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ योग पर्याप्तवत् जानना
१० वेद	१ स्त्री वेद	१ तीनों गतियों में हरेक में १ स्त्री वेद जानना	१	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ स्त्री वेद जानना	१	१
११ कषाय	२३ पुरुष वेद, नपुंसक वेद ये २ वेद घटाकर (२३)	२३ तीनों गतियों में हरेक में को० नं० ४७ के समान जानना परन्तु यहां स्त्री वेद के जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये।	सारे भंग को० नं० ४७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	२३ तीनों गतियों में हरेक में को० नं० ४७ के समान जानना परन्तु यहां स्त्री वेद के जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये	सारे भंग को० नं० ४७ देखो	१ भंग को०नं० ४७ देखो
१२ ज्ञान	६ मनः पर्यय ज्ञान १ केवल ज्ञान १ ये २ घटाकर (६)	६ (१) तिर्यंच गति में २-३-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १ से ४ गुण० में	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान को०नं० १८ देखो	२ कुअवधि ज्ञान और ३ ज्ञान घटाकर (२) (१) तिर्यंच गति मनुष्य गति में देव गति में हरेक में २-२ के भंग	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ज्ञान को०नं० १७-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		३-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देव गति में ३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो	को०नं० १७-१८-१९ देखो		
१३ संयम असंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, ये ४ संयम जानना	४	४ (१) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-२-३-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देव गति में १ असंयम जानना को० नं० १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम को०नं० १७ देखो १ संयम को०नं० १८ देखो १ संयम को०नं० १९ देखो	१ तीनों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को०नं० १७-१८-१९ देखो	१	१
१४ दर्शन को० नं० १ देखो	३	३ (१) तिर्यंच गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो (२) मनुष्य गतियों २-३ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ दर्शन को०नं० १९ देखो १ दर्शन को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १९ देखो			
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ को० नं० ४७ के समान जानना	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ लेश्या को०नं० ४७ देखो	६ (१) तिर्यंच गति में	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ लेश्या को०नं० ४७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					६-२ के भंग को० नं० १८ देखो (२) मनुष्य गति में ६-१ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देव गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	"	" "
१६ भव्यत्व २ भव्य, अभव्य,	२ को० नं० ४७ के समान	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ अवस्था को०नं० ४७ देखो	२ को० नं० ४७ देखो	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ अवस्था को०नं० ४७ देखो
१७ सम्यक्त्व ६ को० नं० १८ देखो सूचना—यहां भाव वेद की अपेक्षा जानना।	६ को० नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० ४७ देखो	२ मिथ्यात्व, सासादन जानना तीनों गतियों में हरेक में १—१ के भंग को० नं० १७—१८—१६ के समान मिथ्यात्व, सासादन जानना	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० ४७ देखो
१८ संज्ञी २ संज्ञी, असंज्ञी	२ को० नं० ४७ के समान	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ अवस्था को०नं० ४७ देखो	२ को० नं० ४७ के समान	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ अवस्था को०नं० ४७ देखो
१६ आहारक २ आहारक, अनाहारक	१ को० नं० ४७ के समान	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ अवस्था को०नं० ४७ देखो	२ को० नं० ४७ के समान	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ अवस्था को०नं० ४७ देखो
२० उपयोग ६ ज्ञानोपयोग ६ दर्शनोपयोग ३ ये ६ जानना	६ (१) तिर्यंच गति में ४—५—६—६—५—६—६ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ५—६—६—५—६—६ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ५-६-६ के भंग	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना	१ उपयोग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	४ कुमति, कुश्रुत, अचक्षु द० चक्षु दर्शन ये (४) तीनों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १७—१८—१६ देखो	१ भंग पर्याप्तवत्	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १६ देखो					
२१ ध्यान	१३ को नं० ४७ देखो	१३ को० नं० ४७ के समान जानना	१ भंग को०-नं० ४७ देखो	१ ध्यान को० नं० ४७ देखो	८ धर्म ध्यान चार और पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान १, ये ५ घटाकर (८) को० नं० ४७ के समान	१ भंग को० नं० ४७ देखो	१ ध्यान को०नं० ४७ देखो
२२ आस्रव	५३ आहारक मिश्रकाय योग १, आहारककाय योग १, पुरुष वेद १, नपुंसक वेद १, ये ४ घटाकर (५३)	५० औ० मिश्रकाय योग १, वैं० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ३ घटाकर (५०) को० नं० ४७ के समान जानना परन्तु यहां स्त्री-वेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये और मनुष्य गति में आहारककाय योगी का २० का भंग भी नहीं होता	सारे भंग को० नं० ४७ देखो	१ भंग को० नं० ४७ देखो	४३ वचनयोग ४, मनोयोग४, औ० काय योग १, वैं० काययोग १ ये १० घटाकर (४३) (१) तिर्यंच गति में ४१-४२-३६-३७ के भंग को० नं० ४७ देखो परन्तु यहां स्त्री वेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये (२) मनुष्य गति में ४२-३७ के भंग को० नं० ४७ देखो परन्तु यहां स्त्री वेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये (३) देवगति में ४२-३७ के भंग—को० नं० ४७ देखो परन्तु यहां स्त्री वेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने
२३ भाव	४२ को० नं० ४७ के	४२ (१) तिर्यंच गति में कर्मभूमि में	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग अपने अपने स्थान	३० कुज्ञान २, दर्शन २, तिर्यंच गति १, मनुष्यगति १,	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ भंग अपने अपने स्थान

कोष्टक नं० ४८

१ २	३	४	५	६	७	८
४३ के भावों में से मनः पर्यय ज्ञान १, घटाकर ४२ जानना	२५-२६-२७-२८-३०-२७ के भंग और भोग भूमि में २६-२४-२५-२८ के भंग को० नं० ४७ के समान जानना परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये	सारे भंग जानना को० नं० १७ देखो	के भंगों में से कोई १ भंग जानना को०नं० १७ देखो	देवगति १, कषाय ४, स्त्रीलिंग १, लेश्या ६, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, लब्धि ५, ये (३०)	सारे भंग जानना	के भंगों में से कोई १ भंग जानना
	(२) मनुष्य गति में कर्म भूमि में २६-२७-२८-३१-३०-२६-२६-२७-२७ के भंग को० नं० ४७ समान जानना परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिए	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(१) तिर्यंच गति में २५-२५-२३-२३ के भंग को० नं० १७ के समान परन्तु यहां स्त्री वेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
	भोग भूमि में २६-२४-२५-२८ के भंग को० नं० ४७ के समान जानना परन्तु यहां स्त्री वेद की जगह पुरुष वेद घटाना चाहिये	"	"	भोग भूमि में २३-२१ के भंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये	"	"
	(३) देव गति में २४-२२-२३-२५-२६-२५-२५-२८ के भंग को० नं० ४७ के समान जानना परन्तु यहां स्त्रीवेद को जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(२) मनुष्य गति में २५-२३ के भंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो "
				भोग भूमि में २३-२१ के भंग को० नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये	"	"
				(३) देव गति में २५-२३-२५-२३ के भंग को०नं० ४७ के समान परन्तु यहां स्त्रीवेद की जगह पुरुषवेद घटाना चाहिये		

२४ अवगाहना—को० नं० १७–१८–१६ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१२० पर्याप्त अवस्था में जानना और निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में १०७ जानना, बन्ध योग्य १२० प्रकृतियों में से आयु ४, नरकद्विक २, देवद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १, ये १३ घटाकर १०७ जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—१०५ को० नं० ४७ के १०७ प्र० में से आहारकद्विक २, पुरुष वेद १ ये ३ घटाकर और स्त्री वेद १ जोड़कर १०५ प्र० का उदय जानना,

२७ सत्व प्रकृतियां—१४८ को० नं० २६ के समान जानना।

२८ संख्या—असंख्यात जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग जानना, विशेष भंग को० नं० ४७ में देखो।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना, एक जीव की अपेक्षा एक समय से शतपृथक्त्व पल्य तक स्त्री वेद ही बनता रहे।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक स्त्री पर्याय न धारण कर सके।

३३ जाति (योनि)—२२ लाख योनि जानना (को० नं० ४७ देखो)

३४ कुल—८३॥ लाख कोटिकुल जानना (को० नं० ४७ देखो)

कोष्टक नं० ४९

क्र०	स्थान सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ९ १ से ९ गुण० तक	९ (१) नरक गति में १ से ४ गुण० स्थान (२) तिर्यंच गति में कर्मभूमि में १ से ५ गुण० जानना (३) मनुष्य गति में कर्मभूमि में १ से ९ गुण० जानना	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुण० स्थान जानना को० नं० १६-१७-१८ देखो	३ (१) नरक गति में १ले ४थे गुण० जानना सूचना—पहले नरक की अपेक्षा ४था गुण० जानना (२) तिर्यंच गति में कर्मभूमि में १-२ गुण० जानना (३) मनुष्य गति में १-२ गुण० जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुण० स्थान जानना को० नं० १६-१७-१८ देखो
२ जीव समास १४ को० नं० १ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	१ समास १ संज्ञी पं० पर्याप्त को० नं० १६-१८ देखो १ समास ७-१ के भंग में से कोई १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य गति में—१ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६ के भंग—को० नं० १७ के समान	१ समास १ संज्ञी पं० अपर्याप्त को० नं० १६-१८ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८ देखो १ समास को० नं० १७ देखो
३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में ६ का भंग—को० नं० १६-१८ देखो	१ भंग ६ का भंग को० नं० १६-१८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८ देखो	३ तीनों गतियों में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ भंग ३ का भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ भंग ३ का भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६-५-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	लब्धि रूप ६-५-४ पर्याप्ति भी		
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में-१० का भंग को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-६-८-७-६-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग को० नं० १६-१८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में कोई १ भंग जानना को० नं० १६-१८-१७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान में भंग को० नं० १६-१८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना को० नं० १६-१८-१७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-तिर्यंच गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग ४ का भंग-को० नं० १६-१७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के ४ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १६-१७ देखो भंग को०नं० १८ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७ देखो (२) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् जानना ४ का भंग	१ भंग पर्याप्तवत् जानना ४ का भंग
६ गति नरक, तिर्यंच, मनुष्य ये ३ गति जानना	३	३ तीनों गति जानना	१ गति	१ गति	३ तीनों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) नरक-मनुष्य गति में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८ देखो	१ जाति अपने अपने स्थान के कोई १ जाति जानना को० नं० १७ देखो १ जाति को० नं० १६-१८ देखो	१ जाति अपने अपने स्थान के कोई १ जाति को०नं० १७ देखो १ जाति को० नं० १६-१८ देखो	५ (१) तिर्यंच गति में ५ का भंग को० नं० १७ देखो (२) नरक-मनुष्य गति में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो १ जाति को० नं० १६-१८ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो १ जाति को० नं० १६-१८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य गति में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय अपने अपने स्थान के १ काय जानना को० नं० १६-१८ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय अपने अपने स्थान के १ काय को० नं० १६-१८ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य गति में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४ का भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८ देखो १ काय को०नं० १७ देखो
९ योग आ० मिश्रकाय योग १, आहारककाय योग १, ये २ घटाकर (१३)	१३	१० औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ घटाकर (१०) (१) नरकगति में ९ का भंग को० नं० १६ के समान (२) तिर्यंच गति में ९-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ९-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के कोई १ भंग जानना १ भंग ९ का भंग १ भंग ९-२-१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ योग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग १ योग ९ में से कोई १ योग १ योग ९-२-१ के भंगों में से कोई १ योग १ योग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ योग	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ जानना (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् भंग जानना १ भंग १-२ के भंगों में कोई १ भंग को० नं० १६ १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८	१ योग पर्याप्तवत् योग जानना १ योग १-२ के भंगों में से कोई १ योग को० नं० १६ १ योग को०नं० १७ देखो १ योग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ योग जानना को० नं० १८
१० वेद नपुंसक वेद जानना	१	१ तीनों गतियों में हरेक में नपुंसक वेद जानना	१	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ नपुंसक वेद जानना	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
११ कषाय स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर २३ जानना	२३	को० नं० १६-१७-१८ देखो २३			को० नं० १६-१७-१८ देखो २३		
		(१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १६	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग को नं० १६	(१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना को० नं० १६	१ भंग पर्याप्तवत् जानना को नं०
		(२) तिर्यंच गति में १ले २रे गुण स्थान में २३-२३-२३-२३ के भंग को० नं० १७ के २५-२५-२५-२५ के हरेक भंगों में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २३-२३-२३-२३-२३-२३ के भंग को० नं० १७ के २५-२५-२५-२५ के हरेक भंगों में से स्त्री-वेद ये २ घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		३रे ४थे ५वे गुण० में १९-१५ के भंग को० नं० १७ के २१-१७ के हरेक भंगों में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर १९-१५ के भंग जानना	"	"	(३) मनुष्य गति में २३ का भंग—को० नं० १८ के २५ के भंग में से स्त्री-पुरुष ये २ वेद घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(३) मनुष्य गति में २३-१९-१५-११-११-५ के भंग को० नं० १८ के २५-२१-१७-१३-१३-७ के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर २३-१९-१५-११-११-५ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१९ का भंग—को० नं० १८ के समान जानना	"	"

१	२	३	४	५	६	७	८
१२ ज्ञान मनः पर्यय ज्ञान १ केवल ज्ञान १ ये २ घटाकर ६ जानना	६	६ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-४-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग ३-३ के भंग जानना १ भंग २-३-३ के भंगों में से कोई १ भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान ३-३ के भंगों में कोई के ज्ञान जानना १ ज्ञान २-३-३ के भंगों में से कोई १ ज्ञान १ ज्ञान को०नं० १८ देखो	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (५) (१) नरक गति में ३-४ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग [illegible] के भंग जानना १ भंग २ का भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान २-३ के भंगों में से कोई १ ज्ञान १ ज्ञान २ के भंगों में से कोई १ ज्ञान १ ज्ञान को०नं० १८ देखो
१३ संयम को० नं० ४८ देखो	४	४ (१) नरक गति में १ असंयम जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग २ में से कोई १ भंग सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ संयम १ संयम दो में से कोई १ संयम १ संयम अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ संयम जानना	१ (१) नरक गति में १ असंयम जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १ असंयम जानना को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग " सारे भंग १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम " १ संयम १ संयम को०नं० १८ देखो
१४ दर्शन को० नं० १७ देखो	३	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२-२-३-३ के भंग	१ भंग २-३ के भंगों में से कोई १ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन २-३ के भंगों में से कोई १ दर्शन जानना १ दर्शन को०नं० १७ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२-२ के भंग	१ भंग पर्याप्तवत् जानना को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन पर्याप्तवत् जानना १ दर्शन को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग २-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को०नं० १६ के समान	१ भंग ३ का भंग	१ लेश्या ३ के भंगों में से कोई १ लेश्या	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या पर्याप्तवत् जानना को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-६-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३ का भं को० नं० १७ देखो	१ भंग ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या ३ में से कोई १ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ तीनों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१७-१८ देखो	२ तीनों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६-१७-१८ के समान	१ भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१७-१८ देखो
१७ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	६	६ (१) नरक गति में १-१-१ ३-२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	४ मिश्र और उपशम स० ये २ घटाकर (४) (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-[illegible] के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-१-३-३-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					को० नं० १८ देखो		
१८ संज्ञी २ संज्ञी, असंज्ञी		२ (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१ का भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो
१९ आहारक २ आहारक, अनाहारक		१ (१) नरक गति में १ आहारक जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो	२ (१) नरक गतियों में १-१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो
२० उपयोग ६ को० नं० १६ देखो		६ (१) नरकगति में ५-६-६ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-७ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो	२ कुमति, कुश्रुत ये (२) (१) नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-४-४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो

कोष्टक नं० ४९

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान	१३ को० नं० ४७ देखो	१३ (१) नरक गति में ८-९-१० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो	९ अपाय विचय १, विपाक विचय १ और संस्थान विचय १ ये ३ और पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान १ ये ४ घटाकर (९) (१) नरक गति में ८-९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो को० नं० १६ देखो	१ ध्यान अपने अपने स्थान सारे के भंगों में से कोई १ ध्यान को०नं० १८ देखो को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ८-९-१०-११ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ८ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-७-४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ८ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग ८ का भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान ८ में से कोई १ ध्यान
२२ आस्रव	५३ आहारक मिश्रकाययोग १, आ० काययोग १, स्त्री पुरुष वेद २, ये ४ घटाकर ५३ जानना	५० औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ३ घटाकर (५०) (१) नरक गति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	४३ वचन योग ४, मनोयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १ ये १० घटाकर (४३) (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४० के भंग को० नं० १७ देखो ४१-४६-४४-४०-३५ के भंग को०नं० १७ के ४३-५१-४६-४२-३७ के हरेक	सारे भंग को० नं० १७ देखो "	१ भंग को०नं० १७ देखो "	(२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४० के भंग को० नं० १७ के समान जानना ४१-४२ के भंग को० नं० १७ के ४३-४४	सारे भंग को० नं० १७ देखो "	१ भंग को०नं० १७ देखो "

१	२	३	४	५	६	७	८
		भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर ४१-४६-४४-४०-३५ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में ४६-४४-४०-३५-२० के भंग–को० नं० १८ के ५१-४६-४२-३७-२२ के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद २ घटाकर ४६-४४-४०-३५-२० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद २ घटाकर ४१-४२ के भंग जानना ३६ का भंग–को० नं० १७ के ३८ के भंग में से स्त्री-पुरुष वेद घटाकर ३६ का भंग जानना	"	"
					३७ का भंग–को० नं० १७ के ३९ के भंग में से स्त्री-पुरुष वेद २ घटाकर ३७ का भंग जानना	"	"
		२०-१४ के भंग को० १८ के २२-१६ के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर २०-१४ के भंग जानना	"	"			
					(३) मनुष्य गति में ४२-३७ के भंग–को० नं० १८ के ४४-३९ के भंगों में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर ४२-३७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
२३ भाव को० नं० ४८ के ४२ के भावों में से स्त्री वेद १ घटाकर नपुंसक वेद जोड़कर ४२ जानना	४२	४२ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ के समान	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	३३ क्षायिक सम्यक्त्व १, कुज्ञान २, दर्शन ३, ज्ञान ३, वेदकस० १, लब्धि ५, नरक गति-तिर्यंच गति-मनुष्य गति-ये ३, कषाय ४, नपुंसक लिंग १, अशुभ लेश्या ३, मिथ्यादर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव २, ये ३३ जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(२) तिर्यंच गति में २४-२५ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो			
		२५-२६-२७-२८-३०-२७ के भंग को० नं० १७ के २७-३१-२९-३०-३२-२९	"	"			

१	२	३	४	५	६	७	८
		के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर २५-२६-२७-२८-३०-२७ के भंग जानना (२) मनुष्य गति में २६-२७-२८-३१-२८-२६-२६-२७-२७ के भंग को० नं० १८ के ३१-२६-३०-३३-३१-३१-२६-२६ के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर २६-२७-२८-३१-२८-२६-२६-२७-२७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(१) नरक गति में २५-२७ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २४-२५ के भंग–को० नं० १७ के समान जानना २५-२५ के भंग को० नं० १७ के २७-२७ के भंगों में से स्त्री-पुरुष ये २ वेद घटाकर २५-२५ के भंग जानना २२-२३ के भंग–को० नं० १७ के समान २३-२३ के भंग–को० नं० १७ के २५-२५ के हरेक भंग में स्त्री-वेद पुरुष-वेद ये २ घटाकर २३-२३ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में २८-२६ के भंग–को० नं० १८ के ३०-२८ के हरेक भंग में से स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर २८–२६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो " " " सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो " " " १ भंग को० नं० १८ देखो

२४ अवगाहना—को० नं० १६-१७-१८ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१२० सामान्य आलाप की अपेक्षा जानना।

१०८ निर्वृत्य पर्याप्तक अवस्था में आयु ४, नरद्विक २, देवद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, आहारकद्विक २, ये १२ घटाकर १०८ जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—११४ उदययोग्य १२२ में से देवद्विक २, देवायु १, आहारकद्विक २, स्त्री वेद १, पुरुष वेद १, तीर्थंकर १, ये ८ घटाकर ११४ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४८ जानना।

२८ संख्या—अनन्तानन्त जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग, १४ राजु ६ राजु।

३० स्पर्शन—सर्वलोक १४ राजु जानना। ७वे नरक का नारकी मध्य लोक में जन्म लेने की अपेक्षा ६ राजु जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा सादि नपुंसक वेदी एक समय से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक नपुंसक वेदी ही बनता रहे।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से नवसौ (९००) सागर काल तक नपुंसक वेदी नहीं बने।

३३ जाति (योनि)—८० लाख जानना (देवगति के ४ लाख घटाकर शेष ८० लाख जानना)

३४ कुल—१७२॥ लाख कोटिकुल जानना (देवगति के २६ लाख कोटिकुल घटाकर जानना)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	पर्याप्त एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	६ ९ से १४ तक के (६)	६ ९वे गुण० के अवेद भाग से १४वें गुण० तक के ६ गुण स्थान जानना	सारे गुण स्थान ९ से १४ सारे गुण० जानना	१ गुण० ९ से १४ में से कोई १ गुण०	१ १३वें गुण० जानना को० नं० १८ देखो	सारे गुण स्थान १३वें गुण० जानना	१ गुण० १३वें गुण०
२ जीव समास	२ संज्ञी पं० पर्याप्त अप०	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त को० नं० १८ देखो	१	१	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त को० नं० १८ देखो	१	१
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ देखो लब्धिरूप ६ का भंग होता है	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० (१) मनुष्य गति में १०-४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा	१ परिग्रह संज्ञा	१ (१) मनुष्य गति में १-१-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	० ( ) मनुष्य गति में (०) का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो
६ गति	१ मनुष्य गति	१ मनुष्यगति जानना	१	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति	१	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति	१	१
८ काय त्रसकाय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	१ त्रसकाय जानना	१	
९ योग मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० मिश्रकाययोग १ औ० काययोग १, कार्माण काययोग १ ये ११ जानना	११	९ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग ये २ घटाकर (९) (१) मनुष्य गति में ९-५-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ योग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग जानना को०नं० १८ देखो	२ औ० मिश्रकाययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ जानना (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग २ का भंग को० नं० १८ देखो	१ योग २ में से कोई १ योग जानना को०नं० १८ देखो
१० वेद	०	० सूचना—नवें गुण स्थान के अवेद भाग से १४वें गुण स्थान तक अपगत वेद जानना। को० नं० १८ देखो	०	०	०	०	०
११ कषाय संज्वलन क्रोध—मान—माया—लोभ कषाय ये ४ जानना	४	४ (१) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ कषाय जानना को०नं० १८ देखो	० (१) मनुष्य गति में (०) का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग ० को० नं० १८ देखो	१ भंग ० को०नं० १८ देखो
१२ ज्ञान मति-श्रुत-अवधि-मनः पर्यय केवल ज्ञान ये ५ ज्ञान जानना	५	५ (१) मनुष्य गति में ४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ ज्ञान	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
१३ संयम सामायिक, छेदोप-	४	४ (१) मनुष्य गति में ३-१-१ के भंग	सारे भंग अपने अपने स्थान के	१ संयम अपने अपने स्थान	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
स्थापना, सूक्ष्म सांपराय यथाख्यात ये ४ संयम जानना		को० नं० १८ देखो	सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	के सारे भंगों में से कोई १ संयम	को० नं० १८ देखो		
१४ दर्शन को० नं० १८ देखो	४	४) गति में ३–१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
१५ लेश्या शुक्ल लेश्या जानना	१	१ (१) मनुष्य गति में १–० के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ भव्य जानना			१ भव्य जानना	१	
१७ सम्यक्त्व उपशम-क्षायिक स०	२	२ (१) मनुष्य गति में २–१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ (१) मनुष्य गति में १–० के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो	० (१) मनुष्य गति में (०) का भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	० को०नं० १८ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	२ (१) मनुष्य गति में १–१–१ के भंग को० नं० १८ देखो सूचना—पहला १ का भंग ९ में गुण० के अवेद भाग से १२वें गुण० तक जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ अवस्था को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में १–१ के भंग १३वें गुण० जानना को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ५, दर्शनोपयोग ४ ये ९ जानना	९	९ (१) मनुष्य गति में ७-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
२१ ध्यान शुक्ल ध्यान ४ जानना	४	४ (१) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव योग ११, कषाय ४, ये १५ जानना	१५	१३ औ० मिश्र काययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ घटाकर (१३) (१) मनुष्य गति में १३-१२-११-१०-११-९-५-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान सारे के भंगों में से कोई १ भंग जानना को०नं० १८ देखो	२ औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये २ जानना (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान सारे के भंगों में से कोई १ भंग जानना को०नं० १८ देखो
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक भाव ९, क्षयोपशम ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५, मनुष्यगति १, कषाय ४ शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १ असिद्धत्व १, जीवत्व १ भव्यत्व १ ये (३३)	३३	३३ (१) मनुष्य गति में २६-२५-२४-२३-२३-२१-२०-१४-१३ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	१४ (१) मनुष्य गति में १४ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

२४ अवगाहना— को० नं० १८ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१२० ९वें गुण० के अवेद भाग में कषाय ४, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अन्तराय ५, साता वेदनीय १, उच्चगोत्र १, यशः कीर्ति १, ये २१ प्र० बन्ध जानना।

२१ १०वें गुण० में ऊपर के २१ में से कषाय ४ घटाकर १७ प्र० का बन्ध जानना।

१ ११-१२-१३वें गुण० में १ शुक्ल लेश्या का बन्ध जानना।

० १४वें गुण० में बन्ध नहीं है।

२६ उदय प्रकृतियां—६३ नवें गुण० के अवेद भाग में ६३ प्र० का उदय जानना को० नं० ९ देखो।

६० १०वें गुण० में संज्वलन क्रोध-कषाय-मान-माया ये ३ घटाकर ६० प्र० का उदय जानना।

५९ ११वें गुण० में सूक्ष्म लोभ घटाकर ५९ प्र० का उदय जानना।

५७ १२वें गुण० में नाराच और वज्र नाराच संहनन ये २ घटाकर ५७ प्र० का उदय जानना।

४२ १३वें गुण० में ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, अन्तराय ५ ये १६ ऊपर के ५७ में से घटाकर तीर्थंकर प्र० १ जोड़कर ५७ − १६ = ४१ + १ = ४२ प्र० का उदय जानना।

१२ १४वें गुण० में को० नं० १८ के समान १२ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—१०५ नवें गुण० के अवेद भाग में १०५ प्र० का सत्ता जानना को० नं० ९ देखो।

१०२ १०वें गुण० में क्रोध-मान-माया ये ३ घटाकर १०२ प्र० का सत्ता जानना।

१०१ १२वें गुण० में सूक्ष्म लोभ घटाकर १०१ प्र० का सत्ता जानना।

८५ १३वें गुण० में ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ६, अन्तराय ५, ये १६ घटाकर ८५ की सत्ता जानना।

८५ १४वें गुण० में द्विचरम समय में ८५ प्र० का और चरम समय में ऊपर की ८५ में से ७२ प्रकृति घटाकर १३ प्र० का सत्ता जानना को० नं० १४ देखो।

२८ संख्या—उपशम श्रेणी की अपेक्षा—९००८९४ जानना को० नं० ९ से १५ देखो।

क्षपक श्रेणी की अपेक्षा—९०१७९१ जानना को० नं० ९ से १५ देखो।

२९ क्षेत्र—त्रसनाड़ी की अपेक्षा—लोक का असंख्यातवां भाग जानना। प्रतर समुद्घात की अपेक्षा लोक के असंख्यात भाग जानना। लोकपूर्ण समुद्घात की अपेक्षा सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—ऊपर के क्षेत्र के समान जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा उपशम श्रेणी की अपेक्षा एक समय में अन्तर्मुहूर्त तक और क्षपक श्रेणी की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन पूर्व कोटि वर्ष तक १३वें गुण० में केवली की अवस्था में रह सकता है।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा उपशम श्रेणी वाला अन्तर्मुहूर्त देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक उपशम श्रेणी प्राप्त न कर सके।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख योनि मनुष्य गति के जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२		३	४	५	६	७	८
१	गुण स्थान मिथ्यात्व सासादन	२	२ (१) चारों गतियों में हरेक में २ मिथ्यात्व सासादन ये २ गुण० जानना को० नं० १६ से १६ देखो	सारे गुण स्थान १ले २रे गुण जानना	१ गुण० १ ले २रे में से कोई १ गुण०	२ (१) नरक में १ले गुण० ही होता है। (२) शेष तीन गतियों में हरेक में २ मिथ्यात्व सासादन ये २ गुण-स्थान जानना को० नं० १६ से १६ देखो	सारे गुण० (१) नरक गति में १ले गुण० (२) शेष३ गति में १ले २रे गुण० जानना	१ गुण० १ले गुण० १ले २रे में से कोई १ गुण०
२	जीव समास को० नं० १ देखो	१४	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १६-१६ के जानना (२) तिर्यंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ समास " " "	१ समास " " "	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जीव-समास जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ के समान जानना (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ समास " " "	१ समास " " "
३	पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग—को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान भंगों में से १ भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ भंग जानना	३ (१) नरक-देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१६ देखो लब्धि रूप अपने अपने स्थान की ६-५-४ पर्याप्ति	१ भंग पर्याप्तवत् को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् को० नं० १६-१६ देखो

कोष्टक नं० ५१ — अनन्तानुबंधी ४ कषायों में

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	भी पर्याप्तवत (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १९ देखो	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १०-१० के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ७-७ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६- १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग पर्याप्तवत्	१ भंग पर्याप्तवत्
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	(१) नरक—मनुष्य—देवगति में हरेक में १ सजी पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८- १९ देखो	१ जाति को० नं० १६- १८-१९ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति पर्याप्तवत्	१ जाति पर्याप्तवत्

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ५–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ५–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १७ देखो
८ काय को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६ १–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६–४–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय पर्याप्तवत् १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय पर्याप्तवत् १ काय को०नं० १७ देखो
९ योग आ० मिश्र काययोग १, आहारक काययोग १, ये २ घटाकर (१३)	१३	१० औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्र काययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ घटाकर (१०) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१८-१९ (२) तिर्यंच गति में ९–२–१–९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो को० नं० १७ देखो	१ योग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग	३ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ भंग जानना (१) नरक-तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में १–२ के भंग जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के भंग जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१ योग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई १ योग को०नं० १६ से १९ देखो
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति १ नपुंसक वेद को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति मे ३-१ ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१ व ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति मे ३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबंधी कषाय जिस कषाय का विचार करो सो० १ कषाय, अप्रत्याख्यान कषाय ४, प्रत्याख्यान कषाय ४, संज्वलन कषाय ४, हास्यादि नव नो कषाय ९ ये (२२)	२०	२२ (१) नरक गति में २० का भंग–को० नं० १६ के २३ के भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय जिस का विचार करो उसको छोड़कर शेष तीन कषाय घटाकर २० का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	२२ (१) नरक गति में २० का भंग–को० नं० १६ के २३ के भंग में से पर्यापवत् अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर २० का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-२१ के भंग–को० नं० १७ के २५-२३ २५-२५-२४ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर २२-२०-२२-२२-२१ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-२०-२२-२१ के भंग–को० नं० १७ के २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४ के हरेक भंग में से पर्यापवत् अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर २२-२०-२२-२२-२०-२२-२१ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २२-२१ के भंग–को० नं० १८ के २५-२४ के हरेक	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २२-२१ के भंग–को० नं० १८ के २५-२४ के	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		भंगों में से ऊपर के समान अनन्तानुबन्धी कषाय ३ घटाकर २२-२१ के भंग जानना (१) देव गति में २१-२० के भंग को० नं० १९ के २४-२३ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अनन्तानुबन्धी कषाय ३ घटाकर २१-२० भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अनन्तानुबन्धी कषाय ३ घटाकर २२-२१ के भंग जानना (४) देवगति में २१-२१-२० के भंग को० नं० १९ के २४-२४-२३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अनन्तानुबन्धी कषाय ३ घटाकर २१-२१-२० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
१२ ज्ञान कुमति-कुश्रुत-कुअवधि ज्ञान (३)	३	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो	२ कुमति-कुश्रुत ये (२) (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-२ के भंग में को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो
१३ संयम	१ असंयम	१ चारों गतियों में हरेक में	को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो

कोष्टक नं० ५१

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो			१ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो		
१४ दर्शन अचक्षु-चक्षु दर्शन	२	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-६-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो	(४) देव गति में ३-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व मिथ्यात्व, सासादन	२	२ (१) नरकगति में १–१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १–१–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १–१–१–१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १–१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	२ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १–१–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १–१–१–१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १–१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ के सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो
१८ संज्ञी संज्ञी, असंज्ञी	२	२ (१) नरक–देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६–१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १–१–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६–१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १६–१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो	२ (१) नरक-देव गति में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १–१–१–१–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६–१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १६–१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ (१) नरक–देवगति में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६–१९ देखो	१ को० नं० १६–१९ देखो	१ को०नं० १६–१९ देखो	२ (१) नरक–देव गति में हरेक मे १–१ के भंग को०नं० १६–१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६–१९ देखो	१ को०नं० १६–१९ देखो

कोष्टक नं० ५१

अनन्तानुबंधी ४ कषायों में

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १–१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो	(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३, दर्शनोपयोग २ ये ५ जानना को० १ प्रमाण	५	५ (१) नरक गति में ५ का भंग–को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो	४ (१) नरक गति में ४ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-४-५-५ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५-५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १९ देखो	(३) देवगति में ४-४ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १९ देखो
२१ ध्यान को० नं० १ देखो	८	८ (१) चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग–को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो	८ (१) चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग–को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अविरत १२, योग १३, कषाय २२ (ऊपर के स्थान के) ये ५२ आस्रव जानना	५२	४९ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ३ घटाकर (४९)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	४२ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काय योग १, वै० काय योग १, ये १० घटाकर (४२)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(१) नरक गति में ४६-४१ के भंग–को० नं० १६ के ४९-४४ के हरेक	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(१) नरक गति में ३९ का भंग–को० नं० १६ के ४२ भंग में से	सारे भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		भंग में से अनन्तानुबंधी कषाय जिसका विचार करो उसको छोड़कर शेष ३ कषाय घटाकर ४६-४१ के भंग जानना			पर्याप्तवत् अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर ३६ भंग जानना		
		(२) तिर्यंच गति में ३३-३५-३६-३७-४०-४८-४३-४७-४२ के भंग—को० नं० १७ के ३६-३८-३९-४०-४३-५१-४६-५०-४५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर ३३-३५-३६-३७-४०-४८-४३-४७-४२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३४-३५-३६-३७-४०-४१-२९-३०-३१-३२-३५-३६-४०-३५ के भंग—को० नं० १७ के ३७-३८-३९-४०-४३-४४-३२-३३-३४-३५-३८-३९-४३-३८ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर ३४-३५-३६-३७-४०-४१-२९-३०-३१-३२-३५-३६-४०-३५ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ४८-४३-४७-४२ के भंग—को० नं० १८ के ५१-४६-५०-४५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर ४८-४३-४७-४२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४१-३६-४०-३५ के भंग को० नं० १८ के ४४-३९-४३-३८ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर ४१-३६-४०-३५ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ४७-४२-४६-४१ के भंग को० नं० १९ के ५०-४५-४९-४४ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अनन्तानुबंधी कषाय ३ घटाकर ४७-४२-४६-४१ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देव गति में ४०-३५-३९-३४ के भंग को० नं० १९ के ४३-३८-४२-३७ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अनन्तानुबंधी कषाय ३	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					घटाकर ४०-२५-३६-३४ के भंग जानना		
२१ भाव कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्धि ५, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्यादर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिकभाव ३ ये ३४ जानना	३४	३४ (१) नरक गति में २६-२४ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	३३ कुअवधि ज्ञान घटाकर (३३) (१) नरकगति में २५ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २८-२५-२७-३१-२६-२७-२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२७-२७-२३-२५-२५-२४-२२ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३१-२६-२७-२५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३०-२८-२४-२२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २५-२३-२७-२५-२४-२७ के भंग—को० नं० १९ देखो।	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २६-२४-२६-२४ २३-२१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य सूचना—यह विषय पृष्ठ ५६ का छूटा हुआ है।	२	२ (१) नरक गति में २–१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में २–१ के भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ स्था को० नं० १६ देखो को० नं० १७-१८-१९ देखो	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति हरेक में २–१ के भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ देखो को० नं० १७-१८-१९ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—(१) मिथ्यात्व गुण० में ११७ आहारकद्विक २ तीर्थंकर प्र० १ ये ३ घटाकर ११७ जानना। (२) सासादन गुण० में १०१ को० १ प्रमाण को० नं० २ देखो।

२६ **उदय प्रकृतियां**—(१) मिथ्यात्व गुण० में ११७ सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १ ये ५ घटाकर ११७ को० १ प्रमाण जानना। (२) सासादन गुण० में १११, को० नं० २ देखो।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ को० नं० २६ देखो। (२) सासादन गुण० में १४५ को० नं० २ देखो।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल। एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक एक कषाय की अपेक्षा जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा एक समय या अन्तर्मुहूर्त से देशोन १३२ सागर काल तक कोई भी अनन्तानुबंधी कषाय उत्पन्न न हो सके।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	४ १ से ४ जानना	४ चारों गतियों में हरेक में १ से ४ गुण० जानना	सारे गुण स्थान	१ गुण०	३ (१) नरकगति में १-४ गुण० (२) तिर्यंच गति में १-२ गुण० (३) भोगभूमि में १-२-४ गुण० (४) मनुष्य गति में १-२-४ गुण० (५) देवगति में १-२-४ गुण०	सारे गुण०	१ गुण०
२ जीवसमास	१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १६-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो १ समास को० नं० १८ देखो	१ समास को०नं० १६-१९ देखो १ समास को०नं० १७ देखो १ समास को०नं० १८ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-देव गति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १६-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो १ समास को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १६-१९ देखो १ समास को०नं० १७ देखो १ समास को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो मनुष्य गति में (३) ६–६ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	३ (१) नरक-देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-देव गति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-६-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०–१० के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ७-७ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो
९ योग को० नं० ५१ देखो	१३	१० औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ३ घटाकर (१) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ९ का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१८-१९ देखो	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ३ योग जानना (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६-२ १-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	भंग को०नं० १७ देखो
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो	(२ तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो
		(४) देव गति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबन्धी कषाय ४, अप्रत्याख्यान कषाय जिसका विचार करो वो १ कषाय, प्रत्याख्यान कषाय ४, संज्वलन कषाय ४ हास्यादिक नव नोकषाय ९ ये २२ कषाय जानना	२२	२२ (१) नरकगति में २०-१६ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ के हरेक भंगों में से अप्रत्याख्यान कषाय जिसका विचार करो वो छोड़कर शेष ३ कषाय घटाकर २०-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	२२ (१) नरक गति में २०-१६ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ के भंगों में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ हरेक में घटाकर २०-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-१८-२१-१७ के भंग	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-२०-२२-२१-१६ के भंग को० नं० १७ के २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४-	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १७ के २५-२३-२५-२५-[illegible]-२०-२० [illegible] भंग में से ऊपर के समान अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२-२०-२२-२२-१८-२१-१७ के भंग जानना			१६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२-२०-२२-२२-२०-२२-२१-१६ के भंग जानना		
		(३) मनुष्य गति में २६-१८-२१-१७ के भंग को० नं० १८ के २५-२१-२४-२० के हरेक भंग में से ऊपर के समान अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२-१८-२१-१७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २२-१६-२१-१६ के भंग को० नं० १८ के २५-१६-२४-१६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२-१६-२१-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देव गति में २१-१७-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १९ के २४-२०-२३-१९-१९ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २१-१७-२०-१६-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २१-२१-१६-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १९ के २४-२४-१९-२३-१९-१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २१-२१-१६-२०-१६-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
१२ ज्ञान कुज्ञान ३, ज्ञान ३ ये ६ ज्ञान जानना	६	६ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (५) (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में २-३-२-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३ ३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो
१३ संयम	१ असंयम	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो
१४ दर्शन	३ को० नं० १६ देखो	३ (१) नरकगति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		३ का भंग–को० नं० १६ देखो			३ का भंग को० नं० १६ देखो		
		(२) तिर्यंच गति में ३–६–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६–३ के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६–१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १–३–१–१ के भंग–को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३–३–१–१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में २–१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में २–१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १९ देखो
१७ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	६	६ (१) नरक गति में १–१–१–३–२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १–२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १–१–१–२–१–१–१–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १–१–१–१–२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १–१–१–३–२–१–१–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १–१–२–१–१–२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १–१–१–२–३–२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में १–१–३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	२ (१) नरक, मनुष्य, देव गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देव गति हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ नरक-देवगति में हरेक में १ आहारक जानना को०नं० १६ और १९ देखो तिर्यंच और मनुष्य गति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो को० नं० १७-१८ देखो	१ को०नं० १६ और १९ देखो को०नं० १७-१८ देखो	२ नरक-देव गतियों में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १६ और १९ देखो तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो १ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ को०नं० १६ और १९ देखो १ अवस्था को०नं० १७-१८ देखो
२० उपयोग	९ को० नं० १६ देखो	९ (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-५-६-६-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-६-६-५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो	८ कुअवधि ज्ञान घटाकर (८) (१) नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में ५–६–६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो	(३) मनुष्य गति में ४–६–४–६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४–४–६–६ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो
२१ ध्यान आर्त ध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, आज्ञा विचय १, अपाय विचय १ ये (१०)	१०	१० (१) नरक–तिर्यंच–मनुष्य–देवगति में हरेक गति में ८–९–१० के भंग को० नं० १६ से १९ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो	९ अपाय विचय धर्म ध्यान १ घटाकर (९) (१) नरक गति में ८–९ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ८–८–९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८–९–८–९ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ८–९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो १ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो १ ध्यान को०नं० १९ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अविरत १२, योग १३, कषाय २२, ये ५२ आस्रव जानना	५२	४९ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्र काययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ घटाकर (४९) (१) नरक गति में ४९–४१–३७ के भंग को० नं० १६ के ४९–	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो	४२ मनोयोग ४, वचनयोग ४ औ० काययोग १, वै० काययोग १, ये १० घटाकर (४२) (१) नरक गति में ३९–३० के भंग को० नं० १६ के ४२–	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		४४-४० के हरेक भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय जिसका विचार करो उसको छोड़कर शेष ३ कषाय घटाकर ४६-४१-३७ के भंग जानना	-		३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २६-३० के भंग जानना		
		(२) तिर्यंच गति में ३३-३५-३६-३७-४०-४८-४३-३६-४७-४२-३८ के भंग को० नं० १७ के ३६-३८-३६-४०-४३-५१-४६-४२-५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ३३-३५-३६-३७-४०-४८-४३-३६-४७-४२-३८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३४-३५-३६-३७-४०-४१-२६-३०-३१-३२-३५-३६-४०-३५-३० के भंग को०नं० १७के ३७-३८-३६-४०-४३-४४-३२-३३-३४-३५ ३८-३६-४३-३८-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ३४-३५-३६-३७-४०-४१-२६-३०-३१-३२-३५-३६-४०-३५-३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति ४८-४३-३६-४७-४२-३८ के भंग को० नं० १८ के ५१-४६-४२-५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के समान अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४८-४३-३६-४७-४२-३८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४१-३६-३०-४०-३५-३० के भंग को० नं० १८ के ४४-३६-३३-४३-३८-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४१-३६-३०-४०-३५-३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ४७-४२-३८-४६-४१-३७-३७ के भंग को० नं० १६ के ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग में से ऊपर	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देव गति में ४०-३५ ३०-३६-३४-३०-३० के भंग को० नं० १६	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

१ २	३	४	५	६	७	८
	के समान अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४७–४२–३८–४६–४१–३७–३७ के भंग जानना	-		के ४२–३८–३३–४२–३७–३३–३२ के हरेक भंग में से पर्यावत अप्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४०–३ –३०–३६–३४–३०–३ के भंग जानना		
२३ भाव ४१ उपशम-क्षायिक ४० २, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, वेद सम्यक्त्व १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३ ये (४१)	४१ (१) नरकगति में २६–२४–२५–२८–२७ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	४० कुअवधि ज्ञान घटाकर (४०) (१) नरक गति में २५–२७ के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
	(२) तिर्यंच गति में २४–२५–२७–३१–२६–३०–३२–२७–२५–२६–२६ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४–२५–२७–२७–२२–२३–२५–२५–२४–२२–२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में ३१–२६–३०–३३–२७–२५–२६–२६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३०–२८–३०–२४–२२–२५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
	(४) देवगति में २५–२३–२४–२६–२७–२५–२६–२६–२४–२२–२३–२६–२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में २६–२४–२६–२४–२८–२३–२१–२६–२६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—११७, १ले गुण० में ११७, २रे गुण० में १०१, ३रे गुण० में ७४, ४थे गुण० में ७७ जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१ले गुण० में ११७, २रे गुण० में १११, ३रे गुण० में १००, ४थे गुण० में १०४ जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८–१४५–१४७–१४८–१४१ प्र० का सत्ता क्रम से को० नं० १ से ४ समान जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग, त्रसनाड़ी प्रमाण जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग, ८ राजु को० नं० २६ के समान जानना।

३१ **काल**. नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक (एक कषाय की अपेक्षा) जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक अप्रत्याख्यान कषाय प्राप्त न हो सके।

३३ **जाति (योनि)**—२६ लाख योनि जानना। विगत को० नं० २६ देखो।

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना। विगत को० नं० २६ देखो।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
			नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२		३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान		५ १ से ५ गुण स्थान	५ १ से ५ तक के गुण० जानना (१) नरक-देवगति में १ से ४ गुण० (२) तिर्यंच-मनुष्य गति में १ से ५ गुण० भोगभूमि में १ से ४ गुण०	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० सारे गुण० में से कोई १ गुण०	३ (१) नरक गति में १ले ४थे गुण० (२) तिर्यंच गति में १-२ गुण० भोगभूमि में १-२-४ गुण० (३) मनुष्य गति में १-२-४ गुण० (४) देवगति में १-२-४ गुण०	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० से कोई १ गुण०
२ जीव समास		१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो
३ पर्याप्ति		६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		६ का भंग-को० नं० १६-१८-१९ देखो			३ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो		
		(२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय	को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१७-१८ देखो १ काय को० नं० १७ देखो
९ योग	१३ को० नं० ५१ देखो	१० औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ३ घटाकर (१०) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ९-२-१-९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ योग को० नं० १७ देखो	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग ये ३ जानना (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ योग को० नं० १७ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में २–१–१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग	१ वेद	(४) देवगति में २–१–१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबंधी कषाय ४, अप्रत्याख्यान कषाय ४, प्रत्याख्यान कषाय जिस का विचार करो वो १ कषाय, संज्वलन कषाय ४, हास्यादि नव नो कषाय ९, ये २२ कषाय जानना	२२	२२ (१) नरक गति में २०–१६ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ के हरेक भंग में से अप्रत्याख्यान कषाय जिसका विचार करो वो एक छोड़ कर शेष ३ कषाय घटाकर २०-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	२२ (१) नरक गति में २०-१६ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २०-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति मे २२-२०-२२-२२-१८-१४-२१-१७ के भंग को० १७ के २५-२३-२५-२५-२१-१७-२४-२० के हरेक भंग में से ऊपर के स्थान प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२-२०-२२-२२-१८-१४-२१-१७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-२०-२२-२१-१६ के भंग को० नं० १७ के २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४-१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२-२०-२२-२२-२०-२२-२१-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति मे २२-१८-१४-२१-१७ के भंग को० नं० १८ के २५-२१-१७-२४-२० के हरेक भंग में से ऊपर के समान प्रत्याख्यान कषाय ३ घटा कर २२-१८-१४-२१-१७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति मे २२-१६-२१-१६ के भंग को० नं० १८ के २५-१९-२४-१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २२-१६-२१-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देव गति में २१-१७-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के २४-२०-२३-१६-१६ के हरेक भंगों में से ऊपर के समान प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २१-१७-२०-१६-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में २१-२१-१६-२०-१६ के भंग को० नं० १६ के २४-२४-१६-२३-१६-१६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर २१-२१-१६-२०-१६-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	भंग को०नं० १६ देखो
१२ ज्ञान को० नं० ५२ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३- के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो १ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान को०नं० १८ देखो १ ज्ञान को०नं० १६ देखो	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (५) (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो १ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान को०नं० १८ देखो १ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम असंयम, संयमासंयम ये (२)	२	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ संयम को० नं० १६-१६ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(७) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो			
१४ दर्शन	३ को० नं० १६ देखो	३ (१) नरकगति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३ २-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-२-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-६ ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो

कोष्टक नं० ५३

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व	२	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	६	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-२-१-१-१-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१- -२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-२, १-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	२ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६–१८–१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६–१८–१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ चारों गतियों में हरेक में भंगों का विवरण को० नं० ५२ के समान जानना	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को०नं० १६ से १६ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में भंगों का विवरण को० नं० ५२ के समान जानना	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १६ देखो
२० उपयोग को० नं० १६ देखो	६	६ (१) नरक गति में ५–६–६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३–४–५–६ ६–५–६–६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५–६–६–५–६–६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ५–६–६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १६ देखो	८ कुअवधि ज्ञान घटाकर (८) (१) नरक गति में ४–६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३–४–४–३–४–४–४–६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४–६–४–६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४–४–६–६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १६ देखो
२१ ध्यान आर्त ध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, धर्म ध्यान ३, (आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय) ये ११ ध्यान जानना	११	११ (१) नरकगति-देवगति में हरेक में ८-६-१० के भंग को०नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ८-६-१०-११-८-६-१० को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १६-१६ देखो १ ध्यान को०नं० १७ देखो	६ अपाय विचय विपाक विचय ये २ घटाकर (६) (१) नरक गति–देवगति में हरेक में ८–६ के भंग को०नं० १६–१६ देखो	सारे भंग को० नं० १६–१६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६–१६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-८-९-१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	(२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-९-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १८ देखो
२२ आस्रव	५२ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, योग १३, कषाय २२ ये ५२ जानना	४९ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ घटाकर (४९) (१) नरक गति में ४६-४१-३७ के भंग को० नं० १६ के ४९-४४-४०- के हरेक भंग में से प्रत्याख्यान कषाय जिसका विचार करो उसको छोड़ कर शेष ३ कषाय घटाकर ४६-४१-३७ के भंग जानना (२) तिर्यंच गति में ३३-३५-३६-३७-४०-४१ ४३-३९-३४-४७-४२-३८ के भंग—को० नं० १७ के ३६-३८-३९-४०-४३-४४-४६-४२-३७-५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के समान प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ३३-३५-	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	४२ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काय योग १, वै० काय योग १, ये १० घटाकर (४२) (१) नरक गति में ३-३० के भंग को० नं० १६ के ४२-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ३९-३० के भंग जानना (२) तिर्यंच गति में ३४-३५-३६-३७-४०-४१-२९-३०-३१-३२-३५-३६-४०-३५-३० के भंग को० नं० १७ के ३७-३८-३९-४०-४३-४४-३२-३३-३४-३५-३८-३९-४३-३८-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		-३६-३७-४०-४८-४३-३६-३४-४७-४२-३८ के भंग जानना (३) मनुष्य गति ४८-४३-३६-३४-४७-४२-३८ के भंग को० नं० १८ के ५१-४६-४२-३७-५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के समान प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४८-४३-३६-३४-४७-४२-३८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	कषाय ३ घटाकर ३४-३५-३६-३७-४०-४१-३६-३०-३१-३२-३५-३६-४०-३५-३० के भंग जानना (३) मनुष्य गति में ४१-३६-३०-४०-३५-३० के भंग को० नं० १८ के ४४-३६-३३-४३-३८-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४१-३६-३०-४०-३५-३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ४७-४२-३८-४६-४१-३७-३७ के भंग को० नं० १९ के ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के हरेक भंग में से ऊपर के समान प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४७-४२-३८-४६-४१-३७-३७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देव गति में ४०-३५-३१-३६-३४-३०-३० के भंग को० नं० १९ के ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् प्रत्याख्यान कषाय ३ घटाकर ४०-३५-३०-३६-३४-३०-३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
२३ भाव उपशम-क्षायिक स० २, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, वेदक सम्यक्त्व १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्या	४२	४२ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-२६-३०-३२-२९-	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	४१ कुअवधि ज्ञान घटाकर (४१) (१) नरकगति में २५-२७ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
	दर्शन १, असंयम १, संयमासंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३ ये ४० भाव जानना	२७–२५–२६–२६ के भंग—को० नं० १७ देखो			(२) तिर्यंच गति में २४–२५–२७–२७–२२–२३—२५–२५–२४–२२–२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३१–२६–३०–३३–३० २७–२५–२६–२६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३०–२८–३०–२४–२२–२५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देव गति में २५–२३–२४–२६–२७–२५–२६–२६–२४–२२–२३–२६–२५ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(४) देवगति में २६–२४–२६–२४–२८–२३–२१–२६–२६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो ।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१ से ४ गुण० में को० नं० १ से ४ के समान जानना । ५वें गुण० में ६७ प्र० बंध जानना ।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१ से ४ गुण० में को० नं० १ से ४ के समान जानना । ५वें गुण० में ८७ प्र० का उदय जानना ।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१ से ४ गुण में को० नं० १ से ४ के समान जानना, ५वें गुण० में १४७ प्र० का सत्व उपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा जानना । १४० का सत्व क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा जानना ।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना ।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग प्रमाण जानना ।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग ६ राजु जानना । मध्य लोक का पांचवें गुण स्थान वाला जीव मर कर १६वें स्वर्ग में जा सकता है । इस अपेक्षा से ६ राजु जानना ।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल । एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक किसी एक कषाय की अपेक्षा जानना ।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक संयमासंयम गुण स्थान धारण न कर सके ।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना ।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना ।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	पर्याप्त एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	९ १ से ९वें गुण० के ९वें भाग तक जानना	९ १ले गुण० से ९वे गुण० के ९वें भाग तक जानना (१) नरक गति मे १ से ४ गुण० (२) तिर्यंच गति में १ से ५ गुण० (३) भोग भूमि में १ से ४ गुण० (४) मनुष्य गति में १ से ९ गुण० में (५) भोग भूमि में १ से ४ गुण० (६) देवगति में १ से ४ गुण०	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के कोई १ गुण०	४ १-२-४-६ मे ४ जानना (१) नरक गति में १ले ४थे गुण स्थान (२) तिर्यंच गति में १ले २रे और भोग भूमि की अपेक्षा १-२-४ गुण० (३) मनुष्य गति में १-२-४-६ गुण० (४) भोग भूमि में १-२-४ गुण० (५) देवगति में १-२-४ गुण०	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान में से कोई १ गुण० जानना
२ जीव समास	१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक, मनुष्य, देव गति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देव गति हरेक में ३ का भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में ७ का भंग को०नं० १६-१८-१९देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से देखो	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति	५ को० नं० १ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति १ जाति को० नं० १७ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो
९ योग	१५ को० नं० ५१ देखो	११ आहारक मिश्रकाय योग १, औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ४ घटाकर (११) (१) नरक गति-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ९-२-१-९ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ योग जानना १ योग को० नं० १६-१९ देखो १ योग को० नं० १७ देखो	४ आ० मिश्रकाय योग १, औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग ये ४ योग जानना (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना १ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग पर्याप्तवत् जानना १ योग को० नं० १६-१७-१९ देखो १ योग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ६-६-३-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो			
१० वेद को० नं० १ देखो	३	मनुष्य ३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१ ०-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो	३ (१) नरक गति में १ का भंग को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-१-१-२-१ के को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबन्धी क० ४, अप्रत्याख्यान क० ४, प्रत्याख्यान क० ४, संज्वलन कषाय जिसका विचार करो वो १ कषाय, हास्यादि नोकषाय ९ ये २२ जानना	२२	२२ (१) नरकगति में २०-१६ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ हरेक भंग में से संज्वलन कषाय जिसका विचार करो वो १ छोड़कर शेष ३ कषाय घटाकर २०-१६ के भंग जानना (२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-१८-	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	२२ (१) नरक गति में २०-१६ के भंग को० नं १६ के २३- १९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन- कषाय ३ घटाकर २०- १६ के भंग जानना (२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२- २०-२२-२१-१६ के	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		१४–२१–१७ के भंग को० नं० १७ के २५–२३–२५–२५–२१–१७–२४–२० के हरेक भंग में में से ऊपर के समान संज्वलन कषाय ३ घटाकर २२–२०–२२–२२–१८–१४–२१–१७ के भंग			भंग को० नं० १७ के २५–२३–२५–२५–२३–२५–२४–१६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन कषाय ३ घटाकर २२–२०–२२–२२–२०–२२–२१–१६ के भंग जानना		
		(३) मनुष्य गति में २१–१८–१४–१०–८–१०–४–२१–१७ के भंग को० नं० १८ के २५–२१–१७–१३–११–१३–७–२४–२० के हरेक भंग में से ऊपर के समान संज्वलन कषाय ३ घटाकर २२–१८–१४–१०–८–१०–४–२१–१७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २२–१६–८–२१–१६–के भंग को० नं० १८ के २ -११–११–२४–१६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन कषाय ३ घटाकर २२–१६–८–२१–१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २१-१७-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १९ के २४-२०-२३-१९-१९ के हरेक भंग में से ऊपर के समान संज्वलन कषाय ३ घटाकर २१-१७-२०-१६ १६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २१-२१-१६-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १९ के २४-२४-१९-२३-१९-१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन कषाय ३ घटाकर २१-२१-१६-२०-१६-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१२ ज्ञान कुज्ञान ३, मतिश्रुत-अवधि ज्ञान मनः पर्यय ज्ञान ये ७ ज्ञान जानना	७	७ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३ के भंग--को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो	५ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १ ये २ घटाकर (५) (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो
१३ संयम असंयम १, संयमासंयम १, सामायिक संयम १ छेदोपस्थापना १, परिहारविशुद्धि १ ये ५ जानना	५	५ (१) नरक गति-देवगति हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १६-१९ देखो १ संयम को० नं० १७ देखो १ संयम को० नं० १८ देखो	३ संयमासंयम, परिहार-विशुद्धि ये २ घटाकर (३) (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १६-१९ देखो १ संयम को० नं० १७ देखो १ संयम को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन	३ को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गति में हरेक में २-१ के भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो

कोष्टक नं० ५४

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१--२-१- १-१-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-३-१-२-३-२-१- १-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में १-१-१-२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-२-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८- १९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८- १९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८- १९ देखो अवस्था को०नं० १७ देखो
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ (१) नरक-देव गतियों में गति में १ आहारक जानना को०नं० १६ और १९ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो	१ को०नं० १६ और १९ देखो	२ नरक-देव गति में हरेक में १-१ के भंग को०नं० १६ और १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ और १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ और १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १७ देखो	१ को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था दोनों में से कोई १ अवस्था को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-१-१ १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था कोई १ अवस्था को०नं० १८ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ७, दर्शनोपयोग ३, ये १० जानना	०	१० (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	८ कुअवधि मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (८) (१) नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-४-५ ६-६-७-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-६-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो
२१ ध्यान आर्त ध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, धर्म- ध्यान ४, पृथक्त्व- वितर्क विचार १ ये १३ ध्यान जानना	१३	१३ (१) नरक-देव गति में हरेक में ८-९-१० के भंग को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को०नं० १६- १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६- १९ देखो	९ अपाय विचय १ विपाक विचय १, संस्थान विचय १, पृथक्त्व विचार १ ये ४ घटाकर शेष (९)	सारे भंग	१ ध्यान

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ८-९-१०-११-८-९-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	(१) नरक गति–देवगति में हरेक में ८-९ के भंग को०नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो
		(३) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-७-८-९-८-९-१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	(२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ८-९-७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे ध्यान को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अविरत १२, योग १५, कषाय २३ ये ५५ जानना	५५	५० औ० मिश्रकाययोग १ वै० मिश्रकाययोग १ आ० मिश्रकाययोग १ कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (५०)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग	४३ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आहारक काययोग १ ये ११ घटाकर (४३)	सारे भंग पर्यायवत् जानना	१ भंग पर्यायवत् जानना
		(१) नरक गति में ४६-४१-३७ के भंग को० नं० १६ के ४९-४४-४० के हरेक भंग में से संज्वलन कषाय जिसका जिसका विचार करो उसको छोड़कर शेष ३ कषाय घटाकर ४६-४१-३७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(१) नरकगति में ३९-३० के भंग को० नं० १६ के ४२-३३ के हरेक भंग में से पर्यायवत् संज्वलन कषाय ३ घटाकर ३९-३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३३-३४-३५-३६-३७-४०-४८-४३-३९-३६-४७-४१-३८ के भंग को० नं० १७ के ३६-३७-३८-३९-४०-४३-५१-४६-४२-३९-५०-४४-४१	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३४-३५-३६-३७-४०-४१-३९-३०-३१-३२-३५-३६-४०-४५-३० के भंग को०नं० १७ के ३७-[illegible]-३२-३६-३५-३८-३९-	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		के हरेक भंग म से ऊपर के समान संज्वलन कषाय ३ घटाकर ३३-३५-३६-३७-४०-४८-४३-३६-२६-४७-४२-३८ के भंग जानना (३) मनुष्य गति ४८-४३-३६-३४-१६-१७-१६-१३-१२-११-१० के भंग को० नं० १८ ५१-४६-४२-३७- २-२०-२२-१६-१५-१४-१३ के हरेक भंग में से ऊपर के समान संज्वलन कषाय ३ घटाकर ४८-४३-३६-३४-१६-१७-१६-१३-१२-११-१० के भंग जानना १० का भंग को० नं० १८ के १२ के भंग में से ऊपर के समान मान-माया-लोभ कषायों में से कोई २ कषाय घटाकर १० का भंग जानना १० का भंग को० नं० १८ के ११ के भंग में से ऊपर के समान माया, लोभ कषायों में से कोई १ कषाय घटाकर १० का भंग जानना १०-१० का भंग खाली एक लोभ कषाय के निवार में को० नं० १८ के समान जानना ४७-४२-३८ के भंग भोग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	४३-३८-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन कषाय ३ घटाकर ३४-३५-३६-३७-४०-४१-२९-३०-३१-३२-३५-३६-४०-३५-३० के भंग जानना (३) मनुष्य गति में ४१-३६-३०-९-४०-३५-३० के भंग को० नं० १८ के ४४-३९-३३-१२ ४३-३८-३२ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन कषाय ३ घटाकर ४१-३६-?०-९-४०-३५-३० के भंग जानना (४) देव गति में ४०-३५-३०-२९-३४-३०-३० के भंग को० नं० १९ के ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् संज्वलन कषाय ३ घटाकर ४०-३५-३०-२९-३४-३०-३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		भूमि की अपेक्षा को० नं० १८ के ५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के समान विचार करो उसको छोड़कर शेष ३ कषाय घटाकर ४७-४२-३८ के भंग जानना					
		(४) देवगति में ४७-४२-३८-४६-४१-३७-३७ के भंग को० नं० १९ के ५०-४५-४१-४९-४४-४०-४० के हरेक भंग में से ऊपर के समान संज्वलन कषाय ३ घटाकर ४७-४२-३८-४६-४१-३७-३७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो			
२३ भाव को० नं० ५३ के ४२ में सराग संयम १, मनःपर्यय ज्ञान १, उपशम-चारित्र १, क्षायिक चारित्र १ ये ४ जोड़कर	४६ (४६)	४६ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	४१ उपशम-चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, कुअवधि ज्ञान १, मन- पर्ययज्ञान १ संयमासंयम १ ये ५ घटाकर (४१) (१) नरक गति में २५-२७ के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-२९-३०-३२-२९-२७-२ -२६-२६ के भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२७-२५-२३-२५-२५-२४-२२-२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३१-२९-३०-३३-३०-३१-२७-३१-२९-२९-२८-२७-२६-२५-२४-२७-२५-२६-२९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-२७-२८-३२-२५ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २५-२३-२४-२६-२७-२५-२६-२९-२४-२२-२३-२६-२५ के भंग को०नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २६-२४-२६-२४-२८-२३-२१-२६-२६ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१ से ८ गुण० में को० नं० १ से ८ के समान जानना। ९वें गुण० के ५वें भाग में १८ प्रकृति का बन्ध जानना।

२६ उदय प्रकृतियां— " " ९वें गुण० के ७वें भाग में ६० प्रकृति का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां— " " ९वें गुण० के ७वें भाग में १०२ क्षपक श्रेणी की अपेक्षा।

२८ संख्या—मुनियों की अपेक्षा (८९०९९१०३) तक जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३१ काल नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक एक कषाय की अपेक्षा जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक ऊपर लिखि हुई गुण स्थान प्राप्त हो सके यह उपशम श्रेणी की अपेक्षा जानना। क्षपक श्रेणी की अपेक्षा अन्तर नहीं है।

३३ जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना।

३४ कुल—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

 | कोष्टक नं० ५५ |

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१० १ से १० गुण स्थान	१० (१) नरक–देवगति में १ से ४ गुण० जानना (२) तिर्यंच गति में १ से ५ भोगभूमि में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से १० गुण० जानना भोगभूमि में १ से ४ गुण०	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण०	४ (१) नरक गति में १ले ४थे गुण० जानना (२) तिर्यंच गति में १–२ और भोगभूमि में १–२–४ गुण० (३) मनुष्य गति में १–२–...६ गुण० जानना भोगभूमि में १–२–४ गुण०	सारे गुण स्थान पर्याप्तवत् जानना	१ गुण० पर्याप्तवत्
२ जीव समास	१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक–मनुष्य–देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८- १९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६- १८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८- १९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६- १८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक–मनुष्य–देवगति में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१८- १९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १८-१९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१८- १९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		६ का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	३ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो
		(२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-१—४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में ४—४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ को० नं० ५४ के समान	१ को० नं० ५४ के समान	१ जाति को० नं० ५४ देखो	५ को० नं० ५४ के समान	१ जाति को० नं० ५४ देखो	१ जाति को०नं० ५४ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय को० नं० १ देखो	६	५ को० नं० ५४ देखो	१ काय को० नं० ५४ देखो	१ काय को० नं० ५४ देखो	६ को० नं० ५४ देखो	१ काय को० नं० ५४ देखो	१ काय को० नं० ५४ देखो
९ योग को० नं० २६ देखो	१५	११ को० नं० ५४ के समान	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	४ को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ वेद को० नं० ५४ देखो	३ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ वेद को० नं० ५४ देखो
११ कषाय अनन्तानुबंधी कषाय ४, अप्रत्याख्यान कषाय ४, प्रत्याख्यान कषाय ४, संज्वलन लोभ कषाय १, नव नो कषाय ९, ये २२ जानना	२२	२२ (१) नरक गति में २०-१६ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २०-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	२२ (१) नरक गति में २०-१६ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २०-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-१८-१४-२१-१७ के भंग को० नं० १७ के २५-२३-२५-२५-२१-१७-२४-२० के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २२-२०-२२-२२-१८-१४-२१-१७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २२-२०-२२-२२-२०-२१-२१-१६ के भंग को० नं० १७ के २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४-१९ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २२-२०-२२-२२-२०-२१-२१-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २२-१८-१४-१०-८-१०-४-१-२१-१७ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २२-१६-८-२१-१६ के भंग को० नं० १८ के २५-	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को नं १८ के २५-२१-१७-१३-११-१३-७-४-२४-२० के हरेक भंग में से सज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २२-१८-१४-१०-८-१०-४-१-२१ १७ के भंग जानना (४) देवगति में २१ १७-२०-१६-१६ के भंग को० नं० १६ के २४-२०-२३-१६-१६ के हरेक भंग में से संज्वलन-क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २१-१७-२०-१६-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१६-११-२४-१६ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २२-१६-८-२१-१६ के भंग जानना (४) देवगति में २१-२१-१६-२०-१६-१६-के भंग को० नं० १६ के २४-२४-१६-२३-१६-१६ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर २१-२१-१६-२०-१६-१६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
१२ ज्ञान	७ को० नं० ५४ देखो	७ को० नं० ५४ के समान	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ ज्ञान को० नं० ५४ देखो	५ को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ ज्ञान को० नं० ५४ देखो
१३ संयम	६ असंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार वि०, सूक्ष्म सांपराय ये (६)	६ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १६-१६ देखो १ संयम को० नं० १७ देखो १ संयम को० नं० १८ देखो	३ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना (३) (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को० नं० १६-१६ देखो १ संयम को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो
दर्शन को० नं० १६ देखो	३	३ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ दर्शन को० नं० ५४ देखो	३ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ दर्शन को० नं० ५४ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ लेश्या को० नं० ५४ देखो	६ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ लेश्या को० नं० ५४ देखो
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को० नं० ५४ देखो	२ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को० नं० ५४ देखो
१७ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	६	६ को० नं० ५४ के समान	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० ५४ देखो	६ को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० ५४ देखो
१८ संज्ञी संज्ञी असंज्ञी	२	२ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को० नं० ५४ देखो	२ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को० नं० ५४ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ को० नं० ५४ के समान	१ को० नं० ५४ देखो	१ को० नं० ५४ देखो	२ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को० नं० ५४ देखो
२० ध्यान को० नं० ५४ देखो	१०	१० को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ उपयोग को० नं० ५४ देखो	८ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ उपयोग को० नं० ५४ देखो
२१ ध्यान को० नं० ५४ देखो	१३	१३ को० नं० ४ के समान	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ ध्यान को० नं० ५४ देखो	११ को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ ध्यान को० नं० ५४ देखो
२२-आस्रव को० नं० ५४ देखो	५४	५१ औ० मिश्रकाय योग १	सारे भंग अपने अपने स्थान	१ भंग अपने अपने स्थान	४३ मनोयोग ४, वचनयोग ४,	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		वै० मिश्रकाय योग १ कार्माण काययोग १ ये ३ घटाकर (५१)	के सारे भंग जानना	के भंगों में कोई १ भंग	औ० काययोग १, वै० काययोग १, आहारक काययोग १ ये ११ घटा-कर (४३)		
		(१) नरक गति में ४६–४१–३७ के भंग को० नं० १६ के ४९–४४–४० के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर ४६–४१–३७ के भं जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में ३९–३० के भंग को०नं० १६ के ४२–३३ हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर ३९–३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३३–३५–३६–३७–४०–४८–४३–३९–३४–४७–४२–३८ के भंग को० नं० १७ के ३६–३८–३९–४०–४३–५१–४६–४२–३७–५०–४५–४१ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ घटाकर ३३–३५–३६–३७–४०–४८–४३–३९–३४–४७–४२–३८ के भंग जानना।	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३४–३५–३६–३७–४०–४१–२९–३०–३१–३२–३५–३६–४०–३५–३० के भंग को० नं० १७ के २७–३८–३९–४०–४३–४४–३२–३३–३४–३५–३८– ९–४३–३८–३३ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर ३४–३५–३६–३७–४०–४१–२९–३०–३१–३२–३५–३६–४०–३५–३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ४८–४३–३९–३४–१९–१७–१६–१३–१२–११–१० के भंग को० नं० १८ के ५१–४६–४२–३७–२२–२०–२२–१६–१५–	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४१–३६–३०–९–४[illegible]–३५–३० के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		१४-१३ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर ४८-४३-३६-३४-१६-१७-१६-१३-१०-११-१० के भंग जानना १० का भंग—कौ० नं० १८ के १२ के भंग में से मान-माया ये २ कषाय घटाकर १० का भंग जानना १० का भंग—कौ० नं० १८ के ११ के भंग में से माया कषाय १ घटाकर १० का भंग जानना १०-१० के भंग—कौ० नं० १८ के समान जानना ४७-४२-३८ के भंग भोग-भूमि की अपेक्षा कौ० नं० १८ के ५०-४५-४१ के हरेक भंग में से क्रोध-मान माया ये ३ कषाय घटाकर ४७-४२-३८ के भंग जानना (४) देवगति में ४७-४२-३८-४६-४१-३७-३७ के भंग—कौ० नं० १६ के ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के हरेक भंग में से	- सारे भंग कौ० नं० १६ देखो	१ भंग कौ० नं० १६ देखो	कौ० नं० १८ के ४४-३९-३३-१२-४३-३८-३३ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर ४१-३६-३०-६-४०-३५-३० के भंग जानना (४) देवगति में ४०-३५-३०-३६-३४-३०-३० के भंग कौ० नं० १९ के ४३-३८-३३-४२-३७ ३३ ३३ के हरेक भंग में से संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर ४०-३५-३०-३९-३४-३०-३० के भंग जानना	सारे भंग कौ० नं० १६ देखो	१ भंग कौ० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		संज्वलन क्रोध-मान-माया ये ३ कषाय घटाकर ४७-४२-३८-४६-४१-३७-३७ के भंग जानना					
२३ भाव कोे० नं० ५४ देखो	४६	४६ (१) नरक गति में कोे० नं० १६ के समान	सारे भंग कोे० नं० १६ देखो	१ भंग कोे० नं० १६ देखो	४१ उपशमचारित्र १, क्षायिक-चारित्र १, कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, संयमासंयम १, ये ५ घटाकर (४१) (१) नरक गति में कोे० नं० १६ के समान	सारे भंग सारे भंग कोे० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग कोे० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में कोे० नं० १७ देखो	सारे भंग कोे० नं० १७ देखो	१ भंग कोे० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में कोे० नं० १७ के समान	सारे भंग कोे० नं० १७ देखो	१ भंग कोे० नं० १७ देखो
		(३) देव गति में कोे० नं० १९ के समान	सारे भंग कोे० नं० १९ देखो	१ भंग कोे० नं० १९ देखो	(३) देवगति में कोे० नं० १९ के समान	सारे भंग कोे० नं० १९ देखो	१ भंग कोे० नं० १९ देखो
		(४) मनुष्य गति में ३१-२९-३० ३३-३०-३१-२७-३१-२६-२९-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२३-२७-२५ २६-२९ के भंग-कोे० नं० १८ देखो	सारे भंग कोे० नं० १८ देखो	१ भंग कोे० नं० १८ देखो	(४) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-२७-२६-२२-२५ के भंग कोे० नं० १८ देखो	सारे भंग कोे० नं० १८ देखो	१ भंग कोे० नं० १८ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१ से ६ गुण० में को० नं० १ से ६ के समान जानना। १०वें गुण० में (०) बंध नहीं है।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१ से ६ गुण० में को० नं० १ से ६ के समान जानना। १०वें गुण० में ६० प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१ से ६ गुण० में को० नं० १ से ६ के समान जानना। १०वें गुण० में १०२ क्षपक श्रेणी की अपेक्षा जानना।

२८ **संख्या**—(८६१०००,००) आठ करोड़ एवयनिबे लाख यह संख्या मुनियों की अपेक्षा जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक के असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक एक लोभ कषाय की अपेक्षा जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक संज्वलन लोभ को धारण न कर सके। अर्थात् १०वां गुण स्थान धारण न कर सके।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	पर्याप्त एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	८ १ से ८ गुण०	८ (१) नरक गति में १ से ४ गुण० (२) तिर्यंच गति में १ से ५ गुण० भोग भूमि में १ से ४ गुण० (३) मनुष्य गति में १ से ८ गुण० भोग भूमि में १ से ४ गुण० (४) देव गति में १ से ४ गुण०	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुण०	४ (१) नरकगति में १ले ४ गुण० (२) तिर्यंच गति में १-२ गुण० भोगभूमि में १-२-४ गुण० (३) मनुष्य गति में १-२-४-६ गुण० (४) भोग भूमि में १-२-४ गुण० (५) देवगति में १-२-४ गुण०	सारे गुण स्थान पर्याप्तवत् जानना	१ गुण० पर्याप्तवत् जानना
२ जीवसमास	१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था को० नं० ५४ के समान	१ समास को० नं० ५४ देखो	१ समास को० नं० ५४ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था को० नं० ५४ देखो	१ समास को० नं० ५४ देखो	१ समास को० नं० ५४ देखो
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	३ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	७ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	४ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ को० नं० ५४ के समान	१ को० नं० ५४ देखो	१ को० नं० ५४ देखो	४ को० नं० ५४ देखो	१ को० नं० ५४ देखो	१ को० नं० ५४ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति	५ को० नं० १ देखो	५ को० नं० ५४ के समान	१ जाति को० नं० ५४ देखो	१ जाति को० नं० ५४ देखो	५ को० नं० ५४ के समान	१ जाति को० नं० ५४ देखो	१ जाति को० नं० ५४ देखो
८ काय	६ को० नं० १ देखो	६ को० नं० ५४ के समान	१ काय को० नं० ५४ देखो	१ काय को० नं० ५४ देखो	६ को० नं० ५४ देखो	१ काय को० नं० ५४ देखो	१ काय को० नं० ५४ देखो
९ योग	१० को० नं० २६ देखो	११ को० नं० ५४ के समान	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ योग को० नं० ५४ देखो	४ को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ योग को० नं० ५४ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में—तिर्यंच गति में—देवगति में हरेक में को० नं० ५४ के समान भंग जानना। (२) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० ४ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो	३ (१) चारों गतियों में को० नं० ५४ के समान जानना.	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ वेद को० नं० ५४ देखो
११ कषाय	२० हास्यादि ६ नोकषायों में से जिसका विचार करो सो १ छोड़कर शेष ५ कषाय घटाकर २० जानना	२० (१) नरक गति में १८–१४ के भंग को० नं० १६ के २३–१९ हरेक भंग में से हास्यादि ६ नोकषायों में से जिसका विचार करो सो १ छोड़कर शेष ५ कषाय घटाकर १८–१४ के भंग जानना (२) तिर्यंच गति में २०–१८–२०–२०–१६–१२–१९–१५ के भंग को० नं० १७ के २५–२३–२५–२५–२१–१७–२४–२० के हरेक भंग में	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	२० (१) नरक गति में १८-१ के भंग को० नं० १६ के २३-१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५ नोकषाय घटाकर १८-१ के भंग जानना। (२) तिर्यंच गति में २०–१८–२०–०–१८–२०–१९–१४ के भंग को० नं० १७ के २५–२३–२५–२५–२३–२५–२४–१९ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		में ऊपर के समान शेष ५ नोकषाय घटाकर २०-१८-२०-२०-१६-१२-१६-१५ के भंग जानना			नोकषाय घटाकर २०-१८-२०-२०-१८-२०-१६-१४ के भंग जानना		
		(३) मनुष्य गति में २०-१६-१२-८-६-८-१६-१५ के भंग को० नं० १८ के २५-२१-१७-१३-११-१३-२४-२० के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष ५ नोकषाय घटाकर २०-१६-१२-८-६-८-१६-१५ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २०-१४-६-१६-१४ के भंग को० नं० १८ के २५-१६-११-२४-१६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् नोकषाय शेष ५ घटाकर २०-१४-६-१६-१४ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १६-१५-१८-१४-१४ के भंग को० नं० १६ के २४-२०-२३-१६-१६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान ५ शेष नोकषाय घटाकर १६-१५-१८-१४-१४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में १६-११-१४-१८-१४-१४ के भंग को० नं० १६ के २४-१६-२३-१६-१६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५ नोकषाय घटाकर १६-११-१४-१८-१४-१४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
१२ ज्ञान को०नं० ५४ देखो	७	७ को०नं० ५४ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ ज्ञान को०नं० ५४ देखो	५ कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर(५) को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम को० नं० ५४ देखो	५	५ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ संयम को०नं० ५४ देखो	३ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ संयम को०नं० ५४ देखो

१ २	३		५	६	७	८
१४ दर्शन ३ को० नं० ५४ देखो	३ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ दर्शन को०नं० ५४ देखो	३ को० नं० ४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ दर्शन को०नं० ५४ देखो
१५ लेश्या ६ को० नं० १ देखो	६ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ लेश्या को०नं० ५४ देखो	६ को० नं० ४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ लेश्या को०नं० ५४ देखो
१६ भव्यत्व २ को० नं० ५४ देखो	२ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को०नं० ५४ देखो	२ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को नं० ५४ देखो
१७ सम्यक्त्व ६ को० नं० १६ देखो	६ को० नं० ५४ के समान जानना	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० ५४ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० ५४ देखो
१८ संज्ञी २ संज्ञी, असंज्ञी	२ को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को०नं० ५४ देखो	२ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को०नं० ५४ देखो
१९ आहारक २ आहारक, अनाहारक	१ को०नं० ५४ के समान	१ को०नं० ५४ देखो	१ को०नं० ५४ देखो	२ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ अवस्था को०नं० ५४ देखो
२० उपयोग १० को० नं० ५४ देखो	१० को० नं० ५४ के समान	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ उपयोग को०नं० ५४ देखो	८ को० नं० ५४ देखो	१ भंग को० नं० ५४ देखो	१ उपयोग को०नं० ५४ देखो
२१ ध्यान १३ को० नं० ५४ देखो	१३ को० नं० ५४ के समान	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ ध्यान को०नं० ५४ देखो	११ को० नं० ५४ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ देखो	१ ध्यान को०नं० ५४ देखो
२२ आस्रव ५२ मिथ्यात्व ५, अविरत १२, योग १५, कषाय २०, (हास्यादि ६ नोकषाय में से जिसका विचार करो सो १ छोड़कर शेष ५ घटाकर २० जानना) ये ५२ आस्रव जानना	४८ औ० मिश्रकाययोग १, वै० " " १, आहारक " " १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (४८) (१) नरक गति में ४४-३९-३५ के भंग को०नं० १६ के ४९-४४-४० के हरेक भंग में से हास्यादि ६ नो कषाय में से जिसका विचार करे सो १ छोड़कर शेष	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो	४४ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आहारक काययोग १, ये ११ घटाकर (४१) (१) नरक गति में ३७-२८ के भंग को० नं० १६ के ४२-४३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५ कषाय घटाकर ३७-२८ के भंग जानना	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग पर्याप्तवत् जानना १ भंग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		५ घटाकर ४४-३६-३५ के भंग जानना (२) तिर्यंच गति में ३१-३३-:४-३५-३८-४६-४१-३७-३२-•५-४०-३६ के भंग को० नं० १७ के ३६-३८-३६-४०-४३-५१-४६-४२-३७-५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष ५ कषाय घटाकर ३१-३३-३४-३५-३८-४६-४१-३७-३२-४५-४ -३६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३२-३३-३४-३५-३८-३६-२७-२८-२६-३०-३३-३४-३८-३३-२८ के भंग को० नं० १७ के ३७-३८-३६-४०-४३-४४-३२-३३-३४-३५-३८-३६-४३-३८-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५ कषाय घटाकर ३२-३३- ४-३५-३८-३६-२७-२८-२६-३०-३३- ४-३-३८-३३-२८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		) मनुष्य गति में ४६-४१-३७-३२-१७-१५-१७-४५-४०-३६ के भंग को० नं० १८ के ५१-४६-४२-३७-२२-२०-२२-५०-४५-४१ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष ५ कषाय घटाकर ४६-४१-३७-३२-१७-१५-१७-४५-४०-३६- के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३६-३४-२८-७-२८-३३-२८ के भंग को०नं० १८ के ४४-३६-३३-१२-४३-३८-३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५ कषाय घटाकर ३६-३४-२८-७-३८-३३-२८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ४५-४०-३६-४४-३६-३५-३५ के भंग को० नं० १६ के ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग में से ऊपर के समान	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो			

१	२	३	४	५	६	७	८
		शेष ५ कषाय घटाकर ४५-४०-३६-४४-३६-३५-३५ के भंग जानना					
२३ भाव	४६ उपशम-क्षायिक स० २ उपशम चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, क्षायोपशमिक भाव १८, औदईक भाव २१, पारिणामिक भाव ३ ये ४६ भाव जानना	४६ (१) नरक गति—तिर्यंच गति—देव गति में हरेक में को० नं० ५४ के समान भंग जानना (२) मनुष्य गति में ३१-२६-३०-३३-३ -३१-२७-३१-२६-२७-२५-२६-२६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० ५४ के समान हरेक में जानना सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० ५४ के समान हरेक में जानना १ भंग को०नं० १८ देखो	४१ उपशम-चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, कुअवधि ज्ञान १, मन- पर्ययज्ञान १, संयमासंयम १ ये ५ घटाकर (४१) (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में को० नं० ५४ के समान भंग जानना (२) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-२७-२४-२२-२५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० ५४ के समान हरेक में जानना सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० ५४ के समान जानना १ भंग को०नं० १८ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० २६ के समान देखो

२५ **बंध प्रकृतियां**—१ से ७ गुण० में को० नं० १ से ७ के समान जानना। ८वें गुण० के ६वें भाग में २२ प्रकृति का बन्ध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**— " " ८वें गुण० के अन्तिम भाग में ६६ प्रकृति का उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**— " " " " १३८ प्रकृति क्षपक श्रेणी की अपेक्षा।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल** नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक किसी एक नोकषाय की अपेक्षा जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त जानना।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ११-१२-१३-१४ गुण०	४	४ ११ से १४ ये ४ गुण० को० नं० १८ देखो	सारे गुण स्थान	१ गुण० ४ में से कोई १ गुण०	१ १३वें गुण स्थान	१	१
२ जीव समास संज्ञी पं०-पर्याप्त-अपर्याप्त	२	१ १ पर्याप्त अवस्था	१	१	१ १ अपर्याप्त अवस्था	१	१
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	३ ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० १०–४–१ के भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	७ २ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
५ संज्ञा	०	अतीत संज्ञा	०	०	०	०	०
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना को०नं० १८ देखो	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति को०नं० १८ देखो	१	१	१	१	१
८ काय	१	१ त्रसकाय को०नं० १८ देखो	१	१	१	१	१
९ योग मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ११ योग जानना	११	९ औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये २ घटाकर (९) (१) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ योग	२ औ० मिश्रकाययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ योग जानना (१) मनुष्य गति में	सारे भंग	१ योग

१	२	३	४	५	६	७	८
		९-५-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो	२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो
१० वेद	०	अपगत वेद	०	०	०	०	०
११ कषाय	०	अकषाय	०	०	०	०	०
१२ ज्ञान मति-श्रुत-अवधि ज्ञान-मनः पर्यय-केवल-ज्ञान ये ५ ज्ञान जानना	५	५ (१) मनुष्य गति में ४-१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	१ १ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
१३ संयम	१	१ यथाख्यात संयम को० नं० १८ देखो	१	१	१	१	१
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन–चक्षु दर्शन अवधि दर्शन-केवल दर्शन	४	४ (१) मनुष्य गति में ३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	१ १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो
१५ लेश्या शुक्ल लेश्या	१	१ (१) मनुष्य गति में १-० के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ दे
१६ भव्यत्व	१	१ भव्य जानना	१	१	१	१	१
१७ सम्यक्त्व उपशम स०, क्षायिक स० ये २ जानना	२	२ (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
१८ संज्ञी	१	१ (१) मनुष्य गति में १-० के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो	०	०	०
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	२ (१) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ५, दर्शनोपयोग ४ ये ९ जानना	९	९ (१) मनुष्य गति में ७-२ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	७ कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (७) (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
२१ ध्यान पृथक्त्व वितर्क विचार १ एकत्व वितर्क अविचार १, सूक्ष्म क्रिया प्रति-पाति १, व्युपरत क्रिया निवर्तिनी १ ये ४ शुक्ल ध्यान जानना	४	४ (१) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	१ सूक्ष्म क्रिया प्रति पाति १ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव ऊपर के योग स्थान के योग (११) जानना	११	९ औ० मिश्र काययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ घटाकर (९) (१) मनुष्य गति में ९-५-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १८ देखो	२ औ० मिश्रकाययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ योग जानना (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १८ देखो
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशमचारित्र १, क्षायिक भाव ९, ज्ञान ४, दर्शन ३, क्षयोपशम लब्धि ५, शुक्ल लेश्या १, मनुष्य गति १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १ भव्यत्व १ ये (२९)	२९	२९ (१) मनुष्य गति में २१-२०-१४-१३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	२८ उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, मनः पर्यय ज्ञान १, ये ३ घटाकर (२८) (१) मनुष्य गति में १४ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १८ देखो

२४ अवगाहना—३॥ हाथ से लेकर ५२५ धनुष तक जानना।

२५ बंध प्रकृतियां—११-१२-१३वें गुण० में एक साता वेदनीय का बन्ध जानना, १४वें गुण० में अबन्ध जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—११-१२-१३-१४वें गुण० में क्रम से ५६, ५७, ४२, १२ प्र० का उदय जानना को० नं० ११ से १४ देखो।

२७ सत्व प्रकृतियां—११-१२-१३वें गुण० में क्रम से १३९, १०२, १०१, ८५ और १४वें गुण० में ८५-१३ प्र० का सत्ता जानना। क्रम से को० नं० ११ से १४ देखो।

२८ संख्या—को० नं० ११ से १४ के समान जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग कपाट समुद्घात की अपेक्षा जानना। प्रतर समुद्घात में असंख्यात लोकप्रमाण जानना और लोकपूर्ण समुद्घात में सर्वलोक जानना। को० नं० १३ देखो।

३० स्पर्शन—ऊपर के क्षेत्र के समान जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम कोटि पूर्ववर्ष तक जानना, उपशम श्रेणी की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना, और क्षपक श्रेणी की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त देशोन कोटि पूर्व वर्ष तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक ११वां गुण स्थान प्राप्त न कर सके।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	पर्याप्त: एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त: एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त: १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त: १ जीव के एक समय में
१	२		३	४	५	६	७	८
१	गुण स्थान	३ १-२-३ गुण जानना	३ चारों गतियों में हरेक में १-२-३ गुण० जानना	सारे गुण स्थान को० नं० १६ से १६ देखो	१ गुण० को० नं० १६ से १६ देखो	२ (१) नरक गति में १ले गुण० (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-२ गुण० स्थान जानना	सारे गुण को० नं० १६ से १६ देखो	१ गुण० को० नं० १६ से १६ देखो
२	जीव समास	१४ को० नं० १ देखो	सूचना—(१) पेज नं० ४२७ से ४२८ देखो ७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक—मनुष्य—देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७—१—१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१६ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१६ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१६ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१६ देखो १ समास को० नं० १७ देखो
३	पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक—मनुष्य—देवगति में हरेक में ६ का भंग—को० नं० १६-१८-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य देवगति में हरेक में ३ का भंग—को० नं० १६-१८ १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३—३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग-को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग-को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग-को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	कोई १ गति	कोई १ गति	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	कोई १ गति	कोई १ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९	६ (१) नरक मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो
९ योग आहारक मिश्रकाय योग १, आ० काय योग १, ये २ घटाकर (१३)	१३	१० औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ३ घटाकर (१०)	१ भंग	१ योग	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ योग जानना	१ भंग	१ य
		(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१८-१९ देखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१८-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ९-२-१-९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२१-२४-२० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २५-२१-२४-२० के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२०-२३-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	२५ (१) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २५-२४ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२०-२३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो
१२ ज्ञान कुमति-कुश्रुत इन दोनों में से जिसका विचार करता हो वह १ कुज्ञान जानना सूचना २—पेज ४२७ पर	१	१ चारों गतियों में हरेक में दोनों में से कोई १ जिसका विचार करता हो वह १ कुज्ञान जानना	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में पर्याप्तवत् जानना	१	१
१३ संयम	१ असंयम	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१
१४ दर्शन अचक्षु द०, चक्षु दर्शन	२	२ (१) नरक गति में २ (२) तिर्यंच गति में १-२-२	१ भंग १ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन १ दर्शन को०नं० १७ देखो	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-२-२-२ के भंग	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो १ दर्शन को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में २-२ (४) देवगति में २-२	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १९ देखो	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-६-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो १ लेश्या को०नं० १७ देखो १ लेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या को०नं० १९ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो १ लेश्या को०नं० १७ देखो १ लेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ (१) नरक गति में २-१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ देखो १ अवस्था को० नं० १७-१८-१९ देखो	२ (१) नरक गति में २ के भंग को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देव गति में हरेक में २-१ के भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ देखो १ अवस्था को०नं० १७-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र ये ३ जानना	३	३ (१) नरक गति में १-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देव गति में हरेक में १-१-१ के भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १७-१८-१९ देखो	२ मिश्र घटाकर (२) (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	सा भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १७-१८-१९ देखो
१८ संज्ञी संज्ञी, असंज्ञी	२	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१८-१७ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ नरक-देव गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ और १९ देखो तिर्यंच-मनुष्य गतियों में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो १ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो १ को० नं० १७-१८ देखो	१ नरक-देव गति में हरेक में -१ के भंग को० नं० १६ और १९ देखो तिर्यंच-मनुष्य गतियों में हरेक में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो १ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो १ को० नं० १७-१८ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग २, दर्शनोपयोग २,		२ (१) नरक गति में ३-४ के भंग को० नं० १६ के ४-५ के	१ भंग ३-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ उपयोग ३-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ के ४ के भंग में	१ भंग ३ का भंग जानना	१ उपयोग ३ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
		हरेक भंग में से कुज्ञानों में से जिसका विचार करो श्रो १ छोड़कर शेष २ कुज्ञान घटाकर ३-४ के भंग जानना (२) तिर्यंच गति में २-३ के भंग को० नं० १७ के ३-४ के हरेक भंग में से ऊपर के समान कोई १ कुज्ञान (दोनों में से) घटाकर २-३ के भंग जानना ३-४ के भंग—ऊपर के नरक गति के समान यहां भी जानना भोगभूमि में ३-४ के भंग—ऊपर के समान जानना (३) मनुष्य गति में ३-४-३-४ के भंग—ऊपर के तिर्यंच गति के समान जानना (४) देवगति में ३-४ के भंग नरक गति के समान जानना	१ भंग २-३ के भंगों में से कोई १ भंग जानना ३-४ के भंगों में से कोई १ भंग " सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना १ भंग ३-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ उपयोग २-३ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना ३-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग " " १ उपयोग ३-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	में पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान (दोनों में से कोई १) घटाकर २ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में २-३- -२-३-३-३ के भंग को० नं० १७ के ३-४-४-३-४-४-४ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् दोनों कुज्ञानों में से कोई १ कुज्ञान घटाकर २-३-३-२-३-३-३ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में ३-३ के भंग—ऊपर के तिर्यंच गति के समान जानना (४) देवगति में ३-३ के भंग—ऊपर के नरक गति के समान जानना	१ भंग २-३-३-२-३-३-३ के भंगों में से कोई १ भंग जानना सारे भंग पर्याप्तवत् १ भंग ३-३ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ उपयोग २-३-३-२-३-३-३ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना १ उपयोग ३-३ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना १ उपयोग ३-३ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना
२१ ध्यान आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञाविचय धर्मध्यान १ ये (९)	९	९ (१) चारों गतियों में हरेक में ८-९ के भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो	८ आज्ञा वि० घटाकर (८) (१) चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२२ आस्रव आ० मिश्रकाय योग १, आहारककाय योग १ ये २ घटाकर (५५)	५५	५२ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ घटाकर (५२)	सारे भंग	१ भंग	४५ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काय योग १, वै० काय योग १, ये १० घटाकर (४५)	सारे भंग	१ भंग
		(१) नरकगति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(१) नरक गति में [illegible] भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४३-५१ ४६-४[illegible]-५०-४५-४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४[illegible]-४३-४४- ३२-३३-३४-३५-३८-३९- ४३-३८ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-५०-४५-४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४४-३९-४३-३८ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४१-४० के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४३-३८-४२-३७ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
२३ भाव कुज्ञान में से जिसका विचार करो वो १ कुज्ञान, दर्शन २, लब्धि ५, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्यादर्शन १, असंयम १, अज्ञान १,	३२	३२ (१) नरक गति में २४-२२-२३ के भंग को० नं० १६ के २६-२४-२५ के हरेक भंग में से जिसका विचार करो वो १ कुज्ञान छोड़कर शेष २ कुज्ञान घटाकर २४-२२-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	३२ (१) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ के २५ के भंग में से पर्यायवत् शेष २ कुज्ञान घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में २३-२४-२६-२६-२१-२२	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव २ ये (३२) जानना		(२) तिर्यंच गति में २३-२४-२६-२६-२७-२८-२५-२३-२४ के भंग को० नं० १७ के २४-२५-२७ के हरेक भंग में से ऊपर के समान १ कुज्ञान और ३१-२६-३०-२७-२५-२६ के हरेक भंग से ऊपर के समान शेष २ कुज्ञान घटाकर २३-२४-२६ और २६-२७-२८-२५-२३-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	२४-२४-२३-२१ के भंग को० नं० १७ के २५-२५-२७-२७-२२-२३-२५-२५-२४-२२ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान घटाकर २२-२४-२६-२६-२१-२२-२४-२४-२३-२१ के भंग जानना	-	
		(३) मनुष्य गति में २६-२७-२८-२५-२३-२४ के भंग को० नं० १८ के ३१-२६-३०-२७-२५-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ कुज्ञान घटाकर २६-२७-२८-२५-२३-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २६-२७-२३-२१ के भंग को० नं० १८ के ३०-२८-२४-२२ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान घटाकर २६-२७-२३-२१ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २३-२१-२२-२५-२३-२४-२२-२०-२१ के भंग को० नं० १९ के २५-२३-२४-२७-२५-२६-२४-२२-२३ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ कुज्ञान घटाकर २३-२१-२२-२५-२३-२४-२२-२०-२१ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २५-२३-२४-२३-२२-२० के भंग को० नं० १९ के २६-२४-२६-२४-२३-२१ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ कुज्ञान घटाकर २५-२३-२५-२३-२२-२० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

सूचना:—(१) कुमति-कुश्रुत इन दोनों ज्ञानों को मिश्र गुण स्थान में मिश्र संज्ञा हो जाती है।

सूचना:—(२) इन दोनों ज्ञानों को मिश्र गुण स्थान में मिश्र संज्ञा हो जाती है।

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१ले २रे ३रे गुण० में क्रम से ११७-१०१-७४ प्र० का बंध जानना। को० नं० २६ देखो।

२६ उदय प्रकृतियां—,, ,, ,, ,, ,, ११७-१११-१०० प्र० का उदय जानना। को० नं० २६ देखो।

२७ सत्व प्रकृतियां—,, ,, ,, ,, ,, १४८-१४५-१४५ प्र० का सत्व जानना। को० नं० २६ देखो।

२८ संख्या—अनन्तानन्त जानना।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना।

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा सारे कुज्ञानी अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा सादि कुज्ञानी अन्तर्मुहूर्त से देशोन १३२ सागर काल तक उपशम या क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि ज्ञानी बनता रहे।

३३ जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना।

३४ कुल—१९९½ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	३ १-२-३ गुण० जानना	३ मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र ये ३ गुण० चारों गतियों में जानना	सारे गुण स्थान	१ गुण० जानना	सूचना—यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होता है विभंग ज्ञान में मरण नहीं होता है।
२ जीवसमास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त चारों गतियों में जानना	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ गति को० नं० १६ से १६ देखो	१ गति को० नं० १६ से १६ देखो	
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ जाति को० नं० १६ से १६ देखो	१ जाति को० नं० १६ से १६ देखो	

कोष्टक नं० ५६

कुअवधि ज्ञान (विभंग ज्ञान) में

१	२	३	४	५	६-७-८
काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	
६ योग मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, ये (१०) जानना	१०	१० चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को०नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ योग को० नं० १६ से १६ देखो	
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्यगति में-हरेक में ३-२ के भंग को० नं० १७-१८ देखो (३) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो को० नं० १७-१८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो को० नं० १७-१८ देखो १ वेद को० नं० १६ देखो	
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ५८ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में २५-२५-२१-२४-२० के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० ५८ के समान सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० ५८ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	
१२ ज्ञान	१ कुअवधि ज्ञान (विभंग) ज्ञान	१ चारों गतियों में १ कुअवधि (विभंग) ज्ञान जानना	१	१	
१३ संयम	१ असंयम	१ चारों गतियों में हरेक में	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
		१ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो			
१४ दर्शन को० नं० १६ देखो	३	३ चारों गतियों में हरेक में २-३ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ से १९ देखो	
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में ६-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	
		(४) देवगति में १-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो	
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो	
१७ सम्यक्त्व	३ मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र	३ चारों गतियों में हरेक में १-१-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ से १९ देखो	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
१९ आहारक	१ आहारक	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	
२० उपयोग ज्ञानोपयोग १, दर्शनोपयोग ३	४	४ चारों गतियों में हरेक में ३-४ के भंग को० नं० १६ से १९ के हरेक भंग में से ५-६ के हरेक भंग में से कुमति-कुश्रुत ये २ कुज्ञान घटाकर हरेक में ३-४ के भंग जानना	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ से १९ देखो	
२१ ध्यान आर्त ध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, आज्ञा विचय धर्म ध्यान १ ये (९)	९	९ चारों गतियों में हरेक में ८-९ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो	
२२ आस्रव आ० मिश्रकाययोग १, आहारक काययोग १, औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ५ घटाकर (५२)	५२	५२ (१) नरक गति में ४९—४४—४० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में ५१—४६—४२—५०—४५—४१ के भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति में ५१—४६—४२—५०—४५—४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
		(४) देवगति में ५०—४५—४१—४९—४४—४० के भंग को०नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
२३ भाव	३२ को०नं० ५८ देखो	३२ (१) नरक गति में २४-२२-२३ के भंग को० नं० १६ के २६-२४-२५ के हरेक भंग में से कुमति-कुश्रुत ये २ कुज्ञान घटाकर २४-२२-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में २६-२७-२८-२५-२३-२४ के भंग को०नं० १७ के ३१-२६-३०-२७-२५-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान २ कुज्ञान घटाकर २६-२७-२८-२५-२३-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति में २६-२७-२८-२५-२३-२४ के भंग को० नं० १८ के ३१-२६-३०-२७-२५-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान २ कुज्ञान घटाकर २६-२७-२८-२[illegible]-२३-२४ के भंग जानना	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
		(४) देव गति में २३-२१-२२-२५-२३-२४-२२-२०-२१ के भंग को० नं० १६ के २५-२३ २४-२७-२५-२६-२[illegible]-२२-२३ के हरेक भंग में से ऊपर के समान २ कुज्ञान घटाकर २३-२१-२२-२५-२३-२४-२२-२०-२१ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	

२४ अवगाहना—को० नं० १६ में ३४ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१ले २रे ३रे गुण० में क्रम से ११७–१०१–७४ प्रकृति का बन्ध जानना, को० नं० २६ देखो।

२६ उदय प्रकृतियां—" " " " ११७–१११–१०० प्रकृति का उदय जानना, " " "

२७ सत्व प्रकृतियां—" " " " १४८–१४५–१४७ प्रकृति का सत्व जानना, " " "

२८ संख्या—असंख्यात जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यात जानना।

३० स्पर्शन—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वलोक जानना। एक जीव की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा त्रसनाडी की अपेक्षा जानना और ८ राजु १६वें स्वर्ग का देव ३रे नरक तक जाने की अपेक्षा जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव का अपेक्षा एक समय से ३३ सागर तक ७वें नरक की अपेक्षा जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक कुअवधि ज्ञान प्राप्त न कर सके।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना। (विगत को० नं० २६ देखो)

३४ कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
			नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१		२	३	४	५	६	७	८
१	गुण स्थान ४ से १२ गुण०	६	६ ४ से १२ तक के गुण० (१) नरक गति में ४था गुण० (२) तिर्यंच गति में ४था ५वां गुण० भोगभूमि में ४ था गुण० (३) मनुष्य गति में ४ से १२ गुण० भोगभूमि में ४था गुण० (४) देवगति गति में ४था गुण०	सारे गुण अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के गुण० में से कोई १ गुण०	२ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में ४था गुण० तिर्यंच गति में भोग-भूमि में ४था गुण० (२) मनुष्य गति में ४था ६ठा गुण० भोगभूमि में ४था गुण० जानना	सारे गुण पर्याप्तवत् जानना	१ गुण० पर्याप्तवत् जानना
२	जीव समास संज्ञी पं० पर्याप्त अप०	२	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो		६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा ३ का भंग जानना को० नं० १७ देखो लब्धि रूप ६ का भंग भी होता है	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा ७ का भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो
५ संज्ञा	४	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ४—४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में केवल भोगभूमि की अपेक्षा ४ का भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-० ४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना (२) तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६-१८-१६ देखो को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१६ देखो को नं० १७ देखो
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना (२) तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६-१८-१६ देखो को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१६ देखो को० नं० १७ देखो
९ योग को० नं० २६ देखो	१५	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११)	१ भंग	१ योग	४ औ० काययोग १, वै० काययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ योग जानना	१ भंग	१ योग

१	२	३	४	५	६	७	८
		(१) नरक-देव गति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ९—९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ९-९-९-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १६-१९ देखो १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो	(१) नरक-देव गति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६- ९ देखो (२) तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा १-२ के भंग जानना को०नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १६-१९ देखो १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१-०-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो	२ पुरुष-नपुंसक वेद जानना (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में केवल भोग भूमि की अपेक्षा १ पुरुष वेद जानना को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबन्धी क० ४ घटाकर (२१)	२१	२१ (१) नरक गति में १९ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	२१ (१) नरक गति में १९ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
/		(२) तिर्यंच गति में २१-१७ २० के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा १६ का भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३ मनुष्य गति में २१-१७-१३-११-१३-७- ६-५-४-३-२-१-१-०-२० के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १६-११-१६ के भंग को नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४ देवगति में २०-१६-१६ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में १६-१६-१६ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
१२ ज्ञान मति-श्रुत ज्ञानों में से जिसका विचार करना हो वह एक ज्ञान जानना	१	१ चारों गतियों में हरेक में दोनों में से कोई एक ज्ञान जिसका विचार करना हो वह १ ज्ञान जानना	१	१	चारों गतियों में हरेक में पर्याप्तवत् जानना	१	१
१३ संयम को० नं० २६ देखो	७	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १९ देखो	१ संयम को० नं० १६- १९ देखो	३ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना ये (३) (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १९ देखो	१ संयम को० नं० १६- १९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा १ असंयम जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-२-२-२-२-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो	(३ मनुष्यगति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन को० नं० १६ देखो	३	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में ३ के भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा ३ का भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३–३ ३–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३–३–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३–३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ६–३–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा १ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६–३–१–३ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६–३–१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		( ) देवगति में १–३–१–१ के भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३–१–१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य ही जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ भव्य	१ भव्य	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य ही जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ भव्य	१ भव्य
१७ सम्यक्त्व उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम ये (३)	३	१ (१) नरक गति में ३-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२-२-२-२-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो	२ उपशम घटाकर (२) (१) नरक गति में १ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा २ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-२-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में एक संज्ञी जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ संज्ञी जानना (२) तिर्यंच गतियों में भोग भूमि की अपेक्षा १ संज्ञी जानना	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ (१) नरक-देव गतियों में हरेक में	१ को० नं० १६ और १९ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो	२ (१) नरक-देव गति में १-१ के भंग	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		१ आहारक जानना को० नं० १६ और १९ देखो तिर्यंच और मनुष्य गतियों में हरेक में १ १ के भंग–को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा १-१ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८
२० उपयोग ज्ञानोपयोग १, दर्शनोपयोग ३	४	(१) नरक गति में ४ का भंग–को० नं० १६ के ६ के भंग में से मति-श्रुत ज्ञानों में से जिसका विचार करो उसे १ छोड़कर शेष २ ज्ञान घटाकर ४ के भंग जानना	१ भंग ४ का भंग जानना	१ उपयोग ४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	(१) नरकगति में ४ का भंग–को० नं० १६ के ६ के भंगों में से पर्याप्तवत् शेष २ ज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ उपयोग पर्याप्तवत् जानना
		(२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग ऊपर के नरकगति के समान जानना	१ भंग ४-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ उपयोग ४-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	(२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा ४ का भंग–ऊपर के नरक गति के समान जानना	१ भंग ४ का भंग जानना	१ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना
		(३) मनुष्य गति में ४-४-५-४ के भंग–को० नं० १८ के ६-७-६-७-६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ ज्ञान घटाकर ४-५-४-५-४ के भंग जानना	सारे भंग ४-५-४-५-४ के सारे भंग जानना	१ उपयोग ४-५-४-५-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	(३) मनुष्य गति में ४-४-४ के भंग–को० नं० १८ के ६-६-६-६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ ज्ञान घटाकर ४-४-४ के भंग जानना	सारे भंग ४-४-४ के भंग जानना	१ उपयोग ४-४-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना
		(४) देवगति में ४ का भंग ऊपर के नरक गति के समान जानना	१ भंग ४ का भंग जानना	१ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	(४) देवगति में ४-४ के भंग–ऊपर के नरक गति के समान जानना	१ भंग ४-४ में से कोई १ भंग जानना	१ उपयोग ४-४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना

१ २	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान १४ सूक्ष्म क्रिया प्रति पाति, व्युपरत क्रिया नि० ये २ घटाकर (१४)	१४ (१) नरक-देव गति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६–१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६–१९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१९ देखो	१४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१९ देखो
	(२) तिर्यंच गति में १०-११-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा ६ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में १०-११-७-४-१-१-१० के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-७-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव ४८ अनन्तानुबन्धी कषाय ४, मिथ्यात्व ५, ये ९ घटाकर (४८) जानना	४४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (४४)	सारे भंग अपने अपने स्थान के भंगों में से कोई सारे भंग जानना	भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	३७ मनोयोग ४, वचन योग ४ औ० काययोग १, वै० काययोग १, आ० काययोग १ ये ११ घटाकर (३७)	सारे भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग पर्याप्तवत् जानना
	(१) नरक गति में ४० का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में ३२ का भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
	(२) तिर्यंच गति में ४२-३७-४१ के भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा [illegible] का भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में ४२-३७-२२-२०-२२-१६- १५-१४-१३-१२-११-१०- १०-९-४१ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३३-१४-३३ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		( ) देवगति में ४१-४०-४० के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देव गति में ३३-३२-३३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, मति-श्रुत ज्ञान में से जिसका विचार करो सो १ ज्ञान, दर्शन ३, लब्धि ५ वेदक स० १, संयमासंयम १, सराग- संयम १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये ३७ भाव जानना	३७	३७ (१) नरक गति में २६-२५ के भंग को० नं० १६ के २८-२७ के हरेक भंग में से मति-श्रुत ज्ञानों में से जिसका विचार करो सो १ ज्ञान छोड़कर शेष २ ज्ञान घटाकर २६- २५ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	३३ उपशम चरित्र १, क्षायिक चरित्र १, संयमासंयम १, स्त्रीलिंग १, ये ४ घटाकर ३३ भाव जानना	सारे भंग	१ भंग
					(१) नरक गति में २५ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ ज्ञान घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३०-२७-२७ के भंग को० नं० १७ के ३२-२९-२९ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ ज्ञान घटाकर ३०-२७-२७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा २३ का भंग को० नं० १७ के २५ के भंग में से पर्याप्त- वत् शेष २ ज्ञान घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३१-२८ के भंग—को० नं० १८ के ३३-३० के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ ज्ञान घटाकर ३१- २८ के भंग जानना २८ का भंग—को० नं० १८ के ३१ के भंग में से ऊपर के समान शेष ३ ज्ञान घटाकर २८ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २८-२५-२३ के भंग—को० नं० १८ के ३०-२७-२५ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ ज्ञान घटाकर २८-२५-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		२५ का भंग—को० नं० १८ के २७ के भंग में से ऊपर के समान शेष २ ज्ञान घटाकर २५ का भंग जानना २८-२६-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२०-२०-१८-१७ के भंग—को० नं० १८ के ३१-२६-२६-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२० के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष ३ ज्ञान घटाकर २८-२६-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२०-२०-१८-१७ के भंग जानना २७ का भंग—को० नं० १८ के २६ के भंग में से ऊपर के समान शेष २ ज्ञान घटाकर २७ का भंग जानना			(४) देवगति में २६-२४-२४ के भंग—को० नं० १६ के २८-२६-२६ के हरेक भंग में पर्याप्तवत् शेष २ ज्ञान घटाकर २६-२४-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(४) देवगति में २४-२७-२४-२३ के भंग—को० नं० १६ के २६-२६-२६-२५ हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ ज्ञान घटाकर २४-२७-२४-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो			

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से १९ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—७७–६७–६३–५९–५८–२२–१७–१–१ प्रकृतियों का बंध क्रम से ४ से १२ गुण स्थानों में जानना। को० नं० २६ देखो।

२६ **उदय प्रकृतियां**— १०४–८७–८१–७६–७२–६६–६०–५९–५७ प्र० का उदय क्रम से ४ से १२ गुण स्थानों में जानना। को० नं० २६ देखो।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८–१४७ प्र० क्रम से ४थे ५वे गुण० में, १४६–१३९ प्र० ६वे गुण० में, १४६–१३९ प्र० ७वे गुण में, १४२–१३९–१३८ प्र० ८वे गुण० में, १४२–१३९–१३८ प्र० ९वे गुण० में, १४२–१३९–१०२ प्र० १०वे गुण० में, १४२–१३९ प्र० ११वे गुण० में, १०१ प्र० का सत्ता १२वे गुण० में जानना। को० नं० २६ देखो।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु जानना। को० नं० २६ देखो।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ६६ सागर और ४ कोटिपूर्व तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक सम्यक्त्वी नहीं बने।

३३ **जाति (योनि)**—२६ लाख जानना। इसका विगत को० नं० २६ में देखो।

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना, इसका विगत को० नं० २६ में देखो।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ४ से १२ तक के गुण०	९	९ को० नं० ६० के समान जानना	सारे गुण स्थान को० नं० ६० देखो	१ गुण० को०नं० ६० देखो	३ नरक गति घटाकर शेष में को० नं० ६० देखो	सारे गुण० को० नं० ६० देखो	१ गुण० को०नं० ६० देखो
२ जीव समास संज्ञी पं०-पर्याप्त-अपर्याप्त	२	१ को० नं० ६० देखो	१ को०नं० ६० देखो	१ को०नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को०नं० ६० देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ को० नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो	३ को० नं० ६० देखो	१ भंग को० नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० को०नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो	७ को० नं० ६० देखो	१ भंग को० नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो
५ संज्ञा को०नं० १ देखो	४	४ को०नं० ६० देखो	१ भंग को० नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो	४ को०नं० ६० देखो	१ भंग को० नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो
६ गति को०नं० १ देखो	४	४ को०नं० ६० देखो	१ गति को० नं० ६० देखो	१ गति को०नं० ६० देखो	३ नरक गति घटाकर (३) सूचना— ४थे गुण० वर्ती अवधि ज्ञान मरकर नरक मे नहीं जाता।	१ गति तीनों में से कोई १ गति	१ गति तीनों में से कोई १ गति
७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रिय जाति	१	१ को०नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को०नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को०नं० ६० देखो
८ काय त्रसकाय	१	१ को० नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को०नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को० नं० ६० देखो	१ को०नं० ६० देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
९ योग	१५ कोo नंo १ देखो	११ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	१ योग कोoनंo ६० देखो	४ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोoनंo ६० देखो	१ योग कोoनंo ६० देखो
१० वेद	३ कोo नंo १ देखो	३ कोoनंo ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	१ वेद कोoनंo ६० देखो	२ कोo नं ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	१ वेद कोoनंo ६० देखो
११ कषाय	२१ कोo नंo ६० देखो	२१ कोo नंo ६० देखो	सारे भंग कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	२० स्त्री वेद घटाकर (२०) कोo नंo ६० देखो	सारे भंग कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोoनंo ६० देखो
१२ ज्ञान अवधि ज्ञान जानना	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ अवधि जानना	१	१	१ नरक गति घटाकर शेष तीनों गतियों में हरेक में १ अवधि ज्ञान जानना सूचना—पहले नरक की अपेक्षा अवधि ज्ञान होना चाहिये।	१	१
१३ संयम	७ कोo नंo २६ देखो	७ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	१ संयम कोoनंo ६० दे	३ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	१ संयम कोoनंo ६० देखो
१४ दर्शन	३ कोo नंo १६ देखो	३ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नं ६० देखो	१ दर्शन कोoनंo ६० देखो	३ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नं ६० देखो	१ दर्शन कोoनंo ६ देखो
१५ लेश्या	६ कोo नंo १ देखो	६ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	१ लेश्या कोoनंo ६० देखो	६ कोo नंo ६० देखो	१ भंग कोo नंo ६० देखो	१ लेश्या कोoनंo ६० देखो
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ कोo नंo ६० देखो	१	१	१ कोo नंo ६० देखो	१	१
१७ सम्यक्त्व	३ कोo नंo ६० देखो	३ कोo नंo ६० देखो	सारे भंग कोo नंo ६० देखो	१ सम्यक्त्व कोoनंo ६० देखो	२ उपशम स० घटाकर (२) कोo नंo ६० देखो	सारे भंग कोo नंo ६० देखो	१ सम्यक्त्व कोoनंo ६० देखो
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ कोo नंo ६० देखो	१	१	१ कोoनंo ६० देखो	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
१९ आहारक कों०नं० ६० देखो	२	१ को० नं० ६० देखो	१	१	२ कों०नं० ६० देखो	१ भंग १ भंग पर्याप्तवत् जानना	१ अवस्था १ उपयोग पर्याप्तवत् जानना
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३, दर्शनोपयोग ३,	४	४ (१) नरक गति में ४ का भंग को० नं० १६ के ६ के भंग में से मति-श्रुत ये २ ज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में ४–४ के भंग ऊपर के नरक गति के समान को० नं० १७ के ६ के भंग में से २ ज्ञान घटाकर ४–४ के भंग जानना (३) मनुष्य गति में ४–५–४–५–४ के भंग को० नं० १८ के ६–७–६–७–६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान २ ज्ञान घटाकर ४–५–४–५–४ के भंग जानना (४) देव गति में ४ का भंग ऊपर के नरक गति के समान जानना	१ भंग ४ का भंग जानना १ भंग ४-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना सारे भंग ४-५-४-५-४ के सारे भंग जानना १ भंग ४ का भंग जानना	१ उपयोग ४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना १ उपयोग ४-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना १ उपयोग ४-५-४-५-४ के सारे भंगों में से कोई १ उपयोग जानना १ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना	४ (१) नरक गति में ४ का भंग को० नं० १६ के ६ के भंग में से पर्याप्तवत् २ ज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा ४ का भंग ऊपर के नरक गति के समान जानना (३) मनुष्य गति में ४–४–४ के भंग को० नं० १८ के ६–६–६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् २ ज्ञान घटाकर ४–४–४ के भंग जानना (४) देवगति में ४–४ के भंग ऊपर के नरक गति के समान जानना	१ भंग ४ का भंग जानना सारे भंग ४-४-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग ४-४ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ उपयोग ४ के भंग में से कोई १ उपयोग जानना १ उपयोग ४-४-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना १ उपयोग ४-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान को० नं० ६० देखो	१४	१४ को० नं० ६० देखो	सारे भंग को० नं० ६० देखो	१ ध्यान को०नं० ६० देखो	१४ को०नं० ६० देखो	सारे भंग को० नं० ६० देखो	१ ध्यान को०नं० ६० देखो
२२ आस्रव को० नं० ६० देखो	४८	४४ को० नं० ६० देखो	सारे भंग को०नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो	३७ को०नं० ६० देखो	सारे भंग को० नं० ६० देखो	१ भंग को०नं० ६० देखो
२३ भाव को० नं० ६० देखो	३७	३७ (१) नरक गति में २६—२५ के भंग को० नं० १६ के २८—२७ के हरेक भंग में से [illegible] घटाकर २६—२५ के भंग जानना	सारे भंग १७ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १७ में से कोई १ भंग	३३ उपशम चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, संयमासंयम १, स्त्री लिंग १, ये ४ घटाकर (३३) (१) नरक गति में २५ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग में से पर्याप्तवत् २ ज्ञान घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग पर्याप्तवत् सारे भंग पर्याप्तवत्	१ भंग पर्याप्तवत् १ भंग पर्याप्तवत्
		(२) तिर्यंच गति में ३०—२७—२७ के भंग को० नं० १७ के ३२—२९—२९ के हरेक भंग में से ऊपर के समान मति-श्रुत ये २ ज्ञान घटाकर ३०—२७—२७ के भंग जानना	सारे भंग १७-१७ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग १७-१७ के हरेक में से कोई १ भंग	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा २३ का भंग को० नं० १७ के २५ के भंग में से पर्याप्तवत् २ ज्ञान घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग १७ का भंग पर्याप्तवत्	१ भंग १७ के भंग में से कोई १ भंग पर्याप्तवत्
		(३) मनुष्य गति में ३१—२८ के भंग को० नं० १८ के ३३—३० के हरेक भंग में से मति-श्रुत ये २ ज्ञान घटाकर ३१—२८ के भंग जानना	सारे भंग १७—१७—१७—१७—१७—१७—१६—१५—१५—१७ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग हरेक भंग में से कोई १ भंग	(३) मनुष्य गति में २८—२५—२३ के भंग को० नं० १८ के ३०—२७—२५ के हरेक भंग में से मति-श्रुत ये २ ज्ञान	सारे भंग १७-१७-१७ के भंग पर्याप्तवत्	१ भंग हरेक भंग में से कोई १ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		२८ का भंग को० नं० १८ के ३१ में भंग में से मति-श्रुत-मन:पर्यय ज्ञान ये ३ घटाकर २८ का भंग जानना २५ का भंग को० नं० १८ के २७ भंग में से मति-श्रुत ये २ ज्ञान घटाकर २५ का भंग जाना २८–२६–२६–२५–२४–२३–२२–२१–२०–२०–१८–१७ के भंग को०नं० १८ के ३१–२९–२९–२८–२७–२६–२५–२४–२३–२३–२१–२० के हरेक भंग में से मति-श्रुत-मन: पर्यय ज्ञान ये ३ ज्ञान घटाकर २८–२६–२६–२५–२४–२३–२२–२१–२०–२०–१८–१७ के भंग जानना २७ का भंग को०नं० १८ के २९ के भंग में से मति-श्रुत ये २ ज्ञान घटाकर २७ का भंग जानना			घटाकर २८–२५–२३ के भंग जानना (४) देवगति में २६–२४–२४ के भंग को० नं० १९ के २८–२६–२६ के हरे भंग में से पर्याप्तवत् २ ज्ञान घटाकर २६–२४–२४ के भंग जानना	सारे भंग १७-१५-१७ के भंग पर्याप्तवत्	१ भंग हरेक भंग में से कोई १ भंग
		(४) देवगति में २४–२७–२४–२३ के भंग को०नं० १९ के २६–२९–२६–२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान २ ज्ञान घटाकर २४–२७–२४–२३ के भंग जानना	सारे भंग १७–१७–१७–१७ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग हरेक भंग में से कोई १ भंग			

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से १९ देखो

२५ बंध प्रकृतियां—७४-६७-६३-५९-५८-२२-१७-१-१ को० नं० ४ से १२ देखो।

२६ उदय प्रकृतियां—१०४-८७-८१-७६-७२-६६-६०-५९-५७ को० नं० ४ से १२ देखो।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४८-१४७-१४६-१३९-१४६-१३९-१४१-१४०-१३६-१४१-१४०-१३९-१३८-१०२-१०१, को० नं० ४ से १२ देखो।

२८ संख्या—असंख्यात जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु, ६ राजु इसका खुलासा को० नं० २६ देखो।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ६६ सागर और ४ कोटि पूर्व तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक अवधि ज्ञान न हो सके।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना। (को० नं० २६ देखो)

३४ कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना। को० नं० २६ देखो

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	पर्याप्त — एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त — एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान ६ से १२ तक के गुण०	७	७ मनुष्य गति में ६ से १२ गुण० जानना	सारे गुण स्थान ६ से १२ गुण०	१ गुण स्थान ६ से १२ में से कोई १ गुण०	सूचना—यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीव समास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना	१	१	
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ मनुष्य गति में—६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग जानना	१ भंग ६ का भंग जानना	
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० मनुष्य गति में—१० का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १० का भंग	१ भंग १० का भंग	
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग ४-३-२-१-१-० के भंग	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग	
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१	मनुष्य गति में—१ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काय योग १ ये (९)	९	९ मनुष्य गति में ९-९ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग ९-९ के भंग जानना	१ योग ९-९ के भंगों में से कोई १ योग	
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ मनुष्य गति में ३-१-२-३-२-१-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग ३ १-३-१-२- -० के भंग	१ वेद सारे भंगों में से कोई १ वेद जानना	

१ / २	३	४	५	६-७-८
११ कषाय ११ संज्वलन कषाय ४, हास्यादिनोकषाय ६, पुरुष-वेद १, ये (११)	११ मनुष्य गति में ११-११-११-७-६-५-४-३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
१२ ज्ञान १	१ मनः पर्यय ज्ञान जानना	१	१	
१३ संयम ४ सामायिक १, छेदोप-स्थापना १, सूक्ष्मसांप-राय १, यथाख्यात १ ये(४)	४ मनुष्य गति में ३-२-३-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो	
१४ दर्शन ३ अचक्षुदर्शन, चक्षुदर्शन, अवधि दर्शन ये (३)	३ मनुष्य गति में—३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	
१५ लेश्या ३ शुभ लेश्या	३ मनुष्य गति में— ३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	
१६ भव्यत्व १	१ मनुष्य गति में— १ भव्य जानना को० नं० १८ देखो	१	१	
१७ सम्यक्त्व ३ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व १, क्षायिक १, क्षयोपशम स० १, ये ३ जानना	३ मनुष्य गति में— ३-२-३-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	
१८ संज्ञी १ संज्ञी	मनुष्य गति में—१ संज्ञी जानना	१	१	
१९ आहारक १ आहारक	मनुष्य गति में—१ आहारक जानना	१	१	
२० उपयोग ४ ज्ञानोपयोग १, दर्शनो-पयोग ३ ये (४)	४ मनुष्य गति में ४-४ के भंग—को० नं० १८ के ७-७ के भंगों में से मति-श्रुत अवधि ये ज्ञान घटाकर	सारे भंग ४-४ के भंग जानना	१ उपयोग ४-४ के भंगों में से कोई १ उपयोग जानना	

१	२	३	४	५	६-७-८
२१ ध्यान अनिष्ट संयोग, वेदना-जनित, निदानज आर्त-ध्यान ३, धर्मध्यान ४, पृथक्त्ववितर्क विचार १, एकत्ववितर्क अविचार १ ये ९ ध्यान जानना	९	४-१ के भंग ८ भंग ९ मनुष्य गति में ७-८-९-१ के भंग-को० नं० १८ देखो	सारे भंग ७-८-९-१ के भंग जानना	१ ध्यान ७-८-९-१ के भंगों में से कोई १ ध्यान जानना	१
२२ आस्रव ऊपर के योग ९, कषाय ११	२०	मनुष्य गति में २०-२०-७-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१-६ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक-चारित्र १, मनः पर्यय ज्ञान १, दर्शन ३, लब्धि ५, सरागसंयम १, क्षयोपशम सम्यक्त्व १, मनुष्य गति १, संज्वलन-कषाय ४, पुरुष लिंग १, शुभ लेश्या ३, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १ ये २८ जानना	२८	२८ मनुष्य गति में २८-२८-२६-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२०-२०-१८-१७ के भंग-को० नं० १८ के ३१-३१-२९-२९-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२३-२१-२० के प्रत्येक भंग में से मति-श्रुत-अवधि ज्ञान ये ३ ज्ञान घटाकर २८-२८-२६-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२०-२०-१८-१७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	

सूचना:—उपशम सम्यक्त्व द्वितियोपशम अवस्था ही होती है। प्रथमोपशम अवस्था में मनः पर्यय ज्ञान नहीं होता।

२४ अवगाहना—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ बंध प्रकृतियां — ६३-५६-५८-२२-१७-५-१ को० नं० ६ से १२ देखो।

२६ उदय प्रकृतियां—८१ के उदय प्रकृतियों में से मनः पर्यय ज्ञान के उदय में स्त्री-वेद नपुंसक वेद आहारकद्विक २, इन उदय नहीं होना इसलिये ये ४ घटाकर ७७ का उदय जानना।

७५-६४-६०-५६-५७ को० नं० ६ से १२ देखो।

२७ सत्व प्रकृतियां —१४६-१३६-१४०-१३६-१३८-१०२-१०१ को० नं० ६ से १२ देखो

२८ संख्या—नाना जीवों की अपेक्षा असंख्यात जानना। क्षपक श्रेणी वालों की संख्या ६ से १२ गुण स्थान की संख्या के समान जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवा भाग जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् पूर्वकोटि वर्ष तक क्षयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक मनः पर्यय ज्ञान न हो सके।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना

कोष्टक नं० ६२

क्र० स्थान, सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीव की अपेक्षा	पर्याप्त: एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त: एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	अपर्याप्त: १ जीव के नाना समय में	अपर्याप्त: एक जीव के एक समय में
१ · २	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान २ १३–१४ ये २ गुण०	२ १३ और १४ गुण०	सारे गुण स्थान	१ गुण०	१ १३वें गुण० जानना	१	१
२ जीव समास २ संज्ञी पं०-पर्याप्त-अपर्याप्त	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था	१ समास	१ समास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था	१	१
३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो	६ ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग	१ भंग ६ का भंग	३ ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ३ का भंग	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण १० आयु, कायबल, श्वासोच्छ्वास, वचन बल ये (४)	४ मनुष्य गति में ४–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग ४–१ के भंगों में से कोई १ भंग जानना	१ भंग ४-१ के भंगों में में कोई १ भंग जानना	२ आयु-काय बल ये (२) २ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग २ का भंग	१ भंग २ का भंग
५ संज्ञा ०	(०) अपगत संज्ञा	०	०	०	०	०
६ गति १	१ मनुष्य गति	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति १	१ पंचेन्द्रिय जाति	१	१	१		१
८ काय १	१ त्रसकाय	१	१	१	१	१
९ योग ७ सत्य वचन योग १, अनुभय वचनयोग १, सत्य मनोयोग १, अनुभय मनोयोग १, औ० मिश्रकाययोग १, औदारिक काययोग १, कार्माण काययोग १, ये ७ योग जानना	५ औ० मिश्रकाययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ घटाकर ( ) मनुष्य गति में ५-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग ५–३–० के भंग जानना	१ योग ५-३-० के भंगों में से कोई १ योग जानना	२ औ० मिश्र काययोग १ कार्माण काययोग १ ये २ योग जानना मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग २-१ के भंग जानना	१ योग २-१ के भंग में से कोई १ योग जानना

१	२	३	४	५	६	७	८
१० वेद	०	(०) अपगत वेद	०	०	०	०	०
११ कषाय	०	(०) अकषाय	०	०	०	०	०
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान जानना	१	१	१	१	१
१३ संयम	१	१ यथाख्यात जानना	१	१	१	१	१
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१	१	१	१	१
१५ लेश्या	१	१-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग १-१ भंग	१ लेश्या १ लेश्या	शुक्ल लेश्या जानना को० नं० १८ देखो	१	१
१६ भव्यत्व	१	१ भव्य जानना	१	१	१	१	१
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	१	१	१
१८ संज्ञी	०	(०) अनुभय अर्थात् न संज्ञी न असंज्ञी जानना	०	०	०	०	०
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग १-१ भंग जानना	१ अवस्था १-१ में से कोई १ अवस्था	१ मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग १-१ के भंग जानना	१ अवस्था १-१ में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग ज्ञानोपयोग १, दर्शनोपयोग १ ये २ उपयोग	२	२ २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग दोनों युगपत् जानना	१ उपयोग दोनों उपयोग युगपत् जानना	२ २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग दोनों उपयोग युगपत् जानना	१ उपयोग दोनों युगपत् जानना
२१ ध्यान सूक्ष्म क्रिया प्रति पाति व्युपरत क्रिया निवार्तिनी ये २ ध्यान जानना	२	२ १-१ के भंग को० नं० १८ देखो सूचना --पेज ५८ पर देखो	सारे भंग १-१ भंग जानना	१ ध्यान दोनों में से कोई १ ध्यान जानना	१ १ का भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग १ भंग	१ ध्यान १ ध्यान
२२ आस्रव ऊपर के ७ योग जानना	७	५ ५-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	२ २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
२३ भाव क्षायिक भाव ९, मनुष्य गति १, शुक्ल लेश्या १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १ ये १४ भाव जानना	१४	१४ मनुष्य गति में १४-१३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१४ मनुष्य गति में १४ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को नं० १८ देखो

सूचना—यहां मनोयोग नहीं होता है उपचार से कहा गया है।

२४ **अवगाहना**—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१३वें गुण० में १ साता वेदनीय का बन्ध जानना, १४वें गुण० में अबन्ध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—४२, १२, को० नं० १३ और १४ देखो।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—८५-८५-१३ " " "

२८ **संख्या**— (८९८५०२), ५९८, को० नं० १३ से १४ देखो।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग " " "

३० **स्पर्शन**— " " " " "

३१ **काल** सर्वलोक जानना।

३२ **अन्तर**—कोई अन्तर नहीं।

३३ **जाति** (योनि) १४ लाख योनि मनुष्य की जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

कोष्टक नं० ६४

क्र०	स्थान सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१	गुण स्थान ४ १ से ४ तक के गुण०	४ (१) नरक गति में १ से ४ (२) तिर्यंच गति में १ से ४ भोगभूमि में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से ४ भोगभूमि में १ से ४ (४) देवगति गति में १ से ४	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० स्थान जानना	१ गुण० सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	३ (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तिर्यंच गति में १-२ भोगभूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में १-२-४ भोगभूमि में १-२-४ (४) देवगति में १-२-४	सारे गुण स्थान पर्याप्तवत् जानना	१ गुण० पर्याप्तवत्
२	जीव समास १४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८- १९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास हरेक गति में १ संज्ञी पं० प जीव समास जानना १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास हरेक गति में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना १ समास को० नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास हरेक गति में पर्याप्तवत् जानना १ समास को नं० १७ देखो	१ समास हरेक गति में पर्याप्तवत् जानना १ समास को० नं० १७ देखो
३	पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६- १८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८- १९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १८-१९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग—को० नं० १६- १८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८- १९ देखो	१ भंग को० नं० १६- १८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ३-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८- १९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६- १८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८- १९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६- १८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८- १९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६- १८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८- १९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६- १८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-[illegible] के भंग को०नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो
९ योग	१३ आ० मिश्रकाययोग १, आहारक काययोग १, ये २ घटाकर (१३)	१० औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ घटाकर (१०) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ९ का भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ९-२-१-९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ योग को०नं० १७ देखो	३ औ० काययोग १, वै० काययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ योग जानना (१) नरक-तिर्यंच-मनुष्य देवगति गति में हरेक में १-२ के भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ योग को० नं० १६ से १९ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ १-३-१-२-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२१-२४- २० के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२३-२५- २४-१९ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २५-२१-२४-२० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २५-१९-२४-१९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २४-२०-२३-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २४-२४-१९-२३-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
१२ ज्ञान	६ को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (५) (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ३-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो
१३ संयम	१ असंयम	१ चारों गतियों में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	१ चारों गतियों में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१	१
१४ दर्शन	३ को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-६-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१ का भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		(४) देव गति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व को०नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	५ मिश्र १ घटाकर (५) (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१-२-१-१-१-३ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-१-३-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-१-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-१-१-२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो
१८ संज्ञी संज्ञी, असंज्ञी	२	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८-१९ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ नरक-देव गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ और १९ देखो तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १६ और १९ देखो १ हरेक में	१ को०नं० १६ और देखो १ हरेक में	२ नरक-देवगतियों में हरेक में १-१ के भंग जानना को० नं० १६ और १९ देखो तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १-१-१-१ के भंग को०नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १६ और १९ देखो हरेक में दोनों में से कोई १ अवस्था	१ अवस्था को०नं० १६ और १९ देखो हरेक भंग में से कोई १ अवस्था
२० उपयोग को०नं० १६ देखो	६	६ (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-५-६-६-३-६-६ के भंग को०नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-६-६-५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में ५-६-६ के भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो	८ कुअवधि ज्ञान घटाकर (८) (१) नरक गति में ४-६ के भंग को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान आर्त ध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञाविचय १, अपायविचय १ ये १० ध्यान जानना	१०	१० (१) चारों गतियों में हरेक में ८-९-१० के भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो	९ अपाय विचय धर्मध्यान घटाकर (९) जानना (१) नरक मनुष्य-देवगति में हरेक में ८-९ के भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६-१८-१९ देखो
					(२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो
२२ आस्रव आ० मिश्रकाय योग १ आहारक काय योग १ ये २ घटाकर (५५)	५५	५२ औ० मिश्रकाय योग १ वै० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १ ये ३ घटाकर (५२)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	४५ वचनयोग ४ मनोयोग ४, औ० काययोग १ वै० काययोग १ ये १० घटाकर (४५)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(१) नरक गति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	(१) नरकगति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४३-५१-४६-४२-५०-४५-४१ के भंग—को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३-४४-३२-३३-३४-३५-३८-३९-४३-३८-३३ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-५०-४५-४१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४८-३९-३३-४३-३८-३३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					३२ के भंग को० नं० १६ देखो		
२३ भाव उपशम-क्षायिक सम्यक्त्व, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ५, लब्धि ५, वेदक-सम्यक्त्व १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्या-दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ४१ जानना	४१	४१ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग- को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	४० कुअवधि ज्ञान घटाकर (४०) (१) नरक गति में २५-२७ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-२९-३०-३२-२७-२५-२६-२८ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२७-२२-२३-२५-२५-२४-२३-२५ के भंग-को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३१-२९-३०-३३-२७-२५-२६-२९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-२४-२२-२५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २५-२३-२४-२६-२७-२५-२६-२९-२४-२२-२३-२६-२५ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २६-२४-२६-२४-२८-२३-२१-२५-२६ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

२४ अवगाहना—कौ० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—१ से ४ गुण० में क्रम से ११७–१०१–७४–७७ प्र० का बंध जानना। को० नं० १ से ४ देखो।

२६ उदय प्रकृतियां— „ „ ११७–१११–१००–१०४ प्र० का उदय जानना। को० नं० १ से ४ देखो।

२७ सत्व प्रकृतियां— „ „ १४८–१४५–१४७–१४८ और १४१ प्र० सत्ता जानना। को० नं० १ से ४ देखो।

२८ संख्या—अनन्तानन्त जानना।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना।

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा सादि असंयमी अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जी। की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटिपूर्व तक संयमी बना है। असंयम प्रप्त न सके।

३३ जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना।

३४ कुल—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

कोष्टक नं० ६५

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१ ५वां गुण स्थान जानना	१ (१) तिर्यंच–मनुष्य गति में हरेक में संयमासंयम ५वां गुण० जानना	१	१	सूचना—यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होता है।
२ जीवसमास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ (१) तिर्यंच–मनुष्य गति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना	१	१	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग ६ का भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग ६ का भंग को० नं० १७–१८ देखो	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० (१) तिर्यंच–मनुष्य गति में हरेक में १० का भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग १० का भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग १० का भंग को० नं० १७–१८ देखो	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ (१) तिर्यंच–मनुष्य गति हरेक में ४ का भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग ४ का भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग ४ का भंग को० नं० १७–१८ देखो	
६ गति	२ तिर्यंच गति, मनुष्य गति	२ तिर्यंच गति, मनुष्य गति जानना	१ गति	१ गति	
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ (१) तिर्यंच–मनुष्य गति में हरेक में	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
		१ संज्ञी पंचेन्द्रिय जानना को० नं० १७-१८ देखो			
८ काय	१ त्रसकाय	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १७-१८ देखो	१	१	
९ योग वचनयोग ४, मनोयोग ४, औ० काययोग १, ये (९)	९	९ (१) तिर्यंच गति में ९ का भंग (२) मनुष्य गति में ९ का भंग	१ भंग ९ का भंग को० नं० १७ देखो ९ का भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो	
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक ३ का भंग को० नं० १७-१८ देखो	(१) तिर्यंच गति में १ भंग (२) मनुष्य गति में सारे भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ वेद १ वेद को० नं० १७-१८ देखो	
११ कषाय प्रत्याख्यान कषाय ४, संज्वलन कषाय ४, नोकषाय ९ ये (१७)	१७	१७ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १७ का भंग को० नं० १७-१८ देखो	सारे भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८ देखो	
१२ ज्ञान	३ मति-श्रुत अवधि	३ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १७-१८ देखो	(१) तिर्यंच गति में १ भंग (२) मनुष्य गति में सारे भंग को०नं० १७-१८ देखो	१ ज्ञान १ ज्ञान को० नं० १७-१८ देखो	
१३ संयम	१ संयमासंयम	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १ संयमासंयम जानना को०नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ संयम को० नं० १७-१८ देखो	
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन अवधि दर्शन ये (३)	३	३ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ दर्शन को० नं० १७-१८ देखो	

१	२	३	४	६	६-७-८
१५ लेश्या	३ शुभ लेश्या जानना	३ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १७-१ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ लेश्या को० नं० १७-१८ देखो	
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १ भव्य जानना को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	
१७ सम्यक्त्व	३ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम	३ (१) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	
१९ आहारक	१ आहारक	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	१ को० नं० १७-१८ देखो	
२० उपयोग	६ ज्ञानोपयोग ३ दर्शनोपयोग ३, ये (६)	६ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ उपयोग को० नं० १७-१८ देखो	

१ २	३	४	५	६-७-८
२१ ध्यान ११ आर्त ध्यान ४, रौद्र ध्यान ४, आज्ञा वि०, अपाय वि०, विपाक विचय ३, ये (११)	११ (१) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ११ का भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ ध्यान को० नं० १७–१८ देखो	
२२ आस्रव ३७ त्रसहिंसा घटाकर अविरत ११, (हिंसक स्पर्शादि इन्द्रिय विषय ५ + हिंस्य ६ ये ११) योग ९, कषाय १७ ये (३७) जानना	३७ (१) तिर्यंच मनुष्य गति में हरेक में ३७ का भंग को० नं० १७–१८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७–१८ देखो	१ भंग को० नं० १७–१८ देखो	
२३ भाव ३१ उपशम-क्षायिक स० २, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, वेदक सम्यक्त्व १, संयमासंयम १, तिर्यंच गति १, मनुष्य गति १, कषाय ४, लिंग ३, शुभ लेश्या ३, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व , भव्यत्व १ ये (३१)	३० (१) तिर्यंच गति में २९ का भंग सामान्य के ३१ में से क्षायिक स० १, मनुष्य गति १ ये २ घटाकर २९ का भंग जानना (२) मनुष्य गति में ३० का भंग सामान्य ३१ के भंग में से तिर्यंच गति १ घटाकर ३० का भंग जानना	सारे भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	

२४ अवगाहना—संख्यात घनांगुल से एक हजार योजन तक जानना।

२५ बंध प्रकृतियां—८७ को० नं० ३ देखो

२६ उदय प्रकृतियां—८७ "

२७ सत्त्व प्रकृतियां—१४७—१४० "

२८ संख्या—पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग ६ राजु जानना। को०नं० २६ देखो

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त और पृथक्त्व वर्ष कम कोटिपूर्व वर्ष तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक देश संयमी नहीं बन सके।

३३ जाति (योनि)—१८ लाख मनुष्य योनि जानना। (तिर्यंच ४ लाख, मनुष्य १४ लाख ये १८ लाख जानना)

३४ कुल—५७॥ लाख कोटिकुल जानना (तिर्यंच ४३॥ और मनुष्य १४ ये ५७॥ लाख कोटिकुल जानना)

कोष्टक नं० ६६

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ४ ६ से ९ तक के गुण०		४ मनुष्य गति में—६-७-८-९ ये ४ गुण० जानना	सारे गुण०	१ गुण०	१ ६वां गुण स्थान जानना	१	१
२ जीव समास २ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अप०		१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त को० नं० १८ देखो	१	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त को० नं० १८ देखो	१	१
३ पर्याप्ति ३ को० नं० १ देखो		६ ६ का भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	३ ३ का भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
४ प्राण १० को० नं० १ देखो		१० १० का भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	७ ७ का भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा ४ को० नं० १ देखो		४ मनुष्य गति में ४-३-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	४ ४ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
६ गति १		१ मनुष्य गति जानना	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति १		१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	१	१	१
८ काय १		१ त्रसकाय जानना	१	१	१	१	१
९ योग ११ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काय		१० आ० मिश्रकाय योग घटाकर (१०) (१) मनुष्य गति में	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८	१ आहारक मिश्रकाय योग (१) मनुष्य गति में	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
	योग १ आ० मिश्रकाय योग १, आ० का० योग १ ये ११ योग जानना	८-६ के भंग-को० नं० १८ देखो			१ का भंग—को० नं० १८ देखो		
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) मनुष्य गति में २-१-३-३-२-१-० के भंग को० नं० ८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	१ पुरुष-वेद (१) मनुष्य गति में १ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
११ कषाय	१३ संज्वलन कषाय ४, हास्यादिनोकषाय ६ ये १३ कषाय जानना	११ (१) मनुष्य गति में १३-११-१३-७-६-५-४-३-२-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	११ स्त्री-पुरुष वेद ये २ घटाकर (११) (१) मनुष्य गति में ११ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
१२ ज्ञान	४ केवल ज्ञान घटाकर (४)	४ (१) मनुष्य गति में ४-३-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	३ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (३) (१) मनुष्य गति में ३ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो
१३ संयम	१ सामायिक-छेदोपस्थापना संयम में से जिसका विचार करना हो वह १ संयम जानना	१ (१) मनुष्य गति में जिसका विचार करना हो वह १ संयम जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१४ दर्शन	३ को० नं० १६ देखो	३ (१) मनुष्य गति में ३-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१५	लेश्या ३ शुभ लेश्या जानना	३ ( ) मनुष्य गति में ३-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो
१६	भव्यत्व १ भव्य	१ १ भव्य—को० नं० १८ देखो	१	१	१ १ भव्य—को० नं० १८ देखो	१	१
१७	सम्यक्त्व ३ उपशम क्षायिक-क्षयोपशम स० ये (३)	३ (१) मनुष्य गति में ३-२-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	२ उपशम स० घटाकर (२) (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो
१८	संज्ञी १ संज्ञी	१ संज्ञी जानना	१	१	१ संज्ञी जानना	१	१
१९	आहारक २ आहारक अनाहारक	१ १ आहारक को० नं० १८ देखो	१	१	१ १ आहारक को० नं० १८ देखो सूचना—पेज ७४ पर देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो
२०	उपयोग ७ ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३ ये (७)	७ (१) मनुष्य गति में ७-४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	६ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (६) (१) मनुष्य गति में ६ का भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
२१	ध्यान ८ इष्टवियोग छोड़कर शेष आर्तध्यान धर्मध्यान ४, पृथक्त्व-वितर्क विचार शुक्ल ध्यान १, ये ८ ध्यान जानना	८ (१) मनुष्य गति में ७-४-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	७ पृथक्त्व वि० वी० घटाकर (७) ७ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२२ आस्रव	२४ योग ११, कषाय १३ ये २४ जानना	२४ (१) मनुष्य गति में २२-२०-२२ १६-१५-१४-१३-१२-११-१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१२ कषाय ४, हास्यादि नो कषाय ६, पुरुष-वेद १, आहारक मिश्रकाय योग १ ये १२ जानना (१) मनुष्य गति में १२ का भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
२३ भाव	३३ उपशम-क्षायिक स० २, „ „ चारित्र २ ज्ञान ४, दर्शन , लब्धि ५, वेदक स० १, सरागसंयम १, मनुष्य गति १, कषाय ४, लिंग ३, शुभ-लेश्या ३, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १ ये ३३ जानना	३३ (१) मनुष्य गति में ३१-७-३१-२६-२६-२८-२७-२६-२५-२४-२३ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	२७ स्त्री-वेद १, नपुंसक-वेद १ मनः पर्यय ज्ञान १ और उपशम सम्यक्त्व १ ये ४ पर्याप्त के ६वें गुण० के ३१ के भंग में से घटाकर (२७) जानना (१) मनुष्य गति में २७ का भंग—को० नं० १८ देखो सूचना—ये भंग आहारक मिश्रकाय योग की अपेक्षा जानना है।	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

सूचना—१९ नं० आहारक के ६३ स्थान में आहारक मिश्रकाय योग में अनाहारक अवस्था भी होती है।

२४ **अवगाहना**—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—६-७-८-९ के गुण० में क्रम से ६३-५९-५८-२२ प्र० का बंध जानना। को० नं० ६ से ९ देखो।

२६ **उदय प्रकृतियां**— „ „ ८१-७६-७२-६६ प्र० का बंध जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—६वे गुण० में १४६, ७वे गुण० में १४६ या १३९, ८वे गुण० में १४२-१३९-१३८, ९ वे गुण० में १४२-१३९-१३८ प्र० का सत्व जानना। को० नं० ६ से ९ देखो।

२८ **संख्या**—(८९२९९१०३) जानना। विशेष खुलासा को० नं० ६ से ९ देखो।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग जाननना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा ८ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटिपूर्व वर्ष तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक सामायिक-छेदोपस्थापना संयम न हो सके।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१		२	३	४	५	६-७-८
१	गुण स्थान	२ ६ और ७ ये २ गुण०	२ ६ प्रमत्त, ७ अप्रमत्त ये २ गुण स्थान	सारे गुण स्थान दोनों गुण०	१ गुण स्थान दो में से कोई १ गुण०	सूचना— यहां पर अवस्था नहीं होती है।
२	जीव समास	१	१ सज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना	१	१	
३	पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) मनुष्य गति ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
४	प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० (१) मनुष्य गति में १० का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
५	संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ (१) मनुष्य गति में ४–३ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
६	गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७	इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८	काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
९	योग	९ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १ ये (९)	९ (१) मनुष्य गति में ९–९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो	
१०	वेद	१	(१) मनुष्य गति में १ पुरुष वेद जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		को० नं० १८ के ३ के भंग में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर १ पुरुष वेद जानना			
११ कषाय संज्वलन कषाय ४ हास्यादि नोकषाय ६ पुरुषवेद १, ये (११)	११	११ (१) मनुष्य गति में ११ का भंग को० नं० १८ के १३ के भंग में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ घटाकर ११ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	
१२ ज्ञान मति-श्रुत-अवधि ज्ञान ये ३ जानना	३	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग को०नं० १८ के ४ के भंग में से मनः पर्यय ज्ञान घटाकर ३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	
१३ संयम	१	१ परिहार विशुद्धि संयम जानना	१	१	
१४ दर्शन अचक्षु-चक्षु-अवधि दर्शन	३	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	
१५ लेश्या शुभ लेश्या जानना	३	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	
१६ भव्यत्व	१	१ भव्य जानना	१	१	
१७ सम्यक्त्व क्षायिक, क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व जानना	२	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ के ३ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व घटाकर २ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	
१८ संज्ञी	१	१ संज्ञी जानना	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
१९ आहारक १		१ आहारक जानना	१	१	
२० उपयोग ६ ज्ञानोपयोग ३, दर्शनोपयोग ३ ये ६ जानना		६ ६ का भंग को० नं० १८ के ७ के भंग में से मनः पर्यय ज्ञान १ घटाकर ६ का भंग जानना	१	१	
२१ ध्यान ७ इष्ट वियोग घटाकर आर्त ध्यान ३, धर्म ध्यान ४ ये ७ जानना		७ (१) मनुष्य गति में ७ ४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	
२२ आस्रव २० योग ९, कषाय ११ ये २० जानना		२० (१) मनुष्य गति में २०-२० के भंग को० नं० १८ के २२-२२ के भंगों में से स्त्री-नपुंसक वेद ये २ हरेक में घटाकर २०-२० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
२३ भाव २७ क्षायिक सम्यक्त्व १, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, वेदक स० १, सराग संयम १, मनुष्य गति १, कषाय ४, पुरुषवेद १, शुभ लेश्या ३, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये २७ भाव जानना		२७ सामान्य के समान जानना २७ का भंग को नं० १८ के ३१ के भंग में से उपशम सम्यक्त्व १, स्त्री-नपुंसक वेद २, मनः पर्यय ज्ञान १ ये ४ घटाकर २७ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	

२४ **अवगाहना**—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां** – ६३ को० नं० ६ देखो

२६ **उदय प्रकृतियां**—७७ को० नं० ६ की ८१ प्रकृतियों में से नपुंसक वेद १, स्त्री वेद १, उपशम सम्यक्त्व १, मनःपर्यय ज्ञान १, ये ४ प्र०
घटाकर ७७ प्र० का उदय जानना
५ को० नं० ७ की ५९ प्र० में से ऊपर की ४ प्र० घटाकर ५५ प्र० का उदय जानना।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४६–१३६ को० नं० ६ और ७ के समान जानना।

२८ **संख्या** – २९९६९८२०६, २९९६९९१०३ को० नं० ६ और ७ देखो।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन** –लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३१ **काल** नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ३८ वर्ष कम एक कोटिपूर्व वर्ष तक जानना।
सूचना –८ वर्ष के उम्र में संयम धारण करने की योग्यता होती है परन्तु गृहस्थावस्था में ही ३० वर्ष तक संयमासंयम अवस्था निर्दोष व प्रभावशाली रहने पर जो मुनिव्रत धारण करता है उसके ही अन्तर्मुहूर्त के बाद परिहारविशुद्धि चारित्र उत्पन्न हो सकता है जो एक कोटिपूर्व की शेष आयु तक परिहार विशुद्धि संयम रह सकता है।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक परिहारविशुद्धि संयम प्राप्त न हो सके।

३३ जाति (योनि)— १४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान १ सूक्ष्म सांपराय जानना	१	१	१	१	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२ जीव समास संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १८ देखो	१	१	
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ (१) मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) मनुष्य गति में १० का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	
५ संज्ञा परिग्रह संज्ञा जानना	१	१ १ परिग्रह संज्ञा जानना को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	
६ गति	१	१ मनुष्य गति जानना	१	१	
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	
८ काय	१	१ त्रसकाय जानना	१	१	
९ योग को०नं० ६७ देखो	९	९ (१) मनुष्य गति में ९ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो	
१० वेद	०	(०) अपगत वेद	०	०	
११ कषाय सूक्ष्म लोभ जानना	१	(१) मनुष्य गति में १ सूक्ष्म लोभ जानना को० नं० १८ देखो	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
१२ ज्ञान ४ केवलज्ञान घटाकर (४)	४ (१) मनुष्य गति में ४ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	
१३ संयम १	१ सूक्ष्म सांपराय संयम जानना	१	१	
१४ दर्शन ३ को०नं० ६७ देखो	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	
१५ लेश्या १ शुक्ल लेश्या	१ (१) मनुष्य गति में १ शुक्ल लेश्या जानना को०नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	
१६ भव्यत्व १	१ भव्य जानना	१	१	
१७ सम्यक्त्व २ औपशमिक, क्षायिक स०	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	
१८ संज्ञी १	१ संज्ञी जानना	१	१	
१९ आहारक १	१ आहारक जानना	१	१	
२० उपयोग ७ ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३ ये ७ जानना	७ (१) मनुष्य गति में ७ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	
२१ ध्यान १ पृथक्त्व वि० विचार	१ (१) मनुष्य गति में १ पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान जानना को० नं० १८ देखो	१	१	
२२ आस्रव १० योग ९ सूक्ष्म लोभ १ ये १० जानना	१० (१) मनुष्य गति में १० का भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
२३ भाव २३ उपशम-क्षायिक स० २, उपशम-क्षायिक चारित्र २, ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५, मनुष्य गति १ सूक्ष्म लोभ १, शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १	२३ (१) मनुष्य गति में २३ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	

२४ **अवगाहना**—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना ।

२५ **बंध प्रकृतियां**— १७ को० नं० १० देखो

२६ **उदय प्रकृतियां**—६० " "

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४२–१३६–१३८–१०२ को० नं० १० देखो

२८ **संख्या**—२९९ और ५९८ को० नं० १० देखो

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना । एक जीव की अपेक्षा क्षपक श्रेणी वाले अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त जानना और उपशम श्रेणी वाले एक समय से अन्तर्मुहूर्त तक जानना ।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा क्षपक श्रेणी में एक समय से ६ महीने तक जानना और नाना जीवों की अपेक्षा उपशम श्रेणी में एक समय से वर्ष पृथक्त्व जानना और एक जीव की अपेक्षा उपशम श्रेणी में अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक सूक्ष्म सांपराय संयम धारण न कर सके ।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख मनुष्य योनि जानना ।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य गति के जानना ।

क्र० स्थान सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
	नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१ २	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ४ ११ से १४ वे ४ गुण०	४ ११ से १४ तक के गुण०	सारे गुण स्थान	१ गुण०	१ १ वें गुण० जानना	१	१
२ जीवसमास १ संज्ञी पं० प० अपर्याप्त	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १८ देखो	१	१	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १८ देखो	१	१
३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो	६ (१) मनुष्य गति में ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
४ प्राण १० को० नं० १ देखो	१० (१) मनुष्य गति में १०-४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा ०	(०) अपगत संज्ञा	०	०	०	०	०
६ गति १	१ मनुष्य गति जानना	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति १	१ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१	१	१	१	१
८ काय १	१ त्रसकाय जानना	१	१	१	१	१
९ योग ११ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० मिश्र काय-योग १, औ० काय-	९ औ० मिश्र काययोग १, कार्माण काययोग १ ये २ घटाकर (९)	सारे भंग	१ योग	२ औ० मिश्रकाययोग १ कार्माण काययोग १ ये (२)	सारे भंग	१ योग

१	२	३	४	५	६	७	८
योग १, कार्माण काय योग १, ये ११ योग जानना		(१) मनुष्य गति में ६-५-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	(१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो
१० वेद	०	(०) अपगत वेद	०	०	०	०	०
११ कषाय	०	(०) कषाय	०	०	०	०	०
१२ ज्ञान मति-श्रुत-अवधि मनः पर्यय-केवल ज्ञान	५	५ (१) मनुष्य गति में ४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल ज्ञान जानना को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो
१३ संयम	१	१ यथाख्यात संयम जानना	१	१	१	१	१
१४ दर्शन अचक्षु-चक्षु दर्शन-अवधि-केवल दर्शन ये ४ जानना	४	४ (१) मनुष्य गति में ३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल दर्शन को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो
१५ लेश्या	१	१ शुक्ल लेश्या जानना	१	१	१	१	१
१६ भव्यत्व	१	१ भव्य जानना	१	१	१	१	१
१७ सम्यक्त्व उपशम-क्षायिक स०	२	२ (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	१ क्षायिक सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	१	१
१८ संज्ञी संज्ञी	१	१ (१) मनुष्य गति में १-० के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	० को० नं० १८ देखो	०	०
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	२ (१) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ५, दर्शनोपयोग ४ ये (९)	९	९ (१) मनुष्य गति में ७-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
२१ ध्यान शुक्ल ध्यान जानना (४)	४	४ (१) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव ऊपर के योग (११)	११	९ औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये २ घटाकर (९) (१) मनुष्य गति में ९-[illegible]-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक भाव ९, ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५, मनुष्य गति १, शुक्ल लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये २६ जानना	२६	२६ (१) मनुष्य गति में २१-२०-१४-१३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१४ (१) मनुष्य गति में १४ का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

२४ अवगाहना—३।। हाथ से ५२५ धनुष तक जानना। को० नं० ११-१२-१३ देखो, १४वें गुण० में अबन्ध जानना।

२५ बंध प्रकृतियां—११-१२-१३वें गुण० में १ सातावेदनीय का बन्ध जानना। को० नं० ११ से १४ देखो।

२६ उदय प्रकृतियां—११-१२-१३वें गुण० में क्रम से ५६-५७-४२-१२ प्र० का उदय जानना। (८५ और १३) प्र० का सत्व जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—११-१२-१३-१४वें गुण० में क्रम से १४२-१३६-१०१-८५

को० नं० ११ से १४ देखो

२८ संख्या—को० नं० ११ से १४ के समान जानना। इसका विशेष खुलासा को० नं० १३ में देखो।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना। असंख्यातवां भाग, सर्वलोक,

३० स्पर्शन—ऊपर के क्षेत्रवत् जानना। एक जीव की अपेक्षा उपशम श्रेणी वाला एक समय से अन्तर्मुहूर्त काल तक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। और क्षपक श्रेणी वालों की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् एक कोटिपूर्व वर्ष तक जानना। उपशम श्रेणी में अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, एक एक जीव की अपेक्षा तक यथाख्यात संयम धारण न कर सके।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य को जानना।

 कोष्टक नं० ७० असंयम-संयमासंयम संयम-रहित (सिद्ध गति) में

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	०	अतीत गुण स्थान जानना	०	०	यहां अपर्याप्त अवस्था नहीं होती ।
२ जीव समास	०	,, जीव समास ,,	०	०	
३ पर्याप्ति	०	,, पर्याप्ति ,,	०	०	
४ प्राण	०	,, प्राण ,,	०	०	
५ संज्ञा	०	,, संज्ञा ,,	०	०	
६ गति	०	गति रहित (सिद्ध गति) जानना	०	०	
७ इन्द्रिय जाति	०	इन्द्रिय रहित ,,	०	०	
८ काय	०	अकाय ,,	०	०	
९ योग	०	अयोग ,,	०	०	
१० वेद	०	अपगत वेद ,,	०	०	
११ कषाय	०	अकषाय ,,	०	०	
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान ,,	१	१	
१३ संयम	०	असंयम-संयमासंयम-संयम से रहित जानना	०	०	
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१	१	
१५ लेश्या	०	अलेश्या जानना	०	०	
१६ भव्यत्व	०	अनुभय (न भव्य न अभव्य) जानना	०	०	
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	
१८ संज्ञी	०	अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी) जानना	०	०	
१९ आहारक	०	अनुभय (न आहारक, न अनाहारक) जानना	०	०	
२० उपयोग	२	केवल ज्ञान-केवल दर्शनोपयोग दोनों युगपत् जानना	२	२	
२१ ध्यान	०	अतीत ध्यान जानना	०	०	
२२ आस्रव	०	अनास्रव जानना	०	०	
२३ भाव	५	क्षायिक ज्ञान-दर्शन वीर्य-सम्यक्त्व ये ४, और जीवत्व १ ये ५ जानना	५	५	

सूचना: —कोई आचार्य क्षायिक भाव ९ और जीवत्व १ ये १० भाव मानते हैं।

२४ **अवगाहना** — ३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां** — ०

२६ **उदय प्रकृतियां** — ०

२७ **सत्व** — ०

२८ **संख्या** — अनन्त जानना।

२९ **क्षेत्र** — ४५ लाख योजन सिद्ध शिला जानना।

३० **स्पर्शन** — सिद्ध भगवान् स्थिर रहते हैं।

३१ **काल** — सर्वलोक जानना।

३२ **अन्तर** — ०

३३ **जाति (योनि)** — ०

३४ **कुल** — ०

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान १ से १२ तक के गुण०	१२	१२ (१) नरक गति में १ से ४ गुण० (२) तिर्यंच गति में १ से ५ गुण० भोग भूमि में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से १२ भोग भूमि में १ से ४ (४) देव गति में १ से ४	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	४ (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तिर्यंच गति में १-२ गुण० भोगभूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में १-२-४-६ भोग भूमि में १-२-४ (४) देवगति में १-२-४	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीवसमास को० नं० १ देखो	१४	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को०नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति कों०नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देव गति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो अपने अपने स्थान की लब्धि रूप ६-५-४ पर्याप्ति भी होती है।	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण को०नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-तिर्यंच-देव गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	४ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में ४ का भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४- के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	५	७	८
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) नरक–मनुष्य–देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६–१८–१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को०नं० १७ देखो	५ (१) नरक–मनुष्य–देव गति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को०नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को०नं० १७ देखो
८ काय को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक–मनुष्य–देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१-१- के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६–१८–१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८ १९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	६ (१) नरक–मनुष्य–देव गति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो
९ योग को० नं० २६ देखो	१५	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११) (१) नरक–देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६–१९ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६–१९ देखो	१ योग १ योग को०नं० १६–१९ देखो	४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ योग जानना (१) नरक–देवगति में हरेक में १-२ के भंग को०नं० १६–१९ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ योग १ योग को०नं० १६-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ९-७-१-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ९-९-६-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१-०- २ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-१-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२१-१७- २४-२० के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५ २५-२३-२५- २४-१९ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१३-११-१३-७-३-५-६-३-२-१-१-०-२४-२० के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२०-२२-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	(३) मनुष्य गति में २५-१९-१७-२२-१९ के भंग— को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२४-१९-२२-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो
१२ ज्ञान केवल ज्ञान १ घटाकर शेष (७) जानना	७	७ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो	५ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, ये २ घटाकर (५) (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो
१३ संयम को० नं० २६ देखो	७	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग	१ को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो १ संयम को० नं० १७ देखो	४ संयमासंयम, परिहार वि०, सूक्ष्मसांपराय, ये ३ घटाकर (४) जानना (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना	१ को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो

१	२	३	४	४	५	७	८
		को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१-१ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो	को० नं० १६-१६ देखो (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो १ संयम को०नं० १८ देखो
१४ दर्शन	१	१ चारों गतियों में १ अचक्षु दर्शन जानना	१	१	१	१	१
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१- के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो १ लेश्या को०नं० १७ देखो १ लेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या को०नं० १९ देखो	३ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो १ लेश्या को०नं० १७ देखो १ लेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व	६ को०नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में १–१–१–२–२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १–२ के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १–१–१–३–१–१–१–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १–१–१–१–२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १–१–१–३–२–२–३–२– १–१–१–१–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १– –२–२·१–१–२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १–१–१–२–२–२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में –१–३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १६–१८–१९ देखो	१ भंग को० नं० १६–१८– १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८ १९ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६–१८–१९ देखो	१ भंग को०नं० १६–१८– १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१८- १९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १–१–१–१ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १–१–१–१–१–१ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ (१) नरक–देवगतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६–१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	२ (१) नरक–देवगति में हरेक में १–१ के भंग को० नं० १६–१९ देखो	१ भंग को० नं० १६–१९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१९- देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १-१ के भंग-को० नं० १७-१८ देखो	सारे भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ अवस्था को० नं० १७-१८ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो
२० उपयोग	८ ज्ञानोपयोग ७, दर्शनोपयोग १ ये (८)	८ (१) नरक गति में ४ का भंग को० नं० १६ के ५ के भंग में से जिसका विचार करो उसे १ दर्शन छोड़कर शेष दर्शन १ घटाकर ४ का भंग जानना	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो	६ अवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १ ये २ घटाकर (६) (१) नरकगति में ३ का भंग—को० नं० १६ के ४ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर ३ का भंग जानना	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो
		४ का भंग—को० नं० १६ के ६ के भंगों में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	"	"	४ का भंग—को० नं० १६ के ६ के भंग में से पर्याप्तवत् २ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	"	"
		४ का भंग—को० नं० १६ के ६ के भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	"	"			
		(२) तिर्यंच गति में ३ का भंग—को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३ का भंग—को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो
		३ का भंग—को० नं० १७ के ४ के भंग में से ऊपर	"	"	३-३ के भंग—को० नं० १७ के ४-४ के भंगों में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर ३-३ के भंग जानना	"	"

१	२	३	४	५	६	७	८
		समान शेष १ दर्शन घटा-३ का भंग जानना	"	"	३ का भंग—को० नं० १७ के समान जानना	"	"
		४ का भंग—को० नं० १७ के ५ के भंग में से ऊपर के समान शेष दर्शन १ घटा-४ का भंग जानना			२-२-३ के भंग—को० नं० १७ के ४-४-४ के भंगों में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर ३-३-३ के भंग जानना	"	"
		४-४ के भंग—को० नं० १७ के ६-६ के भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग जानना	"	"	४ का भंग—को० नं० १७ के ६ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	"	"
		४ का भंग—को० नं० १७ के ५ के भंग में से ऊपर के समान शेष एक दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	"	"	(३) मनुष्य गति में ३ का भंग—को० नं० १८ के ४ के भंगों में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर ३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
		४-४ के भंग—को० नं० १७ के ६-६ के भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग जानना	"	"	४-४ का भंग—को० नं० १८ के ६-६ के भंगों में से पर्याप्तवत् शेष २ घटाकर ४-४ के भंग जानना	"	"
		(३) मनुष्य गति में ४ का भंग—को० नं० १८ के ५ के भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	३ का भंग—को० नं० १८ के ४ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर ३ का भंग जानना	"	"
		४-४-५-५ के भंग—को० नं० १८ के ६-६-७-७ के हरेक	"	"	४ का भंग—को० नं० १८	"	"

१	२	३	४	५	६	७	८
		भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४-४-५-५ के भंग जानना			के ६ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना		
		४ का भंग—को० नं० १८ के भोगभूमि के ५ के भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	"	"	(४) देवगति में ३-३ के भंग—को० नं० १९ के ४-४ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर ३-३ के भंग जानना	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १९ देखो
		४-४ के भंग—को० नं० १८ के भोगभूमि के ६-६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग जानना	"	"	४-४ के भंग—को० नं० १९ के ६-६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग जानना	"	"
		(४) देवगति में ४-५ के भंग—को० नं० १९ के ५-६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर ४-५ के भंग जानना	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १९ देखो			
		४ का भंग—को० नं० १९ के ६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर ४ का भंग जानना	"	"			
२१ ध्यान सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती १, व्युपरतक्रिया निवर्तिनी १	१४	१४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ८-९-१० के भंग—को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६-१९ देखो	१२ आर्तध्यान ४ रौद्रध्यान ४, धर्मध्यान ४ ये (१२)	सारे भंग	१ ध्यान

१	२	३	४	५	६	७	८
ये २ चुक्ने स्थान घटाकर १८ जानना		(२) तिर्यंच गति में ८-९-१०-११-८-९-१० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-८-४-१-१-८-९-१० के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो	(१) नरक-देवगति में हरेक में ८-९ के भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-९-७-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	को०नं० १६-१९ देखो १ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १७ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अविरत १२, योग १५ कषाय २५ ये ५७ जानना	५७	५३ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (५३) (१) नरक गति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४३-५१-४६-४२-३७-५०-४५-४१- के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-३७-२२-२०-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१०-९-५०-४५-४० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	४६ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आहारक काययोग १, ये ११ घटाकर (४६) (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३-४४-३२-३३-३४-३५-३८-३९-४३-३८-३३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-३९-३३-१२-४३-३८-३३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, कुज्ञान ३, ज्ञान ४, अचक्षुदर्शन १, लब्धि ५, वेदक स० १, सराग-संयम १, संयमासंयम १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, मिथ्यादर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ४४ जानना	४४	४४ (१) नरक गति में २५-२३ के भंग—को० नं० १६ के २६-२४ के हरेक भंग में से जिसका विचार करो सो १ दर्शन छोड़कर शेष १ दर्शन घटाकर २५-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	३६ उपशम चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, कुअवधि ज्ञान १ मनः पर्यय ज्ञान १, संयमासंयम १, ये ५ घटाकर (३६) (१) नरक गति में २४ का भंग—को० नं० १६ के २५ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर २४ का भंग जानना	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो
		२३-२६-२५ के भंग—को० नं० १६ के २५-२८-२७ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर २३-२६-२५ के भंग जानना	"	"	२५ का भंग—को० नं० १६ के २७ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर २५ का भंग जानना	"	"
		(२) तिर्यंच गति में २४ का भंग—को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४ का भंग—को० नं० १७ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		२४-२६-३०-२८ के भंग—को० नं० १७ के २५-२७-३१-२९ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर २४-२६-३०-२८ के भंग जानना	"	"	२४-२६-२६ के भंग—को० नं० १७ के २५-२७-२७ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष	"	"
		२८-३०-२७ के भंग को० नं० १७ के ३०-३२-२९	"	"			

१	२	३	४	५	६	७	८
		के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर २८-३०-२७ के भंग जानना			१ दर्शन घटाकर २४-२६-२६ के भंग जानना २५ का भंग को० नं० १७ के समान जानना	"	"
		२६-२ के भंग को० नं० १७ के २७-२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर २६-२४ के भंग जानना	"	"	२२-२६-२४ के भंग को० नं० १७ के २३-२५-२५ के हरेक भंग में पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर २२-२ -२४ के भंग जानना	"	"
		२४-२७ में भंग को० नं० १७ के २६-२६ के हरेक में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर २४-२७ के भंग जानना	"	"	२३-२१ के भंग को० नं० १७ के २४-२२ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर २३-२१ के भंग जानना २३ का भंग को० नं० १७ के २५ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर २३ का भंग जानना	"	"
		(३) मनुष्य गति में ३०-२८ के भंग को० नं० १८ के ३१-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर ३०-२८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २६-२७ के भंग को० नं० १८ के ३०-२८ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर २६-२७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		२८-३१-२८-२६-२५-२६-२७-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२१-१६-१८ के भंग को० नं० १८ के ३०-३३-३०-३१-२७-३१-२६-२६-२८-२७-२६-२५-	"	"	२८-२५ के भंग को० नं० १८ के ३०-	"	"

१	२	३	४	५	६	७	८
		२४-२३-२२-२१-२० के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर २८-२१-२८-२६-२५-२६-२७-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२१-१६-१८ के भंग जानना			२७ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत शेष २ दर्शन घटाकर २८-२५ के भंग जानना	"	"
		२६-२४ के भंग को० नं० १८ भोग भूमि के २७-२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर २६-२४ के भंग जानना	"	"	२३-२१ के भंग को० नं० १८ के २४-२२ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत शेष १ दर्शन घटाकर २३-२१ के भंग जानना	"	"
		२४-२७ के भंग को० नं० १८ के २६-२६ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर २४-२७ के भंग जानना	"	"	२३ का भंग को० नं० १८ के २५ के भंग में से पर्याप्तवत शेष २ दर्शन घटाकर २३ का भंग जानना		
		(४) देवगति में २४-२२ के भंग को० नं० १६ के २५-२३ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर २४-२२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में २५-२३-२५-२३ के भंग को०नं० १६ के २६-२४-२६-२४ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर २५-२३-२५-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		२२-२४ के भंग को० नं० १६ के २४-२६ के हरेक भंग में से ऊपर	"	"	२६ के भंग को० नं० १६ के २८ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर २६ का भंग जानना	"	"
					२२-२० के भंग को० नं० १६ के २३-	"	"

१	२	३	४	५	६	७	८
		के समान शेष २ दर्शन घटाकर २२-२४ के भंग जानना			२१ के भंग में से पर्याप्तवत् शेष १ दर्शन घटाकर २२-२० के भंग जानना		
		२६-२४ के भंग को०नं० १९ के २७-२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटा-कर २६-२४ के भंग जानना	"	"	२४-२४ के भंग को० नं० १९ के २६-२ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ दर्शन घटाकर २४-२४ के भंग जानना	"	"
		२४-२७ के भंग को० नं० १९ के २६-२९ हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटा-कर २४-२७ के भंग जानना	"	"			
		२३-२१ के भंग को० नं० १९ के २४-२२ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष १ दर्शन घटाकर २३-२१ के भंग जानना	"	"			
		२१-२४-२३ के भंग को० नं० १९ के २३-२६-२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ दर्शन घटाकर २१-२४-२३ के भंग जानना	"	"			

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—को० नं० १ से १७ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**— " " "

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**— " " "

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा सिद्ध होने वाले जीवों की अपेक्षा अनादिसांत जानना और नित्य निगोद जीवों की अपेक्षा अनादि अनन्त जानना।

३२ **अन्तर**—कोई अन्तर नहीं।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान १२ १ से १२ तक जानना		१२ को० नं० ७१ देखो परन्तु यहां अचक्षु दर्शन के जगह चक्षुदर्शन जानना	सारे गुण स्थान को० नं० ७१ देखो	१ गुण० को० नं० ७१ देखो	४ को० नं० ७१ देखो	सारे गुण स्थान को० नं० ७१ देखो	१ गुण० को० नं० ७१ देखो
२ जीव समास ६ चक्षुरिन्द्रिय प० अप० असंज्ञी पं० प० अप० संज्ञी प० प० अपर्याप्त ये ६ जानना		३ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ जीव समास—को० नं० १७ के ७ के भंग में से एकेन्द्रिय सूक्ष्म-बादर प० जीव समास २, द्वीन्द्रिय १ त्रीन्द्रिय १ ये ४ घटाकर शेष ३ जीव-समास जानना १-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो "	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो "	३ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ जीव-समास अपर्याप्त अवस्था पर्याप्तवत् जानना १ का भंग—भोगभूमि अपेक्षा को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो "	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो "
३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो		६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		६ का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	६ का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग—को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-४ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इंद्रिय जाति चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जाति ये (२)	२	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में २ का भंग–को० नं० १७ के ५ के भंग में से एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जाति ये ३ घटाकर शेष २ जाति जानना १-१ के भंग–को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो ,,	१ जाति को० नं० १७ देखो ,,	(२) तिर्यंच गति में २ का भंग–को० नं० १७ के ५ के भंग में से एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जाति ये ३ घटाकर शेष २ जाति जानना १ का भंग–भोगभूमि की अपेक्षा जानना को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो ,,	१ जाति को० नं० १७ देखो ,,
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना	१	१
९ योग	१५ को० नं० २६ देखो	११ औ० मिश्रकाय योग १, वैं० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ४ घटाकर (११) (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में ९-२-९ के भंग–को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० ७१ देखो १ योग को० नं० १७ देखो	४ औ० मिश्रकाय योग १, वैं० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ४ योग जानना (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान जानना (२) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० ७१ देखो १ योग को० नं० १७ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ को० नं० ७१ के समान जानना परन्तु यहां अचक्षु-दर्शन के जगह चक्षुदर्शन जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ वेद को० नं० ७१ देखो	३ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ वेद को० नं० ७१ देखो

१	२	३	४	५	५	७	८
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को०नं० ७१ देखो	२५ को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को०नं० ७१ देखो	१ भंग को०नं० ७१ देखो
१२ ज्ञान	७ केवल ज्ञान घटाकर (७)	७ को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ ज्ञान को०नं० ७१ देखो	५ कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (५) को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ ज्ञान को०नं० ७१ देखो
१३ संयम	७ को० नं० २६ देखो	७ को० नं० ७१ के समान जानना	१ को० नं० ७१ देखो	१ को०नं० ७१ देखो	४ को० नं० ७१ के समान जानना	१ को० नं० ७१ देखो	१ को०नं० ७१ देखो
१४ दर्शन	१ चक्षु दर्शन	१ चारों गतियों में हरेक में १ चक्षु दर्शन जानना	१ चक्षु दर्शन	१ चक्षु दर्शन	१ चारों गतियों में हरेक में १ चक्षु दर्शन जानना	१ चक्षु दर्शन	१ चक्षु दर्शन
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ लेश्या को०नं० ७१ देखो	६ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ लेश्या को०नं० ७१ देखो
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ अवस्था को०नं० ७१ देखो	२ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ अवस्था को०नं० ७१ देखो
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० १८ देखो	६ को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० ७१ देखो	५ को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को०नं० ७१ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० ७१ देखो
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	२ को० नं० १७ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ अवस्था को०नं० ७१ देखो	२ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ अवस्था को०नं० ७१ देखो
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ को० नं० ७१ के समान जानना	१ को० नं० ७१ देखो	१ को०नं० ७१ देखो	२ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को०नं० ७१ देखो	१ अवस्था को०नं० ७१ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग	८ को० नं० ७१ देखो	८ को० नं० ७१ के समान परन्तु यहां चारों गतियों के हरेक भंग में अचक्षु-दर्शन के जगह चक्षुदर्शन जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ उपयोग को० नं० ७१ देखो	६ को० नं० ७१ के समान जानना	१ भंग को० नं० ७१ देखो	१ उपयोग को० नं० ७१ देखो
२१ ध्यान	१४ को० नं० ७१ देखो	१४ को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ ध्यान को० नं० ७१ देखो	१२ को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ ध्यान को० नं० ७१ देखो
२२ आस्रव	५७ को० नं० ७१ देखो	५३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय १, कार्माणकाय योग १ ये ४ घटाकर (५३)	सारे भंग	१ भंग	४६ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काय योग १, वै० काय योग १, आ० काय योग १ ये ११ घटाकर (४६)	सारे भंग	१ भंग
		(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ४०-४३-५१-४६-४२-३७-५०-४५ ४१ के भंग—को० नं० १७ के समान जनाना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ४०-४३-४४-३५-३८-३९-४३-३८-३३ के भंग— को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो
२३ भाव	४९ को० नं० ७१ देखो	४४ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान परन्तु यहां अचक्षु दर्शन के जगह चक्षु दर्शन जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो	३६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में को० नं० ७१ के समान जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में १ले गुण० के २८ के भंग घटाकर शेष सारे भंग— को० नं० ७१ के समान जानना परन्तु यहां अचक्षु दर्शन के जगह चक्षु दर्शन जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो	(२) तिर्यंच गति में १ले गुण स्थान के २८ के भंग १ घटाकर शेष सारे भंग को० नं० ७१ के समान जानना परन्तु यहां अचक्षु दर्शन के जगह चक्षु दर्शन जानना	सारे भंग को० नं० ७१ देखो	१ भंग को० नं० ७१ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**— को० नं० २४-२५-२६ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**— ,, ,, ,,

२७ **सत्व प्रकृतियां**— ,, ,, ,,

२८ **संख्या** – असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र** – लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन** – नाना जीवों की अपेक्षा सर्वलोक जानना। एक जीव की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु को० नं० २६ देखो।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से दो हजार (२०००) सागर तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक चक्षुदर्शन न प्राप्त कर सके।

३३ **जाति (योनि)**—२८ लाख योनि जानना। (चतुरिन्द्रिय २ लाख, पंचेन्द्रिय २६ लाख, ये २८ लाख जानना।

३४ **कुल**—११७॥ लाख कोटिकुल जानना। (चतुरिन्द्रिय ९, पंचेन्द्रिय १०८॥ ये ११७॥ लाख कोटिकुल जानना।

कोष्टक नं० ७३

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	९ ४ से १२ तक के गुण० सूचना—३रे गुण स्थान में भी अवधि दर्शन बताया है (देखो गो० क० गा० ८२०-८२१-८२२)	९ (१) नरक गति में ३-४थे गुण० (२) तिर्यंच गति में ३-४-५ गुण० भोग भूमि में ३-४थे गुण० (३) मनुष्य गति में ३ से १२ गुण० भोग भूमि में ३-४थे गुण० (४) देव गति में ३-४थे गुण०	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	२ (१) नरक गति में ४थे गुण० (२) तिर्यंच गति में ० भोगभूमि में ४थे गुण० (३) मनुष्य गति में ४-६ गुण० भोग भूमि में ४थे गुण० (४) देवगति में ४थे गुण०	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ गुण० सारे भंगों में से कोई १ गुण० जानना
२ जीवसमास	२ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग को० नं० [illegible] से १९ देखो लब्धि रूप ६ का भंग भी होता है।	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
४ प्राण को०नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	७ चारों गतियों में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-तिर्यंच-देव गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०- ४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	४ (१) नरक तिर्यंच-देवगति मनुष्य गति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो
६ गति को०नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रिय जाति	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१	१
८ काय त्रसकाय	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१
९ योग को० नं० २६ देखो	१५	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११)	१ भंग	१ योग	४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ योग जानना	१ भंग	१ योग

१	२	३	४	५	६	७	८
		(१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७- १९ देखो	१ योग को०नं० १६-१७- १९ देखो	(१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७- १९ देखो	१ योग को०नं० १६-१७- १९ देखो
		(३) मनुष्य गति में ९-९-९-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो।	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो
१० वेद	३ को०नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद ही जानना को०नं० १६ देखो	१ नपुंसक वेद	१ नपुंसक वेद	२ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद ही जानना को० नं० १६ देखो	१ नपुंसक वेद	१ नपुंसक वेद
		(२) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १ पुरुषवेद जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-२-२-२- १-०-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में १-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबन्धी कषाय ४ घटाकर (२१)	२१	२१ (१) नरक गति में १९ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	२० स्त्रीवेद घटाकर (२०) (१) नरक गति में १९ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २१ १७-२० के भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में २१-१७-१३-११-१३-७-६-५-४-३-१-१-०-२० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१६ का भंग को०नं० १७ देखो		
					(३) मनुष्य गति में ६-११-१६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २०-१६-१६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में १६-१६-१६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
१२ ज्ञान केवल ज्ञान घटाकर (४)	४	४ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	३ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर(३) (१) नरक गति में ३ का भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा ३ का भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३-३ के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम को०नं० २६ देखो	७	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	३ (१) नरक-देवगति में हरेक में को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	१ को०नं० १६-१६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-१ के भंग	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १ असंयम जानना	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो

कोष्टक नं० ७३

अवधि दर्शन में

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१-१ के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो
१४ दर्शन अवधि दर्शन	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ अवधि दर्शन जानना	१	१	१ चारों गतियों में–हरेक में १ अवधि दर्शन जानना	१	१
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग–को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-३-३ के भंग–को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१-३ के भंग–को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१-१ के भंग–को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग–को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा १ का भंग–को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग–को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-१-१ के भंग–को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व भव्य	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१
१७ सम्यक्त्व उपशम क्षायिक- क्षयोपशम [illegible] ये (३)	३	३ (१) नरक गति में १-३-२ के भंग–को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २ का भंग–को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	४	५	७	८
		(१) निर्यंच गति में १-२-१-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में २ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-३-३-२-३-२-१-१-३ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-२-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१	१
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ (१) नरक–देवगति में हरेक में १ आहारक जानना को०नं० १६–१९ देखो	१ को०नं० १६–१९ देखो	१ को० नं० १६– १९ देखो	२ (१) नरक–देवगति में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १६–१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६–१९ देखो
		(२) मनुष्य गति में -- के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो
		(३) निर्यंच गति में १-, के भंग को० नं० १७ देखो	१	१	(३) निर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग कोई १ अवस्था	१ अवस्था कोई १ अवस्था
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग १, ये ५ जानना	५	५ (१) नरक गति में ४-४ के भंग को० नं० १६ के ६-६ के	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	५ (१) नरक गति में ४ का भंग पर्याप्तवत् ४थे गुण०	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		हरेक भंग में से अचक्षु-दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर ४-४ के भंग जानना			का भंग जानना (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा ४ का भंग पर्याप्तवत् जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग—को० नं० १७ के ६-६ के भंगों में से अचक्षु-दर्शन, चक्षु-दर्शन ये २ घटाकर ४-४ के भंग जानना	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-४-४ के भंग—को० नं० १८ के ६-६-६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् २ दर्शन घटाकर ४-४-४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
		४-४ के भंग—भोगभूमि में ऊपर के कर्मभूमि के समान जानना	"	"	(४) देवगति में ४-४ के भंग—को० नं० १९ के ६-६ के भंगों में से पर्याप्तवत् २ दर्शन घटाकर ४-४ के भंग जानना	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १९ देखो
		(३) मनुष्य गति में ४-४-५-४-५-४-४ के भंग को० नं० १८ के ६-६-७-६-७-६-६ के हरेक भंग में से अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर ४-४-५-४-५-४-४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो			
		(४) देवगति में ४-४ के भंग—को० नं० १९ के ६-६ के भंगों में से अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर ४-४ के भंग जानना	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १९ देखो			
२१ ध्यान	१४ को० नं० ७१ देखो	१४ (१) नरक गति में ९-१० का भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ देखो	१२ (१) नरक गति में ९ का भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६–१–११–६–१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा ९ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६–१०–११–७–४–१–१– ६–१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६–७–९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ९–१० का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ९ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १९ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अनन्तानुबंधी क० ४ ये ९ घटाकर (४८)	४८	४४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (४४)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	३६ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आहारक काययोग १, स्त्री वेद १, ये १२ घटाकर (३६)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(१) नरक गति में ४० का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(१) नरक गति में ३३ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ४२–३७–४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ३३ का भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ४२–३७–२२–२०–२२– १६–१५–१४–१३–१२– ११–१०–१०–९–४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३३–१२–३३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
					(४) देवगति में ३३–३३–३३ के भंग	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में ४१–४०–४० के भंग कोo नंo १६ देखो	सारे भंग कोo नंo १६ देखो	१ भंग कोoनंo १६ देखो	कोo नंo १६ देखो		
२३ भाव	३६	३६			३५	सारे भंग	१ भंग
उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, ज्ञान ४, अवधि दर्शन १, लब्धि ५, वेद सम्यक्त्व १, संयमा संयम १, सराग संयम १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १ असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ए ३६ जानना		(१) नरक गति में २३–२६–२५ के भंग कोo नंo १६ के २५–२८–२७ के हरेक भंग में से अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर २३–२६–२५ के भंग जानना	सारे भंग कोo नंo १६ देखो	१ भंग कोoनंo १६ देखो	उपशम चारित्र १, क्षायिक चारित्र १, मन: पर्यय ज्ञान १, स्त्री वेद १ ये ४ घटाकर (३५) (१) नरक गति में २५ का भंग कोo नंo १६ के २७ के भंगों में से अचक्षु दर्शन चक्षु दर्शन, ये २ घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग कोo नंo १६ देखो	१ भंग कोoनंo १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३०–२७–२७ के भंग कोo नंo १७ के ३२–२६–२६ के हरेक भंग में से अचक्षु–चक्षु दर्शन ये २ घटाकर ३०–२७–२७ के भंग जानना	सारे भंग कोo नंo १७ देखो	१ भंग कोoनंo १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा २३ का भंग कोo नंo १७ के २५ के भंग में से अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग कोo नंo १७ देखो	१ भंग कोoनंo १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २८–३१–२८–२६–२५–२६–२७–२७–२६–२५–२४–२३–२२–२१–२१–१६–१८–२४–२७ के भंग कोo नंo १८ के ३०–३३–३०–३१–२७–२१–	सारे भंग कोo नंo १८ देखो	१ भंग कोoनंo १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २८–२६–२३ के भंग कोo नंo १८ के ३०–२७–२५ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् अचक्षु	सारे भंग कोo नंo १८ देखो	१ भंग कोoनंo १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		२६–२६–२८–२७–२६–२५–२४–२ –२३–२१–२०–२६–२६ के हरेक भंग में ने अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर २८–२१–२८–२६–२५–२६–२७–२७–२६–२५–२४–२३–२२ २१–२१–१६–१८–२४–२७ के भंग जानना (४) देवगति में २२–२४–२४–२७–२१–२४–२३ के भंग को० नं० १६ के २४ २६ २६–२६–२३–२६–२५ के हरेक भंग में से ऊपर के समान २ दर्शन घटाकर २२–२४–२४–२७–२१–२४–२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ घटाकर २८–२५–२- के भंग जानना (४) देवगति में २६–२४–२४ के भंग को० नं० १६ के २८ २६ २६ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् २ दर्शन घटाकर २६-२४-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो

२४ **अवगाहना**—संख्यात घनांगुल से (१०००) एक हजार योजन तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**— को० नं० २६ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**— " " "

२७ **सत्व प्रकृतियां**— " " "

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु, ६ राजु को० नं० २६ देखो।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा को० नं० ३३ देखो।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक अवधि दर्शन न हो सके।

३३ **जाति (योनि)**—२६ लाख योनि जानना। को० नं० २६ देखो

३४ **कुल**—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना। को० नं० २६ देखो

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान १३-१४ ये २ गुण०	२	२ १३वे १४वे ये २ गुण०	सारे गुण० दोनों गुण स्थान	१ गुण० कोई १ गुण०	१ १३वे गुण० जानना	१	१
२ जीव-समास संज्ञी पं० प० अप०	२	१ १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१	१ १ संज्ञी पं० अपर्याप्त	१	१
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग–को० नं० १८ देखो	१ भंग ६ का भंग जानना	१ भंग ६ का भंग	३ ३ का भंग–को० नं० १८ देखो	१ भंग ३ का भंग जानना	१ भंग ३ का भंग
४ प्राण आयु, काय बल, श्वासोच्छ्वास, वचन बल ये (४)	४	४ (१) मनुष्य गति में ४-१ के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	२ आयु कायबल ये २) (१) मनुष्य गति में २ का भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा	०	(०) अपगत संज्ञा	०	०	०	०	०
६ गति	१	१ मनुष्य गति	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति	१	१	१	१	१
८ काय	१	१ त्रसकाय	१	१	१	१	१
९ योग सत्यमनोयोग १, अनुभय मनोयोग १, सत्य वचन योग १ अनुभय वचन योग १, औ० काय योग १, औ० मिश्रकाय योग १,	७	५ औ० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये २ घटाकर (५) (१) मनुष्य गति में ५-३-० के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो	२ औ० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १, ये २ योग जानना (१) मनुष्य गति मे २-१ के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
कार्माणकाय योग १, ये ७ योग जानना							
१० वेद	०	(०) अपगत वेद	०	०	०	०	०
११ कषाय	०	(०) अकषाय	०	०	०	०	०
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान जानना	१	१	१	१	१
१३ संयम	१	१ यथाख्यात जानना	१	१	१	१	१
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन जानना	१	१	१	१	१
१५ लेश्या	१	१ शुक्ल लेश्या जानना	१	१	१	१	१
१६ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व जानना	१	१	१	१	१
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	१	१	१
१८ संज्ञी	०	(०) अनुभय जानना	०	०	०	०	०
१९ आहारक आहारक अनाहारक	२	२ (१) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग १, दर्शनोपयोग १, (२)	२	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग—को० नं० १८ देखो	२ युगपत् जानना	२ युगपत् जानना	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग—को० नं० १८ देखो	२ युगपत् जानना	२ युगपत् जानना
२१ ध्यान सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती, व्युपरत क्रिया निवर्तिनी ये २ जानना	२	२ (१) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	०	०	०
२२ आस्रव ऊपर के योग स्थान के योग ७ जानना	७	५ औ० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये २ घटाकर (५) (१) मनुष्य गति में ५-३-७ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	२ औ० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये २ आस्रव जानना (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२३ भाव	१४ को० नं० १३ देखो	१४ (१) मनुष्य गति में १४-१३ के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१४ (१) मनुष्य गति में १४ का भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

२४ **अवगाहना**—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१३वे गुण० में १ सादा वेदनीय का बंध जानना और १४वे गुण० में अबंध जानना। को० नं० १३-१४ देखो।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१३वे गुण० में ४२, १४वे गुण० में १२ प्र० का उदय जानना। को० नं० १३ और १४ देखो।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१३वे गुण० में ८५, १४वे गुण० ८५, १३ जानना। को० नं० १३ और १४ देखो।

२८ **संख्या**—८९८५०२ और ५९८ को० नं० १३ और १४ देखो।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग, लोक के असंख्यात भाग, सर्वलोक, को० नं० १३ देखो।

३० **स्पर्शन**—ऊपर के क्षेत्र के समान जानना।

३१ **काल**—सर्वकाल जानना।

३२ **अन्तर**—कोई अन्तर नहीं।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख योनि मनुष्य के जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्यों की जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	४ १ से ४ तक के गुण०	४ (१) नरक गति में १ से ४ (२) तिर्यंच गति में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से ४ भोग भूमि में कोई गुण० नहीं होते।	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	३ (१) नरक गति में १ले ४थे गुण० जानना (२) तिर्यंच गति में १-२ गुण० (३) मनुष्य गति में १-२-४ गुण० भोग भूमि में कोई गुण० नहीं होते। (४) देवगति में १-२ गुण० ये भंग भवनत्रिक देवों की अपेक्षा होता है।	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुण० जानना
२ जीवसमास	१९ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक और मनुष्य गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १६-१८ देखो १ समास को०नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	५	७	८
३ पर्याप्ति	६ को०नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ का भंग को० नं० १७ देखो लब्धि रूप अपने अपने स्थान की ६-५-४ पर्याप्ति भी होती है।	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-६-५-४-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ (१) नरक-मनुष्य-तिर्यंच गति में हरेक में ४ का भंग को०नं० १६-१८-१७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१७ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में। कर्म भूमि की अपेक्षा ४ का भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो
६ गति	४ को० नं० १ देखो	३ नरक, तिर्यंच और मनुष्य ये ३ गति जानना	१ गति को०नं० १६-१७-१८ देखो	१ गति को०नं० १६-१७-१८ देखो	४ चारों गति जानना	१ गति को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति को० नं० १६ से १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति	५ को० नं० १ देखो	५ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६–१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग-को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	५ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५ का भंग– को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय	६ को० नं० १ देखो	६ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६–१८ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग–को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	६ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो
९ योग	१३ आ० मिश्रकाय योग १, आ० काय योग १, ये २ घटाकर (१३)	१० औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १, ये ३ घटाकर (१०) कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक मनुष्य गति में हरेक में ९ का भंग–को० नं० १६-१८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८ देखो	१ योग को० नं० १६-१८ देखो	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ योग जानना कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-२ के भंग–को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में २-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ कर्म भूमि की अपेक्षा (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो १ वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ कर्म भूमि की अपेक्षा (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २५-२१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२३- २५ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २५-१९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(४) देवगति में २४ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
१२ ज्ञान कुज्ञान ज्ञान ३, ज्ञान ३	६	६ कर्म भूमि की अपेक्षा (१) नरक गति में ३–३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (५) (१) नरक गति में २–३ के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २–३–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम	१ असंयम	१ तीनों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ को०नं० १६-१७-१८ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को०नं० १६ से १६ देखो
१४ दर्शन केवल दर्शन घटाकर (३)	३	३ कर्म भूमि की अपेक्षा (१) नरक गति में २–३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २–३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १–२–२–३–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २–२ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में २–३ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में २-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २ का भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या कृष्ण या नील जिसका विचार किया जाय वह १ लेश्या	१	१ कृष्ण या नील लेश्या में में जिसका विचार किया जाय वह १ लेश्या	१	१	१	१	१
१६ भव्यत्व भव्य अभव्य	२	२ कर्मभूमि की अपेक्षा तीनों गतियों में हरेक में २-१ के भंग—को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१७-१८ देखो	२ कर्मभूमि की अपेक्षा चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	६	६ (१) नरक गति में १-१-१ ३-२ के भंग—को० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-२ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	४ मिश्र उपशम ये २ घटाकर (४) जानना (१) नरक गति में १-२ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में भवनत्रिक देवों की अपेक्षा १-१ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१८ संज्ञी संज्ञी, असंज्ञी	२	२ कर्म भूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो	२ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ १८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ कर्मभूमि की अपेक्षा तीनों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ को० नं० १६-१७-१८ देखो	१ को० नं० १६-१७-१८ देखो	२ कर्मभूमि की अपेक्षा चारों गतियों में हरेक में १-१ के भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ६ दर्शनोपयोग ३ ये ९ जानना	९	९ (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो	८ कुअवधि ज्ञान घटाकर (८) (१) नरक गति में ४-६ के भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-६ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४ का भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान	१० को०नं० १६ देखो	१० कर्म भूमि की अपेक्षा (१) तीनों गतियों में हरेक में ८-९-१० के भंग को० नं० १६-१७-१८ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१७- १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१७- १८ देखो	९ अपाय विचय घटाकर (९) (१) नरक गति में ८-९ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में और देवगति में ८ का भंग को० नं० १७-१९ देखो (३) मनुष्य गति में ८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७- १९ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो १ ध्यान को०नं० १६- १९ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव	५५ आ० मिश्रकाययोग १, आ० काययोग १, ये २ घटाकर (५५)	५२ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्मारण काययोग १ ये ३ घटाकर (५२) (१) नरक गति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४३-५१- ४६-५२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५१-४६-५२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में कोई १ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	५ मनोयोग ४, वचनयोग ४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, ये १० घटाकर (४५) (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३- ४४-३७ ३३-३४-३५-३८- ३९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-३९-३३ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना १ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	४	५	७	८
					(४) देवगति में ४३-४८ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
२३ भाव	३६ उपशम-क्षायिक स० २, कुज्ञान ३, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, वेदक सम्यक्त्व १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, कृष्ण नील में से जिसका विचार किया जाय वह १ लेश्या, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ३६ भाव जानना	३६ (१) नरक गति में २४-२२-२३-२६-२५ के भंग को० नं० १६ के २६-२४-२५-२८-२७ के हरेक भंग में से कृष्ण-नील लेश्याओं में से जिसका विचार करो उसे १ छोड़कर शेष २ लेश्या घटाकर २४-२२-२३-२६-२५ के भंग जानना	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	३२ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम सम्यक्त्व ३, कुअवधि ज्ञान १ ये ४ घटाकर (३२) (१) नरक गति में २३-२५ के भंग को० नं० १६ के २५-२७ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ लेश्या घटाकर २३-२५ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २२-२३-२५ के भंग को० नं० १७ के २४-२५-२७ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष २ लेश्या घटाकर २२-२३-२५ के भंग जानना २६-२४-२५-२७ के भंग को० नं० १७ के ३१-	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २२-२३-२५-२५-२०-२१-२२-२३ के भंग को० नं० १७ के २४-२५-२७-२६-२२-२३-२४-२५ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ लेश्या घटाकर २२-२३-२५-२५-२०-२१-२२-२३ के भंग जानना भोग भूमि में यहां कोई भंग नहीं होते।	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		९–३०–३२ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष ५ लेश्या घटाकर २६–२४–२५–२७ के भंग जानना भोग भूमि में यहां कोई भंग नहीं होते ।			(३) मनुष्य गति में २८-२९ के भंग को० नं० १८ के ३०-२८ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ लेश्या घटाकर २८-२९ के भंग जानना २५ का भंग को० नं० १८ के ३० के भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५ लेश्या घटाकर २५ का भंग जानना भोग भूमि में यहां कोई भंग नहीं होते ।	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		कर्म भूमि की अपेक्षा (२) मनुष्य गति में २६–२४–२५–२८ के भंग को० नं० १८ के ३१–२९–३०–३२ के हरेक भंग में से ऊपर के समान शेष ५ लेश्या घटाकर २६–२४–२५–२८ के भंग जानना भोग भूमि में यहां कोई भंग नहीं होते ।	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो			
					(४) देवगति में २४-२२ के भंग को० नं० १९ के २६-२४ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष २ लेश्या घटाकर २४-२२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो

२४ अवगाहना—को० नं० १६ में ३४ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां— को० नं० १ से ४ के समान जानना।

२६ उदय प्रकृतियां— " " " "

२७ सत्त्व प्रकृतियां— " " " "

२८ संख्या—अनन्तानन्त जानना।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना।

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ७वें नरक की अपेक्षा ३३ सागर प्रमाण काल जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से साधिक ३३ सागर प्रमाण काल तक कृष्ण या नील लेश्या न हो सके। यह सर्वार्थ सिद्धि की अपेक्षा जानना।

३३ जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना।

३४ कुल—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
			नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१		२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान		४ १ से ४	४ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक गति में १ से ४ (२) तिर्यंच गति में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से ४ को० नं० १६-१७-१८ देखो	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के कोई १ गुण०	३ (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तिर्यंच गति में १ले २रे भोगभूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में १-२-४ भोगभूमि में १-२-४ (४) देवगति में १-२-०	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के कोई १ गुण०
२ जीव-समास		१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त कर्मभूमि की अपेक्षा (१) नरक-मनुष्य गति में हरेक में को० नं० ७५ देखो (२) तिर्यंच गति में को० नं० ७५ देखो	१ समास को० नं० ७५ देखो	१ समास को० नं० ७५ देखो	७ अपर्याप्त (१) नरक गति में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त को० नं० १९ देखो	१ समास को० नं० १६ देखो को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो को० नं० १९ देखो	१ समास को० नं० १६ देखो को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ भंग	१ भंग	३ (१) नरक-देवगति में हरेक में ३ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ३-३ के भंग—को० नं० १७-१८ देखो लब्धि रूप ६ के भंग भी होते हैं	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७-१८ देखो
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ भंग	१ भंग	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ७ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ७-७ के भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो को० नं० १७ देखो को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ भंग	१ भंग	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ४-४ के भंग—	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७-१८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					को० नं० १७-१८ देखो		
६ गति ४ को० नं० १ देखो		३ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ गति	१ गति	४ चारों गतियों में—हरेक में एक एक जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति ५ को० नं० १ देखो		५ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ जाति	१ जाति	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १६-१८-१६ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१६ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय ६ को० नं० १ देखो		६ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ काय	१ काय	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय—को० नं० १६-१८-१६ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१६ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१६ देखो
					(१) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो
६ योग १३ आ० मिश्रकाय योग १, आहारक काय योग १, ये २ घटाकर (१३)		१० कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ भंग	१ योग	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ योग जानना	१ भंग	१योग
					(१) नरक-देवगति में हरेक में १-२ के भंग—को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ योग को० नं० १६-१६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(२) तिर्यंच गति में	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में हरेक में १-२-१-२ के भंग को० नं० १७--१८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो
१० वेद	३	३ कर्म भूमि की अपेक्षा को० नं० ५५ देखो	१ भंग	१ वेद	२ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ३-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ कर्म भूमि की अपेक्षा को० नं० ५५ देखो	सारे भंग	१ भंग	२५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४-१६ के भंग को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में २५-१६-२४-१६ के भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो	को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(४) देवगति में २४ के भंग–को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
१२ ज्ञान कुज्ञान ३, ज्ञान ३ ये (६)	६	६ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	सारे भंग	१ ज्ञान	५ कुअवधि ज्ञान घटाकर (५)	सारे भंग	१ ज्ञान
					(१) नरक गति में २-३ के भंग–को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग–को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २ का भंग–को० नं० १९ देखो	को० नं० १९ देखो	को० नं० १९ देखो
१३ संयम	१ असंयम	१ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो
१४ दर्शन केवल दर्शन घटाकर (३)	३	३ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ भंग	१ दर्शन	३ (१) नरकगति में २-३ के भंग–को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग–को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो	को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(३) मनुष्य गति में २-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ कापोत लेश्या जानना	१	१	१	१	१
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ कर्म भूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ भंग	१ अवस्था	२ नरक-देवगति में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६- १९ देखो
					तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में २-१-२-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७- १८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० १६ देखो	६ कर्म भूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	सारे भंग	१ सम्यक्त्व	४ मिश्र और उपशम ये २ घटाकर (४)	सारे भंग	१ सम्यक्त्व
					(१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में १-१-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(४) देवगति में १-१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	२ कर्म भूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१	१	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	१ को०नं० १६-१६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १८ देखो
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	२ कर्म भूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१	१	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १-१ के भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१६ देखो
					(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में १-२-१-१ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	को० नं० १७-१८ देखो	को०नं० १७-१८ देखो
२० उपयोग	६ को० नं० ७५ देखो	६ कर्म भूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	१ भंग	१ उपयोग	८ कुअवधि ज्ञान घटाकर (८)	१ भंग	१ उपयोग
					(१) नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-५-५-५-६ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ४-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
					(४) देवगति में ४ का भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १९ देखो
२१ ध्यान	१० को० नं० १६ देखो	१० कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	सारे भंग	१ ध्यान	९ आज्ञाविचय घटाकर (९) (१) नरक गति में ८-९ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ८-९-८-९ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो
					(४) देवगति में ८-९ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १९ देखो
२२ आस्रव	५५ को० नं० ७५ देखो	५२ कर्मभूमि की अपेक्षा को० नं० ७५ देखो	सारे भंग	१ भंग	४५ (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(२) तिर्यंच गति में २७–२८–२९–४०–४३–४४–३२–३३–३४–३५–३८–३९–४३–३८–३३ के भंग कोे०नं० १७ देखो	सारे भंग कोे० नं० १७ देखो	१ भंग कोे०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ४४–३९–३३–४३–३८–३३ के भंग कोे०नं० १८ दे	सारे भंग कोे०नं० १८ देखो	१ भंग कोे०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में ४३–३८ के भंग कोे० नं० १९ देखो	सारे भंग कोे० नं० १९ देखो	१ भंग कोे०नं० १९ देखो
२३ भाव	३६ कोे० नं० ७५ देखो	कर्म भूमि की अपेक्षा कोे० नं० ७५ देखो	सारे भंग	१ भंग	३२ (कोे० नं० ७ देखो)	सारे भंग	१ भंग
					(१) नरक गति में २३–२५ के भंग कोे० नं० १६ के २५–२७ के हरेक भंग में से कृष्ण-नील ये २ लेश्या घटाकर २३–२५ के भंग जानना	कोे०नं० १६ देखो	कोे०नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में २२–२३–२५–२५–२०–२१–२३–२३ के भंग कोे० नं० १७ के २४–२५–२७–२७–२२–२३–२५–२५ के हरेक भंग में से कृष्ण-नील लेश्या	सारे भंग कोे० नं० १७ देखो	१ भंग कोे०नं० १७ देखो

कोष्टक नं० ७६

१	२	३	४	५	६	७	८
					में २ लेश्या घटाकर २०-२३-२६-२५-२[illegible] २३-२३ के भंग जानना २४-२२-२५ के भंग-को० नं० १७ के समान जानना		
					(३) मनुष्य गति में २८-२६ के भंग-को० नं० १८ के ३०-२८ के हरेक भंग में से कृष्ण नील ये २ लेश्या घटाकर २८-२६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
					२५ का भंग-को० नं० १८ के ३० के भंग में से कापोत लेश्या छोड़कर शेष ५ लेश्या घटाकर २५ का भंग जानना	"	"
					२४-२२-२५ के भंग-को० नं० १८ के समान जानना	"	"
					(४) देवगति में २४-२२ के भंग-को० नं० १९ के २६-२४ के हरेक भंग में से कृष्ण-नील ये २ लेश्या घटाकर २४-२२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ में २४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—११८

२६ **उदय प्रकृतियां**—११९

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की ३रे नरक की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ७ सागर काल प्रमाण जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ७वे नरक की अपेक्षा ३३ सागर तक कापोत लेश्या न हो सके।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान १ से ७ तक के गुण०	७	७ (१) तिर्यंच गति में १ से ५ भोग भूमि में १ से ४ (२) मनुष्य गति में १ से ७ भोग भूमि में १ से ४ (३) देवगति में १ से ४	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	४ (१) मनुष्य गति में कर्म भूमि की अपेक्षा १-२-४-६ (२) देवगति में १-२-४ कल्पवासियों की अपेक्षा सूचना—यहां तिर्यंच गति नहीं होती (देखो गो० क० गा० ३२७)	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीवसमास संज्ञी पं० पर्याप्त १, संज्ञी पं० अपर्याप्त १ ये २ जानना	२	१ तिर्यंच, मनुष्य, देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ को०नं० १७-१८-१९ देखो	१ दोनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को०नं० १८-१९ देखो मनुष्य-देवगति	१ को० नं० १८-१९ देखो	१ को०नं० १८-१९ देखो
३ पर्याप्ति	६	६ तीनों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो	३ दोनों गतियों में हरेक में ३ का भंग को० नं० १८-१९ देखो लब्धि रूप ६ का भंग	१ भंग को०नं० १८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १८-१९ देखो

१	२	३	४	५	५	७	८
४ प्राण	१० कों० नं० १ देखो	१० तीनों गतियों में हरेक में १० का भंग कों०नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग कों०नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग कों०नं० १७-१८- १९ देखो	७ दोनों गतियों में हरेक में ७ का भंग कों०नं० १८-१९ देखो	१ भंग कों० नं० १८-१९- देखो	१ भंग कों०नं० १८-१९ देखो
५ संज्ञा	४ कों० नं० १ देखो	४ (१) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग कों० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-४ के भंग कों० नं० १८ देखो (३) देवगति में ४ का भंग कों०नं० १९ देखो	१ भंग कों०नं० १७ देखो सारे भंग कों० नं० १८ देखो १ भंग कों० नं० १९ देखो	१ भंग कों०नं० १७ देखो १ भंग कों०नं० १८ देखो १ भंग कों०नं० १९ देखो	४ (१) मनुष्य गति में ४ का भंग कों० नं० १८ देखो (२) देवगति में ४ का भंग कों० नं० १९ देखो	१ भंग कों० नं० १८ देखो १ भंग कों० नं० १९ देखो	१ भंग कों०नं० १८ देखो १ भंग कों०नं० १९ देखो
६ गति	३ तिर्यंच, मनुष्य, देव ये ३ गति जानना	३ तीनों गति जानना कों०नं० १७-१८-१९ देखो	१ गति	१ गति	२ मनुष्य, देव ये २ गति जानना कों० नं० १८-१९ देखो	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ तीनों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना कों० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	१ दोनों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना कों० नं० १८-१९ देखो	१	१
८ काय	१ त्रसकाय	१ तिर्यंच-मनुष्य-देव ये ३ गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना कों० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	१ मनुष्य-देवगति में १ त्रसकाय जानना कों० नं० १८-१९ देखो	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
९ योग	१५ को० नं० २६ देखो	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११) (१) तिर्यंच गति में ९-९ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ९-९-९-९ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ९ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ योग १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो १ योग को०नं० १९ देखो	४ औ० मिश्रकाययोग १, वै ० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ योग जानना (१) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में १-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग सारे भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ योग १ योग को०नं० १८ देखो १ योग को०नं० १९ देखो
१० वेद	३ को०नं० १ देखो	३ (१) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ३-३-३-२-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो	२ स्त्री-पुरुष वेद (२) (१) मनुष्य गति में २-१-१ के भंग को०नं० १८ देखो (२) देवगति में २-०-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) तिर्यंच गति में २५-२५-२१-१७-२४-२० के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	२४ नपुंसक वेद घटाकर (२४) (१) मनुष्य गति में २४ का भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१२-११-१३-२४-२० के भंग—को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २४-२० के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	को० नं० १८ के २५ के भंग में से १ नपुंसक वेद घटाकर २४ का भंग जानना १२-११ के भंग—को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २४-१९ के भंग—को० नं० १९ देखो	" सारे भंग को० नं० १९ देखो	" १ भंग को० नं० १९ देखो
१२ ज्ञान केवल ज्ञान घटाकर (७)	७	७ (१) तिर्यंच गति में ३-३-३-३ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ३-३-[illegible]-३-४-[illegible]-३ के भंग—को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ३-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ से १९ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो	५ कुअवधि ज्ञान मनः पर्यय ज्ञान, ये २ घटाकर (५) (२) मनुष्य गति में २-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो १ ज्ञान को० नं० १९ देखो
१३ संयम सूक्ष्म सांपराय, यथाख्यात ये २ घटाकर (५)	५	५ (१) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-१-२-३-१ के भंग—को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १ असंयम जानना को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ संयम को० नं० १७ देखो १ संयम को० नं० १८ देखो १ संयम को० नं० १९ देखो	४ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार वि० ये (४) जानना (२) मनुष्य गति में १-२ के भंग—को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १ असंयम जानना को० नं० १९ देखो	१ भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ संयम १ संयम को० नं० १८ देखो संयम को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन अचक्षु द०, चक्षु द० अवधि दर्शन ये (३) जानना	३	३ (१) तिर्यंच गति में ३–३–३–३–२–३ के भंग को०नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ३–३–३–३–२–३ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २–३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो १ दर्शन को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १९ देखो	३ (१) मनुष्य गति में २–३–३ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में २–३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ पीत लेश्या जानना	१	१	१ दोनों गतियों में हरेक में १ पीत लेश्या जानना	१	१
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ तीनों गतियों में हरेक में २–१ के भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८- १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १७-१८- १९ देखो	१ दोनों गतियों में हरेक में २–१ के भंग को०नं० १८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १८– १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १८– १९ देखो
१७ सम्यक्त्व को०नं० २६ देखो	६	६ (१) तिर्यंच गति में १–१–१–२–१–१–१–३ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १–१–१–३–३–२–३– १–१–१–३ के भंग को०नं० १८ देखो (३) देवगति में १–१–१–२–३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	५ (मिश्र घटाकर ५) (१) मनुष्य गति में १–१–२–२ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में १–१–३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१८ संज्ञी	२ संज्ञी	१ (१) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१ के भंग—को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १ का भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ १	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ १	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग—को० नं० १८ देखो (२) देवगति में १ का भंग—को० नं० १९ देखो	१ १	१ १
१९ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ तीनों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	२ (१) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग—को० नं० १८ देखो (२) देवगति में १-१ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो को० नं० १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो को० नं० १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ७ दर्शनोपयोग ३ ये (१०) जानना	१०	१० (१) तिर्यंच गति में ५-६-६-५-६-६ के भंग— को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७-५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ५-६-६ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो	८ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १ ये २ घटाकर (८) (१) मनुष्य गति में ४-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में ४-६ के भंग—को० नं० १९ देखो	 सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	 १ उपयोग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो
२१ ध्यान शुक्ल ध्यान ४, घटाकर (१२)	१२	१२ (१) तिर्यंच गति में ८-९-१० ११-८-९-१०	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	१२ (१) मनुष्य गति में ८-७-९ के भंग—	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		के भंग-को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ८-६-१०-११-७-४-८-६-१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ८-६ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
		(३) देवगति में ८-६-१० के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १९ देखो			
२२ आस्रव को० नं० ७१ देखो	५७	५३ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (५३)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में कोई १ भंग जानना	४५ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आ० काययोग १, नपुंसक वेद १, ये १२ घटाकर (४५)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना
		(१) तिर्यंच गति में ५१-४६-४२-३७-५ -४५-४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(१) मनुष्य गति में ४४-३९-३ -१२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(२) मनुष्य गति में ५ -४६-४२-३७-२२-२०-२२-५०-४५-४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(४) देवगति में ४२-३८-३३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
		(३) देवगति में ५०-४५-४१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो			
२३ भाव उपशम-क्षायिक सम्यक्त्व २,	३८	३८ (१) तिर्यंच गति में २६-२४-२५-२७ के भंग	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	३३ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १,	सारे भंग	१ भंग

१ २	३	४	४	५	७	८
केवल ज्ञान घटाकर शेष ज्ञान ७, केवल दर्शन बिना शेष दर्शन ३, क्षयोपशम सम्यक्त्व १, नरक गति बिना शेष गति ३, कषाय ४, लिंग ३, लब्धि ५, पीत लेश्या १, संयमासंयम १, सराग संयम १, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १ १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३, ये ३८ भाव जानना	को० नं० १७ के ३१-२६-३०-३२ के हरेक भंग में से पीत लेश्या छोड़कर शेष ५ लेश्या घटाकर २६-२४-२५-२७ के भंग जानना २७-२५-२३-२४-२७ के भंग को० नं० १७ के २९-२७-२५-२६-२६ के हरेक भंग में से पद्म-शुक्ल ये २ लेश्या घटाकर २७-२५-२३-२४-२७ के भंग जानना	"	"	निर्वृत्त अपि १, नपुंसक वेद १, संयमासंयम १, ये ५ घटाकर (३३) (१) मनुष्य गति में २५-२३-२५ के भंग को० नं० १८ के ३०-२८-३० के हरेक भंग में से पीत लेश्या छोड़कर शेष ५ लेश्या घटाकर २५-२३-२५ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
(२) मनुष्य गति में २६-२४-२५-२८ के भंग को० नं० १८ के ३१-२९-३०-३३ के हरेक भंग में से पीत लेश्या छोड़कर शेष ५ लेश्या घटाकर २६-२४-२५-२८ के भंग जानना		सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	२५ का भंग को० नं० १८ के २७ के हरेक भंग में से पद्म और शुक्ल लेश्या २ लेश्या घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
	२८-२६-२५-२६-२५-२३-२४-२७ के भंग को० नं० १८ के ३०-३१-२७-३१-२७-२५-२६-२९ के हरेक भंग	"	"	भोग भूमि में यहां कोई भंग नहीं होते। कारण यहां पीत लेश्या ही होती है। (२) देवगति में भवनत्रिक देवों में यहां कोई भंग नहीं होते।	सारे भंग	१ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		में से पद्म-शुक्ल ये २ लेश्या घटाकर २८-२६-२५-२६-२५-२३-२४-२७ के भंग जानना (४) देवगति में भवनत्रिक देवों में २५-२३-२४-२७ के भंग को० नं० १६ के समान जानना कल्पवासी देवों में २५-२३-२४-२७ के भंग को० नं० १६ के २७-२५-२६-२६ के हरेक भंग में से पद्म-शुक्ल ये २ लेश्या घटाकर २५-२३-२४-२७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो "	१ भंग को०नं० १६ देखो "	कल्पवासी देवों में २४-२२-२६ के भंग को० नं० १६ के २६-२४-२८ के हरेक भंग में से पद्म-शुक्ल ये २ लेश्या घटाकर २४-२२-२६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १७–१८–१९ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१११ बन्धयोग्य १२० प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, विकलत्रय ३, साधारण १, सूक्ष्म १, पर्याप्ति १ ये ९ घटाकर १११ जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१०८ उदय योग्य १२२ प्रकृतियों में से नरकद्विक २, नरकायु १, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, तीर्थंकर १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १ ये १४ प्रकृत घटाकर १०८ जानना

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ को० नं० १ से ७ गुण स्थान के समान जानना।

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु, ९ राजु जानना। को० नं० २६ देखो

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से दो अन्तर्मुहूर्त और २ सागर प्रमाण २रे स्वर्ग की अपेक्षा जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक पीत लेश्या न हो सके।

३३ **जाति (योनि)**—२२ लाख योनि जानना। (पंचेन्द्रिय तिर्यंच ४ लाख, देव ४ लाख, मनुष्य १४ लाख ये सब २२ लाख जानना)।

३४ **कुल**—८३॥ लाख कोटिकुल जानना। (पंचेन्द्रिय तिर्यंच ४३॥ देव २६, मनुष्य १४ ये सब ८३॥ लाख कोटिकुल जानना)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण-स्थान कोे० नं० ७७ देखो	७	७	सारे गुण स्थान	१ गुण०	४	सारे गुण०	१ गुण०
२ जीव समास को० नं० ७७ देखो	२	१	१	१	१	१	१
३ पर्याप्ति को० नं० ७७ देखो	६	६	१ भंग	१ भंग	३	१ भंग	१ भंग
४ प्राण को० नं० ७७ देखो	१०	१०	१ भंग	१ भंग	७	१ भंग	१ भंग
५ संज्ञा को० नं० ७७ देखो	४	४	१ भंग	१ भंग	४	१ भंग	१ भंग
६ गति को० नं० ७७ देखो	३	३	१ गति	१ गति	३ लब्धि रूप ६ भी	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० ७७ देखो	१	१	१	१	१	१	१
८ काय को० नं० ७७ देखो	१	१	१	१	१	१	१
९ योग को० नं० ७७ देखो	१५	११	१ भंग	१ योग	४	१ भंग	१ योग
१० वेद को० नं० ७७ देखो	३	३	१ भंग	१ वेद	२	१ भंग	१ वेद
११ कषाय को० नं० ७७ देखो	२५	२५	सारे भंग	१ भंग	२४	सारे भंग	१ भंग
१२ ज्ञान को० नं० ७७ देखो	७	७	१ भंग	१ ज्ञान	५	१ भंग	१ ज्ञान

कोष्टक नं० ७८

१	२	३	४	५	६	७	८
१३ संयम को० नं० ७७ देखो	५	५	१ भंग	१ संयम	४	१ भंग	१ संयम
१४ दर्शन को० नं० ७७ देखो	३	३	१ भंग	१ दर्शन	३	१ भंग	१ दर्शन
१५ लेश्या	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ पद्म लेश्या जानना	१	१	१	१	१
१६ भव्यत्व को० नं० ७७ देखो	२	२	१ भंग	१ अवस्था	२	१ भंग	१ अवस्था
१७ सम्यक्त्व को० नं० ७७ देखो	६	६ (१) तिर्यंच व मनुष्य गति में को० नं० ७७ के समान जानना (२) देवगति में १-१-५-७-३ के भंग-को० नं० १९ देखो	१ भंग	१ सम्यक्त्व	५ को० नं० ७७ के समान जानना	१ भंग	१ सम्यक्त्व
१८ संज्ञी को० नं० ७७ देखो	१	१	१ भंग	१ अवस्था	१	१ भंग	१ अवस्था
१९ आहारक को० नं० ७७ देखो	२	१	१	१	२	सारे भंग	१ अवस्था
२० उपयोग को० नं० ७७ देखो	१०	१०	१ भंग	१ उपयोग	८	१ भंग	१ उपयोग
२१ ध्यान को० नं० ७७ देखो	१२	१२	१ भंग	१ ध्यान	१२	१ भंग	१ ध्यान
२२ आस्रव को० नं० ७७ देखो	५५	५३	सारे भंग	१ भंग	४५	सारे भंग	१ भंग
२३ भाव को० नं० ७७ के समान जानना परन्तु	३८	३८ (१) तिर्यंच गति में व मनुष्य गति में को० नं० ७७ के समान	सारे भंग	१ भंग	३३ को० नं० ७७ के समान जानना	सारे भंग	१ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
	यहां पीत लेश्या की जगह पद्म लेश्या जानना	जानना परन्तु यहां हरेक भंग में पीत लेश्या की जगह पद्म लेश्या जानना (४) देवगति में भवनत्रिक देवों में—कोई भंग नहीं होते कल्पवासी देवों में को० नं० ७७ के समान जानना परन्तु यहां हरेक भंग में से पीत-शुक्ल ये २ लेश्या घटाकर भंग जानना					

२४ **अवगाहना**—को० नं० १७-१८-१९ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१११—को० नं० ७७ के समान जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१०८ " "

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ " "

२८ **संख्या**—असंख्यात जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० **स्पर्शन**—लोक का असंख्यातवां भा ८ राजु जानना। को० नं० २६ देखो।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से दो अन्तर्मुहूर्त और १८॥ सागर प्रमाण १२वे स्वर्ग की अपेक्षा जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक पद्म लेश्या न हो सके।

३३ **जाति (योनि)**—२२ लाख जानना। को० नं० ७६ देखो।

३४ **कुल**—८३॥ लाख कोटिकुल जानना। को० नं० ७६ देखो।

क्र० स्थान सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान १३ १ से १३ तक के गुण०	१३ (१) तिर्यंच गति में १ से ५ भोग भूमि में १ से ४ (२) मनुष्य गति में १ से १३ भोग भूमि में १ से ४ (३) देवगति में १ से ४	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	५ (१) मनुष्य गति में १-२-४-६-१३ (२) देवगति में १-२-४	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीव समास २ संज्ञी पं० पर्याप्त अप०	१ संज्ञी पं० पर्याप्त तीनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० ७-१८-१९ देखो	१	१	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त दोनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १८-१९ देखो	१	१
३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो	६ तीनों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग	१ भंग	३ दोनों गतियों में हरेक में ३ का भंग जानना को० नं० ८-१९ देखो लब्धि रूप ६ का भंग भी होता है।	१ भंग	१ भंग
प्राण १० को० नं० १ देखो	१० (१) तिर्यंच-देव गतियों में हरेक में १० का भंग जानना को० नं० १७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१९ देखो	७ (१) देव गति में ७ का भंग जानना को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	५	७	८
		(२) मनुष्य गति में १०-४-१० के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में ७-८ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ४ का भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	४ (१) मनुष्य गति में ४-० के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में ४ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो
६ गति नरक गति घटाकर (३)	३	३ तिर्यंच-मनुष्य-देव ये ३ गति जानना को०नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	२ मनुष्य, देवगति ये २ गति जानना को० नं० १८-१९ देखो	१	१
७ इन्द्रिय जाति संज्ञी पं० जाति जानना	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	१ दोनों गतियों में हरेक में पर्याप्तवत् जानना को० नं० १८-१९ देखो	१	१
८ काय	१ त्रसकाय	१ तीनों गतियों में १ त्रसकाय जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	१ मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय को० नं० १८-१९ देखो	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
९ योग	१५ को० नं० २६ देखो	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११) (१) तिर्यंच गति में ८-९ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ९-९-९-५-३-९ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ९ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ योग १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो १ योग को०नं० १९ देखो	४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ योग जानना (१) मनुष्य गति में १-२-१-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में १-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग सारे भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ योग १ योग को०नं० १८ देखो १ योग को०नं० १९ देखो
१० वेद	३ स्त्री-पुरुष-नपुंसक वेद	३ (१) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ३-३-३-२-३-३-२- [illegible] ०-२ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २-१-१ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो	२ स्त्री-पुरुष ये २ वेद जानना (१) मनुष्य गति में २-१-१-० के भंग को०नं० १८ देखो (२) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) तिर्यंच गति में २५-२५-२१-१७-२४-२० के भंग	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	२४ नपुंसक वेद घटाकर (२४) (१) मनुष्य गति में २५-१९-११-० के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		कोे० नं० १७ देखो			को०नं० १८ देखो		
		(२) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१२-११-१३- १०-६-५-४-३-२-१-१-०- २०-२० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) देवगति में ४-१६-२३-१६-१६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(३) देवगति में २४-२०-२६-२१-२१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो			
१२ ज्ञान को० नं० २६ देखो	८	८ (१) तिर्यंच गति में ३-३-३-३ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	६ कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (६)	१ भंग	१ ज्ञान
		(२) मनुष्य गति में ३ ३-४-३-४- -३-२ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	ज्ञान को०नं० १८ देखो	(१) मनुष्य गति में २-३-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
		(३) देवगति में ३ ३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	(२) देवगति में २-३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम को० नं० २६ देखो	७	७ (१) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो	५ संयमासंयम, सूक्ष्म सांपराय ये २ घटाकर (५)	१ भंग	१ संयम
		(२) मनुष्य गति में १- -३-२-३-२-१-१-१ को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो	(१) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो
		(३) देवगति में १ असंयम जानना को० नं० १६ देखो	१	१	(२) देवगति में १ का भंग को० नं० १६ देखो	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन अवधि दर्शन, केवलदर्शन ये ४ जानना	४	४ (१) तिर्यंच गति में २-२ ३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में २-३-३-०-१-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में २-३ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो १ दर्शन को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १९ देखो	३ (१) मनुष्य गति में २-३-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में २-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो १ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या शुक्ल लेश्या	१	१ तीनों गतियों में हरेक में १ शुक्ल लेश्या जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१६ भव्यत्व भव्य, अभव्य	२	२ तीनों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८- १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १७-१८- १९ देखो	२ दोनों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को०नं० १८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १८-१९ देखो	१ अवस्था को० नं० १८- १९ देखो
१७ सम्यक्त्व को०नं० २६ देखो	६	६ (१) तिर्यंच गति में १-१-१-२ १-१-१-३ भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-१-३-३-२-०-२- १-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १-१-१-०-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) मनुष्य गति में १-१-२-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में १-१-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	४	५	७	८
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ तीनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१	१ दोनों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १८-१९ देखो	१	१
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो ( ) देवगति में १ आहारक जानना को० नं० १९ देखो	१ को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो आहारक अवस्था को० नं० १९ देखो	१ को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो १ अवस्था को० नं० १९ देखो	२ (१) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में १-१ के भंग को० नं० १९ देखो	दोनों अवस्था को० नं० १८ देखो दोनों अवस्था को० नं० १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो १ अवस्था को० नं० १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ८ दर्शनोपयोग ४ ये १२ जानना	१२	१२ (१) तिर्यंच गति में ५-६-६- -६-६ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७-२-५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ५-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो	१० कुअवधि ज्ञान मनः पर्यय-ज्ञान घटाकर (१०) (१) मनुष्य गति में ४-६-६-२ के भंग को० नं० १८ देखो (२) देवगति में ४-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो
२१ ध्यान व्युपरत क्रिया निवर्तिनी घटाकर (१५)	१५	१५ (१) तिर्यंच गति में ८-९-१०-११-८-९-१० के भंग	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को० नं० १७ देखो	१२ आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, धर्मध्यान ४, ये (१२) (१) मनुष्य गति में ८-९-७-१ के भंग	१ भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान १ ध्यान को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १७ देखो			को०नं० १८ देखो (२) देवगति में ८-६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो
		(२) मनुष्य गति में ८-६-१०-१ -७-८-१-१-१-८-६-१० का भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो			
		(३) देवगति में ८-६-१० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो			
१२ आस्रव	५७ को० नं० ७१ देखो	५३ औ० मिश्रकाययोग १, वैं० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (५३)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ भंग जानना	४५ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वैं० काययोग १, आ० काययोग १, नपुंसक वेद १, ये १२ घटाकर (४५)	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ भंग अपने अपने स्थान के सारे भंगों में कोई १ भंग जानना
		(१) तिर्यंच गति में ५१-४६-४२-३६-४०-४५-४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(१) मनुष्य गति में ४४-३९-३३-१२-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(२) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-३७-२२-२०-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१०-९-५-३-५०-४५-४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(३) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो			

१	२	३	४	५	६	७	८
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, ज्ञान ७, दर्शन ३, लब्धि ५, वेदक स० १, संयमासंयम १, सराग संयम १, तिर्यंच गति १, मनुष्य गति १ देवगति १, क्षायिक भाव ६, कषाय ४, लिंग ३, शुक्ल लेश्या १, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, परिणामिक भाव ३ ये ४७ भाव जानना	४७	४७ (१) तिर्यंच गति में २६–२४–२५–२७ के भंग को० नं० १७ के ३१–२६–३०–३२ के हरेक भंग में से १ शुक्ल लेश्या छोड़कर शेष ५ लेश्या घटाकर २६–२४–२५–२७ के भंग जानना २७–२५–२३–२४–२७ के भंग को० नं० १७ के २६–२७–२५–२६–२६ के हरेक भंग में से पीत-पद्म ये २ लेश्या घटाकर २७–२५–२३–२४–२७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो "	१ भंग को०नं० १७ देखो "	४० उपशम चारित्र १, कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, संयमासंयम १, तिर्यंच गति १, स्त्री वेद-नपुंसक वेद २ ये ७ घटाकर ४० जानना	सारे भंग	१ भंग
		(२) मनुष्य गति में २६–२४–२५–२८ के भंग को० नं० १८ के ३१–२६–३०–३३ के हरेक भंग में से १ शुक्ल लेश्या छोड़कर शेष ५ लेश्या घटाकर २६–२४–२५–२८ के भंग जानना २८–२६–२५–२६ के भंग को० नं० १८ के ३०–३१–२७–३१ के हरेक भंग में से पीत-पद्म ये	सारे भंग को० नं० १८ देखो "	१ भंग को०नं० १८ देखो "	(१) मनुष्य गति में २५–२३–२५ के भंग को० नं० १८ के ३०–२८–३० के हरेक भंग में से १ शुक्ल लेश्या छोड़कर शेष ५ लेश्या घटाकर २५–२३–२५ के भंग जानना २५ का भंग को० नं० १८ के २७ के भंग में से पीत-पद्म ये २ लेश्या घटाकर २५ का भंग जानना १४ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो " "	१ भंग को०नं० १८ देखो " "
					(२) देवगति में कल्पवासी देवों में २४–२२–२६ के भंग को० नं० १६ के २६–२४–२८ के हरेक भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		२ लेश्या घटाकर २८–२६–२५–२६ के भंग जानना			में से पीत-पद्म ये २ लेश्या घटाकर २४–२२–२६ के भंग जानना		
		२६–२६–२८–२७–२६–२५–२४–२३–२३–२१–२८–१४ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	"	"	२३-२१–२६–२६ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	
		२५–२३–२४–२७ के भंग को० नं० १८ के २७–२५–२६–२६ के हरेक भंग में से पीत-पद्म ये २ लेश्या घटाकर २५–२३–२४–२७ के भंग जानना	"	"			
		(४) देवगति में कल्पवासी देवों में २५–२३–२४–२७ के भंग को० नं० १९ के २७–२५–२६–२६ के हरेक भंग में से पीत-पद्म ये २ लेश्या घटाकर २५–२३–२४–२७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो			
		२ –२२–२३–२६–२५ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"			

२४ अवगाहना—को० नं० १७-१८-१९ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां— १०४ को० नं० ७३ के १११ में से एकेन्द्रिय जाति १, तिर्यंचद्विक २, तिर्यंचायु १, आतप १, उद्योत १, स्थावर १ ये ७ घटाकर १०४ जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—१०९ को० नं० ७७ के १०८ में तीर्थंकर प्रकृति १ जोड़कर १०९ जानना।

२७ सत्त्व प्रकृतियां—१४८ को० नं० १ से १३ ये यथायोग्य गुण स्थान के भंग देखो।

२८ संख्या—असंख्यात जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग, लोक के असंख्यात भाग, सर्वलोक, को० नं० २६ देखो।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग, लोक के असंख्यात भाग, सर्वलोक, ६ राजु, को० नं० २६ देखो।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से साधिक ३३ सागर प्रमाण सर्वार्थसिद्धि विमान की अपेक्षा जानना

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक शुक्ल लेश्या न हो सके।

३३ जाति (योनि)—२२ लाख योनि जानना। को० नं० ७६ देख

३४ कुल—८३॥ लाख कोटिकुल जानना। को० नं० ७६ देखो

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२		३	४	५	६-७-८
१	गुण-स्थान	१	१ चौदवें गुण स्थान जानना	१	१	अपर्याप्त अवस्था नहीं होती।
२	जीव समास	१	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना	१	१	
३	पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ ६ का भंग—को० नं० १८ देखो	१ भंग	१ भंग	
४	प्राण	१	१ आयु प्राण जानना को० नं० १८ देखो	१	१	
५	संज्ञा	०	(०) अपगत संज्ञा जानना "	०	०	
६	गति	१	१ मनुष्य गति " "	१	१	
७	इन्द्रिय जाति	१	१ पंचेन्द्रिय जाति " "	१	१	
८	काय	१	१ त्रसकाय " "	१	१	
९	योग	०	(०) अयोग " "	०	०	
१०	वेद	०	(०) अपगत वेद " "	०	०	
११	कषाय	०	(०) अकषाय " "	०	०	
१२	ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान " "	१	१	
१३	संयम	१	१ यथाख्यात " "	१	१	
१४	दर्शन	१	१ केवल दर्शन " "	१	१	
१५	लेश्या	०	(०) अलेश्या " "	०	०	
१६	भव्यत्व	१	१ भव्य " "	१	१	
१७	सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व " "	१	१	
१८	संज्ञी	०	(०) अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी) "	०	०	
१९	आहारक	१	१ अनाहारक (को० नं० १४ देखो)	१	१	
२०	उपयोग	२	२ ज्ञानोपयोग-दर्शनोपयोग-युगपत् "	२	२	
२१	ध्यान	१	१ व्युपरत-क्रिया निवर्तिनी जानना "	१	१	
२२	आस्रव	०	(०) आस्रव " "	०	०	

१	२	३	४	५	६-७-८
२३ भाव	१३ क्षायिक भाव ९, मनुष्य-गति १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये १३ भाव जानना	१३ १३ का भंग-कौ० नं० १८ देखो	१ भंग	१ भंग	

२४ अवगाहना—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना ।

२५ बंध प्रकृतियां—अबंध जानना ।

२६ उदय प्रकृतियां—१२—कौ० नं० १८ देखो ।

२७ सत्व प्रकृतियां—८५-१३ को० नं० १८ देखो ।

२८ संख्या—५९८ को० नं० १४ देखो ।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३१ काल—सर्वकाल जानना ।

३२ अन्तर—कोई अन्तर नहीं ।

३३ जाति (योनि)—१४ लाख मनुष्य योनि जानना ।

३४ कुल—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य के जानना ।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१४ १ से १४ तक के गुण०	१४ (१) नरक गति में १ से ४ (२) तिर्यंच गति में १ से ५ भोग भूमि में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से १४ भोग भूमि में १ से ४ (४) देवगति में १ से ४	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	५ (१) नरक गति में १ले ४थे गुण० (२) तिर्यंच गति में १-२ भोग भूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में १-२-४- -१३ भोग भूमि में १-२-४ (४) देव गति में १-२-४	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीव समास	१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक गति में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के के भंग को०नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १६ देखो १ समास को० नं० १७ देखो १ समास को० नं० १८ देखो	१ समास को०नं० १६ देखो १ समास को०नं० १७ देखो १ समास को०नं० १८ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक गति में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १--१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १६ देखो १ समास को०नं० १७ देखो १ समास को० नं० १८ देखो	१ समास को०नं० १६ देखो १ समास को०नं० १७ देखो १ समास को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	५	७	८
		(४) देवगति में १ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना को०नं० १९ देखो	१ समास को० नं० १९ देखो	१ समास को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त को० नं० १९ देखो	१ समास को० नं० १९ देखो	१ समास को०नं० १९ देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो अपने अपने स्थान की ६-५-४ पर्याप्ति भी होती है।	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-देवगति में हरेक में १० का भंग को०नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०-४-१-१० के भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ७-२-७ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-६-६-१-१-०-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	को० नं० १६-१७-१९ देखो (२) मनुष्य गति में ४-०-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
६ गति ४ को० नं० १ देखो		४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति ५ को० नं० १ देखो		५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग-को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय ६ को० नं० १ देखो		६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो
९ योग १५ को० नं० २६ देखो		११ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय योग १	१ भंग	१ योग	४ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय योग १,	१ भंग	१ योग

१	२	३	४	५	६	७	८
		कार्माणकाय योग १ ये ४ घटाकर (११)			कार्माणकाय योग १ ये ४ योग जानना		
		(१) नरक-देवगति में हरेक में ९ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो	(१) नरक-देवगति में हरेक में—१-२ के भंग—को० नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ९-२-१-९ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ९-९-९ ५-२-०-९ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-२-१-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१-०-२ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-१- -०-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-१-१ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-१- के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	२५ (१) नरकगति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो

२	३	४	५	६	७	८
	(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२१-१७- २४-२० के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २ -२३-२५-२५-२३- २५-२४-१९ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१३-१२-११- ७-६-५-४-३-२-१-१-०- २४-२० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २५-१९-११-०-२४-१९ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
	(४) देवगति में २४-२०-२३-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २४-२४-१९ २३-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
१२ ज्ञान ८ को०नं० २६ देखो	८ (१) नरक गति में ३-३ के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	६ कुअवधि ज्ञान मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (६) (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
	(२) तिर्यंच गति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
	(३) मनुष्य गति में ३-४-३-४-१-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-...-३ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
	(४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१३ संयम कोे नं० २६ देखो	७	७ (१) नरक-देव गति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो	५ संयमासंयम, सूक्ष्मसांपराय ये २ घटाकर (५) (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो	को० नं० १६-१६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो
१४ दर्शन को० नं० १८ देखो	४	४ (१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	४ (१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३-३-३-१-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-३-१-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
१५ लेश्या को० नं० १८ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ३-६-१-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-३-१-७-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-३-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो	(२) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ चारों गतियों में भव्य जानना	१	१	१	१	१
१९ सम्यक्त्व	६ को०नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१-२-१-१-१-३ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-१-३-३-२-३- २-१-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-१-२-२-१-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-१-१-२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में १-१-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१८ संज्ञी संज्ञी असंज्ञी	२	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १	१ को० नं० १६- १९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो १	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १	१ को० नं० १६- १९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो १
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१ १ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो १ को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६- १९ देखो १ को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १-१ के भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १६-१९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १६- १९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ८ दर्शनोपयोग ४ ये १२ जानना	१२	१२ (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-५-५-६-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो	१० कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (१०) (१) नरक गति में ४-६ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७ २-५-६-६ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-५-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो
		(४) देवगति में -६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-६-६-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो
२१ ध्यान को० नं० १८ देखो	१६	१६ (१) नरक-देवगति में हरेक में ८-६-१० के भंग जानना को०नं० १६-१६ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१६ देखो	१२ पृथकत्व वितर्क विचार, एकत्व वितर्क अविचार, सूक्ष्म क्रिया प्रति पाति, व्युपरित क्रिनिवर्तिनी, ये ४ घटाकर (१२)	सारे भंग	१ ध्यान
		(२) तिर्यंच गति में ८-६-१०-११-८-६-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	(१) नरक गति में-देवगति में हरेक में ८-६ के भंग को०नं० १६-१६ देखो	सारे भंग को०नं० १६-१६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१६ देखो
		(३) मनुष्य गति में ८-६-१०-११-७-४-१-१-१-१-८-८-६-१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	(२) तिर्यंच गति में ८-८-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ८-६-७-१-८-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव को० नं० ७१ देखो	५७	४३ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १,	सारे भंग	१ भंग	४६ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १,	सारे भंग	१ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		कार्माणकाय योग १ ये ४ घटाकर (५३) (१) नरक गति में ४६-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	आहारक काय योग १ ये ११ घटाकर (४६) (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४३-५१-४६-४२-३७-५०-४५-४१ के भंग—को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३-४८-३२-३३-३५-३८-३९-४२-३८-३३ के भंग—को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-३७ २२-२०-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१०-६ ५-३-०-५०-४५-४१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४८-३९-३३-१२-२-१ ४२-३८-३३ के भंग— को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५०-४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
२३ भाव अभव्य घटाकर (५२)	५२	५२ (१) नरक गति में २५ का भंग—को० नं० १६ के २६ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २५ का भंग जानना २४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो "	१ भंग को० नं० १६ देखो "	५० कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (५०) जानना (१) नरक गति में २४ का भंग—को० नं० १६ के २५ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २४ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					२७ का भंग को० नं० १६ के समान	"	"
		(२) तिर्यंच गति में २३–२४–२६–३० के भंग को० नं० १७ के २४–२५–२७–३१ के हरेक भंग में से १ अभव्य घटाकर २३–२४–२६–३० के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २३–२४–२६–२६ के भंग को० नं० १७ के २४–२५–२७–२७ के हरेक भंग में से १ अभव्य घटा-कर २३–२४–२६–२६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		२६–३०–३२–२६ के भंग को० नं० १७ के समान जानना	"	"	२२-२३-२५-२५ के भंग को० नं० १७ के समान	"	"
		२६ का भंग को० नं० १७ के २७ के भंग में से अभव्य घटाकर २६ का भंग जानना	"	"	भोग भूमि में २३ का भंग को० नं० १७ के २४ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २३ का भंग जानना	"	"
		२५–२६–२६ के भंग को० नं० १७ के समान	"	"	२२-२५ के भंग को० नं० १७ के समान	"	"
		(३) मनुष्य गति में ३० का भंग को० नं० १८ के ३१ के भंग में से अभव्य घटाकर ३० का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २६ का भंग को० नं० १८ के ३० के भंग में से १ अभव्य घटाकर २६ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		२६–३०–३३–३०–३१–२७–३१–२६–२६–२८–२७–२६–२५–२४–२३–२३–२१–२०–१४–१३ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	"	"	२८-३०-२७-१४ के भंग को० नं० १८ के समान जानना	"	"
		२६ का भंग को० नं० १८ के २७ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २६ का जानना	"	"	भोग भूमि में २३ का भंग को० नं०	"	"

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१२० को० नं० १ से १४ देखो।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१२२ " "

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४८ " "

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—सर्वकाल जानना।

३२ **अन्तर**—कोई अन्तर नहीं।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

१	२	३	४	५	६	७	८
		२५–२६–२९ के भंग को० नं० १८ के समान जानना			१८ के २४ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २३ का भंग जानना		
					२३-२५ के भंग को० नं० १८ के समान	"	"
		(४) देवगति में			(४) देवगति में		
		२४ का भंग को० नं० १९ के २५ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २४ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	२५ का भंग को० नं० १९ के २६ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं०१८ देखो
		२३–२४–२६ के भंग को० नं० १९ देखो	"	"	२४ का भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"
		२६ का भंग को० नं० १९ के २७ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २६ का भंग जानना	"	"	२५ का भंग को० नं० १९ के २६ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २५ का भंग जानना	"	"
		२५–२६–२९ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"	२४–२८ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"
		२३ का भंग को० नं० १९ के २४ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २३ का भंग जानना	"	"	२२ का भंग को० नं० १९ के २३ के भंग में से १ अभव्य घटाकर २२ का भंग जानना	"	"
		२२–२३–२६–२५ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"	२१–२६–२९ के भंग को० नं० १९ के समान जानना	"	"

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ मिथ्यात्व गुण जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
२ जीव-समास कों० नं० १ देखो	१४	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास जानना कों० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७ जीव समास पर्याप्त अवस्था जानना कों० नं० १७ देखो भोगभूमि में—१ संज्ञी पं० पर्याप्त जानना कों० नं० १७-१८ देखो	१ समास कों० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास कों० नं० १७ देखो "	१ समास कों० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास कों० नं० १७ देखो "	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव समास जानना कों० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७ जीव समास अपर्याप्त अवस्था जानना कों० नं० १७ देखो भोगभूमि में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना	१ समास कों० नं० १६-१८-१९-देखो १ समास कों० नं० १७ देखो "	१ समास कों० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास कों० नं० १७ देखो "
३ पर्याप्ति कों० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग—कों० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१८-१९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग—कों० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६- -४-६ के भंग को०नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो लब्धि रूप ६-५-४ भी होती है।	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भं को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग को०नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९-देखो	१ भंग को०नं० १६-१९-देखो	४ (१ नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो
		(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ४-४ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८ देखो	(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ४-४ के भंग को० नं १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ पर्याप्तवत् जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं १ देखो	५	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो	५ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १६-१८-१९ देखो			को० नं० १६-१८-१९ देखो		
		(२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १७ देखो
९ योग आ० मिश्रकाय योग १ आ० काय योग १, ये २ घटाकर (१३)	१३	१० औ० मिश्रकाय योग १ वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ घटाकर (१०)	१ भंग	१ योग	३ औ० मिश्रकाय योग वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ३ जानना	१ भंग	१ योग
		(१) नरक-देवगति में हरेक में ९ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१९ देखो	(१) नरक देवगति में हरेक में ९ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ८-२-१-९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में [illegible]-२-१-२ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरकगति में १ नपुंसक वेद जानना को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को०नं० १८ देखो ( ) देवगति में २-१ के भंग को०नं० १९ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को०नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ को०नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो १ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२४ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २५-२४ के भंग को०नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	२५ (१) नरक गति में २३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२४ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २५-२४ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४-२४-२३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो
१२ ज्ञान	३ कुज्ञान	३ (१) नरक गति में ३ का भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	२ कुअवधि ज्ञान घटाकर (२)	सारे भंग	१ ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८
		को०नं० १६ देखो			(१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २–३–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो
१३ संयम	१ असंयम	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये २ जानना	२	२ (१) नरक गति में २ का भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	२ (१) नरक गति में २ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-६-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-१ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	१ अभव्य	१ चारों गतियों में हरेक में १ अभव्य जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१७ सम्यक्त्व	१ मिथ्यात्व	१ चारों गतियों में हरेक में १ मिथ्यात्व जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो	२ (१) नरक-मनुष्य-देवगति हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१९ देखो १ अवस्था को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में १-१ के भंग जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३, दर्शनोपयोग २ ये ५ जानना	५	५ (१) नरक गति में ५ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-५-५ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-५ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ५ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो	४ कुअवधि ज्ञान घटाकर (४) (१) नरक गति में ४ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४-४ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो
२१ ध्यान को०नं० १ देखो	८	८ चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग जानना को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ से १९ देखो	८ (१) चारों गतियों में हरेक में ८ का भंग जानना को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ से १९ देखो
२२ आस्रव आ० मिश्रकाययोग १, आहारक काययोग १ ये २ घटाकर (५५)	५५	५५ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ घटाकर (५२)	सारे भंग	१ भंग	४५ मनोयोग ४, वचनयोग ४ औ० काययोग १, वै० काययोग १, ये १० घटाकर (४५) जानना	सारे भंग	१ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
		(१) नरक गति में ४९ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(१) नरक गति में ४२ का भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४३-५१- ५० के भंग—को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३- ४४-४३ के भंग—को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५१-५० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४४-४३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५०-४९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४३-४२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
२१ भाव को० नं० १ के ३४ भावों में से १ भव्य घटाकर ३३) जानना	३३	३३ (१) नरक गति में २५ का भंग—को० नं० १६ के २६ के भंग में से १ भव्य घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	३२ कुअवधि ज्ञान घटाकर (३२) (१) नरक गति में २४ का भंग को० नं० १६ के २५ के भंग में से १ भव्य घटाकर २४ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २३-२४-२६-३०-२८ के भंग—को० नं० १७ के २४-२५-२७-३१-२७ के हरेक भंग में से १ भव्य घटाकर २३-२४-२६-३०- २६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २३-२४ २६-२६-२३ के भंग—को० नं० १७ के २४-२५-२७- -७-२४ के हरेक भंग में से १ भव्य घटाकर २३-२४-२६- २६-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३०-२६ के भंग—को० नं० १८ के ३१-२७ के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो			

१	२	३	४	५	६	७	८
		में से १ भव्य घटाकर ३०-२६ के भंग जानना (४) देवगति में २४-२६-२३ के भंग—को० नं० १६ के २५-२७-२४ हरेक भंग में से १ भव्य घटाकर २४-२६-२३ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	(३) मनुष्य गति में २६-२३- के भंग—को० नं० १८ के ३०-२४ के भंग में से १ भव्य घटाकर २६-२३ के भंग जानना (४) देवगति में २५-२५-२२ के भंग—को० नं० १६ के २५-२६-२३ के भंग में से १ भव्य घटाकर २५-२५-२२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो

२४ **अवगाहना**— को० नं० १६ से ३४ देखो ।

२५ **बंध प्रकृतियां**—११७ बंधयोग्य १२० में आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १ ये ३ घटाकर ११७ प्रकृति जानना ।

२६ **उदय प्रकृतियां**— ११७ उदययोग्य १२२ में से आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १, सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति १ ये ५ घटाकर ११७ प्र० जानना ।

२७ **सत्व प्रकृतियां**—१४१ आहारद्विक २, तीर्थंकर प्र० १, आहारक बंधन १, आहारक संघात १, सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति १ ये ७ घटाकर १४१ प्र० जानना ।

२८ **संख्या**—अनन्त जानना ।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना ।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना ।

३१ **काल**—सर्वकाल जानना ।

३२ **अन्तर**—कोई अन्तर नहीं ।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना ।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना ।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६
१ गुण स्थान	०	अतीत गुण स्थान	०	०	सूचना— अपर्याप्त नहीं होती।
२ जीव समास	०	,, जीव समास	०	०	
३ पर्याप्ति	०	,, पर्याप्ति	०	०	
४ प्राण	०	,, प्राण	०	०	
५ संज्ञा	०	,, संज्ञा	०	०	
६ गति	०	गति रहित (सिद्ध गति)	०	०	
७ इन्द्रिय जाति	०	अतीत इन्द्रिय	०	०	
८ काय	०	अकाय	०	०	
९ योग	०	अयोग	०	०	
१० वेद	०	अपगत वेद	०	०	
११ कषाय	०	अकषाय	०	०	
१२ ज्ञान	१	१ केवल ज्ञान	१	१	
१३ संयम	०	असयम-संयमासंयम-संयम ३ से रहित	०	०	
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन	०	०	
१५ लेश्या	०	अलेश्या	०	०	
१६ भव्यत्व	०	अनुभय (न भव्य न अभव्य)	०	०	
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व	०	०	
१८ संज्ञी	०	अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी)	०	०	
१९ आहारक	०	अनुभय (न आहारक न अनाहारक)	०	०	
२० उपयोग	२	२ ज्ञानोपयोग-दर्शनोपयोग (दोनों युगपत्)	०	०	
२१ ध्यान	०	अतीत ध्यान	०	०	
२२ आस्रव	०	आस्रव रहित	०	०	
२३ भाव	५	क्षायिक ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुख (सम्यक्त्व) जीवत्व ये ५ भाव	०	०	

सूचना—कोई आचार्य क्षायिक भाव ६, जीवत्व १ ये १० मानते हैं।

२४ **अवगाहना**— ३॥ हाथ से ५२५ मनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—अबन्ध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**—अनुदय जानना।

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—सत्ता रहित अवस्था जानना।

२८ **संख्या**—अनन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—४५ लाख योजन सिद्ध शिला अपेक्षा जानना।

३० **स्पर्शन**—सिद्ध भगवान् स्थिर रहते हैं।

३१ **काल**—सर्वकाल जानना।

३२ **अन्तर**—कोई अन्तर नहीं।

३३ **जाति (योनि)**—जाति नहीं।

३४ **कुल**—कुल नहीं।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ मिथ्यात्व गुण० जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
२ जीव समास को० नं० ८२ देखो	१४	७ पर्याप्त अवस्था	१ समास	१ समास	७ अपर्याप्त अवस्था	१ समास	१ समास
३ पर्याप्ति को० नं० ८२ देखो	६	६	१ भंग	१ भंग	३ लब्धि रूप ६ भी होता है।	१ भंग	१ भंग
४ प्राण को० नं० ८२ देखो	१०	१०	१ भंग	१ भंग	७	१ भंग	१ भंग
५ संज्ञा को० नं० ८२ देखो	१०	४	१ भंग	१ भंग	४	१ भंग	१ भंग
६ गति को० नं० ८२ देखो	४	४	१ गति	१ गति	४	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० ८२ देखो	५	५	१ जाति	१ जाति	५	१ जाति	१ जाति
८ काय को० नं० ८२ देखो	६	६	१ काय	१ काय	६	१ काय	१ काय
९ योग को० नं० ८२ देखो	१३	१०	१ भंग	१ योग	३	१ भंग	१ योग
१० वेद को० नं० ८२ देखो	३	३	१	१ वेद	३	१	१ वेद
११ कषाय को०नं० ८२ देखो	२५	२५	सारे भंग	१ भंग	२५	सारे भंग	१ भंग

१	२	३	४	५	६	७	८
१२ ज्ञान कौ० नं० ८२ देखो	३	३	सारे भंग	१ ज्ञान	२	सारे भंग	१ ज्ञान
१३ संयम कौ० नं० ८२ देखो	१	१	१	१	१	१	१
१४ दर्शन कौ० नं० ८२ देखो	२	२	१ भंग	१ दर्शन	२	१ भंग	१ दर्शन
१५ लेश्या कौ० नं० ८२ देखो	६	६	१ भंग	१ लेश्या	६	१ भंग	१ लेश्या
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में २ का भंग जानना कौ० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग कौ० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था कौ०नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में २ का भंग जानना कौ०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग कौ०नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था कौ०नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व	१ मिथ्यात्व	१ चारों गतियों में हरेक में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१८ संज्ञी कौ० नं० ८२ देखो	२	२	१	१	२	१	१
१९ आहारक कौ०नं० ८२ देखो	२	१	१	१	२	१	१
२० उपयोग कौ०नं० ८२ देखो	५	५	१ भंग	१ उपयोग	४	१ भंग	१ उपयोग
२१ ध्यान कौ० नं० १८ देखो	८	८	सारे भंग	१ ध्यान	८	सारे भंग	१ ध्यान
२२ आस्रव कौ० नं० ८२ देखो	५५	५२	सारे भंग	१ भंग	४५	सारे भंग	१ भंग
२३ भाव कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्धि ५, गति ४, कषाय ४, लिंग ३,	२४	२४ (१) नरक गति में २६ का भंग कौ०नं० १६ देखो	सारे भंग कौ० नं० १६ देखो	१ भंग कौ०नं० १६ देखो	२३ कुअवधि ज्ञान घटाकर(२३) (१) नरक गति में २५ का भंग कौ० नं० १६ देखो	सारे भंग कौ० नं० १६ देखो	१ भंग कौ०नं० १६ देखो

२	३	४	५	६	७	८
लेश्या ६, मिथ्यादर्शन १ असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, पारिणामिक भाव ३ ये ३४ जानना	(१) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-२७ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ३१-२७ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २५-२७-२४ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२८-२६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३०-२४ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २६-२६-२३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो ।

२५ **बंध प्रकृतियां**— ११७ को० नं० १ देखो ।

२६ **उदय प्रकृतियां**—११७ को० नं० १ देखो ।

२७ **सत्व प्रकृतियां** —१४८ को० नं० १ देखो ।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना ।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना ।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना ।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा सादिमिथ्या दृष्टि अन्तर्मुहूर्त से देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक जानना ।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से १३२ सागर प्रमाण काल तक मिथ्यात्व का उदय न हो सके ।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना ।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना ।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१ सासादन गुण०	१ चारों गतियों में हरेक में १ सासादन गुण० जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ (१) नरक गति में २रे गुण० नहीं होगा (२) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ सासादन गुण० जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१
२ जीव समास	७ संज्ञी पं० पर्याप्त १, अपर्याप्त अवस्था ६ ये ७ जानना	१ संज्ञी पं० पर्याप्त (१) चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवस्था जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को०नं० १६ से १९ देखो	६ अपर्याप्त एकेन्द्रिय सूक्ष्म जीव समास घटाकर शेष (६) (१) तिर्यंच गति में ६-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देव गति में १ का भंग को० नं० १९ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो १ समास को० नं० १८ देखो १ समास को० नं० १९ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो १ समास को०नं० १८ देखो १ समास को०नं० १९ देखो
३ पर्याप्ति	६ को०नं० १ देखो	६ (१) चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	३ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग	१ भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो

चौंतीस स्थान दर्शन | कोष्टक नं० ८५ | सासादन में (सम्यक्त्व मार्गणा का दूसरा भेद)

१	२	३	४	५	६	७	८
					कोष्टक नं० १७-१८-१९ देखो लब्धि रूप ३-५-४ के भंग भी होता।		
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	७ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ के भंगों का विवरण कोष्टक नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) चारों गतियों में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	४ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में ४ का भंग कोष्टक नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १७-१८-१९ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	३ नरक गति छोड़कर शेष तीन गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	५ (१) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति जानना को०नं० १८-१९ देखो	१ जाति को०नं० १७ देखो १ जाति को०नं० १८-१९ देखो	१ जाति को०नं० १७ देखो १ जाति को०नं० १८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
८ काय अग्निकाय, वायुकाय, ये २ घटाकर शेष ३ और त्रसकाय १ ये (४)	४	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को०नं० १६ से १९ देखो	१ काय को० नं० १६ से १९ देखो	१ काय को०नं० १६-१९ देखो	४ स्थावरकाय ३, त्रसकाय १ ये ४ काय जानना (२) तिर्यंच गति में ४-१ के भंग को० नं० १७ देखो (१) मनुष्य-देवगति में १ त्रसकाय जानना को० नं० १८-१९ देखो	१ काय १ काय को०नं० १७ देखो १ काय को० नं० १८-१९ देखो	१ काय १ काय को०नं० १७ देखो १ काय को०नं० १८-१९ देखो
९ योग आ० मिश्रकाययोग १, आहारक काययोग १, ये २ घटाकर (१३)	१३	१० औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ घटाकर (१०) (१) चारों गतियों में हरेक में १ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ योग को० नं० १६ से १९ देखो	३ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ योग जानना (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति ये तीन गतियों में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १७ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १७ से १९ देखो	१ योग को० नं० १७ से १९ देखो
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो	३ (१) नरक गति में सासादन गुण० नहीं होता को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-०-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग को०नं० १८ देखो	० को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	० को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो	(३) देवगति में २-१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) नरक गति में २३ का भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	२५ (१) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२४ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २५-२४ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) मनुष्य गति में २५-२४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(३) मनुष्य गति में २५-२४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) देवगति में २४-२४-२३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
		(४) देवगति में २४-२३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो			
१२ ज्ञान कुज्ञान	३	३ (१) चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग—को० नं० १६ से १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ से १६ देखो	२ कुअवधि ज्ञान घटाकर (२) (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में २-२ के भंग—को० नं० १७-१८-१६ देखो	सारे भंग को० नं० १७-१८-१६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७-१८-१६ देखो
१३ संयम असंयम	१	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १७-१८-१६ देखो	१ को० नं० १७-१८-१६ देखो	१ को० नं० १७-१८-१६ देखो

१	२	३	४	५	५	७	८
१४ दर्शन अचक्षु दर्शन १, चक्षु-दर्शन १ ये (२)	२	२ (१) चारों गतियों में हरेक में २ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ से १९ देखो	२ (१) तिर्यंच गति में १–२–२–२ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य–देवगति में हरेक में २-२ के भंग को० नं० १८–१९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८–१९ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो १ दर्शन को० नं० १८–१९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६–३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६–३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३–३–१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो	६ (१) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ६–१ के भंग को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ३–३-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ भव्य जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
१७ सम्यक्त्व सासादन जानना	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ सासादन जानना	१	१	१ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देव- गति में हरेक में १ सासादन जानना	१	१
१८ संज्ञी संज्ञी असंज्ञी	२	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	२ (१) तिर्यंच गति में १-१ १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में १ का भंग-को० नं० १८ देखो (३) देवगति में १ का भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो १ अवस्था को० नं० १९ देखो
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	२ (१) तिर्यंच-मनुष्य-देवगति में हरेक में १-१ के भंग जानना को० नं० १७-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८- १९ देखो	अवस्था को० नं० १७- १८-१९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ३ दर्शनोपयोग २ ये (५) जानना	५	५ (१) नरक गति में ५ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-५ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-५ के भंग	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो	४ कुअवधि ज्ञान घटाकर (४) (१) तिर्यंच गति में ३-४-४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (२) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो १ उपयोग को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १८ देखो (३) देवगति में ५ का भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो	(३) देवगति में ४-४ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो
२१ ध्यान को० नं० १ देखो	८	८ (१) नरक गति में ८ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ध्यान को०नं० १६ देखो	८ (१) तिर्यंच गति में ८-८ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो
		(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ८-८ के भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ ध्यान को०नं० १७-१८ देखो	(२) मनुष्य गति में ८-८ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो
		(३) देवगति में ८ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान को०नं० १९ देखो	(३) देवगति में ८ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान को०नं० १९ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, आ० मिश्रकाययोग १ आहारक काययोग १ ये ७ घटाकर (५०)	५०	४७ आ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३ घटाकर (४७)	सारे भंग	१ भंग	४० मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, ये १० घटाकर (४०)	सारे भंग	१ भंग
		(१) नरकगति में ४४ का भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(१) तिर्यंच गति में ३२-३३-३४-३५-३८-३९-३८ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ४०-४५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) मनुष्य गति में ३९-३८ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(३) मनुष्य गति में ४६-४५ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) देवगति में ३८-३७ के भंग को०नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में २५-२४ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो			
२३ भाव	३२ को० नं० २ देखो	३२ (१) नरक गति में २४ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २६-२५ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २६-२५ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २३-२५-२२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	३१ कुअवधि ज्ञान घटाकर (३१) (२) तिर्यंच गति में २६-[illegible]-२५-२५-२२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २८-२५ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२४-२१ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से १९ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां – १०१ को० नं० २ देखो।

२६ उदय प्रकृतियां—१११ "

२७ सत्व प्रकृतियां— १४५ आहारकद्विक १, तीर्थंकर प्र० १ ये ३ घटाकर १४५ प्र० का सत्ता जानना।

२८ संख्या—पल्य का असंख्यातवां भाग जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु, १२ राजु, को० नं० २ के समान जानना।

३१ काल नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से पल्य का असंख्यातवां भाग जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से ६ आवली तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से पल्य का असंख्यातवां भाग तक लोक में कोई भी सासादन गुण स्थान वाला नहीं बनता है। एक जीव की अपेक्षा पल्य का असंख्यातवां भाग से देशोन् अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक सासादन गुण स्थान न हो सके।

३३ जाति (योनि)—५६ लाख योनि जानना। (अग्निकाय ७ लाख, वायुकाय ७ लाख, नित्यनिगोद ७ लाख, इतर निगोद ७ लाख ये २८ लाख घटाकर शेष ५६ लाख जानना)

३४ कुल—१८९॥ लाख कोटिकुल जानना। (अग्निकाय ३, वायुकाय ७ ये १० लाख कोटिकुल घटाकर १८९॥ लाख कोटिकुल जानना)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	पर्याप्त: एक जीव के नाना समय में	पर्याप्त: एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त
१	२	३	४	५	६-७-८
१ गुण स्थान	१ ३रा मिश्र गुण स्थान	१ चारों गतियों में—हरेक में ३रा मिश्र गुण० जानना को० नं० १५ से १८ देखो	१ गुण०	१ गुण०	सूचना:—यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है
२ जीव-समास	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	१ चारों गतियों में हरेक में—१ संज्ञी पं० पर्याप्त को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ चारों गतियों में—हरेक में ६ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ १९ से देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	
४ प्राण	१० को० नं० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में—१० का भंग-को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गतियों में हरेक में—४ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	
६ गति	४ को० नं० १ देखो	४ चारों गति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ गति	१ गति	
७ इन्द्रिय जाति	१ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में—१ पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १६ से १९ देखो	१ जाति को० नं० १६ से १९ देखो	१ जाति को० नं० १६ से १९ देखो	
८ काय	१ त्रसकाय	चारों गतियों में हरेक में—१ त्रसकाय को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	

१	२	३	४	५	६-७-८
६ योग १० आ० मिश्रकाय योग १, आ० काय योग १, औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये ५ घटाकर (१०)	१० (१) चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग–को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ योग को० नं० १६ से १६ देखो	
१० वेद ३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में–१ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो	
	(२) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग–को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को० नं० १७ देखो	
	(३) मनुष्य गति में ३-२ के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	
	(४) देवगति में २-१ के भंग–को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ वेद को० नं० १६ देखो	
११ कषाय २१ अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर (२१)	२१ (१) नरक गति में १६ का भंग–को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
	(२) तिर्यंच गति में २१-२० के भंग–को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	
	(३) मनुष्य गति में २१-२० के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
	(४) देवगति में २०-१६ के भंग–को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
१२ ज्ञान ३ कुज्ञान	३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग–को० नं० १६ से १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ से १६ देखो	

चौंतीस स्थान दर्शन | कोष्टक नं० ८६ | मिश्र में (सम्यक्त्व मार्गणाका ३रा भेद)

१ २	३	४	५	६-७-८
१३ संयम ३ असंयम	१ चारों गतियों में हरेक में—१ असंयम जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	१ को० नं० १६ से १६ देखो	
१४ दर्शन ३ केवल दर्शन घटाकर (३)	३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग—को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ से १६ देखो	
१५ लेश्या ६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-३ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १६ देखो	
१६ भव्यत्व १ भव्य	चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना—को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	
१७ सम्यक्त्व १ मिश्र	१ चारों गतियों में हरेक में—१ मिश्र जानना	१	१	
१८ संज्ञी १ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में—१ संज्ञी जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	
१६ आहारक १ आहारक	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना—को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	
२० उपयोग ६ ज्ञानोपयोग ३, दर्शनोपयोग ३ ये ६ जानना	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग—को० नं० १६ से १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ से १६ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
२१ ध्यान को० नं० ६ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ ध्यान को० नं० १६ से १९ देखो	
२२ आस्रव को० नं० ३ देखो	४३	४३ (१) नरक गति में ४० का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ४२-४१ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४२-४१ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४१-४० के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	
२३ भाव को० नं० १ देखो	३३	३३ (१) नरक गति में २५ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३०-२६ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३०-२६ के भंग—को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २४-२६-२३ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से १६ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—७४—को० नं० ३ देखो

२६ उदय प्रकृतियां—१००—को० नं० ३ देखो।

२७ सत्त्व प्रकृतियां—१४७—तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १४७ प्र० का सत्ता जानना।

२८ संख्या—पल्य का असंख्यातवां भाग जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु को० नं० ३ देखो।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से पल्य का असंख्यातवां भाग एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से पल्य का असंख्यातवां भाग एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक मिश्र गुण स्थान न हो सके।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त — नाना जीवों की अपेक्षा	पर्याप्त — एक जीव की अपेक्षा नाना समय में	पर्याप्त — एक जीव की अपेक्षा एक समय में	अपर्याप्त
१		२	३	४	५	६
१	गुण स्थान ४ से ७ तक के गुण०	४	४ (१) नरक गति में ४था गुण स्थान (२) तिर्यंच गति में ४-५ गुण स्थान भोग भूमि में ४था गुण स्थान (३) मनुष्य गति में ४-५-६-७ गुण० भोग भूमि में ४था गुण० (४) देवगति में ४था गुण०	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	सूचना— यहां पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।
२	जीव समास संज्ञी पं० पर्याप्त जानना	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	
३	पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	
४	प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	
५	संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	

१ / २	३	४	५	६-७-८
	(२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	सूचना— यहाँ पर अपर्याप्त अवस्था नहीं होता है।
	(३) मनुष्य गति में ४-३-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	
६ गति ४ को० नं० १ देखो	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	
७ इन्द्रिय जाति १ पंचेन्द्रिय जाति जानना	१ चारों गतियों में हरेक में पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	
८ काय १ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	
९ योग १० मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १ ये (१०)	१० (१) नरक-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ योग को० नं० १६-१९ देखो	
	(२) तिर्यंच गति में २ ९ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो	
	(३) मनुष्य गति में ९-९-९-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो	
१० वेद ३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना	१ को० नं० १६ देखो	१ वेद को०नं० १६ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		को० नं० १६ देखो			
		(२) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	
		(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो	
११ कषाय अनन्तानुबन्धी कषाय ४ घटाकर (२१)	२१	१२ (१) नरक गति में १९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में २१-१७-२० के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति में २ -१७-१३-१३-२० के भंग को० नं १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	
		(४) देवगति में २०-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	
१२ ज्ञान मति-श्रुत-अवधि ज्ञान और मनः पर्यय ज्ञान ये (४)	४	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ३ का भंग को०नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६-१९ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो	

२	३	४	५	६-७-८
	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	
१३ संयम ५ असंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि ये (५)	५ (१) नरक-देवगति में में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६–१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १–१–१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १–१–३–३–१ के भंग को० नं० १८ देखो	४ परिहार विशुद्धि घटाकर (४) को० नं० १६–१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १६–१९ देखो १ संयम को० नं० १७ देखो १ संयम को० नं० १८ देखो	
१४ दर्शन ३ केवल दर्शन घटाकर (३)	३ (१) नरक-देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३–३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३–३–३–३ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६–१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६–१९ देखो १ दर्शन को० नं० १७ देखो १ दर्शन को० नं० १८ देखो	
१५ लेश्या ६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		(२) तिर्यंच गति में ६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति में ६-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	
		(४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो	
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	
१७ सम्यक्त्व प्रथमोपशम सम्यक्त्व	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ प्रथमोपशम सम्यक्त्व जानना	१	१	
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	
१९ आहारक	१ आहारक	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३ ये ७ जानना	७	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ उपयोग को० नं० १६-१९ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में ६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
		(३) मनुष्य गति में ६--- के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	
२१ ध्यान आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, धर्म ध्यान ४ ये (१२) जानना	१२	१२ (१) नरक देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६—१९ देखो	सारे भंग को०नं० १६-१९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१९ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में १०—११-१० के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति म १०—११—३—४—१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	
२२ आस्रव अविरत १२, योग ऊपर के स्थान के १०, (औ० मिश्र०, वै० मिश्र०, आ० मिश्र०, आ०काययोग, कार्मारण काययोग ५ घटाकर १०) कषाय २१ (अनन्तानुबन्धी घटाकर २१) ये (४३)	४३	४२ (१) नरक गति में ४० का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	
		(२) तिर्यंच गति में ४२—३७—४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	
		(३) मनुष्य गति में ४२-३७-२२—२२-४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
		(४) देवगति में ४१—४ —४० के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	
२८ भाव उपशम सम्यक्त्व १, ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, संयमासंयम १, सराग संयम १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३,	३६	३६ (१) नरक गति में २६ का भंग को० नं० १६ के २८ के भंग में से क्षायिक और क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	

१	२	३	४	५	६-७-८
	लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १ ये (३३)	२६ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग में से १ क्षयोपशम सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना	"	"	
		(२) तिर्यंच गति में ३१-२८ के भंग को० नं० १७ के ३२-२९ के हरेक भंग में से १ वेदक सम्यक्त्व घटाकर ३१-२८ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	
		२७ का भंग को० नं० १७ के २९ के (भोग भूमि में) के भंग में से वेदक क्षायिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर २७ का भंग जानना	"	"	
		(३) मनुष्य गति में ३१-२८-२७ के भंग को० नं० १८ के ३३-३०-२९ के हरेक भंग में से क्षायिक-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर ३१-२८-२७ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	
		(४) देवगति में २५ का भंग को० नं० १९ के (भवनत्रिक देव) २६ के भंग में से १ वेदक सम्यक्त्व घटाकर २५ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	
		कल्पवासी नवग्रैं वेदक देवों में २७-२४ के भंग को० नं० १९ के २९-२६ के हरेक भंग में से क्षायिक और वेदक सम्यक्त्व ये २ घटाकर २७-२४ के भंग जानना नव अनुदिश और पंचानुत्तर विमान में यहां उपशम सम्यक्त्व नहीं होना ।	"	"	

२४ अवगाहना— को० नं० १६ से १९ देखो ।

२५ बंध प्रकृतियां—७७–६७–६३–५७ प्रकृति को० नं० ४–५–६–७ के समान जानना परन्तु को०नं० ७ के ५९ प्र० आहारकद्विक २ ये दो घटाकर ५७ प्रकृति जानना ।

२६ उदय प्रकृतियां—९९ को० नं० ४ के १०४ में से गत्यानुपूर्वी ४, सम्यक्त्व प्र० १ ये ५ घटाकर ९९ जानना ।
८६ को० नं० ५ के ८७ में से सम्यक्त्व प्र० १ घटाकर ८६ जानना ।
७८ को० नं० ६ के ८१ में से आयु द्विक २, सम्यक्त्व प्रकृति १ ये ३ घटाकर ७८ जानना ।
७५ को० नं० ७ के ७६ में से सम्यक्त्व प्रकृति १ घटाकर ७५ जानना ।

२७ सत्त्व प्रकृतियां—१४८–१४७– ४६–१४६ को० नं० ४ से ७ के समान जानना ।

२८ संख्या—असंख्यात जानना ।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग, ८ राजु को० नं० २६ के समान जानना ।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से पल्य का असंख्यातवां भाग जानना । एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त तक जानना ।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से ७ अहोरात्र (रातदिन) जानना । एक जीव की अपेक्षा असंख्यात वर्ष से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक प्रथमोपशम सम्यक्त्व नहीं हो सके ।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना । को० नं० २६ देखो

३४ कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना । " "

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त: नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ४ से ११ तक के गुण०	८	८ कर्मभूमि की अपेक्षा (१) मनुष्य गति में ४ से ११ भोगभूमि में—द्वितीयोपशम स० नहीं होता (२) देवगति में द्वितीयोपशम स० नहीं होता	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के गुण० में से कोई १	१ (१) मनुष्य गति में द्वितीयोपशम स० नहीं होता भोगभूमि में—पर्याप्तवत् जानना (२) देवगति में ४ था	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण०
२ जीव समास संज्ञी पं० पर्याप्त अप०	२	१ संज्ञी पं० पर्याप्त (१) मनुष्य गति में १ का भंग–को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १८ देखो	१ समास को० नं० १८ देखो	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त (२) देवगति में—१ संज्ञी पं० अपर्याप्त को० नं० १९ देखो	१ समास को० नं० १९ देखो	१ समास को० नं० १९ देखो
३ पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ (१) मनुष्य गति में कर्मभूमि की अपेक्षा ६ का भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	३ (१) देवगति में ३ का भंग–को० नं० १९ देखो लब्धि रूप ६ का भंग भी	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० (१) मनुष्य गति में १० का भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	७ (१) देवगति में ७ का भंग–को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	(१) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-० के भंग	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	४ (१) देवगति में ४ का भंग	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
६ गति मनुष्य-देवगति	२	को० नं० १८ देखो १ मनुष्य गति जानना को० नं० १८ देखो	१ गति	१ गति	को० नं १९ देखो १ देवगति जानना को० नं० १९ देखो	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति पंचेन्द्रिय जाति	१	१ मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १८ देखो	१	१	१ देवगति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १९ देखो	१	१
८ काय त्रसकाय	१	१ मनुष्य गति में १ त्रसकाय जानना को० नं० १८ देखो	१	१	१ देवगति में १ त्रसकाय जानना को० नं० १९ देखो	१	१
९ योग आ० मिश्रकाय योग १ औ० काय योग १ वै० काय योग १ औ० मिश्रकाय योग १ ये ४ घटाकर (११)	११	९ वै० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये २ घटाकर (९) (१) मनुष्य गति में ९ ९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग १ योग को० नं० १८ देखो	२ वै० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १ ये २ योग जानना देवगति में १-२ के भंग--को० नं० १९ देखो	सारे भंग १ भंग को० नं० १९ देखो	१ योग १ योग को० नं० १९ देखो
१० वेद को० नं० देखो	३	३ (१) मनुष्य गति में ३-३-३-३-३-२-१-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो	१ पुरुष वेद (१) देवगति में १-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर (२१)	२१	२१ (१) मनुष्य गति में २१- ७-१३-१३-७-६-५-४-३-२-१-१-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१९ स्त्री नपुंसक वेद ये २ घटाकर (१९) (१) देवगति में १९-१९-१९ के भंग--को० नं० १९ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१२ ज्ञान केवल ज्ञान घटाकर	४ (४)	४ (१) मनुष्य गति में ३-४-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	३ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (३) (१) देवगति में ३-३ के भंग–को० नं० १९ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान १ ज्ञान को० नं० १९ देखो
१३ संयम परिहार विशुद्धि सं० घटाकर (६)	६	६ (१) मनुष्य गति में १-१-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो	१ असंयम (१) देवगति में १ असंयम जानना को० नं० १९ देखो	१ असंयम	१ असंयम
१४ दर्शन केवल दर्शन घटाकर	३ (३)	३ (१) मनुष्य गति में ३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	३ (१) देवगति में ३-३ के भंग–को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	३ शुभ लेश्या (१) देवगति में ३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ मनुष्य गति में १ भव्य जानना	१	१	१ देवगति में १ भव्य जानना	१	१
१७ सम्यक्त्व द्वितीयोशम सम्यक्त्व	१	१ मनुष्य गति में १ द्वितियोपशम सम्यक्त्व जानना	१	१	१ देवगति में १ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व जानना	१	१
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ मनुष्य गति में १ संज्ञी जानना को० नं० १८ देखो	१	१	१ देवगति में १ संज्ञी जानना को० नं० १९ देखो	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
१९ आहारक आहारक- अनाहारक	२	१ मनुष्य गति में १ आहारक जानना को० नं० १८–१९ देखो	१	१	१ देवगति में १-१ के भंग जानना को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३ ये ७ जानना	७	७ (१) मनुष्य गति में ६-७-७ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	६ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (६) (१) देवगति में ६–६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो
२१ ध्यान एकत्व वितर्क अविचार, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति व्युपरत क्रिया नि० ये ३ घटाकर (१३)	१३	१३ (१) मनुष्य गति में १०-११-७-४-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	९ आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, आज्ञा विचय धर्मध्यान १, ये ९ ध्यान जानना (१) देवगति में ९ का भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ध्यान को०नं० १९ देखो
२२ आस्रव अविरत १२, योग ११, कषाय २१ ये (४४	४४	४४ (१) मनुष्य गति में ४२-३७-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१०-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	३५ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, ये ९ घटाकर (३५) (१) देवगति में ३३-३३-३२ के भंग को०नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
२३ भाव को० नं० ८७ देखो	३६	१ (२) मनुष्य गति में ३१-२८-२८-२६ के भंग को० नं० १८ के ३३-३०-३१-३१ के हरेक भंग में	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	२६ क्षायिक सम्यक्त्व १, वेदक सम्यक्त्व १, मनः पर्यय ज्ञान १, स्त्री-पुरुष वेद २	सारे भंग	१ भंग

कोष्टक नं० ८८ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में

१	२	३	४	५	६	७	८
		से क्षायिक-क्षयोपशमिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर ३१-२८-२६-२६ के भंग जानना २८-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२० के भंग--को० नं० १८ के २९-२९-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२३-२१ के हरेक भंग में से क्षायिक सम्यक्त्व घटाकर २८-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२१-२० के भंग जानना	"	"	संयमासंयम १, सरागसंयम १, अशुभ लेश्या ३ ये १० घटाकर (२६) (२) देवगति में २६-२४ के भंग--को० नं० १९ के (कल्पवासी-नवग्रै०) ८-२६ के हरेक भंग में से क्षायिक-क्षायोपशमिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर २६-२४ के भंग जानना २४ का भंग--को० नं० १९ के (नव अनुदिश-पंचानुत्तर के) २६ के भंग में से क्षायिक-क्षयोपशमिक ये २ घटाकर २४ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो "	१ भंग को० नं० १९ देखो "

२४ अल्पबहुत्व—को० नं० १८-१९ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—४ से ११वे गुण० में क्रम से ७७-६७-६३-५९-५८-२२-१७-१ प्र० का बंध जानना। को० नं० ४ से ११ के समान जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—९४ ४थे गुण० के १०४ में से नरक-तिर्यंच-मनुष्य गत्यानुपूर्वी ३, नरक गति १, तिर्यंच गति १, नरकायु १, तिर्यंचायु १, औ० मिश्रकाय योग १, स्त्री वेद १, नपुंसक वेद १, ये १० घटाकर ९४ प्र० का उदय जानना। ५ से ११वे गुण० में क्रम से ८७-८१-७६-७२-६६-६०-५९ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—४ से ११वे गुण० में क्रम से १४८-१४७-१४६-१४६-१४२-१४२-१४२-१४२ प्र० का सत्व जानना।

२८ संख्या—संख्यात जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से वर्ष पृथक्त्व जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से अन्तर्मुहूर्त जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा एक समय से वर्ष पृथक्त्व जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक द्वितीयोपशम सम्यक्त्व न हो सके।

३३ जाति (योनि)—१८ लाख योनि जानना। (१४ लाख मनुष्य की, ४ लाख देवों की ये १८ लाख जानना।

३४ कुल—४० लाख कोटिकुल जानना। (मनुष्य के १४, देवगति के २६ ये ४० लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ४ से ७ तक के गुण०	४	४ (१) नरक गति में ४था (२) तिर्यंच गति में ४-५ भोग भूमि में ४था (३) मनुष्य गति में ४ से ७ भोग भूमि में ४था (४) देवगति में ४था	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुण० जानना	२ (१) नरक गति में ४था (२) तिर्यंच गति में — भोग भूमि में ४था (३) मनुष्य गति में ४-६ भोग भूमि में ४था (४) देवगति में में ४था	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंग जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुण० जानना
२ जीव समास संज्ञी पं० पर्याप्त अपर्याप्त	२	१ संज्ञी पं० पर्याप्त चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को०नं० १६ से १९ देखो	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ समास को०नं० १६-१८-१९ देखो
					(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो
३ पर्याप्ति को०नं० १ देखो	६	६ (१) चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ३ का भंग को० नं० १७ देखो लब्धि रूप ६ का भंग भी	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण को० नं० १ देखो	१०	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	७ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ७ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८- १९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८- १९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक देव-गति में हरेक में ४ का भंग को०नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-३-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६- १९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ४ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६- १९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो
६ गति को०नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति

२	३	४	५	६	७	८
७ इन्द्रिय जाति १ पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १ पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१८-१९ देखो १ को० नं० १७ देखो	१ को०नं० १६-१८-१९ देखो १ को०नं० १७ देखो
८ काय १ त्रसकाय	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को०नं १६ से १९ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
९ योग १५ को० नं० २६ देखो	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११) (१) नरक देव-गति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ९-९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ९-९-९-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १६-१९ देखो १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो	४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग, कार्माण का-योग १ ये ४ योग जानना (१) नरक-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	१ योग को० नं० १६-१९ देखो १ योग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(२) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो सूचना:—पेज ६४० नं० पर देखो	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो १ वेद को० नं० १९ देखो	२ स्त्री-वेद घटाकर (२) (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १ पुरुष वेद जानना को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर (२१)	२१	२१ (१) नरक गति में १९ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २१-१७-२० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २१-१७-१३-११-१३-२० के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो	२० स्त्री वेद घटाकर (२०) (१) नरक गति में १९ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में १९ का भंग- को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १९-११-१९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(४) देवगति में २०-१६-१६ के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(४) देवगति में १६-१६-१६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
१२ ज्ञान केवल ज्ञान घटाकर (४)	४	४ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३ के भंग को०नं० १८ देखो (४) देवगति में ३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो १ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान को०नं० १८ देखो १ ज्ञान को०नं० १६ देखो	३ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (३) (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ३ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३ ३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो १ ज्ञान को०नं० १७ देखो १ ज्ञान को०नं० १८ देखो १ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम सूक्ष्म सांपराय १, यथाख्यात १ ये २ घटाकर (५)	५	५ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को०नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १६-१६ देखो १ संयम को०नं० १७ देखो १ संयम को०नं० १८ देखो	४ संयमासंयम घटाकर (४) (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १ असंयम जानना को० नं० १७ देखो	१ को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो
१४ दर्शन केवल दर्शन घटाकर	३	३ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३ का भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो १ दर्शन को० नं० १७ देखो १ दर्शन को० नं० १८ देखो १ दर्शन को० नं० १९ देखो	३ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में—३ का भंग—को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो १ दर्शन को० नं० १७ देखो १ दर्शन को० नं० १८ देखो १ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में—३ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो १ लेश्या को० नं० १७ देखो १ लेश्या को० नं० १८ देखो १ लेश्या को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१६ भव्यत्व	१ भव्य	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्य जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१७ सम्यक्त्व	१ क्षयोपशम सम्यक्त्व	१ चारों गतियों में हरेक में १ क्षयोपशम जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६ से १६ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
१६ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	१ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१- के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ के भंग को०नं० १८ देखो	१ को०नं० १६ १६ देखो १ को०नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ को०नं० १६-१६ देखो १ को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १-१ के भंग को०नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १६-१६ देखो १ को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ४, दर्शनोपयोग ३, ये ७ जानना	७	७ (१) नरक गति में ६ का भंग को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-६ के भंग	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो	६ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (६) (१) नरक गति में ६ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-७-६-७-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ६ का भंग—को० नं० १९ देखो	 सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	 १ उपयोग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में—६ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ६-६ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को० नं० १७ देखो १ उपयोग को० नं० १८ देखो १ उपयोग को० नं० १९ देखो
२१ ध्यान आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, धर्मध्यान ४ ये (१२) ध्यान जानना	१२	१२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १० का भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-११-१० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०-११-७-८-१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १६-१९ देखो १ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १८ देखो	१२ (१) नरक-देवगति में ९ का भंग—को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में—९ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ९-७-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १६-१९ देखो १ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १८ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अनन्तानुबंधी कषाय ४, ये ९ घटाकर (४८)	४८	४४ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १ ये ४ घटाकर (४४) (१) नरक गति में ४० का भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो	३६ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काय योग १, वै०काय योग १, आ० काययोग १, स्त्री वेद १, ये १२ घटाकर (३६) (१) नरक गति में ३३ का भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ४२-३७-४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ३३ का भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ४२-३७-२२-२०-२२-४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३३-३२-३३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ४१-४०-४० के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३३-३३-३२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
२३ भाव	३७ वेदक सम्यक्त्व १, ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५, संयमासंयम १, सराग संयम १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, जीवत्व १, भव्यत्व १, ये ३७ भाव जानना	३५ (१) नरक गति में २६ का भंग को० नं० १६ के २८ के भंग में से उपशम क्षायिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना २६ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग में से १ उपशम सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो "	१ भंग को०नं० १६ देखो "	३४ मनः पर्यय ज्ञान १, संयम संयम १, स्त्रीवेद १ ये ३ घटाकर (३४) (१) नरक गति में २६ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग में से क्षायिक सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना	सारे भंग सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३१-२८-२८ के भंग को० नं० १७ के ३२-२९- २९ हरेक भंग में से उपशम सम्यक्त्व घटाकर ३१-२८- २८ के भंग जानना	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा २४ का भंग को० नं० १७ के २५ के भंग में से क्षायिक सम्यक्त्व १ घटाकर २४ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३१-२८-२९ के भंग को० नं० १८ के ३२-३०-३१	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २९-२६-२४ के भंग को० नं० १८ के ३०-	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३		५	६	७	८
		के हरेक भंग में से उपशम-क्षायिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर ३१-२८-२९ के भंग जानना			२७-२५ के हरेक भंग में से १ क्षायिक सम्यक्त्व घटाकर २६-२६-२४ के भंग जानना		
		२६ का भंग को० नं० १८ के २७ के भंग में से १ क्षायिक सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना	,,	,,	(४) देवगति में २६-२४-२४ के भंग को० नं० १९ के २८-२६-२६ के हरेक भंग में से उपशम और क्षायिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर २६-२४-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
		२९-२७ के भंग को० नं० १८ के ३१ (७वें गुण० के) और भोग भूमि के २९ के भंग में से उपशम-क्षायिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर २९-२७ के भंग जानना	,,	,,			
		(४) देवगति में २५ का भंग को० नं० १९ के २६ के भंग में से १ उपशम-सम्यक्त्व घटाकर २३ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो			
		२७-२४ के भंग को० नं० १९ के २९-२६ के हरेक भंग में से उपशम-क्षायिक ये २ सम्यक्त्व घटाकर २७-२४ के भंग जानना	,,	,,			
		२४ का भंग को० नं० १९ के २५ के भंग में से १ क्षायिक सम्यक्त्व घटाकर २४ का भंग जानना	,,	,,			

सूचना—अपर्याप्त अवस्था में वेदक सम्यक्त्व सहित मरने वाला जीव नियम से कल्पवासी देव ही बनता है। परन्तु अपर्याप्त अवस्था में मनुष्य और तिर्यंच गति का उदय उन्हीं जीवों में हो सकता कि जिन्होंने वेदक सम्यक्त्व प्राप्त करने से पहले मनुष्य आयु या तिर्यंच आयु बन्ध रखी हो, सो नियम से भोग भूमि के मनुष्य या तिर्यंच ही बनते हैं (देखो गो० क० ५०)

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से १६ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—७७-६७-६३-५६ को० नं० ४ से ७ के समान जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—१०४-८७-८१-७६ " " "

२७ सत्व प्रकृतियां—१४८-१४७-१४६-१४६ " " "

२८ संख्या—असंख्यात जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन—लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु, को० नं० २६ के समान जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से ६६ सागर काल तक निरन्तर वेदक सम्यक्त्व रह सकता है।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से देशोन् अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक क्षयोपशम सम्यक्त्व न हो सके।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना। (को० नं० २६ देखो)

३४ कुल—१०८॥ लाख कोटिकुल जानना। " "

क्र०	स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
			नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१		२	३	४	५	६	७	८
			सूचना :- पेज नं० ६६९ पर देखो					
१	गुण स्थान ४ से १४ तक के गुण०	११	११ (१) नरक गति में ४था (२) तिर्यंच गति में ४ भोगभूमि में ४था (३) मनुष्य गति में ४ से १४ भोगभूमि में ४था (४) देवगति में ४था	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण स्थान जानना	३ (१) नरक गति में ४था (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में ४था (३) मनुष्य गति में ४-६-१३ भोगभूमि में ४था (४) देवगति में ४ था	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२	जीव समास संज्ञी पं० पर्याप्त अप०	२	१ पर्याप्त अवस्था चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० ६ से १८ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में और तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ और १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ और १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ और १७ देखो
३	पर्याप्ति को० नं० १ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग-को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में और तिर्यंच गति में भोगभूमि की अपेक्षा ३ का भंग-को० नं० १६-१८-१९-१७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९-१७ देखो	१ भंग को० नं० १६-१८-१९-१७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					लब्धि रूप ६ का भंग भी होता है		
४ प्राण कों० नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-देवगति में हरेक में १० का भंग—कों० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १० का भंग कों० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०-४-१-१० के भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो सारे भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो १ भंग कों० नं० १८ देखो	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ७ का भंग कों० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में—७ का भंग कों० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ७-२-७ के के भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो सारे भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो १ भंग कों० नं० १८ देखो
५ संज्ञा कों० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग—कों० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ४ के भंग—कों० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो सारे भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो १ भंग कों० नं० १८ देखो	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में—४ का भंग कों० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में—४ का भंग कों० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-०-४ के भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो १ भंग कों० नं० १८ देखो	१ भंग कों० नं० १६-१९ देखो १ भंग कों० नं० १७ देखो १ भंग कों० नं० १८ देखो
६ गति कों० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति संज्ञी पं० जाति	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति कों० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१

 कोष्टक नं० ६०

१	२	३	४	५	५	७	८
८ काय	१ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
९ योग	१५ को० नं० २६ देखो	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (११) (१) नरक-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ९-९-९-९ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग १ योग को० नं० १६-१९ देखो १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो	४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ योग जानना (१) नरक-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२-१-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग १ योग को०नं० १६-१९ देखो १ योग को०नं० १७ देखो १ योग को०नं० १८ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-२-१-३-३ २- [illegible]-२ के भंग	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो १ वेद को०नं० १८	२ पुरुष-नपुंसक वेद (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १ पुरुष वेद जानना को० नं० १७ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ को०नं० १६ देखो १ वेद को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १९ देखो	(३) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१ के भंग-को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को० नं० १८ देखो १ वेद को० नं० १९ देखो
११ कषाय	२१ अनन्तानुबन्धी कषाय ४ घटाकर (२१)	२१ (१) नरक गति में १९ का भंग-को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में २० के भंग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में २१-१७-१३-११-१३-७-६- ५-४-३-२-१-०-२० के भंग-को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २०-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	२० स्त्रीवेद घटाकर (२०) (१) नरक गति में १९ का भंग-को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में- १९ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १९-१०-१९ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १९-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो
१२ ज्ञान	५ कुज्ञान ३ घटाकर (५)	५ (१) नरक गति में ३ का भंग-को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ का भंग-को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-४-३-४-१ के भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो १ ज्ञान को० नं० १८ देखो	४ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (४) (१) नरक गति में ३ का भंग-को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में ३ का भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो १ ज्ञान को० नं० १७ देखो

२	३	४	५	६	७	८
	को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो	को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो १ ज्ञान को०नं० १६ देखो
१३ संयम ७ को० नं० २६ देखो	७ (१) नरक-देवगति में में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ संयम को०नं० १७ देखो १ संयम को०नं० १८ देखो	५ संयमासंयम, सूक्ष्म सांप- राय ये २ घटाकर (५) (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १ असंयम जानना को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १६-१६ देखो १ संयम को०नं० १७ देखो १ संयम को०नं० १८ देखो
१४ दर्शन ४ को० नं० १८ देखो	४ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो १ दर्शन को०नं० १७ देखो	४ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो १ दर्शन को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ६-३-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	४ कृष्ण-नील ये २ लेश्या घटाकर (४) जानना (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि की अपेक्षा १ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में १ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-३-१-०-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-३-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३-१-१ के भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	१ भव्यत्व	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्यत्व जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ चारों गतियों में हरेक में १ भव्यत्व जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व क्षायिक सम्यक्त्व	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ क्षायिक सम्यक्त्व जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
		तिर्यंच गति भोगभूमि की अपेक्षा जानना					
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ (१) नरक-तिर्यंच देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१७-१६ देखो (२) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१७-१६ देखो १ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१७-१६ देखो १ को० नं० १८ देखो	१ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१७-१६ देखो (२) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग-को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१७-१६ देखो १ को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१७-१६ देखो १ को० नं० १८ देखो
१६ आहारक	२ आहारक, अनाहारक	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १ अवस्था जानना को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ १ अवस्था को० नं० १८ देखो	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १-१ अवस्था को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोगभूमि में १-१ अवस्था जानना को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो १ को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१६ देखो १ को० नं० १७ देखो १ अवस्था को० नं० १८ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ५ दर्शनोपयोग ४ ये (९) जानना	६	६ (१) नरक गति में ६ का भंग-को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो	८ मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (८) (१) नरक गति में ६ का भंग	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-७-६-७-२-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति मे ६ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १६ देखो	को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ६ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-६-२-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ६-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १६ देखो
२१ ध्यान को० नं० १८ देखो	१३	१६ (१) नरक-देवगति में हरेक में १० का भंग को०नं० १६—१६ देखो (२) तिर्यंच गति में १० का भंग को०नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०—११—७—४—१-–१-–१— १—१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १६— १६ देखो १ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो	१३ पृथक्त्व वितर्क विचार १, एकत्व वितर्क अविचार १, व्युपरित क्रियानिवर्तिनी १, ये ३ घटाकर (१३) (१) नरक-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ६ का भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-७-१-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १६- १६ देखो १ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अनन्तानुबन्धी कषाय ४ ये ९ घटाकर (४८)	४८	४४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (४४)	सारे भंग	१ भंग	३६ मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आ० काययोग १, स्त्री वे० १ ये १२ घटाकर (३६)	सारे भंग	१ भंग
		(१) नरक गति में ४० का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में ३३ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में ३३ का भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ४२–३७–२२–२०–१२– १६–१५–१४–१३–१२– ११–१०–१०–९–५–२– ०–४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३३-१२-२-१-३३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ४१-४०-४० के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३३-३३-३२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
२३ भाव क्षायिक भाव ९, ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५, संयमा- संयम १, सराग- संयम १, गति ४, कषाय ४, लिंग ३, लेश्या ६, असंयम १,	४५	४५ (१) नरक गति में २६ का भंग को० नं० १६ के २८ के भंग में से उपशम क्षयोप- शम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	४० मनः पर्यय ज्ञान १, संयमासंयम १, स्त्रीवेद १ कृष्ण-नील ये २ लेश्या ये ५ घटाकर (४०) (१) नरक गति में २६ का भंग को० नं० १६ के २७ के भंग में से १ क्षयोपशम सम्यक्त्व घटाकर २६	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में भोग भूमि में २७ का भंग को०नं० १७ के २९ के भंग	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो			

१	२	३	४	५	६	७	८
	अज्ञान १, असिद्धत्व १, भव्यत्व १, जीवत्व १, ये ४५ जानना	में से उपशम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २७ का भंग जानना			का भंग जानना		
		(१) मनुष्य गति में ३१-२८-२९ के भंग—को० नं० १८ के ३३-३०-३१ के हरेक भंग में से उपशम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर ३१-२८-२९ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(२) तिर्यंच गति में २४ का भंग—को० नं० १७ के २५ के भंग में से १ क्षयोपशम सम्यक्त्व घटाकर २४ का भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		२६ का भंग—को० नं० १८ के २७ के भंग में से १ क्षयोपशम सम्यक्त्व घटाकर २६ का भंग जानना	,,	,,	(३) मनुष्य गति में २९-२६ के भंग—को० नं० १८ के ३०-२७ के हरेक भंग में से १ क्षयोपशम सम्यक्त्व घटाकर २९-२६ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		२९ के भंग—को० नं० १८ के ३१ के भंग में से उपशम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २९ का भंग जानना	,,	,,	१४ का भंग—को० नं० १८ के समान जानना	,,	,,
		२८-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२२-२. के भंग को० नं० २९-२९-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२३-२१ के हरेक भंग में से १ उपशम सम्यक्त्व घटाकर २८-२८-२७-२६-२५-२४-२३-२२-२२-२० के भंग जानना	,,	,,	२४ का भंग—को० नं० १८ के २५ के भंग में से १ क्षयोपशम सम्यक्त्व घटाकर २४ का भंग जानना	,,	,,
			,,		(४) देवगति में २६-२४ के भंग—को० नं० १९ के २८-२६ के हरेक भंग में से उपशम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २६-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		२०-१४-१३ के भंग—को० नं० १८ के समान जानना	"	"	२४ का भंग—को० नं० १९ के २६ के भंग (नव अनुदिश और पंचानुत्तर) में से उपशम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २४ का भंग जानना	"	"
		२७ का भंग—को० नं० १८ के २९ के भंग में से उपशम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २७ का जानना	"	"			
		(४) देवगति में २७-२४ के भंग—को० नं० १९ के २९-२६ के हरेक भंग में से उपशम-क्षयोपशम ये २ सम्यक्त्व घटाकर २७-२४ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो			
		२४ का भंग—को० नं० १९ के २५ के भंग में से १ क्षयोपशम सम्यक्त्व घटाकर २४ का भंग	"	"			

सूचना— क्षायिक सम्यग्दर्शन में निश्चय करके ही कर्मभूमि के [illegible] नहीं [illegible] गोम्मटसार कर्मकांड गाथा २७१ देखो।

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से १९ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—को० नं० ४ से १३ के समान जानना।

२६ उदय प्रकृतियां— " " "

२७ सत्व प्रकृतियां— " " "

२८ संख्या—असंख्यात जानना।

२९ क्षेत्र— लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३० स्पर्शन— लोक का असंख्यातवां भाग जानना।

३१ काल— नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा एक समय से साधिक ३३ सागर काल प्रमाण जानना।

३२ अंतर— कोई अन्तर नहीं।

३३ जाति (योनि)—२६ लाख योनि जानना।

३४ कुल—९९ लाख कोटिकुल जानना। (नारकी २५, देव २६, मनुष्य १४, तिर्यंच में नभचर १२, स्थलचर १०, [illegible] ये ३१ मिलकर ९९ लाख कोटिकुल जानना।)

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान ४ से १२ तक के गुण०	१२	१२ (१) नरक गति में १ से ४ (२) तिर्यंच गति में १ से ५ भोग भूमि में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से १२ भोग भूमि में १ से ४ (४) देवगति में १ से ४	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे भंगों में से कोई १ गुण० जानना	४ (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तिर्यंच गति में १–२ भोग भूमि में १–२–४ (३) मनुष्य गति में १–२–४–६ भोग भूमि में १–२–४ (४) देवगति में १–२–४	सारे गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीव समास संज्ञी पं० पर्याप्त अपर्याप्त	२	१ संज्ञी पं० पर्याप्त अवस्था चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को०नं० १६ से १९ देखो	१ संज्ञी पं० अपर्याप्त अवस्था चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को०नं १६ से १९ देखो	१ समास को० नं० १६ से १९ देखो	१ समास को०नं० १६ से १९ देखो
३ पर्याप्ति को०नं० १ देखो	६	६ चारों गतियों में हरेक में ६ का भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	३ चारों गतियों में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो लब्धि रूप ६ का भंग भी होता है।	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो

१ / २	३	४	५	६	७	८
४ प्राण १० कों०नं० १ देखो	१० चारों गतियों में हरेक में १० का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	७ चारों गतियों में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो
५ संज्ञा ४ को० नं० १ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो	४ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१७-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१७-१९ देखो
	(२) मनुष्य गति में ४-३-२-१-१-०-४ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) मनुष्य गति में ४-४ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
६ गति ४ को० नं० १ देखो	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
८ काय १ त्रसकाय	१ चारों गतियों में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१
९ योग १५ को० नं० २६ देखो	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण का० योग १ ये ४ योग घटाकर (११)	१ भंग	१ योग	४ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये ४ योग जानना	१ भंग	१ योग

१	२	३	४	५	६	७	८
		(१) नरक-देवगति में हरेक में ९ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो	को०नं० १६-१९ देखो	(१) नरक-देवगति में हरेक में १-२ के भंग को० नं० १६-१९ देखो	को०नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ९-९ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो	(१) तिर्यंच गति में १-२-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ योग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ९-९-९-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो	(४) मनुष्य गति में १-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग को०नं० १८ देखो
१० वेद को०नं० १ देखो	३	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१	१	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो	१	१
		(२) तिर्यंच गति में ३-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३-३-१-३-३-२-१-०- २ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ३-१-१-२-१ भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो
		( ) देवगति में २-१-१ के भंग को०नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

कोष्टक नम्बर ६१

संज्ञी में

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में २५-२५-२१-१७-२४-२० के भंग—को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २५-४ -२८-१९ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१३-११-२३-७-३-४-४-३-२-१-१-०-२४-२० भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २५-१९-११-२४-१९ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २४-२०-२३-१९-१९ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २४-२४-१९-२३-१९-१९ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
१२ ज्ञान केवल ज्ञान घटाकर (७)	७	७ (१) नरक गति में ३-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो	५ कुअवधि ज्ञान मनःपर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (५) (१) नरक गति में २-२ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २-२-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४-३-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-२-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-२-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १९ देखो
१३ संयम को० नं० २६ देखो	७	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना	१ को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	४ असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना परिहार	१	१

१	२	३	४	५	६	७	८
		को०नं० १६-१९ देखो			विशुद्धि ये ४ जानना (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को०नं० १६-१९ देखो	को० नं० १६-१९ देखो	को०नं० १६-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-३-१-१-१ के भंग को० नं० १ - देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो
१४ दर्शन को० नं० १६ देखो	३	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में २-३ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में २-३-३-३-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-३-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो
१५ लेश्या को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो	१ भं को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ लेश्या को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ६-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ६-३-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ लेश्या को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को० नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो	चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग—को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० २६ देखो	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १-२ के भंग-को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१-२-१-१-१-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-१-२-३ २-३-१-१-१-१-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-१-२-२-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में १-१-१-२-३-२ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में १-१-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १९ देखो
१८ संज्ञी	१ संज्ञी	१ चारों गतियों में हरेक में १ संज्ञी जानना	१	१	१ पर्याप्तवत् जानना	१	१

 कोष्टक नं० ६१

१	२	३	४	५	६	७	८
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	१ आहारक चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को०नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में १- की अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो	दोनों अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ७, दर्शनोपयोग ३, ये १० जानना	१०	१० (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो	८ कुअवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान घटाकर (८) (१) नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ५-६-६-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ४-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७-५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४-६-६-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १९ देखो
२१ ध्यान सूक्ष्म क्रिया प्र० १ व्युपरत क्रिया नि० १ ये २ घटाकर (१४)	१४	१४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ८-९-१० के भंग को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१९ देखो	१२ पृथक्त्व वितर्क विचार, एकत्व वितर्क अविचार, ये २ घटाकर (१२) (१) नरक-देवगति में हरेक में ८-९ के भंग को० नं० १६-१९ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ८-९-१० ११-८-९-१० के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ध्यान को०नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-७-४-१-४-८-९-१० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ८-९-७-८-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव को० नं० ५१ देखो	५७	५३ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ४ घटाकर (५३)	सारे भंग	१ भंग	मनोयोग ४, वचनयोग ४, औ० काययोग १, वै० काययोग १, आ० काययोग १, ये ११ घटाकर (४६)	सारे भंग	१ भंग
		(१) नरक गति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(१) नरक गति में ४६-३९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में ५१-४६-४२-३७-५०-४५-४१ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में ४४-३९-४३-३८-३३ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ५१-४६-४२-३७-२२-२०-२२-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-१०-९-५०-४५-४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में ४४-३९-३२-१२-१२-३८-३३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ५०-४५-४१-४९-४४-४०-४० के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो	(४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३३ के भंग को०नं० १९ देखो	सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
२३ भाव केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १, क्षायिक लब्धि ५ ये ७ घटाकर (४६)	४६	४६ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	४१ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, मिश्र-	सारे भंग	१ भंग

१	२	३	४	४	५	६	८
		को० नं० १६ देखो			सम्यक्त्व १, संयमा-संयम १, क्षायिक-चारित्र १ ये ५ घटाकर (४१)		
		(२) तिर्यंच गति में २१–२६–३०–३२–२६–२७–२५–२६ २६ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	(१) नरक गति में २५–२७ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३१–२६–३०–३३–३०–३१–२७– १–२६ २६–२८–२७–२६–२५–२४–२३–२३–२१–२०–२७–२५–२६–२६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) तिर्यंच गति में २७–२६–२४–२२–२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(४) देवगति में २५–२३–२४–२६–२७–२५–२६–२६–२४–२२–२३–२८–२५ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	(३) मनुष्य गति में ३०–२८–३०–२७–२४–२२–२५ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २६–२४–०–२६–२४–२८–२३–२१–२७–२६ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो

२४ अवगाहना— को० नं० १६ से १६ देखो ।

२५ बंध प्रकृतियां— १२० भंगों का विवरण को० नं० १ से १२ के समान जानना ।

२६ उदय प्रकृतियां— ११३ उदययोग्य १२२ में से एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १, अपर्याप्त १ ये ९ घटाकर ११३ जानना । इसका विवरण १ले गुण० में १०८ को० नं० १ के ११७ में से ऊपर की ९ प्रकृतियां घटाकर १०८ जानना, २रे गुण० में १०६ को० नं० २ के १११ में से एकेन्द्रियादि जाति ४, स्थावर १ ये ५ घटाकर १०६ जानना, ३रे से १२ गुण० में शेष भंगों का विवरण को० नं० ३ से १२ के समान जानना ।

२७ सत्व प्रकृतियां— १४८ भंगों का विवरण को० नं० १ से १२ के समान जानना ।

२८ संख्या— असंख्यात जानना ।

२९ क्षेत्र— लोक का असंख्यातवां भाग जानना ।

३० स्पर्शन— लोक का असंख्यातवां भाग ८ राजु, सर्वलोक को० नं० २६ के समान जानना ।

३१ काल— नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना । एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव से नवसौ (९००) सागर काल प्रमाण जानना ।

३२ अन्तर— नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं । एक जीव की अपेक्षा क्षुद्रभव ग्रहण काल से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक संज्ञी न बन सके ।

३३ जाति (योनि)— २६ लाख योनि जानना । (को० नं० २६ देखो)

३४ कुल— १०८॥ लाख कोटिकुल जानना । " "

चौंतीस स्थान दर्शन

कोष्टक नं० ९२

असंज्ञी में

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	२ मिथ्यात्व सासादन	१ मिथ्यात्व (१) तिर्यंच गति में १ मिथ्यात्व जानना	१	१	२ (१) तिर्यंच गति में १-२ गुण स्थान जानना	गु स्थान	१ गुण०
२ जीव समास	१२ संज्ञी पंचेन्द्रिय के पर्याप्त-अपर्याप्त ये २ घटाकर (१२)	६ पर्याप्त अवस्था (१) तिर्यंच गति में ६ जीव समास पर्याप्त जानना को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो	६ अपर्याप्त अवस्था (१) तिर्यंच गति में ६ जीव समास अपर्याप्त जानना को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को०नं० १७ देखो
३ पर्याप्ति	५ मन पर्याप्ति घटाकर (५)	५ (१) तिर्यंच गति में ५-४ के भंग जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	३ (१) तिर्यंच गति में ३ का भंग को०नं० १७ देखो लब्धि रूप ६-५-४ के भंग भी होते हैं।	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण	९ मनोबल प्राण घटाकर (९)	(१) तिर्यंच गति में ९-८-७-६-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	७ वचनबल, श्वासोच्छ्वास, ये २ घटाकर (७) (१) तिर्यंच गति में ७-६-५-४-३ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	४ (१) तिर्यंच गति में ४ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग	४ पर्याप्तवत् जानना	१ भंग ४ का भंग	१ भंग ४ का भंग

कोष्टक नं० ९२ असंज्ञी में

१	२	३	४	५	६	७	८
६ गति	१	१ तिर्यंच गति में	१	१	१	१	१
७ इन्द्रिय जाति १ से असंज्ञी पं० पर्याप्त	५	५ (१) तिर्यंच गति में ५ एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १७ देखो	१ जाति	१ जाति	५ (१) तिर्यंच गति में ५ असंज्ञी पं० तक पांचों ही जाति जानना को० नं० १७ देखो	१ जाति	१ जाति
८ काय को० नं० १ देखो	६	६ (१) तिर्यंच गति में ६ का भंग को० नं० १७ देखो	१ काय	१ काय	६ (१) तिर्यंच गति में ६–४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय	१ काय
९ योग औ० मिश्रकाययोग १, औ० काययोग १, कार्माण काययोग १, अनुभय वचनयोग १, ये ४ योग जानना	४	२ औ० काययोग १, अनुभय वचन योग १ ये २ जानना (१) तिर्यंच गति में २–१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग १ भंग	१ योग १ योग	२ औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १, ये २ योग जानना (१) तिर्यंच गति में १–२ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग १ भंग	१ योग १ योग
१० वेद को० नं० १ देखो	३	३ (१) तिर्यंच गति में १–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ वेद	३ (१) तिर्यंच गति में १–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ वेद
११ कषाय को० नं० १ देखो	२५	२५ (१) तिर्यंच गति में २३-२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग	१ भंग	२५ (१) तिर्यंच गति में २३-२४-२३-२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग	१ भंग
१२ ज्ञान कुमति-कुश्रुत	२	२ (१) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ ज्ञान	२ (१) तिर्यंच गति में २ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ ज्ञान

२	३	४	५	६	७	८
१३ संयम १ असंयम	१ (१) तिर्यंच गति में १ असंयम जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ संयम	१ पर्याप्तवत् जानना	१ भंग	१ संयम
१४ दर्शन २ अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन ये (२)	२ (१) तिर्यंच गति में १-२ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ दर्शन	२ पर्याप्तवत् जानना	१ भंग	१ दर्शन
१५ लेश्या ३ अशुभ लेश्या	३ (१) तिर्यंच गति में ६ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ लेश्या	३ ३ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ लेश्या
१६ भव्यत्व २ भव्य, अभव्य	२ (१) तिर्यंच गति में २ मिथ्यात्व जानना को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ अवस्था	२ (१) तिर्यंच गति में २-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ अवस्था
१७ सम्यक्त्व २ मिथ्यात्व, सासादन	१ (१ तिर्यंच गति में १ मिथ्यात्व जानना को० नं० १७ देखो	१	१	२ (२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ सम्यक्त्व
१८ संज्ञी १ असंज्ञी	१ १ असंज्ञी जानना	१	१	१	१	१
१९ आहारक २ आहारक, अनाहारक	(१) तिर्यंच गति में १ आहारक जानना को० नं० १७ देखो	१	१	२ (१) तिर्यंच गति में १-१ के भंग को० नं० १७ देखो	दोनों अवस्था	१ अवस्था
२० उपयोग ४ ज्ञानोपयोग २, दर्शनोपयोग २ ये ४ जानना	४ (१) तिर्यंच गति में ३-४ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ उपयोग	४ (१) तिर्यंच गति में ३-४-३-४ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ उपयोग

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान को० नं० १ देखो	८	८ (१) तिर्यंच गति में ८ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ ध्यान	८ (१) तिर्यंच गति में ८ का भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग	१ ध्यान
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अविरत १२, योग ४, कषाय २५, ये ४६ जानना	४६	४६ (१) तिर्यंच गति में ३६–३८–३९–४०–४३ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	४४ औ० काययोग १, अनुभय वचन योग १ ये २ घटाकर (४४) (१) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३-३२- ३३-३४-३५-३८ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
२३ भाव कुज्ञान २, दर्शन २, लब्धि ५, तिर्यंचगति १ कषाय ४, लिंग ३, कृष्ण-नील-कापोत-पीत- लेश्या ४, मिथ्या दर्शन १, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, परि- णामिक भाव ३ ये २८ भाव जानना	२८	२८ (१) तिर्यंच गति में २४–२५–२७ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	२७ पीत लेश्या घटाकर (२७) (१) तिर्यंच गति में २४-२४-२७-२२-२३-२५ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो

२४ अवगाहना—को० नं० १७ और २१ से ३४ देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—११७ आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १ ये ३ घटाकर ११७ प्र० का बन्ध जानना।

२६ उदय प्रकृतियां—६१ उदयोग्य १२२ प्र० में से सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक् प्रकृति १, नरकायु १, मनुष्यायु १, देवायु १, उच्चगोत्र १, नरकद्विक २ मनुष्यद्विक २ देवद्विक २, ये आहारद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन छोड़कर शेष ५ संहनन, हुंडक संस्थान छोड़कर शेष ५ संस्थान, सुभग १, आदेय १, यश: कीर्ति १, प्रशस्त विहायोगति १, तीर्थंकर प्र० १, ये ३१ घटाकर ६१ प्र० का उदय जानना।

२७ सत्व प्रकृतियां—१४७ तीर्थंकर प्र० १ घटाकर १४७ प्र० का सत्व जानना।

२८ संख्या—अनन्तानन्त जानना।

२९ क्षेत्र—सर्वलोक जानना।

३० स्पर्शन—सर्वलोक जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा सादि असंज्ञी क्षुद्रभव से असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल तक जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा सादि असंज्ञी क्षुद्रभव से नवसौ (९००) सागर काल प्रमाण तक असंज्ञी न बन सके।

३३ जाति (योनि)—६२ लाख योनि जानना। (एकेन्द्रिय ५२ लाख, विकलेन्द्रिय ६ लाख, असंज्ञी पंचेन्द्रिय ४ लाख, ये सब ६२ लाख जानना)

३४ कुल—१३४॥ लाख कोटिकुल जानना। (एकेन्द्रिय ६७, विकलेन्द्रिय २४, असंज्ञी पंचेन्द्रिय ४३॥ ये सब १३४॥ लाख कोटिकुल जानना। को० नं० १७ और २६ देखो

कोष्टक नं० ६३

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान २ १३-१४ ये २ गुण०		२ १३-१४ ये २ गुण० जानना	सारे गुण स्थान	० गुण०	१ १३वें गुण-स्थान जानना	१	१
२ जीव समास २ संज्ञी पं० पर्याप्त अप०		१ पर्याप्त अवस्था (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १८ देखो	१	१	१ अपर्याप्त अवस्था १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १८ देखो	१	१
३ पर्याप्ति ६ को० नं० १ देखो		६ (१) मनुष्य गति में ६ का भंग-को० नं० १८ देखो	१ भंग	१ भंग	३ (१) मनुष्य गति में ३ का भंग-को० नं० १८ देखो लब्धि रूप ६ का भंग भी होता है	१ भंग	१ भंग
४ प्राण ४ को० नं० १८ देखो		४ (१) मनुष्य गति में ४-१ के भंग-को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	२ वचनबल श्वासोच्छ्वास ये २ घटाकर (२) (१) मनुष्य गति में २ का भंग-को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा ० ६ गति १ ७ इन्द्रिय जाति १ ८ काय १		(०) अपगत संज्ञा १ मनुष्य गति जानना १ संज्ञी पं० जाति १ त्रसकाय	० १ १ १	० १ १ १	० १ १ १	० १ १ १	० १ १ १

१	२	३	४	५	६	७	८
९ योग को० नं० १ देखो	७	५ को० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग ये २ घटाकर (५) (१) मनुष्य गति में ५-२-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग १ योग को० नं० १८ देखो	२ को० मिश्रकाय योग १ कार्माणकाय योग १ ये २ योग जानना (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ योग १ योग को० नं० १८ देखो
१० वेद	०	(०) अपगत वेद	०	०	०	०	०
११ कषाय	०	(०) अकषाय	०	०	०	०	०
१२ ज्ञान	१	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल ज्ञान जानना को० नं० १८ देखो	१	१	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल ज्ञान जानना को० नं० १८ देखो	१	१
१३ संयम	१	१ (१) मनुष्य गति में १ यथाख्यात संयम को० नं० १८ देखो	१	१	१ (१) मनुष्य गति में १ यथाख्यात संयम को० नं० १८ देखो	१	१
१४ दर्शन	१	१ केवल दर्शन	१	१	१	१	१
१५ लेश्या शुक्ल लेश्या	१	१ (१) मनुष्य गति में १-० के भंग को० नं० १८ देखो	१	१	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग-को० नं० १८ देखो	१	१
१६ भव्यत्व	१	१ भव्य	१	१	१ भव्य	१	१
१७ सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व	१	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व	१	१
१८ संज्ञी	०	(०) अनुभय	०	०	०	०	०
१९ आहारक आहारक, अनाहारक	२	२ (१) मनुष्य गति में १-१ अवस्था जानना को० नं० १८ देखो	सारे भंग दोनों अवस्था को० नं० १८ देखो	१ अवस्था १ अवस्था को० नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में १-१ अवस्था जानना को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२० उपयोग केवल ज्ञान-केवल दर्शनोपयोग ये (२)	२	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग–युगपत को न १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग–युगपत को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को० नं० १८ देखो
२१ ध्यान सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती व्युपरत क्रिया नि० ये २ ध्यान जानना	२	२ (१) मनुष्य गति में १-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १८ देखो
२२ आस्रव को० नं० १३ देखो	७	५ औ० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये २ घटाकर (५) (१) मनुष्य गति में ५-३-० के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १८ देखो	२ औ० मिश्रकाय योग १, कार्माणकाय योग १ ये २ योग जानना (१) मनुष्य गति में २-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १८ देखो
२३ भाव को० नं० १३ देखो	१४	१४ (१) मनुष्य गति में १४-१३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	४ (१) मनुष्य गति में १४ का भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

२४ **अवगाहना**—३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक जानना।

२५ **बंध प्रकृतियां**—१३वे गुण० में १ साता वेदनीय जानना। १४वे गुण० में बंध नहीं, अबंध जानना।

२६ **उदय प्रकृतियां**— „ ४२ और १४वे गुण० में १२ प्र० का उदय जानना। को० नं० १३—१४ देखो।

२७ **सत्व प्रकृतियां**— „ ८५ और „ ८५-१३ प्र० का सत्ता जानना। को० नं० १३-१४ देखो।

२८ **संख्या**—को० नं० १३—१४ के समान जानना।

२९ **क्षेत्र**—लोक का असंख्यातवां भाग जानना। असंख्यात भाग लोक, सर्वलोक ये सब भेद केवल समुद्घात के समय में जानना को० नं० २६ देखो।

३० **स्पर्शन**—ऊपर के क्षेत्र के समान जानना।

३१ **काल**—सर्वकाल जानना।

३२ **अन्तर**—कोई अन्तर नहीं।

३३ **जाति (योनि)**—१४ लाख मनुष्य योनि जानना।

३४ **कुल**—१४ लाख कोटिकुल मनुष्य की जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त नाना जीव की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	अपर्याप्त नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	१३ १ से १३ तक के गुण०	१३ (१) नरक गति में १ से ४ (२) तिर्यंच गति में १ से ५ भोग भूमि में १ से ४ (३) मनुष्य गति में १ से १३ भोग भूमि में १ से ४ (४) देवगति में १ से ४	सारे गुण स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना	५ (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तिर्यंच गति में १-२ भोग भूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में १-२-४-६-१३ भोग भूमि में १-२-४ (४) देवगति में १-२-४	सारे भंग अपने अपने स्थान के सारे गुण० जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीव समास	१४ को० नं० १ देखो	७ पर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	७ अपर्याप्त अवस्था (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
३ पर्याप्ति को०नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ६ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो। (२) तिर्यंच गति में ६-५-४-६ के भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो	३ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में ३ का भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-३ के भंग को० नं० १७ देखो लब्धि रूप अपने अपने स्थान की ६-५-४ पर्याप्ति भी होती है।	१ भंग को० नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १६-१८-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो
४ प्राण को०नं० १ देखो	१०	१० (१) नरक-देवगति में हरेक में १० का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १०-९-८-७-६-४-१० के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १०-४-१० के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ७ का भंग को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ७-२-७ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो
५ संज्ञा को० नं० १ देखो	४	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को०नं० १६-१९ देखो	१ योग को०नं० १६-१९ देखो	१ (१) नरक-देवगति में हरेक में ० का भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ योग को०नं० १६-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग को०नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-२-...-१-१-... के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो	(३) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग को० नं० १७ देखो (४) मनुष्य गति में ४-० ४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो
६ गति को० नं० १ देखो	४	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति को० नं० १ देखो	५	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० जाति जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को०नं० १७ देखो	(१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० जाति जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को०नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को०नं० १७ देखो
८ काय को० नं० १ देखो	६	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-१-१ के भंग को०नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को०नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को०नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को०नं० १७ देखो
९ योग कार्माण काययोग १ घटाकर (१४)	१४	११ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, ये ३ योग घटाकर (११)	१ भंग	१ योग	३ औ० मिश्रकाययोग १, वै० मिश्रकाययोग १, आ० मिश्रकाययोग १, ये ३ योग जानना	१ भंग	१ योग

कोष्टक नं० ६४

चौंतीस स्थान दर्शन

१	२	३	४	५	६	७	८
		(१) नरक गति में ६ का भंग—को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-११-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-६-६-१-३-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ६ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १६ देखो	१ योग को० नं० १६ देखो १ योग को० नं० १७ देखो १ योग को० नं० १८ देखो १ योग को० नं० १६ देखो	(१) नरक गति में १ वै० मिश्रकाय योग जानना (२) तिर्यंच गति में १ औ० मिश्रकाय योग जानना (३) मनुष्य गति में १ औ० मिश्रकाय योग जानना (४) देवगति में १ वै० मिश्रकाय योग जानना	१ भंग १ भंग सारे भंग १ भंग	१ योग १ योग १ योग १ योग
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-३-२-३-३-२-१-०-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो १ वेद को० नं० १६ देखो	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-१-१-०-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो १ वेद को० नं० १७ देखो १ वेद को० नं० १८ देखो १ वेद को० नं० १६ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	२५ (१) नरक गति में २३-१६ के भंग	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		को० नं० १६ देखो			को० नं० १६ देखो		
		(२) तिर्यंच गति में २६-२३-२५-२५-२१-१७-२४-२२ के भंग को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४-१६ के भंग—को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २५-२१-१७-१२-११-१३-७-६-५-४-३-२-१-१-०-२४-२० के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २५-१९-११-०-२४-१९ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २४-२०-२३-१९-१९ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २४-२४-१९-२३-१९-१९ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
१२ ज्ञान को० नं० २६ देखो	८	८			६ कुअवधि ज्ञान मनः पर्यय ज्ञान ये २ घटाकर (६)	सारे भंग	१ ज्ञान
		(१) नरक गति में ३-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो			
		(२) तिर्यंच गति में २-३-३-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो	(१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को० नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में २-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में ३-३-४-३-४-१-३-३ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-३-१-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में ३-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को० नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
१३ संयम	७ को० नं० २६ देखो	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	५ संयमासंयम, सूक्ष्म सांपराय ये २ घटाकर (५) (१) नरक देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-१-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति में १-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ संयम को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में १-१-३-२-३-२-१-१-१ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में १-२-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को० नं० १८ देखो
१४ दर्शन	४ को० नं० १८ देखो	४ (१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो	४ (१) नरक गति में २-३ के भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ दर्शन को० नं० १६ देखो
		(२) तिर्यंच गति में १-२-२-३-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो	(२) तिर्यंच गति १-२-२-२-३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ दर्शन को० नं० १७ देखो
		(३) मनुष्य गति में २-३-३-३-१-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो	(३) मनुष्य गति में २-३-३-१-२-३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को० नं० १८ देखो
		(४) देवगति में २-३ के भंग—को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो	(४) देवगति में २-२-३-३ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो	१ दर्शन को० नं० १९ देखो
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो	६ (१) नरक गति में ३ का भंग—को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ लेश्या को० नं० १६ देखो

कोष्टक नं० ६४

१	२	३	४	५	६	७	८
		(२) तिर्यंच गति में ३-६-३-३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-३-१-१ का भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को०नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो १ लेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या को०नं० १९ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को०नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १७ देखो १ लेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को०नं० १६ से १९ देखो	भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को० नं० १६ से १९ देखो	२ चारों गतियों में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व	६ को० नं० १८ देखो	६ (१) नरक गति में १-१-१-३-२ के भंग को०नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-२-१-१-१-२ के भंग को०नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१ १-३-३-...-३-२- १-१-१-१-३ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-१-१-२-३-२ के भंग को०नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो	५ मिश्र घटाकर (५) (१) नरक गति में १-२ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-१-२-२-१-१-१-२ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में १-२-३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो सारे भंग को०नं० १९ देखो	१ सम्यक्त्व को० नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १९ देखो

चौंतीस स्थान दर्शन

कोष्टक नं० ६४

१	२	३	४	५	६	७	८
१८ संज्ञी	२ संज्ञी, असंज्ञी	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १६-१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को० नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १-०-१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो १ को० नं० १८ देखो	१ को०नं० १६-१९ देखो १ अवस्था को०नं० १७ देखो १ अवस्था को०नं० १८ देखो
१९ आहारक	१ आहारक	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ आहारक जानना	१	१
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ८, दर्शनोपयोग ४ ये १२ जानना	१२	१२ (१) नरक गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-५-५-६-६-५-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ५-६-६-७-६-७-२-५-६-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देव गति में ५-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो	१० कुमवधि ज्ञान और मनः पर्यय ज्ञान ये दो घटाकर (१०) जानना (१) नरक गति में ४-६ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-४-६ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४-६-६-२-४-६ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ उपयोग १ उपयोग को०नं० १६ देखो १ उपयोग को०नं० १७ देखो १ उपयोग को०नं० १८ देखो १ उपयोग को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान व्युपरत क्रिया नि० घटाकर (१५)	१५	१५ (१) नरक गति-देवगति में हरेक के ८ ९-१० के भंग को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ८-९-१०-११-८-९-१० के भंग–को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-९-१०-११-७-४-१-१- १-८-९-१० के भंग–को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को० नं० १६- १६ देखो १ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १८ देखो	१२ पृथक्त्व वितर्क विचार, एकत्व वितर्क अविचार, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती, ये ३ घटाकर (१२) (१) नरक गति-देवगति में हरेक में ८-९ के भंग–को० नं० १६-१६ देखो (२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-९-७-१-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६-१६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान १ ध्यान को० नं० १६- १६ देखो १ ध्यान को० नं० १७ देखो १ ध्यान को० नं० १८ देखो
२२ आस्रव कार्माणकाय योग १ घटाकर (५५)	५६	३ औ० मिश्रकाय योग १, वै० मिश्रकाय योग १, आ० मिश्रकाय योग १ ये ३ घटाकर (५३) (१) नरक गति में ४९-४४-४० के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३६-३८-३९-४०-४२-५१- ४६-४२-३७-५०-४५-४१ के भंग-को० नं० १७ देखो	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो	४५ मनोयोग ४ वचन योग ४, औ० काय योग १, वै० काय योग १, आ० काय योग १ ये ११ घटाकर (४५) (१) नरक गति में ४१-३२ के भंग–को० नं० १६ के ४२-३३ के भंग में से कार्माणकाय योग १ घटाकर ४१-३२ के भंग जानना	सारे भंग सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग १ भंग को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
		(३) मनुष्य गति में ५०-४६-४२-३७-२२-२०-२२-१६-१५-१४-१३ १२-११-१०-१०-६-५-३-५०-४५-४१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो	(२) तिर्यंच गति में ३६-३७-३८-३६-४०-४२-३१-३२-३३-३४-३५-३८-४२-३७-३२ के भंग नं०को० १७ के ३७-३८-३६-४ -४३-४४-३२-३३-३४-३५-३८-३६-४३-३८-३३ के हरेक भग में से कार्माण काययोग १ घटाकर ३६-३७-३८-३६-४२-४३-३१-३२-३३-३४-३७-३८-४२-३७-३२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
		(१) देवगति में ५ -४५-४१-४६-४४-४०-४० के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो			
					(३) मनुष्य गति में ४२-३८-३२ के भंग को०[illegible]० १८ के ४४-३६-३३ के हरेक भंग में से कार्माण काययोग १ घटाकर ४३-३८-३२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
					१२ का भंग को० नं० १८ के समान जानना	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
					१ का भंग नं० को० १८ के २ के भंग में से कार्माण काययोग घटाकर १ का भंग औ० मिश्रकाययोग जानना	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
					४२-३७-३२ के भंग को० नं० १८ के ४३-३८-३३ हरेक भंग में से कार्माण काययोग १ घटाकर ४२-३७-३२ के भंग जानना	सारे भंग को०नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	४	५	६	८
					(४) देवगति में ३२-३७-३१-४१-३६-३२- ३२ के भंग को० नं० १६ के ४३-३८-३३-४२-३७- ३३-३३ हरेक भंग में से कार्मारण काययोग १ घटा- कर ४२-३७-३२-४१-३६- ३२ के भंग जानना	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
२१ भाव	५३	५३ (१) नरक गति में २६-२४-२५-२८-२७ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग १७-१६-१६-१७ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना	४६ कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, उपशम चारित्र १, सरागसंयम १ ये ४ घटाकर (४६) (१) नरक गति में २५-२७ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग १७-१७ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना
		(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-३१-२९- ३०-३२-२६-२७-२५- २६-२६ के भंग को० नं० १७ देखो	१७-१६-१६-१७-१७ के भंग को० नं० १७ देखो	हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना	(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२७-२२-२३- २५-२५ २४-२२-२५ के भंग को० नं० १७ देखो	१७-१६-१७-१६- १७ के भंग को० नं० १७ देखो	हरेक भंग में से कोई एक एक भंग जानना
		(३) मनुष्य गति में ३१-२९-३०-३३-३०- ३१-२७-३१-२६-२६- २८-२७-२६-२५-२४- २३-२३-२१-२०-१४- २७-२५-२६-२६ के भंग को० नं० १८ देखो	१७-१६-१६-१७- १७-१७-१७-१७- १७-१६-१६-१५- १५-१४ के भंग को० नं० १८ देखो	हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना	(३) मनुष्य गति में ३०-२८-३०-२७-१४- २४-२२-२५ के भंग को० नं० १८ देखो	१७-१६-१७-१७- १४-१७-१६-१७ के भंग को० नं० १८ देखो	हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना
		(४) देवगति में २५-२३-२४-२६-२७- २५-२६-२६-२४-२२- २३-२६-२५ के भंग को० नं० १९ देखो	१७-१६-१६-१७- १७-१६-१६-१७- १७-१६-१६-१७- १७ के भंग को० नं० १९ देखो	हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना	(४) देवगति में २६-२४-२६-२४-२८- २३-२१-२८-२६ के भंग को० नं० १९ देखो	१७-१६-१७-१६- १७-१७-१६-१७- १७ के भंग को० नं० १९ देखो	हरेक भंग में से कोई एक-एक भंग जानना

२४ **अवगाहना**—को० नं० १६ से ३४ देखो

२५ **बंध प्रकृतियां**— १२० पर्याप्त अवस्था जानना, ११२ अपर्याप्त अवस्था में बन्धयोग्य १२० में से नरक-तिर्यंच-मनुष्य-देवायु ४, आहारकद्विक २, नरकद्विक २ ये ८ घटाकर विग्रह गति में ११२ प्रकृतियों का बन्ध जानना को० नं० १ से १३ में देखो।

२६ **उदय प्रकृतियां**—१२२ पर्याप्त अवस्था में जानना। ११८ अपर्याप्त अवस्था में उदययोग्य १२२ में से नरकादि गत्यानुपूर्वी ४, घटाकर ११८ विग्रह गति में जानना, विगत को० नं० १ से १३ में देखो।

२७ **सत्त्व प्रकृतियां**—१४८ भंगों का विवरण को० नं० १ से १३ में देखो।

२८ **संख्या**—अनन्तानन्त जानना।

२९ **क्षेत्र**—सर्वलोक जानना।

३० **स्पर्शन**—सर्वलोक जानना।

३१ **काल**—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा तीन समय कम क्षुद्रभव से ३३ सागर काल तक जानना।

३२ **अन्तर**—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा विग्रह गति में एक समय से तीन समय तक आहारक न बन सके।

३३ **जाति (योनि)**—८४ लाख योनि जानना।

३४ **कुल**—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

क्र० स्थान	सामान्य आलाप	पर्याप्त			अपर्याप्त		
		नाना जीवों की अपेक्षा	एक जीव के नाना समय में	एक जीव के एक समय में	नाना जीवों की अपेक्षा	१ जीव के नाना समय में	१ जीव के एक समय में
१	२	३	४	५	६	७	८
१ गुण स्थान	५ १-२-४-१३-१४ ये ५ गुण० जानना	१ (१) मनुष्य गति में १४वे गुण स्थान जानना	१ गुण० १४वे गुण० जानना	१ गुण० १४वे गुण० जानना	४ (१) नरक गति में १ले ४थे (२) तिर्यंच गति में १-२ भोगभूमि में १-२-४ (३) मनुष्य गति में १- -४-१३ भोगभूमि में १-२-४ (४) देवगति में १-२-४	सारे गुण० स्थान अपने अपने स्थान के सारे गुण० स्थान जानना	१ गुण० अपने अपने स्थान के सारे गुण० में से कोई १ गुण० जानना
२ जीव समास	८ संज्ञी पं० पर्याप्त १, अपर्याप्त अवस्था ७, ये ८ जानना	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पं० पर्याप्त अवस्था को० नं० १८ देखो	१ समास	१ समास	७ अपर्याप्त अवस्था। (१) नरक मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पं० अपर्याप्त जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ७-६-१ के भंग-को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो	१ समास को० नं० १६-१८-१९ देखो १ समास को० नं० १७ देखो
३ पर्याप्ति	६ को० नं० १ देखो	६ (१) मनुष्य गति में ६-६ के भंग-को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	३ (१) नरक देवगति में हरेक में ३ का भंग-को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(२) तिर्यंच-मनुष्य गति में हरेक में ३-३ के भंग–को० नं० १७-१८ देखो लब्धि रूप अपने अपने स्थान के ६-५-४ के भंग भी होते हैं	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो	१ भंग को० नं० १७-१८ देखो
४ प्राण	७ को० नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ आयु प्राण जानना को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	७ (१) नरक-देवगति में हरेक में ७ का भंग–को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो
					(२) तिर्यंच गति में ७-७-६-५-४-३-७ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ७-२-७ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
५ संज्ञा	४ को० नं० १ देखो	० (१) मनुष्य गति में (०) अपगत संज्ञा जानना को० नं० १८ देखो	०	०	४ (१) नरक-देवगति में हरेक में ४ का भंग–को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो	१ भंग को० नं० १६-१९ देखो
					(२) तिर्यंच गति में ४-४ के भंग–को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ४-०-४ के भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
६ गति	४ को० नं० १ देखो	१ मनुष्य गति जानना	१	१	४ चारों गति जानना	१ गति	१ गति
७ इन्द्रिय जाति संज्ञी पं० जाति	१	१ (१) मनुष्य गति में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १८ देखो	१	१	५ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ संज्ञी पंचेन्द्रिय जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ५-१ के भंग—को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो	१ जाति को० नं० १६-१८-१९ देखो १ जाति को० नं० १७ देखो
८ काय	६ को० नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ त्रसकाय जानना को० नं० १८ देखो	१	१	६ (१) नरक-मनुष्य-देवगति में हरेक में १ त्रसकाय जानना को० नं० १६-१८-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ६-४-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो	१ काय को० नं० १६-१८-१९ देखो १ काय को० नं० १७ देखो
९ योग कार्माणकाय यो०	१	० अयोग जानना	०	०	१ (१) चारों गतियों में हरेक में १ का भंग कार्माणकाय योग विग्रह गति में जानना को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो	१ को० नं० १६ से १९ देखो
१० वेद	३ को० नं० १ देखो	० गत वेद जानना	०	०	३ (१) नरक गति में १ नपुंसक वेद जानना	१ को० नं० १६ देखो	१ को० नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					को० नं० १६ देखो		
					(२) तिर्यंच गति में ३-१-३-१-३-२-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ वेद को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ३-१-०-२-१ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ वेद को०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ वेद को०नं० १९ देखो
११ कषाय	२५ को० नं० १ देखो	० अकषाय जानना	०	०	२५ (१) नरक गति में २३-१९ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में २५-२३-२५-२५-२३-२५-२४-१९ के भंग को० नं. १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में २५-१९-०-२४-१९ के भंग को०नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २४-२४-१९-२३-१९-१९ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को०नं० १९ देखो
१२ ज्ञान कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, ये २ घटाकर (६)	६	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल ज्ञान जानना को० नं० १८ देखो	१	१	६ (१) नरक गति में २-३- के भंग को०नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ ज्ञान को०नं० १६ देखो

२	३	४	५	६	७	८
				(२) तिर्यंच गति में २–२–३ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ ज्ञान को०नं० १७ देखो
				(३) मनुष्य गति में २–३–१–२–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ज्ञान को०नं० १८ देखो
				(४) देवगति में २–२–३–३ के भंग को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ ज्ञान को०नं० १९ देखो
१३ संयम २ असंयम, यथाख्यात ये २ जानना	१ (१) मनुष्य गति में १ यथाख्यात जानना को० नं० १८ देखो	१	१	२ (१) नरक-तिर्यंच-देवगति में हरेक में १ असंयम जानना को०नं० १६-१७-१९ देखो	१ को० नं० १६–१७ १९ देखो	१ को०नं० १६-१७- १९ देखो
				(२) मनुष्य गति में १-१- के भंग को० नं ८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ संयम को०नं० १८ देखो
१४ दर्शन ४ को० नं० १८ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ केवल दर्शन जानना को० नं० १८ देखो	१	१	४ (१) नरक गति में २–३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को०नं० १६ देखो	१ दर्शन को०नं० १६ देखो
				(२) तिर्यंच गति में १–२–२–२ भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को०नं० १७ देखो	१ दर्शन को०नं० १७ देखो
				(३) मनुष्य गति में २–३–१–२–३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ दर्शन को०नं० १८ देखो
				(४) देवगति में २–२–३–३ के भंग	१ भंग को०नं० १९ देखो	१ दर्शन को०नं० १९ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					को० नं० १९ देखो		
१५ लेश्या	६ को० नं० १ देखो	० अलेश्या जानना	०	०	६ (१) नरक गति में ३ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३-१ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ६-३-१-१ के भंग को० नं० १८ देखो (४) देवगति में ३-३-१-१ के भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो १ भंग को० नं० १९ देखो	१ लेश्या को०नं० १६ देखो १ लेश्या को०नं० १७ देखो १ लेश्या को०नं० १८ देखो १ लेश्या को०नं० १९ देखो
१६ भव्यत्व	२ भव्य, अभव्य	१ (१) मनुष्य गति में १ भव्य जानना को० नं० १८ देखो	१	१	२ (१) चारों गति में हरेक में २-१ के भंग को० नं० १६ से १९ देखो	१ भंग को०नं० १६ से १९ देखो	१ अवस्था को०नं० १६ से १९ देखो
१७ सम्यक्त्व	५ मिश्र घटाकर (५)	१ (१) मनुष्य गति में १ क्षायिक सम्यक्त्व को० नं० १८ देखो	१	१	५ (१) नरक गति में १–२ का भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में १–१–१–१–२ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में १–१–२–१–१–१–२ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १७ देखो १ सम्यक्त्व को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(४) देवगति में १–१–३ के भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ सम्यक्त्व को०नं० १६ देखो
१८ संज्ञी	२ संज्ञी असंज्ञी	० अनुभय अर्थात् न संज्ञी न असंज्ञी जानना	०	०	२ (१) नरक-देवगति में हरेक में १ संज्ञी जानना को०नं० १६-१६ देखो	१ को० नं० १६–१६ देखो	१ को०नं० १६–१६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में १-१-१-१-१-१ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ अवस्था को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में १–०–१ के भंग को० नं० १८ देखो	१ को० नं० १८ देखो	१ अवस्था को०नं० १८ देखो
१९ आहारक	१ अनाहारक	१ (१) मनुष्य गति में १ अनाहारक जानना को० नं० १८ देखो	१	१	१ चारों गतियों में हरेक में १ अनाहारक विग्रह गति में जानना	१	१
२० उपयोग ज्ञानोपयोग ६, दर्शनोपयोग ४ ये १० जानना	१०	२ (१) मनुष्य गति में २ का भंग को० नं० १८ देखो	२ युगपत्	२ युगपत्	१० (१) नरक गति में ४–६ के भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में ३-४-४-३-४-४-६-६ के भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो	१ उपयोग को०नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में ४-६-२ ८-६ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ उपयोग को०नं० १८ देखो
					(४) देवगति में ४-४-६-६ के भंग	१ भंग को० नं० १६ देखो	१ उपयोग को०नं० १६ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
२१ ध्यान	१० को० नं० १६ देखो	१ (१) मनुष्य गति में १ का भंग को० नं० १८ देखो	१	१	को० नं० १६ देखो ९ अपाय विचय घटाकर (९) (१) नरक-देवगति में हरेक में ८-९ के भंग को०नं० १६-१९ देखो (२) तिर्यंच गति में ८-८-९ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ८-९-१-८-९ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६-१९ देखो १ भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ ध्यान को०नं० १६-१९ देखो १ ध्यान को०नं० १७ देखो १ ध्यान को०नं० १८ देखो
२२ आस्रव मिथ्यात्व ५, अविरत १२, कार्माण काययोग १, कषाय २५, ये (४३) जानना	४३	० अनास्रव जानना	०	०	४३ (१) नरक गति में ४२-३३ के भंग को० नं० १६ देखो (२) तिर्यंच गति में ३७-३८-३९-४०-४३- ४४-३२-३३-३४-३५- ३८-३९-४३-३८-३३ के भंग को० नं० १७ देखो (३) मनुष्य गति में ४४-३९-३३-२-१-४३- ३८-३३ के भंग को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो सारे भंग को० नं० १७ देखो सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को०नं० १६ देखो १ भंग को०नं० १७ देखो १ भंग को०नं० १८ देखो

१	२	३	४	५	६	७	८
					(४) देवगति में ४३-३८-३३-४२-३७-३३-३१ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो
२३ भाव उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १, कुअवधि ज्ञान १, मनः पर्यय ज्ञान १, सरागसंयम १, ये ५ घटाकर	१८	१३ (१) मनुष्य गति में १३ का भंग—को० नं० १८ देखो सूचना:—पेज नं० ६६३ पर देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो	४८ (१) नरक गति में २५-२७ का भंग को० नं० १६ देखो	सारे भंग को० नं० १६ देखो	१ भंग को० नं० १६ देखो
					(२) तिर्यंच गति में २४-२५-२७-२७-२२-२३-२५-२५-२४-२२-२५ के भंग—को० नं० १७ देखो	सारे भंग को० नं० १७ देखो	१ भंग को० नं० १७ देखो
					(३) मनुष्य गति में २७-२५-३०-१४-२४-२२-२५ के भंग—को० नं० १८ देखो	सारे भंग को० नं० १८ देखो	१ भंग को० नं० १८ देखो
					(४) देवगति में २६-२४-२६-२४-२८-२६-२१-२६-२६ के भंग—को० नं० १९ देखो	सारे भंग को० नं० १९ देखो	१ भंग को० नं० १९ देखो

सूचना:—कल्प वासी देवों में जाने वाले के विग्रह गति में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व भी अनाहारक अवस्था में होता है इस अपेक्षा से उपसं सम्यक्त्व भी नहीं घट सकता केवल प्रथमोपसं सम्यक्त्व में मरण न होने की अपेक्षा ही उपसं सम्यक्त्व घट सकता है।

२४ अवगाहना—को० नं० १६ से ३४ तक देखो।

२५ बंध प्रकृतियां—११२ बंध योग्य १२० प्र० में से आयु ४, आहारकद्विक २, नरकद्विक २ ये ८ घटाकर ११२ प्र० का बंध जानना। को० नं० १–२–४–६–१३ में देखो।

२६ उदय प्रकृतियां—८९ उदययोग्य १२२ प्र० में से मिश्र (सम्यक्त्व मार्गणाका ३रा भेद), औदारिकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, आहारकद्विक २, संस्थान ६, संहनन ६, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योग १, विहायोगति २, प्रत्येक १, साधारण १, स्वरद्विक २, महानिद्रा ३ (निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि ये ३), ये ३३ घटाकर ८९ प्र० का उदय जानना। को० नं० १–२–४–६–१३ देखो।

२७ सत्त्व प्रकृतियां—१४८ को० नं० १–२–४–६–१३ देखो।

२८ संख्या—अनन्तानन्त जानना।

२९ क्षेत्र—लोक का असंख्यातवां भाग, लोक के असंख्यात भाग, सर्वलोक, विशेष खुलासा को० नं० १–२–४–६–१३ देखो।

३० स्पर्शन—ऊपर के क्षेत्र के समान जानना।

३१ काल—नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल जानना। एक जीव की अपेक्षा विग्रह गति में एक समय से तीन समय तक जानना। अयोग केवली की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त जानना।

३२ अन्तर—नाना जीवों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं। एक जीव की अपेक्षा तीन समय कम क्षुद्रभव ग्रहण काल से ३३ सागर काल तक अनाहारक न बन सके।

३३ जाति (योनि)—८४ लाख योनि जानना।

३४ कुल—१९९॥ लाख कोटिकुल जानना।

अब इस ग्रंथ की समाप्ति करते हुये लिखिये है कि जितने जैन शास्त्र हैं तिन सबका सार इतना ही है, व्यवहाररूपी पांच परमेष्ठी की भक्ति और निश्चयरूपी अभेद रत्नत्रयमयी निजात्मा की भावना ये ही शरण है, भव्यात्मा हो ! यह बात तब समझ सकेगा जब कि आप शान्त भाव से निरन्तर जैन शास्त्र का स्वाध्याय करें देखो प्रबोधसार ग्रंथ में लिखा है कि—

श्रुत बोधप्रदीपेन शासनं वर्ततेऽधुना ।
विना श्रुतप्रदीपेन सर्वं विश्वं तमोमयम् ।।

और भी तदुक्तं गाथा—

दंसणणाण चरित्तं सरणं सेवेह परमसिद्धाणं ।
अण्णं किंपि न सरणं संसारसंसरणंताणं ।।

और भी सामायिक पाठ में कहा है कि—

एको मे शाश्वतश्चात्मा ज्ञानदर्शनलक्षणः ।
शेष बहिर्भवा भावाः सर्वे संयोग लक्षणाः ।।१२।।

इसका अर्थ विचार करके विषय कषाय से विमुख होकर शुद्ध चैतन्य स्वरूप की निरन्तर भावना करनी चाहिये । यही मोक्ष का मार्ग है, तदुक्तं गाथा—

जेणणिरन्तर मणधरियउ विसयकसायहं जतु ।
मोक्खह कारण पतडउ अणणतं तणं मंतु ।।
जंसक्कइ तं कीरइ जं ण सक्कइ तं च सद्दहणं ।
सद्दहमाणा जीवो पावइ अजरामरं ठाणं ।।
तवयरणं वयधरणं संजम सरणं सव्व जीव दयाकरणं ।
अंते समाहिमरणं चउगइ दुक्खं निवारेई ।।
अंतोणत्थि सुइणं कालो थोवो वयं च दुम्मेहा ।
तं णवरि सिक्खियव्वं जं जरमरणं क्खयं कुणई ।।

इसी तरह समाधिशतक में भी कहा है—

तद्ब्रू यात्तत्परान् पृच्छेत् तदिच्छेत्तत्परो भवेत् ।
येनाविद्यामयं रूपं त्यक्त्वा विद्यामयं व्रजेत् ।।५३।।

सारांश—इस पंचमकाल में जैन शास्त्र बड़े उपकारी हैं, यावत् काल इनका अवगाहन रहै तावत् काल ज्ञान का प्रकाश होय, इन्द्रियों का अवरोध होय, जैसे सूर्य के उदय उद्योत होय और घूघू (उल्लू) नाम जीव अंध हो जाय है, जिससे शांत भाव से निरन्तर शास्त्राभ्यास करना सर्वथा योग्य है ।

अथ अन्तिम मङ्गल स्मरण

येऽतीतापेक्षयाऽनन्ताः, संख्येया वर्तमानतः ।
अनन्तानन्तमानास्तु, भाविकालव्यपेक्षया ।।
तेऽर्हन्तः सन्तु नः सिद्धाः, सूर्युपाध्यायसाधवः ।
मङ्गलं गुरवः पंच, सर्वे सर्वत्र सर्वदा ।।१।।

अर्थात्—जो अतीत काल की अपेक्षा अनन्त संख्या वाले हैं, वर्तमान काल की अपेक्षा जो संख्यात हैं तथा भविष्यत्काल की अपेक्षा जो अनन्तानन्त संख्यायुक्त हैं, वे समस्त अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा साधु-रूप पंचगुरु समुदाय सदाकाल सर्वत्र हमारे लिये मङ्गल स्वरूप होवें ।

'जयतु सदा जिनधर्मः सूरिः श्रीशान्तिसागरो जयतु'

यह जैन धर्म सदा जयवन्त हो तथा भाद्रपद शु० २ श्री वीरनिर्वाण सं० २४८२ विक्रम सं० २०१२ सन् १९५६ ई० को ८४ वर्ष की आयु में दिवङ्गत आचार्य वर्य श्री शान्तिसागर जी महाराज सदा जयवन्त रहें ।

* इति ग्रन्थ समाप्ति *

चौंतीस स्थान दर्शन

—:o:—

(दोहा)

अर्हंसिद्ध भगवान को, बन्दो मन-वच-काय ।
चौंतीस स्थान दर्शन, रचना कहों बनाय ।।१।।

(छन्द-सवैया इकतीसा)

१ २ ३ ४
गुण चौदा, जीव चौदा, प्रजा षट, प्राण दस,
५ ६
संज्ञा चार, गति चार, छट्वा स्थान जानिये ।
७ ८ ९ १०
इन्द्रिय पांच, कायषट, योग पन्द्रह, वेद तीन,
११ १२ १३
चौकषाय, ज्ञान आठ, संयम सात मानिये ।।२।।
१४ १५ १६ १७
दृग चार, लेश्या षट, भव्य दोय, सम्यकछे,
१८ १९ २०
सैनी दोय, आहार दो, उपयोग बारा, मानिये ।
२१ २२ २३
ध्यान सोला, आस्रव सत्तायन, भाव त्रेपन,
२४
अवगाहना योजन हजार, बताइये ।।३।।
२५ २६
बंध एक शत बीस, उदय एक शत बाईस,
२७
सत्व शत एक अड़तालीस प्रभु गुण गाइये ।
२८ २९ ३०
संख्या है अनन्त, क्षेत्र-फर्श भी है सर्वलोक,
३१
काल परिवर्तन असंख्यात पुद्गल जानिये ।।४।।
जघन्य नरक-देव दश हजार मानिये,
तिर्यंक् नर जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त ध्याइये ।
मध्यम में अनेक भेद जिनवाणी गाइये,
३२
नारकी-मनुष-देव-तिर्यंच अन्तर जानिये ।।५।।
जघन्य कहो एक ही अन्तर्मुहूर्त मानिये,
अन्तर उत्कृष्ट के अनन्त भेद जानिये ।
३३
जाति लाख चउरासी आधघाटि दो सौ लाख,
३४
कोटिकुल संसार त्याग सिद्ध पद पाइये ।।६।।

(छन्द-सवैया तेईसा)

पहले जीव समास सकल है,
चौदम में त्रस एक ही जान ।
पर्याप्ति चौदम लग षट् ही,
प्राण बार में लग दस जान ।।७।।
तेरम वच-तन-स्वास-आयु चतु,
चौदम एक आयु पहिचान ।
संज्ञा कहिये षट लग चारों,
सप्त अष्ट भय हार न स्थान ।।८।।
नव में मैथुन परिग्रह दोनों,
दस में परिग्रह आगे हान ।
संज्ञा पर संसार खड़ा है,
इनके गिरते ही पावत निर्वाण ।।९।।

छन्द-चौपाई

पहले तें चतुलग गति चार,
पंचम में नर पशु विचार ।

छट्टे तें चौदम लग कही,
मानुष गति इक जानो सही ॥१०॥
इन्द्री पाँचों मिथ्यात,
दूजे तें चौदम लग जात ।
इक पंचेन्द्री जिनवर कही,
इम इन्द्रिय वर्णन बरणाई ॥११॥
पहले गुण षट काय जु लसे,
दूजे तें चौदम त्रस बसे ।
पहले दूजे तेरह योग,
हारकद्विक बिन जान वियोग ॥१२॥
तीजे में दस इमि गिन लाय,
मनं वच अष्ट औदारिक काय ।
वैक्रीयक मिल मन दस भये,
चौथे त्रयोदस पहिले कहे ॥१३॥
पंचम में मन वच वसु जान,
और औदारिक मिल नव स्थान ।
प्रमत्त में एकादस योग,
हारकद्विक युत जान नियोग ॥१४॥
सप्तम तें बारम लग जान,
नव पंचमवत् जानं सुजान ।
तेरम जोग सप्त निराधार,
अनुभय-सत्य, वचन मन चार ॥१५॥
औदारिक औदारिक मिश्र,
कार्माण मिल सप्त जो विश्र ।
चौदम गुण स्थान अयोग,
काट संसार मोक्ष सुख भोग ॥१६॥
वेद प्रथम तें नव लग तीन,
आगे वेद न जान प्रवीन ।
वेद रहित जो भये प्रवीन,
मोक्ष सुखों में वे हुये लीन ॥१७॥
अब कषाय को वर्णन करो,
गुण स्थान भिन्न भिन्न उचरो ।
यही संसार का विष महान्,
इसको ही त्याग भये भगवान ॥१८॥

छन्द-छप्पय

पहले दूजे सर्व मिश्र,
इकवीस भनीजे ।
चौथे हू इकवीस चौकड़ी,
प्रथम न लीजे ॥१९॥
अप्रत्याख्यान बिना,
देश संयम में सतरा ।
प्रत्याख्यान बिना तेर षट्,
सत वसु इकरा ॥२०॥
नव में गुण सब सात हैं,
संज्वलन भये वेद भन ।
दसमें सूच्छम लोभ इक,
आगे हीन कषाय गन ॥२१॥
प्रथम द्वितीय कुज्ञान,
तीन तीजे सुमते भन ।
चौथे तीन सुज्ञान,
पंचम में भी इमि गन ॥२२॥
षट् तें द्वादश लई,
ज्ञान केवल बिन चारो ।
तेरम-चौदम गुण-स्थान,
केवल इक धारो ॥२३॥
इहि विधि गुण पर ज्ञान को,
कथन कहो जगदीश ने ।
अब संयम रचना कहूं,
जिमि सूत्तर भाखी जिने ॥२४॥
पहले तें चतु लगे,
असंयम ही इन जानो ।
पंचम-संयम-देश छठें,
सप्तम इम मानो ॥२५॥
सामायिक, छेदोपस्थापना,
परिहारविशुद्धी ।
अष्टम-नव गुण दोय,
नाहिं परिहारविशुद्धी ॥२६॥

सांपराय, सूच्छम दसे,
ग्यारमतें जु अयोग तक ।
इक यथाख्यात ही जानिये,
ये संयम सुखकर अधिक ॥२७॥
पहले दूजे दोय,
अचक्षु-चक्षु भनीजे ।
अथतें बारम तई,
अवधियुत तीन गनीजे ॥२८॥
केवल तेरम-चौद,
और षट लेश्या चतु लग ।
पंचम-षष्ठम-सप्त,
तीन शुभ लेश्या हर अघ ॥२९॥
फिर अष्टम तें सयोग तक,
एक शुक्ल लेश्या ही कही ।
गुण चौदहें सब नाश कर,
जाय सिद्ध पदवी लही ॥३०॥
पहले भव्य-अभव्य,
द्वितीयतें भव्य चौदम तक ।
अथगुण के जो नाम,
तहां वोही सम्यक इक ॥३१॥
चतुपण षट सत माहि,
क्षय-उपशम अरु वेदक ।
वसुते ग्यारम तई दोय,
उपशम और क्षायिक ॥३२॥
शेषन क्षायिक ही कही,
संनी-असंनी मिथ्यात में ।
गुण दूजे तें चौदम तई,
इक संनी ही सुखपात में ॥३३॥

(छन्द-सवैया तेईसा)

पहले दूजे हार-अनहारक,
तीजे हारक चौथे दोय ।
पंचमते बारम तक हारक,
तेरम हार-अनहारक होय ॥३४॥
चौदम इक अनाहार मनीजे,
गुण-स्थान चौदह इमलीजे ।
काय रहित भये जो सिद्ध,
चरनों में उनके शिर जे ॥३५॥

(छन्द-छप्पय)

पहले-दूजे दर्श दोय,
कुज्ञान तीन है ।
मिश्र माहि त्रय दर्श,
ज्ञान पुनि मिश्र तीन है ॥३६॥
चतु पन षट विज्ञान,
तीन शुभ दर्श बखानो ।
षटतें द्वादश तई,
सप्त मनः पयय जानो ॥३७॥
तेरम चौदम दोय है,
केवल दर्शन-ज्ञान युत ।
फिर अघातिया हान के,
पायो पद अति अद्भुत ॥३८॥
पहले दूजे अष्ट,
आर्त-रौद्र के जोय ।
मिश्र माहि नव जान,
धर्म का एक मिलोय ॥३९॥
पुनि वृषके दोय भेद,
मिले दस चतु गुण-स्थानो ।
पंचम त्रय वृष मिले,
एकादश सब पहिचानो ॥४०॥
षट आरत त्रय धर्म चउ,
सब चउ ग्यारम लग शुक्ल ।
बारम तेरम पुनि चौदमें,
क्रमतें शेष त्रिक शुक्ल ॥४१॥
पहले पचपन कहे,
आहारकद्विक बिन जानो ।
पंच मिथ्यात्व जु बिना
द्वितीय पच्चास बखानो ॥४२॥
तीजे मिश्र जु माहि,
तीन चालिस ईखानो ।
अव्रत गुण जिहि नाम,
चतुम चालिस छह जानो ॥४३॥
योग कषाय जु पूर्ववत्,
अव्रत ग्यारह पंच में ।

चौबीस योग कषाय के,
प्रमत्त गिनिये संच में ॥४४॥
सप्तम अष्टम गुण-स्थान ।
बाईस जु आस्रव ।
नव में सोलह लये,
दसम दस ग्यारम में नव ॥४५॥
बारम में नव जान,
तेरमें सप्त गनीजे ।
मन-वचके द्वय दोय,
औदारिक युगल सु लीजे ॥४६॥
कार्माण मिल सप्त ये,
तेरम गुण में जानिये ।
पुनि चौदम में आस्रव नहीं,
यह मन-वच उर आनिये ॥४७॥
पहले चौंतीस दूजे बत्तीस,
तेहतिस भाव मिश्र में जान ।
चौथे छत्तिस पचम षटम,
सप्तम में एकतीस बखान ॥४८॥
अष्टम नवमें उनतीस ही जानो,
दसमें तेईस कह्यो भगवान ।
ग्यारम में एकईस कही है,
बारममें बस बीस ही जान ॥४९॥
तेरमें चौदह चौदहमें तेरह,
सिद्ध गति में पांच ही जान ।
भाव त्रेपन का यह वर्णन,
जिन वाणी भाषा भगवान् ॥५०॥
सात मनुष पंचशतक,
नारक की अवगाहन जान ।
एक हाथ से धनुष पंचशत,
देवों की भाषा भगवान् ॥५१॥
एक हाथ से तीन कोस काया,
मनुष्य गति किया बखान ।
घनांगुल का भाग असंख्य से,
तीन कोस तिर्यक् जान ॥५२॥
एकसौ एक बंध नारकी,
एकसौ सतरा तिर्यंच की जान ।
एकसौ बीस मनुष्य की जानो,
एक सौ चार देवकी भान ॥५३॥
मनुष्य तिर्यंच लब्ध्य की जानो,
एकसौ नव कहे भगवान ।
भोगभूमि की बंध प्रकृति,
मिला नहीं अलब्ध्य बखान ॥५४॥
उदय छयंत्तर नारक कहिये
एक सौ सात तिर्यंच की जान ।
भोगभूमि तिर्यंच उन्नासी,
लब्ध्य तिर्यंच इकत्तर जान ॥५५॥
एकसौ दोय मनुष्य बतायो,
भोगभूमि में अठत्तर जान ।
मनुष्य गति लब्ध्य इकत्तर,
जिन वाणी में किया बखान ॥५६॥
देवगति में उदय प्रकृति सतत्तर,
वाणी में मिलता बखान ।
चारों गति उदय की हानि,
करम काट पहुंचे निर्वाण ॥५७॥
नरक-तिर्यंच-देवगति की,
सत्व सौ सेंतालीस जान ।
मनुष्य गति एक सौ अड़तालीस,
सब की सब भाषी भगवान् ॥५८॥
नरक-मनुष्य-देव की असंख्यात,
अनन्त संख्या तिर्यंच की जान ।
अन्तर भेद बहुत से भाषित,
इसी ग्रन्थ में किया बखान ॥५९॥
नरक-देव-मनुष्य जीवों का,
त्रसनाड़ी है क्षेत्र महान् ।
तिर्यंच जीव सर्वलोक में,
जिन वाणी भाषा भगवान् ॥६०॥
नरक स्पर्शन छे राजु,
समुद्घात मारणान्तिक जान ।
देवगति का तेरह राजु,
शक्ति के आधार बखान ॥६१॥
तिर्यंच-मनुष्य सर्वलोक स्पर्शन,
समुद्घात मारणांतिक जान ।

केवल समुद्घात मनुष्य
सर्वलोक स्पर्शन जान ॥६२॥
तेतीस सागर देव-नारकी,
तिर्यंच-मनुष्य त्रिपल्य बखान।
नरक-देव की जघन्यकाल,
वर्ष हजार दस ही जान ॥६३॥
तिर्यंच-मनुष्य की जघन्यकाल,
अन्तर्मुहूर्त ही जान।
कर्मकार जो मोक्ष पधारे,
काल अनन्तानन्त ही जान ॥६४॥
नरक-देव-मनुष्य-तिर्यंच की,
अन्तर्मुहूर्त ही अन्तर जान।
उत्तम अन्तर भेद बहुत है,
चौंतीस स्थानक दर्शन में जान ॥६५॥
चौरासी लक्ष योनि,
प्रथम गुण स्थाने सारी।
दूजे तें चौ तई,
लाख छब्बीस विचारी ॥६६॥
पंचम में नर पशु,
लाख अठारह जानो।
षष्ठे चौदह तई,
मनुष्य लक्ष चौदह स्थानो ॥६७॥
कुलकोडि प्रथम में जान,
सब दूजे तें चतु लग चऊ।
पंचम नर पशु सकल गन,
आगे मनुष्य जान सऊ ॥६८॥

(छन्द-दोहा)

जो सब [illegible],
यामें तू नहीं जीव।
तेरा-दर्शन-ज्ञान गुण,
तामें रहो सदीव ॥६९॥
दक्षिण महाराष्ट्र देश में,
उत्तर-सतारा जिल्हा जान।
फलटण नगर आदि-जिन मन्दिर,
यह रचना बनी विधान ॥७०॥
श्री आदिनाथ जिन भगवान के,
चरणारविन्द में शिर नमाय।
श्री आदि सागर मुनि चरणपे,
प्रणाम करे पंडित उलफतराय ॥७१॥

चौबीस-दण्डक (दौलतराम कृत)

दोहा

वन्दों वीर सुधीरकों, महावीर गंभीर।
वर्धमान सन्मति महा, देव देव अति वीर ॥१॥

गत्यागत्य प्रकाश के, गत्यागत्य व्यतीत।
अद्भुत आतंगति सुगति जो, जैनसूर जगदीश ॥२॥

जाकी भक्ति बिना विफल, गये अनन्ते काल।
अगणित गत्यागति धरी, कटी न जग-जंजाल ॥३॥

चौबीसों दण्डक विषें, धरी अनन्ती देह।
नाही लखियो ज्ञान-घन, शुद्ध स्वरूप विदेह ॥४॥

जिनवाणी परसादतें, लहिये आतमज्ञान।
दहिये गत्यागति सबें, गहिये पद निर्वाण ॥५॥

चौबीसों दण्डकतनी, गत्यागति सुन लेव।
सुनकर विरकत भाव धरि, चहुँ गति पानी देव ॥६॥

छन्द-चौपाई

पहिलो दण्डक नारक तनों,
भवनपती दस दण्डक भनो।
ज्योतिष व्यन्तर सुरगति वास,
थावर पंच महादुख रास ॥७॥

विकलत्रय अरु नर तिर्यंच,
पंचेन्द्रिय धारक परपंच।
ये चौबीसों दण्डक कहे,
अब सुन इनमें भेद जु लहे ॥८॥

नारक की गति-आगति दोय,
नर तिर्यंच पंचेन्द्रिय होय।
जाय असैनी पहिला लगे,
मन बिन हिंसा करम न पगें ॥९॥

सरीसर्प दूजे लग जाहि,
तीजे लग पक्षी शक नाहि।
सर्प जाय चौथ लग सही,
नाहर पंचम आगे नहीं ॥१०॥

नारी छट्ठे लग ही जाय,
नर अरु मच्छ सातवें थाय।
ये तो नरकतनी गति जान,
अब आगति भाषी भगवान् ॥११॥

नरक सातवें को जो जीव,
पशुगति ही पावे दुख दीव।
और नारकी षष्ठ सदीव,
दो गति पावें नर पशु जीव ॥१२॥

छट्ठे को निकसो जु कदाप,
सम्यकत्वा होवे निष्पाप।
पंचम को निकसो मुनि होय,
चौथे को केवलिहु जोय ॥१३॥

तृतीय नरक को निकसो जीव,
तीर्थंकर हु है जग पीव।
ये नारक की गत्यागत्य,
भाषी जिनवाणी में सत्य ॥१४॥

तेरह दण्डक देव निकाय,
तिने भेद सुनो मन लाय।
नर तिर्यंच पंचेन्द्रिय बिना,
औरन के सुरपद नहि गिना ॥१५॥

देव मरे गति पंच लहाय,
भू, जल, तरुवर, नर, पशु थाय।
दूजे सुरग ऊपरले देव,
थावर है न कहें जिन देव ॥१६॥

सहस्रार तें ऊंचे सुरा,
मरकर होवें निश्चय नरा।
नर पशु भोगभूमि के दोय,
दूजे सुरग परे नहि होय ॥१७॥

जाय नहीं यह निश्चय कही,
देवनि भोगभूमि नहि लही।
करम भूमिया नर अरु ढोर,
इन बिन भोगभूमि नहि और ॥१८॥

जायं न तातैं आगति होय,
गति इनकी देवन की होय ।
कर्म भूमिया तिर्यंच सत्त,
श्रावक व्रत धरि बारम गत्त ॥१९॥

सहस्रार ऊपर तिर्यंच,
जायें नहीं ये तजि परपंच ।
अव्रत सम्यक्त्वी नरभाय,
बारमतैं उपर नहिं जात ॥२०॥

अन्यमती पंचारती साध,
भवनत्रिकतैं जाय न बाध ।
परिव्राजक दण्डी है जेह,
पंचम परे नाहिं उपजेह ॥२१॥

परमहंस नामा परमती,
सहस्रार ऊपर नहिं गती ।
मोक्ष न पावे परमत माहिं,
जैन बिना नहिं कर्म नशाहिं ॥२२॥

श्रावक आर्य अणुव्रत धार,
बहुरि आर्यिकागण अविकार ।
अच्युत स्वर्ग परे नहिं जाय,
ऐसो भेद कहो जिन राय ॥२३॥

द्रव्य लिंग धारी जो जती,
नव ग्रैवेयक आगे नहिं गती ।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह होय,
परमत लिंग लिंग है सोय ॥२ ॥

पंचपंचोत्तर नव नवोत्तरा,
महामुनी बिन और न धरा ।
केई बार देव जिय भयो,
पै केई पद नाहीं लयो ॥२५ ।

इन्द्र हुवो न शची हू भयो,
लोकपाल कबहूं नहिं थयो ।
लोकान्तिक हुवो न कदापि,
अनुत्तर मह पहुंचो न कदापि ॥२६॥
वे पद धरि बहु पद नहिं धरे
अल्पकाल में मुक्तिहिं वरे ।

है विमान सर्वारथ सिद्ध,
सबतैं ऊंचों अतुल जु रिद्ध ॥२७॥

ताके ऊपर है शिवलोक,
परे अनन्तानन्त अलोक ।
गति-आगति देवन की भनी,
अब सुनलो मानुष गति तनी ॥२८॥
चौबीसौं दण्डक के माहिं,
मनुष जाय यामें शक नाहिं ।
मुक्ति हु पावे मनुष मुनीश,
सकल धरा को है अवनीश ॥२९॥
मुनि बिन मोक्ष न पावे और,
मनुष बिना नहिं मुनि को ठौर ।
सम्यग्दृष्टी जे मुनिराय,
भवदधि उतरें शिवपुर जाय ॥३०॥

तहां जाय अविनश्वर होय,
फिर जगमें आवे नहिं कोय ।
रहे सासते आतम माहिं,
आतमराय भये शक नाहिं ॥३१॥

गति पच्चीस कही नरतनी,
आगति पुनि बाईस हि भनी ।
तेजकाय अरु बात जु काय,
इन बिन और सर्व नरथाय ॥३२॥
गति पच्चीस आगति बाईस,
मनुषतनी भाषी जगदीश ।
ता ईश्वरसम आतमरूप,
ध्यावे चिदानन्द चिद्रूप ॥३३॥
तो उतरे भवसागर भया,
और न कोऊ शिवपुर लया ।
ये सामान्य मनुष की कही,
अब सुनि पदवी धरको सही । ३४॥
तीर्थंकर की आगति दोय,
सुर नारकतैं आवे सोय ।
फेर न गति धारे जगईश,
जाय विराजे जग के शीस ॥३५॥

चक्री अर्ध-चक्री वा हली,
स्वर्गलोक ते आवे बली ।
इनकी आगति एकही कही,
अब सुनिये जागति जु सही ।।३६।।

चक्री की गति तीन बखान,
स्वर्ग नरक अरु मोक्ष सुथान ।
तप धारे तो सुरगति जाय,
मरे राज में नरक लहाय ।।३७।।

आखिर पावे पद निर्वाण,
पदवीधर ये पुरुष प्रवान ।
बलभद्र की दो आगती,
सुरमें जाय के है शिवपती ।।३८।।

तप धारे ये निश्चय भाय,
मुक्तिपात्र सूत्र में गाय ।
अर्धचक्रि को एक हि भेद,
जाय नरक में लहे जु खेद ।।३९।।

राज मांहि यह निश्चय मरे,
तद्भव मुक्ति पंथ नहिं धरे ।
आखिर पावें पद निर्वाण,
पदवीधारक बड़े सुजान ।।४०।।

इनकी आगति सुरगति जान,
गति नरकन की कही बखान ।
आखिर पावें पद शिवलोक,
पुरुष शलाका शिव के थोक ।।४१।।

ये पद पाय सु जगके जीव,
अल्पकालमें हूं जग पीव ।
और हू पद कोई नहिं गहे,
कुलकर नारद हू नहिं लहे ।।४२।।

रुद्र भये न मदन हू भये,
जिनवर तात मात नहिं थये ।
ये पद पाय रुलैं नहिं जीव,
थोरे दिनमें है शिव पीव ।।४३।।

इनकी आगति श्रुत तें जान,
जागति रीती कहूं जु बखान ।
कुलकर देवलोक ही जाय,
मदन मदन हरि ऊरद थाय ।।४४।।

नारद रुद्र अधोगति जाय,
कलह कलह महादुखदाय ।
जन्मान्तर पावे निर्वाण,
बड़े पुरुष ये सूत्र प्रमाण ।।४५।।

तीर्थंकर के पिता प्रसिद्ध,
स्वर्ग जायके होवें सिद्ध ।
माता स्वर्गलोक ही जाय,
आखिर शिवसुख वेग लहाय ।।४६।।

ये सब रीति मनुष की कही,
अब सुनि तिर्यग गति की सही ।
पंचेन्द्रिय पशु मरण कराय,
चौबीसों दण्डक में जाय ।।४७।।

चौबीसों दण्डकतें मरे,
पशु होय तो नाहन परे ।
गति-आगति वरणी चौबीस,
पंचेन्द्रिय पशु की जगदीश ।।४८।।

ता परमेश्वर को पथ गहो,
चौबीसों दण्डक को दहो ।
विकलत्रय की दस ही गति,
दस आगति भाषी जिनपति ।।४९।।

थावर पंच विकल तीन,
नर तिर्यंच पंचेन्द्री लीन ।
इन ही दस में उपजे आय,
इनहीतें विकलत्रय थाय ।।५०।।

नारक बिन दण्डक है जोय,
पृथ्वी पानी तरुवर होय ।
तेज वायु भरि नवमें जाय,
मनुष होय नहिं सूत्र कहाय ।।५१।।

थावर पंच विकलत्रय ठौर,
ये भवगति भाषी ऋषभ ।
दसतें आय तेज अरु वाय,
होय सही गावें जिनराय ।।५२।।

ये चौबीसों दण्डक कहे,
इनकूं त्याग परमपद लहे ।
इनमें रुलै, सो जगको जीव,
इनसे तीरे सो त्रिभुवन-पीव ।५३।।
जीव इसमें और न भेद,
ये कर्मी, वे कर्म-उच्छेद ।
कर्म बंध जों लों जगजंत,
नाशत कर्म होय भगवन्त ।।५४।।

(छन्द-दोहा)

मिथ्या अव्रत जोग अरु, मद परमाद कषाय ।
इन्द्री विषय जु त्यागिये, भ्रमण दूर हो जाय ।।५५।।
जिन बिन गति बहुते धरी, भयी नहीं सुलझार ।
जिन मारग उर धरिकें, लहिये भवदधि पार ।।५६।।
जिन भज सब परपंच तज बड़ी बात है येह ।
पंच महाव्रत धारिकें, भव जल को जल देह ।।५७।।
अंत: करण जु शुद्ध है, जिनधर्मी अभिराम ।
भाषा भविजन कारणें, भाषी दौलतराम ।।५८।।

—:०:—

सूचना—संशोधक का यह कहना है कि इस चौबीस-दण्डक की दो-तीन प्रतियां दिखती हैं, उन तीनों की कवितायें कई जगह पाठान्तर जान पड़ता हैं, परन्तु मूल भाव में कुछ भी भेद नहीं है ।

कर्मों के मूलोत्तर प्रकृतियों की अवस्था और संख्या आदि विवरण—

कर्म प्रकृतियों की अवस्था और नाम	संख्या	उत्तर प्रकृतियों की संख्या १ ज्ञाना०	२ दर्श०	३ वेद०	४ मोह०	५ आयु०	६ नाम०	७ गोत्र०	८ अन्त०	जोड़
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१. मूल प्रकृतियां	८	१	१	१	१	१	१	१	१	८
२. उत्तर प्रकृतियां	१४८	५	९	२	२८	४	९३	२	५	१४८
३. बन्ध योग्य प्रकृतियां	१२०	५	९	२	२६	४	६७	२	५	१२०
४. अबन्ध योग्य प्र०	२८	०	०	०	२	०	२६	०	०	२८
५. उदय योग्य प्रकृतियां	१२२	५	९	२	२८	४	६७	२	५	१२२
६. अनुदय योग्य प्र०	२६	०	०	०	०	०	२६	०	०	२६
७. सत्व योग्य प्र०	१४८	५	९	२	२८	४	९३	२	५	१४८
८. घाति प्र०	४७	५	९	०	२८	०	०	०	५	४७
९. सर्व घाति प्र०	२१	१	६	०	१४	०	०	०	०	२१
१०. देश घाति प्र०	२६	४	३	०	१४	०	०	०	५	२६
११. अघाति प्र०	१०१	०	०	२	०	४	९३	२	०	१०१
१२. प्रशस्त (पुण्य) प्र०	६८	०	०	१	०	३	६३	१	०	६८
१३. अप्रशस्त (पाप) प्र०	१००	५	९	१	२८	१	५०	१	५	१००
१४. पुद्गल विपाकी प्र०	६२	०	०	०	०	०	६२	०	०	६२
१५. भव विपाकी प्र०	४	०	०	०	०	४	०	०	०	४
१६. क्षेत्र विपाकी प्र०	४	०	०	०	०	०	४	०	०	४
१७ जीव विपाकी प्र०	७८	५	९	२	२८	०	२७	२	५	७८

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१८. सादि-अनादि-ध्रुव-अध्रुव रूप चारों प्रकार का बंध होने वाली प्रकृतियां	११४	५	९	०	२६	०	६७	२	५	११४
१९. अनादि-ध्रुव-अध्रुवरूप तीनों प्रकार का बन्ध होने वाले प्रकृतियां	१	०	०	१	०	०	०	०	०	१
२० सादि और अध्रुव रूप दो प्रकार का बन्ध होने वाले प्रकृतियां	४	०	०	०	०	४	०	०	०	४
२१. सादि बंध प्रकृतियां	५	५	०	०	०	०	०	०	०	५
२२. अनादि बंध प्रकृतियां	५	५	०	०	०	०	०	०	०	५
२३. ध्रुव बंध प्रकृतियां	४७	५	९	०	१९	०	९	०	५	४७
२४. अध्रुव बंध प्रकृतियां	७३	०	०	२	७	४	५८	२	०	७३
२५. स्थिति बंध प्रकृतियां	१२०	५	९	२	२६	४	६७	२	५	१२०
२६. उदय व्युच्छित्ति के पहले बन्ध व्युच्छित्ति जिनके होवे वे प्रकृतियां	८१	५	९	२	५	३	५०	२	५	८१
२७. उदय व्युच्छित्ति के बाद बन्ध व्युच्छित्ति जिनके होवे वे प्रकृतियां	८	०	०	०	०	१	७	०	०	८
२८. उदय व्युच्छित्ति और बन्ध व्युच्छित्ति जिनके एक साथ अर्थात् एक ही गुण स्थान मे होता है वे प्रकृतियां	३१	०	०	०	२१	०	१०	०	०	३१
२९. जिस प्रकृति का उदय होता है उसका उस ही समय में बंध होता है एसी प्रकृतियां	२७	५	४	०	१	०	१२	०	५	२७

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
३०. एक प्रकृति का उदय होता हुआ दूसरे प्रकृति का बंध होता है ऐसे प्रकृतियां	११	०	०	०	०	२	९	०	०	११
३१. आपका या अन्य प्रकृति का उदय होता हुआ या नहीं भी हो तो भी जिस प्रकृति का बंध होता है ऐसे प्रकृतियां	८२	०	५	२	२५	२	४६	२	०	८२
३२. निरन्तर बंध होने वाले प्र०	५४	५	९	०	१९	४	१२	०	५	५४
३३. सांतर बंध प्रकृतियां अर्थात् जिनका बन्ध कभी होता है और कभी नहीं होता है ऐसे प्रकृतियां	३४	०	०	१	४	०	२९	०	०	४
३४. सांतर और निरन्तर बंध होने वाले प्रकृतियां	३२	०	०	१	३	०	२६	२	०	३२
३५. उद्वेलना प्रकृतियां	१३	०	०	०	२	०	१०	१	०	१३
३६. विध्यात प्रकृतियां	६७	०	३	१	१८	०	४३	२	०	६७
३७ अध: प्रवृत्ति प्र०	१२१	५	९	२	२७	४	६७	२	५	१२१
३८. गुण संक्रमण प्र०	७५	०	५	१	२३	०	४	२	०	७५
३९. सर्व संक्रमण प्र०	५२	०	३	०	२७	०	२१	१	०	५२
४०. तिर्यंगे का दश प्र०	११	०	०	०	०	०	११	०	०	११

कर्मों के मूलोत्तर प्रकृतियों की अवस्थाओं के मादिक कुछ विशेष विवरण

१. मूल प्रकृति ८ हैं— कर्म सामान्य से ८ प्रकार का या १४८ प्रकार के होते हैं और असंख्यात लोकप्रमाण भेद भी होते हैं। घाति और अघाति ऐसी उनको अलग-अलग संज्ञा है. ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार घातिया कर्म हैं, कारण ये जीव के गुणों का घात करते हैं और आयु, नाम, गोत्र और वेदनीय ये चारों कर्म जीव के गुणों का घात नहीं करते, इसलिये वे अघाति कर्म कहलाते हैं, इस प्रकार ये कर्मों की आठ मूल प्रकृतियां हैं। उनका क्रम १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अन्तराय इस प्रकार—जानना (देखो गो० क० गा० ७-८-९)

२. उत्तर प्रकृति १४८ हैं—ज्ञानावरणीय के ५, दर्शनावरणीय के ९, वेदनीय के २, मोहनीय के २८, आयु के ४, नाम कर्म के ९३, गोत्र कर्म के २, अन्तराय के ५ ये सब मिलकर १४८ उत्तर प्रकृतियां जानना (देखो गो० क० गा० २२)।

३. बंध योग्य प्रकृतियां १२० हैं—

(१) **ज्ञानावरणीय** ५ (मति–श्रुत–अवधि–मनःपर्यय–केवल ज्ञानावरणीय ये पांच)

(२) **दर्शनावरणीय** ९ (अचक्षु दर्शन, चक्षुदर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शनावरणीय और स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला निद्रा, प्रचला ये ९)

(३) **वेदनीय के** २ हैं [सातावेदनीय (पुण्य), असातावेदनीय (पाप) ये २]

(४) **मोहनीय के**—दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय ऐसे दो प्रकार हैं. दर्शनमोहनीय का बंध की अपेक्षा से 'मिथ्यात्व' यह एक ही प्रकार जानना, उदय और सत्व की अपेक्षा से मिथ्यात्व, सम्यङ् मिथ्यात्व, सम्यक्त्व प्रकृति ऐसे तीन प्रकार जानना।

चारित्रमोहनीय के—कषायवेदनीय और नोकषायवेदनीय इस प्रकार दो भेद जानना।

कषायवेदनीय के—१६ भेद हैं—(अनंतानुबंधी-क्रोध–मान–माया–लोभ ४, अप्रत्याख्यान–क्रोध–मान–माया–लोभ ४, प्रत्याख्यान–क्रोध–मान–माया–लोभ ४, संज्वलन–मान–माया–लोभ ४ ये १६

नोकषायवेदनीय के ९ प्रकार हैं—(हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद ये ९)।

इस प्रकार मोहनीय कर्म के बंध की अपेक्षा, दर्शन मोहनीय के एक मिथ्यात्व प्रकृति और चारित्र मोहनीय के २५ प्रकृति मिलकर २६ प्रकृति जानना।

(५) **आयु कर्म के ४ भेद हैं**—(नरकायु १, तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १, देवायु ये ४)

(६) **नामकर्म के ६५ हैं**—पिंड और अपिंड की अपेक्षा ४२ प्रकार जानना, पिंड प्रकृति १४ हैं, इनके उत्तर भेद ६५ जानना, गति ४, जाति ५, शरीर ५, बंधन ५, संघात ५, संस्थान ६, अंगोपांग ३, संहनन ६, वर्णादि ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २ ये ६५ हैं।

अपिंड प्रकृति २८ होते हैं—(१) अगुरुलघु (२) उपघात (३) परघात (४) उच्छ्वास (५) आतप (६) उद्योत, (७) त्रस (८) स्थावर (९) बादर (१०) सूक्ष्म (११) पर्याप्त (१२) अपर्याप्त (१३) प्रत्येक शरीर (१४) साधारण शरीर (१५) स्थिर (१६) अस्थिर (१७) शुभ (१८) अशुभ (१९) सुभग (२०) दुर्भग (२१) सुस्वर (२२) दुस्वर (२३) आदेय (२४) अनादेय (२५) यशः कीर्ति (२६) अयशः कीर्ति (२७) निर्माण (२८) तीर्थंकर ये २८ जानना।

इस प्रकार ६५+२८=९३ नामकर्म के प्रकृतियों में निम्नलिखित २६ प्रकृतियों की बंध में गिनती नहीं

की जाती है। इसलिये बंधन ५, संघात ५, स्पर्शादिक १६ (स्पर्शादि २० प्रकृतियों में से स्पर्श १, रस १, गंध १, वर्ण १ ये ४ बंध में गिने जाते हैं इसलिये ये ४ छोड़कर शेष १६ ये २६ प्रकृतियां ९३ प्रकृतियों में से घटाकर शेष ६७ प्रकृतियों का बंध माना जाता है, वास्तव में ९३ प्रकृतियों का बंध होता है परन्तु बंध की हिसाब में २६ प्रकृतियों की गिनती नहीं है इसलिये ६७ प्रकृतियां बंध योग्य माने जाते हैं।

(७) गोत्र कर्म २ है-- (१ उच्च गोत्र, १ नीच गोत्र, ये २ जानना)

(८) अंतराय ५ प्रकार का है—(दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय ये ५ प्रकार जानना)

सब १४८ कर्म प्रकृतियों में से दर्शन मोहनीय की २ प्रकृतियां-(सम्यक्मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति १ ये २) बंध योग्य नहीं हैं इसलिये ये २ घटाने से १४६ बंध योग्य प्रकृतियां रहती हैं, परन्तु उनमें से २६ प्रकृतियां बंध में नहीं मानते हैं। इसलिये वह भी कम करके अर्थात् १४८ —२=१४६—२६=१२० प्रकृतियां बंध योग्य माने गये हैं। (देखो गो० क० गा० ३३ से ३५)।

४. अबंध प्रकृतियां २८ हैं दर्शनमोहनीय की २ (सम्यक्मिथ्यात्व. सम्यक्त्व प्रकृति ये २), और नामकर्म की २६ (बंधन ५, संघात ५, स्पर्शादि २० में से स्पर्श-रस गंध-वर्ण ये ४ घटाकर शेष १६) ये २८ जानना (देखो गो० क० गा० ३४-३५)।

५. उदय योग्य प्रकृतियां १२२ है—ज्ञानावरणीय के ५, दर्शनावरणीय के ९, वेदनीय के २ मोहनीय के २८ (दर्शनमोहनीय ३ चारित्रमोहनीय २५ ये २८), आयुकर्म के ४, नामकर्म के ६७ (शरीर ५, बंधन ५, संघात ५ इन १५ में से बंधन+संघात ये १०. पांच शरीर में गर्भित होने से ये १० प्रकृतियां घट गये और स्पर्श ८, रस ५, गंध २, वर्ण ५ इन २० में से फल स्पर्श १, रस १, गन्ध १, वर्ण १ ये ४ प्रकृति गिनती में आते हैं। इसलिये इन ४ प्रकृतियों को २० में से घटाने से शेष १६ रहते हैं। इन १६ और बंधन के ५, संघात के ५ इन १० मिलकर २६ प्रकृतियों का उदय गिनती में नहीं आती इसलिये ९३ प्रकृतियों में से २६ प्र० घटाने से ९३—२६=६७ प्रकृतियां उदय योग्य रहती है)। गोत्र-कर्म के २ अंतरायकर्म के ५ इस प्रकार ५+९+२+२८+४+६७+२+५=१२२ होते हैं। अर्थात् कर्म प्रकृति १४८ में से २६ प्रकृतियां घटाने से १२२ उदय-योग्य प्रकृतियां रहती हैं। वास्तव में १४८ प्र० का उदय रहता है। २६ प्रकृतियां दूसरे प्रकृतियों में गर्भित होने से वे गिनती में नहीं आतीं। इसलिये उदय योग्य १२२ प्र० मानते हैं।

६. अनुदय प्रकृतियां २६ हैं—नाम कर्म की २६ प्रकृति (बंधन ५ और स्पर्शादिक २० प्र० में से स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण ये ४ घटाकर शेष १६ मिलाकर २६) अनुदय के जानना (देखो गो०क०गा० ३६-३७-३७)।

७. सत्व प्रकृतियां १४८ हैं – ज्ञानावरणीय के ५, दर्शनावरणीय के ९, वेदनीय के २, मोहनीय के २८, आयुकर्म के ४, नामकर्म के ९३, (पिंड प्रकृति १४ के उत्तर भेद ६५ गति ४ (नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्य-गति.) जाति नामकर्म ५ (एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति ये ५), शरीर नामकर्म ५ (औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस कार्माण कार्माण ये ५) बंधन ५ (औदारिक शरीर बंधन, वैक्रियिक शरीर बंधन ये संघात ५ (औदारिक शरीर संघात, कार्माण-शरीर बंधन ये ५) संघात ५ (औदारिक शरीर संघात, वैक्रियिक शरीर संघात, आहारक शरीर संघात, तैजस शरीर संघात, कार्माण शरीर संघात ये ५) संस्थान ६ (समचतुरस्र संस्थान, न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान, कुब्जक संस्थान, स्वाति संस्थान, वामन संस्थान, हुंडक संस्थान ये ६) अंगोपांग ३ (औदारिक शरीर अंगोपांग, वैक्रियिक शरीर अंगोपांग, आहारक शरीर अंगोपांग, ये ३ जानना। तैजस और कार्माण शरीर को अंगोपांग नहीं रहते हैं) संहनन ६ (वज्रवृषभ नाराच संहनन, वज्रनाराच संहनन, नाराच संहनन, अर्ध नाराच संहनन कीलित (कीलक) (संहनन, असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन ये ६) वर्ण ५। (श्वेत पांडरा) पीत (पिवका), हरित या नील, रक्त (लाल), कृष्ण (काला) ये ५) गंध २। (सुगंध और दुर्गंध ये)२

रस ५। (मीठा, कडुवा, खट्टा, कषायला, तिक्त (चरपरा) ये ५) स्पर्श ८। (कोमल, कठोर, हलका, भारी, शीत, उष्ण, स्निग्ध (चिकना), रूक्ष, ये ८) आनुपूर्वी ४, (नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी ये ४) विहायोगति २। (प्रशस्त विहायोगति, अप्रशस्त विहायोगति ये २) ये ६५ पिंड प्रकृति जानना।

अपिंड प्रकृतियां ८ ऊपर बंध प्रकृतियों में कहे हुए अनुसार जानना। इस प्रकार नामकर्म के ६५+२८=९३ प्रकृति जानना। गोत्रकर्म के २, अन्तरायकर्म के ५ ये सब मिलकर सत्व प्रकृतियां १४८ जानना।

८. घाति या प्रकृति ४७ हैं ज्ञानावरणीय के ५, दर्शनावरणीय के ९, मोहनीय के २८, अन्तराय के ५ ये ४७ जानना।

९. सर्वघातिया प्रकृति २१ हैं—केवल ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय के ६ (केवल दर्शनावरणीय १, निद्रा के ५ ये ६) कषाय १२ (अनंतानुबंधी कषाय ४। अप्रत्याख्यान कषाय ४, प्रत्याख्यान कषाय ४ ये १२) मिथ्यात्व १ ये २० प्रकृतियां बंध की अपेक्षा जानना और सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृति १ सत्ता और उदय की अपेक्षा से जानना। इस प्रकार सर्वघातिया प्रकृति २१ जानना।

सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृति को जात्यंतर सर्वघाति कहते हैं। कारण मिथ्यात्वादि प्रकृति के समान यह प्रकृति पूर्णरूप से घात नहीं करता है और यह प्रकृति बंधयोग्य नहीं है (देखो गो० क० गा० ३९)।

१०. देशघाति प्रकृतियां २६ हैं—ज्ञानावरणीय के ४ (मति-श्रुत-अवधि मनः पर्यय ज्ञानावरणीय ये ४) दर्शनावरणीय के ३। (अचक्षुदर्शन, चक्षुदर्शन, अवधिदर्शन ये ३) सम्यक्त्व प्रकृति १, संज्वलन कषाय ४, नवनोकषाय ९, अन्तराय प्रकृति ५ ये २६ देशघाति प्रकृति जानना। (देखो गो० क० गा० ४०)।

११. अघाति प्रकृतियां १०१ हैं—वेदनीयकर्म के २, आयुकर्म के ४, नामकर्म के ९३, गोत्रकर्म के २ ये सब मिलकर १०१ होते हैं।

१२. प्रशस्त (पुण्यरूप) प्रकृतियां ६८ हैं— साता-वेदनीय १, तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १, देवायु १, उच्चगोत्र १, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, शरीर ५, बंधन ५, संघात ५, अंगोपांग ३, शुभ-स्पर्श-रस-गंध-वर्ण ये २०, समचतुरस्र संस्थान १, वज्रवृषभनाराच संहनन १, अगुरुलघु १, परघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, प्रशस्तविहायोगति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्ति १, प्रत्येक शरीर १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १, निर्माण १, तीर्थंकर १ इस प्रकार ६८ प्रकृतियां भेद की अपेक्षा से प्रशस्त पुण्यरूप हैं, अभेद विवक्षा से बंधन ५, संघात ५, स्पर्शादिक १६ ये २६ घटाने से ४२ प्रकृति प्रशस्त-पुण्यरूप जानना। तत्वार्थ सूत्र अ० ८ देखो। 'सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥' (देखो गो० क० गा० ४१-४२ और १६४)

१३. अप्रशस्त (पापरूप) प्रकृतियां १०० हैं—घाति कर्म के सब ४७ प्रकृतियां अशस्त ही है। असातावेदनीय १, नरकायु १, नीचगोत्र १, नरकद्विक २, तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, न्यग्रोधपरिमंडलादि अंत्य के संस्थान ५, वज्रनाराचादि अंत्य के संहनन ५ अशुभ स्पर्श-रस-गंध-वर्ण ये २०, उपघात १, अप्रशस्त विहायोगति १, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १ साधारण शरीर १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १ इस प्रकार से १०० प्रकृतियां उदयरूप अप्रशस्त हैं। भेदविवक्षा से बंधरूप ९८ प्रकृतियां हैं। कारण ४७ घातिया प्रकृतियों में सम्यङ्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व प्रकृति इन दो प्रकृतियों का बंध नहीं होता। अभेदविवक्षा से स्पर्शादि २० प्रकृतियों में से १६ प्रकृति घटाने से ८२ प्र० बंधरूप रहते हैं और उदयरूप ८४ प्रकृति और सत्तारूप १०० प्रकृति रहते हैं। इनमें ६८ पुण्यप्रकृति मिलाने से १००+६८=१६८ होते है। इनमें से पुण्य और पापरूप २० प्रकृतियां कम करने से १६८—२०=१४८ प्र० रहते हैं (देखो गो० क० गा० ४३-४४ और १६४)

१४. पुद्गल विपाकी प्रकृतियां ६२ हैं—पुद्गल

विपाकी अर्थात् पुद्गल में उदय होने वाले प्रकृति जानना। शरीर के ५, बंधन के ५, संघात के ५ संस्थान के ६, अंगोपांग के ३, संहनन के ६, स्पर्श ८, रस ५, गंध २, वर्ण ५ निर्माण १, आतप १, उद्योत १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, प्रत्येक १, साधारण १, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १ ये सब मिलकर ६२ प्रकृति जानना।

१५. भाव विपाकी प्रकृतियां ४ हैं—नरकायु १, तिर्यंच आयु १ मनुष्यायु १, देवायु १ ये ४ प्रकृति जानना।

१६. क्षेत्र विपाकी प्रकृतियां ४ हैं—नरकगत्यानुपूर्वी १, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी , मनुष्यगत्यानुपूर्वी १, देवगत्यानुपूर्वी १, ये ४ आनुपूर्वी प्रकृति जानना।

१७. जीव विपाकी प्रकृतियां ७८ हैं—घाति कर्म के प्रकृति ४७, वेदनीय के २, गोत्रकर्म के २, नामकर्म के २७ (तीर्थंकर प्र० १, उच्छ्‌वास १, बादर १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, अपर्याप्त १, सुस्वर १, दुःस्वर १, आदेय १, अनादेय १, यशः कीर्ति १, अयशः कीर्ति १, त्रस १, स्थावर १, प्रशस्त और अप्रशस्त विहायोगति २, सुभग १, दुर्भग १, गति ४, एकेन्द्रियादि जाति नामकर्म ५, ये २७) ये सब मिलकर ७८ जानना।

इस प्रकार सब मिलकर ६२+४+४+७८= १४८ प्रकृति होते हैं। (देखो गो० क० गा० ४७ से ५१)

१८. सादि-अनादि-ध्रुव-अध्रुव रूप चारों प्रकार के बंध होने वाली प्रकृतियां—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, मोहनीय २६, नामकर्म के ६७, गोत्रकर्म के २, अन्तराय के ५ ये ११४ प्रकृतियों का बंध चारों प्रकार का होता है।

१९. अनादि-ध्रुव-अध्रुव रूप तीन प्रकार का बंध वेदनीय कर्म का होता है। उपशम श्रेणी चढ़ते समय और नीचे उतरते समय सातावेदनीय का सतत बंध होता रहता है इसलिये सादि बंध नहीं होता।

२०. सादि और अध्रुवरूप दो प्रकार का बंध होने वाली प्रकृतियां—एक पर्याय में एक समय, दो समय, या उत्कृष्ट आठ समय में आयु कर्म का बंध होता है इसलिये सादि और हर समय (आयु कर्म के ⅓ भाग में) अन्तर्मुहूर्त तक ही होता है इसलिये अध्रुव है।

२१ सादि बंध—ज्ञानावरण की पांच प्रकृतियों का बंध किसी जीव के १०वें गुण स्थान तक अव्याहत होता था, जब वह जीव ११वें गुण स्थान में गया तब बंध का अभाव हुआ, पीछे ११वें गुण० से च्युत होकर (पड़कर) फिर १०वें गुण० में आया तब ज्ञानावरण की पांच प्रकृतियों का पुनः बंध हुआ ऐसा बंध सादि बंध कहलाता है।

२२ अनादि बंध – दसवें गुण स्थान वाला जीव जब तक ११वें गुण० में प्राप्त नहीं हुआ तब तक ज्ञानावरण का अनादि काल से उसका बंध चला आता है इसलिये वह अनादि बंध है। (देखो गो० क० गा० १२२–१२३)

२३. ध्रुव प्रकृतियां ४७ हैं—बंधव्युच्छित्ति होने तक जिसका बंध समय समय को होता है वह ध्रुव बंध कहलाता है। इसका ध्रुव प्रकृति ४७ है। ज्ञानावरणीय के ५, दर्शनावरणीय के ९, मोहनीय के मिथ्यात्व १, नवनो कषायों में से भय और जुगुप्सा ये २ मिलकर १८, अंतराय के ५, और नामकर्म के ९ (तैजस १, कार्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १,

स्पर्श १, रस १, गंध १, वर्ण १ ये ६) सब मिलकर ४७ प्र० जानना।

२४. **अध्रुव प्रकृतियां ७३ हैं**—जिसका बंध हर समय को नहीं होता है कभी कभी होता है उसको अध्रुव बंध कहते हैं। वे अध्रुव प्रकृति ७३ हैं। वेदनीय कर्म के २, मोहनीयों में से नोकषाय ७ (हास्य-रति, अरति-शोक, और वेद ३ ये ७) आयु कर्म के ४, गोत्रकर्म के २, नामकर्म के ५८ प्रकृति (गति ४, जाति नामकर्म ५, औदारिकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, आहारकद्विक २, संस्थान ६, संहनन ६, आनुपूर्वी ४, परघात १, आतप १, उद्योत १, उच्छ्वास १, विहायोगति २, त्रस १, स्थावर १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुभग १, दुर्भग १, सुस्वर १, दुःस्वर १, आदेय १, अनादेय १, बादर १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, अपर्याप्त १, प्रत्येक शरीर १, साधारण शरीर १, यशः कीर्ति १, अयशः कीर्ति १, तीर्थंकर १ ये ५८) सब मिलकर ७३ प्रकृति जानना।

ऊपर के ४७ प्रकृतियों का बंध सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव इस प्रकार चारों ही प्रकार का होता है। परन्तु ७३ प्रकृतियों का बंध सादि और अध्रुव इन दो प्रकार का ही होता है। इस ७३ प्रकृतियों में ६२ प्रकृतियां सप्रतिपक्ष और ११ प्रकृतियां अप्रतिपक्ष होते हैं।

अप्रतिपक्ष प्रकृति ११ हैं:—तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, परघात १, आतप, १, उच्छ्वास १, आयुकर्म के ४, ये सब ११ प्र० जानना।

सप्रतिपक्ष प्रकृति ६२ हैं—ऊपर के ७३ प्रकृतियों में से अप्रतिपक्ष के ११ प्रकृति घटाकर शेष ६२ प्रकृति जानना। जिसको प्रतिपक्षी है उसे सप्रतिपक्ष कहते हैं जैसे साता-असाता, शुभ-अशुभ इत्यादि।

अध्रुव ७३ प्रकृतियों में से ७ प्रकृति (तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आयु ४ ये ७) के का निरन्तर बंध काल जघन्य एक अन्तर्मुहूर्त है, और ६६ प्रकृतियों का निरंतर बंध काल जघन्य एक समय मात्र है इसलिये इनको सादि और अध्रुव ऐसे दो प्रकार का ही बंध होता है।
(देखो गो० क० गा० १२४–१२५–१२६)

२५-मूलोत्तर प्रकृतियों की स्थिति बंध को बतलाते हैं

(देखो गो० क० गा० १२७ से १३३ और १३६ से १४० को० नं० ४१)

कर्म प्रकृतियां	उत्कृष्ट-स्थिति बंध	जघन्य स्थिति बंध	कर्म प्रकृतियां	उत्कृष्ट-स्थिति बंध	जघन्य स्थिति बंध
१. ज्ञानावरण के	१० कोडा कोडी सागर	१ अंतर्मुहूर्त	प्रत्याख्यान के		
मति ज्ञानावरण			क्रोध १	४० को० को० सा०	२ महीने
श्रुत "	"	"	मान १	"	१ महीना
अवधि "	"	"			१५ दिन
मनःपर्यय "	"	"	माया १	"	१ अंतर्मुहूर्त
केवल "	"	"	लोभ १	"	
			संज्वलन के		
२. दर्शनावरण के	"	"	क्रोध १	४० को० को० सा०	२ महीने
अचक्षु दर्शन	"	"	मान १	"	१ महीना
चक्षु "	"	"	माया १	"	१५ दिन
अवधि "	"	"	लोभ १	"	१ अंतर्मुहूर्त
केवल "	"	"	नोकषाय के		
स्त्यान गृद्धि	"	"	हास्य १	१० को० को० सा०	
निद्रा निद्रा	"		रति १	"	
प्रचला प्रचला	"				
निद्रा	"		अरति १	२० को० को० सा०	
प्रचला	"		शोक १	"	
			भय १	"	
३. वेदनीय के		१२ मुहूर्त			
साता वेदनीय	१५ को० को० सा०	"	जुगुप्सा १	"	
असाता	३० को० को० सा०		नपुंसक वेद १	"	
			स्त्री वेद १	१५ को० को० सा०	
४ मोहनीय के		१ अंतर्मुहूर्त	पुरुष वेद १	१० को० को० सा०	८ वर्ष
मिथ्यात्व १	७० को० को० सा०				
अनन्तानुबंधी के	४० को० को० सा०		५-आयुकर्म के		१ अंतर्मुहूर्त
क्रोध १	"	दो महिने	नरकायु १	३३ सागर	१० हजार वर्ष
मान १	"	एक महीना	तिर्यंचायु १	३ पल्य	१ अंतर्मुहूर्त
माया १	"	१५ दिन	मनुष्यायु १	३ पल्य	"
लोभ १	"	१ अंतर्मुहूर्त	देवायु १	३३ सागर	१० हजार वर्ष
अप्रत्याख्यान के					
क्रोध १	४० को० को० सा०	दो महीने	६. नाम कर्म के		८ मुहूर्त
मान १	"	१ महीना	नरकगति	२० को० को० सा०	
माया १	"	१५ दिन	तिर्यंचगति	"	
लोभ १	"	१ अंतर्मुहूर्त	मनुष्यगति	१५ को० को० सा०	

देवगति	१० को० को० सा०	
एकेन्द्रियजाति	० को० को० सा०	
द्वीन्द्रिय ”	१८ को० को० सा०	
त्रीन्द्रिय ”	”	
चतुरिन्द्रिय ”	”	
पंचेन्द्रिय ”	२० को० को० सा०	
औदारिक शरीर	”	
वैक्रियिक ”	”	
आहारक ”	अंत: को० को० सा०	अंत को० को० सागर
तैजस ”	२० को० को० सा०	
कार्माण ”	”	
समचतुरस्र सं०	१० को० को० सा०	
न्यग्रोध प० सं०	१२ को० को० सा०	
स्वाति संस्थान	१४ को० को० सा०	
कुब्जक संस्थान	१६ को० को० सा०	
वामन संस्थान	१८ को० को० सा०	
हुंडक संस्थान	२० को० को० सा०	
औ-अंगोपांग	”	
वैक्रियिक ”	”	
आहारक ”	अंत को० को० सा०	अंत: को० को० सागर
वज्रवृ० ना० संह०	१० को० को० सा०	
वज्रनाराच संह०	१२ को० को० सा	
नाराच संहनन	१४ को० को० सा०	
अर्धनाराच संह०	१६ को० को० सा०	
कीलितसंहनन	१८ को० को० सा०	
असं० सृपा० संह०	२० को० को० सा	
स्पर्श नामकर्म	”	
रस ”	”	
गंध ”	”	
वर्ण ”	”	
नरक गत्यानुपूर्व्य		
तिर्यंच ”	”	
मनुष्य ”	१५ को० को० सा०	
देव ”	१० को० को० सा०	
प्रशस्त विहा०	”	
अप्रशस्त विहा०	२० को० को० सा०	
अगुरु लघु	”	

उपघात	”	
परघात	”	
उच्छ्वास	”	
आतप	”	
उद्योत	”	
त्रस	”	
स्थावर	”	
बादर	”	
सूक्ष्म	१८ को० को० सा०	
पर्याप्त	२० को० को० सा०	
अपर्याप्त	१८ को० को० सा०	
प्रत्येक शरीर	२० को० को० सा०	
साधारण शरीर	१८ को० को० सा०	
स्थिर	१० को० को० सा	
अस्थिर	२० को० को० सा०	
शुभ	१० को० को० सा०	
अशुभ	२० को० को० सा०	
सुभग	१० को० को० सा०	
दुर्भग	२० को० को० सा०	
सुस्वर	१० को० को० सा०	
दुःस्वर	२० को० को० सा	
आदेय	१० को० को० सा०	
अनादेय	२० को० को० सा०	
यश: कीर्ति	१० को० को० सा०	८ मुहूर्त
अयश: कीर्ति	२० को० को० सा०	
निर्माण	”	
तीर्थंकर प्रकृति	अंत: को० ० सा	अंत: को० को० सागर
७. गोत्रकर्म के		
उच्चगोत्र	१० को० को० सा०	८ मुहूर्त
नीचगोत्र	२० को० को० सा०	
८-अंतराय के		१ अंतर्मुहूर्त
दानांतराय	३० को० को० सा०	”
लाभांतराय	”	”
भोगांतराय	”	”
उपभोगांतराय	”	”
वीर्यांतराय	”	”

सूचना—तीन शुभ आयु के सिवाय शेष कर्मों का उत्कृष्ट स्थितिबंध संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त के उसमें भी योग्य (तीव्र कषायरूप उत्कृष्ट संक्लेश-परिणामों वाला ही जीव अधिक स्थिति के योग्य कहा गया है) जीव के ही होता है, हर एक के नहीं होता (देखो गो० क० गा० १३३)

२६-उदय व्युच्छित्ति के पहले बंध व्युच्छित्ति जिनके होवे वे प्रकृतियां-८१ हैं —

प्रकृति	बंधव्युच्छित्ति गुणस्थान	उदयव्यु० गुण०
ज्ञानावरणीय के ५,	१०वां गुण० में	१२वां गुण० में
दर्शनावरणीय के ९, में से अचक्षु, चक्षु, अवधि, केवल द० ४,	१०वां गुण० में	१२वां गुण० में
स्त्यानगृ०, निद्रा निद्रा, प्रचला-प्रचला ये ३ महानिद्रा।	२रे गुण० में	६वां गुण० में
निद्रा, प्रचला ये २।	८वां गुण० के प्रथम भाग में	१२वां गुण० में
असातावेदनीय १,	६वां गुण० में	१३-१४ गुण०
साता वेदनीय १,	१३वां गुण० में	"
मोहनीय के संज्वलन लोभ १,	९वां गुण० के ५वां भाग में	१०वां गुण० में
" स्त्रीवेद १,	२रे गुण० में	९ "
" नपुंसकवेद १,	१ले गुण० में	९ "
" अरतिशोक ये २,	६वें "	८ "
आयुकर्म के नरकायु १,	१ले "	४थे "
" तिर्यंचायु १,	२रे "	५वे "
" मनुष्यायु १,	४थे "	१४वे "
नामकर्म के नरकगति १,	१ले गुण० में	४थे गुण में
" तिर्यंचगति १,	२रे "	५वे "
" मनुष्यगति १,	४थे "	१४वे "
नामकर्म के पंचेन्द्रिय जाति १,	८वां गुण० के ६वां भाग में	" "
" औदारिक शरीर १,	४थे गुण० में	१३वे "
" तैजस-कार्माण शरीर २,	८वां गुण० के ६वां भाग में	" "
" असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन १,	१ले गुण० में	७वे "
" वज्रनाराच संहनन १,	२रे गुण० में	११वे "
" नाराच संहनन १,	२रे गुण० में	११वे "
" अर्धनाराच संहनन १,	२रे गुण० में	७वे "
" कीलक संहनन १,	२रे "	७वे "
" वज्रवृषभ नाराच सं० १,	४थे "	१३वे "
" औदारिक अंगोपांग १,	४थे "	" "
" हुंडक संस्थान १,	१ले "	" "
" न्यग्रोध०, स्वाति०, कुब्जक०, वामन सं० ४	२रे "	" "
" समचतुरस्र सं० १,	८वां गुण० के ६वां भाग में	" "
" स्पर्श, रस, गन्ध वर्ण ४	" "	" "
" नरकगत्यानुपूर्वी १,	१ले गुण० में	४थे "
" तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १,	२रे "	" "
" अगुरुलघु, उपघात, परघात ये ३,	८वां गुण० के ६वां भाग में	१३वे "
" उद्योत प्रकृति १,	२रे गुण में	५वे "
" उच्छ्वास १,	८वां गुण० के ६वां भाग में	१३वे "
" प्रशस्तविहायोगति १,	" "	" "
" अप्रशस्तविहायोगति १,	२रे गुण० में	" "
" त्रस, बादर, पर्याप्त ये ३,	८वां गुण० के ६वां भाग में	१४वे "
" प्रत्येक शरीर, स्थिर ये २,	" "	१३वे "

" अस्थिर प्रकृति १	६वें गुण० में	"	"
" शुभ प्र० १	८वां गुण० के ६वां भाग में	"	"
" अशुभ प्र० १	६वें गुण० में	"	"
" सुभग प्र० १	८वां गुण० के ६वां भाग में	१४वें	"
" दुर्भग प्र० १	२रे गुण० में	४थे	"
" सुस्वर १	८वां गुण० के ४वां भाग में	१३वें	"
" दुःस्वर १	२रे गुण० में	"	"
" आदेय	८वां गुण० के ६वां भाग में	१४वें	"
" अनादेय १	२रे गुण० में	४थे	"
" यशः कीर्ति १	१०वां गुणां में	१४वें	"
" निर्माण १	८वां गुण० के ६वां भाग में	१३वें	"
" तीर्थंकर प्रकृति १	" "	१४वें	"
गोत्रकर्म उच्चगोत्र १	१०वें गुण० में	१४वें	"
" नीचगोत्र १	२रे गुण० में	५वें	"
अन्तराय कर्म के प्रकृति ५,	१०वें गुण०	१२वें	"
इस प्रसकार ५+६+२+५+३+५०+२+५=८१ प्रकृति जानना			

२७. उदय व्युच्छित्ति के बाद बन्ध व्युच्छित्ति जिनके होवे वे प्रकृतियां ८ हैं—

प्रकृति	उदय व्युच्छित्ति गुण०	बंध व्यु० गुण०
आयु कर्म के देवायु १	४थे गुण० में	७वें गुण० में
नामकर्म के देवगति १	" "	८वां गुण० के
" देवगत्यानुपूर्वी १	" "	६वां भाग में जानना
" वैक्रियिक शरीर १	" "	
" वै० अंगोपांग १	" "	
" आहारकद्विक २	६वें गुण० में	"
" अयशः कीर्ति १	४थे गुण० में	६वें गुण० में
इस प्रकार १+७=८ प्रकृति जानना		

२८. उदय व्युच्छित्ति और बन्ध व्युच्छित्ति जिनके एक साथ (एक ही गुण स्थान में) होता है वे प्रकृतियां ३१ हैं—

	गुण० का नाम
मोहनीय कर्म के २१ प्रकृतियां—	
मिथ्यात्व १	१ले गुण०
अनन्तानुबन्धी—क्रोध-मान-माया-लोभ ४	२रे गुण०
अप्रत्याख्यान " " " " ४	४थे गुण०
प्रत्याख्यान " " " " ४	५वें गुण०
संज्वलन कषाय— क्रोध-मान-माया ये ३	९वें गुण०
हास्य-रति, भय-जुगुप्सा ये ४	८वें गुण०
पुरुषवेद १	९वें गुण०
नाम कर्म के १० प्रकृतियां—	
आतप १, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्तक १, साधारण १, एकेंद्रियादि जाति ४, ये ९ प्रकृति	१ले गुण०
मनुष्यगत्यानुपूर्वी १	४थे गुण०
इस प्रकार २१+१०=३१ प्रकृति जानना।	
(देखो गो० क० गा० ३९९–४००–४०१)	

२९. जिस प्रकृति का उदय होता है उसका उस ही समय बंध होता है ऐसी प्रकृतियां २७ हैं—

ज्ञानावरणीय के ५, दर्शनावरणीय के ४, मोहनीय मिथ्यात्व प्र० १, नामकर्म के १२ (तैजस-कार्माण २, स्पर्शादि ४, स्थिर-अस्थिर २, शुभ-अशुभ २, अगुरुलघु १, निर्माण १ ये १२) अन्तराय के ५, इस प्रकार ५+४+१+१२+५=२७ जानना।

३० एक प्रकृति का उदय होता हुआ दूसरे प्रकृति का बंध होता है ऐसी प्रकृतियां ११ है—

आयु कर्म के २ (देवायु, नरकायु ये २) नामकर्म के ९, (तीर्थंकर प्रकृति १, वैक्रियिक द्विक २, देवद्विक २, नरकद्विक २, आहारकद्विक २, ये ९) इस प्रकार २+९=११ जानना।

३१. आपका अथवा अन्य प्रकृति का उदय होता हुआ अथवा नहीं हो तो भी जिस प्रकृति का बंध होता है ऐसी प्रकृतियां ८२ हैं—

दर्शनावरणीय के स्त्यानगृद्धि आदि ५ प्रकृति, वेदनीय के २, मोहनीय के २५ (कषाय १६ नोकषाय ९ ये २५) आयु कर्म के २ (मनुष्यायु, तिर्यंचायु ये २) नामकर्म ४६ (तिर्यंच गति १, मनुष्यगति १, एकेन्द्रियादि जाति ५, औदारिक शरीर १, औ० अंगोपांग १, संहनन ६, संस्थान ६, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, मनुष्य गत्यानुपूर्वी १, उपघात १, परघात १, आतप १, उद्योत १, उच्छ्वास १, विहायोगति २, त्रस १, स्थावर १, बादर १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, अपर्याप्त १, प्रत्येक १, साधारण १, सुभग १, दुर्भग १, सुस्वर १, दुःस्वर १, आदेय १, अनादेय १, यशः कीर्ति १, अयशः कीर्ति १, ये ४६) गोत्र कर्म के (उच्चगोत्र, नीचगोत्र) इस प्रकार ५+२+२५+२+४६+२=८२ जानना, (देखो गो० क० गा० ४०२-४०३)।

३२. निरन्तर बन्ध होने वाली प्रकृतियां ५४ हैं—

ज्ञानावरणीय के ५, दर्शनावरणीय के ९, मोहनीय के १९ (मिथ्यात्व प्रकृति १, कषाय १६, भय-जुगुप्सा २ ये १९) आयु कर्म के ४, नामकर्म के १२ (तैजस १, कार्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, स्पर्शादि ४, तीर्थंकर १, आहारकद्विक २ ये १२) अंतराय कर्म के ५, इस प्रकार ५+९+१९+४+१२+५=५४ जानना)।

इनमें ४७ प्रकृति ध्रुवोदयी अर्थात् उदय व्युच्छित्ति तक सतत उदय होने वाली हैं। उनका नाम—ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ९, अंतराय ५, मिथ्यात्व १, कषाय १६, भय-जुगुप्सा २, तैजस १, कार्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, स्पर्शादि ४ ये ४७ अध्रुवोदयी प्रकृति ७ हैं (तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आयु ४, ये ७) इस प्रकार ४७+७=५४ जानना।

तीर्थंकर प्रकृति और आहारकद्विक इनका बन्ध जिस गुण स्थान में प्रारम्भ होता है उस गुण स्थान में निरन्तर (प्रत्येक समय में) बंध होता रहता है इसलिये इसको निरन्तर बन्ध कहा है।

आयुबंध होने का काल एक अन्तर्मुहूर्त का है उस एक अन्तर्मुहूर्त में बंध हो तो वह अन्तर्मुहूर्त पूर्ण होने तक आयु का बंध सतत होता रहता है इसलिये उसको निरन्तर बंध कहा है आयु बंध का काल १, अपकर्षण में में कभी भी आता है।

३३. सान्तर बंध प्रकृतियां अर्थात् जिनका बंध कभी होता है और कभी नहीं भी होता है ऐसी प्रकृतियां ३४ हैं—

असाता वेदनीय १, मोहनीय के ४ (नपुंसक वेद १, स्त्रीवेद १, अरति १, शोक १, ये ४) नाम कर्म के २९ (नरकद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, वज्र वृषभ नाराच बिना शेष संहनन ५, समचतुरस्र बिना शेष संस्थान ५, अप्रशस्त विहायोगति १, आतप १, उद्योत १, स्थावर दशक १०, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १, ये १०) इस प्रकार १+४+२९=३४ जानना।

३४ निरन्तर और सान्तर बंध होने वाली प्रकृतियां ३२ हैं—

साता वेदनीय १, हास्य-रति २, पुरुष वेद १, नाम कर्म के २६ (तिर्यंचद्विक २, मनुष्यद्विक २, देवद्विक २,

औदारिक शरीर १, औदारिक अंगोपांग १, वैक्रियिक द्विक २, प्रशस्त विहायोगति १, वज्र वृषभनाराच संहनन १, परघात १, उच्छ्वास १, समचतुरस्र-संस्थान १, पंचेन्द्रिय जाति १, त्रसदशक १ (त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १ ये १०) गोत्रद्विक २ इस प्रकार १+३+ ६+२=३२ जानना।

ऊपर के ३२ प्रकृतियों में जिस प्रकृति के प्रतिपक्षी प्रकृति का बंध संभवनीय हो इस प्रकृति का बंध सान्तर होगा और प्रतिपक्षी प्रकृति की बंध व्युच्छित्ति जहां होगी या हो गई हो वहां उस प्रकृति का बंध निरन्तर प्रतिपक्षी प्रकृति की बंध व्युच्छित्ति होने के बाद उस सान्तर बंध होने वाली प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होने तक सान्तर के बदले निरन्तर बंध होता रहेगा।

स्वजातीय अन्य अन्य प्रकृतियों का जहां बंध हो सकता है वहां उस प्रकृति को सप्रतिपक्षी प्रकृति कहना चाहिये और वहां तक ही वह प्रकृति सान्तर बंधी रहती है और जहां केवल आपका ही बंध होता रहेगा वहां निष्प्रति पक्षी प्रकृति कहना चाहिये और उस समय वह निरन्तर बंधी रहती है।

उभय बंधी ३२ प्रकृतियों के सान्तर निरन्तर बंध का विवरण गो० क० गा० ४०४ से ४०७ और कोष्टक नं० १४१ देखो।

३५ **उद्वेलन प्रकृतियां १३ हैं—**

आहारकद्विक २, सम्यक्त्व प्रकृति १, सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति १, देवद्विक २, नरक चतुष्क (नरक गति १, नरक गत्यानुपूर्वी १, वैक्रियिक शरीर १, वैक्रियिक अंगोपांग १ ये ४) उच्चगोत्र १, मनुष्य गति १, मनुष्य गत्यानुपूर्वी १ ये १३ प्रकृतियां क्रम से जीवों के उद्वेलन की जाती है। (देखो गो० क० गा० ३५०-४१५)

उद्वेलन का स्वरूप—आंठ देकर भांजी हुई रस्सी का आंट जिस प्रकार उकेल दिया जाय उसी प्रकार बंधी हुई कर्म प्रकृति को अन्य रूप से परिणमन करके उसका नाश करना उसको उद्वेलन कहते हैं।

मिथ्यात्व संक्रमण की प्रकृतियां ६७ हैं—

स्त्यानगृद्धि आदि महानिद्रा ३, असातावेदनीय १, मोहनीय के १८ (अनन्तानुबंधी कषाय ४, अप्रत्याख्यान कषाय ४, प्रत्यख्यान कषाय ४, अरति-शोक २, नपुंसक वेद १, स्त्रीवेद १, मिथ्यात्व प्रकृति १, सम्यग्मिथ्यात्व १ ये १८) नाम कर्म ४३ (तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रिय आदि जाति ४, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अप्रशस्त विहायोगति १, वज्रवृषभनाराच संहनन यह छोड़कर शेष संहनन ५, समचतुरस्र संस्थान छोड़कर शेष संस्थान ५, अपर्याप्त १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १, आहारकद्विक २, देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, औदारिकद्विक २, वज्रवृषभनाराच संहनन १, तीर्थंकर प्र० १, ये ४३) नीचगोत्र १, उच्चगोत्र १ ये २ सब मिलकर ६७ जानना।

३७. **अधः प्रकृति संक्रमण की प्रकृतियां १२१ हैं—**

ज्ञानावरण के ५, दर्शनावरण के ६, वेदनीय २, मोहनीय के २७ (मिथ्यात्व प्रकृति १ छोड़कर शेष २७) नाम कर्म के ७१ (पंचेन्द्रिय जाति १, तैजस शरीर १, कार्माण शरीर १, समचतुरस्रसंस्थान १, शुभवर्णादि ४, अगुरुलघु १, परघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त विहायोगति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक शरीर १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १, निर्माण १, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, तिर्यंचद्विक २, अशुभवर्णादि ४, उपघात १, अप्रशस्त विहायोगति १, वज्रवृषभनाराच संहनन छोड़कर शेष संहनन ५, समचतुरस्रसंस्थान छोड़कर शेष संस्थान ५, अपर्याप्त १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १, आहारकद्विक २, देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, औदारिकद्विक २, वज्रवृषभ-

नाराच संहनन १, तीर्थंकर प्रकृति १ ये ७१) गोत्रकर्म के २, अन्तराय ५, ये १२१ जानना।

३८. गुण संक्रमण प्रकृतियां ७५ हैं—

स्त्यानगृद्धि आदि महानिद्रा ३, प्रचला १, असाता वेदनीय १, मोहनीय २३, (अनन्तानुबन्धी ४, अप्रत्याख्यान ४, प्रत्याख्यान ४, अरति-शोक २, नपुंसक वेद १, स्त्रीवेद १, मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति १, सम्यग्मिथ्यात्व १, हास्य-रति २, भय-जुगुप्सा २, ये २३) नामकर्म के ४४ (तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अशुभवर्णादि ४, उपघात १, वज्रवृषभ नाराच संहनन छोड़कर शेष संहनन ५, समचतुरस्रसंस्थान छोड़कर शेष संस्थान ५, अप्रशस्त विहायोगति १, अपर्याप्त १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १ आहारकद्विक २, देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, ये ४४) गोत्र कर्म के २, ये सब मिलकर ७५ जानना। (देखो गो० क० गा० ४१६ से ४२८)

३९. सर्व संक्रमण प्रकृतियां ५२ हैं—

स्त्यानगृद्धि आदि महानिद्रा ३, मोहनीय के २७ (संज्वलन लोभ १ छोड़कर शेष २७) नामकर्म के २१ (तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आहारकद्विक २, देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियिक २ मनुष्यद्विक २ ये ये २१) उच्चगोत्र १ ये ५२ जानना।

अथवा

तिर्यक् एकादश ११, उद्वेलन की १३, संज्वलन लोभ १, सम्यक्त्व मोहनीय १, मिश्र मोहनीय १ इन तीन के बिना मोहनीय की २५ और स्त्यानगृद्धि आदि ३ इन सब ५२ प्रकृतियों में सर्वसंक्रमण होता है। (देखो गो० क० गा० ४१७)

४०. तिर्यगेकादश प्रकृतियां अर्थात् सर्व संक्रमण प्रकृतियों में जिनका उदय तिर्यग् गति में ही पाया जाता है उन ११ प्रकृतियों के नाम—तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १ ये तिर्यक् ११ प्रकृतियां हैं अर्थात् इनका उदय तिर्यंचों में ही होता है इसलिये इनका नाम 'तिर्यगेकादश' ऐसा है। (देखो गो० क० गा० ४१४)

—:o:—

कर्म कांड शक्ति की विशेषता की कुछ ज्ञातव्य बातें

१. प्रकृति शब्द का अर्थ कारण के बिना वस्तु का जो सहज स्वभाव होता है उस को प्रकृति कहते हैं, उसको शील या स्वभाव भी कहते हैं। जैसे कि जल का स्वभाव नीचे को गमन करना है, प्रकृत में यह स्वभाव जीव तथा कर्म का ही लेना चाहिये इन दोनों में से जीव का स्वभाव रागादिरूप परिणमने (हो जाने) का है और कर्म का स्वभाव रागादिरूप परिणमानने का है तथा दोनो का सम्बन्ध कनक पाषाणवत् स्वयं सिद्ध है (देखो गो० क० गा० २)

२. समय प्रबद्ध — सिद्ध राशि के जो कि अनन्तानन्त प्रमाण कही है, उसके अनन्त में भाग और अभव्य राशि जो जघन्ययुक्तानन्त प्रमाण है उससे अनन्त गुणे परमाणु समूह को यह आत्मा एक एक समय में बांधता है, अपने साथ संबद्ध करता है इसको समय प्रबद्ध कहते हैं, योगों की विशेषता से विसदृश बंध भी होता है सारांश— परिणामों में कषाय की तीव्र तथा मन्दता से कर्म परमाणु भी ज्यादा या कम बंधते हैं, जैसे कम-अधिक चिकनी दीवार पर धूलि कम-अधिक लगती है।
(देखो गो० क० गा० ४)

३. दर्शनमोहनीय के भेदों से पांच निद्राओं का कार्य स्वरूप —

(१) स्त्यानगृद्धि —इस कर्म के उदय से उठाया हुआ भी सोता ही रहे, उस नींद में ही अनेक कार्य करे तथा कुछ बोले भी परन्तु सावधानी न होय।

(२) निद्रा निद्रा —इस कर्म के उदय से अनेक तरह से सावधान किया हुआ भी आंखों को नहीं उघाड़ सकता है।

(३) प्रचला-प्रचला — इस कर्म के उदय से मुख से लार बहती है और हाथ पैर वगैरह अंग चलते हैं, किन्तु सावधान नहीं रहता।

(४) निद्रा —इस कर्म के उदय से गमन करता हुआ भी खड़ा हो जाता है, बैठ जाता है, गिर पड़ता है इत्यादि क्रिया करता है

(५) प्रचला —इस कर्म के उदय से यह जीव कुछ कुछ आंखों को उघाड़कर सोता है और सोता हुआ भी थोड़ा-थोड़ा जानता है, पुनः-पुनः जागता है अर्थात् बार-बार मन्द शयन करता है यह निद्रा श्वान के समान है, सब निद्राओं में से उत्तम है।

इन पांच निद्राओं में से प्रथम की तीन निद्राओं को 'महानिद्रा' कहते हैं।

(देखो गो० क० गा० २३-२४-२५)

४. शरीर में अंगोपांग—कौन कौन से है ?

नलकौ बाहु च तथा नितम्ब पृष्ठे उरश्च शीर्षं च।
अष्टैव तु अङ्गानि देहे शेषाणि उपङ्गानि ॥२८॥

अर्थ—दो पैर, दो हाथ, नितम्ब-कमर के पीछे का भाग, पीठ, हृदय और मस्तक ये आठ शरीर में अंग हैं और दूसरे सब नेत्र, कान, वगैरह उपाङ्ग कहे जाते हैं
(देखो गो० क० गा० २८)

५. संहनन ६ हैं– वज्रवृषभ नाराच, वज्र-नाराच, अर्धनाराच, कीलित (कीलक), असंप्राप्तासृपाटिका संहनन ये ६ हैं ?

प्रश्न

किस किस संहनन वाले जीव—

६वे अ० सृपाटिका संहनन वाले जीव

उत्तर

कौन-कौन गति में उत्पन्न होते हैं ?

१ले स्वर्ग से ८वें स्वर्ग तक चार युगलों में उत्पन्न होते हैं

५वे कीलित संहनन वाले जीव	९ से १२वे स्वर्ग तक अर्थात् ५वे ६ठे युगल में उत्पन्न होते हैं
४थे अर्धनाराच संहनन वाले जीव	१३ से १६वे स्वर्ग तक अर्थात् ७वे ८वे युगल में उत्पन्न होते हैं
१ले २रे ३रे नाराच तक इन तीन संहनन वाले जीव	नव ग्रैवेयिक तक जाता है
१ले २रे वज्रवृषभनाराच, वज्रवृषभनाराच इन दो संहनन वाले जीव	नव अनुदिश तक जाता है
१ले वज्रऋषभनाराच संहनन वाले जीव	पांच अनुत्तर विमान तक जाता है

यदि नरक में जन्म लेवें तो

प्रश्न	उत्तर
छह संहनन वाले संज्ञी जीव	तीसरे नरक तक जाते हैं
६वे अ० सृपाटिका छोड़कर शेष पांच संहनन वाले जीव	पांचवीं नरक की पृथ्वी तक उपजते हैं
१ से ४ अर्थात् अर्ध नाराच संहनन तक के चार संहनन वाले जीव	छठी पृथ्वी तक उत्पन्न होते हैं
१ले वज्रवृषभ नाराच संहनन वाले जीव	सातवीं पृथ्वी तक उत्पन्न होते हैं

(देखो गो० क० गा० २९-३०-३१)

६. कर्म भूमि की स्त्रियों के अन्त के तीन अर्धनाराच, कीलित, असंप्राप्ता सृपाटिका संहननों का ही उदय होता है आदि के तीन वज्रवृषभ नाराचादि संहनन कर्म भूमि की स्त्रियों के नहीं होते।
(देखो गो० क० गा० ३२)

७. आतप और उद्योत प्रकृति का लक्षण—आतप प्रकृति का उदय अग्निकाय में भी होना चाहिये, ऐसा कोई भ्रम कर सकता है। क्योंकि जो संताप करें अर्थात् उष्णपने से जलावे वह आतप कहा जाता है, अतः भ्रम के दूर करने के लिये अग्नी से भिन्न आतप का लक्षण कहते हैं। आग के मूल और प्रभा दोनों ही उष्ण रहते हैं, इस कारण उसके स्पर्श नाम कर्म के भेद उष्ण स्पर्श नाम कर्म का उदय जानना और जिसकी केवल प्रभा (किरणों का फैलाव) ही उष्ण हो उसको आतप कहते हैं इस आतप नाम कर्म का उदय सूर्य के बिम्ब (विमान) में उत्पन्न हुये बादर पर्याप्त पृथ्वीकाय के तिर्यंच जीवों के समझना तथा जिसकी प्रभा भी उष्णता रहित हो उसको नियम से उद्योत जानना।

८. कर्म बंध का स्वरूप—कर्मों का और आत्मा का दूध और पानी की तरह आपस में एक रूप हो जाना वही बंध है, जैसे योग्यपात्र में रखे हुये अनेक तरह के रस, बीज, फूल तथा फल सब मिलकर मदिरा (शराब) भाव को प्राप्त होते हैं उसी प्रकार कर्म रूप होने योग्य कर्माण-वर्गणा नाम के पुद्गल द्रव्य योग और कषायादिकभाव का निमित्त पाकर कर्म भाव को प्राप्त होते हैं, तभी उन में कर्मपने की सामर्थ्य भी प्रगट होती है, जीव के एक समय में होने वाले अपने एक ही परिणाम से ग्रहण (संबंध) किये हुये कर्म योग्य पुद्गल, ज्ञानावरणादि अनेक भेद रूप होकर परिणमते है, जैसे कि एक बार ही खाया हुआ ग्रास, अन्न, रस, रक्त, मांस आदि अनेक धातु-उपधातु रूप परिणमता है।

९. कर्मों के निमित्त से ही जीव की अनेक दशायें होती हैं, इस कारण सब कर्मों के भेदों के शब्दार्थ की अपेक्षा से कार्य बताते हैं, वह निम्न प्रकार जानना—

आवरण – 'आवृणोति आव्रियते अनेनेति आवरणम्' ऐसी व्युत्पत्ति है, अर्थात् जो आवरण करे या जिससे आवरण किया जाय वह आवरण है।

१. ज्ञानावरण के पांच भेदों का स्वरूप—

(१) रस, रक्तादि धातुओं का परिणमन क्रम से होता है और ज्ञानावरणादि कर्मों का परिणमन युगपत् होता है, इतना अन्तर है।

(१) **मतिज्ञानावरण कर्म**—मतिज्ञान का जो आवरण

करे अथवा जिसके द्वारा मतिज्ञान आवृत किया जाय अर्थात् ढका जाय वह मतिज्ञानावरण कर्म है।

(२) श्रुतज्ञानावरण कर्म—श्रुतज्ञान का जो आवरण करे वह श्रुतज्ञानावरण कर्म है।

(३) अवधिज्ञानावरण कर्म अवधिज्ञान का जो आवरण करे वह अवधिज्ञानावरण कर्म है।

(४) मनःपर्ययज्ञानावरण कर्म—मनःपर्ययज्ञान का जो आवरण करे वह मनःज्ञानावरण कर्म है।

(५) केवलज्ञानावरण कर्म--केवलज्ञान को 'आवृणोति' ढके वह केवलज्ञानावरण कर्म है।

२ दर्शनावरण कर्म के नव भेदों का स्वरूप—

(६) चक्षुदर्शनावरण कर्म—जो चक्षु में दर्शन नहीं होने देवे वह चक्षुदर्शनावरण कर्म है।

(७) अचक्षुदर्शनावरण कर्म—चक्षु (नेत्र) के सिवाय दूसरी चार इन्द्रियों से जो दर्शन (सामान्यावलोकन को) नहीं होने दे वह अचक्षुदर्शनावरण कर्म है।

(८) अवधिदर्शनावरणकर्म—जो अवधि द्वारा दर्शन न होने दे वह अवधिदर्शनावरण कर्म है।

(९) केवलदर्शनावरण कर्म केवलदर्शन अर्थात् त्रिकाल में रहने वाले सब पदार्थों के दर्शन का आवरण करे उसे केवलदर्शनावरण कर्म कहते हैं।

(१०) स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म—'स्त्याने स्वापे गृध्यते दीप्यते सा स्त्यानगृद्धिः (निद्राविशेषः) दर्शनावरणः' धातु शब्दों के व्याकरण में अनेक अर्थ होते हैं, तदनुसार इस निरुक्ति में भी 'स्त्यै' धातु का अर्थ सोना और 'गृध्' धातु का अर्थ दीप्ति समझना, मतलब यह है, जो सोने में अपना प्रकाश करे अर्थात् जिसका उदय होने पर यह जीव नींद में ही उठकर बहुत पराक्रम का कार्य तो करे, परन्तु भान नहीं रहे कि क्या किया था? उसे स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म कहते हैं।

(११) निद्रा निद्रा दर्शनावरण कर्म—जिसके उदय से निद्रा की ऊंची पुनः पुनः प्रवृत्ति हो, अर्थात् जिससे आंख के पलक भी नहीं उघाड सके उसे निद्रा-निद्रा दर्शनावरणकर्म कहते हैं।

(१२) प्रचलाप्रचला दर्शनावरण कर्म—'यदुदयात् क्रियाआत्मानं पुनः पुनः प्रचलयति तत्प्रचला प्रचला दर्शनावरणम्' अर्थात् जिस कर्म के उदय से क्रिया आत्मा को बार बार चलावें वह प्रचलाप्रचलादर्शनावरण कर्म है। क्योंकि शोक अथवा खेद या मद (नशा) आदि से उत्पन्न हुई निद्रा की अवस्था में बैठते हुए भी शरीर के अङ्ग बहुत चलायमान होते हैं, कुछ सावधानी नहीं रहती।

(१३) निद्रादर्शनावरण कर्म—जिसके उदय से खेद आदिक दूर करने के लिये केवल सोना हो वह निद्रा-दर्शनावरण कर्म है।

(१४) प्रचलादर्शनावरण कर्म—जिसके उदय से शरीर की क्रिया आत्मा को चलाये और जिस निद्रा में कुछ काम करे उसकी याद भी रहे, अर्थात् कुत्ते की तरह अल्पनिद्रा हो वह प्रचला दर्शनावरण कर्म है।

३-वेदनीय कर्म के दो भेदों का स्वरूप—

(१५) सातावेदनीय (पुण्य) कर्म—जो उदय में आकर देवादि गति में जीव को शारीरिक तथा मानसिक सुखों की प्राप्तिरूप साता का 'वेदयति' भोग करावें, अथवा 'वेद्यते अनेन' जिसके द्वारा जीव उन सुखों को भोगे वह सातावेदनीय कर्म है।

(१६) असातावेदनीय कर्म—जिसके उदय का फल अनेक प्रकार के नरकादिक गति जन्य दुःखों का भोग-अनुभव कराना है वह सातावेदनीय कर्म है।

४-मोहनीय कर्म के दर्शनमोहनीय और चारित्र-मोहनीय ऐसे दो भेद हैं। दर्शनमोहनीय कर्म बंध की अपेक्षा से 'मिथ्यात्व' यह एक ही प्रकार का है। किन्तु उदय और सत्ता की अपेक्षा मिथ्यात्व, सम्यङ् मिथ्यात्व, सम्यक्त्व प्रकृति ऐसे तीन तरह का कहा है।

चारित्रमोहनीय के एक कषाय वेदनीय और दूसरा नोकषाय वेदनीय ऐसे दो भेद कहे हैं। उनमें से कषाय-वेदनीय १६ प्रकार का है, और नोकषाय वेदनीय ९ प्रकार का है दोनों मिलकर २५ होते हैं।

इस प्रकार मोहनीय कर्म के ३ + २५ = २८ प्रकृति जानना।

(१७) **मिथ्यात्व नाम दर्शनमोहनीय कर्म**—जिसके उदय से मिथ्या (खोटा) श्रद्धान हो, अर्थात् सर्वज्ञ-कथित वस्तु के यथार्थ स्वरूप में रुचि ही न हो, और न उस विषय में उद्यम करे, तथा न हित अहित का विचार ही करे वह मिथ्यात्व नाम दर्शन मोहनीय है।

(१८) **सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय कर्म** जिस कर्म के उदय से परिणामों में वस्तु का यथार्थ श्रद्धान और अयथार्थ श्रद्धान दोनों ही मिले हुए हों उसे (१) सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय कर्म कहते हैं। उन परिणामों को सम्यक्त्व या मिथ्यात्व दोनों में से किसी में भी नहीं कह सकते, इसलिए यह एक भेद पृथक् ही माना है।

(१९) **सम्यक्त्व प्रकृति दर्शनमोहनीय कर्म**—जिस कर्म के उदय से सम्यक्त्व गुण का मूल से घात तो न हो परन्तु परिणामों में कुछ चलायमानपना तथा मलिनपना और अगाढ़पना हो जाय उसे सम्यक्त्व प्रकृति दर्शनमोहनीय कर्म कहते हैं। इस प्रकृति वाला सम्यग्दृष्टि कहलाता है।

कषाय—'कषन्ति हिंसन्तीति कषायाः' जो घात करे अर्थात् गुण को ढके प्रकट नहीं होने दे उसको कषाय कहते हैं। उस कषाय वेदनीय के अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन, ऐसे चार अवस्था हैं। इन हरेक के क्रोध, मान, माया, लोभ ये चार चार भेद हैं। इन अवस्थाओं का स्वरूप भी क्रम से कहते हैं—अनन्त नाम संसार का है, परन्तु जो उसका कारण हो वह भी अनन्त कहा जाता है। जैसे कि प्राण के कारण अन्न को प्राण कहते हैं। सो यहां पर मिथ्यात्व परिणाम को अनन्त कहा गया है। क्योंकि वह अनंत-संसार का कारण है। जो इस अनंत-मिथ्यात्व के अनु-साथ साथ-बंधे उस कषाय को अनन्तानुबंधी कहते हैं। उसके चार भेद हैं—

(२०) अनन्तानुबंधी क्रोध, (२१) अनन्तानुबंधी मान, (२२) अनन्तानुबंधी माया, (२३) अनन्तानुबंधी लोभ,

जो 'अ' अर्थात् ईषत्—थोड़े से भी प्रत्याख्यान को न होने दे, अर्थात् जिसके उदय से जीव श्रावक के व्रत भी धारण न कर सके उस चारित्र मोहनीय कर्म को अप्रत्याख्यानवरण कहते हैं। उसके चार भेद हैं:—

(२४) अप्रत्याख्यान क्रोध, (२५) अप्रत्याख्यान मान, (२६) अप्रत्याख्यान माया, (२७ अप्रत्याख्यान लोभ।

जिसके उदय से प्रत्याख्यान अर्थात् सर्वथा त्याग का आवरण हो। महाव्रत नहीं हो सके उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय वेदनीय कहते हैं। उसके चार भेद हैं:—

(२८) प्रत्याख्यानावरण क्रोध, (२९) प्रत्याख्यानावरण मान, (३०) प्रत्याख्यानावरण माया, (३१) प्रत्याख्यानावरण लोभ।

(१) इसमें कोदों चावल का दृष्टांत दिया है—

जैसे कि कोदों चावल यद्यपि मादक (नशा करने वाले) हैं। फिर भी यदि वे पानी से धो डाले जाय तो उनकी कुछ मादक शक्ति रह जाति है, और कुछ चली जाती है। इसी प्रकार जब मिथ्यात्व प्रकृति की शक्ति भी उपशम सम्यक्त्व रूप जल से धुलकर कुछ कम हो जाती है तब उसको ही सम्यग्मिथ्यात्व या मिश्र प्रकृति कहते हैं।

जिसके उदय से संयम 'सं' एक रूप होकर 'ज्वलति' प्रकाश करे, अर्थात् जिसके उदय से कषाय अंश से मिला हुआ संयम रहे, कषाय रहित निर्मल यथाख्यात संयम न हो सके। उसे संज्वलन कषाय वेदनीय कहते हैं। यह कर्म यथाख्यात चारित्र को घातता है उसके चार भेद हैं— (३२) संज्वलन क्रोध, (३३) संज्वलन मान, (३४) संज्वलन माया, (३५) संज्वलन लोभ।

जो नो अर्थात् ईषत्—थोड़ा कषाय हो, प्रबल नहीं हो उसे नोकषाय कहते हैं। उसका जो अनुभव करावे वह नोकषाय वेदनीयकर्म कहा जाता है। उसके नव भेद हैं:—

(३६) हास्य—जिसके उदय से हास्य प्रकट हो वह हास्य कर्म है।

(३७) रति—जिसके उदय से देश, धन, पुत्रादि में विशेष प्रीति हो उसे रति कर्म कहते हैं।

(३८) अरति - जिसके उदय से देश आदि में अप्रीति हो उसको अरति कर्म कहते हैं।

(३९) शोक—जिसके उदय से इष्ट के वियोग होने पर क्लेश हो वह शोक कर्म है।

(४०) भय - जिसके उदय से उद्वेग (चित्त में घबराहट) हो उसे भय कर्म कहते हैं।

(४१) जुगुप्सा—जिसके उदय से ग्लानि अर्थात् अपने दोष को ढकना और दूसरे के दोष को प्रगट करना हो वह जुगुप्सा कर्म है।

(४२) स्त्री वेद—जिसके उदय से स्त्री सम्बन्धी भाव (मृदु स्वभाव का होना, मायाचार की अधिकता, नेत्र-विभ्रम आदि द्वारा पुरुष के साथ रमने की इच्छा आदि) हो उसको स्त्री-वेद कर्म कहते हैं।

(४३) पुरुष-वेद— जिसके उदय से स्त्री में रमण करने की इच्छा आदि परिणाम हो उसे पुरुष-वेद कर्म कहते हैं।

(४४) नपुंसक वेद—जिस कर्म के उदय से स्त्री तथा पुरुष इन दोनों में रमण करने की इच्छा आदि मिश्रित भाव हो उसको नपुंसक वेद कर्म कहते हैं।

५ आयु कर्म के चार भेदों का स्वरूप :—

(४५) नरकायु—जो कर्म जीव को नारकी शरीर में रोक रक्खे उसे नरकायु कहते हैं।

(४६) तिर्यंचायु—जो कर्म जीव को तिर्यंच शरीर में रोक रक्खे उसे तिर्यंचायु कहते हैं।

(४७) मनुष्यायु—जो कर्म जीव को मनुष्य शरीर में रोक रक्खे उसे मनुष्यायु कहते हैं।

(४८) देवायु—जो कर्म जीव को देव की शरीर में रोक रक्खे उसे देवायु कहते हैं।

६. नाम कर्म के ९ भेद हैं—इनमें पिंड और अपिंड प्रकृति की अपेक्षा ४२ भेद हैं। पिंड प्रकृति १४ और अपिंड प्रकृति २८ हैं। पिंड प्रकृति के उत्तर भेद ६५ होते हैं। इस प्रकार—६५+२८=९३ नाम कर्म के प्रकृति जानना।

१. गति नाम कर्म—जिसके उदय से यह जीव एक पर्याय से दूसरी पर्याय को 'गच्छति' प्राप्त हो वह गति नाम कर्म है। उसके चार भेद हैं :—

(४९) नरक गति—जिस कर्म के उदय से यह जीव नारकी के आकार हो उसको नरक गति नामक कर्म कहते हैं।

(५०) तिर्यंच गति—जिस कर्म के उदय से यह जीव तिर्यंच के आकार हो उसको तिर्यंच गति नाम कर्म कहते हैं।

(५१) मनुष्य गति—जिस कर्म के उदय से यह जीव मनुष्य के शरीर आकार हो उसको मनुष्य गति नाम कर्म कहते हैं।

(५२) देवगति—जिस कर्म के उदय से यह जीव शरीर के आकार हो उसको देवगति नाम कर्म कहते हैं।

२. जाति नाम कर्म— जो उन गतियों में अव्यभिचारी सादृश्य धर्म से जीवों को इकट्ठा करे वह जाति नाम कर्म है—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय आदि जीव समान स्वरूप होकर आपस में एक दूसरे से मिलते नहीं यह तो अव्यभिचारी पना, और एकेन्द्रियपना सब एकेन्द्रियों में सरीखा है यह हुआ सादृश्यपना, यह अव्यभिचारी धर्म एकेन्द्रियादि जीवों में रहता है, अतएव वे एकेन्द्रियादि जाति शब्द से कहे जाते हैं। जाति नाम कर्म ५ प्रकार का है। जिसके उदय से यह जीव एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय कहा जाय उसे क्रम से—

(५३) एकेन्द्रिय जाति, (५४) बेइन्द्रिय जाति, (५५) तेइन्द्रीय जाति, (५६) चौइन्द्रिय जाति, (५७) पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म समझना

३. शरीर नाम कर्म जिसके उदय से शरीर बने उसे शरीर नाम कर्म कहते हैं। वह पांच प्रकार का है, जिसके उदय से औदारिक शरीर, वैक्रियिक शरीर, आहारक शरीर, तैजस शरीर और कार्माण शरीर (कर्म परमाणु ओं का समूहरूप) उत्पन्न हो उन्हें क्रम से—(५८) औदारिक शरीर नाम कर्म, (५९) वैक्रियिक शरीर नाम कर्म,

(६६) आहारक शरीर नाम कर्म, (६१) तैजस शरीर नाम कर्म, (६२) कार्माण[1] शरीर नाम कर्म कहते हैं।

४ **बंधन नामकर्म**—शरीर नामकर्म के उदय से जो आहार वर्गणारूप पुद्गल के स्कन्ध इस जीव ने ग्रहण के किये थे उन पुद्गल स्कन्धों के प्रदेशों (हिस्सों) का जिस कर्म के उदय से आपस में सम्बन्ध हो उसे बन्धन नामकर्म कहते हैं। उसके पांच भेद हैं।

(६३) **औदारिक शरीर बन्धन** (६४) **वैक्रियिक** शरीर बन्धन (६५) आहारक शरीर बन्धन (६६) तैजस **शरीर बन्धन और** (६७) **कार्माण शरीर बन्धन**

५. **संघात नामकर्म**—जिसके उदय से औदारिक आदि शरीरों के परमाणु आपस में मिलकर छिद्र रहित बन्धन को प्राप्त होकर एक रूप हो जाय उसे संघात नामकर्म कहते हैं। यह भी (६८) **औदारिक संघात** (६९) **वैक्रियिक संघात** (७०) **आहारक संघात** (७१) **तैजस संघात** (७२) **कार्माण शरीर संघात** इस तरह पांच प्रकार है।

६. संस्थान नामकर्म—जिस कर्म के उदय से शारीरिक आकार (शक्ल) बने उसे संस्थान नामकर्म कहते हैं। उसके ६ भेद हैं—

(७३) **समचतुरस्र संस्थान**—जिसके उदय से शरीर का आकार ऊपर नीचे तथा बीच में समान हो अर्थात् जिसके आंगोपाङ्गों की लम्बाई, चौड़ाई सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार ठीक-ठीक बनी हो वह समचतुरस्र संस्थान नामकर्म है।

(७४) **न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान**—जिसके उदय से शरीर का आकार न्यग्रोध के (बड़ के) वृक्ष सरीखा नाभि के ऊपर मोटा और नाभि के नीचे पतला हो वह न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान नामकर्म है।

(७५) **स्वाति संस्थान**—जिसके उदय से स्वाति नक्षत्र के अथवा सर्प की बाँमी के समान शरीर का आकार हो, अर्थात् ऊपर से पतला और नाभि से नीचे मोटा हो उसे स्वाति संस्थान कहते हैं।

(७६) **कुब्जक संस्थान**—जिस कर्म के उदय से शरीर कुबड़ा हो उसे कुब्जक संस्थान नामकर्म कहते हैं।

(७७) **वामन संस्थान**—जिस कर्म के उदय से बौना शरीर हो वह वामन संस्थान नामकर्म है।

(७८) **हुंडक संस्थान**—जिस कर्म के उदय से शरीर के अंगोपांग किसी खास शक्ल के न हों और भयानक बुरे आकार के बनें उसे हुंडक संस्थान नामकर्म कहते हैं।

७ **आंगोपाङ्ग नामकर्म**—जिसके उदय से आंगोपांग का भेद हो वह आंगोपांग नामकर्म है। उसके तीन भेद हैं—

(७९) **औदारिक आंगोपाङ्ग** (८०) **वैक्रियिक आंगोपाङ्ग** (८१) **आहारक आंगोपाङ्ग**।

८. **संहनन नामकर्म** जिसके उदय से हाड़ों के बन्धन में विशेषता हो उसे संहनन नामकर्म कहते हैं। वह छः प्रकार का है—

(८२) **वज्रवृषभनाराच संहनन**—जिस कर्म के उदय से वृषभ (वेठन) नाराच (कीला) संहनन (हाड़ों का समूह) वज्र के समान हो, अर्थात् इन तीनों का किसी शस्त्र से छेदन भेदन न हो सके उसे वज्रवृषभनाराच संहनन नामकर्म कहते हैं।

(८३) **वज्रनाराच संहनन**—जिस कर्म के उदय से ऐसा शरीर हो जिसके वज्र के हाड और वज्र की कीली हो परन्तु वेठन वज्र के न हों वह वज्रनाराच संहनन नामकर्म है।

(८४) **नाराच संहनन**—जिस कर्म के उदय से शरीर में वज्ररहित (साधारण) वेठन और कीलीसहित हाड हों उसे नाराच संहनन कहते हैं।

(८५) **अर्धनाराच संहनन**—जिस कर्म के उदय से हाड़ों की संधियां आधी कीलित हों वह अर्धनाराच संहनन है।

(८६) **कीलित संहनन**—जिस कर्म के उदय से हाड परस्पर कीलित हों उसे कीलित संहनन नामकर्म कहते हैं।

(८७) **असंप्राप्तासृपाटिका संहनन**—जिस कर्म के

(१) औदारिक आदि शब्दों का अर्थ जीवकांड की योग मार्गणा में देखो।

उदय से जुदे-जुदे हाड नसों से बंधे हों, परस्पर (आपस में) कीले हुए न हों वह असंप्राप्ता सृपाटिक संहनन है। क्योंकि असंप्राप्तानि (आपस में नहीं मिले हों) सृपाटिका-वत् संहननानि यस्मिन् (सर्प की तरह हाड जिसमें) तद् (वह असंप्राप्त सृपाटिका संहननम् (असंप्राप्त सृपाटिका संहनन शरीर है)' ऐसा शब्दार्थ है।

६. वर्ण नामकर्म— जिसके उदय से शरीर में रंग हो वह वर्णनामकर्म है। उसके पांच भेद हैं—(८८) **कृष्ण-वर्ण** नामकर्म। (८९) **नीलवर्ण** नामकर्म। (९०) **रक्तवर्ण** (लाल रंग) नामकर्म। (९१) **पीतवर्ण** (पीला रंग) नामकर्म। (९२) **श्वेतवर्ण** (सफेद रंग) नामकर्म।

१० गन्ध नामकर्म– जिसके उदय से शरीर में गंध हो उसे गन्ध नामकर्म कहते हैं। वह दो तरह का है—(९३) सुरभिगन्ध (**सुगन्ध**) नामकर्म। (९४) असुरभि-गन्ध (**दुर्गंध**) नामकर्म।

११. रस नामकर्म— जिसके उदय से शरीर में रस हों उसे रस नामकर्म कहते हैं। वह पांच प्रकार का है—(९५) **तिक्तरस** (तीखा-चरपरा) नामकर्म (९६) **कटुक** (कडुआ) रसनामकर्म। (९७) **कषाय** (कसैला) रस नाम-कर्म ९८) **आम्ल** (खट्टा) रस नामकर्म (९९) **मधुर रस** (मीठा) नामकर्म।

१२. स्पर्श नामकर्म—जिसके उदय से शरीर में स्पर्श हो वह स्पर्श नामकर्म है उसके आठ भेद हैं—(१००) **कर्कश** स्पर्श (जो छूने में कठिन मालूम हो) नामकर्म (१०१) **मृदु** (कोमल) नामकर्म (१०२) गुरु (भारी) नाम-कर्म (१०३) **लघु** (हलका) नामकर्म (१०४) **शीत** (ठंडा) नामकर्म (१०५) उष्ण (गर्म) नामकर्म (१०६) **स्निग्ध** (चिकना) नामकर्म (१०८) **रूक्ष** (रूखा) नामकर्म।

आनुपूर्व्य नामकर्म—जिस कर्म के उदय से मरण के पीछे और जन्म से पहले अर्थात् विग्रहगति (बीच की अवस्था) में मरण से पहले के शरीर के आकार आत्मा के प्रदेश रहें, अर्थात् पहले शरीर के आकार का नाश न हो उसे आनुपूर्व्य नामकर्म कहते हैं। वह चार प्रकार का है—

(१०८) **नरकगति प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकर्म**— जिस कर्म के उदय से नरकगति को प्राप्त होने के सन्मुख जीव के शरीर का आकार विग्रहगतियों में पूर्व शरीराकार रहे उसे नरकगति प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकर्म कहते हैं। (१०९) **तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्व्य** नामकर्म—(११०) **मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्व्य** नामकर्म (१११) **देवगति** प्रायोग्यानुपूर्व्य नामकर्म भी ऊपर की तरह जानना।

१४. विहायोगति नामकर्म– जिस कर्म के उदय से आकाश में गमन हो उसे विहायोगति नामकर्म कहते हैं। उसके दो भेद हैं—(११२) प्रशस्तविहायोगति (शुभगमन) नामकर्म (११३) अप्रशस्तविहायोगति (अशुभगमन) नामकर्म।

(११४) **अगुरुलघु नामकर्म**—जिस कर्म के उदय से ऐसा शरीर मिले जो लोहे के गोले की तरह भारी और आक की रुई की तरह हलका न हो उसे अगुरुलघु नाम, कर्म कहते हैं।

(११५) **उपघात नामकर्म**—जिसके उदय से बड़े सींग, लम्बे स्तन, मोटा पेट इत्यादि अपने ही घातक अंग हों उसे उपघात नामकर्म कहते हैं। (उपेत्यघातः उपघातः आत्मघात इत्यर्थः)।

(११६) **परघात** नामकर्म— जिसके उदय से तीक्ष्ण सींग, नख, सर्प आदि की दाढ, इत्यादि परके घात करने वाले शरीर के अवयव हों उसे परघात नामकर्म कहते हैं।

(११७) उच्छ्वास नामकर्म—जिस कर्म के उदय से श्वासोच्छ्वास हो उसे उच्छ्वास नामकर्म कहते हैं।

(११८) **आतप नामकर्म** —जिसके उदय से परको आताप[१] करने वाला शरीर हो वह आतप नामकर्म है।

(११९) **उद्योत** नामकर्म -जिस कर्म के उदय से उद्योतरूप (आतापरहित प्रकाशरूप) शरीर हो उसे उद्योत नामकर्म कहते हैं। 'इसका उदय चन्द्रमा के बिम्ब में और आगिया (जुगनू) आदि जीवों के है।

(१२०) **त्रस** नामकर्म—जिसके उदय से दो इन्द्रि-

---

१. इसका उदय सूर्य के बिम्ब में उत्पन्न हुए पृथ्वीकायिक जीवों के होता है।

यादि जीवों की जाति में जन्म हो उसे त्रस नामकर्म कहते हैं।

(१२१) स्थावर नामकर्म जिसके उदय से एकेन्द्रिय में (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पतिकाय में) जन्म हो उसे स्थावर नामकर्म कहते हैं।

(१२२) बादर नामकर्म जिसके उदय से ऐसा शरीर हो जोकि दूसरे को रोके और दूसरे से आप रुकें उसे बादर नामकर्म कहते हैं।

(१२३) सूक्ष्म नामकर्म—जिसके उदय से ऐसा सूक्ष्म शरीर हो जो कि न तो किसी को रोके और न किसी से रुके उसे सूक्ष्म नामकर्म कहते हैं।

(१२४) पर्याप्त नामकर्म—जिसके उदय से जीव अपने-अपने योग्य आहारादि (आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा, मन ये ६) पर्याप्तियों को पूर्ण करे वह पर्याप्त नामकर्म है।

(१२५) अपर्याप्त नामकर्म—जिसके उदय से कोई भी पर्याप्ति पूर्ण नहीं हो अर्थात् लब्ध्य पर्याप्तक अवस्था हो उसको अपर्याप्ति नामकर्म कहते हैं।

(१२६) प्रत्येक शरीर नामकर्म—जिसके उदय से एक शरीर का एक ही जीव स्वामी हो उसे प्रत्येक शरीर नामकर्म कहते हैं।

(१२७) साधारण शरीर नामकर्म—जिस कर्म के उदय से एक शरीर के अनेक स्वामी हों उसको साधारण नामकर्म कहते हैं।

(१२८) स्थिर नामकर्म—जिसके उदय से शरीर के रसादिक[1] धातु और वातादि[2] उपधातु अपने अपने ठिकाने (स्थिर) रहें उसको स्थिर नामकर्म कहते हैं, इससे ही शरीर निरोगी रहता है।

(१२९) अस्थिर नामकर्म—जिसके उदय से धातु और उपधातु अपने अपने ठिकाने न रहें अर्थात् चलायमान होकर शरीर को रोगी बनावें उसको अस्थिर नामकर्म कहते हैं।

(१३०) शुभ नामकर्म—जिस कर्म के उदय से मस्तक वगैरह शरीर के अवयव और शरीर सुन्दर हो उसे शुभ नामकर्म कहते हैं।

(१३१) अशुभ नामकर्म—जिस कर्म के उदय से शरीर के मस्तकादि अवयव सुन्दर न हों उसको अशुभ नामकर्म कहते हैं।

(१३२) सुभग नामकर्म—जिस कर्म के उदय से दूसरे जीवों को अच्छा लगने वाला शरीर हो उसको सुभग नामकर्म कहते हैं।

(१३३) दुर्भग नामकर्म—जिस कर्म के उदय से रूपादिक गुण सहित होने पर भी दूसरे जीवों को अच्छा न लगे उसको दुर्भग नामकर्म कहते हैं।

(१३४) सुस्वर नामकर्म—जिसके उदय से स्वर (आवाज) अच्छा हो उसे सुस्वर नामकर्म कहते हैं।

(१३५) दुःस्वर नामकर्म—जिसके उदय से अच्छा स्वर न हो उसको दुःस्वर नामकर्म कहते हैं।

---

(१) रसाद्रक्तं ततो मांसं
मांसान्मेदः प्रवर्तते।
मेदसोऽस्थि ततोऽस्थि ततो
मज्जं मज्जाच्छुक्रस्ततः प्रजाः ॥१॥

अर्थात् अन्न से रस, रस से लोही, लोही से मांस, मांस से मेद, मेद से हाड, हाड से मज्जा, मज्जा से वीर्य, वीर्य से संतान होती है इस तरह सात धातु हैं सात धातु ३० दिन में पूर्ण होती हैं।

(२) वातः पित्तं तथा श्लेष्मा
शिरास्नायुश्च चर्म च।
जठराग्निरिति प्राज्ञैः
प्रोक्ताः सप्तोपधातवः ॥२॥

अर्थात् वात, पित्त, कफ, सिरा, स्नायु, चाम, जठराग्नि (पेट की आग) ये सात उपधातु हैं।

(१३६) **आदेय नामकर्म** - जिसके उदय से कान्ति सहित शरीर हो उसको आदेय नामकर्म कहते हैं।

(१३८) **अनादेय नामकर्म**—जिसके उदय से प्रभा (कान्ति) रहित शरीर हो वह अनादेय नामकर्म है।

(१३८) **यशः कीर्ति नामकर्म**—जिसके उदय से अपना पुण्य गुण जगत में प्रगट हो अर्थात् संसार में जीव की तारीफ हो उसे यशः कीर्ति नामकर्म कहते हैं।

(१ ६) **अयशः कीर्ति नामकर्म**—जिस कर्म के उदय से संसार में जीव की तारीफ न हो उसे अयशः कीर्ति नामकर्म कहते हैं।

(१४०) **निर्माण नामकर्म**—जिसके उदय से शरीर के अंगों-पांगों की ठीक ठीक रचना हो उसे निर्माण नामकर्म कहते हैं, वह दो प्रकार का है, जो जाति नामकर्म की अपेक्षा से नेत्रादिक इन्द्रियें जिस जगह होनी चाहिए उसी जगह उन इन्द्रियों की रचना करें वह स्थान निर्माण है और जितना नेत्रादिक का प्रमाण (माप) चाहिये उतना ही प्रमाण (नाप के बराबर) करने वह प्रमाण निर्माण है।

(१४१) **तीर्थकर नामकर्म**—जो श्रीयुत् तीर्थंकर (अर्हत) पद का कारण हो वह तीर्थंकर प्रकृति नामकर्म है।

७. गोत्र कर्म के दो भेदों का स्वरूप—

(१४२) **उच्च गोत्र कर्म**—जिसके उदय से लोक-पूजित (मान्य) कुल में जन्म हो उसे उच्च गोत्र कर्म कहते हैं।

(१ ३) **नीच गोत्र कर्म**—जिस कर्म के उदय से लोक निंदित कुल में जन्म हो उसे नीच गोत्र कर्म कहते हैं।

८. अन्तरायकर्म के पांच भेदों का स्वरूप—

(१४४) **दानान्तराय कर्म** - जिसके उदय से देना चाहे परन्तु दे नहीं सके वह दानान्तराय कर्म है।

(१४५) **लाभान्तराय कर्म**—जिसके उदय से लाभ (फायदा) की इच्छा करे लेकिन लाभ नहीं हो सके उसे लाभांतराय कर्म कहते हैं।

(१४६) **भोगान्तराय कर्म**—जिस कर्म के उदय से अन्न या पुष्पादिक भोगरूप वस्तु को भोगना चाहे परन्तु भोग न सके वह भोगान्तराय कर्म है।

(१४७) **उपभोगान्तराय कर्म**—जिसके उदय से स्त्री, वस्त्र, वगैरह उपभोग्य वस्तु का उपभोग न कर सके उसे उपभोगांतराय कर्म कहते हैं।

(१४८) **वीर्यान्तराय कर्म** जिस कर्म के उदय से अपनी शक्ति (बल) प्रकट करना चाहे परन्तु शक्ति प्रकट न हो उसे वीर्यान्तराय कर्म कहते हैं—

इस प्रकार १४८ उत्तर प्रकृतियों का शब्दार्थ जानना (देखो गो० क० गा० ३३)

---

१०. कषायों का नाम—	**कषायों का कार्य—**
(१) अनन्तानुबंधी कषाय	सम्यक्त्व को घातती है
(२) अप्रत्याख्यान ,,	देश चारित्र को ,,
(३) प्रत्याख्यान ,,	सकल चारित्र को ,,
(४) संज्वलन ,,	यथाख्यात चारित्र को ,,

अर्थात् सम्यक्त्व वगैरह को प्रकट नहीं होने देती (देखो गो० क० गा० ४५)

११. इन कषायों की वासना का (संस्कार का) काल 'उदयाभावेऽपि तत्संस्कार कालो वासना कालः, अर्थात् किसी ने क्रोध किया, पीछे वह दूसरे काम में लग गया वहां पर क्रोध का उदय तो नहीं है, परन्तु जिस पुरुष पर क्रोध किया था उस पर क्षमा भी नहीं है, इस प्रकार जो क्रोध का संस्कार चित्त में बैठा हुआ है उसी की वासना का काल यहां पर कहा गया है।

(१) सज्वलन कषायों की वासना का काल अन्तर्मुहूर्त तक जानना
(२) प्रत्याख्यान ,, ,, एक पक्ष (१५ दिन) ,,
(३) अप्रत्याख्यान ,, ,, छः महीना ,,
(४) अनन्तानुबंधी ,, ,, संख्यात, असंख्यात तथा अनंतभव है, ऐसा निश्चय कर समझना। (देखो गो० क० गा० ४६)

१२. **कदलीघात मरण अथवा अकालमृत्यु का लक्षण** विषभक्षण से अथवा विष वाले जीवों के काटने से रक्त-क्षय अथवा धातु क्षय से, भय से, शस्त्रों के (तलवार आदि हथियारों) घात से, संक्लेश परिणामों से अर्थात् मन-वचन-काय के द्वारा आत्मा को अधिक पीड़ा पहुंचाने वाली क्रिया[1] होने से, श्वासोच्छ्वास के रुक जाने से और आहार (खाना पीना) नहीं करने से, इस जीव की आयु कम हो जाती है, इन कारणों से जो मरण हो अर्थात् शरीर छूटे उसे कदलीघात मरण अथवा अकाल मृत्यु कहते हैं। (देखो गो० क० गा० ५७)

१३. **भक्त प्रतिज्ञा मरण का लक्षण**—जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट के भेद से भक्त प्रतिज्ञा तीन प्रकार की है। भक्त प्रतिज्ञा अर्थात् भोजन की प्रतिज्ञा कर जो सन्यास मरण हो उसके काल का प्रमाण जघन्य (कम से कम) अन्त-र्मुहूर्त है और उत्कृष्ट (ज्यादा से ज्यादा) बारह वर्ष प्रमाण है तथा मध्य के भेदों का काल एक एक समय बढ़ता हुआ है, उसका अन्तर्मुहूर्त से ऊपर और बारह वर्ष के भीतर जितने भेद है उतना प्रमाण समझना। (देखो गो० क० गा० ५८-५९-६०)

१४. **इंगिनी मरण का लक्षण**—अपने शरीर की टहल आप ही अपने अंगों से करे, किसी दूसरे से रोगादि का उपचार न करावे, ऐसे विधान से जो सन्यास धारण कर मरे उस मरण को इंगिनीमरण संयाम कहते है।

(१५) **प्रायोपगमन मरण का लक्षण**—अपने शरीर की टहल न तो आप अपने अंगों से करें और न दूसरे से ही करावें अर्थात् जिसमें आपना तथा दूसरे का भी उपचार (सेवा) न हो ऐसे सन्यासमरण को प्रायोपगमन मरण कहते हैं। (देखो गो० क० गा० ६७)

(१६) **तीर्थंकर प्रकृति बंध का नियम**—असंयत-चतुर्थ गुण स्थान से लेकर ८वे गुण स्थान अपूर्वकरण के ६वे भाग तक के सम्यग्दृष्टि के ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है। प्रथमोपशम-सम्यक्त्व में अथवा बाकी के द्वितीयोपशमसम्यक्त्व, क्षयोपशम सम्यक्त्व और क्षायिक-सम्यक्त्व की अवस्था में असंयत से लेकर अप्रमत्त गुण स्थान तक चार गुण स्थानों वाले कर्म भूमिया मनुष्य ही, केवली तथा श्रुत केवली (द्वादशाङ्ग के पारगामी)

---

१. अधिक दौड़ने से जो अधिक श्वासें चलती हैं वहां काय की क्रिया तथा मन की क्रिया रूप संक्लेश परिणाम होते है, इस कारण अधिक श्वास का चलना भी अकाल मृत्यु का निमित्त कारण है, इस एक ही दृष्टांत को देखकर अज्ञानी लोक एकांत से श्वास के ऊपर ही आयु के कमती बढ़ती होने का अनुमान कर श्वास के कमती बढ़ता चलने से आयु घट बढ़ जाती है ऐसा श्रमदान कर लेते हैं। उनके भ्रम दूर करने के लिये आठ कारण गिनाये हैं क्योंकि यदि एक ही के ऊपर विश्वास किया जाय तो शस्त्र के लगने से श्वास चलना तो अधिक नहीं मालूम पड़ता, वहां पर या तो अपमृत्यु न होनी चाहिये अथवा अधिक श्वास चलने चाहियें, दूसरी बात यह है कि भुज्यमान आयु कभी भी बढ़ती नहीं है। समाधि में श्वास कम चलते हैं, इसलिये आयु बढ़ जाती है ऐसा मानना मिथ्या है। वहां पर श्वास के निरोध से आयु कम नहीं होती।

के निकट ही तीर्थंकर प्रकृति के बंध का प्रतिष्ठापन (आरम्भ) करते हैं, परन्तु इस प्रकृति का निष्ठापन तिर्यंच गति छोड़कर शेष तीन गतियों में अर्थात् नरक, मनुष्य, देवगति में होता रहता है। सारांश अगर निष्ठापन काल के समय वर्तमान आयु का काल समाप्त होकर अगली गति में जन्म होने पर बंध हो सकता है।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं हो सकता ऐसे भी कोई आचार्यों का मत है।

तीर्थंकर प्रकृति का बंध होने का उत्कृष्ट काल—२ कोटिपूर्व और आठ वर्ष + एक अंतर्मुहूर्त कम ३३ सागर काल तक तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता रहता है यह उत्कृष्ट काल है। (दो कोटि पूर्व वर्ष + ३३ सागर —८ वर्ष और एक अन्तर्मुहूर्त) (देखो गो० क० गा० ९२-९३)

१७. आहारक शरीर और आहारक अंगोपांग प्रकृतियों का बंध अप्रमत्त ७वे गुण स्थान से लेकर ८वे अपूर्वकरण गुण स्थान के छठे भाग तक ही होता है और (देखो गो० क० गा० ९२)

१८. आयु कर्म का बंध मिश्र गुण स्थान तथा निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था को प्राप्त मिश्र काय योग इन दोनों के सिवाय मिथ्या दृष्टि से लेकर अप्रमत्त गुण स्थान तक ही होता है (देखो गो० क० गा० ९२)

१९. तीर्थंकर प्रकृति १, आहारकाद्विक २, आयु कर्म के प्रकृति ४, इनके सिवाय बाकी बची प्रकृतियों का बंध मिथ्यात्व वगैरह अपने अपने बंध की व्युच्छित्ति[1] तक होता है ऐसा जानना (देखो गो० क० गा० ९२)

२०. किस गुण स्थान में कितने प्रकृतियों के बंध की व्युच्छित्ति होती है उनकी संख्या निम्न प्रकार जानना, व्युच्छित्ति का अर्थ बंध का अभाव यह ऊपर बता चुकी है, किस गुण स्थान में जिस प्रकृतियों की व्युच्छित्ति हो चुकी है उन प्रकृतियों का बंध आगे गुण स्थानों में नहीं होता।

२रे गुण स्थानों में जो २५ प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होती है उन २५ प्र० का बंध केवल मिथ्यात्व से ही होता है और सासादन गुण स्थान में केवल अनंतानुबंधी से ही होता है (देखो गो० क० गा० ९४ से १०० को० नं० १) यह कथन इस अध्याय में नाना जीवों की अपेक्षा से जानना।

---

(१) व्युच्छित्ति नाम बिछुड़ने का है। परन्तु जहां पर व्युच्छित्ति कही जाती है वहां पर उनका संयोग रहता है। जैसे दो मनुष्य एक नगर में रहते थे। उनमें से एक पुरुष दूसरी जगह गया। वहां पर किसी ने पूछा कि, तुम कहां बिछुड़े थे ? तब उसने कहा कि, मैं अमुक नगर में बिछुड़ा था अर्थात् उससे जुदा हुआ था। इसी तरह जहां जहां पर कर्मों के बन्ध, उदय, अथवा सत्त्व की व्युच्छित्ति बताई है।वहां पर तो उन कर्मों का बन्ध, उदय अथवा सत्त्व रहता है, उसके आगे नहीं रहता, ऐसे सर्वत्र समझ लेना चाहिये।

गुण स्थान	व्युच्छित्ति प्राप्त प्र० की संख्या	जिन प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है उन प्रकृतियों के नाम
१ मिथ्यात्व	१६	मिथ्यात्व १, नपुंसक वेद १, नरकायु १, हुंडक संस्थान १, असंप्राप्त सृपाटिका संहनन १, एकेन्द्रियादि जाति ४, स्थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, पर्याप्त १, साधारण १, नरक गति १, नरक गत्यानुपूर्व्य १ ये १६।
२ सासादन	२५	स्त्यानगृद्धि १, निद्रा-निद्रा १, प्रचला-प्रचला १, अनन्तानुबन्धी कषाय ४, स्त्रीवेद १, तिर्यंचायु १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, न्यग्रोध परिमंडल संस्थान १, स्वाति सं० १, कुब्ज सं० १, वामन सं० १, वज्रनाराच संहनन १, नाराच सं० १, अर्धनाराच सं० १। कीलित सं० १, अप्रशस्त विहायोगति १, तिर्यंच गति १, तिर्यंच गत्यानुपूर्व्य १, उद्योत १, नीचगोत्र १ ये २५।
३ मिश्र	०	यहां किसी प्रकृति की व्युच्छित्ति नहीं होती।
४ असंयत	१०	अप्रत्याख्यान कषाय ४, मनुष्यायु १, वज्रवृषभनाराच संहनन १, औदारिक शरीर १, औदारिक अंगोपांग १, मनुष्य गति १, मनुष्य गत्यानुपूर्व्य १, ये १०।
५ देश संयत	४	प्रत्याख्यान कषाय ४।
६ प्रमत्त	६	असाता वेदनीय १, अरति-शोक २, अस्थिर १, अशुभ १, अयशः कीर्ति १ ये ६।
७ अप्रमत्त	१	देवायु १, प्रकृति ही व्युच्छित्ति होती है, जो श्रेणी चढ़ने के संमुख नहीं है ऐसे स्वस्थान अप्रमत्त के ही अन्त समय में व्युच्छित्ति होती है। दूसरे सातिशय अप्रमत्त के बन्ध नहीं होता, इसलिये व्युच्छित्ति भी नहीं होती।
८ भाग १	२	निद्रा १, प्रचला १ ये २ प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होती है। इस भाग में श्रेणी चढ़ते समय मरण नहीं होता।

	भाग २	०	इस भाग में व्युच्छित्ति नहीं होती।
	भाग ३	०	" " "
	भाग ४	०	" " "
	भाग ५	०	" " "
	भाग ६	३०	तीर्थंकर प्र० १, निर्माण १, प्रशस्त विहायोगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, तैजस-कार्माण शरीर २, आहारकद्विक २, समचतुरस्रसंस्थान १, देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिकद्विक २, स्पर्शादि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, ये ३०।
	भाग ७	४	हास्य-रति २, भय-जुगुप्सा २ ये ४।
९	भाग १	१	पुरुषवेद १ की व्युच्छित्ति जानना।
	भाग २	१	संज्वलन क्रोध की " "
	भाग ३	१	" मान १ की " "
	भाग ४	१	" माया १ की " "
	भाग ५	१	" लोभ १ की " "
१०	सूक्ष्म सां०	१६	ज्ञानावरण के ५, दर्शनावरण के ४ (चक्षु द० १, अचक्षु द० १, अवधि द० १, केवल दर्शनावरण १ ये ४) यश: कीर्ति १, उच्चगोत्र १, अंतराय कर्म के ५, ये १६।
११	उपशांत मोह	०	यहां कोई व्युच्छित्ति नहीं होती।
१२	क्षीण मोह	०	" " "
१३	सयोग के०	१	सातावेदनीय १ की व्युच्छित्ति जानना।
१४	अयोग के०	०	यहां बन्ध भी नहीं तथा व्युच्छित्ति भी नहीं होती।
		१२०	बन्धयोग्य प्रकृतियां, इनकी व्युच्छित्ति ऊपर लिखे अनुसार जानना

२१. गुण स्थानों की अपेक्षा से बंध व्युच्छित्ति, बंध, अबंध, प्रकृतियों के कोष्टक बंध योग्य प्रकृति १२० ।
(देखो गो० क० गा० १०३ और १०४ को० नं० २)

गुणस्थान	अबंध प्रकृति संख्या	बंध प्रकृति संख्या	बंध व्युच्छित्ति प्र० संख्या	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	३	११७	१६	आहारकद्विक , तीर्थंकर प्र० १ ये ३ ।
२ सासादन	१९	१०१	२५	३+१६=१९
३ मिश्र	४६	७४	०	१९+२५=४४+ =४६ मनुष्यायु १, देवायु १ ये २ ।
४ असंयत	४३	७७	१०	४६—३ ४३, तीर्थंकर प्र० १, मनुष्यायु १, देवायु १ ये ३ ।
५ देश संयत	५३	६७	४	प्रत्याख्यान कषाय ४ ।
६ प्रमत्त	५७	६३	६	को० नं० १ देखो ।
७ अप्रमत्त	६१	५९	१	५७+६=६३—२ आहारकद्विक =६१ १ देवायु जानना ।
८ अपूर्व क०	६२	५८	३६	को० नं० १ देखो ।
९ अनिवृ०	९८	२२	५	को० नं० १ देखो ।
१० सूक्ष्म सां०	१०३	१७	१६	को० नं० १ देखो ।
११ उपशांत मोह	११९	१	०	
१२ क्षीण मोह	११९	१	०	
१३ सयोग के०	११९	१	१	१ सातावेदनीय जानना ।
अयोग के	१२०	०	०	

२२. बंध योग्य प्रकृति १२० में से ऊपर लिखे हुये बन्ध अबन्ध प्रकृतियों की संख्या और नाम निम्न प्रकार जानना—

(देखो गो० क० गा० १०३–१०४ और को० नं २)

गुणस्थान	अबन्ध प्रकृतियों की संख्या	अबन्ध प्रकृतियों की नाम	बन्ध प्रकृतियों की संख्या	बन्ध प्रकृतियों की नाम
१ मिथ्यात्व	३	आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १, ये ३ जानना	११७	ज्ञानावरण ५ दर्शनावरण ९, वेदनीय २, मोहनीय २६, आयु ४, नाम ६७—३ =६४, गोत्र २, अन्तराय के ५ ये ११७।
२ सासादन	१९	३+१६ को० नं० १ के समान=१९ जानना	१०१	ऊपर के ५+९+२+२४ (मिथ्यात्व १, नपुंसक वेद १ ये २ घटाकर (२६—२=२४)+३+५१ (६४—१३ =५१ नामकर्म १३ को०नं० १ के समान) +२+५=१०१.
३ मिश्र	४६	१९+२५ को० नं० १ के समान=४४ +२ (मनुष्यायु १, देवायु १, ये २) =४६ जानना	७४	ज्ञानावरण ५+६ दर्शनावरण (९—३ महानिद्रा घटाकर=६)+२ वेदनीय +१९ मोहनीय (अनन्तानुबन्धी ४, स्त्रीवेद १ ये ५ घटाकर २४—५=१९) नामकर्म के ३६ (५१—१५ को० नं० १ के समान घटाकर ३६) उच्चगोत्र १, अन्तराय के ५ ये ७४ जानना।
४ असंयत	४३	४६—३ (मनुष्यायु १, देवायु १, तीर्थंकर प्र० १ ये ३ घटाकर)=(४३) जानना	७७	ऊपर के ५+६+२+१९+२ (मनुष्यायु १, देवायु १, ये २)+३७ (३६ तीर्थंकर प्र०=३७) १+५ ये ७७ जानना
५ देश संयत	५३	४३+१० (को० नं० १ के समान)=५३ जानना	६७	ऊपर के ५+६+२+१५ (१९—४ अप्रत्याख्यान कषाय घटाकर)+ +३२ (३७—५ को० नं० १ के समान=३२)+१+५ ये ६७ जानना

६	प्रमत्त	५७	५३+४ प्रत्याख्यान कषाय=५७ जानना	६३	ऊपर के ५+६+२+११ (१५—४ प्रत्याख्यान कषाय घटाकर) +१+३२+१+५ ये ६३
७	अप्रमत्त	६१	५७+६ को० नं० १ के समान=६३—२ आहारकद्विक २ घटाकर=६१ जानना	५९	ऊपर के ५+६+१ सातावेदनी +९ (११—२ अरति-शोक ये २ घटाकर ९)+१+२९ (३२—३ अस्थिर, अशुभ, अयशः कीर्ति ये घटाकर २९) +आहारकद्विक २ +१+५ ये ५९ जानना
८	अपूर्वकरण	६२	६१+१ देवायु ये ६२ जानना	५८	ऊपर के ५+६+१+९+३१+१+५ ये ५८ जानना
९	अनिवृत्तिक०	९८	६२+३६ को० नं० १ के समान=९८ जानना	२२	ऊपर के ५+४ (६—२ निद्रा-प्रचला घटाकर ४) +५ (९—४ हास्य-रति, भय जुगुप्सा ये ४ घटाकर ५)+१ (३१—३० को० नं० १ समान=१) +१+५ ये २२ जानना
१०	सूक्ष्मसांपराय	१०३	९८+५ संज्वलन कषाय ४, पुरुषवेद १, ये ५=१०३ जानना	१७	ऊपर के ५+४+१+१ यशः कीर्ति +१+५=१७ जानना (देखो गो० क० गा० १५१)
११	उपशांत मोह	११९	१०३+१६ को० नं० १ के समान=११९ जानना	१	साता वेदनीय जानना
१२	क्षीण मोह	११९	"	१	"
१३	सयोग के०	११९	"	१	"
१४	अयोग के०	१२०	११९+१ साता-वेदनीय ये १२० जानना	०	

२३. मूल प्रकृतियों के बंध के चार भेद निम्न प्रकार जानना

(१) सादि बंध – जिस कर्म के बंध का अभाव होकर अर्थात् बंध-व्युच्छित्ति के बाद फिर वही कर्म बंधे उसे सादि बंध कहते हैं।

(२) अनादि बंध—जो गुण स्थानों की श्रेणी पर ऊपर को नहीं चढ़ा अर्थात् बंध-व्युच्छित्ति के पहले जो बंध अव्याहत चालू रहता है, जिसके बंध का अभाव नहीं हुआ वह अनादि बंध है।

(३) ध्रुव बंध—जिस बंध का आदि तथा अंत न हो अर्थात् जिस बंध का सतत चालू रहता है वह ध्रुव बंध है।

(४) अध्रुव बंध—जिस बंध का अंत हो उसे अध्रुव-बंध कहते हैं।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, नाम, गोत्र, अंतराय ये छह कर्मों का प्रकृति बंध सादि, अनादि, ध्रुव अध्रुव रूप चारों प्रकार का होता है।

तीसरे वेदनीय कर्म का बंध सादि बिना तीन प्रकार का होता है। उपशम श्रेणी चढ़ते समय और नीचे उतरते समय साता वेदनीय का सतत बंध होता रहता है इसलिये सादि बंध नहीं होता।

आयु कर्म का सादि और अध्रुव ये दो प्रकार का ही बंध होता है। एक पर्याय में एक समय, दो समय या उत्कृष्ट आठ समय में आयु कर्म का बंध होता है। इसलिये सादि है और अन्तर्मुहूर्त तक ही बंध होता है इसलिये अध्रुव है।

ज्ञानावरण की पांच प्रकृतियों का बंध किसी जीव के दसवें गुण स्थान तक अव्याहत होता था, जब वह जीव ग्यारहवें में गया तब बंध का अभाव हुआ, पीछे ग्यारहवें गुण स्थान से पड़कर (च्युत होकर) फिर दसवें में आया तब ज्ञानावरण की पांच प्रकृतियों का पुनः बंध हुआ, ऐसा बंध सादि कहलाता है।

दसवें गुण स्थान वाला ग्यारहवें में जब तक प्राप्त नहीं हुआ वहां तक ज्ञानावरण का अनादि बंध है, क्योंकि वहां तक अनादि काल से उसका बंध चला आता है।

ध्रुव बंध अभव्य जीव के होता है। अध्रुव बंध भव्य जीवों के होता है। (देखो गो० क० गा० १२२-१२३)

२४ आबाधा काल का लक्षण –कार्माण शरीर नामा नामकर्म के उदय से योग द्वारा आत्मा में कर्म स्वरूप कर्म से परिणमनता हुआ जो पुद्गलद्रव्य वह जब तक उदय स्वरूप (फल देने स्वरूप) अथवा उदीरणा (बिना समय के कर्म का पाक होना) स्वरूप न हो तब तक उस काल के आबाधा काल कहते हैं। (देखो गो० क० गा० १५५)

(१) आबाधा को उदय की अपेक्षा मूल प्रकृतियों में बतलाते हैं– यदि कोई एक कर्म की स्थिति एक कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण हो तो उस स्थिति की आबाधा काल (१००) सौ वर्ष प्रमाण जानना और बाकी स्थितियों की आबाधा काल इसी के अनुसार त्रैराशिक विधि से भाग देने पर जो जो प्रमाण आवे उतनी-उतनी जानना। यह कम आयु कर्म के सिवाय सात कर्मों की आबाधा के लिये उदय की अपेक्षा से है। (देखो गो० क० गा० १५६)

(२) अन्तः कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण स्थिति की आबाधा काल एक अन्तर्मुहूर्त जानना और सब जघन्य स्थितियों की उससे संख्यातगुणी कम (संख्यातवें भाग) आबाधा होती है। (देखो गो० क० गा० १५७)

(३) आयुकर्म की आबाधा काल—कर्मभूमि के तिर्यंच और मनुष्यों की उत्कृष्ट आयु कर्म की आबाधा काल कोड़पूर्व के तीसरे भाग प्रमाण है और जघन्य आयु की आबाधा काल असंक्षेपाद्धा प्रमाण अर्थात् जिससे थोड़ा काल कोई न हो ऐसे आवली के असंख्यातवें भाग प्रमाण तक है। आयु कर्म की आबाधा स्थिति के अनुसार भाग की हुई नहीं है अर्थात् जैसे अन्य कर्मों में स्थिति के अनुसार भाग करने से आबाधा का प्रमाण होता है, इस तरह इस आयु कर्म में नहीं है।

देव और नारकीयों को मरण के पहले छः महीना और भोगभूमियों के जीवों को नव महीना बाकी रहते हुए आयु का बंध होता है यह आयुबंध भी त्रिभाग से होता है। आयु का बंध होने पर अगले पर्याय से प्रारम्भ में उसका उदय होता है। बंध से लेकर उदय तक का जो काल वही आबाधा काल है। (देखो गो० क० गा० १५८)

(४) उदीरणा की अपेक्षा आबाधा काल—आयु कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की उदीरणा की अपेक्षा से आबाधा एक आवली मात्र है तब तक उदीरणा नहीं होती और परभव की आयु (बध्यमान आयु) जो बांध लीनी है उसकी उदीरणा या उदय भुज्यमान आयु में निश्चयकर नहीं होती। अर्थात् वर्तमान आयु की (भुज्यमान आयु की) उदीरणा तो हो सकती है, परन्तु आगामी आयु की (बध्यमान आयु की) नहीं होती (देखो गो० क० गा०१५९)

१५. एक जीव को एक समय में कितने प्रकृतियों का बंध होता है यह बतलाते हैं।

(देखो गो० कं० गा० २१७ को० नं० ५५)

गुण-स्थान	१ ज्ञाना०	२ दर्शना०	३ वेदनीय	४ मोहनीय	५ आयु	६ नामकर्म	७ गोत्र	८ अंतराय	जोड़
१. मिथ्यात्व	५	९	१	२२	१	२३-२५-२६-२८-२९-३०	१	५	६७-६९-७०-७२-७३-७४
२. सासादन	५	९	१	२१	१	२८-२९-३०	१	५	७१-७२-७३
३. मिश्र	५	६	१	१७	०	२८-२९	१	५	६३-६४
४. असंयत	५	६	१	१७	१	२८-२९-३०	१	५	६४-६५-६६
५. देशसंयत	५	६	१	१३	१	२८-२९	१	५	६०-६१
६. प्रमत्त	५	६	१	९	१	२८-२९	१	५	५६-५७
७. अप्रमत्त	५	६	१	९	१	२८-२९-३०-३१	१	५	५६-५७-५८-५९
८. अपूर्व क०	५	६-४	१	९	०	२८-२९-३०-३१-१	१	५	५५-५६-५७-५८-२६
९. अनिवृत्ति०	५	४	१	५-४-३-२-१	०	१	१	५	२२-२१-२०-१९-१८
१०. सूक्ष्म सां०	५	४	१	०	०	१	१	५	१७
११. उपशांतमो०	०	०	१	०	०	०	०	०	१
१२. क्षीण मोह०	०	०	१	०	०	०	०	०	१
१३. सयोग के०	०	०	१	०	०	०	०	०	१
१४. अयोग के०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
जोड़	५	९-६-४	१	२२-१२-१७-१३-९-५-४-३-२-१	१	२३-२५-२६-२८-२९-३०-३१-१	१	५	७४-७३-७२-७१-७०-६९ ६७-६६-६५-६४-६३-६१-६० ५९-५८-५७-५६-५५-२६-२२-२१-२०-१९-१८-१७-१

ऊपर के कोष्टक का विशेष स्पष्टीकरण :—

१. ज्ञानावरण के ५ प्रकृति :—मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधि ज्ञानावरण, मनः पर्यय ज्ञानावरण, केवल ज्ञानावरण ये ५।

२. दर्शनावरण के ९ प्रकृति—मूल प्रकृति जानना। ६ प्रकृति—मूल ९ प्रकृतियों में से स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलप्रचला ये ३ महानिद्रा घटाकर ६ जानना। ४ प्रकृति—ऊपर के ६ में से निद्रा और प्रचला ये २ घटाकर ४ जानना।

३. वेदनीय के—

४. मोहनीय के २२ प्रकृति—मोहनीय के २८ प्रकृतियों में से सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व प्रकृति इन दोनों का बंध नहीं होता। इसलिये ये २ घटाने से २६ रहे। इनमें तीन वेदों में से एक समय में एक ही वेद का बंध होता है इसलिये दो वेद कम करने से २४ रहे। इनमें हास्य-रति में से कोई १, और अरति-शोक इन जोड़ों में से कोई १ का ही बंध होता है इसलिये २४ में से २ घटाने से २२ प्रकृति जानना।

२१ प्रकृति—ऊपर के २२ में से मिथ्यात्व प्रकृति १ घटाकर २१ जानना।

१७ प्रकृति—ऊपर के २१ में से अनन्तानुबंधी कषाय ४ घटाकर १७ जानना।

१३ प्रकृति—ऊपर के १७ में से अप्रत्याख्यान कषाय ४ घटाकर १३ जानना।

९ प्रकृति—ऊपर के १३ में से प्रत्याख्यान कषाय ४ घटाकर ९ जानना।

५ प्रकृति—ऊपर के ९ में से हास्य-रति में से १, अरति-शोक में से १, और भय-जुगुप्सा ये २ में से ४ घटाकर ९–४=५ जानना।

४ प्रकृति—ऊपर के ५ में से पुरुषवेद १ घटाकर ४ जानना।

३ प्रकृति—ऊपर के ४ में से संज्वलन क्रोध १ घटाकर ३ जानना।

२ प्रकृति—ऊपर के ३ में से संज्वलन मान १ घटाकर २ जानना।

१ प्रकृति—ऊपर के २ में से संज्वलन माया १ घटाकर १ जानना।

५. आयु कर्म की प्रकृति—

६. नामकर्म की प्रकृति—(गो० क० गा० ५१७–५२६ से ५३१ देखो)।

(१) २३ प्रकृतियों का बन्ध स्थान एकेन्द्रिय अपर्याप्तयुत एक ही है—ध्रुव प्रकृति ६ (तैजस शरीर १, कार्माण शरीर १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, स्पर्शादि ४ ये ६) बादर-सूक्ष्म में से १, प्रत्येक-साधारण में से १, स्थिर-अस्थिर में से , शुभ-अशुभ में से १, सुभग दुर्भग में से १, आदेय-अनादेय में से १, यश-कीर्ति-अयश कीर्ति में से १, स्थावर १, अपर्याप्त १, तिर्यंचद्विक २, एकेन्द्रिय जाति १, औदारिक शरीर १, छः संस्थानों में से कोई १ संस्थान, ये सब २३ प्रकृति जानना और 'एकेन्द्रिय अपर्याप्तयुत' का अर्थ—जो कोई जीव इन २३ प्रकृतियों को बांधता है, वह जीव मरकर एकेन्द्रीय अपर्याप्त हो सकता है और एकेन्द्रिय अपर्याप्त हो तो वहां इन २३ प्रकृतियों का उदय होगा।

(२) २५ प्रकृतियों का दूसरा बन्धस्थान है। इसके ६ प्रकार होते हैं।

१ला एकेन्द्रिय अपर्याप्तयुत—ऊपर के २३ प्रकृतियों में से अपर्याप्त १, घटाकर शेष २२ में पर्याप्ति १, उच्छ्वास १, परघात १ ये ३ प्रकृतियां जोड़कर २५ जानना।

२रा द्विन्द्रिय अपर्याप्तयुत—ऊपर के २५ प्रकृतियों में से स्थावर १, पर्याप्ति १, एकेन्द्रिय १, उच्छ्वास १, परघात १ ये ५ घटाकर शेष २० में त्रस १, अपर्याप्ति १, द्विन्द्रियजाति १, असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन १, औदारिक अंगोपांग १ ये ५ जोड़कर २५ जानना।

३रा त्रीन्द्रिय अपर्याप्तयुत—द्वीन्द्रिय अपर्याप्तियुत में जो २ प्रकृतियां हैं। उनमें से द्वीन्द्रिय जाति घटाकर त्रीन्द्रिय जाति १ जोड़कर २५ जानना।

४था चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तयुत—ऊपर के त्रीन्द्रिय के जगह चतुरिन्द्रिय जाति जोड़कर २५ जानना।

५वां पंचेन्द्रिय अपर्याप्तयुत—ऊपर के चतुरिन्द्रिय जाति के जगह पंचेन्द्रिय जाति जोड़कर २५ जानना।

६वां मनुष्य अपर्याप्तयुत—ऊपर के पंचेन्द्रिय जाति के २५ प्रकृतियों में से तिर्यंचगति घटाकर मनुष्यगति जोड़कर २५ जानना।

(३) २६ प्रकृतियों का ३रा बन्धस्थान के दो प्रकार हैं—

१ला एकेन्द्रिय पर्याप्त आतपयुत—मनुष्यगति अपर्याप्त के २५ प्रकृतियों में से त्रस १, अपर्याप्त १, मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, अ-सृपाटिका संहनन १, औदारिक अंगोपांग १ ये ६ घटाकर शेष १६ में स्थावर १, पर्याप्त १, तिर्यंचगति १, एकेन्द्रियजाति १, उच्छ्वास १, परघात १, आतप १ ये ७ जोड़कर २६ जानना।

२रा प्रकार एकेन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत—ऊपर के आतप प्रकृति के जगह उद्योत प्रकृति जोड़कर २६ जानना।

(४) २८ प्रकृतियों का ४था बन्धस्थान के दो प्रकार हैं:—

१ला देवगतियुत—ध्रुव प्रकृतियां ६, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर-अस्थिर में से १, शुभ-अशुभ में से १, यशःकीर्ति-अयशःकीर्ति में से १, सुभग १, आदेय १, देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिकद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, समचतुरस्र संस्थान १, सुस्वर १, प्रशस्तविहायोगति १, उच्छ्वास १, परघात १ ये २८ जानना।

२रा नरकगतियुत—ध्रुव प्रकृतियां ६, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, अस्थिर १, अशुभ १, अनादेय १, दुर्भग १, अयश : कीर्ति १, नरकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, पंचेन्द्रियजाति १, हुंडक संस्थान १, दुःस्वर १, अप्रशस्तविहायोगति १, उच्छ्वास १, परघात १ ये २८ जानना।

(५) २९ प्रकृतियों का ५वां बन्धस्थान के ६ प्रकार हैं—

१ला द्वीन्द्रिय पर्याप्तयुत—ध्रुव प्रकृतियां ६, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर-अस्थिर में से १,

शुभ-अशुभ में से १, दुर्भग १, अनादेय १, यशःकीर्ति-अयशःकीर्ति में से १, तिर्यंचद्विक २, द्वीन्द्रियजाति १, औदारिकद्विक २, हुंडक संस्थान १, असृपाटिकासंहनन १, दुःस्वर १ अप्रशस्तविहायोगति १, उच्छ्वास १, परघात १ ये २६ जानना।

२रा त्रीन्द्रिय पर्याप्तयुत—ऊपर द्वीन्द्रिय पर्याप्तयुत के २६ में द्वीन्द्रिय जाति की जगह त्रीन्द्रिय जाति जोड़कर २६ जानना।

३रा चतुरिन्द्रिय पर्याप्तयुत ऊपर के त्रीन्द्रिय पर्याप्तयुत के २६ में त्रीन्द्रिय जाति की जगह चतुरिन्द्रिय जाति जोड़कर २६ जानना।

४था पंचेन्द्रिय पर्याप्तयुत (तिर्यंच —ध्रुवप्रकृतियां ६, त्रस १, बादर १, प्रत्येक १, पर्याप्त १, स्थिर-अस्थिर में से, शुभ-अशुभ में से १, सुभग-दुर्भग में से १, आदेय-अनादेय में से १, यशःकीर्ति-अयशःकीर्ति में से, छः संस्थानों में से कोई १, छः संहननों में से कोई १, सुस्वर-दुस्वरों में से कोई १, दो विहायोगतियों में से कोई १, तिर्यंचद्विक २, औदारिकद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, उच्छ्वास १, परघात १, ये २६ जानना।

५वां मनुष्य पर्याप्तयुत—ऊपर के २६ में तिर्यंचद्विक २ के जगह मनुष्यद्विक २ जोड़कर २६ जानना।

६वां देवगति तीर्थंकरयुत—ध्रुव प्रकृतियां ६, त्रस १, बादर १ पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर-अस्थिर में से, शुभ-अशुभ में से १, सुभग १, आदेय १ यशःकीर्ति-अयशःकीर्ति में से १, देवद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १, समचतुरस्र संस्थान १, सुस्वर १, प्रशस्तविहायोगति १, उच्छ्वास १, परघात १, तीर्थंकर १ ये २६ जानना।

सूचना —२८ प्रकृतियों का बन्धस्थान में देवगतियुत जो प्रकार बतलाया है, उससे एक तीर्थंकर प्रकृति इसमें बढ़ गया है।

(६) ३० प्रकृतियों का ६वां बन्धस्थान के ६ प्रकार—

१ला द्वीन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत—ऊपर के २६ प्रकृतियों का द्वीन्द्रिय पर्याप्त स्थान में उद्योत प्रकृति १ जोड़कर ३० जानना।

२रा त्रीन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत—ऊपर के २६ प्रकृतियों का त्रीन्द्रिय पर्याप्तयुत स्थान में एक उद्योत प्रकृति जोड़कर ३० जानना।

३रा चतुरिन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत—ऊपर के २६ प्रकृतियों का चतुरिन्द्रिय पर्याप्तयुत स्थान में एक उद्योत प्रकृति जोड़कर ३० जानना।

४था पंचेन्द्रिय पर्याप्त उद्योतयुत—ऊपर के २६ प्रकृतियों का पंचेन्द्रिय पर्याप्तयुत स्थान में एक उद्योत प्रकृति जोड़ कर ३० जानना।

५वां मनुष्य तीर्थंकरयुत ऊपर के २६ प्रकृतियों का मनुष्य पर्याप्तयुत स्थान में एक तीर्थंकर प्रकृति जोड़कर ३० जानना।

६वां देवगति आहारकयुत—ऊपर के २६ प्रकृतियों का देवगति तीर्थंकरयुत स्थान में से तीर्थंकर प्रकृति १ घटाकर, आहारकद्विक २ जोड़कर ३० प्रकृतियां जानना।

(७) ३१ प्रकृतियों का एक ही स्थान है—

१ देवगति आहारक-तीर्थंकरयुत—ऊपर २६ प्रकृतियों का देवगति तीर्थंकरयुत इस स्थान में आहारकद्विक २ जोड़कर ३१ जानना।

(८) १ प्रकृति का एक ही स्थान है—वह प्रकृति अर्थात् यशः कीर्ति १ जानना।

इस प्रकार नामकर्म के आठ स्थानों के २५प्रकार जानना।

सूचना—नरकगतियुत २८ प्रकृतियों का स्थान में और एकेन्द्रिय अपर्याप्तयुत २३ प्रकृतियों का स्थान में और त्रस अपर्याप्तयुत २५ प्रकृतियों का स्थान में दुर्भग, सुभगादि शुभाशुभ प्रकृतियों में से एक का ही बन्ध होगा ऐसा जो लिखा है वह अशुभप्रकृति का ही बन्ध होगा।

(देखो गो० क० गा० ५३३) और ऊपर जो आठ स्थान बतलाया गया है उनके गुणस्थान बधस्थान,

नामकर्म के भंग आदि विवरण गो० क० गा० २१७ को० नं० ५३ मे देखो।

---

२६. कर्मों के उदय का कथन करते हैं—

प्रकृतियों का नाम।	उदय कौनसा गुणस्थान में होता?
आहारकद्विक २।	६ठे प्रमत्त गुणस्थान में ही होता है।
तीर्थंकर प्रकृति का उदय।	१३वें सयोग तथा १४वे अयोग केवली के ही होता है।
सम्यङ्मिथ्यात्व	३रे मिश्रगुण स्थान मे ही होता है।
सम्यक्त्व प्रकृति का उदय।	क्षयोपशमससम्यग्दृष्टि के ४ से ७ ये चार गुण में होता है।
गत्यानुपूर्वी का उदय।	१ले मिथ्यात्व २रे सासादन और ४थे असयत गुण स्थान इन तीनों में ही होता है। परन्तु कुछ विशेषता यह है कि सासादन गुणस्थान में मरने वाला जीव नरकगति को नहीं जाता। इस कारण उसके नरकगत्यानुपूर्वी कर्म का उदय नहीं होता है और बाकी बची सब प्रकृतियों का उदय — मिथ्यात्वादि गुण स्थानों में अपने-अपने उदयस्थान के अन्त समय तक (उदयव्युच्छित्ति होने तक) जानना (देखो गो० क० गा० २६१–२६२)।

२७. गुण स्थानों में उदय व्युच्छित्ति आदि क्रम से कहते हैं – (को० नं० ५९)
(महाधवल अथवा कषाय प्राभृत के कर्त्ता यति वृषभाचार्य के मतानुसार जानना)

गुण-स्थान	अनुदय	उदय	उदय व्युच्छि०	विशेष विवरण
१. मिथ्यात्व	५	११७	१०	५=तीर्थंकर प्र० १, आहारकद्विक २, सम्यङ्मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति १ ये ५ जानना। १० = मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, स्थावर १, एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जाति ४ ये १० जानना।
२. सासादन	१६	१०६	४	१६=५+१०+१ नरकगत्यानुपूर्वी=१६ जानना। ४=अनंतानुबंधी कषाय ४ जानना।
३ मिश्र	२२	१००	१	२२=१६+४=२०+३ आनुपूर्वी=२३—१ सम्यङ्मिथ्यात्व=२२ जानना। १=मिश्र प्र० १ जानना
४ असंयत	१८	१०४	१७	१८=२३-४ आनुपूर्वी १ सम्यक्त्व प्र० ये ५=१८ जानना। १७ अप्रत्याख्यान ४, नरकदेवायु २ वैक्रियिक षट्क ६, मनुष्यतिर्यंचगत्यानुपूर्वी २, दुर्भग १, अनादेय १, अयशः कीर्तिः १ ये १७ जानना।
५. देशसंयत	३५	८७	८	३५=१८+१७=३५ जानना। ८=अप्रत्याख्यान कषाय ४, तिर्यंचायु १, तिर्यंच गति १, उद्योत १, नीच गोत्र १ ये ८ जानना।
६. प्रमत्त	४१	८१	५	४१=३५+८=४३—२ आहारकद्विक=४१ जानना। ५=स्त्यानगृद्धि १, निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, आहारकद्विक २ ये ५ जानना।
७. अप्रमत्त	४६	७६	४	४६=४१+५=४६ जानना। ४=सम्यक्त्व प्र० १, अर्ध नाराच १, कीलित १, अ० सृपाटिका १ ये ४ जानना।
८. अपूर्व क०	५०	७२	६	५०=४६+४=५० जानना। ६=हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा ये ६ जानना।
९. अनिवृ०	५६	६६	६	५६+ ०+६=५६ जानना। ६=संज्वलन क्रोध-मान-माया ३, वेद ३, ये ६ जानना।
१०. सूक्ष्म सां०	६२	६०	१	६२=५६+६=६२ जानना। १=लोभ कषाय (सूक्ष्म लोभ) जानना।
११. उपशांतमो०	६३	५९	२	६३=६२+१ ६३। २ वज्र नाराच १, नाराच १, ये २ जानना।
१२. क्षीण मोह०	६५	५७	१६	६५=६३+२=६५ जानना। १६ - ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४+निद्रा १, प्रचला १=६, अंतराय के ५ ये १६ जानना।
१३. सयोग के०	८०	४२	२९	८०=६५+१६=८१—१ तीर्थंकर प्र०=८० जानना। २९- वज्रवृषभ नाराच संहनन १, निर्माण १, स्थिरद्विक २, शुभद्विक २, स्वरद्विक २, विहायोगति २, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्माण १, संस्थान ६, स्पर्शादि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १, प्रत्येक शरीर १, ये २९।
१४. अयोग केवली	१०९	१३	१३	१०९ = ८०+२९ =१०९ जानना। १३ वेदनीय २, मनुष्यायु १, मनुष्य गति १, पंचेन्द्रिय जाति १, सुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यशः कीर्ति १, तीर्थंकर १, उच्चगोत्र १ ये १३ जानना।

ऊपर जो उदय का कोष्टक दिया है उसी तरह छठे गुण-स्थान तक उदीरणा का कोष्टक जानना। साता, असाता और मनुष्यायु इन तीनों का उदीरणा ६वे गुण स्थान तक ही होती है। परन्तु उदय मात्र १४वे गुण-स्थान तक रहता है, इसलिये ७वें गुण-स्थान से १४वें गुण स्थान तक उदीरणा में ३ प्रकृति कम होकर और अनुदीरणा में ३ प्रकृति बढ़ जायेंगे। (देखो गो० क० गा० २६३ को० नं० ५९)

२२. गुण स्थानों उदय व्युच्छित्ति आदि क्रम से कहते हैं। (को० नं० ६०)
(धवल शास्त्र कर्ता भूतबली आचार्य के मतानुसार जानना)

गुणस्थान	अनुदय	उदय	उदय व्युच्छित्ति	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	५	११७	५	५ = सम्यक् मिथ्यात्व १, सम्यक्त्व प्रकृति १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १ ये ५ जानना ५ = मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म , साधारण १, अपर्याप्त १, ये ५ जानना
२ सासादन	११	१११	९	११ = १० + १ नरक गत्यानुपूर्वी = ११ जानना ९ = अनन्तानुबन्धी कषाय ४, स्थावर १, एकेन्द्रियादि जाति ४ ये ९ जानना।
३ मिश्र	२२	१००	१	२२ = ११ + ९ २० + ३ आनुपूर्वी २३ — सम्यक् मिथ्यात्व १ = २२ जानना १ मिश्र प्र० जानना
४ असंयत	१८	१०४	१७	को० नं० ५९ के समान जानना
५ देश संयत	३५	८७	८	" "
६ प्रमत्त	४१	८१	५	" "
७ अप्रमत्त	४६	७६	४	" "
८ अपूर्व क०	५०	७२	६	" "
९ अनिवृ०	५६	६६	६	" " सूचना—इस कोष्टक के अनुसार आगे सब वर्णन किया है
१० सूक्ष्म सां०	६२	६०	१	" "
११ उपशांत मोह	६३	५९	२	" "
१२ क्षीण मोह	६५	५७	१६	" "
१३ सयोग के०	८०	४२	३०	८० = " " ३० = २९ को० नं० ५९ के समान और साता-असाता में से कोई १ जोड़कर = ३० जानना
१४ अयोग के०	११०	१२	१२	११० = ८० + ३० = ११० जानना १२ = को० नं० ५९ में वेदनीय के दोनों प्रकृतियों का उदय नाना जीवों की अपेक्षा से १४वें गुण स्थान में माना है और यहां दोनों में से कोई १ का उदय माना है इसलिये अनुदय और उदय में एक प्रकृति का अन्तर है।

ऊपर जो अनिवृत्तिकरण गुण स्थान में ६ प्रकृतियों का व्युच्छित्ति बताया है उनमें से ३ वेदों की व्युच्छित्ति सवेद भाग में और संज्वलन कषाय के क्रोध-मान-माया इन ३ का व्युच्छित्ति अवेद भाग में जानना।

क्षीणमोह गुण० के द्विचरम समय में निद्रा और प्रचला इन २ प्रकृतियों का और अन्त समय में शेष १४ प्र० का व्युच्छित्ति जानना।

सयोग केवली गुण० में ३० की और अयोग केवली गुण० में १२ प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होती है यह नाना जीवों की अपेक्षा से और सयोगी में २९ की और अयोगी में १३ की व्युच्छित्ति होती है, यह वेदनीय के दो प्रकृतियों की अपेक्षा से जानना।

अन्य गुण स्थानों में जैसे साता तथा असाता के उदय से इन्द्रिय जन्य सुख तथा दुःख होता है वैसे केवली भगवान के भी होना चाहिये ? इसका समाधान—केवली भगवान के घातिया कर्म का नाश हो जाने से मोहनीय के भेद जो राग तथा द्वेष वे नष्ट हो गये और ज्ञानावरण का क्षय हो जाने से ज्ञानावरण के क्षयोपशम से जन्य इन्द्रिय ज्ञान भी नष्ट हो गया। इसका कारण केवली साता तथा असाता जन्य इन्द्रिय विषयक सुख-दुःख लेशमात्र भी नहीं होते क्योंकि साता आदि वेदनीय कर्म मोहनीय कर्म की सहायता से ही सुख-दुःख देता हुआ जीव के गुण० को घातता है। यह बात पहले भी कह आये हैं। अतः उस सहायक का अभाव हो जाने से वह जली जेवड़ीवत् (रस्सी) अपना कुछ कार्य नहीं कर सकता।

वेदनीय कर्म केवली के इन्द्रिय जन्य सुख-दुःख का कारण नहीं है—जिस कारण केवली भगवान के एक सातावेदनीय का ही बन्ध सो भी एक समय की स्थिति वाला ही होता है, इस कारण वह उदय स्वरूप ही है। और इसी कारण असाता का उदय भी साता रूप से ही परिणमता है—क्योंकि असाता वेदनीय सहाय रहित होने से तथा बहुत हीन होने से मिष्ट जल में खारे जल की एक बूंद की तरह अपना कुछ कार्य नहीं कर सकता, इस कारण से केवली के हमेशा सातावेदनीय का ही उदय रहता है। इसी कारण असाता वेद के निमित्त से होने वाली क्षुधा आदिक जो ११ परिषह हैं वे जिन वर देव के कार्य रूप नहीं हुआ करती हैं। (देखो गो० क० गा० २६४ से २७५ और कॉ० नं० ६०)

२६. **उदय और उदीरणा की प्रकृतियों में कुछ विशेषता बताते हैं—**

उदय और उदीरणा में स्वामीपने की अपेक्षा कुछ विशेषता नहीं है, परन्तु ६वें प्रमत्त गुण स्थान और १३वां सयोगी, तथा १४वां अयोगी इन तीनों गुण स्थानों छोड़ देना अर्थात् इन तीनों गुण स्थानों में ही विशेषता है और सब जगह समानता है। सयोगी और अयोगी केवली की ३० और १२ उदय व्युच्छित्ति प्रकृतियों को मिलाना और उन ४२ में से साता, असाता और मनुष्यायु इन तीन प्रकृतियों को घटाना चाहिये और घटाई हुई साता[1] आदि तीन प्रकृतियों की उदीरणा ६वें प्रमत्त गुण स्थान में ही होती है। बाकी ४२-३=३९ प्रकृतियों की उदीरणा सयोग केवली के होती है तथा वहां ही उदीरणा की व्युच्छित्ति भी होती है। और अयोग केवली के उदीरणा होती ही नहीं यही विशेषता है। (देखो गो० क० गा० २७८-२७९-२८०)।

---

(१) संक्लेश परिणामों से ही इन तीनों की उदीरणा होती है। इस कारण अप्रमत्तादि के इन तीनों की उदीरणा का होना असम्भव है।

३०. उदीरणा की व्युच्छित्ति गुण स्थानों में क्रम से कहते हैं—

(देखो गो० क० गा० २८१–२८२–२८३ और को० नं० ६१)

गुण स्थान	अन् उदीरणा	उदीरणा	उदीरणा व्युच्छि०	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	५	११७	५	कोष्टक नंबर ६० के समान जानना
२ सासादन	११	१११	९	,, ,,
३ मिश्र	२२	१००	१	,, ,,
४ असंयत	१८	१०४	१७	,, ,,
५ देश संयत	३५	८७	८	,, ,,
६ प्रमत्त	४१	८१	८	४१=,, ,, ८ =उदय के ५+३ साता-असाता-मनुष्यायु ये ३ जोड़कर ८ जानना
७ अप्रमत्त	४९	७३	४	४९=४६ अनुदीरणा में साता-असाता-मनुष्यायु ये ३ प्रकृति बढ़ाकर ४९ जानना और उदीरणा के ७६ में से यही ३ घटाकर ७३ जानना ४ = को० न ५९ के समान प्रकृतियों का नाम जानना
८ अपूर्वकरण	५३	६९	६	को० नं० ६० के समान जानना
९ अनिवृत्ति	५९	६३	६	,,
१० सूक्ष्म सांपराय	६५	५७	१	,,
११ उपशांत मोह	६६	५६	२	,,
१२ क्षीणमोह	६८	५४	१६	,,
१३ सयोग के०	८३	३९	३९	८३=६८+१६=८४-१ तीर्थंकर घटाकर=८३. ३९=४२ में से साता आदि ३ घटाकर ३९ जानना
१४ अयोग के०	१२२	०	०	

३१. कर्मों का उदय का क्रम और स्वामीपना बताते हैं—

कर्म प्रकृति	स्वामीपना—
गति आनुपूर्वी आयु	(१) किसी भी विवक्षित भव के पहले समय में ही उस विवक्षित भव के योग्य गति, आनुपूर्वी तथा आयु का उदय होता है। (२) एक जीव के एक ही गति, आनुपूर्वी तथा आयु का उदय युगपत् हुआ करता है

आतप प्रकृति का उदय बादर पर्याप्त पृथ्वीकायिक जीव के ही होता है। उच्चगोत्र का उदय मनुष्य और देवों के ही होता है।

स्त्यानगृद्धि, निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला ये ३ महा-निद्रा प्रकृतियों का उदय।

(१) मनुष्य और तिर्यंचों के ही होता है। (२) और इन तीन महानिद्राओं का उदय संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्म भूमिया मनुष्य और तिर्यंचों के ही इन्द्रिय पर्याप्ति के पूर्ण होने के बाद हुआ करता है। (३) परन्तु आहारक ऋद्धि और वैक्रियक ऋद्धि के धारक मनुष्यों के इनका उदय नहीं होता इसलिये ऋद्धि वाले मनुष्यों को छोड़कर सब कर्म भूमिया मनुष्यों में इनके उदय की योग्यता समझना (देखो गो० क० गा० २८५–२८६)

स्त्री वेद का उदय निर्वृत्य पर्याप्तक असंयत गुण स्थान में नहीं है, क्योंकि असंयत सम्यग्दृष्टि मरण करके स्त्री नहीं होता इसलिये स्त्री वेद वाले असंयत के चारों आनुपूर्वी प्रकृतियों का उदय नहीं होता।

नपुंसक वेद का उदय पहले नरक के सिवाय अन्य तीन गतियों की चतुर्थ गुणस्थानवर्ती निर्वृत्य पर्याप्तक अवस्था में नहीं होता इसलिये नपुंसक वेद वाले असंयत के नरक के बिना अंत की तीन आनुपूर्वी प्रकृतियों का उदय नहीं होता। (देखो गो० क० गा० २८७)

एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्म और सूक्ष्म व साधारण प्रकृतियों का उदय तिर्यंच गति में ही होने योग्य है।

अपर्याप्त प्रकृति का उदय तिर्यंच और मनुष्य के गति में ही होने योग्य है। वज्रवृषभनाराच आदि ६ संहनन और औदारिक शरीर औदारिक अंगोपांग का जोड़ा, मनुष्य तथा तिर्यंच के उदय होने योग्य है।

वैक्रियिकद्विक का उदय देव और नारकीयों के ही होने योग्य कही है। (देखो गो० क० गा० २८८)

उद्योत प्रकृति का उदय तेजः कायिक, वायुकायिक और साधारण वनस्पति कायिक इन तीनों के छोड़ कर अन्य बादर पर्याप्तक तिर्यंचों के होता है।

शेष प्रकृतियों का उदय गुण स्थान के क्रम से जानना (देखो गो० क० गा० २८९)

३२. कर्म प्रकृतियों के सत्त्व का निरूपण करते हैं—

मिथ्या दृष्टि, सासादन मिश्र इन तीनों गुण स्थानों में से क्रम से पहले में तीर्थंकर १ औ आहारकद्विक २ एक काल में नहीं होते तथा दूसरे में तीनों ही प्रकृति किसी काल में नहीं होते और मिश्र गुण० में तीर्थंकर प्रकृति नहीं होती, अर्थात् १ले गुण० में नाना जीवों की अपेक्षा उन तीनों (तीर्थंकर १+आहारकद्विक २=३ प्रकृतियों की (सब—१४८) सत्ता है परन्तु एक जीव की अपेक्षा १ले गुण० में जिनके तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता हो उनके आहारकद्विक २ की सत्ता नहीं रहती और जिनके आहारकद्विक २ की सत्ता हो उनके तीर्थंकर प्र० १ सत्ता की नहीं रहती।

भावार्थ- जिनके तीर्थंकर और आहारकद्विक की युगपत् सत्ता है वे मिथ्यादृष्टि नहीं हो सकते। २रे सासादन गुण० में तीर्थंकर और आहारकद्विक इन तीनों ही प्रकृतियों का सत्व किसी काल में नहीं होते इसलिये १४५ प्र० का सत्ता जानना।

भावार्थ—तीनों में से किसी भी प्रकृति की सत्ता रखने वाला सासादन गुण स्थान वाला नहीं हो सकता और ३रे मिश्र गुण० में तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता नहीं होती, इसलिये १४७ प्रकृतियों की सत्ता जानना।

भावार्थ—तीर्थंकर की सत्ता वाला मिश्र गुण स्थान वर्ती नहीं हो सकता। (देखो गो० क० गा० ३३३)

३३. चारों ही गतियों में किसी भी आयु के बंध होने पर सम्यक्त्व होता है, परन्तु देवायु के बंध के सिवाय अन्य तीन आयु के बंध वाला अणुव्रत तथा महाव्रत नहीं धारण कर सकता है, क्योंकि वहां व्रत के कारणभूत विशुद्ध परिणाम नहीं है।
(देखो गो० क० गा० ३३४)

नरकायु भोगते हुये या आगामी नरकायु का बंध हुआ हो तो अर्थात् नरकायु के सत्व होने पर देश व्रत नहीं हो सकता है तथा तिर्यंच आयु के सत्व होने पर महाव्रत नहीं होता और देवायु के सत्व होने पर क्षपक श्रेणी नहीं होती।

असंयतादि चार गुण स्थान वाले अनंतानुबंधी के ४, दर्शन मोहनीय के ३ इन ७ प्रकृतियों का किस तरह नाश करके क्षायिक सम्यग्दृष्टि होते हैं यह बताते हैं—प्रथम अधःकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण करता है। अनिवृत्तिकरण का काल अंतर्मुहूर्त का रहता है। उन सातों में से पहले अनंतानुबंधी चतुष्क का अनिवृत्तिकरण रूप परिणामों के अंतर्मुहूर्त काल के अंत समय में एक ही बार विसंयोजन करके अर्थात् अनंतानुबंधी की चौकड़ी को अप्रत्याख्यानादि बारह कषायरूप या तो कषायरूप परिणमन करा देता है, इस प्रकार विसंयोजन करके अंतर्मुहूर्त काल तक विश्राम करता है। इसके बाद अर्थात् अनिवृत्तिकरण काल के बहुभाग को छोड़ के शेष संख्यातवे एक भाग में पहले समय से लेकर दर्शन मोह का नाश करने के उद्यम करता है अर्थात् क्रम से मिथ्यात्व प्रकृति, तथा सम्यक्त्व मिथ्यात्व तथा सम्यक्त्व प्रकृति का क्षय करते हैं। इस प्रकार सात प्रकृतियों के क्षय करके क्षायिक सम्यग्दृष्टि होता है। यहां पर तीन गुण स्थानों का प्रकृति सत्व पूर्वोक्त ही समझना, एक जीव की अपेक्षा १ले मिथ्यात्व गुण स्थान में आहारकद्विक और तीर्थंकर प्रकृति का सत्व अनुक्रम से कैसा रहता है वह बताते हैं कोई जीव ऊपरले गुण स्थान में आहारकद्विक का बंध करके मिथ्यात्व गुण स्थान में आया वहां आहारकद्विक के उद्वेलन करने के बाद नरकायु का बंध किया, उसके बाद असंयत् गुण स्थान में आकर वहां तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया, उसके बाद २रे अथवा ३रे नरक में जाते समय मिथ्यादृष्टि हुआ, इस प्रकार मिथ्यादृष्टि जीव को आहारकद्विक २ और तीर्थंकर प्रकृति का सत्व अनुक्रम से रह सकता है नाना जीवों की अपेक्षा से देखा जाय तो एक समय में आहारकद्विक २ और तीर्थंकर प्रकृति का सत्व रह सकता है तथा असंयत से लेकर ७वे गुण स्थान तक उपशमसम्यग्दृष्टि तथा क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि इन दोनों के ४थे गुण स्थान में अनंतानुबंधी आदि की उपशमरूप सत्ता होने से १४८ प्रकृतियों का सत्व है। ५वे गुण स्थान में नरकायु न होने से १४७ का, ६वे प्रमत्त गुण स्थान में नरक तथा तिर्यंचायु इन दोनों का सत्व न होने से १४६ का तथा ७वे अप्रमत्त में भी १४६ का ही सत्व है और क्षायिक सम्यग्दृष्टि के अनंतानुबंधी कषाय ४ तथा दर्शनमोहनीय के ३ इन ७ प्रकृतियों के क्षय होने से सात सात कम समझना और अपूर्वकरण गुण स्थान में दो श्रेणी है, उनमें से क्षपक श्रेणी में तो १३८ प्रकृतियों का सत्व है, क्योंकि अनंतानुबंधी आदि ७ प्रकृतियों का तो पहले ही क्षय किया था और नरक, तिर्यंच तथा देवायु इन तीनों की सत्ता ही नहीं है, इस प्रकार ७ + ३ = १० प्रकृतियां कम हो जाती हैं। (देखो गो० क० गा० ३३५-३३६)

३४. **कौन से गुण स्थान में कितने प्रकृतियों का सत्व रहता है। इसका** विवरण क्षपक श्रेणी की अपेक्षा से जानना सब प्रकृतियां १४८।

(देखो गो० क० गा० ३३३ से ३४२ और को० नं० ११६)

गुण स्थान	असत्व	सत्व	सत्व व्युच्छि०	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	०	१४८	०	
२ सासादन	३	१४५	०	३=आहारकद्विक २, तीर्थंकर प्र० १ ये ३ जानना
३ मिश्र	१	१४७	०	१- तीर्थंकर प्रकृति जानना
४ असंयत	०	१४८	१	१=नरकायु १ जानना
५ देशसंयत	१	१४७	१	१ - असत्व=नरकायु, १=व्युच्छित्ति=तिर्यंचायु
६ प्रमत्त	२	१४६	०	२=नरका १, तिर्यंचायु १, ये २ जानना
७ अप्रमत्त	२	१४६	८	२=नरक-तिर्यंचायु ये २, ८=अनन्तानुबन्धी ४, दर्शन मोहनीय के ३, देवायु १, ये ८ जानना
८ अपूर्वकरण क्षपक	१०	१३८	१०	१०=२+८=१० जानना (क्षपक श्रेणी की अपेक्षा)
९ अनिवृत्तिकरण क्षपक श्रेणी की अपेक्षा				
१ला भाग	१०	१३८	८	१०=८वां गुण स्थान के समान जानना। १६=स्त्यानगृद्धि आदि महानिद्रा ३, नरक गति १, नरक गत्यानुपूर्वी १, तिर्यंचगति १, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १, एकेन्द्रियादि जाति ४, उद्योत १, आतप १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १ ये १६
२रा भाग	२६	१२२	८	२६=१०+१६+२६, ८=अप्रत्याख्यान ४, प्रत्याख्यान ४ ये ८ जानना।
३रा भाग	३४	११४	१	३४=२६+८=३४, १=नपुंसक वेद जानना।
४था भाग	३५	११३	१	३५=३४+१=३५, १=स्त्रीवेद जानना।

५वां भाग	३६	११२	६	३६=३५+ =३६, ६=हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, ये ६ जानना
६वां भाग	४२	१०६	१	४२=३६ ६=४२, १=पुरुषवेद जानना
७वां भाग	४३	१०५	१	४३=४२+१ ४३, १ संज्वलन क्रोध
८वां भाग	४४	१०४	१	४४=४३+१=४४, १= ,, मान
९वां भाग	४५	१०३	१	४५=४४+१=४५, १= ,, माया
१० सूक्ष्म सां० क्षपक	४६	१०२	१	४६=४५+१=४६, १= ,, लोभ
११ उपशांत मोह	०	०	०	०
१२ क्षीण मोह	४७	१०१	१६	४७=४६+१=४७ १६=ज्ञानावरण के ५, दर्शनावरण के ४, मोहनीय के २ (निद्रा, प्रचला) अन्तराय के ५ ये १६ जानना
१३ सयोग के०	६३	८५	०	६३=ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण के ९, मोहनीय के २८, आयुकर्म के ३, (नरक-तिर्यंच-देवायु) नाम १३, नरकद्विक २, तिर्यंच द्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, उद्योत १, आतप १, साधारण १, सूक्ष्म १, स्थावर १ ये १३) अन्तराय के ५ ये ६३ जानना।
१४ अयोग के० द्विचरम समय पर्यंत —	६३		७२	६३=१३वें गुण० के समान जानना ७२=साता या असाता में से कोई १ नाम कर्म के ७० (शरीर ५, बंधन ५, संघात ५, संस्थान ६, अंगोपांग ३, संहनन ६, स्पर्श ८, रस ५, गंध २, वर्ण ५, स्थिर-अस्थिर २, शुभ-अशुभ २, सुस्वर-दुःस्वर २, देवद्विक २, विहायोगति २, दुर्भग १, निर्माण १, अयशःकीर्ति १, अनादेय १, प्रत्येक १, अपर्याप्त १, अगुरुलघु १, उद्योत १, परघात १, उच्छ्वास १, ये ७०) नीचगोत्र १, ये ७२ जानना
अयोग केवली अंत समय में	१३५	१३	१३	१३५=६३+७२=१३५, १३=साता या असाता में से कोई १, मनुष्यायु १, नामकर्म के १० (मनुष्यद्विक २, पंचेन्द्रिय जाति १ सुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यशःकीर्ति १, तीर्थंकर १ ये १०) उच्चगोत्र १, ये १३ जानना

३५. उपशम श्रेणीवाले के चारित्र मोहनीय की शेष २८ – ७=२१ प्रकृतियों के उपशम करने का विधान बताते हैं— उपशम के विधान में भी क्षपणा विधान की तरह क्रम जानना। परन्तु विशेष बात यह कि, ८वां गुणस्थान से ११वां गुणस्थान तक उपशम-श्रेणी चढ़ने वाले जीव को नरकायु और तिर्यंचायु इन दो प्रकृति कम होकर १४६ प्रकृतियों का सत्व रहता है; और जो क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव उपशम-श्रेणी चढ़ता है उसे ८ से ११वें गुणस्थान तक १३८ प्रकृतियों का सत्व रहता है। इसी तरह आयुर्बंध जिसको नहीं हुआ है ऐसा क्षायिक सम्यग्दृष्टि को ४थे से ७वें गुणस्थान तक १३८ प्रकृतियों का सत्व रहता है। नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, नोकषाय, पुरुषवेद इनका उपशम क्रम से होता है और क्रोध, मान, माया, लोभ, इनका उपशम निम्न प्रकार ९वें गुणस्थान में पुरुषवेद के उपशम होने के बाद नया बन्धा हुआ पुरुषवेद कर्म का अप्रत्याख्यान क्रोधसह उपशम करता है। नन्तर संज्वलन क्रोधका उपशम करता है। इसके बाद नया बन्धा हुआ संज्वलन क्रोधका अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान मान कषायसह उपशम करता है। नन्तर संज्वलन मान का उपशम करता है इसके बाद नया बंधा हुआ संज्वलन मान का अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान मायाकषायसह उपशम करता है। नन्तर संज्वलन माया का उपशम करता है। इसके बाद नया बन्धा हुआ माया का अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान लोभसह उपशम करता है। नन्तर बादर संज्वलन लोभ का उपशम करता है। कर्मबन्ध होने के बाद एक आवली तक उसका उपशम, क्षय, उदय वगैरह नहीं होता, (देखो गो० क० गा० ३४३)।

३६. संक्रमण के पांच प्रकार हैं—

पांच प्रकार के संक्रमण में पांच प्रकार के भागहार होते हैं। संसारी जीवों के अपने जिन परिणामों के निमित्त से शुभकर्म और अशुभकर्म संक्रमण करे अर्थात् अन्य प्रकृति-रूप परिणमे उसको भागहार कहते हैं। उसके उद्वेलन, विध्यात, अधःप्रवृत्त,गुणसंक्रमण और सर्वसंक्रमण के भेद से पांच प्रकार हैं। (देखो गो० क० गा० ४०९)।

(१) संक्रमण का स्वरूप कहते हैं—अन्य प्रकृतिरूप परिणमन को संक्रमण कहते हैं। सो जिस प्रकृति का बंध होता है उसी प्रकृति का संक्रमण भी होता है। यह सामान्य विधान है कि जिसका बन्ध नहीं होता उसका संक्रमण भी नहीं होता। इस कथन का शासनसिद्ध प्रयोग यह है कि दर्शनमोहनीय के बिना शेष सब प्रकृतियां बन्ध होने पर संक्रमण करती हैं, ऐसा नियम जानना। असाता का बन्ध ६वें गुणस्थान तक होता है। इसलिये साता का संक्रमण ६वें गुणस्थान तक असातारूप होयेगा। इसी तरह साताका बन्ध १३वें गुणस्थान तक होता है इसलिये असाता का संक्रमण १३वें गुणस्थान तक होता है। परन्तु दर्शनमोहनीय के जहां बन्ध होता है तहां यह नियम नहीं है। तथा मूलप्रकृतियों का संक्रमण अर्थात् अन्य का अन्य रूप परस्पर में परिणमन नहीं होता। ज्ञानावरण की प्रकृति कभी दर्शनावरणरूप नहीं होती इससे सारांश यह निकला कि उत्तरप्रकृतियों में ही संक्रमण होता है। परन्तु दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय का परस्पर में संक्रमण नहीं होता तथा चारों आयुओं का भी परस्पर में संक्रमण नहीं होता। (देखो गो० क० गा० ४१०)।

सम्यक्त्व मोहनीय (सम्यक्त्व प्रकृति) का संक्रमण ४थे गुणस्थान से ७वें गुणस्थान तक नहीं करती। मिथ्यात्वमोहनीय (मिथ्यात्वप्रकृति) का संक्रमण मिथ्यात्व गुणस्थान में नहीं करती। मिश्र मोहनीय (सम्यङ्मिथ्यात्व) का संक्रमक ३रे मिश्रगुण० में नहीं करती। सासादन और मिश्रगुणस्थान में नियम से दर्शनमोहनीय के त्रिक का संक्रमण नहीं होता। सामान्य से दर्शनमोहनीय का संक्रमण ४ से ७ इन चारों गुणस्थानों में होता है। (देखो गो० क० गा० ४११)।

कोई सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्वगुणस्थान को प्राप्त

होने पर सम्यक्त्वमोहनीय और मिश्रमोहनीय का अन्तर्मुहूर्ततक अधः प्रवृत्त संक्रमण होता है और उद्वेलन भागहार संक्रमण उपांत्य कांडक तक (अन्त के समीप के भाग) नियम से प्रवर्तता है। वहां पर अधःप्रवृत्त संक्रमण फालिरूप रहता है। एक समय में संक्रमण होने को 'फालि' कहते है।

अधःप्रवृत्त संक्रमण में फालिरूप संक्रमण होता है और समय समूह में संक्रमण होना 'कांडक' कहा जाता है। उद्वेलन संक्रमण 'कांडकरूप से' होता है। (देखो गो० क० गा० ४१२)।

उद्वेलन प्रकृतियों का द्विचरमकांड तक उद्वेलनासंक्रमण होता है। और अन्त के कांडक में नियम से गुणसंक्रमण होता है और अन्तकांडक के अन्त की फालि मे सर्वसंक्रमण होता। ऐसा जानना।

सम्यक्त्वमोहनीय और मिश्रमोहनीय ये दो प्रकृतियां उद्वेलन प्रकृतियों में समाविष्ट हैं। इसलिये उन प्रकृतियों में उद्वेलन संक्रमण, गुणसंक्रमण और सर्वसंक्रमण होता है। (देखो गाथा ६१२ से ६१७)।

यहां पर प्रसंगवश पांचों संक्रमणों का स्वरूप कहते हैं—

(१) उद्वेलन संक्रमण—अधःप्रवृत्त, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण इन तीन करणरूप परिणामों के बिना ही कर्मप्रकृतियों के परमाणुओं का अन्य प्रकृतिरूप परिणमन होना वह उद्वेलन संक्रमण है। (गाथा ३५०—४१५ देखो)।

(२) विध्यात संक्रमण—मन्द विशुद्धता वाले जीव की, स्थिति अनुभाग के घटाने रूप, भूतकालीन स्थिति कांडक और अनुभाग कांडक तथा गुण श्रेणी आदि परिणामों में प्रवृत्ति होना विध्यात संक्रमण है।

(३) अधःप्रवृत्त संक्रमण—बन्धरूप हुई प्रकृतियों का अपने बन्ध में सम्भवती प्रकृतियों में परमाणुओं का जो प्रदेश संक्रमण होना वह अधःप्रवृत्त संक्रमण है।

(४) गुणसंक्रमण—जहां पर प्रतिसमय असंख्यातगुणश्रेणी के क्रम से परमाणु प्रदेश अन्य प्रतिरूप परिण में सो गुणसंक्रमण है।

(५) सर्वसंक्रमण—जो अन्त के कांडक की अन्त की फालि के सर्वप्रदेशों में से जो अन्य प्रकृतिरूप नहीं हुए हैं उन परमाणुओं का अन्य प्रकृतिरूप होना वह सर्वसंक्रमण है। (देखो गो० क० गा० ४१३)।

प्रकृतियों के बन्ध होने पर अपनी अपनी-अपनी बन्ध व्युच्छित्ति तक अन्य प्रकृतियों का अधः प्रवृत्तसंक्रमण होता है। परन्तु मिथ्यात्व का संक्रमण पहले गुण स्थान में नहीं होता क्योंकि 'सम्मं मिच्छं मिस्सं' इत्यादि गाथा के द्वारा इसका निषेध पहले ही बता चुके हैं और बंध की व्युच्छित्ति होने पर ४थे असंयत से लेकर ७वें अप्रमदत्त गुणस्थान तक विध्यात नामा संक्रमण होता है तथा ८वें अपूर्वकरण गुण० से आगे ११वें उपशांत कषाय गुणस्थान पर्यंत बंध रहित अप्रशस्त प्रकृतियों का गुणसंक्रमण होता है। इसी तरह प्रथमोपशम सम्यक्त्व ग्रहण होने के समय प्रथम समय से लेकर अन्तर्मूहूर्त तक गुणसंक्रमण होता है और क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करते समय मिथ्यात्व का क्षय करने के लिये मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति के पूर्ण काल में अपूर्व-करणपरिणामों के द्वारा मिथ्यात्व के अन्तिम कांडक की उपांत्य फालिपर्यंत गुणसंक्रमण और चरम (अन्तिम) फालि में सर्वसंक्रमण होता है। (देखो गो० क० गा० ४१६)।

(२) **प्रकृतियों के संक्रमण का नियम** अर्थात् किस प्रकृति में कितने संक्रमण (पांच संक्रमणों में से) होते हैं इसका विवरण :—

प्रकृतियों की संख्या	संक्रमणों की संख्या और नाम						
	संख्या	उद्वेलन संक्रमण	विध्यात संक्रमण	अध: प्रवृत्ति०	गुण संक्रमण	सर्व० संक्रमण	विशेष विवरण
१९ प्रकृतियों में	१			१			यह १ जानना
३० ,,	४		१	१	१	१	ये ४ ,,
७ ,,	२			१	१		ये २ ,,
२० ,,	३		१	१	१		ये ,,
१ ,,	३		१		१	१	ये ३ ,,
१ ,,	४	१		१	१	१	ये ४ ,,
१२ ,,	५	१	१	१	१	१	ये ५ ,,
४ ,,	२			१		१	ये २ ,,
४ ,,	२		१	१			ये २ ,,
४ ,,	३			१	१	१	ये ३ ,,

जोड़ १२२ प्रकृतियों में आयु के ४ प्रकृति नहीं है, परन्तु वर्णादिक के ४ प्रकृतियों के जगह शुभ वर्णादि ४ और अशुभ वर्णादि ४ ये ८ प्रकृति इनमें लिया है इससे सब मिलकर १२२ प्रकृतियां होती हैं। (देखो गो० क० गा० ४१८)

उन प्रकृतियों को तथा उनके संक्रमणों को क्रम से बताते हैं। अर्थात् किस प्रकृति में कौन सा संक्रमण होता है इसका खुलासा (कोष्टक नं० १४२ गो० क० गा० ४१९ से ४२८ में देखो।

प्रकृतियों के नाम	कौन कौन से संक्रमण होते हैं					विशेष विवरण
	उद्वेलन	विध्यात	अधः प्र०	गुण सं०	सर्व सं०	
३६ प्रकृतियों में	०	०	१	०	०	१ अधः प्रवृत्ति
(१) ज्ञानावरण के ५	०	०	,,	०	०	
(२) दर्शनावरण के ४	०	०	,,	०	०	
(३) साता वेदनीय १	०	०	,,	०	०	
(४) संज्वलन लोभ १	०	०	,,	०	०	
(५) नामकर्म-पंचेन्द्रिय जाति १	०	०	,,	०	०	
तैजस-कार्माण शरीर २	०	०	,,	०	०	
समचतुरस्र संस्थान १	०	०	,,	०	०	
शुभ-वर्णादि ४	०	०	,,	०	०	
अगुरुलघु १	०	०	,,	०	०	
परघात १	०	०	,,	०	०	
उच्छ्वास १	०	०	,,	०	०	
प्रशस्त विहायोगति १	०	०	,,	०	०	
त्रस १	०	०	,,	०	०	
बादर १	०	०	,,	०	०	
पर्याप्त १	०	०	,,	०	०	
प्रत्येक शरीर १	०	०	,,	०	०	
स्थिर १	०	०	,,	०	०	
शुभ १	०	०	,,	०	०	
सुभग १	०	०	,,	०	०	
सुस्वर १	०	०	,,	०	०	
आदेय १	०	०	,,	०	०	
यशः कीर्ति १	०	०	,,	०	०	
निर्माण १	०	०	,,	०	०	
(६) अंतराय कर्म के ५	०	०	,,	०	०	ये ३६ प्रकृति जानना
३० प्रकृतियों में	०	१	१	१	१	ये ४ संक्रमण जानना
(१) स्त्यानगृद्धि आदि ३	०	,,	,,	,,	,,	महानिद्रा ३
(२) अनन्तानुबंधी कषाय ४	०	,,	,,	,,	,,	
अप्रत्याख्यान कषाय ४	०	,,	,,	,,	,,	

प्रत्याख्यान कषाय ४	०	”	”	”	”	
अरति-शोक २	०	”	”	”	”	
नपुंसक वेद १	०	”	”	”	”	
स्त्री वेद १	०	”	”	”	”	
(२) तिर्यंचद्विक २	०	”	”	”	”	
एकेन्द्रियादि जाति ४	०	”	”	”	”	
आतप १	०	”	”	”	”	
उद्योत १	०	”	”	”	”	
स्थावर १	०	”	”	”	”	
सूक्ष्म १	०	”	”	”	”	
साधारण १	०	”	”	”	”	ये ३० प्रकृतियां
७ प्रकृतियों में	०	०	१	१	०	ये २ संक्रमण
(१) निद्रा १	०	०	”	”	०	
प्रचला १	०	०	”	”	०	
(२) अशुभ वर्णादि ४	०	०	”	”	०	ये ७ प्रकृतियां
उपघात १	०	०	”	”	०	ये ३ संक्रमण
२० प्रकृतियों में	०	१	१	१	०	
(१) असाता वेदनीय १	०	”	”	”	०	
(२) अप्रशस्त विहायोगति १	०	”	”	”	०	
१से छोड़कर वज्रनाराच आदि संहनन ५	०	”	”	”	०	
१ले समचतुरस्र छोड़कर शेष संस्थान ५	०	”	”	”	०	
अपर्याप्त १	०	”	”	”	०	
अस्थिर १	०	”	”	”	०	
अशुभ १	०	”	”	”	०	
दुर्भग १	०	”	”	”	०	
दुःस्वर १	०	”	”	”	०	
अनादेय १	०	”	”	”	०	
अयशःकीर्ति १	०	”	”	”	०	
(३) नीच गोत्र १	०	”	”	”	०	ये २० प्रकृतियां
१ मिथ्यात्व प्रकृति	०	१	०	१	१	ये ३ संक्रमण
१ सम्यक्त्व मोहनीय	१	०	१	१	१	ये ४ संक्रमण
१२ प्रकृतियों में	१	१	१	१	१	ये ५ ही संक्रमण
(१) मिश्र मोहनीय १	”	”	”	”	”	

(२) आहारकद्विक २	"	"	"	"	"	
देवद्विक २	"	"	"	"	"	
नरकद्विक २	"	"	"	"	"	
वैक्रियिकद्विक २	"	"	"	"	"	
मनुष्यद्विक २	"	"	"	"	"	
(३) उच्चगोत्र १	"	"	"	"	"	
४ प्रकृतियों में	०	०	१	०	१	ये १२ प्रकृतियां ये २ संक्रमण
(१) संज्वलन कषाय के ३ (क्रोध-मान-माया)	०	०	"	"	"	
पुरुषवेद वेद १	०	०	"	०	"	
४ प्रकृतियों में	०	१	१	०	०	ये ४ प्रकृतियां ये २ संक्रमण
(१) औदारिकद्विक २	०	"	"	०	०	
वज्रवृषभनाराच सं० १	०	"	"	०	०	
तीर्थंकर प्र० १	०	"	"	०	०	
४ प्रकृतियों में	०	०	१	१	१	ये ४ प्रकृतियां ये ३ संक्रमण
(१) हास्य-रति २	०	०	"	"	"	
भय-जुगुप्सा २	०	०	०	"	"	ये ४ प्रकृतियां
जोड़ ३९ प्रकृतियां	०	०	३९	०	०	
३० "	०	३०	३०	३०	३०	
७ "	०	०	७	७	०	
२० "	०	२०	२०	२०	०	
१ "	०	१	०	१	१	
१ "	१		१	१	१	
१२ "	१२	१२	१२	१२	१२	
४ "	०	०	४	०	४	
४ "	०	४	४	०	०	
४ "	०	०	४	४	४	
सबका जोड़	१३	६७	१२१	७५	५२	

२७. **स्थिति और अनुभाग बंध के, तथा प्रदेश बंध के संक्रमण के गुण-स्थानों की संख्या कहते हैं**—कषायों का उदय १० वें गुण-स्थान तक ही है इसलिये स्थिति और अनुभाग का बंध नियम से सूक्ष्म सांपराय गुण-स्थान तक ही है। क्योंकि उक्त बंध का कारण कषाय वहीं तक है और बंधरूप प्रदेशों (कर्म परमाणुओं का) का संक्रमण भी सूक्ष्म-सांपराय गुण-स्थान तक ही है। क्योंकि 'बंधे संकामदि' इस गाथा सूत्र के अभिप्राय से स्थिति बंध तक ही संक्रमण होना संभव है। साता वेदनीय का प्रकृति और प्रदेश बंध ११से १३वे गुण-स्थान तक होता है। (देखो गो० क० गा० ४२१)

१८. पांच भागहारों का (देखो गाथा ४०६) अल्प बहुत्व कहते हैं —

(१) सर्व संक्रमण भागहार का प्रमाण सबसे थोड़ा है। उसका प्रमाण एक रूप कल्पना किया गया है।

(२) गुण संक्रमण भागहार का प्रमाण सर्व संक्रमण भागहार से असंख्यात गुणा है अर्थात् पल्य के अर्धच्छेदों के असंख्यातवें भाग (इतना) है।

(३) अधः प्रवृत्त संक्रमण नामा भागहार का प्रमाण गुणसंक्रमण भागहार से असंख्यात गुणे अपकर्षण और उत्कर्षण भागहार है। तो भी ये दोनों जुदे जुदे पल्य के अर्धच्छेदों के असंख्यातवें भाग प्रमाण ही है। क्योंकि असंख्यात के छोटे बड़े की अपेक्षा बहुत भेद हैं इससे अधः प्रवृत्त संक्रमण भागहार असंख्यात गुणा है।

(४) विध्यात संक्रमण नामा भागहार का प्रमाण अधः प्रवृत्तसंक्रमण भागहार से असंख्यात गुणा है। अर्थात् सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

(५) उद्वेलन संक्रमण भागहार का प्रमाण विध्यात संक्रमण भाग हार से असंख्यात गुणा अर्थात् सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग इतना है।

इससे कर्मों के अनुभाग की नाना गुण हानि शलाका का प्रमाण अनंत गुणा है। इससे उस अनुभाग की एक गुण हानि के आयाम का प्रमाण अनंत गुणा है। इससे उसी की डेढ़ गुण हानि का प्रमाण उसके आधे प्रमाण कर अधिक है इससे दो गुण हानि का आधा गुण हानि के प्रमाण कर अधिक है इसी को 'निषेकहार' कहते हैं। इस से उस अनुभाग की अन्योन्याभ्यस्तराशि का प्रमाण अनंत-गुणा जानना। (देखो गो० क० गा० ४०० से ४३५)

सूचना — जिसके भागहार का प्रमाण ज्यादा होगा उसका भागाकार कम होगा अर्थात् कम परमाणु का संक्रमण होगा और जिसके भागहार का प्रमाण कम होगा उसका भागाकार ज्यादा होगा अर्थात् ज्यादा होगा परमाणु का संक्रमण होगा।

दशकरण अवस्था चूलिका

१९. दश करणों के नाम — बंध, उत्कर्षण, संक्रमण, अपकर्षण, उदीरणा, सत्त्व, उदय, उपशम, निधत्ति, निकाचना (निष्काचना), ये दश करण (अवस्था) हर एक कर्म प्रकृति के होते हैं।

(१) बंध — कर्मों का आत्मा से सम्बन्ध होना, अर्थात् मिथ्यात्वादि परिणामों से जो पुद्गल द्रव्य का ज्ञानावरणादिरूप होकर परिणमन करना जो कि ज्ञानादिका आवरण करता है, वह बंध है।

(२) उत्कर्षण — जो कर्मों की स्थिति तथा अनुभाग का बढ़ना वह उत्कर्षण है।

(३) संक्रमण — जो बंधरूप प्रकृति का दूसरी प्रकृति रूप परिणमन जाना वह संक्रमण है।

(४) अपकर्षण — जो स्थिति तथा अनुभाग का कम हो जाना वह अपकर्षण है।

(५) उदीरणा — उदयकाल के बाहिर स्थित, अर्थात् जिसके उदय का अभी समय नहीं आया है ऐसा जो कर्म-द्रव्य (निषेक) उसको अपकर्षण के बल से उदयावली काल में प्राप्त करना (लाना) उसको उदीरणा कहते हैं।

(६) सत्त्व — जो पुद्गल का कर्मरूप रहना वह सत्त्व है।

(७) उदय — जो कर्म का अपनी स्थिति को प्राप्त होना अर्थात् फल देने का समय प्राप्त हो जाना वह उदय है।

(८) उपशम — जो कर्म उदयावली में प्राप्त न किया जाय अर्थात् उदीरणा अवस्था को प्राप्त न हो सके वह उपशांत-उपशम करण है।

(९) निधत्ति — जो कर्म उदीरणा अर्थात् उदयावली

में भी प्राप्त न हो सके और संक्रमण अवस्था को भी प्राप्त न हो सके उसे निधत्तिकरण कहते हैं।

(१०) **निकाचना**—जिस कर्म की उदीरणा, संक्रमण, उत्कर्षण, और अपकर्षण ये चारों ही अवस्थायें न हो सके उसे निकाचना करण कहते हैं। इसको निकाचित, निष्काचना ऐसे भी कहते हैं।

इस प्रकार दशकरणों का स्वरूप जानना (देखो गो० क० गा० ४३७ से ४४०)

४०. गुण स्थानों में कर्म प्रकृतियों के इन करणों के संभव दिखाते हैं

(१) पहले मिथ्यात्व गुण स्थान से लेकर ८वे अपूर्वकरण गुण स्थान पर्यंत 'दस करण' होते हैं।

नरकादि चारों आयु कर्म प्रकृतियों के 'संक्रमणकरण' के बिना ९ करण होते हैं और शेष सब प्रकृतियों के 'दश करण' होते हैं।

(२) ९वे अनिवृत्तिकरण और १०वे सूक्ष्म सांपराय गुण स्थान में अंत के उपशम-निधत्ति-निकाचना इन तीनों करणों को छोड़ कर शेष आदि के ७ ही करण होते हैं।

(३) ११वे उपशांत मोह, १२वे क्षीण मोह, १३वे सयोग केवली इन तीन गुण स्थानों में 'संक्रमणकरण' के बिना ६ ही करण (बंध, उत्कर्षण, अपकर्षण, उदीरणा, सत्व, उदय ये ६) होते हैं।

( ) ११वे उपशांत मोह गुण स्थान में कुछ विशेष बात यह है कि इस गुण स्थान में मिथ्यात्व और मिश्र मोहनीय (सम्यङ् मिथ्यात्व) इन दोनों का 'संक्रमणकरण' भी होता है, अर्थात् इन दोनों के कर्म परमाणु सम्यक्त्व मोहनीय (सम्यक्त्व प्रकृति) रूप परिणम जाते हैं, किन्तु शेष प्रकृतियों का 'संक्रमण करण' नहीं होता, ६ ही करण होते हैं।

(५) १४वे अयोग केवली गुण स्थान में सत्व और उदय ये दो ही करण पाये जाते हैं।

(६) जिस गुण स्थान में जिस प्रकृतियों की जहां तक बंध व्युच्छित्ति होती है वहां तक उन प्रकृतियों का बंध करण और उत्कर्षण करण होते हैं और प्रकृतियों की अपनी अपनी जाति की जहां बंध से व्युच्छित्ति है वहां तक संक्रमण करण होता है, जैसे कि ज्ञानावरण की पांचों ही प्रकृतियां परस्पर में स्वजाति हैं उनकी बंध व्युच्छित्ति १०वे गुण स्थान में होती है। इसलिये उनका संक्रमण करण भी १०वे गुण स्थान तक होगा।

(७) १४वे अयोग केवली गुण स्थान में जो ८५ प्रकृतियों का सत्व रहता है उसका अपकर्षण करण सयोगी केवली गुण स्थान के अंत समय तक होता है। (कोष्टक नं० ११६ और १२५ गाथा ३३३ से ३४१ देखो)

(८) क्षीण कषाय जो १२वे गुण स्थान में सत्व से व्युच्छिन्न हुई १६ प्रकृति तथा १०वा सूक्ष्म सांपराय गुण स्थान में सत्व से व्युच्छित्तिरूप हुआ जो सूक्ष्म लोभ इन १७ प्रकृतियों का क्षयदेश पर्यंत (क्षय होने का ठिकाना तक) अपकर्षणकरण जानना उस क्षय देश का काल यहां पर एक समय अधिक आवली मात्र है, क्योंकि ये १७ प्रकृतियां स्वमुखोदयी हैं, सारांश यह है कि प्रकृतियां दो प्रकार की हैं। एक स्वमुखोदयी दूसरी परमुखोदयी।

स्वमुखोदयी—जो अपने ही रूप उदयफल देकर नष्ट हो जाय वे स्वमुखोदयी है, उनका काल एक समय अधिक आवली प्रमाण है, वही क्षयदेश (क्षय होने का ठिकाना) है।

परमुखोदयी—जो प्रकृति अन्य प्रकृति रूप उदयफल देकर विनष्ट हो जाती है वे परमुखोदयी है, उनका क्षयदेश अंत कांडक की अंतफालि है ऐसा जानना।

(९) देवायु का अपकर्षण करण ११वे उपशांतमोह गुण स्थान पर्यंत है और मिथ्यात्व, सम्यङ् मिथ्यात्व सम्यक्त्व प्रकृति ये ३ प्रकृतियां और 'निरयति रिक्ख, इत्यादि सूत्र से कथित ९वे अनिवृत्ति करण गुण स्थान में क्षय हुई १६ प्रकृतियां इन १९ प्रकृतियों का क्षयदेश

पर्यंत अपकर्षण करण होता है, अर्थात् अंतकांडक के अंतफालिपर्यंत है और क्षपक अवस्थायें अनिवृत्तिकरण गुण स्थान के २रे भाग से ६वे भाग तक क्षय हुई जो आठ कषाय को लेकर २० प्रकृतियां हैं उनका भी अपने-अपने क्षयदेश पर्यंत अपकर्षण करण है, जिस स्थान में क्षय हुआ हो उसको 'क्षयदेश' कहते हैं। (देखो गो० क० में कोष्टक नं० ११६)

(१० उपशम श्रेणी में मिथ्यात्व, सम्यङ् मिथ्यात्व सम्यक्त्व प्रकृति इन तीन दर्शन मोहनीय प्रकृतियां और ६वे गुण स्थान के पहले भाग में क्षय हुई जो नरक-द्विकादिक १६ प्रकृतियां इन १६ प्रकृतियों का अपकर्षण करण ११वे उपशांत मोह गुण स्थान पर्यंत होता है, परन्तु शेष आठ कषायादि ६वें गुण स्थान में नष्ट होने वाले २० प्रकृतियों का अपने अपने उपशम करने के ठिकाने तक अपकर्षण करण है। (देखो को० नं० ११६)

(११) अनंतानुबंधी चार कषाय का अपकर्षण करण ४था असंयत गुण स्थान से लेकर ७वां अप्रमत्त गुण स्थान तक यथासंभव जहां विसंयोजन (अन्यरूप परिणमन) हो वहां तक ही होता है तथा नरकायु के ४थे असंयत गुण स्थान तक और तिर्यंचायु के ५वे देश संयत गुण स्थान तक उदीरणा, सत्व, उदयकरण — ये तीन करण प्रसिद्ध ही हैं, क्योंकि पूर्व में इनका कथन हो चुका है।

(१२) उपशम सम्यक्त्व के सन्मुख हुए जीव के मिथ्यात्व गुण स्थान के अंत में एक समय अधिक एक आवली पर्यंत मिथ्यात्व प्रकृति का उदीरणकरण होता है, क्योंकि उसका उदय उतने ही काल तक है और सूक्ष्म लोभ का उदीरणाकरण १०वे सूक्ष्म सांपराय गुण स्थान में ही होता है, क्योंकि इससे आगे अथवा अन्यत्र उसका उदय ही नहीं है।

(१३) जो कर्म उदयावली में प्राप्त नहीं किया जा सके अर्थात् जिसकी उदीरणा न हो सके ऐसा उपशांत (उपशम) करण, जो उदीरणारूप भी न हो सके और संक्रमण रूप भी न हो सके ऐसा निधत्तिकरण तथा जो उदयावली में भी न आ सके, जिसका संक्रमण भी न हो सके और जिसका उत्कर्षण और अपकर्षण भी न हो सके अर्थात् जिसकी ये चारों क्रिया नहीं हो सकती हों ऐसा निकाचितकरण, ये तीन करण ८वे अपूर्वकरण गुण स्थान तक ही होते हैं।

भावार्थ – इसके ऊपर यथासंभव उदयावली आदि में प्राप्त होने की सामर्थ्य वाले ही कर्म परमाणु पाये जाते हैं। (देखो गो० क० गा० ४४१ से ४५०)

४१. मूल प्रकृतियों के बन्ध-उदय-उदीरणा-सत्त्व के भेदों के लिये हुये स्थानों के गुण स्थानों में कहते हैं—

(देखो गो० क० गा० ४५१)

स्थान—एक जीव के एक काल में जितनी प्रकृतियों का सम्भव हो सके उन प्रकृतियों के समूह का नाम स्थान है।

गुण स्थान	मूल प्रकृतियां								विशेष विवरण
	ज्ञाना०	दर्श०	वेद०	मोह०	आयु	नाम	गोत्र	अंत०	
बन्ध स्थान									
१-२-४-५-६-७ गुण० में	१	१	१	१	०	१	१	१	ये ७ प्रकार के अथवा
"	१	१	१	१	१	१	१	१	ये ८ प्रकार के कर्म को जीव बांधते हैं।
३-८-९ गुण० में	१	१	१	१	०	१	१	१	ये ७ प्रकार के ही कर्म बंध रूप होते हैं।
१०वें गुण स्थान में	१	१	१	०	०	१	१	१	ये ६ प्रकार के ही कर्मों का बंध होता है।
११-१२-१३ गुण० में	०	०	१	०	०	०	०	०	१ वेदनीय कर्म का ही बंध है।
१४वें गुण स्थान में	०	०	०	०	०	०	०	०	किसी प्रकृति का भी बंध नहीं होता है।

सूचना—इस प्रकार सर्व गुण स्थानों के मिलकर मूल प्रकृतियों के बन्ध स्थान चार हैं। (८-७-६-१ इन प्रकृतियों का बन्ध होना सम्भव है इसलिये ४ स्थान होते हैं, इन स्थानों के भुजाकार बन्ध, अल्पतर बन्ध और अवस्थित बन्ध ये ३ प्रकार के बन्ध होते हैं। चौथा अवक्तव्य बन्ध मूल प्रकृतियों में नहीं होता।

(देखो गो० क० गा० ४५१-४५२-४५३)

गुण स्थान	मूल प्रकृतियां								विशेष विवरण
	ज्ञाना०	दर्श०	वेद०	मोह	आयु	नाम	गोत्र	अंत०	
उदय-स्थान (देखो गो० क० गा० ४५४)									
१ से १० गुण० में	१	१	१	१	१	१	१	१	ये ८ मूल प्रकृतियों का उदय है।
११वें १२वें ,,	१	१	१	०	१	१	१	१	ये ७ का उदय (मोहनीय के बिना) है।
१३वें १४वें ,,	०	०	१	०	१	१	१	०	ये ४ अघातियों का उदय जानना।
उदीरणा-स्थान (देखो गो० क० गा० ४५५-४५६)									
१ से १२ गुण० में	१	१	०	१	०	०	०	१	ये ४ की उदीरणा छद्मस्थ ज्ञानी करते हैं।
१ से १० ,,	०	०	०	१	०	०	०	०	ये १ की उदीरणा सरागी करते हैं।
१ से ६ ,,	०	०	१	०	१	०	०	०	ये २ की उदीरणा प्रमादि जीव करते हैं।
१ से १३ ,,	०	०	०	०	०	१	१	०	ये ७ की उदीरणा ऊपर के सब जीव करते हैं।
१-२-४-५-६ ,,	१	१	१	१	०	१	१	१	ये २ की उदीरणा आयु की स्थिति में आवलिमात्र काल शेष रहने पर होती है।
१०वें सूक्ष्म सां० ,,	१	१	०	०	०	१	१	१	ये ५ की ऊपर के समान।
१२वें क्षीण मोह ,,	०	०	०	०	०	१	१	०	ये २ की भी ऊपर के समान जानना।
सत्त्व-स्थान (देखो गो० क० गा० ४५७)									
१ से ११ गुण० में	१	१	१	१	१	१	१	१	ये ८ ही प्रकृतियों की सत्ता है।
१२वें क्षीण मोह ,,	१	१	१	०	१	१	१	१	ये ७ ,, ,,
१३वें १४वें ,,	०	०	१	०	१	१	१	१	ये ४ ,, ,,

४२. **जीवों का उपयोग गुण स्थान में कहते हैं**— उपयोग के मुख्य दो भेद हैं। एक दर्शनोपयोग दूसरा ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग के अचक्षु दर्शन, चक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शनोपयोग ऐसे ये ४ भेद होते हैं और ज्ञानोपयोग के कुमति, कुश्रुत, कुअवधि, मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय, केवल ज्ञानोपयोग ऐसे ये ८ भेद हैं। दोनों मिलकर १२ जानना।

(देखो गो० क० गा० ४९१ और को० नं० १४६)

गुणस्थान	उपयोग संख्या	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	५	अचक्षु दर्शन १, चक्षु दर्शन १, कुमति-कुश्रुत-कुअवधि दर्शन ये ३।
२ सासादन	५	" " " " "
३ मिश्र	६	अचक्षु द० १, चक्षु द० १, अवधि दर्शन १, मति-श्रुत-अवधि ज्ञान (ये तीनों ज्ञान मिश्र होते हैं)
४ असंयत	६	अचक्षु द० १, चक्षु द० १, अवधि द० १, मति-श्रुत-अवधि ज्ञान ये ३।
५ देश संयत	६	" " " " " "
६ प्रमत्त	७	ऊपर के ६+१ मनः पर्यय ज्ञान=७ जानना।
७ अप्रमत्त	७	" " "
८ अपूर्व क०	७	" " "
९ अनिवृ०	७	" " "
१० सूक्ष्म सां०	७	" " "
११ उपशांत मोह	७	" " "
१२ क्षीण मोह	७	" " "
१३ सयोग के०	२	केवल दर्शन १, केवल ज्ञान १ (ये दोनों युगपद् जानना)
१४ अयोग के०	२	" " "

४१. गुण स्थानों की अपेक्षा से संयम बताते हैं—

१ से ४ गुण स्थानों में	—एक असंयम जानना।
५ देशसंयत ,,	—एक संयमासंयम जानना।
६ प्रमत्त ,,	—सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि ये ३ संयम जानना।
७ अप्रमत्त ,,	— ,, ,, ,, ये ३ संयम जानना।
८ अपूर्वकरण ,,	— ,, ,, ये २ संयम जानना।
९ अनिवृत्तिकरण ,,	— ,, ,, ,,
१० सूक्ष्म सांपराय ,,	— १ सूक्ष्म सांपराय संयम जानना।
११ से १४ तक ,,	— १ यथाख्यात संयम जानना। (देखो गो० क० गा० ५००)

४८. सामान्य से गुण स्थानों में सम्भवती लेश्याओं को कहते हैं—

गुण स्थान	लेश्याओं के नाम और संख्या—
१–२–३–४ गुण० में	—कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ये ६ हरेक में जानना
५–६–७ ,,	—पीत, पद्म, शुक्ल ये ३ लेश्या जानना।
८ से १३ तक ,,	—एक शुक्ल लेश्या जानना।
१४वें ,,	—(०) कोई लेश्या नहीं होते (देखो गो० क० गा० ५०३)

(१) **द्रव्य लेश्या**—वर्णनामा नामकर्म के उदय से शरीर का जो वर्ण रहता है उसे द्रव्य लेश्या कहते हैं। इस लेश्या मार्गणा में द्रव्य लेश्या का वर्णन नहीं है।

(२) **भाव लेश्या**—मोहनीय कर्म के उदय से, उपशम से, क्षय से या क्षयोपशम से जीवों में जो चंचलता होना उसी को भाव लेश्या कहते हैं।

(३) **कौन सा नरक में कौन सा भाव लेश्या रहता है यह बताते हैं—**

१ले नरक के	पहले इन्द्र कबील में	कापोत लेश्या का	जघन्य अंश	रहता है—
३रे ,,	द्विचरम ,,	,, ,,	उत्कृष्ट अंश	,,
३रे ,,	अंतिम ,,	नील लेश्या का	जघन्य अंश	,,
५वें ,,	द्विचरम ,,	,, ,,	उत्कृष्ट अंश	,,
५वें ,,	अंतिम ,,	कृष्ण ,,	जघन्य अंश	,,
७वें ,,	अवधिस्थान ,,	,, ,,	उत्कृष्ट अंश	,,

जघन्य और उत्कृष्ट इन दोनों के बीच में के लेश्या का अंश मध्यम जानना।

(देखो गो० क० गा० ५४६)

४५. जीव किसी एक पर्याय को छोड़कर (मरकर) दूसरे किसी पर्याय में उत्पन्न होना (जन्म लेना) यथा-सम्भव सिखाते हैं।

१. नरकगति नारकी जीव मरकर कहां-कहां उत्पन्न होते हैं ? समाधान रत्नप्रभा, शर्करप्रभा, बालुकप्रभा इन तीन पृथ्वी वाले नारकी जीव मरकर गर्भज संज्ञी, पंचेन्द्रिय, पर्याप्त, कर्म भूमिया मनुष्य अथवा तिर्यंचपर्याय में उत्पन्न होते हैं। परन्तु वे चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण, प्रतिनारायण नहीं होते।

विशेष—अढ़ाई द्वीप में १५ कर्म भूमियां हैं उनमें तिर्यंच अथवा मनुष्य और लवणोदधि, कालोदधि समुद्रों में और स्वयं प्रभाचल पर्वत के आगे अर्ध स्वयं भूरमण-द्वीप में और सम्पूर्ण स्वयं भूरमण समुद्र में और उसके आगे मध्यलोक के चारो कोनों में धर्मा आदि तीन पृथ्वी वाले नारकी जीव जलचर, स्थलचर और नभचर तिर्यंच हो सकते हैं।

अढ़ाई द्वीप में ३० भोगभूमिया और ९६ कुभोग-भूमिया के तिर्यंच या मनुष्य में से कोई ऊपर के तीन पृथ्वी में नारकी होकर उत्पन्न नहीं होते। उसी तरह मानुषोत्तर पर्वत और स्वय प्रभाचल इन दोनों के असंख्यात द्वीप-समुद्र में भी उत्पन्न नहीं होते।

४थे पंकप्रभा, ५वें धूमप्रभा ६वें तमःप्रभा इन तीन पृथ्वी वाले नारकी जीव मरकर तीर्थंकरादि के सिवाय पूर्वोक्त तिर्यंच अथवा मनुष्यपर्याय में उत्पन्न होते हैं।

३रे बालुका पृथ्वी तक के नारकी जीव तीर्थंकर हो सकते हैं। इनके आगे के अर्थात् ४थे पृथ्वी वाले से लेकर आगे के नारकी जीव तीर्थंकर नहीं हो सकते।

४थे पृथ्वी तक के नारकी जीव चरम शरीरी हो सकते हैं।

५वें पृथ्वी तक के नारकी जीव सकलसंयमी हो सकते हैं।

६वें पृथ्वी तक के नारकी जीव देशसंयत गुणस्थान तक तिर्यंच अथवा मनुष्य हो सकते हैं। परन्तु इतनी विशेषता है कि—

७वें नरक वाले जीव पूर्वोक्त तिर्यंच (मिथ्यादृष्टि) पर्याय में ही उत्पन्न होते हैं। (देखो गो० क० गा० ५३८)।

७वें नरक वाले जीव ३रे या ४थे गुणस्थानवर्ती अपने-अपने गुणस्थानों में मनुष्यद्विक तथा उच्च गोत्र इनको नियम से बांधता है। परन्तु वहां पर (७वीं पृथ्वी में) उत्पन्न हुए सासादन मिश्र-असंयत गुणस्थान वाले जीव जिस समय मरण को प्राप्त होते हैं उस समय मिथ्यात्व गुणस्थान को प्राप्त होकर ही मरण करते हैं। (देखो गो० क० गा० ५३९)।

२. तिर्यंचगति तिर्यंच जीव मरण करके कहां कहां उत्पन्न होते ? समाधान—तिर्यंच गति में बादर या सूक्ष्म, पर्याप्त या अपर्याप्त, ऐसे अग्निकायिक अथवा वायुकायिक ये दोनों मरण करके नियम से तिर्यंच गति में ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु भोगभूमि में पंचेन्द्रिय तिर्यंच नहीं होते। तथापि वे बादर, सूक्ष्म पर्याप्त, अपर्याप्त, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, साधारण वनस्पति, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रतिष्ठित, अप्रतिष्ठित, प्रत्येक वनस्पति, द्वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी, संज्ञीपंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होते हैं।

शेष एकेन्द्रिय अर्थात् पृथ्वीकायिक, जलकायिक और वनस्पतिकायिक ये बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त इन सब अवस्थाओं वाले नित्यनिगोद, इतरनिगोद, वनस्पति और पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रतिष्ठित, अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति तथा इसी प्रकार पर्याप्त, अपर्याप्त द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय ये सब जीव मरकर अग्नि और वायु-कायिक छोड़कर शेष सब तिर्यंचों में उत्पन्न होते हैं और तीर्थंकरादि त्रेसठ शलाका (पदविधारक) पुरुषों के बिना शेष मनुष्यपर्याय में भी उत्पन्न होते हैं। नित्य और इतरनिगोद में के सूक्ष्म जीव मरण मरके मनुष्य हो जाय तो वे सम्यक्त्व और देशसंयम ग्रहण कर सकते हैं। परन्तु सकल संयम नहीं ग्रहण कर सकते हैं।

असंज्ञीपंचेन्द्रिय जीव मरण करके पूर्वोक्त तिर्यंच अथवा मनुष्यगति में उत्पन्न होता है। तथा धर्मा नाम वाले पहले नरक में और देवयुगल में अर्थात् भवनवासी या व्यंतर देवों में उत्पन्न होता है। अन्य देव अथवा नारकी नहीं होता। क्योंकि असंज्ञी जीवों की आयु का उत्कृष्ट स्थिति बन्ध पल्य के असंख्यातवां भाग से अधिक नहीं हो सकता है। (देखो गो० क० गा० ५४०)।

संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी असंज्ञी पंचेन्द्रिय की तरह

पूर्वोक्त गतियों में, सब नारकी पर्यायों में, सब भोगभूमिया पर्यायों में और अच्युत स्वर्गपर्यन्त सब देवों में उत्पन्न होता है। (देखो गो० क० गा० ५४१)।

३. मनुष्यगति—मनुष्य जीव मरकर कहां-२ उत्पन्न होते हैं ? समाधान—कर्मभूमि के पर्याप्त मनुष्य मरण करके चारों ही गतियों में, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच की तरह सब गतियों में उत्पन्न होता है। उसी तरह अहमिन्द्र भी हो सकता है। तथा सिद्ध स्थान मोक्ष में प्राप्त होते हैं।

अपर्याप्त मनुष्य कर्मभूमि के तिर्यंचों में उसी तरह तीर्थंकरादि पद छोड़ कर सामान्य मनुष्यों में जन्म लेता है

२० भोगभूमि के तिर्यंच और मनुष्य और असंख्यात द्वीप समुद्र में के जघन्य भोगभूमि के तिर्यंच यदि सम्यग्दृष्टि हों तो सौधर्म और ईशानस्वर्ग में जन्म लेते हैं और उनका गुणस्थान यदि पहले या दूसरे हों तो भवनत्रिक देवों में जन्म होता है।

कुभोग भूमि के मनुष्य भवनत्रिक देवों में जन्म लेते हैं।

चरम शरीरी मनुष्य मोक्ष जाते हैं।

आहारक शरीर सहित प्रमत्त गुणस्थान वाले मरण करके कल्पवासी देवों में उत्पन्न होते हैं। (देखो गो० क० गा० ५४१–५४२–५४३)।

४. देवगति—देव मर कर कहां-कहां उत्पन्न होते हैं। समाधान - सब देव मरण करके सामान्य से संज्ञी पंचेन्द्रिय कर्मभूमिया तिर्यंच तथा मनुष्य पर्याय में और प्रत्येक वनस्पतिकाय, पृथ्वीकाय, जलकाय बादर पर्याप्त जीवों में उत्पन्न होते हैं।

विशेष भवनत्रिक देव मरकर *सौधर्म-ईशान स्वर्ग* के देवों की तरह जन्म लेते हैं। वे तीर्थंकरादि त्रेसठ शलाका पुरुषों में जन्म नहीं लेते, अन्य मनुष्यों में ही जन्म लेते है।

ईशान्य स्वर्ग पर्यन्त के देव मरकर पूर्वोक्त मनुष्य तिर्यंचों में तथा बादर पर्याप्त, पृथ्वी, जल, प्रत्येक वनस्पति, एकेन्द्रिय पर्याय में उत्पन्न होते हैं।

शतार-सहस्रारपर्यंत स्वर्गों वाले देव भी मर कर पूर्वोक्त संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य तिर्यंचों में उत्पन्न होते हैं। अर्थात् १५ कर्मभूमि में मनुष्य और लवणोदधि, कालोदधि, स्वयंभूरमण के अपराध द्वीप, स्वयंभूरमण समुद्र इनमें संज्ञी, पर्याप्त जलचर, स्थलचर, नभश्चर, तिर्यंच भी होते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि पर्यन्त के देव मरकर १५ कर्मभूमि में मनुष्य में ही जन्म लेते हैं। (देखो गो० क० गा० ५४२-५४३)।

४६. कौन और किस तरह का मिथ्यादृष्टि देवगति में कौन सा देव उत्पन्न हो सकता है ? समाधान—

(१) भोगभूमि में मिथ्यादृष्टि और तापसी ज्यादा से ज्यादा भवनत्रिक देवों में उत्पन्न होते हैं।

(२) भरत, ऐरावत, विदेह के मनुष्य और तिर्यंच और स्वयंभूरमण अर्धद्वीप और स्वयंभूरमण समुद्र लवणोदधि, कालोदधि समुद्र के जलचर, स्थलचर नभश्चर संज्ञी तिर्यंच पर्याप्त भद्रमिथ्यादृष्टि और उपशमि (शांत परिणामी) ब्रह्मचर्यधारक, वानप्रस्थाश्रमी और एक जटी, शतजटी, सहस्रजटी नग्न, कांजीभक्षक, कन्दमूलपत्र पुष्पफल भक्षक, अकामनिर्जरा करने वाले, एकदंडी, त्रिदंडी और बालतप करने वाले ये सब अपने अपने विशुद्धता के अनुसार भवनत्रिक से लेकर अच्युत स्वर्ग तक उत्पन्न होते हैं।

(३) द्रव्यलिंगी जैनमुनि (मिथ्यादृष्टि) नवग्रैवेयक तक जन्म लेते हैं। (देखो गो० क० गा० ५४८)

४७. कौन कौन से जीव कौन से नरक में जा सकते हैं ? समाधान—१ले नरक में–मिथ्यादृष्टि, कर्मभूमिज, छः ही संहनन के धारक, असंज्ञी, पंचेन्द्रिय, *सरीसृप (सर्प विशेष होना चाहिये) पक्षी, सर्प, सिंह,* स्त्री, मत्स्य, मनुष्य यह जीव जाते हैं

२रे नरक में असंज्ञी पंचेन्द्रिय छोड़कर शेष ऊपर के सब जीव जाते हैं।

३रे नरक में—असंज्ञी पंचेन्द्रिय और सरीसृप छोड़कर शेष ऊपर के सब जीव जाते हैं।

४थे नरक में—असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन छोड़कर

शेष पांच संहनन धारी सर्पापासून मनुष्यापर्यंतचे, जीव जाते हैं।

५वें नरक में—सिंह से लेकर मनुष्य तक के जीव जाते हैं।

६वें नरक में—प्रथम के ४ संहनन के धारी स्त्री, मत्स्य और मनुष्य ये जीव जाते हैं।

७वें नरक में—वज्रवृषभनाराच संहनन धारी मत्स्य और मनुष्य ये जीव जाते हैं। देखो गो० क० गा० ५४९)

४८. कौन से गुण-स्थान में कौन सा सम्यक्त्व रहता है यह बताते हैं—

१ले गुण-स्थान में	१. मिथ्यात्व जानना।
२रे ,,	१. सासादन ,,
३रे ,,	१. मिश्र ,,
४ से ७ ,,	३. उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक ये ३ जानना।
८से ११ ,,	२. औपशमिक, क्षायिक ये २ जानना।
१ से १४ ,,	१. क्षायिक सम्यक्त्व जानना। (देखो गो० क० गा ५०६)

४९. **क्षायिक सम्यक्त्व**—दर्शन मोहनीय कर्म के क्षपण का प्रारम्भ कर्मभूमि के मनुष्य, तीर्थंकर या केवली या श्रुत केवलीयों के पादमूल में (सानिध्य) होता है और निष्ठापन (पूर्णता) वही होगा अथवा यदि मरण जाय तो चारों गति में अर्थात् वैमानिक देवों में, भोगभूमि के मनुष्य या तिर्यंच अवस्था में, अथवा प्रथम नरक में होगा। (देखो गो० क० गा० ५५०)

५०. **वेदक सम्यक्त्व**—४, ५, ६, ७ इन गुण-स्थानवर्ती द्वितीयोपशम सम्यक्त्व धारी मनुष्य मर कर वैमानिक देव में उत्पन्न होता है। और वहां उसको द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल पूर्ण होने के बाद वेदक सम्यक्त्व प्राप्त होता है।

कर्मभूमि के प्रथमोपशम सम्यक्त्वी मनुष्य उपशम सम्यक्त्व का काल पूर्ण होने के बाद सम्यक्त्व मोहनीय (सम्यक्त्व प्रकृति के उदय से वेदक सम्यक्त्व होता है।

कर्मभूमि सादि मिथ्यादृष्टि मनुष्य मिथ्यात्व के उदय का अभाव करके सम्यक्त्व मोहनीय के उदय से असंयतादि चार गुण-स्थानों में (४थे से ७वें गुण-स्थान में) वेदक सम्यग्दृष्टि होती है। (देखो गो० क० गा० ५५०)

५१. गुण-स्थान में चढ़ने और उतरने का क्रम बताते हैं :—

(देखो गो० क० गा० ५५१, ५५७, ५५८, ५५९ और को० नं० १५९)

कस गुण-स्थान से	किस गुण-स्थान में जाता है ?	स्थान संख्या
१. मिथ्यात्व	३, ४, ५, ७	४
२. सासादन	१ मिथ्यात्व जानना	१
३. मिश्र	पड़े तो १ले में, चढ़े तो ४थे में जानना	२
४. असंयत	पड़े ३, २, १ चढ़े तो ५, ७	५
५. देशसंयत	पड़े तो ४, ३, २, १ चढ़े तो ७	५
६. प्रमत्त	पड़े तो ५, ४, ३, २, १ चढ़े तो ७	६
७. अप्रमत्त	पड़े तो ६ चढ़े तो ८ (मरण हो तो ४थे गुण०)	३

८. अपूर्वकरण	उपशम श्रेणी	पड़े तो ७ चढ़े तो ९ (मरण हो तो ४थे गुण०)	३
९. अनिवृत्तिकरण		,, ८ ,, १० ,, ,,	३
१०. सूक्ष्म सांपराय		,, ९ ,, ११ ,, ,,	२
११. उपशांत मो०		,, १० (नहीं चढ़ता) ,, ,,	२
८. अपूर्वकरण	क्षपक श्रेणी	९वे गुण०	०
८. अनिवृत्तिकरण		१० ,,	०
१०. सूक्ष्म सांपराय		१२ ,,	०
१२. क्षीणमोह०		१३ ,,	०
१३. संयोग केवली		१४ ,,	०
१४. अयोग केवली		सिद्धावस्था (मोक्ष) में जाता है।	०

५२. जीव किस गुण-स्थान में मरण करके किस गति में जाता है यह बताते हैं।

(देखो गो० क० गा० ५५९, को० नं० १६१)

गुण-स्थान	गति
१. मिथ्यात्व में मर कर	नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव इन चारों गतियों में जाता है।
२. सासादन में ,,	नरक गति बिना शेष तीन गतियों में जाता है।
३. मिश्र गुण-स्थान में	मरण नहीं होता।
४. असंयत में मर कर	नरकादि चारों गतियों में जाता है।
५. देशसंयत में ,,	देवगति में जाता है।
६. प्रमत्त गुण० में मर कर	,, ,,
७. अप्रमत्त ,, ,,	,,
८. अपूर्वकरण ,, ,,	,, ,, (क्षपक श्रेणी में मरण नहीं होता)
९. अनिवृत्ति० ,, ,,	,, ,, ,,
१०. सूक्ष्म सां० ,, ,,	,, ,, ,,
११. उपशांतमोह ,, ,,	,, सर्वार्थसिद्धि में अहमीन्द्र होता है।
१२. क्षीण मोह गुण० में	मरण नहीं होता
१३. सयोग केवली गुण० में	,,
१४. अयोग केवली के जीव	सिद्ध गति गति में (मोक्ष) जाता है।

५३. किस अवस्था में जीव मरण करता नहीं यह बताते हैं—

१. मिश्र गुण स्थानवर्ती जीव, २—आहारक मिश्रकाययोगी जीव, ३. निर्वृत्य पर्याप्त मिश्रकाययोगी जीव, ४. क्षपक श्रेणी धारक जीव, ५. उपशम श्रेणी चढ़ने वाला जीव (८वें अपूर्वकरण गुण स्थान के प्रथम भाग में) ६. प्रथमोपशम सम्यक्त्वी जीव, ७. सातवें नरक में २रे ३रे ४थे गुण स्थान धारी जीव, ८. अनन्तानुबन्धी के विसंयोजन किया हुआ जीव, यदि मिथ्यात्व गुण स्थान में लौटकर आया हो तो एक अन्तर्मुहूर्त तक नहीं मरण करता है, ९. दर्शनमोह क्षपक कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि होने तक मरण नहीं करता है। (देखो गो० क० गा० ५५०, ५६०, ५६१)।

५४. बद्धायु कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि मरकर चारों गतियों में किस तरह जाता है ? यह बताते हैं— दर्शनमोहनीय कर्म के क्षपण करने का प्रारम्भ करने वाला जीव को कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि कहते हैं। कृतकृत्य वेदक का काल अन्तर्मुहूर्त है। उस अन्तर्मुहूर्त के चार भाग करना चाहिये यदि प्रथम भाग में मरण होय तो देव अथवा मनुष्य गति में जायेगा। यदि २रे भाग में मरे तो देव, मनुष्य, अथवा मनुष्यगति में जायेगा, यदि ३रे भाग में मरे तो देव, तिर्यंच अथवा नारक होगा। (देखो गो० क० गा० ५६२)

५५. नाम कर्म के उदय स्थानों के पांच नियत काल हैं।

(देखो गो० क० गा० ५८३–५८४–५८५ को० नं० १६७)

नियत काल का वर्णन	काल मर्यादा
१—विग्रहगति या कार्माण शरीर में (केवली समुद्घात की अपेक्षा)	१, २, ३, समय
२—मिश्र शरीर में (शरीर पर्याप्ति पूर्ण न होने तक)	एक अन्तर्मुहूर्त जानना
३—शरीर पर्याप्ति में (शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने पर जब तक श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती तब तक)	"
४—श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति में (श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण होने पर जब तक भाषा पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती तब तक)	"
५—भाषा पर्याप्ति में भाषा पर्याप्ति पूर्ण होने पर अवशेष आयु पर्यंत भाषा पर्याप्ति काल है)	भुज्यमान आयु में— ऊपर के चारों का काल कम करने से शेष काल जानना।

ऊपर के पांच नियत कालों के स्वामी निम्न प्रकार जानना—

१. लब्ध्यपर्याप्तक जीवों में ऊपर के पहले के दो काल रहते हैं।

२. एकेन्द्रिय जीवों में ऊपर के पहले के चार काल रहते हैं।

३. त्रस जीवों में ऊपर के पांचों ही काल रहते हैं।

४. आहारक शरीर में ऊपर के पहले के काल छोड़ कर शेष आगे के ४ काल जानना।

५६. समुद्घात केवली के काल का प्रमाण —

समुद्घात केवली के कार्माण, औदारिक मिश्र, औदारिक शरीर पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति काल। इस प्रकार पांच काल क्रम से अपने आत्म प्रदेशों का संकोच करने (समेटने) के समय ही होते हैं और प्रसरण अर्थात् विस्तार (फैलाने के समय तीन ही काल हैं।

(१) दंड समुद्घात के करने (प्रसरण में) में अथवा संकोचन (समेटने रूप) में अर्थात् दो समय में औदारिक शरीर पर्याप्ति काल है।

(२) कपाट समुद्घात के करने और समेटने रूप युगल में औदारिक मिश्र शरीर काल है।

(३) प्रतर समुद्घात के करने और संकोचन में और लोक पूर्ण समुद्घात में कार्माण काल है।

इस प्रकार प्रदेशों के विस्तार करने पर शरीर पर्याप्ति काल, मिश्र शरीर काल, कार्माण काल ये ३ ही काल होते हैं ऐसा जानना चाहिये, किन्तु श्वासोच्छ्वास और भाषापर्याप्ति समेटते समय ही होती है, क्योंकि मूल शरीर में प्रवेश करते समय से ही संज्ञी पंचेन्द्रिय की तरह क्रम से पर्याप्ति पूर्ण करता है इसलिये वहां (समुद्घात केवली के) पांचों काल सभव हैं।

समुद्घात केवली के ८ समय और योग के कोष्टक नं० १६८।

प्रसरण विस्तार	योग
(१) दंड समुद्घात	औदारिक काय योग
(२) कपाट ,,	औदारिक मिश्र काय योग
(३) प्रतर ,,	कार्माण का योग
(४) लोक पूर्ण ,,	कार्माण काय योग
संकोचन समेटने रूप	**योग**
(५) प्रतर	कार्माण काय योग
(६) कपाट	औदारिक मिश्रकाय योग
(७) दंड	औदारिक काय योग
(८) मूल शरीर प्रमाण	औदारिक काय योग

(देखो गो० क० गा० ५८६-५८७)

५७. उद्वेलना स्थानों में जो विशेषता है उसको कहते हैं—

मिथ्यात्व गुण स्थान में जिन प्रकृतियों के बंध की अथवा उदय की वासना भी नहीं ऐसी सम्यक्त्व आदि गुण से उत्पन्न हुई सम्यक्त्व मोहनीय (सम्यक्त्वप्रकृति) १, मिश्र मोहनीय (सम्यङ् मिथ्यात्व) १, आहारकद्विक २, इन चार प्रकृतियों की तथा शेष ८ उद्वेलन प्रकृतियों की उद्वेलना यह जीव यहीं मिथ्यात्व गुण स्थान में करता है, (देखो गो० क० गा० ४१३ से ४१५ और ६१२)

(१) जो उद्वेलन प्रकृति १३ हैं उन प्रकृतियों के उद्वेलन का क्रम कहते हैं।

आहारकद्विक २ अप्रशस्त प्रकृति है इसलिये चारों गति के मिथ्यादृष्टि जीव पहले इन दोनों की उद्वेलना करते हैं। पीछे सम्यक्त्व प्रकृति की, उसके बाद सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति की उद्वेलना करते हैं, उसके बाद शेष देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियिकद्विक २, उच्चगोत्र १, मनुष्यद्विक २, इन ९ प्रकृतियों की उद्वेलना एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीव करते हैं। (देखो गो० क० गा० ६१३)

(२) उस उद्वेलना के अवसर का काल कहते हैं—

वेदकसम्यक्त्व योग्य काल में आहारकद्विक २ की उद्वेलना करता है, उपशम काल में सम्यक्त्व प्रकृति वा सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति की उद्वेलना करता है और एकेन्द्रिय तथा विकलेन्द्रिय जीव वैक्रियिक षट्क की (देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियकद्विक २) उद्वेलना करता है। (देखो गो० क० गा० ६१४)

(३) इन दोनों कालों का लक्षण कहते हैं—

सम्यक्त्व प्रकृति और सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति इन दो प्रकृतियों की सत्ता रूप स्थिति त्रस के पृथक्त्व सागर प्रमाण शेष रहे और एकेन्द्रिय के पल्य असंख्यात भाग कम एक सागर प्रमाण शेष रह जावे वह 'वेदक योग्य काल' है और उससे भी जिसकी सत्ता रूप स्थिति कम हो जाय तो वह 'उपशम योग्य काल' कहा जाता है। (देखो गो० क० गा० ६१५)

(४) तेजस्कायिक और वायु कायिक जीवों की उद्वेलन प्रकृतियां—

मनुष्यद्विक २ और उच्च गोत्र १, इन तीन प्रकृतियों की उद्वेलना तेजस्कायिक और वायुकायिक इन जीवों में होती है और उस उद्वेलना के काल का प्रमाण जघन्य अथवा उत्कृष्ट पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण है, अर्थात् इतने काल में उन तीन प्रकृतियों के निषेकों की उद्वेलना हो जायेगी, पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जिसकी स्थिति है, उस सत्ता रूप स्थिति की उद्वेलना एक अंतर्मुहूर्त काल में करता है, तो संख्यात सागर प्रमाण मनुष्यद्विकादिकी सत्ता रूप स्थिति की उद्वेलना कितने काल में करेगा? इस त्रैराशिक विधि से पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण काल में ही कर सकता है, ऐसा सिद्ध होता है। (देखो गो० क० गा० ६१६-६१७)

५८. सम्यक्त्वादिक की विराधना (छोड़ देना) कितनी बार होती है यह कहते हैं—

(१) प्रथमोपशमसम्यक्त्व, वेदक (क्षयोपशमिक) सम्यक्त्व, देश संयम और अनंतानुबंधी कषाय के विसंयोजन की विधि—इन चारों अवस्था को यह एक जीव उत्कृष्टपने अर्थात् अधिक से अधिक पल्य के असंख्यातवें भाग समयों का जितना प्रमाण है उतनी बार छोड़-छोड़ के पुनः पुनः ग्रहण कर सकता है, पीछे नियम से सिद्ध पद को ही पाता है। (देखो गो० क० गा० ६१८)

(२) उपशम श्रेणी पर एक जीव अधिक से अधिक चार बार ही चढ़ सकता है, पीछे कर्मों के अंशों को नक्ष

करता हुआ क्षपक श्रेणी चढ़कर वह मोक्ष को ही जाता है और—

सकल संयम को उत्कृष्टपने से अर्थात् अधिक से अधिक ३२ बार ही धारण कर सकता है, पीछे मोक्ष को प्राप्त होता है। (देखो गो० क० गा० ६१९)

विशेष—'मिच्छाहाराद्गुभयं' यह गाथा सम्यक्त्व प्रकरण में आ गई है, मिथ्यात्व गुण स्थान में एक जीव की अपेक्षा तीर्थंकर प्रकृति १ और आहारकद्विक २ इन दोनों सहित (युगपत् सत्ता) स्थान नहीं है, तीर्थंकर सहित या आहारकद्विक सहित ही सत्ता होती है। परन्तु नाना जीव की अपेक्षा दोनों का वहां सत्व पाया जाता है, क्योंकि जिनके तीर्थंकर और आहारकद्विक इन दोनों कर्मों की सत्ता युगपयत् रहती है उनके मिथ्यात्व गुणस्थान नहीं होता, सासादन गुण स्थान में नाना जीवों की अपेक्षा से भी तीर्थंकर और आहारकद्विक सहित सत्व स्थान नहीं नहीं है कारण जिस जीव में तीर्थंकर या आहारकद्विक इनकी सत्ता हो तो उस जीव के मिथ्यात्व रहित अनंतानुबंधी का उदय नहीं होगा, मिश्र गुण स्थान में तीर्थंकर प्रकृति और आहारकद्विक इन प्रकृतियों की सत्ता नहीं है।

५९. आयुकर्म के बंध उदय सत्ता को कहते हैं—

१. आयु के बंध स्वरूप को कहते हैं—देव और नारकी अपनी भुज्यमान आयु के अधिक से अधिक छः महीने शेष रहने पर मनुष्यायु अथवा तिर्यंचायु का ही बंध करते हैं।

(अ) सातवीं पृथ्वी के नारकी तिर्यंच आयु का ही बंध करते हैं, कर्म भूमिया मनुष्य और तिर्यंच अपनी भुज्यमान आयु के तीसरे भाग के शेष रहने पर चारों आयुओं में से योग्यतानुसार किसी भी एक को बांधता है।

(आ) एकेन्द्रिय और विकलत्रय जीव ऊपर के समान मनुष्यायु अथवा तिर्यंचायु इन दोनों में से किसी एक को बांधते हैं, परन्तु तेजस्कायिक और वायुकायिक जीव तिर्यंचायु का ही बंध करते हैं।

भोग भूमिया जीव (मनुष्य और तिर्यंच) अपनी आयु के ६ महीने बाकी रहने पर देवायु का ही बंध करते हैं। (देखो गो० क० गा० ६३९-६४०)

२. उदय और सत्ता स्वरूप के कहते हैं—नारकी, तिर्यंच, मनुष्य देव इन जीवों के अपनी अपनी गति की एक आयु का तो उदय ही होता है।

परभव की आयु का भी बंध हो जावे तो उनके उदय रूप आयु सहित दो आयु की (एक बध्यमान और एक भुज्यमान) सत्ता होती है और जो परभव की आयु का बंध न हो तो एक ही उदयागत भुज्यमान आयु की सत्ता रहती है, ऐसा नियम में जानना। (देखो गो० क० गा० ६४१)

३. आयु बंध के आठ अपकर्षण त्रिभाग काल—एक जीव के एक भव में चार आयु में से एक ही आयु बंध रूप होती है और सो भी वह योग्य काल में आठ बार ही बंधती है तथा वहां पर भी वह सब जगह आयु का तीसरा भाग अवशिष्ट रहने पर ही बंधती है, अर्थात् भुजमान आयु का तीसरा भाग अवशिष्ट रहने पर ही बंधती है इसी तरह आगे भी तीसरा भाग शेष रहने पर आठ बार आयु बंध हो सकता है।

सूचना—भुज्यमान आयु का तीसरा भाग बाकी रहे तो वह काल पहली बार आयुर्बंध के लिये योग्य होती है यदि उस समय आयुर्बंध न हो तो आगे के दूसरे त्रिभाग में हो सकती है इसी तरह आयुर्बंध के अपकर्षण काल (अवसर) आठ बार आ सकते हैं। (देखो गो० क० गा० ६४२)

४. पूर्व कथित आठ अपकर्षणों (त्रिभागों में) पहली बार के बाद आगे के द्वितीयादि अपकर्षण काल में जो

पहले बार में आयु बन्धी थी उस बध्यमान आयु की स्थिति की वृद्धि वा हानि अथवा अवस्थिति (कायम) रह सकती है और आयु के बंध करने पर जीवों के परिणामों के निमित्त से उदय प्राप्त (भुज्यमान) आयु का 'अपवर्तन घात' (कदली घात, घट जाना) भी होता है।

भावार्थ- आठ अपकर्षणों में सभी के अन्दर आयु का बन्ध हो ही। ऐसा नियम नहीं है। जहां पर आयु बन्ध के निमित्त मिलते हैं वही बन्ध होता है तथा जिस अपकर्षण में जिस आयु का बन्ध हो जाता है उसके अनन्तर उसी आयु का बन्ध होता है, परन्तु परिणामों के अनुसार उसकी (बध्यमान आयु की) स्थिति कम ज्यादे या अवस्थित हो सकती है तथा उसके उदय आने पर अर्थात् भुज्यमान अवस्था में उसका कदली घात भी हो सकता है। (देखो गो० क० गा० ६४३)

सूचना—जैसे १६वें स्वर्ग में किसी को २२ सागर स्थिति का आयुबंध हुआ हो और उसके दूसरे अपकर्षण काल में परिणामों की विशुद्धि कम होने से १०वें स्वर्ग की १८ सागर से कुछ अधिक स्थिति रह सकती है।

५. आयु कर्म के भंग का स्वरूप—इस प्रकार बंध होने पर अथवा बंध नहीं होने पर व उपरत बंध अवस्था में एक जीव के एक पर्याय में एक एक के प्रति तीन तीन भंग नियम से होते हैं।

बंध - वर्तमान काल में परभव की आयुबंध हो रहा हो वहां पहला बंध रूप भंग जानना। वहां बंध आगामी आयु का १, उदय भुज्यमान आयु का १, और सत्व भुज्यमान आयु का १, व बध्यमान आयु का १ इस प्रकार तीन भंग (बंध १, उदय १, सत्व २) होते हैं।

अबंध—आगामी आयु का बंध जहां भूतकाल में भी बंध हुआ हो और वर्तमान काल में न हो रहा हो वहां दूसरा अबंध रूप भंग जानना। वहां उदय और सत्व केवल एक भुज्यमान आयु का ही रहता है। इस प्रकार तीन भंग (बंध ०, उदय १, सत्व १) जानना।

उपरत बंध—आगामी आयु बंध जहां भूतकाल में हुआ हो और वर्तमान काल में न हो रहा हो वहां उपरतबन्ध तीसरा भंग होता है। वहां उपरतबन्ध ०, उदय भुज्यमान आयु १ सत्व बध्यमान आयु १ और भुज्यमान आयु १ ये २ रहते हैं। इस प्रकार तीन भंग (उपरत बंध ०, उदय १, सत्व २) जानना। (देखो गो० क० गा० ६४४)

६०. आस्रव के मूल भेद चार हैं मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग, इन चार के उत्तर भेद क्रम से ५, १२, २५ और १५ ये सब मिलकर ५७ होते हैं।

आस्रव—जिसके द्वारा कार्माण वर्गणारूप पुद्गल स्कंध कर्मपने को प्राप्त हो उसका नाम आस्रव है। वह आत्मा के मिथ्यात्वादि परिणाम रूप हैं, उनमें से—

(१) मिथ्यात्व—एकांत, विनय, संशय, विपरीत, अज्ञान ऐसे ५ प्रकार का है।

(२) अविरति—पांच इन्द्रिय तथा छट्ठामन इनको वशीभूत नहीं करने से छः भेद रूप और पृथ्वीकायादि पांच स्थावर काय तथा एक त्रसकाय इनकी दया न करने से छः भेद रूप इस प्रकार १२ प्रकार का है।

(३) कषाय—अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ ४ अप्रत्याख्यान कषाय ४, प्रत्याख्यान कषाय ४, संज्वलन कषाय ४ ये १६ कषाय तथा हास्य-रति, अरति-शोक, भय-जुगुप्सा, नपुंसक, स्त्री, पुरुषवेद ये नव नोकषाय इस तरह सब मिलकर २५ प्रकार का है।

(४) योग—मनोयोग सत्य-असत्य-उभय अनुभय ये ४, इसी तरह वचनयोग ४ और काययोग ७ (औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियिक काययोग, वैक्रियिक मिश्रकाययोग, आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग और कार्माण काययोग ये ७) इस तरह १५ प्रकार का है।

इस प्रकार सब मिलकर आस्रव के ५+१२+२५+१५=५७ भेद होते हैं। (देखो गो० क० गा० ७८६)

(१ मूल आस्रवों को गुण स्थानों में बताते हैं।

(देखो गो० क० गा० ७८७–७८८ और को० नं० २१७)

गुणस्थान	आस्रव संख्या	विशेष विवरण
१ मिथ्यात्व	४	मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग ये ४ आस्रव जानना।
२ सासादन	३	अविरति, कषाय, योग ये ३ जानना।
३ मिश्र	३	" " " "
४ असंयत	३	" " " "
५ देश संयत	३	अविरति, कषाय, योग, यहां संयतासंयत मिश्रभाव रहता है।
६ प्रमत्त	२	कषाय और योग ये २ जानना।
७ अप्रमत्त	२	" " "
८ अपूर्वकरण	२	" " "
९ अनिवृत्तिकरण	२	" " "
१० सूक्ष्म सांपराय	२	" " "
११ उपशांत मोह	१	१ योग जानना।
१२ क्षीण मोह	१	"
१३ सयोग केवली	१	"
१४ अयोग केवली	०	०

(२) गुण स्थानों में ५७ उत्तर आस्रव के अनुदय, उदय, व्युच्छित्ति दिखलाते हैं। इसमें केशव-वर्णी कृत चार गाथा भी आये हैं (देखो गो० क० गा० ७८६-७६० और को० नं० २१८)

गुण स्थान	अनुदय संख्या	अनुदयगत आस्रवों का नाम	उदयगत आस्रव संख्या	आस्रव व्युच्छि० संख्या	व्युच्छित्ति प्राप्त आस्रवों का नाम
१ मिथ्यात्व	२	आहारक काययोग १, आहारक मिश्रकाययोग १ ये २	५५	५	मिथ्यात्व ५ जानना
२ सासादन	७	२+५ मिथ्यात्व ये ७ जानना	५०		अनन्तानुबन्धी कषाय ४
३ मिश्र	१४	११+३ (औ० मिश्र-काययोग १, वै०मिश्र० १ कार्माण काययोग १) ये १४ जानना	४३	०	०
४ असंयत	११	१४—३ (मिश्र के ३ योग) = ११ अर्थात् ७+४=११ जानना	४६	६	अप्रत्याख्यान कषाय ४, वैक्रियिक काययोग १, वै० मिश्र० १, कार्माण योग १, औ० मिश्र० १, त्रसहिंसा १, ये ६ जानना
५ देशसंयत	२०	११+६=२० जानना	३७	१५	प्रत्याख्यान कषाय ४, अविरति ११ ये १५
६ प्रमत्त	३३	२०+१५=३५—२ (आहारक) =३३ जानना		२	आहारक काययोग १, आहारक मिश्र० १, ये २
७ अप्रमत्त	३५	३३+२ (आहारक) =३५	२२	०	०
८ अपूर्वकरण	३५	३५ ऊपर के समान जानना		६	हास्यादि नोकषाय ६
९ अनिवृत्तिकरण भाग १	४१	३५+६=४१ जानना	१६	१	नपुंसक वेद १,

भाग २	४२	४१+१=४२ ,,	१५	१	स्त्रीवेद १
भाग ३	४३	४२+१=४३ ,,	१४	१	पुरुष वेद १
भाग ४	४४	४३+१=४४ ,,	१३	१	संज्वलन क्रोध १
भाग ५	४५	४४+१=४५ ,,	१२	१	संज्वलन मान १
भाग ६	४६	४५+१=४६ ,,	११	१	संज्वलन माया १
भाग ७	४७	४६+१=४७ (यहां स्थूल लोभ जानना)	१०	०	०
१० सूक्ष्म सां०	४७	४६+१=४७ (यहां सूक्ष्म लोभ जानना)	१०	१	संज्वलन लोभ १ (यहां सूक्ष्म लोभ जानना)
११ उपशांत मोह	४८	४७+१=४८	९	०	०
१२ क्षीण मोह	४८	४७+१=४८	९	४	असत्य मनोयोग १, उभय मनोयोग १, असत्य वचनयोग १, उभय वचनयोग १, ये ४ जानना
१३ सयोग के०	५०	४८+४=५२-२ (औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग ये २) =५० जानना	७	७	ऊपर के योग ४+३ (औ० काययोग १, औ० मिश्रकाययोग १, कार्माण काययोग १ ये ३)=७
१४ अयोग के०	५७	सब आस्रव जानना	०	०	०

(३) आस्रव के उदय कार्यभूत जीव के परिणामों में ज्ञानावरणादि कर्मबंध का कारणपना अर्थात् आठ कर्मों की आस्रवों के विशेष भाव बतलाते हैं। (देखो गो० क० गा० ८०० से ८१०)

मूल कर्म प्रकृतियां	आस्रवों के विशेष भाव
१ ज्ञानावरण २ दर्शनावरण	१ प्रत्यनीकी से अर्थात् शास्त्र वा शास्त्र के जानने वाले पुरुषों में। अविनय रूप प्रवृत्ति करने से, २ अन्तराय = ज्ञान में विच्छेद करने से, ३ उपघात = प्रशस्त ज्ञान में द्वेष रखने रूप उपघात से, ४ प्रदोष = तत्व ज्ञान में हर्ष नहीं मानने रूप प्रद्वेष से, ५ निन्हव = जिनसे अपने को ज्ञान प्राप्त हुआ है उनको छिपाकर अन्य को गुरु कहना रूप निन्हव से, ६ आसादना = किसी के प्रशंसा योग्य उपदेश की तारीफ न करने रूप आसादना से स्थिति और अनुभाग बंध की बहुलता के साथ ज्ञानावरण तथा दर्शनावरण इन दो कर्मों को बांधता है ये ६ कारण ज्ञान के विषय में हो तो ज्ञानावरण के बंध के कारण और जो दर्शन के विषय में हो तो दर्शनावरण के बंध के कारण होते हैं, ऐसा जानना।
३ वेदनीय कर्म (साता-असाता)	१ भूतानुकम्पा = सब प्राणियों पर दया करना, २. व्रत = अहिंसादि व्रत पालन करने रूप, ३. योग = शुभ परिणाम में एकाग्रता रखने रूप, ४. क्षमाभाव = क्रोध के त्याग रूप क्षमा, ५. दान = आहारादि चार प्रकार का दान, ६. पंच परमेष्टि की भक्ति कर जो सहित हो ऐसा जीव बहुधा करके प्रचुर अनुभाग के साथ सातावेदनीय को बांधता है, इससे विपरीत अदया भाव का धारक जीव तीव्र स्थिति अनुभाग सहित असाता वेदनीय कर्म का बंध करता है।
४ मोहनीय— (१) दर्शन मोहनीय	अरहंत, सिद्ध चैत्य (प्रतिमा), तपश्चरण, निर्दोष शास्त्र, निर्ग्रंथगुरु, वीतराग प्रणित धर्म और मुनि आदि का समूह रूप संघ—इनसे जो जीव प्रतिकूल हो अर्थात् इनके स्वरूप से विपरीतता का ग्रहण करे वह दर्शन मोह को बांधता है।
(२) चारित्र मोहनीय	जो जीव तीव्र कषाय और हास्यादि नोकषाय सहित हो, बहुत मोह रूप परिणमता हो, राग और द्वेष में अत्यंतलीन हो तथा चारित्र गुण के नाश करने का जिसका स्वभाव हो ऐसा जीव कषाय और नोकषाय दो प्रकार के चारित्र मोहनीय कर्म को बांधता है।

५ आयु-नरकायु—

जो जीव मिथ्यादृष्टि हो, बहुत आरम्भी हो, शील रहित भाव हो, तीव्र लोभी हो, रौद्र परिणामी हो, पाप कार्य करने की बुद्धि सहित हो, वह जीव नरकायु को बांधता है।

(२) तिर्यंचायु—

जो जीव विपरीत मार्ग का उपदेश करने वाला हो, भले मार्ग का नाशक हो, गूढ़ अर्थात् दूसरे कोन मालूम होवे ऐसा जिनके हृदय का परिणाम हो, मायाचारी हो, मूर्खता सहित जिसका स्वभाव हो, मिथ्या-माया-निदान सल्यों कर सहित हो, वह जीव तिर्यंच आयु को बांधता है।

(३) मनुष्यायु—

जो जीव स्वभाव से ही मंदक कषाय वाला हो, दान में प्रीतियुक्त हो, शील संयम कर रहित हो, मध्यम गुणों कर सहित हो अर्थात् जिनमें न तो उत्कृष्ट गुण हों न दोष हों, वह जीव मनुष्य आयु को बांधता है।

(४) देवायु—

जो जीव सम्यग्दृष्टि है वह केवल सम्यक्त्व से वा साक्षात् अणुव्रत, महाव्रतों से देवायु को बांधता है तथा जो मिथ्या दृष्टि है वह बालतप अर्थात् अज्ञान रूप वाले तपश्चरण से वा अकामनिर्जरा से (संतोषपूर्वक पीड़ा सहन करना) देवायु को बांधता है।

६ नामकर्म (शुभाशुभ)

जो जीव मन-वचन-काय से कुटिल हो अर्थात् सरल न हो, कपट करने वाला हो, अपनी प्रशंसा चाहने वाला तथा करने वाला हो अथवा ऋद्धि गारव आदि से युक्त हो, वह नरकगति आदि अशुभ नामकर्म को बांधता है और इससे विपरीत स्वभाव वाला हो अर्थात् सरलयोग वाला निष्कपट प्रशंसा न चाहने वाला हो वह शुभ नामकर्म का बन्ध करता है।

७ गोत्रकर्म (उच्च-नीच)

जो जीव अर्हंतादि पांच परमेष्ठियों में भक्तिवंत हो, वीतराग कथित शास्त्र में प्रीति रखता हो, पढ़ना विचार करना इत्यादि गुणों का दर्शक हो, वह जीव उच्चगोत्र को बन्ध करता है और इनसे विपरीत चलने वाला नीचगोत्र को बांधता है।

८ अन्तराय कर्म	जो जीव अपने वा परके प्राणों की हिंसा करने में लीन हो और जिनेश्वर की पूजा तथा रत्नत्रय की प्राप्ति रूप मोक्ष मार्ग में विघ्न डाले वह अन्तराय कर्म का उपार्जन करता है जिसके कि उदय से वह वांछित वस्तु को नहीं पा सकता।

६१. भाव का लक्षण— (जीव के असाधारण गुण का लक्षण) अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशमादिक के होने हुए उत्पन्न हुये ऐसे जिन औपशमिकादि भावों कर जीव पहचाने जावें भाव 'गुण' ऐसी संज्ञा रूप सर्वदर्शियों ने कहे हैं। (देखो गो० क० गा० ८१२)

(१) भावों के नाम भेद सहित कहते हैं— वे मूलभाव औपशमिक, क्षायिक, मिश्र, औदयिक, परिणामिक, इस तरह पांच प्रकार है और उनके उत्तर भाव क्रम से २, ९, १८, २१, ३, इस तरह ५३ भाव जानने चाहिएं। (देखो गो० क० गा० ८१३)

(२) इन भावों की उत्पत्ति का स्वरूप कहते हैं—

१. औपशमिक भाव—प्रतिपक्षी कर्म के उपशम होने से होता है।

२. क्षायिक भाव—प्रतिपक्षी कर्म के पूर्णक्षय होने से होता है।

३. मिश्र भाव (क्षयोपशम भाव)—उन प्रतिपक्षी कर्मों का उदय भी हो परन्तु जीव का गुण भी प्रगट रहे वहां मिश्र रूप क्षायोपशमिक भाव होता है।

४. औदयिक भाव—कर्म के उदय से उत्पन्न हुआ संसारी जीव का गुण जहां हो वह औदयिक भाव है।

५. पारिणामिक भाव—उपशम, क्षय, क्षयोपशम और उदय कारणों के बिना जीव का जो स्वाभाविक भाव है वह परिणामिक भाव है।
(देखो गो० क० गा० ८१४–८१५)

(३) इन भावों के भेदरूप उत्तर भावों को कहते हैं :—
(देखो गो० क० गा० ८१६ से ८१९ और को० नं० २१२)

मूलभाव	उत्तर भेद संख्या	उत्तर भेदों के नाम
१. औपशमिक	२	उपशम सम्यक्त्व १, उपशम चारित्र १ ये २ जानना ।
२. क्षायिक	९	क्षायिक ज्ञान १, क्षायिक दर्शन १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायिक चारित्र १, क्षायिक दान १, क्षायिक लाभ १, क्षायिक भोग १, क्षायिक उपभोग १, क्षायिक वीर्य १, ये ९ जानना ।
३. मिश्र या क्षयोपशमिक	१८	कुमति ज्ञान, कुश्रुत ज्ञान, कुअवधि ज्ञान ये ३ कुज्ञान (अज्ञान) । मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान मनः पर्यय ज्ञान, ये ४ ज्ञान, अचक्षुदर्शन, चक्षुदर्शन, अवधि दर्शन, ये ३ दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य ये ५ क्षायोपशम लब्धि, क्षयोपशम (वेदक) सम्यक्त्व १, सराग चारित्र १, देशसंयम १, ये सब १८ भाव जानना ।
४. औदयिक	२१	नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव ये ४ गति, नपुंसक, स्त्री पुरुष, ये ३ वेद (लिंग), क्रोध, मान, माया, लोभ, ये ४ कषाय, मिथ्यात्व १, कृष्ण, नील, कापोत पीत, पद्म, शुक्ल ये ६ लेश्या, असंयम १, अज्ञान १, असिद्धत्व १, ये २१ भाव जानना ।
५. पारिणामिक	३	भव्यत्व १, अभव्यत्व १, जीवत्व १ ये ३ जानना ।
		इस प्रकार मूलभाव ५ और उत्तर भेदरूप भाव ५३ जानना ।

(४) भंगों की अपेक्षा से भावों के भेद बतलाते हैं—

गुण स्थानों में और मार्गणा स्थानों में संभवते मूलभाव और उत्तर भावों की स्थापना करके प्रमादों के अक्ष संचार (भेदों के बोलने के विधान) के समान अर्थात् भावों की उलटापलट करने से यहां पर भी १ प्रत्येक भंग, १ अविरुद्ध परसंयोगी भंग और १ स्वसंयोगी भी भंग समझने चाहियें ।

१. प्रत्येक भंग—अलग अलग भावों को प्रत्येक भंग कहते हैं और जिनमें संयोग पाया जाय उनको संयोगी भंग कहते हैं । संयोगी भंग दो प्रकार के हैं—परसंयोगी और स्वसंयोगी ।

२. स्वसंयोगी भंग—जहां अपने ही एक उत्तर भेद का दूसरे उत्तर भेद के साथ संयोग दिखाया जाय उसको स्वसंयोगी भंग कहते हैं । जैसे एक औपशमिक के भेद का दूसरे औपशमिक के ही भेद के साथ, अथवा एक औदयिक भेद के साथ दूसरे औदयिक भेद का ही संयोग कहना ।

३. परसंयोगी भंग—जहां दूसरे उत्तर भेद के साथ संयोग दिखाया जाय उसको परसंयोगी भंग कहते हैं । जैसे औपशमिक के एक भेद के साथ औदयिक के एक भेद का संयोग दिखाना, अथवा एक औदयिक भेद के साथ दूसरे क्षायिक भेद का संयोग दिखाना । इत्यादि (देखो गो० क० गा० ८२०)

(५) गुण-स्थानों में मूलभावों की संख्या और स्वपर के संयोग रूप भावों की संख्या को दिखलाते हैं।

(देखो गो० क० गा० ८२१ को० नं० २३३)

गुण-स्थान	मूल भावों की संख्या	५ भावों के नाम और संख्या					जोड़
		औपशमिक	क्षायिक	मिश्र (क्षयोपश०)	औदायिक	पारिणामिक	
१. मिथ्यात्व	३	०	०	१	१	१	३
२. सासादन	३	०		१	१	१	३
३. मिश्र	३	०	०	१	१	१	३
४. असंयत	५	१	१	१	१	१	५
५. देशसंयत	५	१	१	१	१	१	५
६. प्रमत्त	५	१	१	१	१	१	५
७. अप्रमत्त	५	१	१	१	१	१	५
८. अपूर्व क० उप० श्रे०	५	१		१	१	१	५
९. अनिवृ० ,,	५	१	१	१	१	१	५
१०. सूक्ष्म सां० ,,	५	१	१	१	१	१	५
११. उपशांत मो० ,,	५	१	१	१	१	१	५
८. अपूर्व क० क्ष० श्रे०	४	०	१	१	१	१	४
९. अनिवृ० ,,	४	०	१	१	१	१	४
१०. सूक्ष्म सां० ,,	४	०	१	१	१	१	४
१२. क्षीण मोह ,,	४	०	१	१	१	१	४
१३. सयोग केवली	३	०	१	०	१	१	३
१४. अयोग केवली	३	०	१	०	१	१	३
सिद्ध गति में	२	०	१	०	०	१	२

(६) गुण स्थानों में ५३ उत्तर भावों के भेद सामान्यपने से कहते हैं—

(देखो गो० क० गा० ८२२ को० नं० २३४)

गुण स्थान	औपशमिक भाव २ में से	क्षायिक भाव ६ में से	मिश्र भाव १८ में से	औदयिक भव २१ में से	पारिणामिक भाव ३ में से	जोड़ भावों की संख्या
१. मिथ्यात्व	०	०	१०=कुज्ञान ३, दर्शन २, लब्धि ५	२१=सब	३= सब	३४
२. सासादन	०	०	१०= ,,	२०=मिथ्यात्व १ घटाकर	२=भव्यत्व, जीवत्व ये २	३२
३. मिश्र	०	०	११=ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५	२०= ,,	२= ,,	
४. असंयत	१ उपशम सम्यक्त्व	१ क्षायिक सम्यक्त्व	१२= ऊपर के ११ में वेदक सम्यक्त्व १ जोड़कर १२	२०= ,,	२= ,,	३६
५. देशसंयत	१= ,,	१= ,,	१३=ऊपर के १२+१ देशसंयत जोड़कर १३ जानना	१४=म० ति० गति २, कषाय ४, वेद ३, शुभ-लेश्या ३, अज्ञान १, असिद्धत्व १ ये १४ जानना	२= ,,	३१
६. प्रमत्त	१= ,,	१= ,,	१४=ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५, वेदक स० १, मन: प० ज्ञान १, सराग चारि० १	१३=ऊपर के १४—१ तिर्यंच गति घटाकर जानना	२= ,,	३१
७. अप्रमत्त	१= ,,	१= ,,	१४= ,,	१३ = ,,	२= ,,	३१

८. अपूर्वकरण	२=सब	२=क्षा० स० १, क्षा० चारित्र १	१२=ऊपर के १४−२ (वेदक स० १, सराग चारि० १)=१२	११=ऊपर के १३−२ (पीत० पद्म लेश्या)=११	२= ,,	२६
९. अनिवृत्ति०	२= ,,	२= ,,	१२= ,,	११— ,,	२= ,,	२६
१०. सूक्ष्म सां०	२= ,,	२= ,,	१२= ,,	५=म० गति १, सूक्ष्म लोभ १, शुभ लेश्या १, अज्ञान १, असिद्धत्व १	२= ,,	२३
११ उपशांत मो०	२= ,,	१ क्षायिक सम्यक्त्व	१२= ,,	४=ऊपर के ५−१ लोभ घटाकर=४	२= ,,	२१
१२. क्षीण मो०	०	२ क्षा० स०, क्षा० चारि०	१२=	४= ,,	२= ,,	२०
१३ संयोग के०	०	९=सब	०	३=मनुष्य गति १, शुक्ल लेश्या १, असिद्धत्व १	२ = ,,	१४
१४. अयोग के०		९=सब	०	२=मनुष्य गति १, असिद्धत्व १	२= ,,	१३
सिद्ध गति में	०	४ क्षा० ज्ञान, क्षा० दर्शन, क्षा सम्यक्त्व, क्षा० वीर्य, ये ४	०	०	०	५

सूचना:—कोई आचार्य क्षायिक भाव ९+१ जीवत्व ऐसे १० भाव मानते हैं।

६२. सर्वथा एकनयका ही ग्रहण जिसमें पाया जाता है। ऐसे जो एकांत मत है ३६३ भेदों को कहते हैं—

(१) क्रियावादियों के १८०, (२) अक्रियावादियों के ८४, (३) अज्ञानवादियों ६७, (४) वैनयिकवादियों के ३२। इस प्रकार सब मिलकर ३६३ भेद जानना, (देखो गो० क० गा० ८७६)।

(१) क्रियावादियों के मूलभंग कहते हैं—

१ले 'अस्ति' × ४ 'आपसे', 'परसे', नित्यपनेसे', अनित्यपने से', = ४ × ८ जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, मोक्ष = ३६ × ५ काल, ईश्वर, आत्मा, नियति, स्वभाव = १८०

(२) १ अस्ति, ४ आपसे, परसे, नित्यपनेकर, अनित्यपनेकर, इन पांचों का तथा नवपदार्थ इन कुल १४ का अर्थ —

१. जीवादि नव पदार्थ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भवरूप स्वचतुष्टयसे 'आपसे' (स्वतः) 'अस्ति' है। = ६

२. जीवादि नव पदार्थ परचतुष्टयसे 'परतः' (परसे) है। = ६

३. जीवादि नव पदार्थ नित्यपनेकर 'अस्ति' है = ६

४. जीवादि नव पदार्थ नित्यपनेकर 'अस्ति' है। = ६

३६

(३) कालवाद—काल ही सब को उत्पन्न करता है और काल ही सबका नाश करता है, सोते हुए प्राणियों में काल ही जागता है, ऐसे काल के वंचना (ठगने को) करने को कौन समर्थ हो सकता है? अर्थात् कोई नहीं। इस प्रकार काल से ही सबको मानना यह कालवाद का अर्थ है।

(४) ईश्वरवाद—आत्म ज्ञानरहित है, अनाथ है अर्थात् कुछ भी नहीं कर सकता। उस आत्मा का सुख-दुःख, स्वर्ग तथा नरक में गमन वगैरह सब ईश्वरकर किया हुआ होता है ऐसे ईश्वरका किया सब कार्य मानना ईश्वरवाद का अर्थ है।

(५) आत्मवाद—संसार में एक ही महान् आत्मा है वही पुरुष है, वही देव है और वह सबमें व्यापक है। सर्वांगपने से अगम्य (छुपा हुआ) है, चेतना सहित है, निर्गुण है और उत्कृष्ट है। इस तरह आत्मस्वरूप से ही सबको मानना आत्मवाद का अर्थ है।

(६) नियतिवाद—जो जिस समय जिससे जैसे जिसके नियम से होता है वह उस समय उससे वैसे उसके ही होता है। ऐसा नियम से ही सब वस्तु को मानना उसे नियतिवाद कहते हैं।

(७) स्वभाववाद—कांटे को आदि लेकर जो तीक्ष्ण (चुभने वाली) वस्तु है उनके तीक्ष्णपना कौन करता है और मृग तथा पक्षी आदियों के अनेक तरह पना जो पाया जाता है उसे कौन करता है? ऐसा प्रश्न करने पर यही उत्तर मिलता है कि सब में स्वभाव ही है। ऐसे सबको कारण के बिना स्वभाव से ही मानना स्वभाववाद का अर्थ है।

ऊपर जो (गाथा ८७८ देखो) एकांतमत के ३६ भेद दिखलाया है। उनको काल, ईश्वर, आत्मा, नियति और स्वभाव इन पांचों को लगाकर गणना करने से क्रियावाद के ३६ × ५ = १८० भेद होते हैं। (देखो गो० क० गा० ८७६ से ८८३)।

(८) अक्रियावाद के ८४ भेद निम्न प्रकार जानना—
१ नास्ति × २ आपसे, परसे = २ × ७ जीव, अजी, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, मोक्ष = १४ × ५ काल, ईश्वर, आत्मा, नियति = ७०।

आपसे (स्वतः) जीव काल से नहीं।

परसे जीव काल से नहीं। इस प्रकार जीव-अजीव आदिक ७ पदार्थ आपसे, परसे काल के अपेक्षा से नहीं है इसलिये— १ नास्ति × २ आपसे, परसे = २ × ७ पदार्थ
= १४ काल की अपेक्षा नहीं है
„ „ „ = १४ ईश्वरापेक्षा से नहीं है
„ „ „ = १४ आत्मा की „
„ „ „ = १४ नियति की „
„ „ „ १४
७० भेद जानना।

१ नास्ति × ७ जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध मोक्ष =७ × २ नियति, काल=१४ ये भेद नास्तिकपने में जानना। पहले के ७० और ये १४ सब मिलकर अक्रियावादियों के ८४ भेद होते हैं। (देखो गो० क० गा० ८८४–८८५)।

(९) अज्ञानवाद के ६७ भेद बताते हैं—

जीवादि नव पदार्थों में से एक-एक का सप्त भंग से न जानना। जैसे कि 'जीव' अस्तिरूप है ऐसा कौन जानता है। तथा नास्ति अथवा दोनों, वा बाकी तीन भंग मिली हुई=इस तरह ७ भंगों से कौन जीव को जानता है। इस प्रकार नव पदार्थों का ७ भंग से (अस्ति, नास्ति, अस्ति-नास्ति, अवक्तव्य, अस्ति अवक्तव्य नास्ति अवक्तव्य अस्ति नास्ति अवक्तव्य, ये ७ गुणा करने पर ७ × ९ =६३ भेद होते हैं—

(१)	जीवादि नवपदार्थ	अस्तिरूप है	ऐसा कौन जानता है ?	=९
(२)	,, ,,	नास्तिरूप है	,,	=९
(३)	,, ,,	अस्ति नास्ति रूप है	,,	=९
(४)	,, ,,	अवक्तव्य रूप है	,,	=९
(५)	,, ,,	अस्ति अवक्तव्य है	,,	=९
(६)	,, ,,	नास्ति अवक्तव्य है	,,	=९
(७)	,, ,,	अस्ति नास्ति अवक्तव्य है	,,	=९
				६३

१. शुद्ध पदार्थ × ४ अस्ति, नास्ति, अस्ति नास्ति, अवक्तव्य=४

(१)	शुद्ध पदार्थ	अस्ति रूप है	ऐसे कौन जानता है ?	=१
(२)	,,	नास्ति रूप है	,,	=१
(३)	,,	अस्ति नास्ति रूप है	,,	=१
(४)	,,	अवक्तव्य रूप है	,,	=१
				४

इस प्रकार पूर्वोक्त ६३ और ये ४ सब मिलकर अज्ञानवाद के ६७ भेद जानना। (देखो गो० क० गा० ८८६–८८७)।

(१०) वैनयिकवाद के ३२ भेद कहते हैं—

देव, राजा, ज्ञानी, यति, वृद्ध, बालक, माता, पिता। इन आठों का मन, वचन, काय और दान इन चारों से विनय करना इस प्रकार वैनयिकवाद के ८ × ४=३२ भेद होते हैं। ये विनयवादी गुण, अवगुण की परीक्षा किये बिना विनय से ही सिद्धि मानते हैं। (देखो गो० क० गा० ८८८)।

इस प्रकार स्वच्छंद अर्थात् अपने मनमाना है। श्रद्धान जिनका ऐसे पुरुषों के ये ३६३ भेद रूप पाखण्ड कल्पना की है।

अन्य भी कुछ एकांतवादों को कहते हैं।

पौरुषवाद—जो आलस्यकर सहित हो तथा उद्यम करने में उत्साह रहित हो। वह कुछ भी फल नहीं भोग सकता। जैसे स्तनों का दूध पीना बिना पुरुषार्थ के कभी नहीं बन सकता। इसी प्रकार पुरुषार्थ से ही सब कार्य की सिद्धि होती है। ऐसा मानना पौरुषवाद है। (देखो गो० क० गा० ८९०)।

(२) **दैववाद**—मैं केवल दैव (भाग्य को ही उत्तम मानता हूं। निरर्थक पुरुषार्थ को धिक्कार हो। देखो कि किले के समान ऊंचा जो वह कर्ण नामा राजा सो युद्ध में मारा गया। ऐसा दैववाद है। दैव से ही सर्वसिद्धि मानी है। (देखो गो० क० गा० ८९१)।

(३) **संयोगवाद**—यथार्थ ज्ञानी संयोग से ही कार्य सिद्धि मानते हैं; क्योंकि जैसे एक पहिये से रथ चल नहीं

सकता, तथा जैसे एक अंधा दूसरा पांगला ये दोनों वन में प्रविष्ट हुए थे सो किसी समय आग लग जाने से वे दोनों मिलकर अर्थात् अंधे के कन्धे पर पांगला बैठकर अपने नगर में पहुंच गये। इस प्रकार संयोगवाद है। (देखो गो० क० गा० ८९२)।

(४) लोकवाद—एक ही बार उठी हुई लोक-प्रसिद्ध बात देवों से भी मिलकर दूर नहीं हो सकती तो अन्य की बात क्या है, जैसे कि द्रौपदी कर केवल अर्जुन पांडव के ही गले में डाली हुई माला की पांचों पांडवों को पहनाई है ऐसी प्रसिद्धि हो गई इस प्रकार लोकवादी, लोकप्रवृत्ति को ही सर्वस्व मानते हैं। (देखो गो० क० गा० ८९३)

सारांश—जो कुछ वचन बोला जाता है वह किसी अपेक्षा को लिये हुये ही होता है उस जगह जो अपेक्षा है वही 'नय' है और बिना अपेक्षा के बोलना अथवा एक ही अपेक्षा से अनंत धर्म वाली वस्तु को सिद्ध करना यही परमतों में मिथ्यापना है।

६३. त्रिकरणों का स्वरूप कहते हैं—

(१) अनंतानुबंधी कषाय की चौकड़ी के बिना शेष २१ चारित्र मोहनीय की प्रकृतियों के क्षय करने के लिये अथवा उपशम करने के निमित्त अधः प्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण ये ३ करण कहे गये हैं, उनमें से पहले अधः प्रवृत्तकरण को सातिशय अप्रमत्त गुण स्थान वाला प्रारम्भ करता है, यहां 'करण' नाम परिणाम का है। (देखो गो० क० गा० ८९७ और जीव कांड गो० गुण स्थानाधिकार गाथा ४७)

(२) अधः प्रवृत्तकरण का शब्दार्थ से सिद्ध लक्षण कहते हैं—

जिस कारण इस पहले करण में ऊपर के समय के परिणाम नीचे के समय संबंधी भावों के समान होते हैं इस कारण पहले करण का 'अधः प्रवृत्त' ऐसा अन्वर्थ (अर्थ के अनुसार) नाम कहा गया है, उस अधः प्रवृत्त करण का काल अंतर्मुहूर्त है, उस काल में संभवते विशुद्धता (मन्दता) रूप कषायों के परिणाम असंख्यात-लोक प्रमाण हैं और वे परिणाम पहले समय से लेकर आगे-आगे के समयों में समान वृद्धि (चय) कर बढ़ते हुये हैं, (देखो गो० क० गा० ८९८-८९९ और जीव कांड गा० ४८-४९) वह सातिशय अप्रमत्त संयमी समय समय प्रति अनंत गुणी प्रमाणों की विशुद्धता से बढ़ता हुआ अंतर्मुहूर्त काल तक अधः प्रवृत्त करण को करता है, पुनः उसको समाप्त करके अपूर्वकरण को प्राप्त होता है।

(३) अपूर्वकरण का स्वरूप कहते हैं—

अपूर्वकरण का काल अंतर्मुहूर्त मात्र है उसमें हर एक समय में समानचय (वृद्धि) से बढ़ते हुए असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम पाये जाते हैं, लेकिन यहां अनुकृष्टि नियम से नहीं होती, क्योंकि यहां प्रति समय के परिणामों में अपूर्वता होने से नीचे के समय के परिणामों से ऊपर के समय के परिणामों में समानता नहीं पायी जाती। (देखो गो० क० गा० ९१० और जीव कांड गा० ५३)

(४) अनिवृत्तिकरण का स्वरूप कहते हैं—

जो जीव अनिवृत्ति करण काल के विवक्षित एक समय में जैसे शरीर के आकार वगैरह से भेद रूप हो जाते हैं उस प्रकार परिणामों से अधः करणादि की तरह भेद रूप नहीं होते और इस करण में इनके समय-समय प्रति एक स्वरूप एक ही परिणाम होता है, ये जीव अतिशयनिर्मल ध्यान रूपी अग्नि से जलाये हैं कर्मरूपी वन जिन्होंने ऐसे होते हुये अनिवृत्त करण परिणाम के धारक होते हैं, इस अनिवृत्ति करण का काल भी अंतर्मुहूर्त मात्र है। (देखो गो० क० गा० ९११-९१२)

६४. कर्म स्थिति की रचना का सद्भाव कहते हैं—

सब कर्मों की स्थिति की रचना में छह राशियों की आवश्यकता रहती है।

१. द्रव्य—जो पहले प्रदेश बंधाधिकार में कहे हुए समय प्रबद्ध के प्रमाण बंध प्राप्त कर्म पुद्गल समूह हैं।

२. स्थिति आयाम - उस समय प्रबद्ध का जीव के साथ स्थित रहने का काल स्थिति आयाम है, वह स्थिति संख्यात पल्य प्रमाण है।

३ गुण हानि आयाम निषेकों में शलाकाओं का भाग देने से जो प्रमाण हो वह गुण हानि आयाम का प्रमाण होता है गुण हानि का अर्थ कर्म परमाणुओं का आधा-आधा हिस्सा होना चाहिये।

४. नाना गुण हानि—अन्योन्याभ्यस्त राशि की अर्धच्छेद राशियों को संकलित अर्थात् जोड़ने से नाना गुण हानि का प्रमाण होता है, इस प्रकार पल्य की वर्ग शलाका का भाग पल्य में देने से अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण होता है और पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदों को पल्य के, अर्धच्छेदों में घटाने से जो प्रमाण आवे उतनी नाना गुण हानि राशि जाननी चाहिये।

५. निषेकाहार अर्थात् दो गुण हानि—गुण हानि का दुना प्रमाण निषेकहार होता है, उसका प्रयोजन यह है कि निषेकाहार का भाग विवक्षित गुण हानि के पहले निषेक में देने से उस गुण हानि में विशेष (चय) का प्रमाण निकल आता है।

६. अन्योन्याभ्यस्त राशि—मिथ्यात्वनामा कर्म में पल्य की वर्ग शलाका को आदि लेकर पल्य के प्रथम मूल पर्यंत उन वर्गों का आपस में गुणाकार करने से अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण होता है। इस प्रकार पल्य की वर्ग शलाका का भाग पल्य में देने से अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण होता है।

इस तरह द्रव्यादिकों का प्रमाण जानना (देखो गो० क० गा० ९२२ से ९२८)

शब्द कोष

अगुरुलघु चतुष्क—अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उच्छ्वास १ ये ४ अथवा अगुरुलघु १, उपघात १, परघात १, उद्योत १, ये ४ जानना। (गो० क० गा० ४००-४०१ देखो)

अगुरुलघुद्विक—अगुरुलघु, उपघात ये २ जानना।

अंगो-पांग दो पैर, दो हाथ, नितम्ब-कमर के पीछे का भाग, पीठ, हृदय और मस्तक ये आठ शरीर में अंग है और दूसरे सब नेत्र, कान वगैरह उपांग कहे जाते हैं।

अघाति कर्म—जीव के अनुजीवी गुणों का नाश नहीं करने वाले आयु, नाम, गोत्र और वेदनीय ये ४ कर्मों को अघातिया कर्म कहते हैं। (गा० ९)

अचलावली कर्म बंध होने के बाद एक आवली तक उसका संक्रमण, उदीरणा, उदय या क्षय नहीं होता उस काल को अचलावली कहते हैं। (गा० १५९, ५१४ देखो)

अध: प्रवृत्तिकरण—जिस करण से इस पहले करण में ऊपर के समय के परिणाम नीचे के समय संबंधी भावों के समान होते हैं उस कारण से पहले करण का नाम 'अध: प्रवृत्ति' ऐसे अन्वर्थ (अर्थ के अनुसार) नाम कहा गया है। (गा० ८९८ देखो)

अध: प्रवृत्ति संक्रमण—बंधरूप हुई प्रकृतियों का अपने बंध में संभवती प्रकृतियों में परमाणुओं का जो प्रदेश संक्रमण होना वह अध: प्रवृत्ति संक्रमण है। (गा० ४१३ देखो)

अर्धच्छेद—२ इस संख्या को २ संख्या से जितने बार गुणाकार करके जो विशिष्ट संख्या आवेगी उस संख्या का उतने ही २ संख्या के आंकड़े अर्धच्छेद जानना जैसे ४ का अर्धच्छेद २×२=४) २ है। १६ का अर्धच्छेद ४ (२×२×२×२=१६) चार जानना (गा० ६२५-६२६ देखो)

अद्धा—काल विशेष जानना (गा० २०५ देखो)

अधिकरण—जिस स्थान में दूसरे (इतर) स्थान (आधेय) रहते हैं उसे अधिकरण कहते हैं। (गा० ६६० देखो)

अध्रुव बंध—जो अन्तर सहित बंध हो अर्थात् जिस बंध का अंत आ जावे उसे अध्रुव बंध कहते हैं। (गा० ६०-१२३ देखो)

अनादि पुद्गल द्रव्य—जिस पुद्गल द्रव्य को अभितक कभी भी कर्मत्व प्राप्त नहीं हुआ है अर्थात् जिसको कभी भी जीवात्मा ने कर्म रूप ग्रहण नहीं किया है। उसे अनादि पुद्गल द्रव्य कहते है। (गा० १८५ से १६० देखो।

अनादि बंध—अनादि काल से जिसके बंध का अभाव न हुआ हो।

अनुकृष्टिचय—अनुकृष्टि के गच्छ का भाग ऊर्ध्वचय में देने से जो प्रमाण हो वह जानना (गा० ६०० से ६०७ देखो)

अनुकृष्टि—नीचे और ऊपर के समयों में समानता के खंड होने को अनुकृष्टि कहते हैं। (गा० ६०५ देखो)

अनुभागाध्यवसाय स्थान—जिस कषाय के परिणाम से कर्म बंधन में अनुभाग पड़ता है उस कषाय परिणाम को जानना (गा० २६० देखो)

अनुभाग बंध—कर्मों के फल देने की शक्ति की हीनता व अधिकता को अनुभाग बंध करते हैं। (गा० ८६ देखो)

अनेक क्षेत्र—अनेक शरीर से रुकी हुई सब लोक के क्षेत्र को अनेक क्षेत्र कहते हैं (गा० १८६ देखो)

अनंतानुबंधी कषाय—अनंत नाम संसार का है, परन्तु जो उसका कारण हो वह भी अनंत कहा जाता है, सो यहां पर मिथ्यात्व परिणाम को अनन्त कहा गयाहै, क्योंकि वह अनंत संसार का कारण है, जो इस अनंत-मिथ्यात्व के अनु-साथ साथ बंधे उस कषाय को अनंतानुबंधी कषाय कहते हैं, (गा० ४५ देखो)

अपकर्ष काल—आयु बंध होने के जो आठ त्रिभाग काल होते हैं वे अपरिवर्तमान परिणाम—जो परिणाम समय समय बढ़ते ही जावें अथवा घटते ही जावें ऐसे संक्लेश या विशुद्ध परिणाम अपरिवर्तमान कहे जाते हैं। (गा० १८७।

अपवर्तन घात—आयु कर्म के आठ अपकर्षणों (त्रिभागों) में पहली बार के बिना द्वितीयादि बार में जो पहले बार में आयु बंधी थी उसी की स्थिति की वृद्धि या हानि अथवा अवस्थिति होती है और आयु के बंध करने पर जीवों के परिणामों के निमित्त से उदयप्राप्त आयु का घट जाना उसको अपवर्तन घात (कदली घात) कहते हैं। गा० ६४३ देखो)

अप्रत्याख्यान कषाय—जो 'अ' अर्थात् ईषत्-थोड़े से भी प्रत्याख्यान को न होने दे, अर्थात् जिसके उदय से जीव श्रावक के व्रत भी धारण न कर सके उस क्रोध, मान, माया, लोभ रूप चारित्र मोहनीय कर्म को अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं। (गा० ४५ देखो)

अल्पतर बंध—पहले बहुत का बंध किया था पीछे थोड़ी प्रकृतियों के बंध करने पर अल्पतर बंध होता है। (गा० ६६ देखो)

अवस्थित बंध—पहले और पीछे दोनों समयों में समान (एकसा) बंध होने पर अवस्थित बंध होता है। (गा० ४६६ देखो)

अवक्तव्य बंध—पहले मोहनीय कर्म का बंध न होते हुये अगले समय में उसका बंध हो जाय तो उसे अवक्तव्य बंध कहते हैं। (गा० ४६६ देखो)

अविभाग प्रतिच्छेद—जिसका दूसरा भाग न हो ऐसे शक्ति के अंश को अविभाग प्रतिच्छेद कहते हैं। सो यह

पर उलटे क्रम से कहा है, इसका सीधा क्रम—अविभाग प्रतिच्छेद का समूह वर्ग, वर्ग का समूह वर्गणा, वर्गणा का स्पर्द्धक, स्पर्द्धक का समूह गुण हानि गुण हानि का समूह समूह स्थान ऐसा जानना चाहिये (गा० २२६)

असंख्यात लोक प्रमाण=असंख्यात को असंख्यात से गुणाकार करने से जो संख्या आवेगी वही जानना।

असातावेदनीय कर्म=जो उदय में आकर जीव को शारीरिक तथा मानसिक अनेक प्रकार के नरकादि गति-जन्य दुःखों का 'वेदयति' भोग करावें अथवा 'वेद्यते अनेन' जिसके द्वारा जीव उन दुःखों को भोगे वह असाता वेदनीय कर्म है। (गा० ३३ देखो)

आगम भाव कर्म जो जीव कर्म स्वरूप के कहने वाले आगम का जानने वाला और वर्तमान समय में उसी शास्त्र का चिन्तवन (विचार) रूप उपयोग सहित हो उस जीव का नाम भावागम कर्म अथवा आगम भाव कर्म कहा जाता है (गा० ६५ देखो)

आदेश= मार्गणा को आदेश कहते हैं।
(गा० ६६० देखो)

आधेय=अधिकरण में जो दूसरे स्थान रहते हैं उन्हें आधेय कहते हैं।

आबाधा काल=कार्माण शरीर नामा नाम कर्म के उदय से योग द्वारा आत्मा में कर्म स्वरूप से परिणमता हुआ जो पुद्गल द्रव्य वह जब तक उदय स्वरूप (फल देने स्वरूप) अथवा उदीरणा स्वरूप न हो तब तक के उस काल को आबाधाकाल कहते हैं। (गा० १५५ देखो)

आयाम स्थिति बंध में जो समय का प्रमाण है उसी को आयाम जानना।

आयु कर्म जो जीव को नरकादि शरीर में रोक रक्खे उसे आयु कर्म जानना अथवा विवक्षित गति में कर्मोदय से प्राप्त शरीर में रोकने वाले और जीवन के कारण भूत आधार को आयु कहते हैं।

आहारक चतुष्क=आहारक शरीर १, आहारक अंगोपांग १, आहारक बंधन १, आहारक संघात १ ये ४ जानना।

आहारकद्विक=आहारक शरीर १, आहारक अंगोपांग १ ये २

इंगिनी मरण=अपने शरीर की टहल आप ही अपने अंगों से करे, किसी दूसरे से रोगादि का उपचार न करावे, ऐसे विधान से जो सन्यास धारण कर मरे उस मरण को इंगिनी मरण कहते हैं। (गा० ६१)

उच्छिष्टावली=उदय न होते हुये बचा हुआ प्रथम स्थिति के निषेक।

उत्तर धन=प्रचयधन शब्द देखो।

उदय=अपने अनुभाग रूप स्वभाव का प्रकट होना अथवा अपने कार्य करके कर्मपने को छोड़ देना
(गा० ४३९ देखो)

उदय व्युच्छित्ति=उदय की मर्यादा जहां पूर्ण होता है और आगे उदय नहीं होता उस अवस्था को उदय-व्युच्छित्ति जानना।

उदयावधि=उदय व्युच्छित्ति को ही उदयावधि कहते हैं।

उदीरणा=आगामी उदय में आने वाले निषेकों को नियत समय के पहले उदयावली में लाकर फलानुभव देकर खिर जाना अर्थात् बिना समय के कर्म का पक्व होना इसको उदीरणा कहते हैं। (गा० २८१, ४३९ देखो)

उद्वेलन=बंधा हुआ कर्म बंध को उकेल कर दूर (नाश) करना उद्वेलना है।

उद्वेलन संक्रमण=अधः प्रवृत्त आदि तीन करणरूप परिणामों के बिना ही कर्म प्रकृतियों के परमाणुओं का अन्य प्रकृतिरूप परिणमन होना वह उद्वेलन संक्रमण है। (गा० ४१३ देखो)

उपपाद योग स्थान=उत्पत्ति के पहले समय में जो योग स्थान रहता है, वही जानना। (गा० २१९ देखो)

उपयोग=बाह्य तथा अभ्यन्तर कारणों के द्वारा होने वाली आत्मा के चेतन गुण की परिणति को उपयोग कहते हैं।

उपशम योग्यकाल=सम्यक्त्व प्रकृति और सम्यग्मि-

ग्यारह प्रकृति इनकी स्थिति पृथक्त्व सागर प्रमाण त्रस के शेष रहे और पल्य के असंख्यातवें भाग कम एक सागर प्रमाण एकेन्द्रिय के शेष रह जावे वह 'वेदक योग्य काल' है और उससे भी सत्ता रूप स्थिति कम हो जाय तो वह उपशम योग्य काल कहा जाता है। (गा० ६१५ देखो)

एक क्षेत्र=सूक्ष्म निगोदिया जीव की घनांगुल के असंख्यातवें भाग अवगाहना (जगह) को एक क्षेत्र जानना।

एकान्तानुवृद्धि योग स्थान=एकान्त अर्थात् नियम कर अपने समयों में समय समय प्रति असंख्यात गुणी अविभाग प्रतिच्छेदों की वृद्धि जिसमें हो वह एकान्तानुवृद्धि स्थान है। (गा० २२२ देखो)

ओघ=गुण स्थान को ओघ कहते हैं।

ओराल=औदारिक शरीर को ओराल कहते हैं।

औदारिकद्विक=औदारिक शरीर १, औदारिक

अंत: कोडाकोडी=एक कोडी के ऊपर और कोडा-कोडी के भीतर। अंगोपांग १ ये २ जानना।

कृतकृत्य वेदक=जो वेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य गति में क्षायिक सम्यक्त्व को प्रारम्भ करता है वह क्षायिक सम्यक्त्व मनुष्य गति में ही पूर्ण होगा अथवा अगले गति में भी होगा।

कुल=भिन्न भिन्न शरीरों की उत्पत्ति के कारण भूत नोकर्म वर्गणा के भेदों को कुल कहते हैं।

कदली घात=अपवर्तन घात शब्द देखो।

कोडाकोडी=एक कोडि को एक कोडि से गुणाकार करने से जो संख्या आवेगी उसी को जानना।

कांडक=समय समुदाय में संक्रमण होना। (गा० ४१२ देखो)

गच्छ=गुणहानि आयाम को गच्छ जानना।

गुण संक्रमण=जहां पर प्रति समय असंख्यात गुण श्रेणी के क्रम से परमाणु-प्रदेश अन्य प्रकृति रूप परिणमें सो गुण संक्रमण है।

गुण स्थान=मोह और योग के निमित्त से होने वाली आत्मा के सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रादि गुणों की तारतम्य रूप विकसित अवस्थाओं को गुण स्थान कहते हैं।

गुण=अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशमादिक के होने पर उत्पन्न हुये ऐसे जिन औपशमिकादि भावों कर जीव पहचाने जावें वे भाव 'गुण' कहलाते हैं। (गा० ८१२ देखो)

गुण हानि आयाम=एक एक गुण हानि में जितने समय या स्थान होंगे उन्हीं को गुणहानि आयाम कहते हैं।

गुण्य=प्रत्येक गुणस्थान में औदयिक भावों की जितनी होंगे उनको गुण्य कहते हैं।

गोत्रकर्म=कुल की परिपाटी के क्रम से चला आया जो जीव का आचरण उसकी गोत्र संज्ञा है अर्थात् उसे गोत्र कहते हैं। (गा० १३ देखो)

घाति कर्म=जीव के अनुजीवी गुणों को घातते (नष्ट करते) हैं ऐसे ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अन्तराय ये ४ घाति कर्म हैं। (गा० ९)

घोटमान योग स्थान=अपनी अपनी शरीर पर्याप्ति के पूर्ण होने के समय से लेकर अपनी अपनी आयु के अन्त समय तक सम्पूर्ण समयों में परिणाम योगस्थान उत्कृष्ट भी होते हैं और जघन्य भी संभवते हैं और इसी तरह लब्ध्य पर्याप्तक के भी अपनी स्थिति के सब भेदों में दोनों परिणाम योगस्थान संभव हैं। ये घटते भी हैं और बढ़ते भी है और जैसे के तैसे भी रहते हैं

सो ये सब परिणाम योगस्थान या घोटमान योग समझने, (गा० २२१ देखो)

चय=सामान्य अन्तर को चय कहते हैं।

चूलिका=जो कहे हुये अथवा न कहे हुये वा विशेषता से न कहे हुये अर्थ का चिंतन करना उसे चूलिका कहते हैं। (गा० ३६८ देखो)

जगत प्रतर=जगत श्रेणी को जगत् श्रेणी से गुणाकार करने से जो संख्या आवेगी उसे जानना अथवा एक एक स्पर्धक में वर्गणाओं की संख्या उतनी ही अर्थात् जगत् श्रेणी के असंख्यातवें भाग प्रमाण है और एक एक वर्गणा में असंख्यात जगत् प्रतर प्रमाण वर्ग है। (गा० २२५ देखो)

जगत् श्रेणी=लोक की चौड़ाई ७ राजु है इस राजु के रेखा को जगत् श्रेणी कहते हैं।

जीव समास=जिन सदृश धर्मों के द्वारा अनेक जीवों का संग्रह किया जाय, उन्हें जीव समास कहते हैं।

तिर्यक् एकादश=तिर्यग्द्विक २, एकेन्द्रियादि जाति ४, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १ ये ११ जानना।

तिर्यग्द्विक=तिर्यंचगति १, तिर्यंचगत्यानुपूर्व्य १ ये २ जानना।

तेजोद्विक=तैजस शरीर १, कार्माण शरीर १ ये २ जानना।

त्रसचतुष्क=त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १ ये ४ जानना।

त्रस दशक=त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यशः कीर्ति १ ये १० जानना।

त्रस नवक=त्रस १, बादर १, पर्याप्त १ प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, ये ६ जानना।

द्रव्य=बंध प्राप्त पुद्गल समूह को द्रव्य कहते हैं। (गा० ६२२)

द्रव्य कर्म=ज्ञानावरणादि रूप पुद्गल द्रव्य का पिंड द्रव्य कर्म है। (गा० ६ देखो)

द्रव्य लेश्या=वर्ण नाम कर्म के उदय से शरीर का जो वर्ण होता है उसे द्रव्य लेश्या कहते हैं। (गा० ५४६ देखो)

द्विचरम=अंतिम के पिछले उपांत्य को द्विचरम कहते हैं।

देव चतुष्क=देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिक शरीर १, वैक्रियिक अंगोपांग १, ये ४ जानना।

देवद्विक=देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १ ये २ जानना।

द्वेष=अनन्तानुबन्ध्यादि क्रोध ४, मान ४, अरति-शोक २, भय-जुगुप्सा २, इनके उदय से जो भाव होता है उसे द्वेष कहते हैं।

धर्म कथा=प्रथमानुयोगादि शास्त्रों को धर्म कथा कहते हैं। (गा० ८८ देखो)

ध्रुव बंध=जिसका निरन्तर बंध हुआ करे उसको जानना।

नरकद्विक=नरकगति १, नरकगत्यानुपूर्व्य १ ये २ जानना।

नवक बंध=तत्काल जो नया बंध होता है उसे जानना।

नाम कर्म—जो अनेक तरह के भिनोली अर्थात् कार्य बनावे वह नाम कर्म है।

नारक चतुष्क=नरकगति १, नरकगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिक शरीर १, वैक्रियिक अंगोपांग १, ये ४ जानना।

नारक षट्क=ऊपर के नारक चतुष्क और वैक्रियिक बंधन १, वैक्रियिक संघात १ ये ६ जानना।

निर्देश=वस्तु के स्वरूप या नाममात्र के कथन करने को निर्देश कहते हैं।

निष्ठापन=पूर्ण करना इसको निष्ठापन कहते हैं।

निषेक—समय समय में जो कर्म खिरे उनके समूह को निषेक कहते हैं।

निषेक हार—गुण-हानि दूना प्रमाण निषेक हार होता है। (गा० ६२८)

पद— गुणहानि आयाम को पद कहते है।

प्रकृति बंध—प्रकृति अर्थात् स्वभाव उसका जो बंध अर्थात् आत्मा के सम्बन्ध को पाकर प्रकट होना प्रकृति बंध है। (गा० ८९)

प्रदेश बंध - बंधने वाले कर्मों की संख्या को प्रदेश बंध कहते हैं।

प्रचयधन—सर्व सम्बन्धी चयों के जोड़ का ही नाम प्रचयधन है। इसको उत्तर धन भी कहते हैं।
(गा० ६०१ देखो)

प्रचला—इस कर्म के उदय से यह जीव कुछ कुछ आंखों को उघाड़ कर सोता है और सोता हुआ भी थोड़ा थोड़ा जानता है। बार बार मन्द (थोड़ा) शयन करता है। यह निद्रा श्वान के समान है। सब निद्राओं से उत्तम है। (गा २५ देखो)

प्रचलाप्रचला—इस कर्म के उदय से मुख से लार बहती है और हाथ वगैरह अंग चलते हैं। किन्तु सावधान नहीं रहता यह प्रचला है।

प्रति भाग—भाजक को प्रति भाग कहते हैं।

परघात चतुष्क—परघात १, आतप १, उद्योत १, उच्छ्वास १ ये ४ जानना।

परमुखोदय—कर्म प्रकृति अन्य रूप होकर उदय को आना। (गा० ४४५)

परिणाम योगस्थान—शरीर पर्याप्ति के पूर्ण होने के समय से लेकर आयु के अन्त तक परिणाम योगस्थान कहे जाते हैं। इसको घोटमान योगस्थान भी कहते हैं।
(गा० २२० देखो)

पिंड पद—एक समय में एक जीव के भव्यत्व अभव्यत्व इन दोनों में से एक ही नियम से होता है। गति-लिंग-कषाय-लेश्या-सम्यक्त्व इनमें भी अपने अपने भेदों में से एक एक ही एक समय में सम्भव होता है। इस कारण ये पिंड पद हैं। क्योंकि एक काल में एक जीव के जिस सम्भवते भाव समूह में से एक एक ही पाया जावे उस भाव को पिंड पद कहते हैं। (गा० ८५६ देखो)

प्रत्यनिक—शास्त्र या शास्त्र के जानने वाले।

प्रत्याख्यान—जिस कर्म के उदय से प्रत्याख्यान अर्थात् सर्वथा त्याग का आवरण हो, महाव्रत नहीं हो सके उसे प्रत्याख्यान कषाय कहते हैं।

प्राण जीव में जिनके संयोग रहने पर '**यह जीता है**' और वियोग होने पर '**यह मर गया**' ऐसा व्यवहार हो, उन्हें प्राण कहते हैं।

फालि—एक समय में संक्रमण होने को फालि कहते हैं। (गा० ४१२ देखो)

बंध—कर्मों का और आत्मा का दूध और पानी की तरह आपस में एक स्वरूप हो जाना यही बंध है।
(गा० ३३ देखो)

भाव—गुण शब्द देखो।

भाव कर्म—द्रव्य पिंड में फल देने की जो शक्ति वह भाव कर्म है अथवा कार्य में कारण का व्यवहार होने से उस शक्ति से उत्पन्न हुये जो अज्ञानादि वा क्रोधादि रूप परिणाम वे भी भावकर्म ही हैं।
(गा० ६ देखो)

भंग—एक जीव के एक काल में जितनी प्रकृतियों की सत्ता पाई जाय उनके समूह का नाम स्थान है और उस स्थान की एक सी समान संख्या रूप प्रकृतियों में जो संख्या समान ही रहे परन्तु प्रकृतियां बदल जांय तो उसे भंग कहते हैं। जैसे कि १४५ के स्थान में किसी जीव के तो मनुष्यायु और देवायु सहित १४५ की सत्ता है तथा किसी के तिर्यंचायु और नरकायु की सत्ता सहित १४५ की सत्ता है। अतः एक यहां पर स्थान तो एक ही रहा। क्योंकि संख्या एक है परन्तु प्रकृतियों के बदलने से भंग दो हुये। इस प्रकार सब जगह स्थान और भंगो समझ लेना। (गा० १५८ देखो)

भवनत्रिक=भवनवासी १, व्यंतरवासी १, ज्योतिषी १ ये ३ जानना।

भाव लेश्या=मोहनीय कर्म के उदय से, उपशम से, क्षय से अथवा क्षयोपशम से जीव की जो चंचलता होती है उसे भाव लेश्या जानना।

भिन्न मुहूर्त=अन्तर्मुहूर्त के उत्कृष्ट, मध्यम, जघन्य ऐसे तीन प्रकार जानना दो घड़ी अर्थात् ४८ मिनट का एक मुहूर्त होता है, इनमें से एक समय घटाने से ४८—१ =उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त होता है और एक आवली+१ समय=जघन्य अन्तर्मुहूर्त होता है इन दोनों के बीच में के काल में मध्यम अन्तर्मुहूर्त असंख्यात होते हैं इन्हीं को भिन्न मुहूर्त कहते हैं।

मनुष्यद्विक=मनुष्यगति १, मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ ये २ जानना।

मार्गणा स्थान=जिन स्थानों के द्वारा अनेक अवस्थाओं में स्थित जीवों का ज्ञान हो, उन्हें मार्गणा स्थान कहते हैं।

मोहनीय—जो मोहै अर्थात् असावधान (अचेत) करे वह मोहनीय कर्म है। (गा० २१ देखो)

योनि कन्द, मूल, अण्डा गर्भ, रस, स्वेद आदि की उत्पत्ति के आधार को योनि कहते हैं।

राग=अनन्तानुबन्धी माया ४, लोभ ४, वेद ३, हास्यरति २, इनके उदय से जो भाव होता है उसे राग कहते हैं।

वर्ग=अविभाग प्रतिच्छेद शब्द देखो।

वर्गणा=अविभाग प्रतिच्छेद शब्द देखो।

वस्तु=जिस शास्त्र में अंग के एक अधिकार का अर्थ (पदार्थ) विस्तार से या संक्षेप में कहा जाय उसे वस्तु कहते हैं। (गा० ८८)

वासना काल=किसी ने क्रोध किया, पीछे वह दूसरे काम में लग गया। वहां पर क्रोध का उदय तो नहीं है, परन्तु जिस पुरुष पर क्रोध किया था उस पर क्षमा भी नहीं है। इस प्रकार जो क्रोध का संस्कार चित्त में बैठा हुआ है उसी को वासना का काल कहा गया है।

वर्ण चतुष्क—स्पर्श १, रस १, गंध १, वर्ण १ ये ४ जानना।

वाम=मिथ्यात्व को वाम कहते हैं।

विध्यात संक्रमण—मन्द विशुद्धता वाले जीव की, स्थिति अनुभाग के घटाने रूप भूतकालीन स्थिति कांडक और अनुभाग कांडक तथा गुण श्रेणी आदि परिणामों में प्रवृत्ति होना विध्यात संक्रमण है। (गा० ४१३ देखो)

विधान=वस्तु के प्रकार या भेदों को विधान कहते हैं।

विशेष—चय को विशेष कहते हैं।

वेदक योग्य काल=उपशम योग्य काल शब्द देखो।

वेदनीय=जो सुख दुःख का वेदन अर्थात् अनुभव करावे वह वेदनीय कर्म है। (गा० २१ देखो)

वैक्रियिकद्विक=वैक्रियिक शरीर १, वैक्रियिक अंगोपांग १ ये २।

वैक्रियिक षट्क=देवगति १, देवगत्यानुपूर्वी १, नरक ति १, नरकगत्यानुपूर्वी १, वैक्रियिक शरीर १, वैक्रियिक अंगोपांग १, ये ६ जानना।

व्युच्छित्ति=बिछुड़ने का नाम व्युच्छित्ति है अर्थात् जुदा होना।

शतार चतुष्क—तिर्यंच गति १, तिर्यंच गत्यानुपूर्व्य १, तिर्यंचायु १, उद्योत १ ये ४ जानना।

समय प्रबद्ध=एक समय में बंधने वाले परमाणु समूह को जानना। (गा० ४ देखो)

सम्यक्त्व गुण०=संसारी जीव पदार्थ को देखकर जानता है पीछे सप्त भंग वाली नयों से निश्चयकर श्रद्धान करता है इस प्रकार दर्शन, ज्ञान और श्रद्धान करना सम्यक्त्व गुण० कहा है। (गा० १५ देखो)

सर्व संक्रमण—जो अन्त के कांड की अन्त की फालि के सर्व प्रदेशों में से जो अन्य प्रकृति रूप नहीं हुए हैं उन परमाणुओं का अन्य प्रकृति रूप होना वह सर्व संक्रमण है। (गा० ४१३ देखो)

सागर=दस कोड़ाकोड़ी पल्य को सागर कहते हैं।

साता वेदनीय=जो उदय में आकर देवगति में जीव को शारीरिक तथा मानसिक सुखों की प्राप्ति रूप साता का 'वेदयति'—भोग-करावे अथवा 'वेद्यते अनेन' जिसके द्वारा जीव उन सुखों को भोगे वह साता वेदनीय कर्म है। (गा० २३ देखो)

सादिपुद्गल [illegible] जीव [illegible] प्रबद्ध प्रमाण परमाणुओं को ग्रहण कर्म रूप परिणमता है। उनमें किसी समय तो पहले ग्रहण किये जो द्रव्य रूप परमाणु का ग्रहण करता है उस द्रव्य को सादिपुद्गल द्रव्य जानना। (गा० १६०)

सादिबंध=विवक्षित बंध का बीच में छूटकर पुनः जो बंध होता है वह सादि बंध है। (गा० ६० देखो)

स्तव=जिसमें सर्वांग सम्बन्धी अर्थ विस्तार सहित अथवा संक्षेपता से कहा जाय ऐसे शास्त्र को स्तव कहते हैं।

स्तुति=जिसमें एक अंग (अंश) का अर्थ विस्तार से अथवा संक्षेप से हो उस शास्त्र को स्तुति कहते हैं। (गा० ५८ देखो)

स्त्यानगृद्धि=इस कर्म के उदय से उठाया हुआ भी सोता ही रहे; इस नींद में ही अनेक कार्य करे तथा कुछ बोले भी परन्तु सावधानी न होय। (गा० २१ देखो)

स्थान=अंग शब्द देखो।

स्थिति=वस्तु की काल मर्यादा को स्थिति कहते हैं

स्थिति बंध—आत्मा के साथ कर्मों के रहने की मर्यादा को जानना।

स्थावर चतुष्क=स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, पर्याप्त १ ये ४ जानना।

स्थावर दशक=स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयशः कीर्ति १ ये १० जानना।

स्थिति बंधाध्यवसाय स्थान जिस कषाय के परिणाम से स्थिति बंध पड़ता है उस कषाय परिणामों को स्थान को जानना। (गा० २५६)

स्वमुखोदय=कर्म प्रकृति अपने स्वरूप में उदय होने को कहते हैं।

स्पर्श चतुष्क=वर्ण चतुष्क शब्द देखो।

संज्वलन=जिसके उदय से संयम 'सं' एक रूप होकर 'ज्वलति' प्रकाश करे, अर्थात् जिसके उदय से कषाय अंश से मिला हुआ संयम रहे, कषाय रहित निर्मल यथाख्यात संयम न हो सके उसे संज्वलन कषाय कहते हैं। (गा० ३३ देखो)

साधन=वस्तु की उत्पत्ति के निमित्त को साधन कहते हैं।

सुर षट्क=देवगति १, देवगत्यानुपूर्व्य १, वैक्रियिक शरीर १, वैक्रियिक अंगोपांग १, वैक्रियिक बंधन १, वैक्रियिक संघात १ ये ६ जानना।

सूक्ष्म त्रय=सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १ ये ३ जानना।

क्षयदेश=अपकर्षण का काल को क्षयदेश जानना। (गा० ४६५ देखो)

क्षुद्रभव=एक श्वास के १८वें भाग इतनी आयु रहने को क्षुद्रभव जानना।

क्षेप=मिलान करना या जोड़ना।

—:०:—

सागरः—दस कोडाकोडी पल्य को सागर कहते हैं

सातावेदनीय—जो उदयमें आकर देवादिगतिमें जीवको शारीरिक तथा मानसिक सुखोंकी प्राप्तिरूप साताका 'वेदयति'—भोग—करावे, अथवा 'वेद्यतेअनेन' जिसके द्वारा जीव उन सुखोंको भोगें वह सातावेदनीय कर्म है (गा ३३ देखो)

सादिपुद्गलद्रव्य— यह जीव समय समयप्रति समयप्रबद्ध प्रमाण परमाणुओंको ग्रहणकर कर्मरूप परिणमाता है उनमें किसी समय तो पहले ग्रहण किये जो द्रव्यरूप परमाणू का ग्रहण करता है उस द्रव्य को सादिपुद्गल द्रव्य जानना. (गा. ८० देखो)

सादिबंध—विवक्षित बंधका बीचमें छूटकर पुनः जो बंध होता है वह सादिबंध है. (गा ८० देखो)

स्तव—जिसमें सर्वांग संबंधी अर्थ विस्तार सहित अथवा संक्षेपतासे कहा जाय ऐसे शास्त्र को स्तव कहते हैं.

स्तुति—जिसमें एक अंग (अंश) का अर्थ विस्तारसे अथवा संक्षेपसे हो उस शास्त्र को स्तुति कहते हैं. (गा. ८८ देखो)

स्त्यानगृद्धि—इस कर्म के उदय से उठाया हुवा भी सोताही रहे, उस नींदमें ही अनेक कार्य करे तथा कुछ बोले भी परंतु सावधानी न होय. (गा. २३ देखो)

स्थान—भंग शब्द देखो.

स्थिति—वस्तुकी कालमर्यादा को स्थिति कहते हैं.

स्थितिबंध—आत्माके साथ कर्मोंके रहनेकी मर्यादा को जानना.

स्थावरचतुष्क-स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त ये ४ जानना

स्थावरदशक—स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अयशः—कीर्ति ये १० जानना.

स्थितिबंधाध्यवसायस्थान—जिस कषायके परिणाम से स्थिति बंध पड़ता है उस कषाय परिणामों के स्थान को जानना (गा २५६)

स्वमुखोदय—कर्म प्रकृति अपने स्वरूपमें उदय होनें को कहते हैं.

स्पर्शचतुष्क-वर्णचतुष्क शब्द देखो.

संज्वलन जिसके उदयमे संयम 'सं' एकरूप होकर 'ज्वलति' प्रकाश करे, अर्थात जिसके उदयसे कषाय अंशसे मिला हुआ संयम रहे, कषाय रहित निर्मल यथाख्यात संयम न हो सके उसे संज्वलन कषाय कहते हैं. (गा ३३ देखो)

साधन—वस्तुकी उत्पत्तिके निमित्तको कहते हैं.

सुरषट्क—देवगति, देवगत्यानुपूर्व्य, वैक्रियिक अंगोपांग, वैक्रियिकबंधन, वैक्रियिक संघात ये ६ जानना.

सूक्ष्मत्रय—सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण ये ३ जानना

क्षयदेश—अपकर्षणके काल को क्षयदेश जानना (गा. ४४५ देखो)

क्षुद्रभव-एकश्वासके १८ वें भाग इतना आयु रहने को क्षुद्रभव जानना.

क्षेप—मिलान करना या जोड़ना.

साधु स्तुति

शीतरितु जोरैं अंगसब ही सकोरैं, तहां तन को न मोरैं नदी धोरैं ।

धीर जे खरे जेठ की झकोरैं, जहां अंडा चील छोरैं पशु पंछी छांह लोरैं ॥

गिरिकोरैं तप वे धरैं घोर घन घोर घटा चहुँ ओर ओरैं ज्यों ज्यों ।

चलत हिलोरैं त्यों त्यों फोरैं बलये अरेः तन नेह तोरैं परमारथ सों ॥

प्रीति जोरें ऐसे गुरु ओरें, हम हाथ अंजुलि करें शीतरितु जोरें ।।

स्वरूपसम्बोधन —

मुक्तामुक्तैकरूपो यः कर्मभिः संविदादिना ।
अक्षयं परमात्मानं ज्ञानमूर्ति नमामि तम् ।।१।।
श्री भट्टाकलंक विरचित.

—— ——

(१)

चौंतीसस्थान दर्शनपर अभिप्राय

ले. १) ताराचन्द जैन शास्त्री न्यायतीर्थ
नागपुर.

२) सिगई मूलचंद जैन अध्यक्ष
श्री दि. जैन परवार मन्दिर ट्रस्ट
नागपुर

श्रद्धेय पूजनीय १०८ श्री आदिसागरजी महाराज (शेडवाल) जैनसिद्धान्त के मर्मज्ञ हैं, आपने चारों अनुयोगों के महान ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया है. अतः आप चारों अनुयोगोंमें अगाध पांडित्य रखते हैं आपने कर्म सिद्धान्त के ग्रंथ गोम्मटसार कर्मकांड, लब्धिसार आदिका सूक्ष्म दृष्टिसे अध्ययन किया, है. अतः आप कर्मसिद्धान्त के विशेषज्ञ हैं आपने इस अत्यंत कठिन कर्म विषयको जिज्ञासुओं के लिये अत्यंत सरल और सुबोध बनानेके लिये, अत्यधिक प्रयत्न किया है. आपने इस कर्म विषय की पूर्ण जानकारी करानेके लिये 'चौंतीसस्थान दर्शन' नामका ग्रंथ निर्माण किया है. इस ग्रंथमें जिज्ञासुओंको अल्प समय में कर्म सिद्धांत का सुगम रीतिसे बोध हो सकता है.

कर्मप्रकृतियोंके भेद प्रभेद और प्रयोजनादिको जाननेके लिये ग्रंथके चौंतीसस्थान की संदृष्टियां या चार्ट अत्यंत उपयोगी हैं इन चार्टोंका गंभीरतासे अध्ययन करने पर कोई भी जिज्ञासु विषय का पूर्ण ज्ञाता बन सकता है.

पूज्य महाराज ने इस भोगप्रधान विषम कालमें महान वीतरागता वर्धक ग्रंथ की रचना करके भव्य जीवोंका महान उपकार किया है आपके ऐसे पावन कार्यका सबलोग अभिनन्दन करेंगे

समस्त आत्महिताकांक्षी भव्य जीव ऐसे महान ग्रंथोंका अध्ययन करें और अपना अज्ञान भाव दूर करें, इस अभिप्राय से ही पूज्य १०८ श्री. आदिसागरजी महाराजने इस ग्रंथ का निर्माण किया है. यह ग्रंथ सभी शास्त्रभंडारों और मंदिरोंमें संग्रहणीय है

इस ग्रंथ के निर्माण कार्य में आदरणीय ब्रह्मचारीजी उल्फतरायजी रोहतक निवासीने पूर्ण योग दिया है. ब्रह्मचारीजी वृद्ध होने पर भी इस पुनीत कार्यके सम्पादन और प्रकाशन में अहर्निश संलग्न रहे हैं, तभी आप ऐसे कठिन विषय के ग्रंथको प्रकाशित करने में समर्थ हुये हैं

इसलिये पाठकवृन्द ब्रह्मचारीजी के भी अत्यंत कृतज्ञ रहेंगे

(२)

ले. सूरजभान जैन प्रेस आगरा

श्री परमपूज्य अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, चारित्र चूडामणी, तपो मूर्ति, श्री १०८ मुनि आदि सागरजी शेडवाल (बेलगाम) मैसूर प्रान्त

चरणस्पर्श— सादर विनम्र निवेदन है—

कि आज ता. ६ अक्टूबर ६७ को ब्र. उल्फतरायजी (रोहतक) ने अपने चातुर्मास योग स्थान जैन धर्मशाला टेंकी मुहल्ला मेरठ सदर में चौंतीस स्थान दर्शन ग्रंथ के विषय समझाए, मैं उन प्रकाशन के तात्विक विषयों को सुनकर बड़ा प्रभावित हुवा ।

इस विशाल ग्रंथ में जीव कांड, कर्म कांड, धवला पूज्य ग्रंथों के आध्यात्मिक विषयों को मणि माला की तरह एक सूत्र में पिरोया है जो पृथक २ बिखरे थे, यह ग्रंथ परीक्षाओं में बैठनेवाले विद्यार्थियों स्वाध्याय प्रेमियों, विद्वानों, जिज्ञासुओं को दर्पण की तरह ज्ञान झलकाने में सहायक होगा ।

मुझे ज्ञात हुआ कि आदरणीय पू. ब्रम्हचारीजी ही इस पवित्र ग्रंथ के प्रकाशक हैं। वास्तव में उन्होंने इस के संकलन में आप को पूर्ण सहयोग दिया है। साथ ही प्रकाशन आदि के पूरे व्यय का भार अपने ऊपर लिया है। उन का परिश्रम और सद्भावना सराहनीय है। मुझे पूर्ण आशा है कि धर्म प्रेमी बन्धु इस अमृत तारुणी रस के प्रवाह से कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर होंगे। इस अन्तर्भावना के साथ मेरी शुभ सम्मति है

पुस्तक मिलने का पता–

सूचना नं १) निम्नलिखित स्थानों में से किसी भी स्थान के समाज के प्रमुख सज्जन का पत्र मिलने उपर वहां के जिन मंदिर, १०८ मुनि महाराज, तथा उच्च कोटि के विद्यालयों को बिना मूल्य भेंट रूप भेजी जायगी।

नं. २ हर प्रांत के सज्जन अपने प्रांत के केन्द्र नेता से पत्र व्यवहार करें जिनकी सूची निम्नलिखित है उनके पास पुस्तकों का भंडार रहेगा।

1) P. C Jain, 17 B, Dilkhush Street, Park Circus Calcutta-17. Bengal

2) Seth Sukmalchand Jain. B Indarkumar Jain.M A Kishan Flour mill Railway Road Meerut city (u p)

3) Master Jaichand Jain, Jain, Street Rohtak city (Hariana)

4) Singhai Moolchandji Jain. Proprietor sundar saree Bhandar Handloom market Gandhibagh Nagpur. (Maharashtra)

5) Dr. Hemchand Jain, Karanja Distt Akola, (Maharashtra)

6) Dr. S. S. Jain Flat No. 203 Prabhukunj. Pedder Road Bombay 26

7) Seth Ratanchand Fakirchand 37 A, Shanti Bhavan, Chaupati Bombay -- 7 Sea Face

8) P. K Jain Times of India 107/11 Quartar Gate Poona-2

सूचना ३) निम्नलिखित केन्द्रों से मूल्य पर पुस्तक मिल सकेंगी और वह मूल्य द्रव्य उसी संस्थाके दान खाते में जमा हो जायगा। उस बिक्री द्रव्य से प्रकाशक का कोई संबंध नहीं है।

1) Master Jagadhamal Jain Headmaster, Jain High School, Rohtak city (Hariana)

2) Shri Shantisagar Digambar Jain Sidhant Prakashni Sanstha Shanti Birnagar P. O. Shri Mahabirji (Rajasthan)

3) Digambar Jain Mahabir Pathshal, Parwar Pura, Itwari Nagpur (Maharashtra)

4) Shri Mahabir Digamabar Jain Brahmcharya Shram, Gurukul, Karanja, Distt Akola [Maharashtra]

5) Ratanatraya Swadhyay Mandir Shedbal p o. Shedbal Distt Belgaon, Mysore state

------००------

शुद्धि-पत्र [नंबर १]

चौंतीसस्थान दर्शन कोष्टक के शिरनामा में (हेडिंग में) जो अशुद्धियां हैं उनका शुद्धिकरण निम्नप्रकार कर लेना चाहिये.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
२९	१	मिथ्यात्वगुणस्थान	मिथ्यात्वगुणस्थान में
२९	२	(कालम) ६-५-७-७	४-५-६-७
३३	"	कोष्टक नंबर २ सासादन गुणस्थान के शिरनामा (हेडिंग) में ३ से ८ कॉलम में का विषय कोष्टक नंबर १ के समान (हेडिंग) सुधार कर लेना चाहिये.	
३९	२	सामान आलाप	सामान्य आलाप

सूचना:- इसी तरह और जगह जहां जहां सामान शब्द हो वहां वहां सामान्य समझना.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
४१	१	सासादन गुणस्थान	मिश्रगुणस्थानमें
४३	५	पर्याप्त और अपर्याप्त के बीच का यह रेखा निकालकर कालम ५-६ के बीच रखना चाहिये	
५२	४	कॉलम ३ में ३ अंक लिखलेना चाहिये	
६२	२	कॉलम ४ में ४ अंक लिख लेना चाहिये	
६३	२	पर्याप्त और अपर्याप्त के बीच का यह रेखा निकालकर कालम ५-६ के बीचमें लगाना चाहिये और अपर्याप्त यह शब्द कालम ६-७-८ में चाहिये.	
७०	२	पृष्ट ७०, ७३-७५-७८ ८० तथा ८३ में नंबर.	
७३	२	" " "	
७५	२	" " "	
७८	२	" " "	
८१	२	" " "	
१८५	२	पर्याप्त और अपर्याप्त के बीचका यह - रेखा निकालकर कालम ५-६ के बीच में लगाना चाहिये.	
१८५	४	६-७-७	६-७-८

शुद्धि-पत्र (नंबर २)

प्रत्येक स्थानका विषयके २ रे कालमसे आगे ८ कालम तक एक विषय के सामने एक एक विषय आना चाहिये परंतु यहां हरेक पन्ने में अनेक जगह का विषय इस प्रकार एक के सामने एक विषय नहीं आया है पंक्तियां ऊपर नीचे हो गये हैं। उदाहरणार्थ पृष्ट २९ में १२ ज्ञान स्थान देखो

३ रे कालम में	४ थे कालम में	५ वे कालम मे
	१ भंग	१ ज्ञान

२९ ८ (२) (तिर्यंचगति में को नं. १७ देखो को नं. १७ देखो
(२) तिर्यंच गति में के सामने यहां ४ थे और ५ वें कालममें के १ भंग और १ ज्ञान की पंक्ति आना चाहिये था परन्तु वैसा न होकर उस पंक्तिके ऊपर के पंक्ति में रख दिया है यह गलत है। इसी तरह नीचे के पंक्तियां देखो

(३) मनुष्यगति में (४) देवगति में इन में भी सारेभंग और १ ज्ञान की पंक्तिको एक पंक्ति ऊपर रख दिया है इस गलती को सुधार लेना चाहिये अर्थात तिर्यंच गतिके सामने १ भंग १ ज्ञान और मनुष्य गतिके सामने सारे भंग १ ज्ञान देवगतिके सामने सारेभंग १ ज्ञान इस प्रकार समझकर पढ़ा जाय इसी तरह और भी अनेक जगह की गलतियोंको सामने समझकर पढ़ना चाहिये.

शुद्धि-पत्र नंबर (३)

इस पुस्तक में अनेक जगह में भंग के अनुस्वार छूटकर भग ऐसा छप गया है इसलिये यहां शून्य देकर सुधार कर लेना चाहिये इसी तरह और भी बंध, संख्या, संज्ञा, संज्ञी, संयम आदि शब्दों के ऊपर का शून्य जहां जहां नहीं हो वहां शून्य देकर सुधार करके पढ़ा जाय.

शुद्धि-पत्र नंबर [४]

पृष्टांक	क्रमांक	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	१ गुणस्थान १४	१ गुणस्थान १४+१
४	१२	(कालम ३ में) (१७) सम्यक्त्व	[१७) सम्यक्त्व-६
४	१२	(,,)	(६) क्षायिकसम्यक्त्व-
७	२२	(कालम १ में) नामकार्य	नामकर्म
१५	१९	(,,) व असत्य	न असत्य
१५	६	(कालम २ में) तिर्यच	तिर्यंच
१७	२१	(,,) चक्षुरिन्द्रियजन्य	चक्षुरिन्द्रियजन्य
१८	७	(,,) ९७	१७
१९	१०	(,,] सद्योगकेवली	सयोगकेवली
२१	१९	(कालम १ में) श्रद्धा न	श्रद्धान
२२	७	(का. २ में) २१ प्रकृतियों के	२५ प्रकृतियों के
२४	१	(का. ५ में) अगुणस्थान	अतीतगुणस्थान
२४	२	(,,) अजीवसमास	अतीतजीवसमास
२६	२०	(का ३ में) सम्यक्त्वमिथ्यात्व	मिथ्यात्व
२६		क पृष्टसंख्या- (२५]	(२६ क)
२६ क	१४	(कालम ६ में) असंज्ञी	संज्ञी
२८	१	[कॉ ६ में) २ के भंग	१-२ के भंग
२८	१३	(कॉ. ७ में) ६-७-८-९ के भंग	७-८-९ के भंग
२८	१५	(कॉ ७ में) ७-८-९ के भंग	६-७-८-९ के भंग

२८	१५	[कॉ. ८ में) ६–७–८ के भंग	६–७–८–२ के भंग
३१	१	(कॉ. ७ में) भंग	१ भंग
३१	६	(कॉ. ८ में) १ अवस्था	१ भंग
३१	८	(,,) ९ देखो	१९ देखो
३२	१२	(कॉलम ४ में) सारेभंग	सारेभंग
३२	१३	(,,) को.नं १७ देखो	अपनी अपनी अवस्थाके को. नं १७ देखो
३२ क	१	(कॉ, ४ में] १ भंग	कोई १ भंग
३२ क	२	(कॉ. ६ में) २४-२५-२७-२२	२४-२५-२७-२७
३२ क	१	(कॉ ७ में) सारेभंग	सारेभंग
३२ क	२	(,,) को. नं. १७ देखो	अपनी अपनी अवस्थाके को. नं १७ देखो
३२ क	३	(कॉ. ४ में) १ भंग	१ भंग
,,	४	(,,] को. नं १९ देखो	अपनी अपनी अवस्था का को. नं. १९ देखो
३२	१९	स्पर्श १ रस १ वर्ण १.	स्पर्श १ रस १ गंध १ वर्ण १
३३	१	(कालम ७ में) ७	१
३३	२	(कालम १ में) २ पर्याप्ति	३ पर्याप्ति
३३	४	(कालम ४ में) ०१	१०
३३	६	(कालम ६ में) साधान	प्रमाण
३३	१०	(का. ६ में) ७-७-६-५-४-५	७-७-६-५-४-३
३३	१२	(,,) सामास	पर्याप्ति
३३	१७	(का. ७ में) सामास	पर्याप्ति
३४	२	(का. २ में) ६	०
३४	४	(का. ३ में) ६	०
३४	८	(का. ४ में) घटाकर	घटाकर ९
३४	१८	(का. १ में) संयम असंयम	संयम
३४	७	(का. २ में) १	१ असंयम
३५	४	(का. ४ में) लीन	नील
३५	२	(का. ७ मे) ०-३-६-३-३-१ के भंग	०-३-६-३-३-१-३-१ के भंग
३५		(का. ३ में के ३ से १० रद्द समझना)	
३६	१	(का. ३ में) अनाहुलकही	१ आहारकही
३६	१९	(कॉलम ७ में) को गिनकर	९ को गिनकर
३७	४	(का. ७ मे) श्रीपंच	तिर्यंच
३७	१	[का. १ में) २६ भाव	२३ भाव
३८	२	२५ एकेन्द्री आदि जाति ४	एकेन्द्री आदि जाति ४
३८	२	सृपाटिक	असंप्राप्तासृपाटिका
३८	२	अस्थावर	स्थावर
३८	५	अस्थावर	स्थावर

३८	५	आचारीय यशोवृषभा आचार्य	यति वृषभाचार्य
३८	१७	लाभ को में से	लाख कोटि में से
३९	३	(कॉलम १ में) पर्याप्ति	३ पर्याप्ति
३९	१०	(का–३ में) ११ काभंग	१० काभंग
३९	१८	(का. १ में) और काययोग	औदारिक काययोग
४०	१	(का ३ में, २	३
४०	९	(का. ३ में) २१–२७ के	२१–२० के
४०	१५	(का. ३ में)१९ से १९ देखो	१६ से १९ देखो
४०	२२	(का. ३ में)९	६
४१	१	(का. २ में)३	१
४१	१	(का ३ में) ३	१
४१	१८	(का २ में) व, मिश्रकाययोग	वै. मिश्रकाययोग
४१	२६	[का, २ में) ये ३३ भाव	जीवत्व १ ये ३३ भाव
४२	९	यशकीर्ति १ ये २६	यशकीर्ति १, अयशकीर्ति १, ये २६
४२	१५	पल्यका	लोकका
४३	१	(का. ३ में) ६	१
४४	२	(का. ४ में) ४ गतियों में से	को. नं १६ से १९ देखो
४४	३	(का. ७ में) १० देखो	१९ देखो
४४	४	(का. ४ में) १ भंग	१ गति
४४	५	को. नं. १६ में	चारगतियों में से कोई १
४४	६	१९ देखो	गति जानना
४५	४	(का. २ में) आहार का	आहारक
४५	८	(का. ३ में) कार्याकाय	कार्माणकाय
४५	१३	(को८ में को. नं १७	को. नं. १८–१९ देखो
४५	१४	१८ देखो	,, ,,
४५	१३	(का. ४ में) स्वभंग	सारेभंग
४५	१३	(का ४ में) और का. ७ में	,,
४६	०	(का. १ में)और(का ७ में)	१ भंग १ भंग सारेभंग
४६	३	१ भंग १ भंग	सारेभंग सारेभंग
४६	५	१ भंग १ भंग	सारेभंग सारेभंग
४६	८	(का. ६ में) को. नं. १६	को. नं. १९
४६	११	(का. ४ में) १ भंग	सारेभंग
४६	१३	[,,] ,,	सारेभंग
४६	१६	(का. ७ में) १ भंग	सारेभंग
४६	२६	[का. ६ में] योग	भोग
४६	२८	(,,) ६	३
४६	२५	(का. ८ में) को नं. १७	को. नं. १६

४७	११	(का. ३ में) २–३ के भंग	३–२ के भंग
४८	३	(का. ३ में) ६–३ के	३–३ के
४८	३	(कालम ६ में) जानना	२ का भंग को नं. १७ देखो
४९	१	(का. १ में) १० ध्यान	११ ध्यान
४९	५	(का. ६ में) को नं. १७	को. नं १६
४९	२	(का. १ में) १२ आस्रव	२२ आस्रव
४९	१२	(का. ४ में) घटाकर २६	घटाकर ४६
४९	११	(का. ६ में) और का. यो.	औ. का १ वै. का. १ ये १०
४९	१७	(का. ६ में) को. नं १६	को. नं. १७
४९	२२	(का. ६ में) ३३–३२–३२	३३–३३–३३
४९	२३	(,,) नं. १० देखो	नं. १९ देखो
४९	६	का. ८ में को. नं १८	को. नं. १३
४९	१२	,, को. नं. १६	को नं. १८
४९	३	का. १ में १६ भाव	२३ भाव
४९	१९	(का. ३ में) में १८–१७	में २८–२७
४९	२१	,, गति ३२–१९	गतिमें ३२–२९
५०		कालम ४ में और का ७ में	
५०	९	सर्वकाल जानना	लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना
५०	१२	तथा	तक
५१	१८	,, हरेकमें को नं.	हरेकमें १ पंचेन्द्रिय जाति को. नं.
५२	४	का. २ में मे जानना	ये ९ जानना
५२	१	का ५ में १ भंग	१ योग
५२	४	,, १६ मे १९	१७–१८
५२	१०–११	का. ३ में	को नं. १८ प्रमाण
५२	९–१०	का. ५ में	को. नं. १७ देखो
५२	११	,, १७–१८	१८
५३	५	(का. २ में) १०	६
५५	२	शिरनामा में अपर्याप्त	अपर्याप्त सूचना नं २ पृष्ट ५९ पर देखो
५६	१०	कालम ३ में १२–११	१३–११
५८	१	का. ३ में २२ या २	२२ या २०
५८	७	का ७ में १६	१८
६०	१२	का. ४ में १ गति	१ भंग
६०	१४	का. २ में	३
६०	१४–१५	का. ५ में	१ वेद
६०	१६	का. ४ में १ भंग	सारे भंग
६१	१	का. ५ में १ भंग	१ ज्ञान
६१	२	,, ४–५–६ के	४ के

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
६१	१	का. ३ में १	११
६२	४	५७–५९	५७+२=५९
६२	९	६७ जानना	७६ जानना
६३	१६	का. ४ में १ भंग	सारेभंग
६३	१८	का. ४ में जानना	जानना को. नं. १८ देखो
६५	१	कोष्टक नंबर ८	कोष्टक नंबर ९
६५	१	कालम ६–७–८ में	सूचना–इस अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में अपर्याप्त अवस्था नहीं होती है ।
६६	८	का. ५ में क भंगो	२–१ के भंगों
६६	१६–१७	का. ४ में	सारेभंग
६६	१९–२०	का. ५ में	१ भंग
६७	२	का. ३ में ३ का भंग	४ का भंग
६७	९	का. ५ में १ ज्ञान	१ ज्ञान
६७	१७	का. ४ में ३–३ के	६–२ के
६७	२२	का. ५ में ३–३ के	३–२ के
६७	२७	,, १६ के	१७ के
६८	९	काल १ में बंधप्रकृतियां	२५ बंधप्रकृतियां
६९	१	१३७ प्रकृतियों	१३८ प्रकृतियों
६९	२	होते रे	होते हैं
६९	३०	१ लाख	१४ लाख
६९	३१	कोटि ४ कुल जानना	कोटिकुल जानना
७०	७	का ४ में १ भंग	१
७०	८	,, ३ काम भंग	१
७०	७–८	का ५ में	१
७०	१४	कालम ५ में ९ का भंग	९ के भंगमें से कोई १ योग जानना
७३	३	का ६–७–८ में गुण में	गुणस्थान में
७४	७	का. ५ में ३ के	७ के
७४	११	का. २ में को. नं ५ देखो	को नं. १० के २३ भावों में से
७६	९	का ४ में ९ के भंगमें से	९ का भंग
	१०	कोई एक योग जानना	
७८	७	का. २ में १	कायबल १
७९	३	का. २ में कषाय १	कषाय
७९	१७	का ६ मे १ का भंग	२ का भंग
७९	१९	(,,) सारेभंग	१
७९	१३	का ४ में सारेभंग	१ भंग
७९	१४	का. ५ में सारेभंग	१ भंग
७९	१७	का. ७ में सारेभंग	१ भंग

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७९	२०	का. ८ में १–१ के	१ भंग
८१	४	का. ५ में ३ का भंग	६ का भंग
८१	६	का. २ मे १	०
८१	१९	(,,) १	०
८२	१	का १ में १३ भाव	३३ भाव

८५ से ९० पृष्ट तक दुबारा छपवाया है अर्थात ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, क) ८९ ख) ८९ ग) ८९ घ) ८९ ङ) ८९ च) ९० इस प्रकार पृष्टांक समझना.

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
८५	२	का ५में १ से में कोई	१ से ४ में से कोई
८५	१२	का. ६ में गा. २६	गा. २६२
८६	२	का. ५ में १ का भंग	१० का भंग
८६	२८	का. ६ में १ ले ये	१ ले ४ थे
८७	१	का. २ में १३	११
८७	६	का. ६ में ले ४ थे	१ ले ४ थे
८७	१९	का. ३ में ऊपर के २	ऊपर के २३
८७	९	का. ४ में को. नं. १ के	को नं. १८ के
८८	१	का २ में ३	६
८९	९	का ५ में ३–१ के	३–२ के
८९ क	१६	का. ३ में कुज्ञान ३	ज्ञान ३
८९ ख	१२	का. ६ में ९ घटाकर	९ घटाकर और
८९ ग	९	का. ५ में ६ के	१६ के
८९ घ	२	का. ४ और ५ में ३ रे	,,
		कालम में के २ रे से ७ वें नरक के सामनें कोरा जगह में कॉलम ४ और ५ के भंग का. ३ के सदृश जानना.	
९०	२	का. ४ में १ मे ४ गुण	१ से ५ गुण
९०	८	(,,) २ रे से ६ गुण	२ रे से ५ गुण
९० से	१९	इन पृष्टों में जहां जहां गुण, गुणमे, गुण जानना ऐसा लिखा है वहां वहां गुण, गुण में गुण जानना. इस प्रकार समझना.	
९२	१	कालम ४ मे ९–८–७–६–५–४ के	९–८–७–६–४ के
९२	१	का. ७ में	१ भंग जानना
९२	१५	का. ३ में ये ३	ये ४
९२	१७	,, इन्द्रि	एकेन्द्रिय
९२	२१	,, योग	भोग
९२	४	का. ४ में १ से गुण मे	१ से ४ गुण में
९२	८	का. ६ में ७ का भंग	६ का भंग
९३	१-२ के बीचमें	का. ३ में	४–४ के भंग
९३	१	का २ में २	४

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
९३	५	का. ४ में ८का भंग	४ का भंग
९३	१०–११	यें दो लाईन का. ५ में से दो लाईन नीचे सरकाकर पढो ।	
९४	८	का. ३ में ३	१
९४	१२	का. ५ में २–६ के	२–१ के
९४	१०	का. ८ में १ भंग	१ योग
९४	११	,, १ भंग	१ योग
९५	प्रारंभसे	का. ४ में	१ से ४ गुण. में ९ का भंग
९५	प्रारंभमें	का. ५ में	९ के भंग में से कोई १ योग जानना
९५	१० के नीचे	का. ७ में	४ थे गुण में १ का भंग
९५	,,	का. ८ में	१ पुरुषवेद जानना
९५	११	का. ७ में १ भंग	सारे भंग
९६	६	,, के १५ के	के २५ के
९६	२१	,, ३ रे गुण मे	३ रे ४ थे गुण. में
९६	१८	,, २५ का भंग	२४ का भंग
९७	१	का. ३ में २० का भंगमे से	१० का भंग ऊपर के कर्म भूमिके २१ के भंगमें से
९७	प्रारंभमें	का. ४ में	६–७–८ के भंग
९७	१	का. ६–७–८ मे क्रमसे ५	१ ज्ञान ये तीनों नीचे के स्थान १२ ज्ञान के सामने रखकर पढो ।
९७	२४	,, कुल	श्रुत
९७	७	का. ४ में ४ थे गुण मे	४ थे ५ वें गुण में
९७	९	का. ६ में घटाकर १	घटाकर ५
९८	७	का. ३ में ६	३
९८	४	का. ५ में ११ के भंगों	१, २ के भंगो
९९	१	का. ५ में १–२ के भंगमे	२ के भंगमें
९९	२६	का. ३ में इस सूचना को इसके बीचमे आये हुए कालम ३ और ४ के बीच मे का रेखा निकालकर पढो ।	
९९	१	का. ६ में ४	६
९९	१८	का. ६ में	२, ३, ४ पृ. १०० देखो
१०१	११	का. ९ में	नीचे जो कालम १ में शुरु हुई सूचना है वह यहां उसके बीचमें के हरेक कॉलम के रेखाओं को हटाकर पढो ।
१०१–१८	१९ के बीच में	का. ३ में	१–१–१–१ के भंग
१०१	२७	का. ३ में २ रेसेपूर्व गुण मे	२ रे से ५ वें गुणस्थान मे
१०१	१३ के ऊपर	का. ६ में	२
१०१	१ के ऊपर	का. ६ में तक के	तक के जीवों मे जन्म लेनेकी अपेक्षा जानना
१०२	१	का. २ में १	२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
१०२	५	का. ४ में १ से ४	१ से ५
१०२	२४	का. ६ में ६	८
१०३	११	का. ३ में मे २ ५ का	मे २ मे ५ का
१०७	२३	,, २ का भंग	५ का भंग
१०३	१२–१३	का ६ में	४ का भंग-पर्याप्त के ५ के भंगमे से कुअवधिज्ञान घटाकर ४ का भंग जानना।
१०४	१	का. ५ में ६ का भंग	६ के भंगमे से कोई १ उपयोग
१०४	३	का. २ में रौद्रध्यान ३	रौद्रध्यान ४, धर्मध्यान ३
१०४	१४	का. ३ में ऊपर के	ऊपर के ८ के भंग मे
१०५	१	का. ४ में १ ले गुण मे	१ ले २ रे गुण मे
१०५	१	का. ७ में १ भंग	सारेभंग
१०५	२०	रा. ६ में अविरत ८ की	अविरत ७ की
१०५	२१	,, जगह गिनकर ३९	जगह ८ गिनकर ३८
१०८	१८	का. ३ में असंज्ञी पंचेन्द्रिय	चतुरिंद्रिय
१०८	५	का. ५ में २७ के	१७ के
१०८	५	का. ७ में १ भंग	सारेभंग
११०	१	कोष्टक नं. १	कोष्टक नं. १७
११०	१८	का. ४ में २७ का भंग	१७ का भंग
१११	३	का. १ में २५	२६
१११	८	का. २ में मनुष्यायु १, उच्चगोत्र	मनुष्यायु १, वैक्रियिकद्विक २ उच्चगोत्र
११३	१	का. ६ में ३	५
११४	१	का. ४ मे	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जानना
११४	१	का. ५ में	१ संज्ञी प. पर्याप्त जानना
११४	१	का. ६ में १	२
११४	९	का. ६ में ३	३–६
११४	४	का. ४ में १ भंग	सारेभंग
११४	६	का ७ मे १ भंग	सारेभंग
११५	१	का. ४ मे १ आयुबल प्रमाण	१ आयुबल प्राण
११५	३	का. ४ मे १ भंग	सारेभंग
११७	९	का. ३ मे ६ गुण के	६ गुण के ९ का भंग के
११८	१	का. ३ मे १	३
११८	१	का. ४ १ भंग में	सारेभंग
११८	१	का. ५ में सारेवेद	१ वेद
११८	१३–१४	का. ६ में	सूचना–आहारककाय योगी पुरुषवेदीही होता है अर्थात पुरुषवेदवाले के ही आहारकपुतला बनता है।
११८	७	का. ७ में	यह दोनों पंक्तियां क्रमसे चौथा भूमि में १ ले २ रे गुण और ४ थे के सामने पढो।

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
११८	९, १०, ११	का. ८ में	
११९	१	का. ३ में ० का भंग आगे	० का भंग—आगे के चारों
११९	२	का. ३ में वेद है ही	वेद नहीं
१२०	४	का. ३ में १७ का भंग	१३ का भंग
१२२	१	का. ४ में ६—७—८	काट डालना चाहिये
१२२	४	का. ५ में ४—४—६	४—५—६
१२२	४-५-६	का. ५ में ये तीनों पंक्तियां ६ वें ७ वें ८ वें गुण के सामने पढो।	
१२२	७—८	का. ५ में २ का भंग जानना	यह पंक्ति ९ वें गुण. के सामने पढो।
१२२	९ वे	का. ५ में	१ का भंग जानना. यह १० वे गुण. के सामने पढो।
१२३	१	का. ८ में १ के भंगमे से कोई	१ ज्ञान
१२३	२	,, १ ज्ञान जानना	सारे भंगो में
१२३	९	का. ३ में श्रुति	श्रुत इसी तरह जहां जहां श्रुति लिखा है वहां वहां श्रुत ऐसा पढो।
१२४	७	का. ४ में २—३ के भंग	३—२ के भंग
१२५	९	का. २ में ४	३
१२५		का. ३ में	
	७	२—३—३—१—२—३	२—३—३—३—१—२—३
१२८	१६	का. ५ में ३ का भंग	३ के भंग में से कोई १ सम्यक्त्व
१२९	४	का. ४—५ में १ संज्ञा जानना	यह काट डालना चाहिये
१२९	४ के नीचे	का. ४—५ में	१ संज्ञी जानना
१२९	२ के नीचे	का ७—८ में	०
१३०	५	का. ३ में २ का	१ का
१३१	२४	का. ३ में ज्ञान	ज्ञान ३
१३४	२०	का. ४ में संशयमिथ्यात्व	संशयमिथ्यात्व विनयमिथ्यात्व
१३४	२०	का. ५ में विनयमिथ्यात्व	यह ४ थे कालम में पढो
१३५	१९	,, घमोकर १—२ का	घटाकर २२ का
१३६		का. ४ में	
	१२	अविरतका ४ का भंग घटाकर यह काट डालना चाहिये	
१३७		का. ४ मे	
		३ रे ४ थे गुण में	३ रे ४ थे गुण में
१३७	५—६—७	का ५ में ये तीनों पंक्तियों को ४ थे कालम में लिखें ३ रे ४ थे गुण के सामने पढो।	
१३७	८—९	का. ७ में कोई १	यह काट डालना चाहिये
१३७	११	का. ७ में कोई १	कोई १ वेद
१४१	१४	का. ४ में ४ जीव ५ का	४ जीव ये ५ का
१४१	८	का ४ में पृथ्वी आयु	पृथ्वी, वायु

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
१४२	१६	का. ३ में १ रे गुण	२ रें गुण
१४२	२४	का. ६ में २ मे	मे ३
१४३	१०	का. ६ में १७ के	२७ के
१४३	१२	का. ६ में मे ४ ज्ञान १	मे ४
१४५	१४	का. ३ में का भंग	२० का भंग
१५१	९	का. ४ मे ११ के	१९ के
१५५	२०	का. ६ में १ रे	२ रे
१५७	६	का. ६ मे १९ में	१६ में
१५७	२	का. ८ में १–२ के	२ के
१५७	८	का. ४ में १ ले गुण में	१ ले २ रे गुण. मे
१४२	१७	का. ४ में चारों गतियो मे से कोई १ गति	एक मनुष्य गति
१४४	११	का. ४ में चारोगतियों मे से कोई १ गति	एक मनुष्य गति
१४९	६	का. ४ में तिर्यंच या मनुष्य गतियों मे से कोई १ गति	एक मनुष्य गति
१५२	१५	स्त्री पुरुष ये स. मिथ्यात्व १ स. अभि. १, २ वेद घटाकर	स्त्री पुरुष ये २ वेद, सम्यग्मिथ्यात्व १, सम्यक्प्रकृति १ ये ४ घटाकर
१५२	१६	नामकर्म २८	नामकर्म २७
१५३	९	सत्ता जानना	सत्ता अनन्तानुबंधी कषाय ४ नरकायु १, तिर्यंचायु १, ये ६ घटाकर जानना
१५१	११	सत्ता जानना	सत्ता ऊपर की १४२ प्रकृतीकी सत्तामे से दर्शन मोहिनी की तीन प्रकृति घटाकर १३९ जानना।
१५३	१३	सत्ता जानना	सत्ता ऊपर की १३९ प्र. की सत्तामे से देवायु १ घटाकर १३८ जानना।
१५८	३	का. ६ में भंग एक	भंग २५ कषायों में से एक
१५९	१	का. ५ में १ कुज्ञान	१ ज्ञान
१५९	२	का ६ में घटाकर १	घटाकर ५
१५९	१	का. ८ में १ कुज्ञान	१ ज्ञान
१६०	११	का. ३ में ३–१–१ के	१–३–१–१ के
१६१	४	का. ३ मे ३	४
१६१	५	का. ६ में २	४
१६१	१३ के नीचे	का. ३ में	१ भव्य जानना
१६१	१४	का ५ में भंग जानना	सम्यक्त्व जानना

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धिता
१६२		का. ६ में	
	१४	१ आहारक—आहारक	१ आहार—आहार
१६६	८	का. १ में का भंग	चक्षुदर्शन, ये ५ का भंग
१६६	४	का. ३ में ३१–२७–२५	२३–२६–२५
१७०	२	का. २ में वेदनीय	वेदनीय २
१७०	४	,, उपघात १	उपघात १
१७२	१७	का. ४ मे क्षायीक	क्षायिक
१७३	७	का. २ मे अनन्तसिद्ध	अनन्तसिद्ध
१७६	१२	का. २ में	१ असंयम
१७७	७–८	का. २ में १ संज्ञी	१ असंज्ञी
१८०	५	का. १ में ५ संज्ञी	५ संज्ञा
१ १	२	का. २ में १	१ तिर्यंचगति
१८१	३	,, १	१ द्वीन्द्रियजाति
१८१	४	,, १	१ त्रसकाय
१८१	४	का. १ मे योग	१ योग
१८१	५	का. २ में	४
१८१	१०	का. २ में १	१ नपुंसकवेद
१८१	११	का. २ में २	२३
१८२	२	का. १ में १३	१३ संयम
१८२	३	का. २ मे १	१ असंयम
१८२	६		३ का भंग
१८२	५	का. ७ में ३ का भंग	१ भंग
१८२	६	,,	३ का भंग
१८२	२३	का ६ में २ से	१ ले
१८३	४	का ४ में	८ का भंग
१८३	५	का ५ में	८ के भंग मे से कोई १ ध्यान
१८३	१३	का. ६ में	३८–३३ के भंग
१८३	२२ २३	का. ६ में	२४–२२ के भंग
१८५	३	का. ७ में	१
१८५	१२	का. २ में १	१ तिर्यंचगति
१८५	९	का. ५ में	१
१८६	१	का. २ में १	१ त्रीन्द्रिय जाति
१८६	२	का. २ मे १	१ त्रसकाय
१८६	५	का. २ मे १	१ नपुंसक वेद
१८६	१०	का २ मे १	१ असंयम
१८६	११	का. २ मे १	१ अचक्षुदर्शन
१८७	१३	का. ६ में १ ले गुण में	१ ले २ रे गुण में

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
१८७	८	का. ८ में	१
१८७	२०	का. ६ में २	१
१९०	११	का. २ में १	१ तिर्यंचगति
१९१	१	का. २ में १	१ चतुरिन्द्रिय जाति
१९१	२	,, १	१ त्रसकाय
१९१	५	,, १	१ नपुंसकवेद
१९१	८	का. ७ में	पर्याप्तवत्
१९१	८	का. ८ में ७-८-०	७-८-९
१९१	१०	का. २ में १	१ असंयम
१९१	१५	का. ४ में २ का भंग	३ का भंग
१९२	४	का. ७ में १ ज्ञान	१ भंग
१९२	५	का. २ में १	१ असंज्ञी
१९२	२०	का ६ में २	१
१९२	८	का. २ में	४
१९३	१७	का. ६ में कुअवधि	पर्याप्तवत् २५
		ला टाकर २५	
१९४	८	का. २ में सर्वलोक	सर्वकाल
१९४	१२	,, ७ लाख	९ लाख
१९५	१२	का. २ में १	१ तिर्यंचगति
१९६	१	का. २ में १	१ पंचेन्द्रिय जाति
१९६	२	का. २ में १	१ त्रसकाय
१९६	७	का. ३ में को. नं. १७	को. नं २२
१९७	१३	का. ६ में गुण १ में	गुण में
१९८	१७	का. २ में स्त्री नपुंषक	स्त्री पुरुष नपुंसक
१९८	२२	,, से २८	से २७
१९९	९	घटाकर ७ जानना	घटाकर १० जानना
२००	१३	का. ३ में को. नं. १९	को. नं. १६ से १९
२००	१३	का. ६ में को. नं. से ११	को. नं. १६ से १९
२००	१८	का. ६ में	
२००	९	का. ८ में १ संज्ञी पं.	१ संज्ञी पं. अपर्याप्त
२०१	१२	का. ७ में १ भंग	सारे भंग
२०६	२३	का. ६ में नं. १७	नं. १७-१८
२०८	१०	का. ६ में नं. १८	नं. १७
२०८	२४	का. ३ में	
		५-६-६-७-६-७	५-६-६-७-६-७-६
२०८	२८	का. ६ में ४-६ के	४-४ के
२०९	१	का. ३ में १	४

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
२०९	१ के ऊपर	का. ९ में	३ मनुष्यगति में- ४-३-६-२ के भंग को. नं. १८ के समान
२०९	२२	का. ६ में २	१
२०९	२३	,, ७-९-७-१	८-९-७-१
२११	२५	का. ४ में १७-१६-१६-१६	१७-१६-१६-१७
२११	२५	का. ५ में १७-१६-१६-१७	१७-१६-१६-१९
२१४	८	३७	२७
२१४	१८	३ राज तक	३ रा नरक तक
२१५	२३	का. १ में २३ भाव	२३ भाव
२१५		का. ७ में स्थान क्रमांक १२, १४, १७, २०, २३ छोड़कर बाकी के जगह ० शून्य समझना।	
२१७	१५	का. १ में १	१ तिर्यंचगति
२१८	२	,, १	१ एकेन्द्रिय जाति
२१८	३	,, १	१ पृथ्वीकाय
२१८	५	,, १	१ नपुंसकवेद
२१८	११	,, १	१ असंयम
२१८	१२	,, १	१ अचक्षुदर्शन
२१९	३	का. १ में १	१ असंज्ञी
२२१	११	,, १	१ तिर्यंचगति
२२१	१२	,, १	१ एकेन्द्रिय जाति
२२१	१३	,, १	१ जलकाय
२२२	१	,, १	१ नपुंसकवेद
२२२	६	का. २ में १	१ असंयम
२२२	७	,, १	१ अचक्षुदर्शन
२२२	११	का. ८ में को. नं. २	को. नं. २१
२२२	१३	का. ७ में को. नं. १	को. नं. २१
२२२	१४	का. २ में १	१ असंज्ञी
२२३	५	का. ४ में को. नं. १	को. नं. २१
२२३	१४	का. २ में संख्यात	असंख्यात
२२४	१२ के नीचे	का. ६ में	लब्धिरूप ४ पर्याप्ति
२२४	७	का. २ में को. नं. २	को. नं. २१
२२४	१०	,, १	१ तिर्यंचगति
२२५	१	,, १	१ एकेन्द्रिय जाति
२२५	२	,, १	१ अग्निकाय
२२५	५	,, १	१ नपुंसकवेद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
२२५	१०	,, १	१ असंयम
२२५	११	,, १	१ अचक्षुदर्शन
२२६	१	,, १	१ मिथ्यात्व जानना
२२६	२	,, १	१ असंज्ञी
२२६	८	का. ६ में १ के गुण में	३
२२६ ९ के नीचे		,,	३ का भंग पर्याप्तवत्
२२८	१	का. २ में १	१ मिथ्यात्व
२२८	१०	,, १	१ तिर्यंचगति
२२८	११	,, १	१ एकेन्द्रिय
२२८	१२	,, १	१ वायुकाय
२२९	१	,, १	१ नपुंसकवेद
२२९	१२	,, १	१ मिथ्यात्व जानना
२२२	१३	,, १	१ असंज्ञी
२२६	६	,, १	१ असंयम
२२९	७	,, १	१ अचक्षुदर्शन
२३०	२	का ३ में को नं ३०	को नं. २१
२३१	११	का. २ में १	१ तिर्यंचगति
२३१	१२	,, १	१ एकेन्द्रिय जाति
२३१	१३	,, १	१ वनस्पतिकाय
२३१	१६	,, १	१ नपुंसकवेद
२३२	५	,, १	१ असंयम
२३२	६	,, १	१ अचक्षुदर्शन
२३२	१३	,, १	१ असंज्ञी
२३५	१७	का. ३ में को. ९	को
२३६	१	का २ में १	१ त्रसकाय
२३७	१४	का. ३ में ४	६
२३९	६	का. ३ में १–२–३–३	१–२–२-३–३
२४२	१	का ६ में ४६ का	४–६ के
२४२	१७	का. ६ में १० नं.	को. नं
२४३	९	का. ३ में ८–९–१०	८–९–१०
२४३	१५	,, ५१–४६–४	५१–४६–४२
२४३	१६	,, १०–१०	११–१०
२४४	१	का. ५ मे	को नं. १८ देखो
२८४ ३	४	का २ मे १	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
२५३	७	का ३ में ६ का भंग	७ का भंग
२५३	७	,, ऊपर के ७	ऊपर के ८
२५३	९०	,, ७ का भंग	६ का भंग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
२५३	१०	,, ऊपर के ८	ऊपर के ७
२५३	११	,, ७ का भंग	६ का भंग
२५३	२८	,, ११-११-१३	११-१२-१३
२५४	६	,, ४१-३६-३२ के	४१-३६-३२-३२ के
२५४	२	का. २ में को. नं. १८	को नं २६
२५६	८	का २ में	
		एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ति
२५८	२१	का. ३ में को. ७	को.
२५९	२	का. २ में केवलदर्शन	केवलज्ञान
२५९	४	का १ में २१	२१ ध्यान
२६३	७	का ३ में ५	१
२५७	२५	का. ५ में १ दर्शन	१ लेश्या
२६७	८	का. १ में १६ रत्र	१६ भव्यत्व
२६७	१८	का. २ में	२
२६८	८	का. २ में को. नं. २६	को नं. ३६
२६८	१३	का. ६ में का. नं. २६	को नं. ३६
२७१	८	का. २ में १	१ त्रसकाय
२७१	९	,, १	१ अनुभय वचन योग
२७६	१	का. ४ में १ भंग	सारेभंग
२७६	१४	का. ५ में को. नं. ८	को. नं. १
२७६	८	का. २ में को. नं. १८	को. नं. १
२७६	२९	का. ४ में १ वेद	१ भंग
२७९	१	का. ३ में ६-५६-६	६-५-६-६
२८०	१	का. ३ में ५	२
२८०	१	,, १ से गुणस्थान में	१ से ४ गुण में
२८७	२६	का. ६ में २४-५-२७	२४-२५-२७
२८८	३	९८ उदययोग्य	९८ उदययोग्य
२८८	११	अंतमुहुर्त तक एक	अंतमुहुर्त कम एक
२९०	१५	का. ३ में २-३-१-९	२३-१९
२९१	२४	का ३ में १	९
२९२	४ ५ के बीच में	का. २ में	वै. क.मयोग १
१९३	५	समचतुरस्रसंस्थान २	समचतुरस्रसंस्थान १
२९४	१४	का. २ में पंचेन्द्रिय	संज्ञ पंचेन्द्रिय
२९५	१	का. ६ में १ पंचेन्द्रिय	१ संज्ञी पंचेन्द्रिय
२९८	५	मध्यमान	बध्यमान
३००	१	का २ में ३ पुरुषवेद	१ पुरुषवेद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
३०२	९	घटाकर ४६ प्र.	घटाकर १४६ प्र
३०३	१०	का. ६ में ३ का भंग	१ का भंग
३०४	२१	का. ७ में १६-१८-१८	१६-१८-१९
३०५	५	का ८ में सारेभंग	१ भंग
३०६	१	का ६ में १७-१८-१२	१६-१७-१९
३०६	२	का. २ में को नं १	को. नं. २६
३०६	१४	का. ८ में को नं ७	को. नं १७
३०७	९	का. ७ में १	१ भंग
३०७	४	का. १ में १० उपयोग	२० उपयोग
३०७	८	का. २ में को नं. १	को. नं १८
३०७	२९	का. ६ में ४-६-१-४-६	४-६-२-४-६
३०८	२४	का ६ में ३४-३७-२८	३४-३७-३८
३०९	१०	का. ६ में १ से ४ थे गुण	१ से २ रे ४ थे गुण
३०९	१२	का. ६ में ४९-३२	३९-३२
३१४	९	का २ में ३३०-२३१	२३०-२३१
३१४	१२	का. ६ में पर्याप्त	अपर्याप्त
३१४	१६	,, पर्याप्त	अपर्याप्त
३१६	१३	का . में	१ भंग
३१६	१७	का ६ में २३-२३ २३-२३ के	२३-२३-२३-२३ के भंग को नं. १७ के २५-२५-२५-२५ के
३१९	५	का ७ में भंग	१ भंग
३२१		का ४ में सारेभंग	को. नं १९ देखो
३२२	[illegible]	का ६ में ३	१२
३२२	७	का. ७ में १ भंग	सारेभंग
३२२	७	का. [illegible] में ५	५५
३२३	२०	का. ३ में वेद थे २	वेद थे ३
३२४	५	का. ३ में को. नं १७	को नं. १९
३२४	१७	का ३ में २५-२४-२५-२६	२६-२४-२५-२८
३२५	१६	का. ६ में २८-२३-२२	२८-२३-२१
३२५	९	का ८ में को नं १८	को नं. १९
३२८	१२	का ५ में १-२ के भंग	१-२-१-२ के भंग
३२८	८	का ५ में को नं १७	को. नं ३७
३२९	५	का ६ में १७-१८-९	१७-१८-१९
३२९	६	का २ में १ देखो	१७ देखो
३२९	१८	का २ में २ ३-३-२-३	२-२-३-३-२-३
३२९	१९	का ३ में १८ देखो	१७ देखो
३२९	१६	का ५ में १६ देखो	१७ देखो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
३२९	२१	का. ३ में २ ३ के भंग	२-३-३२-३
३३०	१	का ५ में ६-२	३-१
३३०	२	का ३ में १८ देखो	१७ देखो
३३१	४	का. ८ में अपने अपने	अपने अपने स्थान के सारे भंगों में कोई एक भंग जानना।
३३२	८	का. ३ में २९-२७ २८-३१-२७-२८-२९-२९	२९-२७-२८-३१-२८ २९-२९
३३२	१९	का. ६ में २८-२२ २३-२५-२६-२५	२४-२२-२३-२५ २६-२४
३३२	१	का. ६ में १७ के समान	४७ के समान
३३२	८	का. ७ में ,,	सारे भंग को. नं. १९ देखो
३३२	१०	का ८ में ,,	को. नं. १९ १ भंग
३३५	८	का. ५ में को नं. १९	कोई १ भंग
३३५	९	,, १८-१७ देखो	को नं. १७ देखो
३३५	६	का. ८ में को नं. १६	कोई १ भंग
३३५	७	का. ८ में १८-१७ देखो	को. नं. १७ देखो
३३७	९	का ६ में	
३३७	४	का. ८ में	को नं १६ देखो
३३७	८	का. ६ में.	को नं १६ देखो
		२३-२१-२३-२१-२३-२३	३२-२१-२३-२३
३३७	११	का. ६ में स्त्री	स्त्री-पुरुष
३३८	४	का ३ में को नं. १	को. नं. १६
३३८	४	का. ६ में ३-४ के भंग	२-३ के भंग
३३८	९ के नीचे	का. ४ में	१ असंयम
३३८	१० के नीचे	का ५ में	१ असंयम
३३८	११	का. ४ में. २ में से	१-१ में से
३३८	१२	का ५ में दो में से	२-१ में से
३४०	२६	का. ६ में ३-४-४-४-४-४	३-४-४-३-४-४ के भंग
३४३	९	का. ३ में ३३-३१-३१-२९-२९	३३-३०-३१-३१-२९-२९
३४५	२	का. २ में ४	२
३४५	६	का ८ में सारे भंग	१ भंग
३४५	८	,, सारे भंग	१ भंग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
३४५	११	का. २ में १	३
३४६	७	का. ३ में औ. मिश्रकाययोग	कार्मीण काययोग १
३४७	१४	का. ६ में १–१ के भंग	१ का भंग
३४८	१४	का. ३ में १३–१२–११–१०–११–९	 १३–१२–११–१०–१०–९
३४९	९	१३० ९ में गुण	२१–९ में गुण.
३४९	८	२१—१० में गुण.	१७–१० में गुण.
३४९	५	गुण ९ में	गुण हैं.
३५०		पृष्टसंख्या (१५०)	(३५०)
३५२	२५ के ऊपर	का. ३ में	५
३५३	१०	का. ६ में २–१–१ के	६–१–१ के
३५३	१२	का. ५ में	को. नं. १६–१८–१९ देखो
३५३	१३	,,	को. नं. १७ देखो
३५४	३	,, सारेभंग	१ वेद
३५४	१	का. २ में २	२२
३५४	९	का. ५ में सारेभंग	१ भंग
३५४	१२	,, सारेभंग	१ भंग
३५४	१६	,, सारेभंग	१ भंग
३५६	१५	का. ६ में को. नं. १८	को. नं १९
३५९	२१	,, ३–२ के भंग	३–१ के भंग.
३५६	२४	,, ६–२ के भंग	६–१ के भंग
३५६	११	का. ७में सारेभंग	१ भंग
३५६	१३	,, १ मग	सारेभंग
३५६		सूचना–अंतमें क्रमांक १९ स्थान सम्यक्त्व का छूटा हुआ विषय आगे पृ. ३६१ पर देखो	
३५८	१६–१७	का ८ में को. नं. १६ देखो	को. नं. १६ से १९ देखो
३५८	२३	,, को. नं. ६६	को. नं. १६
३५९	३०	का. ३ में २६–४१ के	४६–४१ के
३६१	४	का. १–२ में ५६ का	३५६ का
३६२	१	का. २ में १	४
३६३	१० के नीचे	का. ६ में	अपने अपने स्थान की लब्धिरूप ६–५–४ भी होती हैं।
३६४	२६	का. ३ में १	१०
३६५	२	का ६ में १–१ के भंग	१—२ के भंग
३६६	५	का. ८ में १ भंग	१ ज्ञान
३६७	२५	का॰ ३ में २ का भंग	२—३ के भंग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
३६७	१९	का ७ में को. नं. १९	को नं. १६
३६८	११ १२	का. ८ में को. नं. १९ देखो	को. नं. १६ से १९ देखो
३६९	१६	„ ७-१८	१७-१८
३६९	९ के ऊपर	का. ४ में	१ भंग
३६९	९ के ऊपर	का. ५ में	१ अवस्था
३७०	१५	का. ८ में को. नं. १७	को. नं. १६
३७२	५	का. २ में वेदकसम्यक्त्व	वेदकसम्यक्त्व
३७२	२२	का. ३ में २३—२६—२ के	२३ २६-२५ के
३७५	५ के नीचे	का. ६ में	अपने अपने स्थान की लब्धिरूप ६-५-४ भी होती हैं।
३७६	१३	का. ४ में सारेभंग	१ भंग
३७७	१ के नीचे	का. ४—५ में	को. नं. १९ देखो।
३७७	८	मप्रत्या	प्रत्या
३७७	१८	„ स्थान	समान
३७७	८	का. ६ में ९ के	१९ के
३७७	४	का. ८ में १ ग	१ भंग
३७७	५	„ को. १	को नं. १६
३७८	११	का. ३ में ३ के	३—३ के
३७९	२५	का. ६ में ३-३-१ के	३-३-१-१ के
३८०	१	का. २ में २	२ भव्य अभव्य
३८०	१६	का. ३ में १-१-२	१-१-१-२
३८०	२	का. १ में स्यक्त्व	सम्यक्त्व
३८०	७	का ६ में १	५
३८१	२५	का ३ में ३	२
३८२	५	का ३ में ९	४९
३८२	६	का. ४ में को. नं. १८	को. नं. १७
३८२	१३	का. ६ में ३—३० के	३९—३० के
३८३	२	का ६ में ४१-९	४१-२९
३८६	१५	का. ६ में ४०-५-३-३९	४०-३५-३०-३९
३८६	१ के नीचे	का ६ में	अपने अपने स्थान की लब्धिरूप ६-५-४ भी होती हैं।
३८६	१७	का. ३ में को नं. ७	को. नं १७
३८७	१	का. ५ में	को नं. १६-१८-१९ देखो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
३८७	१६	का. ६ में को. नं. ७	को नं. १७
३८७	६	का. २ में को नं. ५१	को नं २६
३९०	१४	का. ४ में १ भंग	सारे भंग
३९०	१४	का. ७ में १ भंग	सारे भंग
३९१	१९	का. ६ में ६-१ के	६-१ के
३९२	२७	का. ३ में गतियें	हरेक में
३९३	१	का १-२ में २० उपयोग	२० उपयोग १०
३९३	१२	का. ३ में ३-२-२-६-६-७-५-६ ८	३ ४ ५ ६ ६ ५ ६ २
३९३	१५	का ३ में ५ ६ ६ ७ ६ ७ ६ ६	५ ६ ६ ८ ६ ७ ६ ६
३९३	२७	का. ६ में पृथक्त्व विचार १	पृथक्त्व वितर्कविचार १
३९४	३	का ७ में १ ध्यान	१ भंग
३९४	२५	का. ६ में २९ ० ३१	२९ ३० ३१
३९४	२९	का ६ में ३५ ८ ३९	३५ ३८ ३९
३९५	९	का ३ में नं. १८ ५१	नं. १८ के ५१
३९५	१०	„ ३७ २ २०	३७ २२ २०
३९५	२८	„ १० १० का भंग	१० १० के भंग
३९६	२१	का. ३ में २७ ५ २६	२७ २५ २६
३९६	१३	का. ६ में २४ २२	२४ २२
३९७	१०	प्राप्त हो सके	प्राप्त न हो सके
३९८	२१ के नीचे	का ६ में	अपने अपने स्थान की लब्धिरूप ६ ५ ४ भी जानना।
३९९	१४	का ७ में को नं १६ मे	को. नं १६ मे १९ देखो
४००	१	का ३ में ५	६
४००	१०	का. ६ में ३	७३
४००	२३	„ २० २ २१	२० २२ २१
४०२	१	का १ में दर्शन	१४ दर्शन
४०२	१६	का ३ में नं„ ४ के	नं ५४ के
४०३	१९	का ६ में ३८ ९ ४३	३८ ३९ ४३
४०३	२८	„ ९ ४	९ ४०
४०७	१८	का ३ में १	१०
४०७	१८	का. ६ में ८	७
४०८	५	का २ में १०	१५
४०८	८	का ५ में ४ देखो	५४ देखो
४०८	१२	का ३ में ३	६

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
४०८	१३	का. ६ में १८ १ के	१८ १४ के
४०८	१७	,, १८ १ के	१८ १४ के
४०९	६	का. ८ में को. नं. १९	को. नं. ५४
४१०	२	का. २ में ५४ देखो	१६ देखो
४१०	२	का. ६ में ४ देखो	५४ देखो
४१०	४	,, ४ देखो	५४ देखो
४१०	६	का. ७ में ४ देखो	५४ देखो
४१०	७	का. ४ में १ भंग	सारेभंग
४१०	२६	का. १ में. ४२–४३ के	४२– ३३ के
४११	१३	का. ३ में ४–३६ के	४०–३६ के
४११	११	का. ६ में ३३–४–३५	३३–३४–३५
४११	१२	,, ३३–४–३	३३–३४
४११	२४	का. ६ में और ७–८ में	४ देवगति में

पृष्ठ	पंक्ति	कालम ६	का. ७	का ८
४११	२४	४ देवगति में २८–३२–२८–३७ ३२–२८–२८ के भंग को. नं. १९ के ४३–३८–३३–४२ ३७–३३–३३ के हरेक भंग में से पर्याप्तवत् शेष ५ कषाय घटाकर ३८-३३–२८–३७ ३२–२८–२८ के भंग जानना	सारेभंग को. नं. १९ देखो	१ भंग को नं. १९ देखो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
४२१	,,	का. ५ में	को नं. १६ देखो
४१२	१०	का. ३ में ३३–३–३१	३३–३०–३१
४१५	८	का. ३ में १९ देखो	१८ देखो
४१५	११	,, १	४
४१५	२५	का. ६ में १९ देखो	१८ देखो
४१६	१८	का ६ में २८	२६
४१९	१८	का. ५ में को. नं १	को नं. १६
४२१	२६	का. ३ में २	२ ३ के भंग को. नं १६ देखो
४२१	११	का. ४ में	को नं १६ देखो

के नीचे.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
		सूचना—नरकगति में अवधिज्ञान भवप्रत्यय होता है । इसलिये यहां ३ का भंग जानना ।	
४२१	२८	का. ३ में १ २ २	१ २ २ के भंग को. नं. १७ देखो
४२२	२	का. ३ में २ २	२ के भंग को. नं. १८ देखो
४२२	४	का ३ में २ २	२ के भंग को. नं. १९ देखो
		सूचना – देवगति में अवधिज्ञान भवप्रत्यय होता है । इसलिये यहां २ का भंग जानना ।	
४२३	८	का. २ में	५
४२४	३	का ३ में	औ १ दोनों में से कोई १
४२४	६	का ६ में २ ३ २	२ ३ ३
४२४	१७	का. ४ में १६ से	१६ से १९
४२५	१०	का. ६ में ३९ ४ ४३	३९ ४० ४३
४२७	६	१८८ १४५ १४५ प्र.	१४८ १४५ १४७ प्र.
४२७	१०	सारे कुज्ञानो	सादिकुज्ञानी
४२९	१	का. १ में काय	८ काय
४३०	२	का. ३ में १६ से १६	१६ से १९
४३२	१५	का. ३ में २८ २ २३	२८ २५ २३
४३२	१९	का. ३ में २ २२ २३	२४ २२ २३
४३७	४	का ६ में १६ ९ देखो	१६ १९ देखो
४३७	१६	का. ६ में ६ देखो	१६ देखो
४३७	१७	का ७ में ६ देखो	१६ देखो
४३९	४	का ३ में ६ देखो	१६ देखो
४४०	५	का. ३ में १	३
४४०	१३	का ३ में २ २ २ २ २ १ ३	३ ३ २ ३ २ १ ३
४४१	२१	का. ६ में ६ ६ ६ ६ के	६ ६ ६ के
४४२	८	का. ५ में भंग	१ भंग
४४६	१६	का ६ में ज्ञान मरकर	ज्ञानी मरकर
४४७	११	का ८ में ६ देखो	६० देखो
४५२	१३	का. ३ में ४ ३ २ १ १ १	४ ३ २ १ १ ०
४५४	४	का. ३ में ७ ४ १ के	७ ४ १ १ के
४५४	२	का ५ में ७ ४ १	७ ४ १ १
४५४	७ ८	का. ३ में	
		२० ३० २ १६ १५ ४ १३	२० ३० ३० १६ १५ १४ १३

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
		१२ ११ १० १ ९ कें	१२ ११ १० १० ९ कें
४५४	१७	का ३ में २२ २१ २० ०	२२ २१ २० २०
४५४	२४	का २ में	सूचना ४५५ पर देखो
४५५	४	इन उदय नहीं	इन ४ का उदय नही
४५६	७	का २ में १०	४
४५७	[illegible]	का ४ में [illegible] भंग	१ ० के भंग
४५७	२२	का. ३ में पेज ५८ पर	पृष्ठ ४५८ पर
४५८	९	सर्व लोक	सर्व काल
४५९	१९ के नीचे	का. ६ मे	अपने अपने स्थान की लब्धिरूप ६ ५ ४ भी होती हैं।
४६१	११ १२	का. ६ में औ. काययोग १ वै. काययोग १	औ. मिश्रकाययोग १ वै. मिश्रकाययोग १
४६२	६	का. ४ में ६ देखो	१६ देखो
४६२	१३	का. ८ में १ ध्यान	१ ज्ञान
४६४	२८	का ३ में को नं ६	को नं १६
४६४	२८	का. ६ में १ संज्ञा	१ संज्ञी
४६५	५	का. ५ में देखो	१९ देखो
४६५	१२	का. ७ में १ भंग	सारेभंग
४६६	२	का. ७ में १६ से	१६–१८
४६७	४	का. २ में दर्शन ५	दर्शन ३
४६७	११	का. ६ में २४–२३	२४–२२
४६८	११	प्राप्त न सके	प्राप्त न कर सके
४७१	४	का. २ में १७–१ देखो	१७–१८ देखो
४७१	५	का. ३ में ३	१
४७३	१२	१८ लाख मनुष्य योनी जानना	१८ लाखयोनी जानना
४७५	१	का. ३ में ८–९ के	९–९ के
४७५	६	का. २ में ८ देखो	१८ देखो
४७५	८	का ६ में स्त्री पुरुषवेद	स्त्री नपुंसकवेद
४७६	१७	का. ६ में पेज ७४ पर	पृष्ठ ४७८ पर
४७६	१४	का. २ में ४	७
४७६	१८	का ३ में ७–४–१	७-६-७
४७६	१७	का. २ में शेष आर्तध्यान	शेष आर्तध्यान ३
४७६	२५ के नीचे	का ६ में	१ मनुष्यगति में
४७७	७	का. ६ में १ का भंग	१२ का भंग
४७७	७	का. २ में दर्शन	दर्शन ३

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
४७७	८	का. ३ में २१–७–२१	२१–२७–२१
४७८	४	बंध जानना	बंध जानना। को. नं ६ से ९ देखो।
४७९	१२	का. ६-७-८ में यहाँ पर अवस्था	यहा पर अपर्याप्त अवस्था
४८१	२	का. ४ ५ में १-१	१ भंग १ उपयोग को. नं. १८ देखो को. नं. १८ देखो
४८१	६	का. ३ में ६	७
४८१	८	,, ७४ के भंग	७-४ के भंग
४८२	५	५	५५
४८४	१९	का. २ में सूक्ष्मयोग १	सूक्ष्मलोभ १
४८६	३	का. २ में १	२
४८६	१३	का. ३ में १०- ४१ के	१०-४-१ के
४८७	५	का. ३ में कषाय	अकषाय
४८८	१	का. १ में १० उपयोग	२० उपयोग
४८८	४	का. ६ में १ देखो	१८ देखो
४८८	७	१	११
४८८	१४	का. ३ में ९-३-०	९-५-३-०
४९०	२२	का. ३ में असास्त्रव	अनास्त्रव
४९०	२४	का. ३ में ये ५ जानना	ये ५ जानना. सूचना– पृष्ठ ४९१ पर देखो।
४९१	२	४२५	५२५
४९१	९	सर्वलोक	सर्वकाल
४९३	२०	का. ६ में ५–४-३ के	५-४-३-७ के
४९३	२६	का. ३ में १-०-४ के	१-१-०-४ के
४९४	२८	का. ६ में ४ के	४-४ के
४९५	१२	का. ६ में ३-१-३-३-१-३-२-१	३-१-३-१-३-२-१
४९६	२	का. ६ में ११-२३-१९	११-२४-१९
४९६	६	,, २४-२४-९-२३	२४-२४-१९-२३
४९७	२०	का. ३ में १-३-१	१-३-१-१
४९८	६	का. ३ में १–१-१-३-१	१-१-१-२-१
४९८	१०	का ६ में १-२	१-१-२
४९८	१४	,, १-३ के	१-१-३ के
४९८	२०	,, को. नं. ६	को. नं. १६
४९८	१५	का. ८ में को नं. ६२	को. नं १६
४९९	८	का. ६ में अअवधि	कुअवधि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५०२	५	का. ३ में ११-०-४	११-७-४
५०२	६	का. ८ में १७ देखो	१८ देखो
५०३	२७	का. ६ में ७ के	१७ देखो
५०६	२२	का. ३ में ३ के	२३ के
५०६	५	का. ६ में २६-२	२६-२६
५०८	१५	का. ३ में द्वीन्द्रिय १	त्रीन्द्रिय . १
५०८	१६	,, त्रीन्द्रिय १	त्रीन्द्रिय प १
५०८	१३	का. ५ में देखो	१८— १९ देखो
५०९	५ के नीचे	का. ६ में	अपने अपने स्थान के ६—५ पर्याप्ति भी लब्धिरूप रहती हैं ।
५११	२३	का. ३ में को. नं. १७	को. नं. ७१
५१२	९	का. ७ में को. नं ७१	को. नं. १७
५१२	१२	का. ८ में को. नं. ७१	को. नं. १७
५१४	१	का. २ में ८	९
५१४	३	का. ७ में सारेभंग	सारे गुणस्थान
५१४	२	का. ८ में सारेभंगो	सारे गुणस्थानों
५१४	२२	का ६ में को. न. ६ से	को. नं. १६ से
५१७	३	का. ३ में ३-१-१-०	३-२-१-१-०
५१७	४	का. ६ में ९-११-१९	१९-११-१९
५१७	१६	का. ६ में हरेक में	हरेक में १ असंयम जानना.
४१९	२१	का. ३ में १ के	१-१ के
५१९	२४	,, १ के	१-१ के
५२१	२	,, ९-१-११	९-१०-११
५२१	४	का ५ में ८ देखो	१८ देखो
५२२	७	का २ में वेद	वेदक
५२२	२२	का. ६ में २८-२६-२३	२८-२५-२२
५२३	२	का. ३ में २५-२४-२-२३	२५-२४-२३-२३
५२७	५	का. १-२ में १ वें गुण.	१३ वें गुण.
५२७	६	,, ८-१३ जानना	८५-१३ जानना.
५२८	६ के नीचे	का. ३ में	सूचना—देवगति में पर्याप्त अवस्था में अशुभ लेश्या नहीं होती ।
५२९	५	का. ६ में को. नं ६	को. नं १६
५२९	१७	का ६ में १६-१८-१	१६-१८-१९
५२९	७	का. ७ में नं. १-१८	नं. १६-१८

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
५२९	२४ के नीचे	का ३ में	सूचना—देवगति में पर्याप्त अवस्था में अशुभ लेश्या नहीं होते ।
५३०	२ ३	का ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ करक मनुष्य	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में ।
५३०	२ ३	का. ६ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य देवगति	१ नरक देवगति में और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में ।
५३०	६	का. ६ में १६–१८–१९	१६–१९–१८
५३०	१२ १३	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य देवगति	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में ।
५३०	१२ १३	का ६ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य	१ नरक देवगति में और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति
५३०	१६	का. ६ में १६–१८–१९	१६–१९–१८
५३०	२६ २७	का ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य गति में ।	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में
५३०	२६ २७	का. ६ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य देवगति देवगति ।	१नरक देवगति में और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति
५३०	३०	का. ६ में १६–१८–१९	१६–१९–१८
५३१	५	का ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	इस पंक्ति को इसके नीचे ८–९ के बीच पढ़ा जाय ।
५३१	९	का. ६ में ३–१–३–१	३–१–३–१–३
५३१	१६	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	इस पंक्तिको इसके नीचे १९–२० पंक्ति के बीच पढ़ा जाय ।
५३२	१	का २ में ४	६
५३२	२	का ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	इस पंक्ति को इसके नीचे ५–६ पंक्ति के बीच पढ़ा जाय ।
५३२	२७	का ६ में २–२	१–२–२
५३३	१६–१७ के बीच	का. ३ में	कर्मभूमि की अपेक्षा इतना पढ़ा जाय ।
५३४	२–३	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्य ।
५३४	२–३	का. ६ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य देवगति	१ नरक देवगति में और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
५३३	९–१०	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा तीनो	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्य इन दोनो।
५३४	५	का ६ में १६–१८–१९	१६–१९–१८
५३४	१२–१३	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा तीनो	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच मनुष्य।
५३४	१६	का. ८ में सारेभंग	१ भंग
५३५	२–३	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ तीनों	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच मनुष्य।
५३५	४	का. ८ में को नं. १६	को. नं १७
५३५	१९	का. ३ में २	३
५३५	११	का. ६ में ५	४५
५३५	१५	का. ६ में औ. मिश्र	औ काययोग १ वै. का
	१६	काययोग १ वै मिश्रकाय योग १	योग १
५३५	२३	का ६ में ३४–३५–३८	३४–३५–३८
५३६	११	का. २ में असंयमासंयम	असंयम
५३६	४ के नीचे	का. ४–५ में	३ रे का. में के २६ आदि ,, ,, भंगो के सामने। इस प्रकार चिन्ह लिख लेना
५३७	१	का. ३ में ९–३०–३२	२९–३०–३२
५३९	२	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा.	इस पंक्तिको इसके नीचे ३–४ पंक्तिके बीच पढ़ा जाय।
५३९	९–१०	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा १ नरक मनुष्य	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्य गतिमें।
५४०	२	का ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	ऊपर के समान यहां भी लिख लेना।
५४०	५	,, ,,	,, ,,
५४०	८	,, ,,	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्य तिर्यंच गतिमें हरेक में।
५४०	२६	का. ६ में का	४ का
५४१	२	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्य ये ३ गति जानना।
५४१	४	का ६ में एक एक जानना	एक एक गति जानना.
५४१	५	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्य गतिमें।
५४१	११	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा मनुष्यगति में और

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
५४२	१–२ के बीच	का. ६ में	और
५४२	१ के नीचे	का. २ में	को. न. १ देखो
५४२	२	का. ३ में कर्मभूमि को अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में
५४२	५	का. ३ मे कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा
५४३	२	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में ।
५४३	५	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्य गति में ।
५४३	८	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में ।
५४४	२	का. ३ में तीनों गतियो में	देवगति छोड़कर तीनों गतियों में.
५४४	५	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्य इन दोनो गतियों में ।
५४४	८	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में ।
५४५	२	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में ।
५४५	५	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में ।
५४५	८	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगति में ।
५४६	२	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा.	१ नरकगति और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्य इन दोनोगतियों में ।
५४६	५	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरक और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगतियो में ।
५४७	१ के ऊपर	का. ३ में	३६
५४७	१	का. ३ में कर्मभूमि की अपेक्षा	१ नरकगति और कर्मभूमि की अपेक्षा तिर्यंच और मनुष्यगतियों में ।
५४७	२	का. ६ में ३७–३८–९.	३७–३८–३९.
५४७	१२	का. ६ में ४३–८ के	४३–३८ के
५४७	१५	का. ६ में को. नं. ७	को. नं. ७५
५४८	२	का. ७ में	को. नं. १८

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
५५०	६ के नीचे	का. ३ में	सूचना— नरकगति में शुभलेश्या नहीं होती है।
५५०	४	का. ६ में १—२—४—६	१—२—४—६ गुण.
५५०	८	का. २ में ०	को. नं. १ देखो
५५१	१९	का. ६ में १८—१ देखो	१८—१९ देखो
५५२	२४	का. ३ में ३ का	२ का
५५२	१६	का. ६ में २—१—१ के	३—१—१ के
५५३	१३	का. ३ में ४—३ के	४—३—३ के
५५३	१२	का ५ में से १९ देखो	देखो
५५५	१	का २ में २	१
५५५	२७	का. ६ में ८—७—९	८—९—७
५५६	१	का. ८ में १ भंग	१ ध्यान
५५६	१६	का. ३ में ३७—५—४५	३७—१०—४५
५५६	२०	का. ३ में ५—४६	५१—४६
५५६	१३	का ६ में ३—१२ के	३३—१२ के
५६०	१९	का ६ में १	२
५६१	१२	का. ६ में १०—३ के	१—२—३ के
५६१	५ के नीचे	का ४ में	सारे भंग
५६१	५ के नीचे	का. ५ में	१ सम्यक्त्व
५६१	६ के ऊपर	का. ४ में	सारे भंग
५६१	६ के ऊपर	का. ५ में	सम्यक्त्व
५६२	१	का. ४ में	सारे भंग
५६२	१	का ५ में	१ भंग
५६३	३	का ६ में १—२—५ ६—१३	१—२—४—६—१३ भंग
५६३	१०	का ३ में नं. ७	नं १७
५६३	१५	का. ६ में नं ८	नं १८
५६३	४	का. १ में भाग	४ भाग
५६४	१८	का. ६ में १८—१	१८-१९
५६५	१६	का ६ में २—१—१—०	३—१-१-०
५६६	९	का. ३ में नं ९	नं १९
५६६	३	का ६ में ४—१९	२४-१९
५६६	१३	का ३ में ७ देखो	१७ देखो
५६६	१५	का. ३ में ४-३-३ के	४-१-३-३ के
५६६	२५	का. ३ में १-३	१-१-३

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
५६७	६	का. ३ में २-३-३-१	२-३-३-३-१
५६८	१७	का. ६ में ५-६-६-६-६	५-६-६-५-६-६
५६९	३	का. ३ में ८-९-१०-१-७	८-९-१०-११-७
५६९	१६	का ३ में ३७-४०	३७-५०
५७१	२३	का. ३ में २-२२-२३	२४-२२-२३
५७३	१	का ६-७-८ मे अपर्याप्ति अवस्था नहीं होती.	सूचना—यहां अपर्याप्त अवस्था नहीं होती.
५७५	७	का ३ में ३	४
५७५	८	का ६ में १—२—४—१३	१—२—४—६—१३
५७५	११	का ६ में १	४
५७६	१६	का. ८ में को. नं. १—१७	को. नं. १६—१७
५७८	२०	का. ६ में ३—१—०	२—१—१—०
५७८	२३	का. ६ में २—१ के	२—१—१ के
५७९	६	का. ३ में १३—११—१	१३—११—१३
५७९	९	का. ६ में २—२३	२५—२३
५७९	१९	का. ३ में २—३-३ के	२-३-३-३-३ के
५७९	२२	का ३ में ३—४	३—३-४
५७९	१४	का. ५ में ९ देखो	१९ देखो
५८०	२	का. ७ में न ६—१९	नं १६—१९
५८०	५	का. ७ में नं ७	नं. १७
५८०	६	का. २ में को. नं. १८	को नं १
५८१	९	का. १ में १६ सम्यक्त्व	१७ सम्यक्त्व
५८२	१६	का. ६ में १६-९ देखो	१६—१९ देखो
५८३	६	का. ३ में ६—६ के	५—६—६ के
५८४	८	का. ६ में ३२—३३—३५	३२—३३—३४—३५
५८४	८	का. ७ में लोरे	सारे
५८८	१०	का. ४ में देखो	१९ देखो
५८९	२	का. ३ में ६—४—६	६—५—४—६
५९०	१	का २ में १	६
५९०	२८	का. ६ में २—१—२	१—२—१—२
५९१	२५	का. ६ में ४—२४—२३	२४—२४—२३
५९३	१२	का. ७ में ६—१८	१६—१८
५९४	१३	का. ८ में ६ से	१६ से
५९४	२२	का ३ में ५५	५२
५९५	२३	का. ३ में २४—२५—७	२४—२५—२७
५९७	१४	का. ४-५ में ०—०	१—१
५९७	१७	" ०—०	१—१

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
५९७	१८	का. ३ में न अनाहारक	न असंज्ञी
५९७	१९	का ३ में न अभव्य	न अनाहारक
५९७	२०	का. ४–५ में ०–०	२ युगपत २ युगपत
५९७	२३	का. ४ में ०—०	५-५
५९७	२४	का. ३ में	सूचना— पृष्ठ २९८ पर देखो.
५९८	९	का. २ में १०	४
६००	२०	का. २ में १८ देखो	८२ देखो
६०१	१२	२९ लाख	८४ लाख
६०४	२४	का. २ में ३-१-२	३-१-१-२
६०५	१५	का. ३ में २–२३	२४–२३
६०७	१५	का. ८ में को. नं. १६	को. नं १७
६०७	१६	का. ८ में को नं. १७	को. नं १८
६१०	५	पल्या	पल्यका
६१०	११	७ लाख	७ लाख
६११	५	का. ४ में १६—१९ से	१६ से १९
६११	११	का. ३ में ० का	१० का
६१२	२	का. ५ में को. नं. १९ से	को. नं १६ म
६१२	६	का. ४ में मो. नं.	को. नं.
६१३	१	का २ में ३	१
६१४	२	का. २ में को. न. ९	को. नं. २
६१४	९	का २ में को. नं. १	को नं. ३
६१७	२०	का ३ में १६–९ देखो	१६–१९ देखो
६१८	११	का. ३ में १२	२१
६१८	१९	का. ३ में २—१७	२१–१७
६१८	२१	का. ३ में २०–९–१९	२०-१९–१९
६१९	३-४-५	का. ४ में परिहारविशुद्धि घटाकर ४	१ भंग १ असंयम जानना
६१९	१८	का. ३ में ६–१९	१६–१९
६१९	९	का ५ में १ ज्ञान	१ दर्शन
६१९	१५	का. ५ में १ दर्शन	१ लेश्या
६२१	२	का. ३ में ६–३ के	६-६ के
६२१	१३	का. ३ में ४१-४-४०	४१-४०-४०
६२२	२१	का. ३ में कल्पवासी नवग्रैवेदक	कल्पवासी-नवग्रैवेयक
६२३	२	५९ प्र.	५९ प्र. में से
६२३	८	४६-१४६	१४६-१४६
६२४	६	का. ३ में द देवगति में	सूचना-- नरक तिर्यंच और देवगति में ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
६२४	१	का. ५ में गुण.	१ गुण.
६२४	१७	का. ३ में १	१०
६२४	२१ के ऊपर	का. २ में	४
६२५	५	का. ७ में १ भंग	सारेभंग
६२५	१४	का. २ में को. नं.	को. नं. १
६२५	२६	का. ३ में २१–७	२१–१७
६२५	१३	का. ८ में १८	१९
६२७	४	का. ३ में १८–१९ देखो	१८ देखो
६२७	२८	का. ६ में स्त्री–पुरुषवेद २	स्त्री–नपुंसकवेद
६३०	३	का. ६ में सारेभंग	सारेगुण.
६३०	३	का. ८ में के सारेभंगों में	के सारेगुण. में
६३३	१४	का. ३ में पेज ६४०	पृष्ठ ६४०
६३४	२	का. ४ में १६	१९
६३४	१२	का. २ में ३ के	३–४–३–४–३ के
६३४	४	का. ६ में ८	३
६३५	५	का. ५ में नं. ७	नं. १७
६३८	६	का. ६ में ३३–३३–३३	३३–१२–३३
६४०	३	(देखो गो. क. गा.)	(देखो गो. क. गा. ५५०)
६४१	१	का. ५ में ० गुण.	१ गुण.
६४१	२	का. ६ में में था	में ४ था
६४१	५	का. ३ में ४	४ को काट डालना चाहिये
६४१	१४	का. ३ में ६ में	१६ में
६४१	१४–१		सूचना– पृष्ठ ६५२ पर देखो
६४२	५	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४२	१५	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोग भूमि में
६४२	२२–२६		सूचना– पृष्ठ ६५२ पर देखो
६४२	१३	का. ७ में १ भंग	सारेभंग
६४३	३		सूचना– पृष्ठ ६५२ पर देखो
६४३	१४	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४३	२४	का. ६ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४३	२९	का. ३ में ०–०–२ के	१–०–२ के
६४४	९	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४४	१४	का. ३ में २–११–०–२०	२-१-१-०-२०
६४४	१३	का. ६ में ९ का	१९ का

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
६४४	१६	का. ९ में १९–१–०–९	१९–११–०–१९
६४४	२१	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४४	२७	का ३ में ३-४–३–४–१ के	३–४–३-४–१–२ के
६४५	१०	का ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४५	२१	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४६	२३	का ३ में ०	सूचना– पृष्ठ ६५२ पर देखो
६४७	६	का. ३ में १ संज्ञी जानना	१ संज्ञी जानना परंतु तिर्यंचगति में भोगभूमि की अपेक्षा जानना ।
६४७	४	का ६ में १ संज्ञी जानना	१ संज्ञी पर्याप्तवत् जानना
६४७	१७	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४८	१	का ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४८	१५	का. ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४८	२६	का. ६ में ९–७–९	९–७–१–९
६४९	१०	का ३ में तिर्यंचगति में	तिर्यंचगति में भोगभूमि में
६४९	७	का. ३ में दर्शन ३	दर्शन ३ ये क्षयोपशम भाव की अपेक्षा जानना, केवल दर्शन तो ९ क्षायिक भावों में गर्भित हो चुका है ।
६५०	२२	का ३ में २२–२ के	२२-२० के
६५०	२३	का. ३ में को. नं.	को. नं. १८ के
६५१	२	का. ६ में १६ के	१९ के
६५२	१३ के नीचे	निम्न प्रकार सूचना लिख लेना चाहिये सूचना– चौंतीसस्थान क्रमांक २,३,६,७,८ और १६ के सामने ३ रे कॉलम में चारोंगति यों में से तिर्यंचगति में भोगभूमि की अपेक्षा जानना ।	
६५३	३	का. ५ में भंगो में	गुण में
६५४	२	का ६ मे २५-२	२५–२५
६५६	१८	का ६ में २–३ के	४–२–३ के
६५७	६	का. ३ में २-३-३	२-३-२
६५७	१	का १ में १३ दर्शन	१४ दर्शन
६५७	१४	का ३ में २-३	२-२
६५८	९	का. ४ में देखो	१९ देखो
६५८	१०	का ६ में	२
६५९	३	का ६ में १	१–१
६५९	९	का. ६ में ०–६	४–६
६६०	४	का ६ में ४	४६
६६१	९	का. ३ मे ३१–२७–१	३१–२७–३१
६६१	९	का ३ में २७–२६	२७-२५

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
६६१	१८	को ६ में २१–२७–२६	२१—२६—२६
६६२	४	को. नं. १ के १०७ में से	को. नं. १ के ११७ में से
६६३	१	को. ७ में गुणस्थान	दोनों गुणस्थान
६६३	१३ के ऊपर	को. ३ में ०	१
६६४	३	को. २ में पर्याप्ति	पर्यात
६६४	५	को. ३ में पर्याप्ति	पर्यात
६६४	६	को. ५ में वेद	१ वेद
६६४	२०	को. ६ में १–३ के	१–२–३ के
६६५	९	को. २ में अभव्य	असभव्य
६६५	१५	को. ३ में २ मिथ्यात्व	२ का भंग
६६५	२३ के ऊपर	को. ३ में ०	१
६६५	१२	को. २ में कापोत पीत	कापोत
६६६	८	को. २ में २८	२७
६६६	१०	को. ३ में २८	२७
६६६	१२	को. ३ में २७ के	२६ के
६६६	१६	को. ६ में २४–२४	२४–२५
६६८	१	को. ५ में ० गुण	१ गुण.
६६९	२	को २ मे को. नं. १	को. नं. १३
६७०	१२	को. ५ में को. नं. १९	को. नं. १८
६७०	१६	को. ६ में ४	१४
६७२	१	को. ६ में ४	५
६७२	१	को ७ में सारेभंग	सारेगुण.
६७३	११	को. ६ में ७—६	७–७–६
६७३	१२	को. ५ में १ योग	१ भंग
६७३	१३	को. ८ में १ योग	१ भंग
६७४	५	को. ३ में ४-३-१-१	४-३-२-१-१-०-४ के
६७५	५	को. ३ में ९-११ के	९-२-१-९ के
६७५	१६	को. ५ में वेद	१ वेद
६७५	२२	को. ५ में वेद	१ वेद
६७५	२८	को ६ में २—११ के	२३-११ के
६७८	१४ के नीचे	को. ४ में ५ में	को. नं. १८ देखो
६७८	२८	को. ६ में ९ देखो	१९ देखो
६७९	२०	को ३ में ३-५	३-४
६८०	४	को. ९ में ८-९.० के	८-९-१० के

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
६८०	७	को. ६ में ८--१०--११-८	८-९ १० ११ ८
६८०	१३	का. ३ में ३	५३
६८०	२३	का. ६ में १-३२	४१-३२
६८१	२	का. ३ में ५ ४६	५१ ४६
६८१	८	का ३ में ५ ४५	५० ४५
६८१	२	का. ६ में ४० ४३	४२ ४३
६८१	१	,, ३९ ४	३९ ४०
६८२	२	,, ४२ ३७	४२ ३७
६८२	८	,, ३२ के	३२ ३७ के
६८२	६	का ७ में १७ ६	१७ १६
६८२	१०	,, १६ ७	१६ १७
६८४	७	का ६ में १ ४ १३	१ २ ४ १३ गुण.
६८४	४ के नीचे	का ४ और ५ में	को नं. १८ देखो।
६८४	१४	का. ८ में देखो	१९ देखो
६८६	३	का २ में १	५
६८६	४	,, संज्ञी पं. जाति	को. नं. १ देखो
६८६	६	,, १८ देखो	१ देखो
६८६	१४	का. ३ में गतवेद	अपगतवेद
६८७	१	का. २ में ५२	२५
६८७	२३	का. ६ में २४ २४ ९	२४ २४ १९
६८८	१६	का. ६ में १ १ के	१ १ १ के
६८८	१७	,, को नं ८	को. नं. १८
६८८	२३	,, १ २ २ २ भंग	१ २ २ २ ३ के भंग
६९०	१ २ के बीच में	का. ३ में	१ मनुष्यगति में
६९०	१९	का. ६ में २ ४ ६ के	२ ४ ६ के
६९१	५ ६ के बीच में	का. ३ में	१ मनुष्यगति में
६९२	१	का. २ में ८	४८
६९३	४	११०	११२
६९३	१९	११९ ।	११९ ॥
६९४	७	का २ में अंध हो जाय है,	अंध हो जाय है, इसी तरह मिथ्यादृष्टि जीव मारीच की तरह सच्चे देव, गुरु शास्त्र का दर्शन ही नहीं करता ।
६९४	१०	दूसरा रकाना अथ	इति

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
६९७	१	चौंतीसस्थान वर्शन	चौंतीसस्थान दर्शन का विवरण,
६९८	१०	१ में २ कासे में नियोग	नियोग
६९८	९	२ रे का. में इकारा	इतरा
६९८	२७	,, इन	इक
६९८	२९	,, मानो	मानो
६९९	६	,, जय	नय
६९९	३३	,, ईसानो	बखानो
७००	२७	२ रे काने में तरक	नरक
७०१	९	१ ले का. में कर्मकार	कर्मकाट
७०२	५	,, आतंगति	अतिगति
७०२	१९	,, निसच	निर्बध
७०४	७	१ ले काने में सुआशिव	सुरशिव
७०५	६	,, परपत्र जन	परपंच जन
७०६	९	का. २ में १	२१
७०८	४	का. ११ में ४	३४
७०८	९	का ८ में ४	४४
७०८	१०	,, १	२१
७०९	१	मादिक	नामादिक
७०९	५	१ ले काने में कम	कर्म
७०९	६	२ रे काने में सज्वलन मान	संज्वलना क्रोध मान
७०९	१५	,, नामकम के ६५ है	नामकर्म के ६७ भेद है
७१०	२१	,, ८८	२८
७१०	३२	,, फल	फक्त
७१०	१२	२ रे काने में बंधन ५ और	बंधन ५ संघात ५ और
७१०	१४	,, ३६-३७-३७	३६-३७-३८
७१०	१५	,, के ४	के ५
७१०	१९	,, गति	गति देवगति
७१०	२१	,, आणि	और
७१०	२३	,, बंधन ये संघात ५ औदारिक शरीर संघात	बंधन आहारक शरीर बंधन तैजस शरीरबंधन
७१०	३५	२ रे काने में पांढरा	सफेद
७१०	३५	,, पिवका	पीला
७१०	३६	,, ये २	ये २
७११	७	१ ले काने में ८	२८
७११	२०	,, १ जानना	२१ जानना
७११	२१	,, १-१ है	१०१ है
७११	२३	२ रे कानेमें अशु	अशुभ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७१२	१२	१ ले रकाने में तिर्यंच गत्यानुपूर्वी	तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १
७१२	२०	,, जातिनामकर्म	जातिनामकर्म ५
७१२	११	२ रे रकानेमें बंक	बंध
७१२	२४	,, मिथ्यात्व १	मिथ्यात्व १, कषाय १६
७१२	२६	,, १८	१९
७१३	५	२ रे कानें में आतप १	आतप १ उद्योत १
७१४	१८	का. ३ में	स्त्यान
७१४	३	का. ३ में १५ दिन	काट डालना
७१४	४	,, १ अंतर्मुहूर्त	१५ दिन
७१४	५	,,	१ अंतर्मुहूर्त
७१५		पृष्ठसंख्या ११५	७१५
७१५	२	का २ में ०	२०
७१५	१६	,, २	२०
७१५	१२	,, २	२०
७१५	२८	का. ३ में	८ मुहूर्त
७१६	२	का. २ में ० वा	१० वा
७१६	६	का. ३ में १३–१४ गुण.	१२ वा गुण. में
७१६	७	,, ,, ,,	१४ वा गुण. में
७१६	१३	का ३ में ० वे	५ वें
७१७	६	का. २ में ४ वा	६ वा
७१७	१६	का. ३ में बंध उ.	बंधव्युच्छित्ति
७१७	१८	का. १ में १९	१०
७१७	४०	,, ४ से ९	४ से ९
७१८	१८	का २ में १ अपकर्षण	८ अपकर्षण
७१८	२९	,, से १०	से १० स्थावरदशक जानना
७१९	४	का १ में त्रसदशक १	त्रसदशक १०
७१९	७	,, १–३–६–२	१–३–२६–२
७१९	११	,, निरन्तर प्रतिपक्षी	निरंतर होता रहेगा अर्थात प्रतिपक्षी
७१९	१७	,, औंर	और
७२०	४	,, प्रचल १	निद्रा १, प्रचला १
७२०	१८ के नीचे	का. २ में	४१–पृष्ठ ७२० क से ७२० ङ तक देखो
७२० क	११	का ४ में उपशम श्रेणीवालों की	उपशम श्रेणी या क्षपक श्रेणीवालों की
७२० क	९	का. ३ में १–१–१–०	१–१–१–१
७२० क	१५	का. ४ में १–१–०–०	१–०–०–०
७२० क	२०	का. ४ में श्रेणी की अपेक्षा	श्रेणीवालों की अपेक्षा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७२० क	२८	का. ४ में	
		सम्यक्त्व क्षपकश्रेणी	सम्यक्त्व और क्षपकश्रेणी
७२० ख	१०	का. ४ में किसी सवेद	किसी भी सवेद
७२० ख	२०	का ४ में स स ० ० ०	० ० ० ० ०
७२० ग	२५	का. ४ में ३२–३०–२	३२–३०–३२
७२० घ	१३	का. ३ में अपर्याप्त	
		अवस्तीतच होऊ सकते	अपर्याप्त अवस्था में ही हो सकता है।
७२० घ	३२	का ४ में १	१–१
७२० घ	१८	का ३ में १–०–१	१–१–०
७२० ङ	११	का ४ में १११–८५–८५	१०१–८५–८५
७२० ङ	४	नीचे के सूचना में देखो	
		प्रकृतियों और १४ वें	प्रकृतियों में और १४ वें
७२० ङ	५	नीचे के सूचना में देखो	
		दोनों से कोई १ वेदनीय	दोनों में से कोई १
		का उदय	वेदनीय का उदय
७२१	६	१ ले खाने में परिणमें	परिणम ले
७२१	७	,, परिणमाने का	परिणमावने का
७२१	१९	२ रे खाने में उपाङ्गानि	उपाङ्गानि
७२१	२४	,, वज्र	वज्र नाराच, नाराच
७२१	२५	१ ले खाने में और २ रे खाने में की पंक्तिति के नीचे	

२६ के नीचे इस तरह पूरा रेखा खींचो जाय कारण इस रेखा के नीचे का विषय अलग है इस रेखाके नीचे १ ले खाने में जो प्रश्न है उसका उत्तर दूसरे खाने में है वह रखा जाय।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७२२	३	१ ले खाने में १ ले २ रे रे	१ ले २ रे ३ रे
७२२	४	,, वज्रवृषभनाराच	वज्रनाराच
७२२	६	,, वज्रनाराच	वज्रवृषभनाराच

७२२ ७ के नीचे जो प्रश्न और उत्तर छपी है वह गलत है उन दोनों को निकाल देनी चाहिये।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७२२	१५	१ ले खाने में २९–३०–१	२९–३०–३१

७२२ १३ २ रे खाने में इस तरह पूरा रेखा खींची जाय कारण नीचे का विषय १ ले खाने में का है अलग है।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७२२	२७	१ ले खाने में इस कारण	इसका कारण

७२२ ३० के अर्थात ज्ञानावरण के पांच भेदोंका स्वरूप इस पंक्ति के नीचे २ रे खाने में इस तरह पूरा रेखा खींची जाय कारण नीचे का विषय अलग है।

७२२ ३६ २ रे खाने मे १ मतिज्ञानावरण कर्म —मतिज्ञानका जो आवरण इस पंक्ति को अगले पृष्ठ ७२३ के १ ले खाने की पहली पंक्ति के ऊपर पढ़ा जाय।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७२३	८	१ ले खाने में मन:ज्ञानावरण	मन:पर्ययज्ञानावरण
७२३	१२	,, चक्षु में	चक्षु से
७२३	२४	२ रे खानें में सातावेदनीय	असातावेदनीय
७२३	३२	,, नोष कषाय	नोकषाय
७२४	९	१ ले खाने में ०	१
७२४	९	१ ले खाने में उन	इन
७२४	१२	२ रे खानें में ये १२ से १९ पंक्तियां यहां गलती से छपी गई हैं इसलिये इनको यहां पृष्ठ ७२४ के १ ले रखाने में अंतिम पंक्ति के नीचे इस तरह पूरी रेखा खींची जाय और उस रेखाके नीचे इन आठ पंक्तियों को पढ़ा जाय।	
७२४		१९ और २० पंक्तियों के बीच में इस तरह पूरी रेखा खींची जाय कारण इस रेखा के नीचे का विषय १ ले खानें में का है अलग है।	
७२५	२९	१ ले खाने में ९	१३
७२५	१४	२ रें खानें में शरीर के	देवशरीर के
७२६		सबसे नीचे का रेखा के नीचे का पंक्ति यहां गलतीसे छपी गई है इसको पृष्ठ ७२५ के २ रे र कानें के सबसे नीचे इस तरह पूरा रेखा खींचकर उसके नीचे पढ़ा जाय।	
७२७	४	२ रे काने में १—९	१०९
७२७	२८	,, आलय १०	आलप
७२८	२७	१ ले खाने में तत्तोऽपि ततो	ततो
७२८	२७	२ रे खाने में प्राशैः	प्राज्ञैः
७२९	२	,, १२	१४२
७२९		२३ से २७ ये पांचों पंक्तियां २ रे रकाने से निकालकर १ ले रकाने में उसी पंक्तियों में पढ़ा जाय अर्थात् १० कषायों का नाम कषायों का कार्य इस प्रकार १ ले रकाने में ही पढ़ो कारण ये पांच पंक्तियां २ रे रकाने में गलती से छप गई हैं।	
७३०	६	२ रे रकाने में संयास	सन्यास
७३०	११	,, गा. ६७	गा ६१
७३०	४	१ ले रकाने के नीचे श्रमदान	श्रद्धान
७३१	१७	,, और	गलतीसे छपा है निकाल देना
७३१	६	२ रें रखाने में वर्गरह	वगैरह गुणस्थानों में
७३१	१७	,, ९४ से १०	९४ से १०२
		७३२—पहले को में जो गुणस्थानों के नाम छपे हैं वे पंक्तिबद्ध नहीं हैं इसलिये उन को क्रम से २ रे को में के ०-१०-४-६-१ इन पंक्तियों के पंक्ति में रखकर पढ़ा जा।	
७३२	२१	को. ३ में इस	इस भाग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७३३	९	का. ३ में शुभ	शुभ १
७३३	१२	,, क्रोध की	क्रोध १ की
७३४	५	का. ५ में ५७–३-४२	४६–३-४३
७३४	९	,, ६ = ६३	५७-६ = ६३
७३५	१९	,, ३६	३६-१
७३५	१६	का. ३ में ४३-०	४३-१०
७३५	२३	का. ५ में ३२-७-५	१-३२ ३७-५ की. नं. १
७३६	७	,, ३३-३	३२-३
७३७	११	१ ले रकाने में	
		जिस बंध का सत्ता	जिस बंध का बंध सत्ता
७३७	२९	१ ले रकाने में कम स्वरूप कर्म	कार्मस्वरूप
७३७	१५	२ रे रकाने में कम	कर्म
७३७	२८	,, विभाग से	त्रिभाग से
७३८	१६	का. ५ में २२-१२	२२-२१
७३९	७	वेदनीय के	वेदनीय के १ प्रकृति साता या असाता
७३९	१३	ऊपर के १ में से	ऊपर के २१ में से
७३९	१६	ये २ में से ४	ये २ ऐसे ४
७४०	२९	१ ले रकाने में जो २	जो २५
७४०	१	२ रे रकाने में वा	६ वा
७४१	१३	१ ले रकाने में मेंसे	में से १
७४२	१३	२ रे रकाने में	यह विषय २ रे रकाने में
		बाकी बची सब प्रकृतियोंका	से निकालकर १ ले रकाने में
		उदय	रखना चाहिये।
७४३	१३	का. ५ में अप्रत्याख्यान	प्रत्याख्यान
७४३	२२	का. ५ में ५६–०	५६ = ५०
७४४	१	२२ गुणस्थानों	२८ गुणस्थानों में
७४४	७	का. ५ में	
		११+९+२+३	११+९=२०+३
७४५	१८	१ ले रकाने में क्षयोपशम से	क्षयोपशम
७४५	२४	,, गुण. को	गुण को
७४५	४	२ रे रकाने में स कारण	इस कारण
७४५	१०	,, असाता वेदके	असाता के
७४६	१	का. ३ में ११०	११७
७४७	४	२ रे रकाने में का	२ का
७४७	१३	,, औ	और
७४८	१	२ रे रकाने में करने क	करने का

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७४८	१७ के नीचे	१ ले खाने में	अ क्षायिकसम्यग्दृष्टि होने का क्रम
७४८	५	२ रे रकाने मे	एक जीव की अपेक्षा मिथ्यात्व गुण में आहारकद्विक और तिर्थंकर प्रकृतिका सत्व कैसा रहता है।
७४८	७	२ रे रकाने में द्विक	द्विक २
७४८	९	,, द्विक का	द्विक २ का
७४९	६	का. ५ में नरका १	नरकायु १
७४९	८	का. ४ में १०	०
७४९	९	,, ८	१६
७४९	१०	का. ५ में ६ + ८ = ३४	२६ + ८ = ३४
७५०	५	का. ३ में ०३	१०३
७५०	६	,, १२	१०२
७५०	७	का. ५ में ४५ = १ = ४५	४३ + १ = ४६
७५०	१४	,, नाम १३	नामकर्म के १३
७५०	२७	,, १ से ७	१ से ७०
७५०	२८	,, ६ + ७२ =	६३ + ७२ =
७५१		पृष्ठसंख्या ७५	७५१
७५१	१६	१ ले रकाने में अप्रत्याख्यान क्रोधसह	अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान क्रोधसहित
७५१	२	२ रे रकाने में अधःप्रवत्तण	अधःप्रवृत्त
७५१	८	२ रे रकाने में प्रयो	प्रयोजन
७५१	१०	,, से ७	४ से ७
७५१	१२	,, स्यग्दृष्टि	सम्यग्दृष्टि
७५२	८	,, प्रतिरूप	प्रकृतिरूप
७५२	१४	,, अपनी अपनी अपनी	अपनी अपनी
७५३	४	का. ८ में से ,,	से ३ ,,
७५४	२७	का. १ में स्थाय	स्थान
७५७	१४	२ रे रकाने में गो. ४० से	गो. ४३० से
७५७	१४	१ ले रकाने में सूचना यह सूचना २ रे रकाने में पढा जाय	
७५७	१६	२ रे रकाने में अर्थात जादा होगा परमाणुका	अर्थात आदा परमाणुका।
७५७	१८	१ ले २ रे रकाने के नीचे दशकरण अवस्था चूलिका	दशकरण अवस्था चूलिका.
७५७	१९	१ ले रकाने में	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
		परिणमन जाना	परिणमन हो जाना
७५८	८	१ ले रकाने में से ४०	से ४४०
७५९	१६	,, कर्म	करण
७६१	१३	का. १० में ये ७	ये २
७६१	१५	,, में २	ये ७
७६१	१२	का. ३ में ०	१
७६१	१३	का. ९ में १	०
७६२	१-२	का. ३ में कुअवधिदर्शन	अवधिदर्शन
७६३	९	गो. क. गा. ५००	गो. क. गा. ५०१
७६३	१७	या मार्गणा	लेश्या मार्गणा
७६४	५	१ ले रकाने में बालकाश्रभा	बालुकाप्रभा
७६४	१	२ रे रकाने में ये	४ ये
७६४	१५	,, द्वीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय	द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय
७६४	२६	२ रे रकाने में मरण भरके	मरण करके
७६५	४	,, अपराध	अपरार्ध
७६६	१२	१ ले रकाने में १ से १४	१२ से १४
७६७	६	का. १ में ८ अनिवृत्तिकरण	९ अनिवृत्तिकरण
७६८	९	२ रे रकाने में हो,य तो देव अथवा मनुष्यगति में	करें तो देवगति में
७६८	१०	२ रे रकाने में मरे तो देव मनुष्य अथवा मनुष्यगति	मरण होय तो देव अथवा मनुष्यगति
७६८	११	२ रे रकाने में देव, तिर्यंच अथवा नरक होगा	देव, मनुष्य अथवा तिर्यंचगति में जायेगा यदि ४ थे भाग में मरण हो तो देव, मनुष्य तिर्यंच अथवा नरक होगा।
७६९	१२	१ ले रकाने में पर्याप्ति काल	पर्याप्ति भाषापर्याप्ति काल
७६९	१५	२ रे रकाने में इन दोनो पंक्तियों को १ ले और दूसरे रकाने के नीचे एक पंक्तिमें पढा जाय।	
७६९	४	का. २ में कार्माण का योग	कार्माण काययोग
७७०	८	१ ले रकाने में यह जाव	यह जीव
७७०	११	,, कते हैं	कहते हैं
७७०	२०	,, पल्य असंख्यात	पल्यके असंख्यात
७७०	३१	,, र जावे	रह जावे
७७०	९	२ रे रकाने में	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
		निषेकाचो	निषेकोंको
७७१	६	१ ले रकाने में मिथ्या	तिर्यंच
७७१	६	२ रे रकाने ६०	६४०
७७२	५	१ ले रकाने में कली घात	कदली घात
७७२	१८	,, १० वें स्वर्ग	१२ वें स्वर्ग
७७२	३	२ रे काने में उदय	उदय १
७७४	१	५७ उत्तर आस्रव के	आस्रव के ५७ उत्तर भेद के
७७४	६	का. २ में ३	३३
७७४	१६	का १ में आहारक	आहारक काययोग आहारक मिश्रकाययोग
७७६	३	भागव	भाव
७७६	१	का. २ में प्रत्यल की	प्रत्यनीक
७७६	३	,, से	उप अंतराय से
७७८	२	होनें हुए उत्पन्न हुये	दूसरे को
७७८	२	जावे भाव	जावे वे भाव
७८२	८	का ६ में ०	१ जीवत्व
७८२	सूचना– कोई आचार्य क्षायिक भाव		कोई आचार्य सिद्धगति में क्षायिकभाव
७८३	२	१ ले रकाने में	
		मत हैं २ ३ भेदों को	मत हैं उनके ३६३ भेदों को
७८३	९	१ ले रकाने में ४ × ८	४ × ९
७८३	१५	,, भवरुप	भावरुप
७८३	१५	२ रे रकाने में ८७८	८७६
७८३	१८	,, १८ भेद	१८० भेद
७८३	२१	,, अजी	अजीव
७८३	२३	,, नियती ७०	नियती स्वभाव ७०
७८३	३	२२ दूसरे खाने में १४	१४ स्वभाव को
७८४	१	१ ले रकाने में जीव आस्रव	जीव, अजीव, आस्रव
७८४	२	,, नास्तिकपने	नास्तिपने
७८४	७	,, सप्तभंग से भेद होते हैं	सप्तभंगसे इसके आगे का विषय न जानना जैसे कि 'जीव' इत्यादी वही ७८४ पृष्ठ के २ रे रकाने के एक से ७ पंक्ति के ओर होते हैं यहां तक समझना ।
७८४	२	२ रे रकाने में	
		दोनो वा बाकी तीन	दोनो वा अवक्तव्य वा बाकी तीन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धता	शुद्धता
७८४	१०	,, कण	कर्ण
७८४	५	२ रे रकाने में अस्ति—नास्ति	अस्तिनास्ति
७८४	६	,, गण	गुण
७८५	७	,, प्रमाणों की	परिणामों की
७८५	९	१ ले रकाने में होना चाहिये	होना जानना
७८६	३	२ रे रकाने में निषेकाहार	निषेकहार
७८६	४	,, गुना प्रमाण	दूना प्रमाण
७८६	५	,, निषेकाहार	निषेकहार
७८७	८	२ रे रकाने में होते हैं वे	होते हैं वे अपकर्षकाल जानना
७८७	८	अपरिवर्तमान परिणाम	यह शब्द मुख्य शब्द के स्थान में पढ़ना चाहिये
७८७	२६	२ रे रकाने में ६९ देखो	४६९ देखो
७८८	२—३	१ ले रकाने में वर्गणाका स्पर्द्धक	वर्गणाका समूह स्पर्द्धक
७८८	४	१ ले रकाने में समूहस्थान	स्थान
७८८	१८	,, गा. ६६० देखो	इसको निकाल देना चाहिये
७८९	१५ के नीचे	,,	अंगोपांग १, ये २ जानना
७८९	१७	,, अंगोपांग १ ये २ जानना	इसको यहां से निकाल देना
७९१	१७	,, श्वानके समान हैं	श्वानके निद्राके समान हैं
७९१	३०	,, गा २०	गा. २२०
७९१	५	२ रे रकाने में प्रत्यनिक	प्रत्यनीक
७९१	९	,, ाण	प्राण
७९१	३०	,, १०५ की	१४५ की
७९१	३३	,, गा. १५८	गा. ३५८